कबीर परमेश्वर

(सम्पूर्ण)

(Kabir the Weaver is Supreme God)

(God Kabir)

(अल्लाहु! कबीर)

(कविर्देव)

अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।
हम सुल्तानी नानक तारे, दादू को उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी मांही कबीर हुआ।।
-सन्त गरीब दास जी

जिन मोकूं निज नाम दिया सोई सतगुरू हमार।
दादू दूसरा कोई नहीं कबीर सिरजनहार।।

लेखक :-
संत रामपाल जी महाराज
सतलोक आश्रम बरवाला, जिला-हिसार (हरियाणा)

प्रकाशक :-
राष्ट्रीय समाज सेवा समिति के सर्व सदस्य
(यह समीति पूर्ण रूप से धार्मिक तथा गैर-राजनीतिक संस्था है।)
पुस्तक संबंधी किसी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र :- 9992600893, 7027000748

मुद्रक :- कबीर प्रिंटर्स
C-117, सैक्टर-3, बवाना इन्डस्ट्रियल ऐरिया, नई दिल्ली।

-: विषय सूची :--

1. कबीर परमेश्वर जी का संक्षिप्त परिचय 1
- कबीर परमेश्वर जी का कलयुग में अवतरण 2
- शिशु कबीर परमेश्वर का नामांकन 9
- शिशु कबीर देव द्वारा कंवारी गाय का दूध पीना 10
- कंवारी गाय का दूध पीने का कबीर सागर में प्रमाण 23
- कंवारी गाय के दूध से परवरिश लीला का वेद में प्रमाण 24
- नीरू को धन की प्राप्ति 26
- ऋषि रामानन्द, सेऊ, समन तथा नेकी व कमाली के पूर्व जन्मों का ज्ञान 26
- शिशु कबीर की सुन्नत करने का असफल प्रयत्न 27

2. ऋषि रामानन्द का उद्धार करना 28
- ऋषि रामानन्द स्वामी को गुरु बना कर शरण में लेना 28
- ऋषि विवेकानन्द जी से ज्ञान चर्चा 30
- कबीर जी द्वारा स्वामी रामानन्द के मन की बात बताना 33
- कबीर देव द्वारा ऋषि रामानन्द के आश्रम में दो रूप धारण करना 41
- शेख तकी पीर ने नहीं पहचाना परमेश्वर को 47
- सिकंदर लौधी बादशाह का असाध्य जलन रोग ठीक करना 49
- स्वामी रामानन्द जी को जीवित करना 51

3. सर्व मनुष्य एक प्रभु के बच्चे हैं, जो दो मानता है वह अज्ञानी है 51

4. पवित्र मुसलमान धर्म का संक्षिप्त परिचय 52

5. शेखतकी नामक मुसलमान पीर से वार्ता 53

6. पवित्र कुर्आन् शरीफ ने प्रभु के विषय में क्या बताया है? 53

7. माँस-मदिरा निषेध का उपदेश 56

8. हजरत मुहम्मद जी का जीवन चरित्र 62
- हजरत मुहम्मद जी में काल(ब्रह्म) तथा अन्य देव व पित्तर प्रवेश करके बोलते थे का प्रमाण 67

9. पवित्र ईसाई तथा मुसलमान धर्मों के अनुयाईयों को कर्माधार से लाभ-हानि करने वाले भी (श्री ब्रह्मा,विष्णु तथा शिव) तीन ही देवता 69

10. मामरे पर तीनों देवताओं के देखने का प्रमाण 70

11. बादशाह सिकंदर की शंकाओं का समाधान 73
12. मृत लड़के कमाल को जीवित करना 76
13. शेख तकी द्वारा कबीर जी की अन्य परीक्षाएँ 78
- कमाली के पहले के जन्मों की जानकारी 78
- शेखतकी की मृत लड़की कमाली को जीवित करना 83
- कबीर साहेब को सरसों के गर्म तेल के कड़ाहे में डालना 85
- शेखतकी द्वारा कबीर साहेब को गहरे कुएँ (झेरे) में डालना 86
- शेखतकी द्वारा कबीर साहेब को गुंड़ों से मरवाने की निष्फल कुचेष्टा 88

14. कौन तथा कैसा है कुल का मालिक 89
15. पुरी में श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर अर्थात् धाम कैसे बना 97
- श्री जगन्नाथ के मन्दिर में छुआछात प्रारम्भ से ही नहीं है 102
- जगन्नाथ के पांडे की कबीर जी द्वारा रक्षा 104

16. गंगा में पित्तरों को जल दे रहे पंडितों का भ्रम निवारण 106
17. भैंसे से वेद मन्त्र बुलवाना 107
18. कबीर वट की अद्भुत कथा 109
19.द्वारिका पुरी में कबीर कोठा 113
20. गोरखनाथ से गोष्ठी 115
21. काशी नगर में भोजन-भण्डारा (लंगर) देना 122
22. सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान किसने बताया? 130
23. अल-खिज्र (अल कबीर) की विशेष जानकारी 130
24. सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान के विषय में प्रमाण 133
25. कुरआन शरीफ (मजीद) में भी सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है 135
26. (देखें फोटोकॉपी वेदमंत्रों की) 138
27. हजरत मुहम्मद जी को अल्लाह कबीर मिले 149
28. इस्लाम की अनसुलझी पहेली 152
29. पुनर्जन्म होता है, पढ़ें ढ़ेर सारे प्रमाण 153
- सम्मन वाली आत्मा ही सुल्तान इब्राहिम था 153
- नेकी-सेऊ-सम्मन के बलिदान की कथा 155
- सम्मन वाली आत्मा नौशेर खान बना 159
- सुल्तान अब्राहिम की जन्म कथा 160

- सुल्तान इब्राहिम को शरण में लेना 164
- अब्राहिम अधम सुल्तान के विषय में संत गरीबदास जी के विचार 173
- अब्राहिम अधम सुल्तान की परीक्षा 175
- भक्त हो नीयत का पूरा 176
- दास की परिभाषा 177
- सुल्तानी को सार नाम कैसे प्राप्त हुआ? 178
- राजा बड़ा है या भक्त राज 179
- विकार जैसे काम, मोह, क्रोध, वासना नष्ट नहीं होते, शांत हो जाते हैं 180
- भक्त तरवर (वृक्ष) जैसे स्वभाव का होता है 182

30. मंशूर अली का उद्धार कबीर जी ने किया 194
31. मंशूर अली का शब्द 197
32. प्रभु कबीर जी का मगहर से सहशरीर सत्यलोक गमन तथा सूखी नदी में नीर बहाना 200
33. वेदों में कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर का प्रमाण 206
34. पूर्ण परमात्मा अपने वास्तविक ज्ञान को स्वयं ही ठीक-ठीक बताता है 212
35. पवित्र वेदों में कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर का प्रमाण 212
36. तत्व ज्ञानहीन भक्त से ज्ञान चर्चा 215
37. पवित्र बाईबल में प्रभु मानव सदृश साकार का प्रमाण 230
38. पवित्र कुर्आन शरीफ में प्रमाण 231
39. परमेश्वर कबीर जी की कृपा से सुखी हुए इन्सान 233
    - परमात्मा ने की जीवन रक्षा 233
    - गुर्दे ठीक करना व शैतान को इंसान बनाना 235
    - अनहोनी की परमात्मा ने 237
    - शास्त्रविरूद्ध साधना से छुटकारा 240
    - लुटे-पिटों को सहारा 241
    - प्रभु प्यासे भक्त बसंत सिंह सैनी को मार्ग मिलना 243
40. सृष्टि रचना 250
    - आत्माऐं काल के जाल जन्म-मृत्यु के चक्र में कैसे फंसी? 253
    - श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं? 259
    - तीनों गुण क्या हैं ? प्रमाण सहित 260

- पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण 262
- पवित्र शिव महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण 263
- पवित्र बाईबल व पवित्र कुर्आन शरीफ में सृष्टि रचना का प्रमाण 264
- पूज्य कबीर परमेश्वर जी की अमृत वाणी में सृष्टि रचना 266
- आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में सृष्टि रचना का संकेत 269

41. सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग में परमेश्वर का आगमन 270
42. तप्त शिला पर जल रहे प्राणियों से वार्ता 278
43. परमेश्वर कबीर जी से काल ब्रह्म का विवाद करना 285
44. परमेश्वर कबीर जी द्वारा ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव को शरण में लेना 294
45. सत्ययुग में कबीर परमेश्वर का सत सुकृत नाम से प्राकाट्य 295
46. त्रेतायुग में कविर्देव (कबीर परमेश्वर) का मुनीन्द्र नाम से प्राकाट्य 297
    - नल तथा नील को शरण में लेना 297
    - समुद्र पर रामचन्द्र के पुल के लिए पत्थर तैराना 298
    - कबीर परमेश्वर द्वारा विभीषण तथा मंदोदरी को शरण में लेना 300
47. श्री हनुमान जी की भक्ति पर प्रकाश 304
48. हनुमान जी का कल्याण कैसे हुआ 304
49. पूर्ण परमात्मा कबीर जी का द्वापर युग में प्रकट होना 311
    - द्वापर में इन्द्रमति को शरण में लेना 314
    - पाण्डवों की यज्ञ में सुपच सुदर्शन द्वारा शंख बजाना 320
50. अर्जुन सहित पाण्डवों को युद्ध में की गई हिंसा के पाप लगे 332
51. क्या पाण्डव सदा स्वर्ग में रहेंगे? 338
52. क्या द्रोपदी भी नरक जाएगी तथा अन्य प्राणियों के शरीर धारण करेगी 339
53. श्री कृष्ण जी ने ताम्रध्वज को जीवित किया परंतु अभिमन्यु को क्यों नहीं कर सके? 339
54. क्या श्री विष्णु अर्थात् श्री कृष्ण जी कर्मदण्ड को क्षमा कर सकते हैं? 340
55. क्या श्री कृष्ण जी तत्वज्ञान से परिचित थे? 344
56. परमेश्वर का तीनों युगों में थोड़े जीव पार करने का वचन देना 351
57. धर्मदास के पुत्र नारायण दास का काल दूत का रूप दिखाना 356

❑❑❑

कबीर परमेश्वर जी का संक्षिप्त परिचय

कबीर परमेश्वर चारों युगों में इस पृथ्वी पर सशरीर प्रकट होते हैं। अपनी जानकारी आप ही देते हैं। परमात्मा सत्ययुग में ''सत्य सुकृत'' नाम से, त्रेता में ''मुनिन्द्र'' नाम से तथा द्वापर में ''करूणामय'' नाम से तथा कलयुग में ''कबीर'' नाम से प्रकट होते हैं।

सतयुग में सत सुकृत कह टेरा, त्रेता नाम मुनिन्द्र मेरा।
द्वापर में करूणामय कहाया, कलयुग नाम कबीर धराया।।

-स्वयं कबीर साहेब जी

सतगुरु पुरूष कबीर हैं, चारों युग प्रमाण।
झूठे गुरूवा मर गए, हो गए भूत मसान।।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।
हम सुल्तानी नानक तारे, दादू को उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी मांही कबीर हुआ।।

-सन्त गरीब दास साहेब जी

जिन मोकूं निज नाम दिया सोई सतगुरू हमार।
दादू दूसरा कोई नहीं कबीर सिरजनहार।।

-सन्त दादू दास साहेब जी

तेरा एक नाम तारे संसार, मैं येही आश ये ही आधार।
फाई सुरति मुलूकी वेश, ये ठगवाड़ा ठग्गी देश।
खरा सियाणा बहुते भार, धाणक रूप रहा करतार।।

(गुरू ग्रंथ साहेब पृष्ठ 24)

हक्का कबीर करीम तू, बे एब परवरदिगार।

(गुरू ग्रंथ साहेब पृष्ठ 721)

अंधुला नीच जाति परदेशी मेरा, खिन आवै तिल जावै,
जाकि संगति नानक रहंदा, क्योंकर मोंहडा पावै।

(गुरू ग्रंथ साहेब पृष्ठ 731) -नानक देव साहेब जी

बोलत रामानन्द जी सुनो कबीर करतार,गरीब दास सब रूप में तुम ही बोलनहार।।
दोहूं ठौर है एक तू भया एक से दो, गरीबदास हम कारणे आए हो मग जोय।।

यहां केवल कलयुग में परमेश्वर कबीर जी की कुछ लीलाओं का वर्णन करेंगे। सत्ययुग, त्रेतायुग, तथा द्वापरयुग में परमात्मा का पृथ्वी पर प्रकट होने का वृत्तांत कृपया इसी पुस्तक के पृष्ठ 250 पर पढ़ें।

''कबीर परमेश्वर जी का कलयुग में अवतरण''

परमेश्वर कबीर जी के विषय में दन्त कथा प्रचलित है कि उनका जन्म विधवा स्त्री के गर्भ से महर्षि रामानन्द जी के आशीर्वाद से हुआ था। यह पूर्णतया निराधार है। कपया पढ़िए कबीर देव जी का यथार्थ संक्षिप्त परिचय।

बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी ने द्वापर युग में अपने प्रिय शिष्य सुदर्शन बाल्मीकि जी को शरण में लिया था। उस समय कबीर जी नामान्तर करके करूणामय नाम से लीला कर रहे थे। भक्त सुदर्शन जी के माता-पिता ने परमेश्वर कबीर जी के ज्ञान को स्वीकार नहीं किया था जिनके नाम थे पिता जी का नाम ''भीखू राम'' तथा माता जी का नाम ''सुखवन्ती''। जिस समय दोनों (माता तथा पिता) शरीर त्याग गए तो भक्त सुदर्शन जी अत्यन्त व्याकुल रहने लगे। भक्ति भी कम करते थे। अर्न्तयामी करूणामय जी (द्वापर युग में कबीर परमेश्वर करूणामय नाम से लीला कर रहे थे) ने अपने भक्त के मन की बात जान कर पूछा हे भक्त सुदर्शन! आप को कौन सी चिन्ता सता रही है। क्या माता-पिता का वियोग सता रहा है? या कोई अन्य पारिवारिक परेशानी है? मुझे बताईए।

भक्त सुदर्शन जी ने कहा हे बन्दी छोड़! हे अन्तर्यामी! आप सर्वज्ञ हैं आप बाहर-भीतर की सर्व स्थिति से परिचित है। हे प्रभु! मुझे मेरे माता-पिता के निधन का दुःख नहीं है क्योंकि वे बहुत वद्ध हो चुके थे। आप ने बताया है कि यह पाँच तत्व का पूतला एक दिन नष्ट होना है। मुझे चिन्ता सता रही है कि मेरे माता-पिता अत्यन्त पुण्यात्मा, दयालु तथा धर्मात्मा थे। उन्होंने अपनी भक्ति लोकवेद अनुसार की थी। जो शास्त्रविधि के विरूद्ध थी। जिस कारण से उनका मानव जीवन व्यर्थ गया। अब पता नहीं किस प्राणी की योनी में कष्ट उठा रहे होंगे? आपका दास आप से नम्र निवेदन करता है कि कभी मेरे माता-पिता मानव शरीर प्राप्त करें तो उन्हें अपनी शरण में लेना परमेश्वर तथा उन्हें भी भवसागर से (काल ब्रह्म के लोक से) पार करना मेरे दाता ! मुझे यही चिन्ता सता रही है। परमेश्वर कबीर जी ने सोचा कि यह भोला भक्त सुदर्शन माता-पिता के मोह में फंस कर काल जाल में ही रहेगा। काल ब्रह्म ने मोह रूपी पाश बहुत दढ़ बना रखा है। यह विचार कर परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे भक्त सुदर्शन ! आप चिन्ता मत करो मैं आप के माता-पिता को अवश्य शरण में लूंगा तथा पार करके ही दम लूंगा। आप सत्य लोक जाओ। यह चिन्ता छोड़ो। परमेश्वर कबीर जी के आश्वासन के पश्चात् भक्त सुदर्शन जी सत्य साधना करके सत्यलोक को गया। पूर्ण मोक्ष प्राप्त किया।

भक्त सुदर्शन बाल्मीकि के माता-पिता वाले जीवों को कलयुग में मानव

शरीर प्राप्त हुआ। भारत वर्ष के काशी शहर में सुदर्शन के पिता वाले जीव ने एक ब्राह्मण के घर जन्म लिया तथा गौरीशंकर नाम रखा गया तथा सुदर्शन जी की माता वाले जीव ने भी एक ब्राह्मण के घर कन्या रूप में जन्म लिया तथा सरस्वती नाम रखा। युवा होने पर दोनों का विवाह हुआ। गौरी शंकर ब्राह्मण भगवान शिव का उपासक था तथा शिव पुराण की कथा करके भगवान शिव की महिमा का गुणगान किया करता। गौरीशंकर निर्लोभी था। कथा करने से जो धन प्राप्त होता था उसे धर्म में ही लगाया करता था। जो व्यक्ति कथा कराते थे तथा सुनते थे सर्व गौरी शंकर ब्राह्मण के त्याग की प्रशंसा करते थे।

जिस कारण से पूरी काशी में गौरी शंकर की प्रसिद्धी हो रही थी। अन्य स्वार्थी ब्राह्मणों का कथा करके धन इकत्रित करने का धंधा बन्द हो गया। इस कारण से वे ब्राह्मण उस गौरीशंकर ब्राह्मण से ईर्ष्या रखते थे। इस बात का पता मुसलमानों को लगा कि एक गौरीशंकर ब्राह्मण काशी में हिन्दुधर्म के प्रचार को जोर-शोर से कर रहा है। इसको किस तरह बन्द करें। मुसलमानों को पता चला कि काशी के सर्व ब्राह्मण गौरीशंकर से ईर्ष्या रखते हैं। इस बात का लाभ मुसलमानों ने उठाया। गौरीशंकर व सरस्वती के घर के अन्दर अपना पानी छिड़क दिया। अपना झूठा पानी उनके मुख पर लगा दिया। कपड़ों पर भी छिड़क दिया तथा आवाज लगा दी कि गौरीशंकर तथा सरस्वती मुसलमान बन गए हैं। पुरूष का नाम नूरअली उर्फ नीरू तथा स्त्री का नाम नियामत उर्फ नीमा रखा। अन्य स्वार्थी ब्राह्मणों को पता चला तो उनका दाँव लग गया। उन्होंने तुरन्त ही ब्राह्मणों की पंचायत बुलाई तथा फैसला कर दिया कि गौरीशंकर तथा सरस्वती मुसलमान बन गए हैं अब इनका ब्राह्मण समाज से कोई नाता नहीं रहा। इनका गंगा में स्नान करने, मन्दिर में जाने तथा हिन्दु ग्रन्थों को पढ़ने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

गौरीशंकर (नीरू) जी कुछ दिन तो बहुत परेशान रहे। जो कथा करके धन आता था उसी से घर का निर्वाह चलता था। उसके बन्द होने से रोटी के भी लाले पड़ गए। नीरू ने विचार करके अपने निर्वाह के लिए कपड़ा बुनने का कार्य प्रारम्भ किया। जिस कारण से जुलाहा कहलाया। कपड़ा बुनने से जो मजदूरी मिलती थी उसे अपना तथा अपनी पत्नी का पेट पालता था। जिस समय धन अधिक आ जाता तो उसको धर्म में लगा देता था। विवाह को कई वर्ष बीत गए थे। उनको कोई सन्तान नहीं हुई। दोनों पति-पत्नी ने बच्चे होने के लिए बहुत अनुष्ठान किए। साधु सन्तों का आशीर्वाद भी लिया परन्तु कोई सन्तान नहीं हुई। हिन्दुओं द्वारा उन दोनों का गंगा नदी में स्नान करना बन्द कर दिया गया था। उनके निवास स्थान से लगभग चार कि.मी. दूर एक लहर तारा नामक सरोवर था जिस में गंगा नदी का ही जल लहरों के द्वारा नीची पटरी के ऊपर से उछल

कर आता था। इसलिए उस सरोवर का नाम लहरतारा पड़ा। उस तालाब में बड़े-2 कमल के फूल उगे हुए थे। मुसलमानों ने गौरीशंकर का नाम नूर अली रखा जो उर्फ नाम से नीरू कहलाया तथा पत्नी का नाम नियामत रखा जो उर्फ नाम से नीमा कहलाई। नीरू-नीमा भले ही मुसलमान बन गए थे परन्तु अपने हृदय से साधना भगवान शंकर जी की ही करते थे तथा प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व लहरतारा तालाब में स्नान करने जाते थे।

ज्येष्ठ मास की शुक्ल पूर्णमासी विक्रमी संवत् 1455 (सन् 1398) सोमवार को भी ब्रह्म मुहूर्त (ब्रह्म महूर्त का समय सूर्योदय से लगभग डेढ़ घण्टा पहले होता है) में स्नान करने के लिए जा रहे थे। नीमा रास्ते में भगवान शंकर से प्रार्थना कर रही थी कि हे दीनानाथ! आप अपने दासों को भी एक बच्चा-बालक दे दो आप के घर में क्या कमी है प्रभु! हमारा भी जीवन सफल हो जाएगा। दुनिया के व्यंग्य सुन-2 कर आत्मा दुःखी हो जाती है। मुझ पापिन से ऐसी कौन सी गलती किस जन्म में हुई है जिस कारण मुझे बच्चे का मुख देखने को तरसना पड़ रहा है। हमारे पापों को क्षमा करो प्रभु! हमें भी एक बालक दे दो।

यह कह कर नीमा फूट-2 कर रोने लगी तब नीरू ने धैर्य दिलाते हुए कहा हे नीमा! हमारे भाग्य में सन्तान नहीं है यदि भाग्य में सन्तान होती तो प्रभु शिव अवश्य प्रदान कर देते। आप रो-2 कर आँखे खराब कर लोगी। बालक भाग्य में है नहीं जो वृद्ध अवस्था में उंगली पकड़ लेता। आप मत रोओ आप का बार-2 रोना मेरे से देखा नहीं जाता। यह कह कर नीरू की आँखे भी भर आई। इसी तरह प्रभु की चर्चा व बालक प्राप्ति की याचना करते हुए उसी लहरतारा तालाब पर पहुँच गए। प्रथम नीमा ने प्रवेश किया, पश्चात् नीरू ने स्नान करने को तालाब में प्रवेश किया। सुबह का अंधेरा शीघ्र ही उजाले में बदल जाता है। जिस समय नीमा ने स्नान किया था उस समय तक तो अंधेरा था। जब कपड़े बदल कर पुनः तालाब पर उस कपड़े को धोने के लिए गई, जिसे पहन कर स्नान किया था, उस समय नीरू तालाब में प्रवेश करके गोते लगा-2 कर मल मल कर स्नान कर रहा था।

नीमा की दृष्टि एक कमल के फूल पर पड़ी जिस पर कोई वस्तु हिल रही थी। प्रथम नीमा ने जाना कोई सर्प है जो कमल के फूल पर बैठा अपने फन को उठा कर हिला रहा है। उसने सोचा कहीं यह सर्प मेरे पति को न डस ले नीमा ने उसको ध्यानपूर्वक देखा वह सर्प नहीं है कोई बालक था। जिसने एक पैर अपने मुख में ले रखा था तथा दूसरे को हिला रहा था।

(परमेश्वर कबीर जी का शिशु रूप में लहरतारा तालाब में अवतरण)

नीमा ने अपने पति से ऊँची आवाज में कहा देखिये जी! एक छोटा बच्चा कमल के फूल पर लेटा है। वह जल में डूब न जाए। नीरू स्नान करते-2 उस की ओर न देख कर बोला नीमा! बच्चों की चाह ने तूझे पागल बना दिया है। अब तूझे जल में भी बच्चे दिखाई देने लगे हैं। नीमा ने अधिक तेज आवाज में कहा मैं सच कह रही हूँ, देखो सचमुच एक बच्चा कमल के फूल पर, वह रहा, देखो! देखो--- नीमा की आवाज में परिवर्तन व अधिक कसक देखकर नीरू ने उस ओर देखा जिस ओर नीमा हाथ से संकेत कर रही थी। कमल के फूल पर नवजात शिशु को देखकर नीरू ने आव देखा न ताव झपट कर कमल के फूल सहित बच्चा उठाकर अपनी पत्नी को दे दिया।

नीमा ने परमेश्वर कबीर जी को सीने से लगाया, मुख चूमा, पुत्रवत् प्यार किया जिस परमेश्वर की खोज में ऋषि-मुनियों ने जीवन भर शास्त्रविधि विरूद्ध साधना की उन्हें नहीं मिला। वही परमेश्वर भक्तमति नीमा की गोद में खेल रहा था। जिस शान्तिदायक परमेश्वर को आन्नद की प्राप्ति के लिए प्राप्त करने की इच्छा से साधना की जाती है वही परमेश्वर नीमा के हाथों में सीने से लगा हुआ था।

(परमेश्वर कबीर जी का नीरू-नीमा को शिशु रूप में प्राप्त होना)

उस समय जो शीतलता व आनन्द का अनुभव भक्तमति नीमा को हो रहा होगा उस की कल्पना ही की जा सकती है। नीरू स्नान करके जल से बाहर आया। नीरू ने सोचा यदि हम इस बच्चे को नगर में ले जाऐंगे तो शहर वासी हम पर शक करेंगे सोचेंगे कि ये किसी के बच्चे को चुरा कर लाए हैं। कहीं हमें नगर से निकाल दें। इस डर से नीरू ने अपनी पत्नी से कहा नीमा! इस बच्चे को यहीं छोड़ दे इसी में अपना हित है। नीमा बोली हे पति देव! यह भगवान शंकर का दिया खिलौना है। इस बच्चे ने पता नहीं मुझ पर क्या जादू कर दिया है कि मेरा मन इस बच्चे के वश हो गया है। मैं इस बच्चे को नहीं त्याग सकती। नीरू ने नीमा को अपने मन की बात से अवगत कराया। बताया कि यह बच्चा नगर वासी हम से छीन लेगें, पूछेंगे कहाँ से लाए हो? हम कहेंगे लहरतारा तालाब में कमल के फूल पर मिला है। हमारी बात पर कोई भी विश्वास नहीं करेगा। हो सकता है वे हमें नगर से भी निकाल दें। तब नीमा ने कहा मैं इस बालक के साथ देश निकाला भी स्वीकार कर लूंगी। परन्तु इस बच्चे को नहीं त्याग सकती। मैं अपनी मत्यु को भी स्वीकार कर लूंगी। परन्तु इस बच्चे से भिन्न नहीं रह सकूंगी।

नीमा का हठ देख कर नीरू को क्रोध आ गया तथा अपने हाथ को थप्पड़ मारने की स्थिति में उठा कर आँखों में आंसू भर कर करूणाभरी आवाज में बोला नीमा मैंने आज तक तेरी किसी भी बात को नहीं ठुकराया। यह जान कर कि

हमारे कोई बच्चा नहीं है मैंने तुझे पति तथा पिता दोनों का प्यार दिया है। तू मेरे नम्र स्वभाव का अनुचित लाभ उठा रही है। आज मेरी स्थिति को न समझ कर अपने हठी स्वभाव से मुझे कष्ट दे रही है। विवाहित जीवन में नीरू ने प्रथम बार अपनी पत्नी की और थप्पड़ मारने के लिए हाथ उठाया था तथा कहा कि या तो इस बच्चे को यहीं रख दे वरना आज मैं तेरी बहुत पिटाई करूंगा।

उसी समय नीमा के सीने से चिपके बालक रूपधारी परमेश्वर बोले हे नीरू! आप मुझे अपने घर ले चलो आप पर कोई आपत्ति नहीं आएगी। मैं सतलोक से चलकर तुम्हारे हित के लिए यहाँ आया हूँ। नवजात शिशु के मुख से उपरोक्त वचन सुनकर नीरू (नूर अली) डर गया कहीं यह कोई देव या पितर या कोई सिद्ध पुरूष न हो और मुझे शाप न दे दे। इस डर से नीरू कुछ नहीं बोला घर की ओर चल पड़ा। पीछे-2 उसकी पत्नी परमेश्वर को प्यार करती हुई चल पड़ी।

उपरोक्त घटना का प्रत्यक्ष दर्ष्टा :-

प्रतिदिन की तरह ज्येष्ठ मास की पूर्णमासी विक्रमी संवत् 1455 (1398 ई.) सोमवार को एक अष्टानन्द नामक ऋषि, जो स्वामी रामानन्द ऋषि जी के शिष्य थे काशी शहर से बाहर बने लहरतारा तालाब के स्वच्छ जल में स्नान करने के लिए गए। ब्रह्म महूर्त का समय था (ब्रह्म मुहूर्त का समय सूर्योदय से लगभग डेढ़ घण्टा पूर्व का होता है) ऋषि अष्टानन्द जी ने लहरतारा तालाब में स्नान किया। वे प्रतिदिन वहीं बैठ कर कुछ समय अपनी पाठ पूजा किया करते थे। ऋषि अष्टानन्द जी ध्यान मग्न होने की चेष्टा कर ही रहे थे उसी समय उन्होंने देखा कि आकाश से एक प्रकाश पुंज नीचे की ओर आता दिखाई दिया। वह इतना तेज प्रकाश था उसे ऋषि जी की चर्म दर्ष्टि सहन नहीं कर सकी। जिस प्रकार आँखे सूर्य की रोशनी को सहन नहीं कर पाती। सूर्य के प्रकाश को देखने के पश्चात् आँखे बन्द करने पर सूर्य का आकार दिखाई देता है उसमें प्रकाश अधिक नहीं होता।

इसी प्रकार प्रथम बार परमेश्वर के प्रकाश को देखने से ऋषि जी की आँखे बन्द हो गई बन्द आँखों में शिशु को देख कर फिर से आँखे खोली। ऋषि अष्टानन्द जी ने देखा कि वह प्रकाश लहरतारा तालाब पर उतर गया। जिससे पूरा सरोवर प्रकाश मान हो गया तथा देखते ही देखते वह प्रकाश जलाशय के एक कोने में सिमट गया। ऋषि अष्टानन्द जी ने सोचा यह कैसा दर्श्य मैंने देखा। यह मेरी भक्ति की उपलब्धि है या मेरा दर्ष्टिदोष है। इस के विषय में गुरूदेव, स्वामी रामानन्द जी से पूछूंगा। यह विचार करके ऋषि अष्टानन्द जी अपनी शेष साधना को छोड़ कर अपने पूज्य गुरूदेव के पास गए। स्वामी रामानन्द जी को सर्व घटनाक्रम बताकर पूछा हे गुरूदेव! यह मेरी भक्ति की उपलब्धि है या मेरी

भ्रमणा है। मैंने प्रकाश आकाश से नीचे की ओर आते देखा जिसे मेरी आँखे सहन नहीं कर सकी। आँखे बन्द हुई तो नवजात शिशु दिखाई दिया। पुनः आँखें खोली तो उस प्रकाश से पूरा जलाशय ही जगमगा गया, पश्चात् वह प्रकाश उस तालाब के एक कोने में सिमट गया। मैं आप से कारण जानने की इच्छा से अपनी साधना बीच में ही छोड़ कर आया हूँ। कृप्या मेरी शंका का समाधान कीजिए।

ऋषि रामानन्द स्वामी जी ने अपने शिष्य अष्टानन्द से कहा हे ब्राह्मण! यह न तो तेरी भक्ति की उपलब्धि है न आप का दृष्टिदोष ही है। इस प्रकार की घटनाऐं उस समय होती हैं। जिस समय ऊपर के लोकों से कोई देव पृथ्वी पर अवतार धारण करने के लिए आते हैं। वह किसी स्त्री के गर्भ में निवास करता है। फिर बालक रूप धारण करके नर लीला करके अपना अपेक्षित कार्य पूर्ण करता है। कोई देव ऊपर के लोकों से आया है। वह काशी नगर में किसी के घर जन्म लेकर अपना प्रारब्ध पूरा करेगा। उपरोक्त वचनों द्वारा ऋषि रामानन्द स्वामी जी ने अपने शिष्य अष्टानन्द की शंका का समाधान किया। उन ऋषियों की यही धारणा रही है कि सर्व अवतार गण माता के गर्भ से ही जन्म लेते हैं।

बालक को लेकर नीरू तथा नीमा अपने घर जुलाहा मौहल्ला (कालोनी) में आए। जिस भी नर व नारी ने नवजात शिशु रूप में परमेश्वर कबीर जी को देखा वह देखता ही रह गया। परमेश्वर का शरीर अति सुन्दर था। आँख जैसे कमल का फूल हो, घुंघराले बाल, लम्बे हाथ। लम्बी-2 अंगुलियाँ शरीर से मानो नूर झलक रहा हो। जैसे अंग्रेज गोरे होते हैं इनसे भी अधिक गोरा शरीर परमेश्वर का था। अग्रेंज सफेद होते हैं परमेश्वर कबीर जी का उन से भी अधिक सफेद वर्ण का शरीर था। पूरी काशी नगरी में ऐसा अद्भुत बालक नहीं था। जो भी देखता वहीं अन्य को बताता कि नूर अली को एक बालक तालाब पर मिला है आज ही उत्पन्न हुआ शिशु है। डर के मारे लोक लाज के कारण किसी विधवा ने डाला होगा। बालक को देखने के पश्चात् उसके चेहरे से दृष्टि हटाने को दिल नहीं करता, आत्मा अपने आप खिंची चली जाती है। पता नहीं कैसा जादू है बालक के मुख पर? पूरी काशी परमेश्वर के बालक रूप को देखने को उमड़ पड़ी। स्त्री-पुरूष झुण्ड के झुण्ड बना कर मंगल गान गाते हुए, नीरू के घर बच्चे को देखने आए।

बच्चे (कबीर परमेश्वर) को देखकर कोई कह रहा था, यह बालक तो कोई देवता का अवतार है, कोई कह रहा था। यह तो साक्षात् विष्णु जी ही आए लगते हैं। कोई कह रहा था यह भगवान शिव ही अपनी काशी नगरी को कृतार्थ करने को उत्पन्न हुए हैं। कोई कह रहा था। यह तो किन्नर का अवतार है, कोई कह रहा था। यह पितर नगरी से आया है। यह सर्व वार्ता सुनकर नीमा अप्रसन्न हो कर कहती थी कि मेरे बच्चे के विषय में कुछ मत कहो। हे अल्लाह! मेरे बच्चे की

इनकी नजर से रक्षा करना। तुमने कभी बच्चा देखा भी है कि नहीं। ऐसे समूह के समूह मेरे बालक को देखने आ रहे हैं। आने वाले स्त्री-पुरूष बोले हे नीमा! हमने बालक तो बहुत देखे हैं परन्तु आप के बालक जैसा नहीं देखा। इसीलिए हम इसे देखने आए हैं। ऊपर अपने-2 लोकों से श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिवजी भी झांक कर देखने लगे। काशी के वासियों के मुख से अपने में से (श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा शिव में से) एक यह बालक होने की बात सुनकर बोले कि यह बालक तो किसी अन्य लोक से आया है। इस के मूल स्थान से हम भी अपरिचित हैं परन्तु बहुत शक्ति युक्त कोई सिद्ध पुरूष होगा।

''शिशु कबीर परमेश्वर का नामांकन''

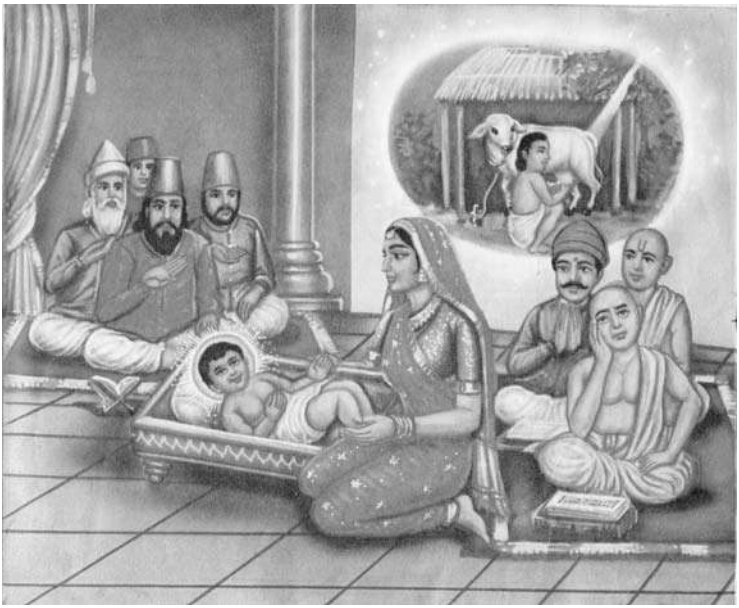

नीरू (नूर अली) तथा नीमा पहले हिन्दु ब्राह्मण-ब्राह्मणी थे। इस कारण लालच वश ब्राह्मण लड़के का नाम रखने आए। उसी समय काजी मुसलमान अपनी पुस्तक कुरान शरीफ को लेकर लड़के का नाम रखने के लिए आ गए। उस समय दिल्ली में मुगल बादशाहों का शासन था जो पूरे भारतवर्ष पर शासन करते थे। जिस कारण हिन्दु समाज मुसलमानों से दबता था। काजियों ने कहा लड़के का नाम करण हम मुसलमान विधि से करेंगे अब ये मुसलमान हो चुके हैं। यह कह कर काजियों में मुख्य काजी ने कुरान शरीफ पुस्तक को कहीं से खोला। उस पष्ठ पर प्रथम पंक्ति में प्रथम नाम ''कबीरन्'' लिखा था। काजियों ने सोचा ''कबीर'' नाम का अर्थ बड़ा होता है। इस छोटे जाति (जुलाहे अर्थात् धाणक) के

बालक का नाम कबीर रखना शोभा नहीं देगा। यह तो उच्च घरानों के बच्चों के नाम रखने योग्य है। शिशु रूपधारी परमेश्वर काजियों के मन के दोष को जानते थे। काजियों ने पुनः पवित्र कुरान शरीफ को नाम रखने के उद्देश्य से खोला। उन दोनों पष्ठों पर कबीर-कबीर-कबीर अक्षर लिखे थे अन्य अक्षर नहीं था। काजियोंने फिर कुरान शरीफ को खोला उन पष्ठों पर भी कबीर-कबीर-कबीर अक्षर ही लिखा था। काजियों ने पूरी कुरान का निरीक्षण किया तो उनके द्वारा लाई गई कुरान शरीफ में सर्व अक्षर कबीर-कबीर-कबीर-कबीर हो गए काजी बोले इस बालक ने कोई जादू मन्त्र करके हमारी कुरान शरीफ को ही बदल डाला। तब कबीर परमेश्वर शिशु रूप में बोले हे काशी के काजियों। मैं कबीर अल्लाह अर्थात् अल्लाहुअकबर, हूँ। मेरा नाम ''कबीर'' ही रखो। काजियों ने अपने साथ लाई कुरान को वहीं पटक दिया तथा चले गए। बोले इस बच्चे में कोई प्रेत आत्मा बोल रही है।

''शिशु कबीर देव द्वारा कंवारी गाय का दूध पीना''

बालक कबीर को दूध पिलाने की कोशिश नीमा ने की तो परमेश्वर ने मुख बन्द कर लिया। सर्व प्रयत्न करने पर भी नीमा तथा नीरू बालक को दूध पिलाने में असफल रहे। 25 दिन जब बालक के निराहार बीत गए तो माता-पिता अति चिन्तित हो गए। 24 दिन से नीमा तो रो-2 कर विलाप कर रही थी। सोच रही थी यह बच्चा कुछ भी नहीं खा रहा है। यह मरेगा, मेरे बेटे को किसी की नजर लगी है। 24 दिन से लगातार नजर उतारने की विधि भिन्न-भिन्न स्त्री-पुरूषों द्वारा बताई प्रयोग करके थक गई। कोई लाभ नहीं हुआ। पच्चीसवां दिन उदय हुआ। माता नीमा रात्रि भर जागती रही तथा रोती रही कि पता नहीं यह बच्चा कब मर जाएगा। मैं भी साथ ही फांसी पर लटक जाऊंगी। मैं इस बच्चे के बिना जीवित नहीं रह सकती। बालक कबीर का शरीर पूर्ण रूप से स्वस्थ था तथा ऐसे लग रहा था जैसे बच्चा प्रतिदिन एक किलो ग्राम (एक सेर) दूध पीता हो। परन्तु नीमा को डर था कि बिना कुछ खाए-पिए यह बालक जीवित रह ही नहीं सकता। यह कभी भी मत्यु को प्राप्त हो सकता है। यह सोचकर फूट-2 कर रो रही थी। भगवान शंकर के साथ-साथ निराकार प्रभु की भी उपासना तथा उससे की गई प्रार्थना जब व्यर्थ रही तो अति व्याकुल होकर रोने लगी।

25वें दिन नीरू ने सोचा कि हमने मुसलमान काजी-मुल्लाओं के बताए अनुसार तो सर्व क्रिया कर ली है। परन्तु बच्चा दूध नहीं पी रहा। उस समय स्वामी रामानन्द जी प्रसिद्ध पंडित थे। उनके पास जा कर अपनी समस्या सुनाई कि मुझे जंगल में एक पुत्र प्राप्त हुआ था। {नीरू को कमल के फूल पर जल में पुत्र प्राप्त हुआ था। परन्तु जिस से भी यह कहता कि कमल के पुष्प पर पुत्र प्राप्त

हुआ था। सर्व अस्वीकार करते थे, कहते थे कि यह कैसे सम्भव हो सकता है? इसी डर से नीरू ने स्वामी रामानन्द जी से कहा कि उद्यान में मुझे एक नवजात शिशु प्राप्त हुआ है।} वह 25 दिन से कुछ भी नहीं खा-पी रहा है। हे स्वामी कुछ विधि बताओ? स्वामी रामानन्द जी ने कहा कि आप पूर्व जन्म में भी ब्राह्मण थे। उस समय आप से भगवान की भक्ति में कोई त्रुटि हुई थी जिस कारण से आप जुलाहा बने हो। नीरू ने कहा कि हे स्वामी! वह तो जैसा कर्म किया था, उसका फल तो मुझे मिलना ही था। अब मैं संकट के समय आप के पास आया हूँ। ऐसी कृपा करो बालक दूध पी ले। स्वामी रामानन्द जी ने कहा कि एक कंवारी गाय (बछिया) ले आना जिसको बैल ने छुआ न हो। उसको अपने बालक के पास खड़ा कर देना, वह कंवारी गाय दूध देगी, उस दूध को बालक पी लेगा।

नीरू ने मन ही मन में सोचा कि स्वामी जी ने मेरे साथ मजाक किया है। कंवारी गाय कैसे दूध दे सकती है। वह दुःखी मन से वापिस आकर अपनी झोंपड़ी में बैठकर रोने लगा।

भगवान शिव, एक साधु का रूप बना कर नीरू की झोंपड़ी के सामने आ खड़े हुए तथा नीमा से रोने का कारण जानना चाहा। नीमा रोती रही हिचकियाँ लेती रही। साधु रूप में खड़े भगवान शिव जी के अति आग्रह करने पर नीमा रोती-2 कहने लगी।

हे महात्मा! मेरे दुःख से परिचित होकर आप भी दुःखी हो जाओगे। साधु वेशधारी शिव भगवान बोले हे माई! कहते है अपने मन का दुःख दूसरे के समक्ष कहने से मन हल्का हो जाता है। हो सकता है आप के कष्ट को निवारण करने की विधि भी प्राप्त हो जाए। आँखों में आंसू जिह्वा लड़खड़ाते हुए गहरे साँस लेते हुए नीमा ने बताया हे विप्र जी! हम निःसन्तान थे। पच्चीस दिन पूर्व हम दोनों प्रतिदिन की तरह काशी में लहरतारा तालाब पर स्नान करने गए थे। उस दिन ज्येष्ठ मास की पूर्णमासी की सुबह थी। रास्ते में मैंने अपने इष्ट भगवान शंकर से पुत्र प्राप्ति की हृदय से प्रार्थना की थी मेरी पुकार सुनकर दीनदयाल भगवान शंकर जी ने उसी दिन एक बालक लहरतारा तालाब में कमल के फूल पर हमें दिया। बच्चे को प्राप्त करके हमारे हर्ष का कोई ठिकाना नहीं रहा। यह हर्ष अधिक समय तक नहीं रहा। इस बच्चे ने दूध नहीं पीया। सर्व प्रयत्न करके हम थक चुके हैं। आज इस बच्चे को पच्चीसवां दिन है कुछ भी आहार नहीं किया है। यह बालक मरेगा। इसके साथ ही मैं आत्महत्या करूंगी। मैं इसकी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रही हूँ। सारी रात्रि बैठ कर तथा रो-2 व्यतीत की है। मैं भगवान शंकर से प्रार्थना कर रही हूँ कि हे भगवन्! इससे अच्छा तो यह बालक न देते। अब इस बच्चे में इतनी ममता हो गई है कि मैं इसके बिना जीवित नहीं रह सकूंगी।

नीमा के मुख से सर्वकथा सुनकर साधु रूपधारी भगवान शंकर ने कहा।

आप का बालक मुझे दिखाइए। नीमा ने बालक को पालने से उठाकर महात्मा जी के समक्ष प्रस्तुत किया। नीमा ने बालक को साधु के चरणों मे डालना चाहा कि बच्चे के जीवन की रक्षा हो सके। बालक पथ्वी पर न गिर कर ऊपर उठ गया और साधु वेश धारी शिव के सिर के सामान्तर हवा में ठहर गया। नीमा ने सोचा कि यह चमत्कार इस साधु ने किया है, मेरे बच्चे को हवा में स्थिर कर दिया। साधु ने अपनी बाहें फैलाकर बच्चे को लेना चाहा। उसी समय बालक स्वयं साधु रूपधारी शिव के हाथों में आ गया।

दोनों प्रभुओं की आपस में दृष्टि मिली। भगवान शंकर जी ने शिशु रूप कबीर जी को अपने हाथों में ग्रहण किया तथा मस्तिष्क की रेखाऐं व हस्त रेखाऐं देख कर बोले नीमा! आप के बेटे की लम्बी आयु है यह मरने वाला नहीं है। देख कितना स्वस्थ है। कमल जैसा चेहरा खिला है। नीमा ने कहा हे महात्मा! बनावटी सांत्वना से मुझे सन्तोष होने वाला नहीं है। बच्चा दूध पीएगा तो मुझे सुख की सांस आएगी। पच्चीस दिन के बालक का रूप धारण किए परमेश्वर कबीर जी ने भगवान शिव जी से कहा हे भगवन्! आप इन्हें कहो एक कंवारी गाय लाऐं। आप उस कंवारी गाय पर अपना आशीर्वाद भरा हस्त रखना, वह दूध देना प्रारम्भ कर देगी। मैं उस कंवारी गाय का दूध पीऊँगा। वह गाय आजीवन बिना ब्याऐ (अर्थात् कंवारी रह कर ही) दूध दिया करेगी उस दूध से मेरी परवरिश होगी। परमेश्वर कबीर जी तथा भगवान शंकर (शिव) जी की सात बार चर्चा हुई।

शिवजी ने नीमा से कहा आप का पति कहाँ है? नीमा ने अपने पति को पुकारा वह भीगी आँखों से उपस्थित हुआ तथा साधु को प्रणाम किया। साधु रूप में शिव ने कहा नीरू! आप एक कंवारी गाय लाओं वह दूध देगी। उस दूध को यह बालक पीएगा। नीरू कंवारी गाय ले आया तथा साथ में कुम्हार के घर से एक ताजा छोटा घड़ा (चार कि.ग्रा. क्षमता का मिट्टी का पात्र) भी ले आया। परमेश्वर कबीर जी के आदेशानुसार साधु रूपधारी शिव जी ने उस कंवारी गाय की पीठ पर हाथ मारा जैसे थपकी लगाते हैं। गऊ माता के थन लम्बे-2 हो गए तथा थनों से दूध की धार बह चली। नीरू को पहले ही वह पात्र थनों के नीचे रखने का आदेश दे रखा था। दूध का पात्र भरते ही थनों से दूध निकलना बन्द हो गया। वह दूध शिशु रूपधारी कबीर परमेश्वर जी ने पीया। नीरू नीमा ने साधु रूपधारी भगवान शिव के चरण लिए तथा कहा आप तो साक्षात् भगवान शिव के रूप हो। आपको भगवान शिव ने ही हमारी पुकार सुनकर भेजा है। हम निर्धन व्यक्ति आपको क्या दक्षिणा दे सकते हैं? हे विप्र! 24 दिनों से हमने कोई कपड़ा भी नहीं बुना है। साधु रूपधारी भगवान शंकर बोले! साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहीं। जो है भूखा धन का, वह तो साधू नाहीं। यह कह कर विप्र रूपधारी शिवजी वहाँ से चले गए।

।।बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर का कलयुग में प्रकट होना।।

(संत गरीबदास जी की वाणी)

गरीब, चौरासी बंधन कटे, कीनी कलप कबीर।
भुवन चतुर्दश लोक सब, टूटैं जम जंजीर।।1।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मंड में, बंदी छोड़ कहाय।
सो तो एक कबीर हैं, जननी जन्या न माय।।2।।
गरीब, शब्द स्वरूप साहिब धनी, शब्द सिंध सब मांहि।
बाहर भीतर रमि रह्या, जहां तहां सब ठांहि।।3।।
गरीब, जल थल पृथ्वी गगन में, बाहर भीतर एक।
पूर्ण ब्रह्म कबीर हैं, अबिगत पुरूष अलेख।।4।।
गरीब, सेवक होय कर ऊतरे, इस पृथ्वी के मांहि।
जीव उधारन जगतगुरू, बार बार बलि जांहि।।5।।

।।नीरू नीमा को शिशु रूप में मिले।।

गरीब, काशी पुरी कस्त किया, उतरे अधर आधार।
मोमन कूँ मुजरा हुवा, जंगल में दीदार।।1।।
गरीब, कोटि किरण शशि भान सुधि, आसन अधर विमान।
परसत पूर्ण ब्रह्म कूँ, शीतल पिंड रू प्राण।।2।।
गरीब, गोद लिया मुख चूम करि, हेम रूप झलकंत।
जगर मगर काया करै, दमकैं पदम अनंत।।13।।
गरीब, काशी उमटी गुल भया, मोमन का घर घेर।
कोई कहै ब्रह्मा विष्णु हैं, कोई कहै इन्द्र कुबेर।।14।।
गरीब, कोई कहै वरूण धर्मराय है, कोई कोई कहते ईश।
सोलह कला सुभांन गति, कोई कहै जगदीश।।5।।
गरीब, भक्ति मुक्ति ले उतरे, मेटन तीनूं ताप।
मोमन के डेरा लिया, कहै कबीरा बाप।।6।।
गरीब, दूध न पीवै न अन्न भखै, नहीं पलने झूलंत।
अधर अमान ध्यान में, कमल कला फूलंत।।7।।
गरीब, कोई कहै छल ईश्वर नहीं, कोई किंनर कहलाय।
कोई कहै गण ईश का, ज्यूं ज्यूं मात रिसाय।।8।।
गरीब, खलक मुलक देखन गया, राजा प्रजा रीत।
जंबू दीप जिहांन में, उतरे शब्द अतीत।।9।।
गरीब, दुनी कहै यौह देव है, देव कहत हैं ईश।
ईश कहै परब्रह्म है, पूर्ण बिसवे बीस।।10।।

।।शिशु रूप परमेश्वर का नामांकन।।

गरीब, काजी गये कुरांन ले, धरि लरके का नाम।
अक्षर अक्षर में फुर्‌या, धंन कबीर बलिजांव।।1।।
गरीब, सकल कुरांन कबीर हैं, हरफ लिखे जो लेख।
काशी के काजी कहैं, गई दीन की टेक।।2।।

।।शिशु कबीर परमेश्वर द्वारा कंवारी गाय का दूध पीने का वर्णन।।

गरीब, शिव उतरे शिवपुरी से, अबिगत बदन विनोद।
महके कमल खुसी भये, लिया ईश कूँ गोद।।1।।
गरीब, नजर नजर से मिल गई, किया ईश प्रणाम।
धंन मोमन धंन पूरना, धंन काशी निःकाम।।2।।
गरीब, सात बार चर्चा करी, बोले बालक बैंन।
शिव कूँ कर मस्तक धर्‌या, ल्या मोमन एक धैंन।।3।।
गरीब, अनब्यावर कूँ दूहत है, दूध दिया तत्काल।
पीवै बालक ब्रह्म गति, तहां शिव भये दयाल।।4।।
गरीब, षष्ट मास के जदि भये, नित दहनांवर देह।
चरण चलें नित पुरी में, याह शिक्षा नित लेह।।5।।

।।स्वामी रामानन्द जी को शरण में लेना।।

गरीब, भक्ति द्राविड़ देश थी, इहां नहीं एक रिंच।
ऊत भूत की ध्यावना, पाखंड और प्रपंच।।1।।
गरीब, रामानंद आनंद में, काशी नगर मंझार।
देश द्राविड़ छाडि करि, आये पुरी विचार।।2।।
गरीब, जोग जुगति प्राणायाम करि, जीत्या सकल शरीर।
त्रिवैणी के घाट में, अटक रहे बलबीर।।3।।
गरीब, तीरथ व्रत एकादशी, गंगोदक असनान।
पूजा विधि विधान से, सर्व कला सुर ज्ञान।।4।।
गरीब, करै मानसी सेव नित, आत्म तत्त्व का ध्यान।
षट पूजा आरंभ गति, धूप दीप विधान।।5।।
गरीब, चौदह से चेले किये, काशी नगर मंझार।
च्यार संप्रदा ३चलत हैं, और बावन दरबार।।6।।

।।स्वामी रामानन्द से दीक्षा लेने का वर्णन।।

पंच वर्ष के जदि भये, काशी मंझ कबीर।
दास गरीब अजब कला, ज्ञान ध्यान गुण थीर।।1।।
गुल भया काशी पुरी, अटपटे बैंन बिहंग।
दास गरीब गुनी थके, सुन जुलहा प्रसंग।।2।।
रामानंद अधिकार सुन, जुलहा अक जगदीश।
दास गरीब बिलंब ना, ताहि नवावत शीश।।3।।
रामानंद कूँ गुरू कहै, तन से नहीं मिलात।
दास गरीब दर्शन भये, पैंडे लगी जुं लात।।4।।
पंथ चलत ठोकर लगी, राम नाम कहि दीन।
दास गरीब कसर नहीं, सीख लई प्रवीन।।5।।

।।बालक कबीर जी ने रामानन्द जी को बताया ''मैं परमेश्वर हूँ''।।

आडा पड़दा लाय कर, रामानंद बूझंत।
दास गरीब कुलंग छवि, अधर डाक कूदंत।।1।।
कौन जाति कुल पंथ है, कौन तुम्हारा नाम।
दास गरीब अधीन गति, बोलत है बलि जांव।।2।।
जाति हमारी जगतगुरू, परमेश्वर पद पंथ।
दास गरीब लिखत परै, नाम निंरजन कंत।।3।।
रे बालक सुन दुर्बुद्धि, घट मठ तन आकार।
दास गरीब दरद लग्या, हो बोले सिरजनहार।।4।।
तुम मोमन के पालवा, जुलहे के घर वास।
दास गरीब अज्ञान गति, एता दृढ़ विश्वास।।5।।
मान बड़ाई छाड़ि करि, बोलो बालक बैंन।
दास गरीब अधम मुखी, एता तुम घट फैंन।।6।।
कलयुग खेत्रपाल हैं, क्या भैरौं कोई भूत।
दास गरीब दतब बिना, गया जगत सब ऊत।।7।।
मनी मगज माया तजो, तजो मान गुमान।
दास गरीब सुबात कहि, नहीं पावौगे जान।।8।।
ए बालक बुद्धि तोर गति, कूड़ि साखि न भांडि।
दासगरीब हदीस कर, नहीं लेवैंगे डांडी।।9।।
शाह सिकंदर से कहूँ बांधै, पग ऊपर तर शीश।

दास गरीब अज्ञान गति, तोर कह्या जगदीश।।10।।
जड़ेंगे हाथ हथौकड़ी, गल में तौंक जंजीर।
दास गरीब परख बिना, यह बानी गुन कीर।।11।।
परख निरख नहीं तोर कूँ, नीच कुलीन कुजाति।
दास गरीब अकल बिना, तैं जु कहीं क्या बात।।12।।
रे बालक नीची कला, तुम होय बोले ऊंच।
दास गरीब पलक घरी, खबर नहीं दम कूँच।।13।।
महके बदन खुलास करि, सुन स्वामी प्रवीन।
दास गरीब मनी मरे, मैं आजिज आधीन।।14।।
मैं अबिगत गति से परे, च्यार बेद से दूर।
दास गरीब दशौं दिशा, सकल सिंध भरपूर।।15।।
सकल सिंध भरपूर हूँ, खालिक हमरा नाम।
दास गरीब अजाति हूँ, तैं जूं कह्या बलि जांव।।16।।
जाति पाति मेरे नहीं, बस्ती है बिन थाम।
दास गरीब अनिन गति, तन मेरा बिन चाम।।17।।
ए स्वामी सृष्टा मैं, सृष्टि हमारे तीर।
दास गरीब अधर बसूं, अबिगत सत्य कबीर।।18।।
अनंत कोटि सलिता बहैं, अनंत कोटि गिरि ऊंच।
दास गरीब सदा रहूँ, नहीं हमारे कूंच।।19।।
पौहमी धरणि आकाश में, मैं व्यापक सब ठौर।
दास गरीब न दूसरा, हम समतुल नहीं और।।20।।
मैं सतगुरु मैं दास हूँ, मैं हंसा मैं बंस।
दास गरीब दयाल मैं, मैं ही करूँ पाप विध्वंस।।21।।
ममता माया हम रची, काल जाल सब जीव।
दास गरीब प्राण पद, हम दासातन पीव।।22।।
हम दासन के दास हैं, करता पुरुष करीम।
दास गरीब अवधूत हम, हम ब्रह्मचारी सीम।।23।।
सुन रामानंद राम मैं, मैं बावन नरसिंह।
दास गरीब सर्व कला, मैं ही व्यापक सरबंग।।24।।
हम मौला सब मुलक में, मुलक हमारे मांहि।
दास गरीब दयाल हम, हमसें दूसर कछु नांहि।।25।।
हम से ही पानी हम पवन हैं, हम से हीं धरणि अकाश।
दास गरीब तत्त्व पंच में, हम हीं शब्द निवास।।26।।
सुन स्वामी सति भाख हूँ, झूठ न हमरै रिंच।

दास गरीब हम रूप बिन, और सकल प्रपंच।।27।।
हम मुक्ता हम नहीं बंध में, हम ख्याली खुशहाल।
दास गरीब सब सृष्टि में, टोहत हैं हंस लाल।।28।।
मैं रोवत हूँ सृष्टि कूँ, सृष्टि रोवती मोहि।
दास गरीब बिजोग कूं, बूझै और न कोय।।29।।
मैं बूझूं मैं ही कहूँ, हम हीं किया बिजोग।
गरीबदास गलतान हम, शब्द हमारा भोग।।30।।
च्यार जुगन में हम फिरैं, मैं आवूं मैं जांव।
गरीबदास गुरू भेद से, लखो हमारी ठांव।।31।।
सुन स्वामी शर घालि हूँ, वार पार फूटंत।
गरीबदास जीव अभय होय, काल कर्म छूटंत।।32।।
जेता अंजन आंजिये, चिसम्यौं में चमकंत।
गरीबदास हरि भक्ति बिन, माल बाल ज्यूं जंत।।33।।
कनी धनी के पास हैं, धनी कनी नहीं देत।
गरीबदास बोये बिना, जिन के खाली खेत।।34।।
लगी मुहीम गनीम पर, काल कटक कूटंत।
दास गरीब निर्भय करूं, जो कोई नाम जपंत।।35।।
मारग बंक अगाध गति, चलत चलत जुग जांहि।
गरीबदास घर अगम है, जहां जन्म–मरण कबहु नाहीं।।36।।
गगन सुन्न गुप्ता रहूँ, हम प्रगट प्रवाह।
गरीबदास घट घट बसूं, विकट हमारी राह।।37।।
आवत जात न दीख हूँ, रहता सकल समीप।
गरीबदास जल तरंग हूँ, हम ही सायर सीप।।38।।
गोता लाऊँ स्वर्ग से, फिर पैठूँ पाताल।
गरीबदास ढूंढत फिरूं, हीरे माणिक लाल।।39।।
इस दरिया कंकर बहुत, लाल कहीं कहीं ठाव।
गरीबदास माणिक चुगैं, हम मुरजीवा नाम।।40।।

।।स्वामी रामानन्द जी के मन की बात बताना।।

मन सोचत रामानन्द, यह बालक नहीं कोई देव।
प्रथम नित नेम करूं, फिर पूछूँ सब भेव।।1।।
बोलत रामानंद जी, हम घर बड़ा सुकाल।
गरीबदास पूजा करैं, मुकुट फही जदि माल।।2।।
सेवा करो संभाल कर, सुन स्वामी सुर ज्ञान।

गरीबदास सिर मुकुट धरि, माला अटकी जान।।3।।
स्वामी घुंडी खोलि करि, फिर माला गल डार।
गरीबदास इस भजन कूँ, जानत है करतार।।4।।
ड्योढी पड़दा दूरि करि, लीया कंठ लगाय।
गरीबदास गुजरी बौहत, बदने बदन मिलाय।।5।।
मन की पूजा तुम लखी, मुकुट माल प्रवेश।
गरीबदास गति को लखै, कौन वर्ण क्या भेष।।6।।
यह तो तुम शिक्षा दई, मानि लई मन मोर।
गरीबदास कोमल पुरूष, हमरा बदन कठोर।।7।।

।।स्वामी रामानन्द जी को तत्त्वज्ञान समझाना।।

''कबीर बचन''

ए स्वामी तुम स्वर्ग की, छाडो आशा रीति।
गरीबदास तुम कारणैं, उतरे शब्दातीत।।1।।

''रामानन्द बचन''

सुन बच्चा मैं स्वर्ग की, कैसे छाडौं रीति।
गरीबदास गुदरी लगी, जनम जात है बीत।।2।।
च्यार मुक्ति बैकुंठ में, जिन की मोरै चाह।
गरीबदास घर अगम की, कैसे पाऊँ थाह।।3।।
हेम रूप जहाँ धरणि है, रतन जड़े बौह शोभ।
गरीबदास बैकुंठ कूँ, तन मन हमरा लोभ।।4।।
संख चक्र गदा पदम हैं, मोहन मदन मुरारि।
गरीबदास मुरली बजै, सुरग लोक दरबारि।।5।।
दूधौं की नदियां बगैं, सेत वृक्ष सुभान।
गरीबदास मंदल मुक्ति, सुरगापुर अस्थान।।6।।
रतन जड़ाऊ मनुष्य हैं, गण गंधर्व सब देव।
गरीबदास उस धाम की, कैसे छाडूँ सेव।।7।।
ऋग युज साम अथर्वणं, गावैं चारौं वेद।
गरीबदास घर अगम का, कैसे जानौं भेद।।8।।
च्यार मुक्ति चितवन लगी, कैसे बंचू ताहि।
गरीबदास गुप्तार गति, हम कूँ द्यौ समझाय।।9।।
सुरग लोक बैकुंठ है, यासे परै न और।
गरीबदास षट् शास्त्र, च्यार बेद की दौर।।10।।
च्यार बेद गावै तिसैं, सुर नर मुनि मिलाप।

गरीबदास ध्रुव पौर जिस, मिट गये तीनूं ताप।।11।।
प्रहलाद गये तिस लोक कूँ, सुरगा पुरी समूल।
गरीबदास हरि भक्ति की, मैं बंचत हूँ धूल।।12।।
वन्दावन खेले सही, रज केसर समतूल।
गरीबदास उस मुक्ति कूँ, कैसैं जाऊँ भूल।।13।।
नारद ब्रह्मा जिसे रटें, गावैं शेष गणेश।
गरीबदास बैकुंठ से, और परै को देश।।14।।
सहंस अठासी जिसे जपैं, और तेतीसौं सेव।
गरीबदास जासैं परै, और कौन है देव।।15।।

''कबीर बचन''

सुन स्वामी निज मूल गति, कहि समझाऊँ तोहि।
गरीबदास भगवान कूँ, राख्या जगत समोहि।।16।।
तीनि लोक के जीव सब, विषय वास भरमाय।
गरीबदास हम कूँ जपै, तिस कूँ धाम दिखाय।।17।।
जो देखैगा धाम कूँ, सो जानत है मुझ।
गरीबदास तोसे कहूँ, सुन गायत्री गुझ।।18।।
कृष्ण विष्णु भगवान कूँ, जहड़ायें हैं जीव।
गरीबदास त्रिलोक में, काल कर्म सिर शीव।।19।।
पौहमी धरणि अकाश थंभ, चलसी चंदर सूर।
गरीबदास रज बीरज की, कहाँ रहैगी धूर।।20।।
तारायण त्रिलोक सब, चलसी इन्द्र कुबेर।
गरीबदास सब जात हैं, सुरग पाताल सुमेर।।21।।
च्यार मुक्ति बैकुंठ बट, फना हुआ कई बार।
गरीबदास सतलोक को, नहीं जाने संसार।।22।।
कहो स्वामी कित रहोगे, चौदह भुवन बिहंड।
गरीबदास बीजक कह्या, चलत प्राण और पिंड।।23।।
सुन स्वामी एक शक्ति है, अरधंगी ॐकार।
गरीबदास बीजक तहां, अनेक लोक सिंघार।।24।।
जैसे का तैसा रहै, परलो फनां प्रान।
गरीबदास उस की शक्ति कूँ, बार बार कुरबांन।।25।।
कोटि इन्द्र ब्रह्मा जहां, कोटि कृष्ण कैलाश।
गरीबदास शिव कोटि हैं, करो कौन की आश।।26।।
कोटि विष्णु जहां बसत हैं, उस शक्ति के धाम।
गरीबदास गुल बौहत हैं, अलफ बस्त निहकाम।।27।।

शिव शक्ति जासे हुए, अनंत कोटि अवतार।
गरीबदास उस अलफ कूँ, लखै सो होय करतार।।28।।
सतपुरूष हम स्वरूप हैं, तेज पुंज का कंत।
गरीबदास गुल से परे, चलना है बिन पंथ।।29।।
बिना पंथ उस कंत के, धाम चलन है मोर।
गरीबदास गति ना किसी, संख सुरग पर डोर।।30।।
संख सुरग पर हम बसैं, सुन स्वामी यह सैंन।
गरीबदास हम सतपुरूष हैं, यौह गुल फोकट फैंन।।31।।

''स्वामी रामानन्द जी की शंका''

जो तैं कहया सौ मैं लह्या, बिन देखे नहीं धीज।
गरीबदास स्वामी कहैं, कहां अलफ वह बीज।।32।।
हद बेहद कहीं ना कहीं, ना कहीं थरपी ठौर।
गरीबदास निज ब्रह्म की, कौन धाम वह पौर।।33।।

''कबीर परमेश्वर जी ने कहा''

तहां कोटि बैकुंठ हैं, नक सरबर संगीत।
गरीबदास स्वामी सुनो, जात अनन्त जुग बीत।34।।
प्राण पिंड पुर में धसौ, गये रामानंद कोटि।
गरीबदास सर सुरग में, रहो शब्द की ओट।।35।।
सुन स्वामी एक गल गुझ, तिल तारी पल जोरि।
गरीबदास सर गगन में, सूरज अनंत करोरि।।36।।
सहर अमान अनन्त पुर, रिमझिम रिमझिम होय।
गरीबदास उस नगर का, मरम न जानैं कोय।।37।।
सुन स्वामी कैसे लखौ, कहि समझाऊँ तोहि।
गरीबदास बिन पर उड़ै, तन मन शीश न होय।।38।।
रबनपुरी एक चक्र है, तहां धनंजय बाय।
गरीबदास जीते जन्म, याकूं लेत समाय।।39।।
आसन पदम लगाय कर, भिरंग नाद को खैंचि।
गरीबदास अचवन करे, देवदत्त को ऐंचि।40।।
काली ऊनि कुलीन रंग, जाके दो फुंन धार।
गरीबदास कूरंभ सिर, तास करे उद्गार।।41।।
चिस्में लाल गुलाल रंग, तीनि गिरह नभ पेच।
गरीबदास वह नागनी, हौंन न देवै रेच।।42।।

कुंभक रेचक सब करै, ऊन करत उदगार।
गरीबदास उस नागनी कूँ, जीतै कोई खिलार।।43।।
कुंभ भरै रेचक करै, फिर टूटत हैं पौंन।
गरीबदास मंडल गगन, नहीं होत है गौंन।।।44।।
आगे घाटी बंद है, इला–पिंगला दोय।
गरीबदास सुषमन खुलै, तास मिलावा होय।।45।।
चंदा के घर सूर रखि, सूरज के घर चंद।
गरीबदास मधि महल है, तहां वहां अजब आनंद।।46।।
त्रिवैणी का घाट है, गंग जमुन गुपतार।
गरीबदास परबी परखि, बहै सहंस मुख धार।।47।।
मध्य किवारी ब्रह्म दर, वाह खोलत नहीं कोय।
गरीबदास सब जोग की, पैज पछोड़ी होय।।48।।

कबीर परमेश्वर जी ने उपर तो योग साधना बताई है जो रामानन्द जी किया करते थे। फिर कहा है कि उस की आवश्यकता नहीं है। जैसे सुविधा हो वैसे ही बैठ कर नाम जाप करते रहो।

ज्यूं का त्यूं ही बैठि रहो, तजि आसन सब जोग।
गरीबदास पल बीच पद, सर्व सैल सब भोग।।49।।
घंटा टूटै ताल भंग, शंख न सुनिये टेर।
गरीबदास मुरली मुक्ति, सुनि चढ़ी हंस सुमेर।।50।।
खुल्है खिरकी सहज धुंनि, दम नहीं खैंचि अतीत।
गरीबदास एक सैंन है, तजि अनभय छंद गीत।।51।।
धीरै धीरै डाटि हैं, सुरग चढैंगे सोय।
गरीबदास पग पंथ बिन, ले राखौं जहां तोय।।52।।
सुन स्वामी सीढ़ी बिना, चढौ गगन कैलाश।
गरीबदास प्राणायाम तजि, नाहक तोरत श्वास।।53।।
सुन स्वामी यह गति अगम, मनुष्य देव से दूर।
गरीबदास ब्रह्मा विष्णु थके, किन्हे न पाया मूर।।5।।
मूल डार जाके नहीं, है सो अनिन अरंग।
गरीबदास मजीठ चलि, ये सब लोक पतंग।।55।।
सुतह सिधि प्रकाशिया, कहां अरघ असनान।
गरीबदास तप कोटि जुग, पचि हारे सुर ज्ञान।।56।।
कोटि कोटि बैकुंठ हैं, कोटि कोटि शिव शेष।
गरीबदास उस धाम में, ब्रह्मा कोटि नरेश।।57।।

अबादान अमान पुर, चलि स्वामी तहां चाल।
गरीबदास परलौ अनंत, बौहरि न झंपै काल।।58।।
अमर चीर तहां पहरि है, अमर हंस सुख धाम।
गरीबदास भोजन अजर, चल स्वामी निजधाम।।59।।
सतलोक को देखकर, जाना परम प्रभु का भेव।
गरीबदास यह धाण का, है सब देवन का देव।।60।।
तहां वहाँ चित चक्रित भया, देखि फजल दरबार।
गरीबदास सिजदा किया, हम पाये दीदार।।61।।
तुम स्वामी मैं बाल बुद्धि, भर्म कर्म किये नाश।
गरीबदास निज ब्रह्म तुम, हमरै दृढ़ विश्वास।।62।।
सुन्न–बेसुन्न सैं तुम परै, उरैं स हमरै तीर।
गरीबदास सरबंग में, अबिगत पुरूष कबीर।।63।।
कोटि कोटि सिजदे करैं, कोटि कोटि प्रणाम।
गरीबदास अनहद अधर, हम परसैं तुम धाम।।64।।
बोलत रामानंद जी, सुन कबीर करतार।
गरीबदास सब रूप में, तुम हीं बोलन हार।।65।।
तुम साहिब तुम संत हो, तुम सतगुरू तुम हंस।
गरीबदास तुम रूप बिन, और न दूजा अंस।।66।।
मैं भक्ता मुक्ता भया, किया कर्म कुंद नाश।
गरीबदास अबिगत मिले, मेटी मन की बास।।67।।
दोहूँ ठौर है एक तूं, भया एक से दोय।
गरीबदास हम कारणे, उतरे हो मघ जोय।।68।।
बोले रामानंद जी, सुनो कबीर सुभांन।
गरीबदास मुक्ता भये, उधरे पिंड अरु प्राण।।69।।

''कंवारी गाय का दूध पीने का कबीर सागर में प्रमाण''

प्रमाण :- कबीर सागर अध्याय ''ज्ञान सागर'' पष्ठ 74 (80)

(७४) 80 ज्ञानसागर

भिक्षा दै प्रमुदित चलि आई । हस्तामल को खोज न पाई ॥
वाचा बन्ध तहाँ पुनि आयो । काल कष्ट मैं तोर मिटायो ॥
सुन जुलहा मन भयो आनंदा । जिमि चकोर पायो निशि चंदा ॥
ले सुत चलै हर्ष मन कीन्हा । तासों पुनि अस बोलेहि लीन्हा ॥
आगिल जन्म जब होइ तुम्हारा । तुम्हैं पठायब यम तैं न्यारा ॥

साखी–सुत काशी को लै चले, लोग देखन तहँ आव ॥
अन्न पानी भक्ष नहिं, जुलहा शोक जनाव ॥

चौपाई

तब जुलहा मन कीन्ह तिवाना । रामानन्द सौं कहि उत्पाना ॥
मैं सुत पायो बड़ गुणवंता । कारण कौन भखै नहिं संता ॥
रामानन्द ध्यान तब धारा । जुलहा सो तब वचन उचारा ॥
पूर्व जन्म तैं ब्राह्मण जाती । हरि सेवा कीन्हेसि भलि भांती ॥
कछु तुव सेवा हरिकी चूका । तातैं भायो जुलहा को रूपा ॥
प्रीति प्रभू गहि तोरी लीन्हा । तातैं उद्यानमें सुत तोहि दीन्हा ॥

नूरी वचन

हे प्रभु जस कीन्ह्यो तस पायो । आरत हो तुव दर्शन आयो ॥
सो कहिये उपाय गुसाई । बालक क्षुधावंत कछु खाई ॥
रामानंद अस युक्ति विचारा । तुम सुत कोई ज्ञानी अवतारा ॥
बछिया जाही बैल नहिं लागा । सो ले ठाढे करै तेहि आगा ॥

साखी–दूध चलै तेहि थन तें, दूधहि धरौ छिपाइ ॥
क्षुधावंत जब होवै, ता कहँ देउ खवाइ ॥

चौपाई

जुलहा इक बछिया लै आवा । चल्यो दूत कोउ मर्म न पावा ॥
चल्यो दूत जुलहा हरषाना । राख छिपाइ काहू नहिं जाना ॥
सुन भामिनि आगे चल आवा । सो लै जाइ कोई भेद न पावा ॥

अन्य प्रमाण :- सन्त गरीब दास जी की अमर वाणी में।

जिस वाणी के विषय में परमेश्वर कबीर जी ने कहा था। धनी धर्मदास जी ने कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पष्ठ 137 में अंकित की है।

''बारहवें पंथ प्रगट होवे बानी। शब्द हमारे का निर्णय ठानी।।
संवत सतरह सौ पछत्तर होई। ता दिन प्रेम प्रकटे सोई।।''

बारहवां पंथ ''गरीब दास पंथ'' है। सन्त गरीब दास जी का जन्म संवत् 1774 में हुआ था। कबीर सागर में ''कबीर बानी'' अध्याय में पष्ठ 136 पर गलती से 1775 प्रिन्ट है। सन्त गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी की महिमा यथार्थ रूप में कही है जो ''सदग्रन्थ साहेब'' गरीब दास में लिखी है।

पारख के अंग में इस प्रकार लिखा :-

दूध न पीवत न अन्न भखत, न पालने में झूलंत।
दास गरीब कबीर पुरूष, कमल कला फूलंत।।
शिव उतरे शिव पुरी से, अवगति बदन विनोद।
नजर–नजर से मिल गई, लिया ईश कूं गोद।।
सात बार चर्चा करी, बोले बालक बैन।
शिव कूं कर मस्तिक धरा, ला मौमिन एक धेनू।।
अनब्यावर (कंवारी) को दूहत है, दूध दिया तत्काल।
पीव कबीर ब्रह्मगति, तहां शिव भया दयाल।।

कंवारी गाय के दूध से परवरिश लीला का वेद में प्रमाण (ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मन्त्र 9 में)

❑ **जब परमात्मा दूसरी प्रकार का शरीर धारण करके अर्थात् शिशु रूप धारण करके पथ्वी पर प्रकट होता है उस समय उनके पालन की लीला कंवारी गौवों द्वारा होती है। कप्या पढ़ें ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9 में जो निम्न हैं :-**

अभी इमं अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्। सोममिन्द्राय पातवे।।9।।

अभी इमम्–अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् सोमम् इन्द्राय पातवे।

(उत) विशेष कर (इमम्) इस (शिशुम्) बालक रूप में प्रकट (सोमम्) पूर्ण परमात्मा अमर प्रभु की (इन्द्राय) सुखदायक सुविधा के लिए जो आवश्यक पदार्थ शरीर की (पातवे) वद्धि के लिए चाहिए वह पूर्ति (अभी) पूर्ण तरह (अध्न्या धेनवः) जो गाय, सांड द्वारा कभी भी परेशान न की गई हों अर्थात् कुँवारी गायों द्वारा (श्रीणन्ति) परवरिश की जाती है।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा अमर पुरुष जब लीला करता हुआा बालक रूप धारण करके स्वयं प्रकट होता है सुख-सुविधा के लिए जो आवश्यक पदार्थ शरीर वद्धि के लिए चाहिए वह पूर्ति कुँवारी गायों द्वारा की जाती है अर्थात् उस समय (अध्नि धेनु) कुँवारी गाय अपने आप दूध देती है जिससे उस पूर्ण प्रभु की परवरिश होती है।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9

अभी ईमममघ्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् ।
सोममिन्द्राय पातवे ॥९॥

पदार्थः—(इमं) उस (सोमं) सौम्यस्वभाव वाले श्रद्धालु पुरुष को (शिशुं) कुमारावस्था में ही (अभि) सब प्रकार से (अघ्न्याः) अहिंसनीय (धेनवः) गौवें (श्रीणन्ति) तृप्त करती हैं (इन्द्राय) ऐश्वर्य्य की (पातवे) वृद्धि के लिये । (उत) अथवा उक्त श्रद्धालु पुरुष को अहिंसनीय वाणियें ऐश्वर्य्य की प्राप्ति के लिये संस्कृत करती हैं ॥९॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9 की फोटो कापी है जो महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। अनुवाद ठीक नहीं है, फिर भी बहुत स्पष्ट है। इसमें परमेश्वर के दूसरे प्रकार के शरीर की स्थिति का वर्णन है। जिस शरीर में परमात्मा शिशु रूप धारण करके वन (जंगल) में जल पर प्रकट होता है। उस समय उस बालक वेशधारी परमात्मा के पोषण की लीला कंवारी गौवों द्वारा होती है। यही प्रमाण पवित्र ''कबीर सागर'' नामक सद्ग्रंथ में है। जो आदरणीय धर्मदास जी द्वारा लगभग सन् 1500 के आसपास लिखा गया था। कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान सागर'' में पष्ठ 74 पर लिखा है कि परमेश्वर कबीर जी शिशु रूप धारण करके 'लहरतारा' नामक सरोवर में कमल के फूल पर अपने द्यूलोक (सतलोक) से चलकर आकर विराजमान हुए। वहां उन्हें एक निःसन्तान जुलाहा दम्पति घर ले आया। बाल वेशधारी परमेश्वर ने कई दिनों तक कुछ नहीं खाया-पीया। फिर ऋषि रामानन्द जी के बताए अनुसार तथा एक सन्त रूप में प्रकट शिव जी के अनुसार कँवारी गाय लाई गई। परमेश्वर कबीर जी के आशीर्वाद से उस कँवारी गाय (बछिया) ने दूध दिया। वह बालक कविर्देव ने पीया। वह बछिया प्रतिदिन दूध देने लगी। इस प्रकार बालक रूप में प्रकट परमेश्वर की परवरिश की लीला हुई।

प्रमाण के लिए कपया पढ़ें फोटोकापी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान सागर'' के पष्ठ 74 पर (इसी पुस्तक के पष्ठ 23 पर फोटोकॉपी) जिसमें स्पष्ट है कि परमेश्वर कबीर जी ने वही लीला की की थी जिसकी वेद गवाही दे रहे हैं कि परमात्मा ऐसी लीला करता है।

इससे स्वसिद्ध है कि ''कबीर परमेश्वर है'' (Kabir is God)

''नीरू को धन की प्राप्ति''

बालक की प्राप्ति से पूर्व दोनों (पति-पत्नी) मिलकर कपड़ा बुनते थे। 25 दिन बच्चे की चिन्ता में कपड़ा बुनने का कोई कार्य न कर सके। जिस कारण से कुछ कर्ज नीरू पर हो गया। कर्ज मांगने वाले भी उसी पच्चीसवें दिन आ गए तथा बुरी भली कह कर चले गए। कुछ दिन तक कर्ज न चुकाने पर यातना देने की धमकी सेठ ने दे डाली। दोनों पति -पत्नी अति चिन्तित हो गए। अपने बुरे कर्मों को कोसने लगे। एक चिन्ता का समाधान होता है, दूसरी तैयार हो जाती है। दोनों को चिन्तित देख बालक बोला आप चिन्ता न करो। आपको प्रतिदिन एक सोने की मोहर (दस ग्राम स्वर्ण) पालने के बिछोने के नीचे मिलेगी। आप अपना कर्ज उतार कर अपना तथा गऊ का खर्च निकाल कर शेष बचे धन को धर्म कर्म में लगाना। उस दिन के पश्चात् दस ग्राम स्वर्ण प्रतिदिन नीरू के घर परमेश्वर कबीर जी की कपा से मिलने लगा। यह क्रिया एक वर्ष तक चलती रही।

परमेश्वर कबीर जी ने मोहर (सोने का सिक्का) मिलने वाली लीला को गुप्त रखने को कहा था एक दिन नीमा की प्रिय सखी उसी समय नीरू के घर पर आई जिस समय वह कबीर जी को जगाने का प्रयत्न कर रही थी। नीमा की सखी ने वह स्वर्ण मोहर देख ली तथा बोली इतना सोना आपके पास कैसे आया। नीमा ने अपनी प्रिय सखी से सर्व गुप्त भेद कह सुनाया कि हमें तो एक वर्ष से यह मोहर प्रतिदिन प्राप्त हो रही है। हमारे घर पर भाग्यशाली लड़का कबीर जब से आया है। हम तो आनन्द से रहते हैं। अगले दिन ही सोना मिलना बंद हो गया। नीरू तथा नीमा दोनों मिलकर कपड़ा बुनकर अपने परिवार का पालन पोषण करने लगे। बड़ा होकर बालक कबीर भी पिता के काम में हाथ बंटाने लगा। कम समय में अधिक बुनाई करने लगा।

''ऋषि रामानन्द, सेऊ, सम्मन तथा नेकी व कमाली के पूर्व जन्मों का ज्ञान''

ऋषि रामानन्द जी का जीव सत्ययुग में विद्याधर ब्राह्मण था जिसे परमेश्वर सत सुकृत नाम से मिले थे। परमेश्वर की परवरिश की लीला इन्हीं के घर पर हुई थी। इनकी पत्नी का नाम दीपिका था। ये निःसन्तान थे। त्रेता युग में वह वेदविज्ञ नामक ऋषि था जिसको परमेश्वर मुनिन्द्र नाम से शिशु रूप में प्राप्त हुए थे तथा कमाली वाली आत्मा सत्य युग में विद्याधर की पत्नी दीपिका थी। त्रेता युग में सूर्या नाम की वेदविज्ञ ऋषि की पत्नी थी। दोनों जन्मों में ये निःसन्तान थे। उस समय इन्होने परमेश्वर को पुत्रवत् पाला तथा प्यार किया था। उसी पुण्य के कारण ये आत्माऐं परमात्मा को चाहने वाली थी। कलयुग में भी इनका

परमेश्वर के प्रति अटूट विश्वास था। ऋषि रामानन्द व कमाली वाली आत्माऐं ही सत्ययुग में ब्राह्मण विद्याधर तथा ब्राह्मणी दीपिका वाली आत्माऐं थी। आयु 60 वर्ष हो चुकी थी, निःसन्तान थे, उनको ससुराल से आते समय कबीर परमेश्वर एक तालाब में कमल के फूल पर शिशु रूप में मिले थे। यही आत्माऐं त्रेता युग में (वेदविज्ञ तथा सूर्या) ऋषि दम्पति थे। जिन्हें परमेश्वर शिशु रूप में प्राप्त हुए थे। उस समय भी दोनों की आयु लगभग 60 वर्ष थी, निःसन्तान थे। सम्मन तथा नेकी वाली आत्माऐं द्वापर युग में कालु बाल्मीकि तथा उसकी पत्नी गोदावरी थी। जिन्होंने द्वापर युग में परमेश्वर कबीर जी का शिशु रूप में लालन पालन किया था। उसी पुण्य के फल स्वरूप परमेश्वर ने उन्हें अपनी शरण में लिया था। सेऊ (शिव) वाली आत्मा द्वापर में ही एक गंगेश्वर नामक ब्राह्मण का पुत्र गणेश था। जिसने अपने पिता के घोर विरोध के पश्चात् भी मेरे (कबीर जी अर्थात् करुणामय के) उपदेश को नहीं त्यागा था तथा गंगेश्वर ब्राह्मण वाली आत्मा कलयुग में शेख तकी बना। वह द्वापर युग से ही परमेश्वर का विरोधी था। गंगेश्वर वाली आत्मा शेख तकी को काल ब्रह्म ने फिर से प्रेरित किया। जिस कारण से शेख तकी (गंगेश्वर) परमेश्वर कबीर जी का शत्रु बना। भक्त गणेश श्री कालु तथा गोदावरी को माता-पिता तुल्य सम्मान करता था। रो-2 कर कहता था काश आज मेरा जन्म आप (बाल्मीकि) के घर होता। मेरे (पालक) माता-पिता (कालु तथा गोदावरी) भी गणेश से पुत्रवत् प्यार करते थे। उनका मोह भी उस बालक में अत्यधिक हो गया था। इसी कारण से वे फिर से उसी गणेश वाली आत्मा अर्थात् सेऊ के माता-पिता (नेकी तथा सम्मन) बने। सम्मन की आत्मा ही नौशेरखां शहर में नौशेरखाँ राजा बना फिर बलख बुखारे का बादशाह अब्राहिम अधम सुलतान हुआ तब उसको पुनः भक्ति पर लगाया।

''शिशु कबीर की सुन्नत करने का असफल प्रयत्न''

शिशु रूपधारी कबीर देव की सुन्नत करने का समय आया तो पूरा जन समूह सम्बन्धियों का इकट्ठा हो गया। नाई जब शिशु कबीर जी के लिंग को सुन्नत करने के लिए कैंची लेकर गया तो परमेश्वर ने अपने लिंग के साथ एक लिंग और बना लिया। फिर उस सुन्नत करने को तैयार व्यक्ति की आँखों के सामने तीन लिंग और बढ़ते दिखाए कुल पाँच लिंग एक बालक के देखकर वह सुन्नत करने वाला आश्चर्य में पड़ गया। तब कबीर जी शिशु रूप में बोले भईया एक ही लिंग की सुन्नत करने का विधान है ना मुसलमान धर्म में। बोल शेष चार की सुन्नत का क्या करना है? जल्दी बोल! शिशु को ऐसे बोलते सुनकर तथा पाँच लिंग बालक के देख कर नाई ने अन्य उपस्थित व्यक्तियों को बुलाकर व अद्भुत दृश्य दिखाया।

सर्व उपस्थित जन समूह यह देखकर अचम्भित हो गया। आपस में चर्चा करने लगे यह अल्लाह का कैसा कमाल है एक बच्चे को पाँच पुरूष लिंग। यह देखकर बिना सुन्नत किए ही चला गया। बच्चे के पाँच लिंग होने की बात जब नीरू व नीमा को पता चला तो कहने लगे आप क्या कह रहे हो? यह नहीं हो सकता। दोनों बालक के पास गए तो शिशु को केवल एक ही पुरूष लिंग था, पाँच नहीं थे। तब उन दोनों ने उन उपस्थित व्यक्तियों से कहा, आप क्या कह रहे थे देखो कहाँ हैं बच्चे के पाँच लिंग? केवल एक ही है। उपस्थित सर्व व्यक्तियों ने पहले आँखों देखे थे पांच पुरूष लिंग तथा उस समय केवल एक ही लिंग (पेशाब इन्द्री) को देखकर आश्चर्य चकित हो गए। तब शिशु रूप धारी परमेश्वर बोले है भोले लोगों! आप लड़के का लिंग किसलिए काटते हो? क्या लड़के को मुसलमान बनाने में अल्लाह (परमेश्वर) से चूक रह गई जिसे आप ठीक करते हो। क्या आप परमेश्वर से भी बढ़कर हो? यदि आप लड़के के लिंग की चमड़ी आगे से काट कर (सुन्नत करके) उसे मुसलमान बनाते हो तो लड़की को मुसलमान कैसे बनाओगे। यदि मुसलमान धर्म के व्यक्ति अन्य धर्मो के व्यक्तियों से भिन्न होते तो परमात्मा ही सुन्नत करके लड़के को जन्म देता। हे भोले इन्सानों! परमेश्वर के सर्व प्राणी हैं। कोई वर्तमान में मुसलमान समुदाय में जन्मा है तो वह मत्यु उपरान्त हिन्दु धर्म में भी जन्म ले सकता है। इसी प्रकार अन्य धर्मों में जन्में व्यक्ति भी मुसलमान धर्म व अन्य धर्म में जन्म लेते हैं। ये धर्म की दीवारें खड़ी करके आपसी भाई चारा नष्ट मत करो। यह सर्व काल ब्रह्म की चाल है। कलयुग से पहले अन्य धर्म नहीं थे। केवल एक मानव धर्म (मानवता धर्म) ही था। अब कलयुग में काल ब्रह्म ने भिन्न-2 धर्मों में बांट कर मानव की शान्ति समाप्त कर दी है। सुन्नत के समय उपस्थित व्यक्ति बालक मुख से सद्उपदेश सुनकर सब दंग रह गए। माता-नीमा ने बालक के मुख पर कपड़ा ढक दिया तथा बोली ज्यादा मत बोल। काजी सुन लेंगे तो तुझे मार डालेंगे वो बेरहम हैं बेटा। परमेश्वर कबीर जी माता के हृदय के कष्ट से परिचित होकर सोने का बहाना बना कर खर्राटे भरने लगे। तब नीमा ने सुख की सांस ली तथा अपने सर्व सम्बन्धियों से प्रार्थना की आप किसी को मत बताना कि कबीर ने कुछ बोला है। कहीं मुझे बेटे से हाथ धोने पड़ें। छः महीने की आयु में परमेश्वर पैरों चलने लगे।

''ऋषि रामानन्द का उद्धार करना''

''ऋषि रामानन्द स्वामी को गुरु बना कर शरण में लेना''

स्वामी रामानन्द जी अपने समय के सुप्रसिद्ध विद्वान कहे जाते थे। वे द्राविड़ से काशी नगर में वेद व गीता ज्ञान के प्रचार हेतु आए थे। उस समय

काशी में अधिकतर ब्राह्मण शास्त्रविरूद्ध भक्तिविधि से जनता को दिशा भ्रष्ट कर रहे थे। भूत-प्रेतों के झाड़े जन्त्र करके वे काशी शहर के ब्राह्मण अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे थे। स्वामी रामानन्द जी ने काशी शहर में वेद ज्ञान व गीता जी तथा पुराणों के ज्ञान को अधिक महत्व दिया तथा वह भूत-प्रेत उतारने वाली पूजा का अन्त किया अपने ज्ञान के प्रचार के लिए चौदह सौ ऋषि बना रखे थे। {स्वामी रामानन्द जी ने कबीर परमेश्वर जी की शरण में आने के पश्चात् चौरासी शिष्य और बनाए थे जिनमें रविदास जी नीरू-नीमा, गीगनौर (राजस्थान) के राजा पीपा ठाकुर आदि थे कुल शिष्यों की संख्या चौदह सौ चौरासी कही जाती है } वे चौदह सौ ऋषि विष्णु पुराण, शिव पुराण तथा देवी पुराण आदि मुख्य-2 पुराणों की कथा करते थे। प्रतिदिन बावन (52) सभाऐं ऋषि जन किया करते थे। काशी के क्षेत्र को विभाजित करके मुख्य वक्ताओं को प्रवचन करने के लिए स्वामी रामानन्द जी ने कह रखा था। स्वयं भी उन सभाओं में प्रवचन करने जाते थे। स्वामी रामानन्द जी का बोल बाला आस-पास के क्षेत्र में भी था। सर्व जनता कहती थी कि वर्तमान में महर्षि रामानन्द स्वामी तुल्य विद्वान वेदों व गीता जी तथा पुराणों का सार ज्ञाता पथ्वी पर नहीं है। परमेश्वर कबीर जी ने अपने स्वभाव अनुसार अर्थात् नियमानुसार रामानन्द स्वामी को शरण में लेना था। कबीर जी ने सन्त गरीबदास जी को अपना सिद्धान्त बताया है जो सन्त गरीबदास जी (बारहवें पंथ प्रवर्तक, छुड़ानी धाम, हरियाणा वाले) ने अपनी वाणी में लिखा है:-

गरीब जो हमरी शरण है, उसका हूँ मैं दास।
गेल–गेल लाग्या फिरूं जब तक धरती आकाश।।
गोता मारूं स्वर्ग में जा पैठू पाताल।
गरीबदास ढूढत फिरूं अपने हीरे माणिक लाल।
हरदम संगी बिछुड़त नाहीं है महबूब सल्लौना वो।
एक पलक में साहेब मेरा फिरता चौदह भवना वो।
ज्यों बच्छा गऊ की नजर में यूं साई कूँ सन्त।
भक्तों के पीछे फिरै भक्त वच्छल भगवन्त।
कबीर कमाई आपनी कबहूँ न निष्फल जायें।
सात समुन्दर आढे पड़ैं मिले अगाऊ आय।।

सतयुग में विद्याधर नामक ब्राह्मण के रूप में तथा त्रेतायुग में वेदविज्ञ ऋषि के रूप में जन्में स्वामी रामानन्द जी वाले जीव ने परमेश्वर कबीर जी को बालक रूप में प्राप्त किया था। भक्तमति कमाली वाला जीव उस समय दीपिका नाम की विद्याधर ब्राह्मण की पत्नी थी। वही दीपिका वाली आत्मा वेदविज्ञ ब्राह्मण की पत्नी सूर्या थी। जो कलयुग में कमाली बनी। यही दोनों आत्माऐं

त्रेता युग में ऋषि दम्पति (वेदविज्ञ तथा सूर्या) था। उस समय भी परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी शिशु रूप में इन्हें मिले थे। इस के पश्चात् भी इन दोनों जीवों को अनेकों जन्म व स्वर्ग प्राप्ति भी हुई थी। वही आत्माऐं कलयुग में परमेश्वर कबीर जी के समकालीन हुई थी। पूर्व जन्म के सन्त सेवा के पुण्य अनुसार परमेश्वर कबीर जी ने उन पुण्यात्माओं को शरण में लेने के लिए लीला की।

स्वामी रामानन्द जी की आयु 104 वर्ष थी उस समय कबीर देव जी के लीलामय शरीर की आयु 5 (पाँच) वर्ष थी। स्वामी रामानन्द जी महाराज का आश्रम गंगा दरिया के आधा किलो मीटर दूर स्थित था। स्वामी रामानन्द जी प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व गंगा नदी के तट पर बने पंचगंगा घाट पर स्नान करने जाते थे। पाँच वर्षीय कबीर देव ने अढ़ाई (दो वर्ष छः महीने) वर्ष के बच्चे का रूप धारण किया तथा पंच गंगा घाट की पौड़ियों (सीढ़ियों) पर लेट गए। स्वामी रामानन्द जी प्रतिदिन की भांति स्नान करने गंगा दरिया के घाट पर गए। अंधेरा होने के कारण स्वामी रामानन्द जी बालक कबीर देव को नहीं देख सके। स्वामी रामानन्द जी के पैर की खड़ाऊ (लकड़ी का जूता) सीढ़ियों पर लेटे बालक कबीर देव के सिर में लगी। बालक कबीर देव लीला करते हुए रोने लगे जैसे बच्चा रोता है। स्वामी रामानन्द जी को ज्ञान हुआ कि उनका पैर किसी बच्चे को लगा है जिस कारण से बच्चा पीड़ा से रोने लगा है। स्वामी जी बालक को उठाने तथा चुप करने के लिए शीघ्रता से झुके तो उनके गले की माला (एक रूद्राक्ष या तुलसी की लकड़ी के एक मनके की कण्ठी यानि माला जो वैष्णव पंथी पहनते हैं) बालक कबीर देव के गले में डल गई। जिसे अंधेरे के कारण स्वामी रामानन्द जी नहीं देख सके। स्वामी रामानन्द जी ने बच्चे को प्यार से कहा बेटा राम-राम बोल राम नाम से सर्व कष्ट दूर हो जाते हैं। ऐसा कह कर बच्चे के सिर को सहलाया। आशीर्वाद देते हुए सिर पर हाथ रखा। बालक कबीर परमेश्वर अपना उद्देश्य पूरा होने पर चुप होकर पौड़ियों पर बैठ गए।

स्वामी रामानन्द जी ने विचार किया कि वह बच्चा रात्रि में रास्ता भूल जाने के कारण यहाँ आकर सो गया होगा। इसे अपने आश्रम में ले जाऊँगा। वहाँ से इसे इनके घर भिजवा दूँगा। ऐसा विचार करके स्नान करने लगे। परमेश्वर कबीर जी वहाँ से अन्तर्धान हुए तथा अपनी झोंपड़ी में आकर सो गए। कबीर परमेश्वर ने इस प्रकार स्वामी रामानन्द जी को गुरु धारण किया।

''ऋषि विवेकानन्द जी से ज्ञान चर्चा''

स्वामी रामानन्द जी का एक शिष्य ऋषि विवेकानन्द जी बहुत ही अच्छे प्रवचनकर्ता के रूप में प्रसिद्ध थे। ऋषि विवेकानन्द जी को काशी शहर के एक

क्षेत्र का उपदेशक नियुक्त किया हुआ था। उस क्षेत्र के व्यक्ति ऋषि विवेकानन्द जी के धारा प्रवाह प्रवचनों को सुनकर उनकी प्रसंशा किये बिना नहीं रहते थे। उसकी कालोनी में बहुत प्रतिष्ठा बनी थी। प्रतिदिन की तरह ऋषि विवेकानन्द जी विष्णु पुराण से कथा सुना रहे थे। कह रहे थे, भगवान विष्णु सर्वेश्वर हैं, अविनाशी, अजन्मा हैं। सर्व सृष्टि रचनहार तथा पालन हार हैं। इनके कोई जन्मदाता माता-पिता नहीं है। ये स्वयंभू हैं। ये ही त्रेतायुग में अयोध्या के राजा दशरथ जी के घर माता कौशल्या देवी की पवित्र कोख से उत्पन्न हुए थे तथा श्री रामचन्द्र नाम से प्रसिद्ध हुए। समुद्र पर सेतु बनाया, जल पर पत्थर तैराए। लंकापति रावण का वध किया। श्री विष्णु भगवान ने ही द्वापर युग में श्री कृष्णचन्द्र भगवान का अवतार धारकर वासुदेव जी के घर माता देवकी के गर्भ से जन्म लिया तथा कंस, केशि, शिशुपाल, जरासंध आदि दुष्टों का संहार किया। पांच वर्षीय बालक कबीर देव जी भी उस ऋषि विवेकानन्द जी का प्रवचन सुन रहे थे तथा सैंकड़ों की संख्या में अन्य श्रोता गण भी उपस्थित थे। ऋषि विवेकानन्द जी ने अपने प्रवचनों को विराम दिया तथा उपस्थित श्रोताओं से कहा यदि किसी को कोई प्रश्न करना है तो वह निःसंकोच अपनी शंका का समाधान करा सकता है।

बालक कबीर परमेश्वर खड़े हुए तथा ऋषि विवेकानन्द जी से करबद्ध होकर प्रार्थना कि हे ऋषि जी ! आपने भगवान विष्णु जी के विषय में बताया कि ये अजन्मा हैं, अविनाशी है। इनके कोई माता-पिता नहीं हैं। एक दिन एक ब्राह्मण श्री शिव पुराण के रूद्र संहिता अध्याय 6,7 को पढ़ कर श्रोताओं को सुना रहे थे, यह दास भी उस सत्संग में उपस्थित था। शिव पुराण में लिखा है कि निराकार परमात्मा आकार में आया वह सदाशिव, काल रूपी ब्रह्म कहलाया। उसने अपने अन्दर से एक स्त्री प्रकट की जो प्रकृति देवी, अष्टांगी, त्रिदेव जननी, शिवा आदि नामों से जानी जाती है। काल रूपी ब्रह्म ने एक काशी नामक सुन्दर स्थान बनाया वहाँ दोनों शिव तथा शिवा अर्थात् काल रूपी ब्रह्म तथा दुर्गा पति-पत्नी रूप में निवास करने लगे। कुछ समय पश्चात् दोनों के सम्भोग से एक लड़का उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा। इसी प्रकार दोनों के रमण करने से एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम ब्रह्मा रखा तथा कमल के फूल पर डाल कर अचेत कर दिया। फिर अध्याय 9 के अन्त में लिखा है कि ''ब्रह्मा रजगुण है, विष्णु सतगुण है तथा शंकर तमगुण है परन्तु सदा शिव इनसे भिन्न है वह गुणातीत है। यहाँ पर सदाशिव के अतिरिक्त तीन देव श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिवजी भी है। इससे सिद्ध हुआ कि इन त्रिदेवों की जननी दुर्गा अर्थात् प्रकृति देवी है तथा पिता काल ब्रह्म है। इन तीनों प्रभुओं विष्णु आदि का जन्म हुआ है। इनके माता-पिता भी हैं।

एक दिन मैंने एक ब्राह्मण द्वारा श्री देवी पुराण के तीसरे स्कंद में अध्याय 4-5 में सुना था कि जिसमें भगवान विष्णु ने कहा है ''इन प्रकृति देवी अर्थात् दुर्गा को मैंने पहले भी देखा था मुझे अपने बचपन की याद आई है। मैं एक वट वृक्ष के नीचे पालने में लेटा हुआ था। यह मुझे पालने में झूला रही थी। उस समय में बालक रूप में था। प्रकृति देवी के निकट जाकर तीनों देव (त्रिदेव) श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिवजी करबद्ध होकर खड़े हो गए। भगवान विष्णु ने देवी की स्तुति की ''तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह संसार तुम ही से उद्भासित हो रहा है। हमारा अविर्भाव अर्थात् जन्म तथा तिरोभाव अर्थात् मृत्यु होती है। हम अविनाशी नहीं है। तुम अविनाशी हो। प्रकृति देवी हो। भगवान शंकर बोले, हे माता! यदि आप ही के गर्भ से भगवान विष्णु तथा भगवान ब्रह्मा का जन्म हुआ है तो क्या मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर आपका पुत्र नहीं हुआ? अर्थात् मुझे भी जन्म देने वाली तुम ही हो।

हे ऋषि विवेकानन्द जी! आप कह रहे हो कि पुराणों में लिखा है कि भगवान विष्णु के तो कोई माता-पिता नहीं। ये अविनाशी हैं। इन पुराणों का ज्ञान दाता एक श्री ब्रह्मा जी हैं तथा लेखक भी एक ही श्री व्यास जी हैं। जबकि पुराणों में तो भगवान विष्णु नाशवान लिखे हैं। इनके माता-पिता का नाम भी लिखा है। क्यों जनता को भ्रमित कर रहे हो।

गरीब, बेद पढे पर भेद ना जाने, बाचें पुराण अठारा।
जड़ को अंधा पान खिलावें, भूले सिरजनहारा।।

कबीर परमेश्वर जी के मुख कमल से उपरोक्त पुराणों में लिखा उल्लेख सुनकर ऋषि विवेकानन्द अति क्रोधित हो गया तथा उपस्थित श्रोताओं से बोले यह बालक झूठ बोल रहा है। पुराणों में ऐसा नहीं लिखा है। उपस्थित श्रोताओं ने भी सहमति व्यक्त की कि हे ऋषि जी आप सत्य कह रहे हो यह बालक क्या जाने पुराणों के गुढ़ रहस्य को? आप विद्वान पुरूष परम विवेकशील हो। आप इस बच्चे की बातों पर ध्यान न दो। ऋषि विवेकानन्द जी ने पुराणों को उसी समय देखा जिसमें सर्व विवरण विद्यमान था। परन्तु मान हानि के भय से अपने झूठे व्यक्तव्य पर ही दृढ़ रहते हुए कहा हे बालक तेरा क्या नाम है? तू किस जाति में जन्मा है। तूने तिलक लगाया है। क्या तुने कोई गुरु धारण किया है? शीघ्र बताइए।

कबीर परमेश्वर जी ने बोलने से पहले ही श्रोता बोले हे ऋषि जी! इसका नाम कबीर है, यह नीरू जुलाहे का पुत्र है। कबीर जी बोले ऋषि जी मेरा यही परिचय है जो श्रोताओं ने आपको बताया। मैंने गुरु धारण कर रखा है। ऋषि विवेकानन्द जी ने पूछा क्या नाम है तेरे गुरुदेव का? परमेश्वर कबीर जी ने कहा मेरे पूज्य गुरुदेव वही हैं जो आपके गुरुदेव हैं। उनका नाम है पंडित रामानन्द स्वामी। जुलाहे के बालक कबीर परमेश्वर जी के मुख कमल से स्वामी रामानन्द

जी को अपना गुरु जी बताने से ऋषि विवेकानन्द जी ने ज्ञान चर्चा का विषय बदल कर परमेश्वर कबीर जी को बहुत बुरा-भला कहा तथा श्रोताओं को भड़काने व वास्तविक विषय भूलाने के उद्देश्य से कहा देखो रे भाईयो। यह कितना झूठा बालक है। यह मेरे पूज्य गुरुदेव श्री 1008 स्वामी रामानन्द जी को अपना गुरु जी कह रहा है। मेरे गुरु जी तो इन अछूतों के दर्शन भी नहीं करते। शुद्रों का अंग भी नहीं छूते। अभी जाता हूँ गुरु जी को बताता हूँ। भाई श्रोताओं! आप सभी कल सुबह-सुबह स्वामी जी के आश्रम पर आना। इस झूठे की कितनी पिटाई स्वामी रामानन्द जी करेगें? इसने हमारे गुरुदेव का नाम मिट्टी में मिलाया है। सर्व श्रोता बोले यह बालक मूर्ख, झूठा, गंवार है आप विद्वान हो। कबीर जी ने कहा :-

निरंजन धन तेरा दरबार–निरंजन धन तेरा दरबार।
जहां पर तनिक ना न्याय विचार। (टेक)
वैश्या ओढे मल–मल खासा गल मोतियों का हार।
पतिव्रता को मिले न खादी सूखा निरस आहार।।
पाखण्डी की पूजा जग में सन्त को कहे लबार।
अज्ञानी को परम विवेकी, ज्ञानी को मूढ गंवार।।
कह कबीर सुनो भाई साधो सब उल्टा व्यवहार,
सच्चों को तो झूठा बतावें, इन झूठों का एतबार।।
निरंजन धन तेरा दरबार। जहाँ पर तनिक न न्याय विचार।।

बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी अपने घर चले गए। ऋषि विवेकानन्द अपने गुरु रामानन्द स्वामी जी के आश्रम में गया तथा सर्व घटना की जानकारी बताई। हे स्वामी जी! एक छोटी जाति का जुलाहे का लड़का कबीर अपने आप को बड़ा विद्वान् सिद्ध करने के लिए भगवान् विष्णु जी को नाशवान बताता है। हे ऋषि जी! उसने तो हम ब्राह्मणों का घर से निकलना भी दूभर कर दिया है। हमारी नाक काट डाली अर्थात् हमें महा शर्मिन्दा (लज्जित) होना पड़ रहा है। उसने कल भरी सभा में कहा है कि पंडित रामानन्द स्वामी मेरे गुरु जी हैं। मैंने उनसे दीक्षा ले रखी है। उस कबीर ने तिलक भी लगा रखा था जैसा हम वैष्णव सन्त लगाते है। अपने शिष्य विवेकानन्द की बात सुनकर स्वामी रामानन्द जी बहुत क्रोधित होकर बोले हे विवेकानन्द कल सुबह उसे मेरे सामने उपस्थित करो। देखना सर्व के समक्ष उसके झूठ का पर्दाफाश करूंगा।

''कबीर जी द्वारा स्वामी रामानन्द के मन की बात बताना''

दूसरे दिन विवेकानन्द ऋषि अपने साथ नौ व्यक्तियों को लेकर जुलाहा कालोनी में नीरू के मकान के विषय में पूछने लगा कि नीरू का मकान कौन सा

है? कालोनी के एक व्यक्ति को उनके हाव-भाव से लगा कि ये कोई अप्रिय घटना करने के उद्देश्य से आए हैं। उसने शीघ्रता से नीरू को जाकर बताया कि कुछ ब्राह्मण आप के घर आ रहे हैं। उनकी नीयत झगड़ा करने की है। नीमा भी वहीं खड़ी उस व्यक्ति की बातें सुन रही थी उसी समय वे ब्राह्मण गली में नीरू के मकान की ओर आते दिखाई दिए। नीमा समझ गई कि अवश्य कबीर ने इन ब्राह्मणों से ज्ञान चर्चा की है। वे ईर्ष्यालु व्यक्ति मेरे बेटे को मार डालेगें। इतना विचार करके सोए हुए बालक कबीर को जगाया तथा अपनी झोंपड़ी के पीछे ले गई वहाँ लेटा कर रजाई डाल दी तथा कहा बेटा बोलना नहीं है। कुछ व्यक्ति झगड़ा करने के उद्देश्य से अपने घर आ रहे हैं। नीमा अपने घर के द्वार पर गली में खड़ी हो गई। तब तक वे ब्राह्मण घर के निकट आ चुके थे। उन्होंने पूछा क्या नीरू का घर यही है ? नीमा ने उत्तर दिया हाँ ऋषि जी! यही है कहो कैसे आना हुआ। ऋषि विवेकानन्द बोला कहाँ है तुम्हारा शरारती बच्चा कबीर? कल उसने भरी सभा में मेरे गुरुदेव का अपमान किया है। आज उस की पिटाई गुरु जी सर्व के समक्ष करेंगे। इसको सबक सिखाऐंगे। नीमा बोली मेरा बेटा निर्दोष है वह किसी का अपमान नहीं कर सकता। आप मेरे बेटे से ईर्ष्या रखते हो। कभी कोई ब्राह्मण उलहाने (शिकायत) लेकर आता है कभी कोई। आप मेरे बेटे की जान के शत्रु क्यों बने हो? लौट जाइए।

सर्व ब्राह्मण बलपूर्वक नीरू की झोंपड़ी में प्रवेश करके कपड़ों को उठा-2 कर बालक को खोजने लगे। चारपाइयों को भी उल्ट कर पटक दिया। जोर-2 से ऊंची आवाज में बोलने लगे। मात-पिता को दुःखी जानकर बालक रूपधारी कबीर परमेश्वर जी रजाई से निकल कर खड़े हो गए तथा कहा ऋषि जी मैं झोपड़ी के पीछे छुपा हूँ। बच्चे की आवाज सुनकर सर्व ब्राह्मण पीछे गए। वहाँ खड़े कबीर जी को पकड़ कर अपने साथ ले जाने लगे। नीमा तथा नीरू ने विरोध किया। नीमा ने बालक कबीर जी को सीने से लगाकर कहा मेरे बच्चे को मत ले जाओ। मत ले जाओ----- ऐसे कह कर रोने लगी। निर्दयों ने नीमा को धक्का मार कर जमीन पर गिरा दिया। नीमा फिर उठ कर पीछे दौड़ी तथा बालक कबीर जी का हाथ उनसे छुड़वाने का प्रयत्न किया। एक व्यक्ति ने ऐसा थप्पड़ मारा नीमा के मुख व नाक से रक्त टपकने लगा। नीमा रोती हुई गली में अचेत हो गई। नीरू ने भी बच्चे को छुड़वाने की कोशिश की तो उसे भी पीट-2 कर मृत तुल्य कर दिया। दोनों को कॉलोनी वाले उठाकर उनके घर ले गए। बहुत समय पश्चात् दोनों सचेत हुए। बच्चे के वियोग में रो-रोकर दोनों का बुरा हाल था। नीरू चोट के कारण चल-फिरने में असमर्थ जमीन पर गिर कर विलाप कर रहा था। कभी चुप होकर भयभीत हुआ गली की ओर देख रहा था। मन में सोच रहा था कि कहीं वे लौट कर ना आ जाऐं तथा मुझे जान से न मार डालें।

फिर बच्चे को याद करके विलाप करने लगता। मेरे बेटे को मत मारो-मत मारो इसने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा। ऐसे पागल जैसी स्थिति नीरू की हो गई थी। नीमा होश में आती थी फिर अपने बच्चे के साथ हो रहे अत्याचार की कल्पना कर बेहोश (अचेत) हो जाती थी। मुहल्ले (कालोनी) के स्त्री पुरूष उनकी दशा देखकर अति दुःखी थे।

प्रातःकाल का समय था। स्वामी रामानन्द जी गंगा नदी से स्नान करके लौटे ही थे। अपनी कुटिया (Hut) में बैठे थे। जब उन्हें पता चला कि उस बालक कबीर को पकड़ कर ऋषि विवेकानन्द जी की टीम ला रही है तो स्वामी रामानन्द जी ने अपनी कुटिया के द्वार पर कपड़े का पर्दा लगा लिया। यह दिखाने के लिए कि मैं पवित्र जाति का ब्राह्मण हूँ तथा शुद्रों को दीक्षा देना तो दूर की बात है, सुबह-2 तो दर्शन भी नहीं करता।

ऋषि विवेकानन्द जी ने बालक कबीर देव जी को कुटिया के समक्ष खड़ा करके कहा हे गुरुदेव। यह रहा वह झूठा बच्चा कबीर जुलाहा। उस समय ऋषि विवेकानन्द जी ने अपने प्रचार क्षेत्र के व्यक्तियों को विशेष कर बुला रखा था। यह दिखाने के लिए कि यह कबीर झूठ बोलता है। स्वामी रामानन्द जी कहेंगे मैंने इसको कभी दीक्षा नहीं दी। जिस से सर्व उपस्थित व्यक्तियों को यह बात जंच जाएगी कि कबीर पुराणों के विषय में भी झूठ बोल रहा था जिन के बारे में कबीर जी ने लिखा बताया था कि श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा ब्रह्मा जी नाशवान हैं। इनका जन्म होता है तथा मत्यु भी होती है तथा इनकी माता का नाम प्रकति देवी (दुर्गा) है तथा पिता का नाम सदाशिव अर्थात् काल ब्रह्म है। उन सर्व व्यक्तियों ने अपने हाथ मिट्टी से रगड़-रगड़ कर धोए जिन हाथों से कबीर परमेश्वर को पकड़ कर लाए थे तथा सर्व उपस्थित व्यक्तियों के समक्ष बाल्टी में जल भर कर स्नान किया सर्व वस्त्र जो शरीर पर पहन रखे थे वे भी कूट-2 कर धोए।

स्वामी रामानन्द जी ने अपनी कुटिया के द्वार पर खड़े पाँच वर्षीय बालक कबीर से ऊँची आवाज में प्रश्न किया। हे बालक ! आपका क्या नाम है? कौन जाति में जन्म है? आपका भक्ति पंथ (मार्ग) कौन है? उस समय लगभग हजार की संख्या में दर्शक उपस्थित थे। बालक कबीर जी ने भी आधीनतापूर्वक ऊँची आवाज में उत्तर दियाः-

जाति मेरी जगत्गुरु, परमेश्वर है पंथ। गरीबदास लिखित पढे, मेरा नाम निरंजन कंत।।
हे स्वामी सष्टा मैं सष्टि मेरे तीर। दास गरीब अधर बसूँ अविगत सत् कबीर।।
गोता मारूं स्वर्ग में जा पैठूं पाताल। गरीब दास ढूंढत फिरू हीरे माणिक लाल।।

भावार्थ :- कबीर जी ने कहा हे स्वामी रामानन्द जी! परमेश्वर के घर कोई जाति नहीं है। आप विद्वान पुरूष होते हुए वर्ण भेद को महत्व दे रहे हो। धिक्कार

है ऐसी विद्वता को। मेरी जाति व नाम तथा भक्ति पंथ जानना चाहते हो तो सुनों। मेरा नाम वही कविर्देव है जो वेदों में लिखा है जिसे आप जी पढ़ते हो। मैं वह निरंजन (माया रहित) कंत (सर्व का पति) अर्थात् सबका स्वामी हूँ। मैं ही सर्व सष्टि रचनहार (सष्टा) हूँ। यह सष्टि मेरे ही आश्रित (तीर) है। मैं ऊपर सतलोक में निवास करता हूँ। मैं वह अमर अव्यक्त (अविगत सत्) कबीर हूँ। {जिसका वर्णन गीता अध्याय 8 श्लोक सं.20 से 22 में है। हे स्वामी जी गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में गीता ज्ञान दाता अर्थात् काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) अपने विषय में बताता है कि! यह मूर्ख मनुष्य समुदाय मुझ अव्यक्त को कष्ण रूप में व्यक्ति मान रहे हैं। मैं सबके समक्ष प्रकट नहीं होता, यह मनुष्य मेरे इस अश्रेष्ठ अटल नियम से अपरिचित हैं (24) गीता अ. 7 श्लोक 25 में कहा है कि मैं (गीता ज्ञान दाता) अपनी योगमाया (सिद्धिशक्ति) से छिपा हुआ अपने वास्तविक रूप में सब के समक्ष प्रत्यक्ष नहीं होता। यह अज्ञानी जन समुदाय मुझ कष्ण व राम आदि की तरह माता से जन्म न लेने वाले प्रभु को तथा अविनाशी (जो अन्य अव्यक्त परमेश्वर है) को नहीं जानते।

हे स्वामी रामानन्द जी! गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) ने अपने को अव्यक्त कहा है। यह प्रथम अव्यक्त प्रभु हुआ। अब सुनो दूसरे तथा तीसरे अव्यक्त प्रभुओं के विषय में। गीता अध्याय 8 श्लोक 18-19 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य अव्यक्त परमात्मा का वर्णन किया है कहा है :- यह सर्व चराचर प्राणी दिन के समय अव्यक्त परमात्मा से उत्पन्न होते है रात्रि के समय उसी में लीन हो जाते हैं। यह जानकारी काल ब्रह्म ने अपने से अन्य अव्यक्त प्रभु (परब्रह्म) अर्थात् अक्षर ब्रह्म के विषय में दी है। यह दूसरा अव्यक्त (अविगत) प्रभु हुआ तीसरे अव्यक्त (अविगत) परमात्मा अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म के विषय में गीता अध्याय 8 श्लोक 20 से 22 में कहा है कि जिस अव्यक्त प्रभु का गीता अध्याय 8 श्लोक 18-19 में वर्णन किया है वह पूर्ण प्रभु नहीं है। वह भी वास्तव में अविनाशी प्रभु नहीं है। परन्तु उस अव्यक्त (जिसका विवरण उपरोक्त श्लोक 18-19 में है) से भी अति परे दूसरा जो सनातन अव्यक्त भाव है वह परम दिव्य परमेश्वर सब भूतों (प्राणियों) के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता। वह अक्षर अव्यक्त अविनाशी अविगत अर्थात् वास्तव में अविनाशी अव्यक्त प्रभु इस नाम से कहा गया है। उसी अक्षर अव्यक्त की प्राप्ति को परमगति कहते हैं। जिस दिव्य परम परमात्मा को प्राप्त होकर साधक वापस लौट कर इस संसार में नहीं आते (इसी का विवरण गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा श्लोक 16-17 में भी है) वह धाम अर्थात् जिस लोक (धाम) में वह अविनाशी (अव्यक्त) परमात्मा रहता है वह धाम (स्थान) मेरे वाले लोक (ब्रह्मलोक) से श्रेष्ठ है। हे पार्थ! जिस अविनाशी परमात्मा के अन्तर्गत सर्व प्राणी

हैं। जिस सच्चिदानन्द घन परमात्मा से यह समस्त जगत परिपूर्ण है, वह सनातन अव्यक्त परमेश्वर तो अनन्य भक्ति से प्राप्त होने योग्य है (गीता अध्याय 8 श्लोक 20, 21, 22) हे स्वामी रामानन्द जी! मैं वही तीसरी श्रेणी वाला अविगत (अव्यक्त) सत् (सनातन अविनाशी भाव वाला परमेश्वर) कबीर हूँ जिसे वेदों में कविर्देव कहा है। वही कबीर देव मैं कहलाता हूँ।}

हे स्वामी रामानन्द जी! सर्व सृष्टि को रचने वाला (स्रष्टा) मैं ही हूँ। मैं ही आत्मा का आधार जगतगुरु जगत् पिता, बन्धु तथा जो सत्य साधना करके सत्यलोक जा चुके हैं उनको सत्यलोक ले जाने वाला काल ब्रह्म की तरह धोखा न देने वाले स्वभाव वाला कबीर देव (कर्विदेव) मैं ही हूँ। {जिसका प्रमाण अर्थववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 मन्त्र 7 में लिखा है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

योऽथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः अथर्वाणम् पित्तरम् देवबन्धुम् बृहस्पतिम् नमसा अव च गच्छात् त्वम् विश्वेषाम् जनिता यथा सः कविर्देवः न दभायत् स्वधावान्

अनुवाद :– (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बृहस्पतिम्) बड़ा स्वामी अर्थात् परमेश्वर व जगत्गुरु (च) तथा (नमसाव) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्मण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः/ कविर्देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद :- जो अचल अर्थात् अविनाशी जगत पिता भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार बड़ा स्वामी अर्थात् परमेश्वर व जगत्गुरु तथा विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को सुरक्षा के साथ सतलोक गए हुओं को सतलोक ले जाने वाला सर्व ब्रह्मण्डों की रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त काल की तरह धोखा न देने वाले स्वभाव अर्थात् गुणों वाला ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही वह आप कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15

श्लोक 16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, परमेश्वर आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, काल (ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्मण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणंम त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।}

पाँच वर्षीय बालक के मुख से वेदो व गीता जी के गूढ़ रहस्य को सुनकर ऋषि रामानन्द जी आश्चर्य चकित रह गए तथा क्रोधित होकर अपशब्द कहने लगे। वाणी :-

रामानंद अधिकार सुन, जुलहा अक जगदीश।
दास गरीब बिलंब ना, ताहि नवावत शीश।।407।।
रामानंद कूँ गुरू कहै, तन से नहीं मिलात।
दास गरीब दर्शन भये, पैंडे लगी जुं लात।।408।।
पंथ चलत ठोकर लगी, राम नाम कहि दीन।
दास गरीब कसर नहीं, सीख लई प्रवीन।।409।।
आडा पड़दा लाय कर, रामानंद बूझंत।
दास गरीब कुलंग छवि, अधर डाक कूदंत।।410।।
कौन जाति कुल पंथ है, कौन तुम्हारा नाम।
दास गरीब अधीन गति, बोलत है बलि जांव।।411।।
जाति हमारी जगतगुरू, परमेश्वर पद पंथ।
दास गरीब लिखत परै, नाम निंरजन कंत।।412।।
रे बालक सुन दुर्बुद्धि, घट मठ तन आकार।
दास गरीब दरद लग्या, हो बोले सिरजनहार।।413।।
तुम मोमन के पालवा, जुलहे के घर वास।
दास गरीब अज्ञान गति, एता दृढ़ विश्वास।।414।।
मान बड़ाई छाड़ि करि, बोलो बालक बैंन।
दास गरीब अधम मुखी, एता तुम घट फैंन।।415।।
तर्क तलू से बोलते, रामानंद सुर ज्ञान।
दास गरीब कुजाति है, आखर नीच निदान।।423।।
महके बदन खुलास करि, सुन स्वामी प्रवीन।

दास गरीब मनी मरे, मैं आजिज आधीन।।428।।
मैं अबिगत गति से परे, च्यार बेद से दूर।
दास गरीब दशौं दिशा, सकल सिंध भरपूर।।429।।
सकल सिंध भरपूर हूँ, खालिक हमरा नाम।
दास गरीब अजाति हूँ, तैं जूं कह्या बलि जांव।।430।।
जाति पाति मेरे नहीं, बस्ती है बिन थाम।
दास गरीब अनिन गति, तन मेरा बिन चाम।।431।।
नाद बिंद मेरे नहीं, नहीं गुदा नहीं गात।
दास गरीब शब्द सजा, नहीं किसी का साथ।।432।।
सब संगी बिछरूं नहीं, आदि अंत बहु जांहि।
दास गरीब सकल बसूं, बाहर भीतर मांहि।।433।।
ए स्वामी सृष्टा मैं, सृष्टि हमारे तीर।
दास गरीब अधर बसूं, अबिगत सत्य कबीर।।434।।
पौहमी धरणि आकाश में, मैं व्यापक सब ठौर।
दास गरीब न दूसरा, हम समतुल नहीं और।।436।।
हम दासन के दास हैं, करता पुरुष करीम।
दास गरीब अवधूत हम, हम ब्रह्मचारी सीम।।439।।
सुन रामानंद राम मैं, मैं बावन नरसिंह।
दास गरीब सर्व कला, मैं ही व्यापक सरबंग।।440।।
हम से हीं इंद्र कुबेर हैं, ब्रह्मा विष्णु महेश।
दास गरीब धरम ध्वजा, धरणि रसातल शेष।।447।।
सुन स्वामी सति भाख हूँ, झूठ न हमरै रिंच।
दास गरीब हम रूप बिन, और सकल प्रपंच।।453।।
गोता लाऊँ स्वर्ग से, फिर पैठूँ पाताल।
गरीबदास ढूंढत फिरूं, हीरे माणिक लाल।।476।।
इस दरिया कंकर बहुत, लाल कहीं कहीं ठाव।
गरीबदास माणिक चुगैं, हम मुरजीवा नाम।।477।।
मन सोचत रामानन्द, यह बालक नहीं कोई देव।
प्रथम नित नेम करूं, फिर पूछूँ सब भेव।।478।।

स्वामी रामानन्द जी ने कहा :- अरे कुजात! अर्थात् शुद्र! छोटा मुँह बड़ी बात, तू अपने आप को परमात्मा कहता है। तेरा शरीर हाड़-माँस व रक्त निर्मित है। तू अपने आपको अविनाशी परमात्मा कहता है। तेरा जुलाहे के घर जन्म है। फिर भी अपने आप को अजन्मा अविनाशी कहता है तू कपटी बालक है।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा :-

ना मैं जन्मूं ना मरूँ, ज्यों मैं आऊँ त्यों जाऊँ।
गरीबदास सतगुरु भेद से लखो हमारा ढांव।।
सुन रामानन्द राम मैं, मुझसे ही बावन नसिंह।
दास गरीब युग–2 हम से ही हुए कष्ण अभंग।।

भावार्थः- कबीर जी ने उत्तर दिया हे रामानन्द जी, मैं न तो जन्म लेता हूँ ? न मत्यु को प्राप्त होता हूँ। मैं चौरासी लाख प्राणियों के शरीरों में आने (जन्म लेने) व जाने (मत्यु होने) के चक्र से भी रहित हूँ। मेरी विशेष जानकारी किसी तत्वदर्शी सन्त (सतगुरु) के ज्ञान को सुनकर प्राप्त करो। {गीता अध्याय 4 श्लोक 34 तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10-13 में वेद ज्ञान दाता स्वयं कह रहा है कि उस पूर्ण परमात्मा के तत्व (वास्तविक) ज्ञान से मैं अपरिचित हूँ। उस तत्वज्ञान को तत्वदर्शी सन्तों से सुनों उन्हें दण्डवत् प्रणाम करो, अति विनम्र भाव से परमात्मा के पूर्ण मोक्ष मार्ग के विषय में ज्ञान प्राप्त करो, जैसी भक्ति विधि से तत्वदष्टा सन्त बताऐं वैसे साधना करो। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में लिखा है कि श्लोक 16 में जिन दो पुरूषों (भगवानों) 1. क्षर पुरूष अर्थात् काल ब्रह्म तथा 2. अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म का उल्लेख है, वास्तव में अविनाशी परमेश्वर तथा सर्व का पालन पोषण व धारण करने वाला परमात्मा तो उन उपरोक्त दोनों से अन्य ही है। हे स्वामी रामानन्द जी! वह उत्तम पुरूष अर्थात् सर्व श्रेष्ठ प्रभु मैं ही हूँ।}

इस बात को सुनकर स्वामी रामानन्द जी बहुत क्षुब्ध हो गए तथा कहा कि रे बालक! तू निम्न जाति का और छोटा मुँह बड़ी बात। तू अपने आप भगवान बन बैठा। बुरी गालियाँ भी दी। कबीर साहेब बोले कि गुरुदेव! आप मेरे गुरुजी हैं। आप मुझे गाली दे रहे हो तो भी मुझे आनन्द आ रहा है। लेकिन मैं जो आपको कह रहा हूँ, मैं ज्यों का त्यों पूर्णब्रह्म ही हूँ, इसमें कोई संशय नहीं है। इस बात को सुनकर रामानन्द जी ने कहा कि ठहर जा तेरी तो लम्बी कहानी बनेगी, तू ऐसे नहीं मानेगा। मैं पहले अपनी पूजा कर लेता हूँ। रामानन्द जी ने कहा कि इसको बैठाओ। मैं पहले अपनी कुछ क्रिया रहती है वह कर लेता हूँ, बाद में इससे निपटूंगा। स्वामी रामानन्द जी क्या क्रिया करते थे? भगवान विष्णु जी की एक काल्पनिक मूर्ति बनाते थे। सामने मूर्ति दिखाई देने लग जाती थी (जैसे कर्मकाण्ड करते हैं, भगवान की मूर्ति के पहले वाले सारे कपड़े उतार कर, उनको जल से स्नान करवा कर, फिर स्वच्छ कपड़े भगवान ठाकुर को पहना कर गले में माला डालकर, तिलक लगा कर मुकुट रख देते थे।) रामानन्द जी कल्पना कर रहे थे। कल्पना करके भगवान की काल्पनिक मूर्ति बनाई। श्रद्धा से जैसे नंगे पैरों जाकर आप ही गंगा जल लाए हों, ऐसी अपनी भावना बना कर ठाकुर जी की मूर्ति के कपड़े उतारे, फिर स्नान करवाया तथा नए वस्त्र पहना

दिए। तिलक लगा दिया, मुकुट रख दिया और माला (कण्ठी) डालनी भूल गए। कण्ठी न डाले तो पूजा अधूरी और मुकुट रख दिया तो उस दिन मुकुट उतारा नहीं जा सकता। उस दिन मुकुट उतार दे तो पूजा खण्डित। स्वामी रामानन्द जी अपने आप को कोस रहे हैं कि इतना जीवन हो गया मेरा कभी, भी ऐसी गलती जिन्दगी में नहीं बनी थी। प्रभु आज क्या गलती बन गई मुझ पापी से? यदि मुकुट उतारूँ तो पूजा खण्डित। उसने सोचा कि मुकुट के ऊपर से कण्ठी (माला) डाल कर देखता हूँ (कल्पना से कर रहे हैं कोई सामने मूर्ति नहीं है और पर्दा लगा है कबीर साहेब दूसरी ओर बैठे हैं)। मुकुट में माला फँस गई है आगे नहीं जा रही थी। रामानन्द जी ने सोचा अब क्या करूं? हे भगवन्! आज तो मेरा सारा दिन ही व्यर्थ गया। आज की मेरी भक्ति कमाई व्यर्थ गई (क्योंकि जिसको परमात्मा की कसक होती है उसका एक नित्य नियम भी रह जाए तो उसको दर्द बहुत होता है। जैसे इंसान की जेब कट जाए और फिर बहुत पश्चाताप करता है। प्रभु के सच्चे भक्तों को इतनी लगन होती है।) इतने में बालक रूपधारी कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि स्वामी जी माला की घुण्डी खोलो और माला गले में डाल दो। फिर गाँठ लगा दो, मुकुट उतारना नहीं पड़ेगा। रामानन्द जी काहे का मुकुट उतारे था, काहे की गाँठ खोले था। कुटिया के सामने लगा पर्दा भी स्वामी रामानन्द जी ने अपने हाथ से फैंक दिया और ब्राह्मण समाज के सामने उस कबीर परमेश्वर को सीने से लगा लिया। रामानन्द जी ने कहा कि हे भगवन् ! आपका तो इतना कोमल शरीर है जैसे रूई हो आप के शरीर की तुलना में मेरा तो पत्थर जैसा शरीर है। एक तरफ तो प्रभु खड़े हैं और एक तरफ जाति व धर्म की दीवार है। प्रभु चाहने वाली पुण्यात्माऐं धर्म की बनावटी दीवार को तोड़ना श्रेयस्कर समझते हैं। वैसा ही स्वामी रामानन्द जी ने किया। सामने पूर्ण परमात्मा को पाकर न जाति देखी न धर्म देखा, न छुआ-छात, केवल आत्म कल्याण देखा। इसे ब्राह्मण कहते हैं।

बोलत रामानंद जी, हम घर बड़ा सुकाल। गरीबदास पूजा करैं, मुकुट फही जदि माल।।
सेवा करो संभाल कर, सुन स्वामी सुर ज्ञान। गरीबदास सिर मुकुट धरि, माला अटकी जान।।
स्वामी घुंडी खोलि करि, फिर माला गल डार। गरीबदास इस भजन कूँ, जानत है करतार।।
ड्योढी पड़दा दूरि करि, लीया कंठ लगाय। गरीबदास गुजरी बौहत, बदने बदन मिलाय।।

''कबीर देव द्वारा ऋषि रामानन्द के आश्रम में दो रूप धारण करना''

स्वामी रामानन्द जी ने परमेश्वर कबीर जी से कहा कि ''आपने झूठ क्यों बोला?'' कबीर परमेश्वर जी बोले! कैसा झूठ स्वामी जी? स्वामी रामानन्द जी ने कहा कि आप कह रहे थे कि आपने मेरे से नाम ले रखा है। आपने मेरे से उपदेश कब लिया? बालक रूपधारी कबीर परमेश्वर जी बोले एक समय आप

स्नान करने के लिए पँचगंगा घाट पर गए थे। मैं वहाँ लेटा हुआ था। आपके पैरों की खड़ाऊ मेरे सिर में लगी थी! आपने कहा था कि बेटा राम नाम बोलो। रामानन्द जी बोले-हाँ, अब कुछ याद आया। परन्तु वह तो बहुत छोटा बच्चा था (क्योंकि उस समय पाँच वर्ष की आयु के बच्चे बहुत बड़े हो जाया करते थे तथा पाँच वर्ष के बच्चे के शरीर तथा ढ़ाई वर्ष के बच्चे के शरीर में दुगुना अन्तर हो जाता है)। **कबीर परमेश्वर जी ने कहा स्वामी जी देखो, मैं ऐसा था। स्वामी रामानन्द जी के सामने भी खड़े हैं और एक ढाई वर्षीय बच्चे का दूसरा रूप बना कर किसी सेवक की वहाँ पर चारपाई बिछी थी उसके ऊपर विराजमान हो गए।**

रामानन्द जी ने छः बार तो इधर देखा और छः बार उधर देखा। फिर आँखें मलमल कर देखा कि कहीं तेरी आँखें धोखा तो नहीं खा रही हैं। इस प्रकार देख ही रहे थे कि इतने में कबीर परमेश्वर जी का छोटे वाला रूप हवा में उड़ा और कबीर परमेश्वर जी के बड़े पाँच वर्ष वाले स्वरूप में समा गया। पाँच वर्ष वाले स्वरूप में कबीर परमेश्वर जी रह गए।

मन की पूजा तुम लखी, मुकुट माल प्रवेश। गरीबदास गति को लखै, कौन वर्ण क्या भेष।।
यह तो तुम शिक्षा दई, मानि लई मन मोर। गरीबदास कोमल पुरूष, हमरा बदन कठोर।।

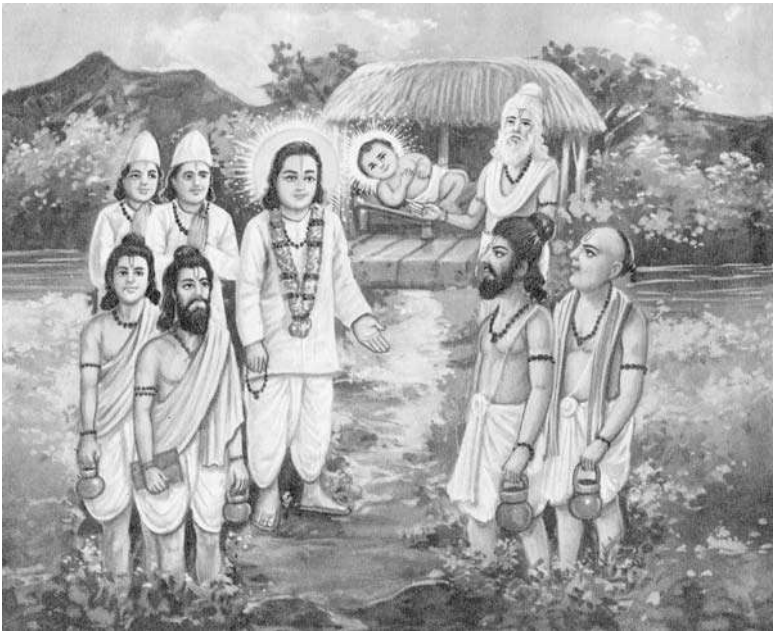

(परमेश्वर कबीर जी द्वारा स्वामी रामानंद जी के आश्रम में दो रूप धारण करना)

रामानन्द जी बोले कि मेरा संशय मिट गया कि आप ही पूर्ण ब्रह्म हो। हे

परमेश्वर! आप को कैसे पहचान सकते हैं। आप किस जाति में उत्पन्न तथा कैसी वेश भूषा में खड़े हो। हम नादान प्राणी आप के साथ वाद-विवाद करके दोषी हो गए, क्षमा करना परमेश्वर कविर्देव, मैं आप का अनजान बच्चा हूँ। रामानन्द जी ने फिर अपनी अन्य शंकाओं का निवारण कराया।

शंका :- हे कविर्देव! मैं राम-राम कोई मन्त्र शिष्यों को जाप करने को नहीं देता। यदि आपने मुझसे दीक्षा ली है तो वह मन्त्र बताईए जो मैं शिष्य को जाप करने को देता हूँ।

उत्तर कबीर देव का :- हे स्वामी जी! आप ओम् नाम जाप करने को देते हो तथा ओ३म् नमों भगवते वासुदेवाय का जाप तथा विष्णु स्तोत्र की आवर्ती की भी आज्ञा देते हो।

शंका :- आपने जो मन्त्र बताया यह तो सही है। एक शंका और है उसका भी निवारण कीजिए। मैं जिसे शिष्य बनाता हूँ उसे एक चिन्ह देता हूँ। वह आप के पास नहीं है।

उत्तर :- बन्दी छोड़ कबीर देव बोले हे गुरुदेव! आप एक रूद्राक्ष की कण्ठी (माला) देते हो गले में पहनने के लिए। यह देखो गुरु जी उसी दिन आपने अपनी कण्ठी गले से निकाल कर मेरे गले में पहनाई थी। यह कहते हुए कविर्देव ने अपने कुर्ते के नीचे गले में पहनी वही कण्ठी (माला) सार्वजनिक कर दी। रामानन्द जी समझ गए यह कोई साधारण बच्चा नहीं है। यह प्रभु का भेजा हुआ कोई तत्वदर्शी आत्मा है। इस से ज्ञान चर्चा करनी चाहिए। चर्चा के विषय को आगे बढाते हुए स्वामी रामानन्द जी बोले हे बालक कबीर! आप अपने आप को परमेश्वर कहते हो परमात्मा ऐसा अर्थात् मनुष्य जैसा थोड़े ही है।

हे कबीर जी! उस स्थान (परम धाम) को यदि एक बार दिखा दे तो मन शांत हो जाएगा। मैं वर्षों से ध्यान योग अर्थात् हठयोग करता हूँ। मैं आकाश में बहुत ऊपर तक सैर कर आता हूँ। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है स्वामी जी! आप समाधिस्थ हो जाइए।

स्वामी रामानन्द जी का हठयोग ध्यान करना (मैडिटेशन करना) नित्य का अभ्यास था, तुरन्त ही समाधिस्थ हो गए। समाधी दशा में स्वामी जी की सूरति (ध्यान) त्रिवेणी तक जाती थी। त्रिवेणी पर तीन रास्ते हो जाते हैं। बाँया रास्ता धर्मराज के लोक तथा ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी के लोकों तथा स्वर्ग लोक आदि को जाता है। दायाँ रास्ता अठासी हजार खेड़ों (नगरियों) की ओर जाता है। सामने वाला रास्ता ब्रह्म लोक को जाता है। वह ब्रह्मरंद्र भी कहा जाता है। स्वामी रामानन्द जी कई जन्मों से साधना करते हुए आ रहे थे। इस कारण से इनका ध्यान तुरन्त लग जाता था। बालक रूपधारी परमेश्वर कबीर जी स्वामी रामानन्द जी को ध्यान में आगे मिले तथा वहाँ का सर्व भेद रामानन्द जी को

बताया। हे स्वामी जी! आप की भक्ति साधना कई जन्मों की संचित है। जिस समय आप शरीर त्याग कर जाओगे इस बाऐं रास्ते से जाओगे इस रास्ते में स्वचालित द्वार (एटोमैटिक खुलने वाले गेट) लगे है। जिस साधक की जिस भी लोक की साधना होती है वह धर्मराय के पास जाकर इसी रास्ते से आगे चलता है उसी लोक का द्वार अपने आप खुल जाता है वह द्वार तुरन्त बन्द हो जाता है। वह प्राणी पुनः उस रास्ते से लौट नहीं सकता।

धर्मराय लोक भी उसी बाई और जाने वाले रास्ते में सर्व प्रथम है। उस धर्मराज के लोक में प्रत्येक की भक्ति अनुसार स्थान तय होता है। आप (स्वामी रामानन्द) जी की भक्ति का आधार विष्णु जी का लोक है। आप अपने पुण्यों को इस लोक में समाप्त करके पुनः पथ्वी लोक पर शरीर धारण करोगे। यह हरहट के कुएं जैसा चक्र आपकी साधना से कभी समाप्त नहीं होगा। यह जन्म मत्यु का चक्र तो केवल मेरे द्वारा बताए तत्वज्ञान द्वारा ही समाप्त होना सम्भव है। परमेश्वर कबीर जी ने फिर कहा हे स्वामी जी! जो सामने वाला द्वार है यह ब्रह्मरन्द्र है। यह वेदों में लिखे किसी भी मन्त्र जाप से नहीं खुलता यह तो मेरे द्वारा बताए सत्यनाम (जो दो मन्त्र का होता है एक ॐ मन्त्र तथा दूसरा तत् यह तत् सांकेतिक है वास्तविक नाम मन्त्र तो उपदेश लेने वाले को बताया जाएगा) के जाप से खुलता है। ऐसा कह कर परमेश्वर कबीर जी ने सत्यनाम (दो मन्त्रों के नाम) का जाप किया। तुरन्त ही सामने वाला द्वार (ब्रह्मरन्द्र) खुल गया। परमेश्वर कबीर जी अपने साथ स्वामी रामानन्द जी की आत्मा को लेकर उस ब्रह्मरन्द्र में प्रवेश कर गए। पश्चात् वह द्वार तुरन्त बन्द हो गया। उस द्वार से निकल कर लम्बा रास्ता तय किया ब्रह्मलोक में गए आगे फिर तीन रास्ते हैं। बाई ओर एक रास्ता महास्वर्ग में जाता है। उस महास्वर्ग में नकली (Duplicate) सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी लोकों की रचना काल ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा से करा रखी है। प्राणियों को धोखा देने के लिए। उन सर्व नकली लोकों को दिखा कर वापस आए। दाई और सप्तपुरी, ध्रुव लोक आदि हैं। सामने वाला द्वारा वहाँ जाता है जहाँ पर गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म अपनी योग माया से छुपा रहता है। वह तीन स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान क्षेत्र है। जिसमें काल ब्रह्म तथा दुर्गा (प्रकति) देवी पति-पत्नी रूप में साकार रूप में रहते हैं। उस समय जिस पुत्र का जन्म होता है वह रजोगुण युक्त होता है। उसका नाम ब्रह्मा रख देता है उस बालक को युवा होने तक अचेत रखकर परवरिश करते हैं। युवा होने पर काल ब्रह्म स्वयं विष्णु रूप धारण करके अपनी नाभी से कमल का फूल प्रकट करता है। उस कमल के फूल पर युवा अवस्था प्राप्त होने पर ब्रह्मा जी को रख कर सचेत कर देता है। इसी प्रकार एक सतोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें दोनों (दुर्गा व काल ब्रह्म) पति-पत्नी रूप में रह कर

अन्य पुत्र सतोगुण प्रधान उत्पन्न करते हैं। उसका नाम विष्णु रखते हैं। उसे भी युवा होने तक अचेत रखते हैं। शेष शय्या पर सचेत करते हैं। अन्य शेषनाग ब्रह्म ही अपनी शक्ति से उत्पन्न करता है। इसी प्रकार एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उस में वे दोनों (दुर्गा तथा काल ब्रह्म) पति-पत्नी व्यवहार से तमोगुण प्रधान पुत्र उत्पन्न करते हैं। उसका नाम शिव रखते हैं। उसे भी युवा अवस्था प्राप्त होने तक अचेत रखते हैं। युवा होने पर तीनों को सचेत करके इनका विवाह, प्रकृति (दुर्गा) द्वारा उत्पन्न तीनों लड़कियों से करते हैं। इस प्रकार यह काल ब्रह्म अपना सृष्टि चक्र चलाता है।

परमेश्वर कबीर जी ने स्वामी रामानन्द जी को वह रास्ता दिखाया तथा इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में फिर तीन रास्ते है बाई ओर फिर नकली सतलोक अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी लोक की रचना की हुई है। दाई ओर बारह भक्तों का निवास स्थान बनाया है, जिनको अपना ज्ञान प्रचारक बनाकर जनता को शास्त्र विरुद्ध ज्ञान पर आधारित कराता है। सामने वाला द्वार तप्त शिला की ओर जाता है। जहाँ पर यह काल ब्रह्म एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सुक्ष्म शरीरों को तपाकर उनसे मैल निकाल कर खाता है। उस काल ब्रह्म के उस लोक के ऊपर एक द्वार है जो परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के सात संख ब्रह्मण्डों में खुलता है। परब्रह्म के ब्रह्मण्डों के अन्तिम सिरे पर एक द्वार है जो सत्यपुरूष (परम अक्षर ब्रह्म) के लोक सत्यलोक की भंवर गुफा में खुलता है। फिर आगे सत्यलोक है जो वास्तविक सत्यलोक है। सत्यलोक में पूर्ण परमात्मा कबीर जी अन्य तेजोमय मानव सदृश शरीर में एक गुम्बद (गुम्मज) में एक ऊँचे सिंहासन पर विराजमान हैं। वहाँ सत्यलोक की सर्व वस्तुऐं तथा सत्यलोक वासी सफेद प्रकाश युक्त हैं। सत्यपुरूष के शरीर का प्रकाश अत्यधिक सफेद है। सत्यपुरूष के एक रोम कूप का प्रकाश एक लाख सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के मिले जुले प्रकाश से भी अधिक है।

परमेश्वर कबीर जी स्वामी रामानन्द जी की आत्मा को साथ लेकर सत्यलोक में गए। वहाँ सर्व आत्माओं का भी मानव सदृश शरीर है। उनके शरीर का भी सफेद प्रकाश है। परन्तु सत्यलोक निवासियों के शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के प्रकाश के समान है। बालक रूपधारी कविर्देव ने अपने ही अन्य स्वरूप पर चंवर किया। जो स्वरूप अत्यधिक तेजोमय था तथा सिंहासन पर एक सफेद गुम्बद में विराज मान था। स्वामी रामानन्द जी ने सोचा कि पूर्ण परमात्मा तो यह है जो तेजोमय शरीर युक्त है। यह बाल रूपधारी आत्मा कबीर यहाँ का अनुचर अर्थात् सेवक होगा। स्वामी रामानन्द जी ने इतना विचार ही किया था। उसी समय सिंहासन पर विराजमान तेजोमय शरीर युक्त परमात्मा सिंहासन त्यागकर खड़ा हो गया तथा बालक कबीर जी को सिंहासन पर बैठने के लिए

प्रार्थना की नीचे से रामानन्द जी के साथ गया बालक कबीर जी उस सिंहासन पर विराजमान हो गए तथा वह तेजोमय शरीर धारी प्रभु बालक के सिर पर श्रद्धा से चंवर करने लगा। रामानन्द जी ने सोचा यह परमात्मा इस बच्चे पर चंवर करने लगा। यह बालक यहां का नौकर (सेवक) नहीं हो सकता। इतने में तेजोमय शरीर वाला परमात्मा उस बालक कबीर जी के शरीर में समा गया। बालक कबीर जी का शरीर उसी प्रकार उतने ही प्रकाश युक्त हो गया जितना पहले सिंहासन पर बैठे पुरूष (परमेश्वर) का था।

इतनी लीला करके स्वामी रामानन्द जी की आत्मा को वापस शरीर में भेज दिया। महर्षि रामानन्द जी ने आँखे खोल कर देखा तो बालक रूपधारी परमेश्वर कबीर जी को सामने भी बैठा पाया। महर्षि रामानन्द जी को पूर्ण विश्वास हो गया कि यह बालक कबीर जी ही परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् वासुदेव (कुल का मालिक) है। दोनों स्थानों (ऊपर सत्यलोक में तथा नीचे पथ्वी लोक में) पर स्वयं ही लीला कर रहा है। यही परम दिव्य पुरूष अर्थात् आदि पुरूष है। सत्यलोक में जहाँ पर यह परमात्मा मूल रूप में निवास करता है वह सनातन परमधाम है। परमेश्वर कबीर जी ने इसी प्रकार सन्त गरीबदास जी महाराज छुड़ानी (हरियाणा) वाले को सर्व ब्रह्मण्डों को प्रत्यक्ष दिखाया था। उनका ज्ञान योग खोल दिया था तथा परमेश्वर ने गरीबदास जी महाराज को स्वामी रामानन्द जी के विषय में बताया था कि किस प्रकार मैंने स्वामी जी को शरण में लिया था। महाराज गरीबदास जी ने अपनी अमतवाणी में उल्लेख किया है।

तहाँ वहाँ चित चक्रित भया, देखि फजल दरबार। गरीबदास सिजदा किया, हम पाये दीदार।।
बोलत रामानन्द जी सुन कबीर करतार। गरीबदास सब रूप में तुम ही बोलनहार।।
दोहु ठोर है एक तू, भया एक से दोय। गरीबदास हम कारणें उतरे हो मग जोय।।
तुम साहेब तुम सन्त हो तुम सतगुरु तुम हंस। गरीबदास तुम रूप बिन और न दूजा अंस।।
तुम स्वामी मैं बाल बुद्धि भ्रम कर्म किये नाश। गरीबदास निज ब्रह्म तुम, हमरै दढ विश्वास।।
सुन बे सुन से तुम परे, ऊरै से हमरे तीर। गरीबदास सरबंग में, अबिगत पुरूष कबीर।।
कोटि–2 सिजदा किए, कोटि–2 प्रणाम। गरीबदास अनहद अधर, हम परसे तुम धाम।।
बोले रामानन्द जी, सुनों कबीर सुभान। गरीबदास मुक्ता भये, उधरे पिण्ड अरू प्राण।।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ :- सत्यलोक में तथा काशी नगर में पथ्वी पर दोनों स्थानों पर परमात्मा कबीर जी को देख कर स्वामी रामानन्द जी ने कहा है कबीर परमात्मा आप दोनों स्थानों पर लीला कर रहे हो। आप ही निज ब्रह्म अर्थात् गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि उत्तम पुरूष अर्थात् वास्तविक परमेश्वर तो क्षर पुरूष (काल ब्रह्म) तथा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) से अन्य ही है। वही परमात्मा कहा जाता है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण पोषण करता है वह परम अक्षर ब्रह्म आप ही हैं। आप ही की शक्ति से सर्व प्राणी गति

कर रहे हैं। मैंने आप का वह सनातन परम धाम आँखों देखा है तथा वास्तविक अनहद धुन तो ऊपर सत्यलोक में है। ऐसा कह कर स्वामी रामानन्द जी ने कबीर परमेश्वर के चरणों में कोटि-2 प्रणाम किया तथा कहा आप परमेश्वर हो, आप ही सतगुरु तथा आप ही तत्वदर्शी सन्त हो आप ही हंस अर्थात् नीर-क्षीर को भिन्न-2 करने वाले सच्चे भक्त के गुणों युक्त हो। कबीर भक्त नाम से यहाँ पर प्रसिद्ध हो वास्तव में आप परमात्मा हो। मैं आप का भक्त आप मेरे गुरु जी।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे स्वामी जी ! गुरु जी तो आप ही रहो। मैं आप का शिष्य हुँ। यह गुरु परम्परा बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है। यदि आप मेरे गुरु जी रूप में नहीं रहोगे तो भविष्य में सन्त व भक्त कहा करेंगे कि गुरु बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है। सीधा ही परमात्मा से ही सम्पर्क करो। ''कबीर'' ने भी गुरु नहीं बनाया था।

हे स्वामी जी! काल प्रेरित व्यक्ति ऐसी-2 बातें बना कर श्रद्धालुओं को भक्ति की दिशा से भ्रष्ट किया करेंगे तथा काल के जाल में फाँसे रखेंगे। इसलिए संसार की दृष्टि में आप मेरे गुरु जी की भूमिका कीजिये तथा वास्तव में जो साधना की विधि मैं बताऊँ आप वैसे भक्ति कीजिए। स्वामी रामानन्द जी ने कबीर परमेश्वर जी की बात को स्वीकार किया। कबीर परमेश्वर जी एक रूप में स्वामी रामानन्द जी को तत्वज्ञान सुना रहे थे तथा अन्य रूप धारण करके कुछ ही समय उपरान्त अपने घर पर आ गए। क्योंकि वहाँ नीरू तथा नीमा अति चिन्तित थे। बच्चे को सकुशल घर लौट आने पर नीरू तथा नीमा ने परमेश्वर का शुक्रिया किया। अपने बच्चे कबीर को सीने से लगा कर नीमा रोने लगी तथा बच्चे को अपने पति नीरू के पास ले गई। नीरू ने भी बच्चे कबीर से प्यार किया। नीरू ने पूछा बेटा! आप को उन ब्राह्मणों ने मारा तो नहीं? कबीर जी बोले नहीं पिता जी! स्वामी रामानन्द जी बहुत अच्छे हैं। मैंने उनको गुरु बना लिया है। उन्होंने मुझको सर्व ब्राह्मण समाज के समक्ष सीने से लगा कर कहा यह मेरा शिष्य है। आज से मैं सर्व हिन्दु समाज के सर्व जातियों के व्यक्तियों को शिष्य बनाया करूँगा। माता-पिता (नीरू तथा नीमा) अति प्रसन्न हुए तथा घर के कार्य में व्यस्त हो गए।

स्वामी रामानन्द जी ने कहा, हे कबीर जी! हम सर्व की बुद्धि पर पत्थर पड़े थे आपने ही अज्ञान रूपी पत्थरों को हटाया है। बड़ें पुण्यकर्मों से आपका दर्शन सुलभ हुआ है।

"शेखतकी पीर ने नहीं पहचाना परमेश्वर को"

एक बार दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोधी को जलन का रोग हो गया। जलन का रोग ऐसा होता है जैसे किसी का आग में हाथ जल जाए उसमें पीड़ा

बहुत होती है। जलन के रोग में कहीं से शरीर जला दिखाई नहीं देता है परन्तु पीड़ा अत्यधिक होती है। उसको जलन का रोग कहते हैं। जब प्राणी के पाप बढ़ जाते हैं तो दवाई भी व्यर्थ हो जाती हैं। दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लौधी के साथ भी वही हुआ। सभी प्रकार की औषधी सेवन की। बड़े-बड़े वैद्य बुला लिए और मुँह बोला इनाम रख दिया कि मुझे ठीक कर दो, जो माँगोगे वही दूँगा। दुःख में व्यक्ति पता नहीं क्या संकल्प कर लेता है? सर्व उपाय निष्फल हुए। उसके बाद अपने धार्मिक काजी, मुल्ला, संतों आदि सबसे अपना आध्यात्मिक इलाज करवाया। परन्तु सब असफल रहा। {जब हम दुःखी हो जाते हैं तो हिन्दू और मुसलमान नहीं रहते। फिर तो कहीं पर रोग कट जाए, वही पर चले जाते हैं। वैसे तो हिन्दू कहते हैं कि मुसलमान बुरे और मुसलमान कहते हैं कि हिन्दू बुरे और बीमारी हो जाए तो फिर हिन्दू व मुसलमान नहीं देखते। जब कष्ट आए तब तो कोई बुरा नहीं। बुरा कोई नहीं है। जो मुसलमान बुरे हैं वे बुरे हैं और जो हिन्दू बुरे हैं वे बुरे भी हैं और दोनों में अच्छे भी है। हर मज़हब में अच्छे और बुरे व्यक्ति होते हैं। लेकिन हम जीव हैं। हमारी कोई जाति व्यवस्था नहीं है। हमारी जीव जाति है हमारा धर्म मानव है-परमात्मा को पाना है।} हिन्दू वैद्य तथा आध्यात्मिक संत भी बुलाए, स्वयं भी उनसे जाकर मिला और सबसे आशीर्वाद व जंत्र-मंत्र करवाऐं परन्तु सर्व चेष्टा निष्फल रही।

किसी ने बताया कि काशी शहर में एक कबीर नाम का महापुरूष है। यदि वह कृपा कर दे तो आपका दुःख निवारण अवश्य हो जाएगा।

जब बादशाह सिकंदर ने सुना कि एक काशी के अन्दर महापुरूष रहता है तो उसको कुछ-कुछ याद आया कि वह तो नहीं है जिसने गाय को भी जीवित कर दिया था। हजारों अंगरक्षकों सहित दिल्ली से काशी के लिए चल पड़ा। बीर सिंह बघेला काशी नरेश पहले ही कबीर साहेब की महिमा और ज्ञान सुनकर कबीर साहेब के शिष्य हो चुके थे और पूर्ण रूप से अपने गुरुदेव में आस्था रखते थे। उनको कबीर साहेब की महिमा का ज्ञान था क्योंकि कबीर परमेश्वर वहाँ पर बहुत लीलाएँ कर चुके थे। जब सिकंदर लोधी बनारस(काशी) गया तथा बीर सिंह से कहा बीर सिंह मैं बहुत दुःखी हो गया हूँ। अब तो आत्महत्या ही शेष रह गई है। यहाँ पर कोई कबीर नाम का संत है? आप तो जानते होंगे कि वह कैसा है? इतनी बात सिकंदर बादशाह के मुख से सुनी थी। काशी नरेश बीर सिंह की आँखों में पानी भर आया और कहा कि अब आप ठीक स्थान पर आ गए। अब आपके दुःख का अंत हो जाएगा। बादशाह सिकंदर ने पूछा कि ऐसी क्या बात है? बीर सिंह ने कहा कि वह कबीर जी स्वयं भगवान आए हुए हैं। परमेश्वर स्वरूप हैं। यदि उनकी दयादृष्टि हो गई

तो आपका रोग ठीक हो जाएगा। राजा सिकंदर ने कहा कि जल्दी बुला दो। काशी नरेश बीरदेवसिंह बघेल ने विनम्रता से प्रार्थना की कि आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, आदेश भिजवा देता हूँ। लेकिन ऐसा सुना है कि संतो को बुलाया नहीं करते। यदि वे आ भी गए और रजा नहीं बख्शी तो भी आने का कोई लाभ नहीं। बाकी आपकी इच्छा। सिकंदर ने कहा कि ठीक है मैं स्वयं ही चलता हूँ। इतनी दूर आ गया हूँ वहाँ पर भी अवश्य चलूँगा।

"सिकंदर लोधी बादशाह का असाध्य जलन का रोग ठीक करना"

शाम का समय हो गया था। बीर सिंह को पता था कि इस समय साहेब कबीर जी अपने औपचारिक गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में ही होते हैं। यह समय परमेश्वर कबीर जी का वहाँ मिलने का है। बीर देव सिंह बघेल काशी नरेश तथा सिकंदर लोधी दिल्ली के बादशाह दोनों, स्वामी रामानन्द जी के आश्रम के सामने खड़े हो गए। वहाँ जाकर पता चला कि कबीर साहेब अभी नहीं आए हैं, आने ही वाले हैं। बीर सिंह अन्दर नहीं गए। बाहर सेवक खड़ा था उससे ही पूछा। सिकंदर ने कहा कि ''तब तक आश्रम में विश्राम कर लेते हैं।'' राजा बीर सिंह ने स्वामी रामानन्द जी के द्वारपाल सेवक से कहा कि रामानन्द जी से प्रार्थना करो कि दिल्ली के बादशाह सिकंदर लौधी आपके दर्शन भी करना चाहते हैं और साहेब कबीर का इन्तजार भी आपके आश्रम में ही करना चाहते है। सेवक ने अन्दर जाकर रामानन्द जी को बताया कि दिल्ली के बादशाह सिकंदर लौधी आए हैं। रामानन्द जी मुसलमानों से घृणा करते थे। रामानन्द जी ने कहा कि मैं इन मलेच्छों (मुसलमानों) की शक्ल भी नहीं देखता। कह दो कि बाहर बैठ जाएगा। जब सिकंदर लोधी ने यह सुना तो क्रोध में भरकर (क्योंकि राजा में अहंकार बहुत होता है और वह भी दिल्ली का बादशाह) कहा कि यह दो कौड़ी का महात्मा दिल्ली के बादशाह का अनादर कर सकता है तो साधारण मुसलमान के साथ यह कैसा व्यवहार करता होगा? इसको मज़ा चखा दूं। रामानन्द जी अलग आसन पर बैठे थे। सिकंदर लोधी ने जाकर रामानन्द जी की गर्दन तलवार से काट दी। वापिस चल पड़ा और फिर उसको याद आया कि मैं जिस कार्य के लिए आया था? और वह काम अब पूरा नहीं होगा। कहा कि बीर सिंह देख मैं क्या जुल्म कर बैठा? मेरे बहुत बुरे दिन हैं। चाहता हूँ अच्छा करना और होता है बुरा। कबीर साहेब के गुरुदेव की हत्या कर दी। अब वे कभी भी मेरे ऊपर दयादृष्टि नहीं करेंगे। मुझे तो यह दुःख भोग कर ही मरना पड़ेगा। मैं बहुत पापी जीव हूँ। यह कहता हुआ आश्रम से बाहर की ओर चल पड़ा। बीर सिंह अपने बादशाह के आगे क्या बोलता। ज्योंही आश्रम से बाहर आए, कबीर साहेब आते दिखाई

दिए। बीर सिंह ने कहा कि महाराज जी मेरे गुरुदेव कबीर साहेब आ गए। ज्योंही कबीर साहेब थोड़ी दूर रह गए बीर सिंह ने जमीन पर लेटकर उनको दण्डवत् प्रणाम किया। अब सिकंदर बहुत घबराया हुआ था। {अगर उसने यह जुल्म नहीं किया होता तो वह दण्डवत् नहीं करता और दण्डवत् नहीं करता तो साहेब उस पर रजा भी नहीं बख्श पाते क्योंकि यह नियम होता है।

'अति आधीन दीन हो प्राणी, ताते कहिए ये अकथ कहानी।''
उच्चे पात्र जल ना जाई, ताते नीचा हुजै भाई।
आधीनी के पास हैं पूर्ण ब्रह्म दयाल। मान बड़ाई मारिए बे अदबी सिर काल।।

कबीर परमेश्वर ने यहाँ पर एक तीर से दो शिकार किए। स्वामी रामानंद जी में धर्म भेद-भाव की भावना शेष थी, वह भी निकालनी थी। रामानंद जी मुसलमानों को हिन्दूओं से अभी भी भिन्न तथा हेय मानते थे। सिकंदर में अहंकार की भावना थी। यदि वह नम्र नहीं होता तो कबीर साहेब कृपा नहीं करते तथा सिकंदर स्वस्थ नहीं होता} बीर सिंह को देखकर तथा डरते हुए सिकंदर लौधी ने भी दण्डवत् प्रणाम किया। कबीर परमेश्वर जी ने दोनों के सिर पर हाथ रखा और कहा कि दो-2 नरेश आज मुझ गरीब के पास कैसे आए हैं? मुझ गरीब को कैसे दर्शन दिए? परमेश्वर कबीर जी ने अपना हाथ उठाया भी नहीं था कि सिकंदर का जलन का रोग समाप्त हो गया। सिकंदर लोधी की आँखों में पानी आ गया। (संत के सामने यह मन भाग जाता है और ये आत्मा ऊपर आ जाती है क्योंकि परमात्मा आत्मा का साथी है। ''अन्तर्यामी एक तू आत्म के आधार।'' आत्मा का आधार कबीर भगवान है।) सिकंदर लोधी ने पैर पकड़ कर छोड़े नहीं और रोता ही रहा। परमेश्वर जानी जान होते हुए भी कबीर साहेब ने सिकन्दर लोधी दिल्ली के बादशाह से पूछा क्या बात है?। सिकंदर ने कहा कि दाता मैंने घोर अपराध कर दिया। आप मुझे क्षमा नहीं कर सकते। जिस काम के लिए मैं आया था वह असाध्य रोग तो आपके स्पर्श मात्र से ठीक हो गया। इस पापी को क्षमा कर दो। कबीर साहेब ने कहा क्षमा कर दिया। यह तो बता कि क्या हुआ? सिकंदर ने कहा कि आप क्षमा कर नहीं सकते। मैंने ऐसा पाप किया है। कबीर साहेब ने कहा कि क्षमा कर दिया। सिकंदर ने फिर कहा कि सच में माफ कर दिया? कबीर साहेब ने कहा कि हाँ क्षमा कर दिया। अब बता क्या कष्ट है? सिकंदर ने कहा कि दाता मुझ पापी ने गुस्से में आकर आपके गुरुदेव का सिर कलम कर दिया और फिर सारी कहानी बताई। कबीर साहेब बोले कोई बात नहीं। जो हुआ प्रभु इच्छा से ही हुआ है आप स्वामी रामानन्द जी का अन्तिम संस्कार करवा कर जाना नहीं तो आप निंदा के पात्र बनोगे। परमेश्वर कबीर साहेब जी नाराज नहीं हुए। सिकंदर लोधी ने बीर सिंह के मुख की और देखा और कहा

कि बीर सिंह यह तो वास्तव में भगवान है। देखिए मैंने गुरुदेव का सिर काट दिया और कबीर जी को क्रोध भी नहीं आया। बीर सिंह चुप रहा और साथ-साथ हो लिया और मन ही मन में सोचता है कि अभी क्या है, अभी तो और देखना। यह तो शुरूआत है।

"स्वामी रामानन्द जी को जीवित करना"

परमेश्वर कबीर जी ने अन्दर जाकर देखा रामानंद जी का धड़ कहीं पर और सिर कहीं पर पड़ा था। शरीर पर चादर डाल रखी थी। कबीर साहेब ने अपने गुरुदेव के मंत शरीर को दण्डवत् प्रणाम किया और चरण छुए तथा कहा कि गुरुदेव उठो। दिल्ली के बादशाह आपके दर्शनार्थ आए हैं। एक बार उठना। दूसरी बार ही कहा था, सिर अपने आप उठकर धड़ पर लग गया और रामानन्द जी जीवित हो गए। "बोलो सतगुरु देव की जय"

"सर्व मनुष्य एक प्रभु के बच्चे हैं। जो दो मानता है, वह अज्ञानी है"

रामानंद जी के शरीर से आधा खून और आधा दूध निकला हुआ था। जब साहेब कबीर से स्वामी रामानन्द जी ने कारण पूछा तो साहेब ने बताया कि स्वामी जी आपके अन्दर यह थोड़ी-सी कसर और रह गई है कि अभी तक आप हिन्दू और मुसलमान को दो समझते हो। इसलिए आधा खून और आधा दूध निकला है। आप अन्य जाति वालों को अपना साथी समझ चुके हो। यह जीव सभी एक हैं। आप तो जानीजान हो। आप तो लीला कर रहे हो अर्थात् उसको गोल-मोल भी कर दिया और समझा भी गए।

कबीर–अलख इलाही एक है, नाम धराया दोय।
कहै कबीर दो नाम सुनि, भरम परो मति कोय।।1।।
कबीर–राम रहीमा एक है, नाम धराया दोय।
कहै कबीर दो नाम सुनि, भरम परो मति कोय।।2।।
कबीर–कृष्ण करीमा एक है, नाम धराया दोय।
कहै कबीर दो नाम सुनि, भरम परो मति कोय।।3।।
कबीर–काशी काबा एक है, एकै राम रहीम।
मैदा एक पकवान बहु, बैठि कबीरा जीम।।4।।
कबीर–एक वस्तु के नाम बहु, लीजै वस्तु पहिचान।
नाम पक्ष नहीं कीजिये, सार तत्व ले जान।।5।।
कबीर–सब काहू का लीजिये, सांचा शब्द निहार।
पक्षपात ना कीजिये, कहै कबीर विचार।।6।।
कबीर–राम कबीरा एक है, दूजा कबहू ना होय।

अंतर टाटी कपट की, तातै दीखे दोय।।7।।
कबीर–राम कबीर एक है, कहन सुनन को दोय।
दो करि सोई जानई, सतगुरु मिला न होय।।8।।

रामानंद जी ने सिकंदर को सीने से लगाया तथा उसके बाद हिन्दू तथा मुसलमान को तथा सर्व जाति व धर्मों के व्यक्तियों को प्रभु के बच्चे जानकर प्यार देने लगे तथा अपने औपचारिक शिष्य वास्तव में परमेश्वर कबीर साहेब जी का धन्यवाद किया कि आपने मेरा अज्ञान पूर्ण रूप से दूर कर दिया। हम एक पिता प्रभु की संतान हैं, मुझे दृढ़ विश्वास हो गया। दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी के साथ उनका धार्मिक गुरु शेखतकी भी बनारस गया था। वह रैस्ट हाऊस(विश्राम गृह) में ही रूका था। क्योंकि शेखतकी हिन्दू संतों से बहुत ईर्ष्या करता था तथा उन्हें व उनके शिष्यों को काफिर कहता था। इसलिए स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में जाने से इंकार कर दिया था। राजा सिकंदर लोधी के साथ स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में नहीं गया था।

महाराजा सिकंदर ने विश्राम गृह में आकर परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा अपने असाध्य रोग का निवारण केवल आशीर्वाद मात्र से करने तथा स्वामी रामानन्द जी को पुनर् जीवित करने की कथा खुशी के साथ अपने धार्मिक पीर शेखतकी को बताई तथा कहा कि पीर जी मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। मेरे किसी अंग में कोई पीड़ा नहीं है। रात्रि का समय था। प्रभु कबीर साहेब जी सुबह आने की कहकर अपनी कुटिया पर चले गये थे।

शेखतकी ने बादशाह के मुख से अन्य संत की भूरी-भूरी प्रशंसा सुनी तो अन्दर ही अन्दर जल-भुन गया। रात भर करवटें बदलता रहा। परमेश्वर कबीर साहेब जी को नीचा दिखाने की योजना बनाता रहा।

"पवित्र मुसलमान धर्म का संक्षिप्त परिचय"

अगले दिन पूज्य कबीर परमेश्वर राज दरबार में पहुँचे। काशी नरेश बीरदेव सिंह बघेल तथा दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी ने दण्डवत् प्रणाम (जमीन पर लम्बा लेटकर) किया तथा कविर्देव को आसन पर बैठाया तथा स्वयं नीचे जमीन पर बिछे गलीचे पर विराजमान हो गए। बादशाह सिकंदर ने प्रार्थना की कि हे परवरदिगार! मेरा रोग न तो हिन्दू संतों से शांत हुआ तथा न ही मुसलमान पीरों, काजी तथा मुल्लाओं से। क्या कारण था हे दीन दयाल! आपके आशीर्वाद मात्र से ही मेरा जान लेवा रोग छू मंत्र हो गया। कल रात्रि में मैंने पेट भर कर खाना खाया। वर्षों से यह कष्ट मुझे सता रहा था। आपकी कृपा से मैं स्वस्थ हो गया हूँ।

परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने बताया कि राजन् पूर्ण परमात्मा अल्लाहु

अकबर(अल्लाहु कबीरू) ही सर्व पाप नाश (क्षमा) कर सकता है। अन्य प्रभु तो केवल किए कर्म का फल ही दे सकते हैं। जैसे प्राणी को दुःख तो पाप से होता है तथा सुख पुण्य से। आप को पाप कर्म के कारण कष्ट था। यह आप के प्रारब्ध में लिखा था। यह किसी भी अन्य भगवान से ठीक नहीं हो सकता था। क्योंकि पाप नाशक (क्षमा करने वाले) पूर्ण परमात्मा कविर्देव/अल्लाहु अकबर (अल्लाहु कबीरू) के वास्तविक ज्ञान व भक्ति विधि को न तो हिन्दू संत, गुरुजन जानते हैं तथा न ही मुसलमान पीर, काजी तथा मुल्ला ही परिचित हैं। उस सर्व शक्तिमान परमेश्वर की पूजा विधि तथा पूर्ण ज्ञान केवल यह दास (संत रामपाल दास) जानता है। न श्री राम तथा श्री कृष्ण अर्थात् श्री विष्णु जी जानते तथा न ही श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी, न ब्रह्म (जिसे आप निराकार प्रभु कहते हो) जानता। न हजरत मुहम्मद जानता था, न ही अन्य मुसलमान पीर व काजी तथा मुल्ला ही जानते हैं।

"शेखतकी नामक मुसलमान पीर से वार्ता"

परमेश्वर कबीर साहेब जी के मुख कमल से उपरोक्त वचन सुनकर शेखतकी व्यंगात्मक तरीके से बोला कि तू ही जानता है सर्व ज्ञान को। हमारे हजरत मुहम्मद साहेब जी को भी अज्ञानी कह रहा है। बीच बचाव करते हुए बीर सिंह बघेल काशी नरेश ने कहा पीर जी इसमें नाराज होने की कौन-सी बात है, प्रेम पूर्वक शंका का समाधान करवाओ। काशी नरेश जानता था कि सर्व ज्ञान सम्पन्न पूज्य कबीर साहेब जी ज्ञान गोष्ठी करके पीर जी का भ्रम निवारण करना चाहते हैं। काशी नरेश ने शेखतकी से कहा कबीर जी ने किस कारण से हजरत मुहम्मद जी को पूर्ण ज्ञान से वंचित कहा है आप कारण पूछो। शेखतकी ने कहा प्रश्न ही तो पूछ रहा हूँ। कबीर जी कारण बताए किस आधार पर हमारे परम पूज्य हजरत मुहम्मद जी को अज्ञानी कहा है?

"पवित्र कुर्आन शरीफ ने प्रभु के विषय में क्या बताया है ?"

परम पूज्य कबीर परमेश्वर ने कहना प्रारम्भ किया। पवित्र कुर्आन शरीफ सुरत फुर्कानि स. 25 आयत 52, 58, 59 में जिस कबीर अल्लाह का विवरण है वह पूर्ण परमात्मा है। जिसे अल्लाहु अकबर(अकबीरू) कहते हो। कुर्आन शरीफ का ज्ञान दाता अल्लाह किसी अन्य कबीर नामक अल्लाह की महिमा का गुणगान कर रहा है। आयत सं. 52, 58 तथा 59 में हजरत मुहम्मद जी को कुर्आन शरीफ के ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि हे नबी मुहम्मद ! जो कबीर नामक अल्लाह है उसने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है। वही सर्व पाप नाश (क्षमा) करने वाला है तथा सर्व के पूजा करने योग्य है(इबादही कबीरा अर्थात्

पूजा के योग्य कबीर)। उसी ने जमीन तथा आसमान के मध्य जो कुछ भी है सर्व की रचना छः दिन में की है तथा सातवें दिन आसमान में तख्त पर जा विराजा। काफिर लोग उस कबीर प्रभु (अल्लाहु अकबर) को सर्व शक्तिमान प्रभु नहीं मानते। आप उनकी बातों में मत आना। उनका कहा मत मानना। मेरे द्वारा दिए कुर्आन शरीफ की दलीलों पर विश्वास रखना तथा अहिंसा के साथ कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष (जिहाद) करना, लड़ाई नहीं करना(सूरत फुर्कानि आयत 52)। उस परमात्मा कबीर (अल्लाहु अकबर) की भक्ति विधि तथा उसके विषय में पूर्ण ज्ञान मुझे नहीं है। उस सर्व शक्तिमान, सर्व ब्रह्मण्डों के रचनहार, सर्व पाप नाशक, सर्व के पूजा योग्य कबीर अल्लाह की पूजा के विषय में किसी तत्वदर्शी (बाहखबर) संत से पूछो। कबीर परमेश्वर ने कहा शेखतकी जी आपके अल्लाह को ही ज्ञान नहीं है तो आप के हजरत मुहम्मद साहेब जी को कैसे पूर्ण ज्ञान हो सकता है? तथा अन्य काजी, मुल्ला तथा पीर भी सत्य साधना तथा तत्वज्ञान से वंचित हैं। जिस कारण से साधक के कष्ट का निवारण नहीं होता। अन्य साधना जैसे पाँच समय नमाज, बंग आदि देने से मोक्ष तथा कष्ट निवारण नहीं होता। जन्म-मत्यु तथा स्वर्ग-नरक तथा अन्य प्राणियों के शरीरों में भी किए कर्म के आधार से कष्ट भोगना पड़ता है।

उपरोक्त वार्ता सुनकर शेखतकी ने तुरन्त कुर्आन शरीफ को खोला तथा सूरत फुर्कानि संख्या 25 आयत 52, 58, 59 को पढ़ा जिसमें उपरोक्त विवरण सही था। वास्तविकता को आँखों देखकर भी मानहानि के भय से कहा कि ऐसा कहीं नही लिखा है। यह काफिर झूठ बोल रहा है। उस समय शिक्षा का अभाव था। मुसलमान समाज अरबी भाषा से परिचित नहीं था। कुर्आन शरीफ अरबी भाषा में लिखी थी। बादशाह सिकंदर को भी शंका हो गई कि परमेश्वर कबीर साहेब जी भले ही शक्ति युक्त हैं परन्तु अशिक्षित होने के कारण कुर्आन शरीफ के विषय में नहीं जान सकते।

शेखतकी ने जले-भुने वचन बोले क्या तू ही है वह बाखबर? फिर बता दे वह अल्लाहु अकबर कैसा है? यदि परमात्मा को साकार कहता है तो कौन है? कहाँ रहता है?

परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा :- वह कबीर अल्लाह जिसे आप अल्लाहू अकबर कहते हो मैं ही हूँ। मैं ऊपर सतलोक में रहता हूँ। मैंने ही सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है। मैं हजरत मुहम्मद जी को भी जिन्दा संत का रूप धारण करके मिला था तथा उस प्यारी आत्मा को सतलोक दिखाकर वापिस छोड़ा था। हजरत मुहम्मद से कहा था कि आप अब मेरी महिमा सर्व अनुयाईयों को सुनाओ। परन्तु जिबराईल फरिश्ते के भय के कारण तत्व ज्ञान का प्रचार नहीं किया तथा न मेरी बातों पर विश्वास किया। क्योंकि उससे पूर्व

जिबराईल देवता हजरत मुहम्मद जी को पितर लोक में घुमा लाया था। जहाँ पर हजरत मुहम्मद जी ने अपने पूर्वज बाबा आदम को देखा जो दांई ओर मुंह करके हंस रहा था तथा बांई ओर मुंह करके रो रहा था। जिबराईल से हजरत मुहम्मद जी ने पूछा कि यह व्यक्ति कौन है, जो एक बार हंस रहा है एक बार रो रहा है ? जिबराईल ने बताया यह बाबा आदम है। दांई ओर स्वर्ग में इनकी पुण्य कर्मी संतान है तथा बांई ओर नरक में बुरी संतान कष्ट उठा रही है। इसलिए जब नेक संतान को स्वर्ग में सुखी देखता है तो हँसता है। जब बांई ओर बुरी संतान को महाकष्ट से नरक में पीड़ित देखता है तो बुरी तरह रोता है। इसी लोक में अन्य स्थान पर हजरत मूसा तथा हजरत ईसा जी आदि को भी देखा। उनसे हजरत मुहम्मद जी की वार्ता हुई। इस कारण से हजरत मुहम्मद जी काल के जाल को न समझ कर उसी स्थान को वास्तविक ठिकाना मान चुका था क्योंकि वहाँ पितर लोक में पवित्र ईसाई धर्म तथा पवित्र मुसलमान धर्म के पूज्य बाबा आदम भी थे तथा अन्य नबी भी विराजमान थे।

प्रश्न :- परमेश्वर कबीर जी ने शेखतकी से प्रश्न किया कि क्या आप पुनर्जन्म को मानते हैं?

उत्तर :- शेखतकी ने कहा कि नहीं मानता। हम मानते हैं कि ''बाबा आदम से हमारा वंश चला है। हमारे अल्लाह का विधान है कि एक बार सृष्टि रचना हो चुकी है। फिर इसका अन्त होगा, इसके पश्चात् कुछ नहीं है। इसी दौरान जो मनुष्य जन्म लेंगे जो अल्लाह के आदेशानुसार चलेगा, इबादत (पूजा) करेगा, वह जन्नत में जाएगा। जो अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं करेगा वह नरक (जहन्नुम) में जाएगा। दोनों प्रकार के व्यक्ति मरते जाऐंगे। उनको कब्र में रखा जाएगा। जिस समय आखरित (सृष्टि का नाश होगा उस समय) में सब को कब्रों से निकाला जाएगा, जिन्दा किया जाएगा। भक्तों को जन्नत (स्वर्ग) में और पापियों को जहन्नुम (नरक) में रखा जाएगा। बस! आगे कुछ नहीं।

प्रश्न :- कबीर जी ने पूछा हे शेखतकी जी! क्या आखरित (सृष्टि विनाश) तक बाबा आदम से लेकर आज तक के सर्व पैगंबर तथा सामान्य व्यक्ति कब्रों में रहेंगे?

उत्तर :- शेखतकी ने कहा हाँ, ऐसा ही विधान है।

प्रश्न :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि जैसा आप बताते हैं कि हजरत मुहम्मद जी जब एक गधे नुमा जानवर बुराक पर बैठ कर जन्नत (स्वर्ग) में गए। उस समय उन्होंने बाबा आदम तथा उनकी अच्छी सन्तान (स्वर्ग में सुखी) और बुरी सन्तान (नरक में दुखी) देखी। बाबा आदम को हँसते-रोते

देखा। हजरत मुहम्मद जी ने ऊपर स्वर्ग में सर्व नबियों का समूह (जमात) देखा। जिन में मुसा जी, इसा जी, अब्राहम आदि को भी ऊपर स्वर्ग में देखा। उनको वहाँ नमाज पढ़ाई। वे वहाँ कैसे चले गए? उनको तो आपके अज्ञान विधानानुसार तो कब्रों में रहना चाहिए था। यदि आप के विधान को ठीक मानें तो सष्टि अन्त (आखरित) तो अरबों वर्षों के पश्चात् होगी। तब तक तो भक्त भी उन कब्रों में भूखे-प्यासे तड़फते होंगे। फिर कभी कयामत (विनाश) समय अरबों वर्षों पश्चात् आएगा तब वे जन्नत (स्वर्ग) को प्राप्त होंगे। धिक्कार है ऐसी जन्नत को।

इस वार्ता को सुन कर उपस्थित बुद्धिमान निष्पक्ष मुसलमान आश्चर्यचकित रह गए तथा कबीर जी से दीक्षा ली। परन्तु शेखतकी पीर की बोलती बंद हो गई। सच स्वीकार नहीं किया, उल्टा क्रोधवश उठकर चल दिया तथा प्रतिशोध की योजना बनाने लगा। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है :-

जान बूझ साची तजै, करै झूठ से नेह। ताकि संगति हे प्रभु, स्वपन में भी ना दे।।

"माँस-मदिरा निषेध का उपदेश"

हजरत मुहम्मद जी जिस साधना को करता था वही साधना अन्य मुसलमान समाज भी कर रहा है। वर्तमान में सर्व मुसलमान श्रद्धालु माँस भी खा रहे हैं। परन्तु नबी मुहम्मद जी ने कभी माँस नहीं खाया तथा न ही उनके सीधे अनुयाईयों(एक लाख अस्सी हजार) ने माँस खाया। केवल रोजा व बंग तथा नमाज किया करते थे। गाय आदि को बिस्मिल(हत्या) नहीं करते थे।

नबी मुहम्मद नमस्कार है, राम रसूल कहाया।
एक लाख अस्सी कूं सौगंध, जिन नहीं करद चलाया।।
अरस कुरस पर अल्लह तख्त है, खालिक बिन नहीं खाली।
वे पैगम्बर पाख पुरुष थे, साहिब के अब्दाली।।

भावार्थ :- नबी मोहम्मद तो आदरणीय है जो प्रभु के अवतार कहलाए हैं। कसम है एक लाख अस्सी हजार को जो उनके अनुयाई थे उन्होंने भी कभी बकरे, मुर्गे तथा गाय आदि पर करद नहीं चलाया अर्थात् जीव हिंसा नहीं की तथा माँस भक्षण नहीं किया। वे हजरत मोहम्मद, हजरत मूसा, हरजत ईसा आदि पैगम्बर(संदेशवाहक) तो पवित्र व्यक्ति थे तथा ब्रह्म(ज्योति निरंजन/काल) के कपा पात्र थे, परन्तु जो आसमान के अंतिम छोर(सतलोक) में पूर्ण परमात्मा(अल्लाहू अकबर अर्थात् अल्लाह कबीर) है उस सष्टि के मालिक की नजर से कोई नहीं बचा।

मारी गऊ शब्द के तीरं, ऐसे थे मोहम्मद पीरं।।
शब्दै फिर जिवाई, हंसा राख्या माँस नहीं भाख्या, ऐसे पीर मुहम्मद भाई।।

भावार्थ : एक समय नबी मुहम्मद ने एक गाय को शब्द(वचन सिद्धि) से मार कर सर्व के सामने जीवित कर दिया था। उन्होंने गाय का माँस नहीं खाया। अब मुसलमान समाज वास्तविकता से परिचित नहीं है। जिस दिन गाय जीवित की थी उस दिन की याद बनाए रखने के लिए गऊ मार देते हो। आप जीवित नहीं कर सकते तो मारने के भी अधिकारी नहीं हो। आप माँस को प्रसाद रूप जान कर खाते तथा खिलाते हो। आप स्वयं भी पाप के भागी बनते हो तथा अनुयाईयों को भी गुमराह कर रहे हो। आप दोजख (नरक) के पात्र बन रहे हो।

कबीर–माँस अहारी मानई, प्रत्यक्ष राक्षस जानि।
ताकी संगति मति करै, होइ भक्ति में हानि।।1।।
कबीर–माँस खांय ते ढेड़ सब, मद पीवैं सो नीच।
कुलकी दुरमति पर हरै, राम कहै सो ऊंच।।2।।
कबीर–माँस भखै औ मद पिये, धन वेश्या सों खाय।
जुआ खेलि चोरी करै, अंत समूला जाय।।5।।
कबीर–माँस माँस सब एक है, मुरगी हिरनी गाय।
आँखि देखि नर खात है, ते नर नरकहिं जाय।।6।।
कबीर–यह कूकर को भक्ष है, मनुष देह क्यों खाय।
मुखमें आमिख मेलि के, नरक परंगे जाय।।7।।
कबीर–पापी पूजा बैठि कै, भखै माँस मद दोइ।
तिनकी दीक्षा मुक्ति नहीं, कोटि नरक फल होइ।।10।।
कबीर–जीव हनै हिंसा करै, प्रगट पाप सिर होय।
निगम पुनि ऐसे पाप तें, भिस्त गया नहिं कोय।।14।।
कबीर–तिल भर मछली खाय कर, कोटि गऊ दै दान।
काशी करौंत ले मरै, तो भी नरक निदान।।16।।
कबीर–बकरी पाती खात है, ताकी काढी खाल।
जो बकरी को खात है, तिनका कौन हवाल।।18।।
कबीर–मुल्ला तुझै करीम का, कब आया फरमान।
घट फोरा घर घर बांटा, साहब का नीसान।।21।।
कबीर–काजी का बेटा मुआ, उर में सालै पीर।
वह साहब सबका पिता, भला न मानै बीर।।22।।
कबीर–पीर सबन को एक सी, मूरख जानैं नाहिं।
अपना गला कटाय कै, क्यों न बसो भिश्त के माहिं।।23।।
कबीर–मुरगी मुल्लासों कहै, जबह करत है मोहिं।
साहब लेखा माँगसी, संकट परि है तोहिं।।24।।

कबीर–जोर करि जबह करै, मुख सों कहै हलाल।
साहब लेखा माँगसी, तब होसी कौन हवाल।।28।।
कबीर–जोर कीयां जुलूम है, मांगै ज्वाब खुदाय।
खालिक दर खूनी खड़ा, मार मुहीं मुँह खाय।।29।।
कबीर–गला काटि कलमा भरै, कीया कहै हलाल।
साहब लेखा माँगसी, तब होसी जबाब–सवाल।।30।।
कबीर–गला गुसाकों काटिये, मियां कहर कौ मार।
जो पाँचू बिस्मिल करै, तब पावै दीदार।।31।।
कबीर–ये सब झूठी बंदगी, बेरिया पाँच निमाज।
सांचहि मारै झूठ पढ़ि, काजी करै अकाज।।32।।
कबीर–दिन को रोजा रहत हैं, रात हनत है गाय।
यह खून वह बंदगी, कहुं क्यों खुशी खुदाय।।33।।
कबीर–कबिरा तेई पीर हैं, जो जानै पर पीर।
जो पर पीर न जानि है, सो काफिर बेपीर।।36।।
कबीर–खूब खाना है खीचड़ी, माँहीं परी टुक लौन।
माँस पराया खायकै, गला कटावै कौन।।37।।
कबीर–कहता हूँ कहि जात हूँ, कहा जो मान हमार।
जाका गला तुम काटि हो, सो फिर काटै तुम्हार।।38।।
कबीर–हिन्दू के दया नहीं, मिहर तुरक के नाहिं।
कहै कबीर दोनूं गया, लख चौरासी माहिं।।39।।
कबीर–मुसलमान मारै करद सो, हिंदू मारे तरवार।
कहै कबीर दोनूं मिलि, जैहैं यम के द्वार।।40।।

उपरोक्त अमृतवाणी में पूज्य कबीर परमेश्वर ने समझाया कि जो व्यक्ति माँस खाते हैं, शराब पीते हैं, सत्संग सुनकर भी बुराई नहीं त्यागते, उपदेश प्राप्त नहीं करते, उन्हें तो साक्षात राक्षस जानों। अनजाने में गलती न जाने किससे हो जाए। यदि वह बुराई करने वाला व्यक्ति सत्संग विचार सुनकर बुराई त्याग कर भगवान की भक्ति करने लग जाता है वह तो नेक आत्मा है, वह चाहे किसी जाति व धर्म का हो। जो माँस आहार तथा सुरा पान त्याग कर प्रभु भक्ति नहीं करता वह तो ढेड(नीच) व्यक्ति है, चाहे किसी जाति या धर्म का हो। भावार्थ है कि उच्च कर्म करने वाला उच्च है तथा नीच कर्म करने वाला नीच है। जाति या धर्म विशेष में जन्म मात्र से उच्च-नीच नहीं होता। जिन साधकों ने उपदेश ले रखा है उन्हें उपरोक्त प्रकार के बुराई करने वालों के पास नहीं बैठना चाहिए, जिससे आपकी भक्ति में बाधा पड़ेगी(साखी 1-2)।

जो व्यक्ति माँस भक्षण करते हैं, शराब पीते हैं, जो स्त्री वैश्यावृति करती

है तथा जो व्यक्ति उससे वेश्या व्यवसाय करवा कर धन प्राप्त करते हैं, जुआ खेलते हैं तथा चोरी करते है, समझाने से भी नहीं मानते, वह तो महापाप के भागी हैं तथा घोर नरक में गिरेंगे(साखी 5)।

माँस चाहे गाय, हिरनी तथा मुर्गी आदि किसी प्राणी का है जो व्यक्ति माँस खाते हैं वे नरक के भागी हैं। जो व्यक्ति अनजाने में माँस खाते हैं(जैसे आप किसी रिश्तेदारी में गए, आपको पता नहीं लगा कि सब्जी है या माँस, आपने खा लिया) तो आप को दोष नहीं, परन्तु आगे से अति सावधान रहना। जो व्यक्ति आँखों देखकर भी खा जाते हैं वे दोषी हैं। यह माँस तो कुत्ते का आहार है, मनुष्य शरीर धारी के लिए वर्जित है(साखी 6-7)।

जो गुरुजन माँस भक्षण करते हैं तथा शराब पीते हैं उनसे नाम दीक्षा प्राप्त करने वालों की मुक्ति नहीं होती अपितु महा नरक के भागी होंगे(साखी 10)।

जो व्यक्ति जीव हिंसा करते हैं (चाहे गाय, सूअर, बकरी, मुर्गी, मनुष्य, आदि किसी भी प्राणी को स्वार्थवश मारते हैं) वे महापापी हैं, (भले ही जिन्होंने पूर्ण संत से पूर्ण परमात्मा का उपदेश भी प्राप्त है) वे कभी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते।(साखी-10-14)

जरा-सा (तिल के समान) भी माँस खाकर भक्ति करता है, चाहे करोड़ गाय दान भी करता है, उस साधक की साधना भी व्यर्थ है। माँस आहारी व्यक्ति चाहे काशी में करौंत से गर्दन छेदन भी करवा ले तो भी वह नरक ही जायेगा। (नोट-काशी/बनारस के हिन्दूओं के स्वार्थी गुरुओं ने भक्त समाज में भ्रम फैला रखा था कि जो काशी में मरता है वह स्वर्ग जाता है। अधिक भीड़ होने लगी तब एक और घातक योजना बनाई उसके तहत कहा कि जो शीघ्र स्वर्ग जाना चाहता है उसके लिए गंगा पर एक करौंत भगवान का भेजा आता है। उससे गर्दन कटवाने वालों के लिए स्वर्ग के कपाट खुले रहते हैं। उन स्वार्थी गुरुजनों ने मनुष्य हत्या के लिए एक हत्था खोल दिया। श्रद्धालु भक्तों ने आत्मकल्याण के लिए वहाँ गर्दन कटवाना भी स्वीकार कर लिया। परन्तु ज्ञानहीन गुरुओं के द्वारा बताई साधना से भी कोई लाभ नहीं होता)। इसलिए कहा है कि माँस खाने वाला चाहे कितना भी भक्ति तथा पुण्य व दान तथा बलिदान करे उसका कोई लाभ नहीं(साखी 16)।

बकरी जो आपने मार डाली वह तो घास-फूंस, पत्ते आदि खाकर पेट भर रही थी। इस काल लोक में ऐसे शाकाहारी पशु की भी हत्या हो गई तो जो बकरी का माँस खाते हैं उनका तो अधिक बुरा हाल होगा(साखी 18)।

पशु आदि को हलाल, बिस्मिल आदि करके माँस खाने व प्रसाद रूप में वितरित करने का आदेश दयालु (करीम) प्रभु का कब प्राप्त हुआ {क्योंकि पवित्र बाईबल उत्पत्ति ग्रन्थ में पूर्ण परमात्मा ने छः दिन में संष्टि रची, सातवें

दिन ऊपर तख्त पर जा बैठा तथा सर्व मनुष्यों के आहार के लिए आदेश किया था कि मैंने तुम्हारे खाने के लिए फलदार वृक्ष तथा बीजदार पौधे दिए हैं। उस करीम (दयालु प्रभु पूर्ण परमात्मा) की ओर से आप को फिर से कब आदेश हुआ? वह कौन-सी कुरान में लिखा है ? पूर्ण परमात्मा सर्व मनुष्यों आदि की सृष्टि रचकर ब्रह्म(जिसे अव्यक्त कहते हो, जो कभी किसी के सामने प्रकट नहीं होता, गुप्त कार्य करता तथा करवाता रहता है) को दे गया। बाद में पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुर्आन शरीफ आदि ग्रन्थों में जो विवरण है वह ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) का तथा उसके फरिश्तों का है, या भूतों-प्रेतों का है। करीम अर्थात् पूर्ण ब्रह्म दयालु अल्लाहु कबीरू का नहीं है। उस पूर्ण ब्रह्म के आदेश की अवहेलना किसी भी फरिश्ते व ब्रह्म आदि के कहने से करने की सजा भोगनी पड़ेगी।}

एक समय एक व्यक्ति की दोस्ती एक पुलिस थानेदार से हो गई। उस व्यक्ति ने अपने दोस्त थानेदार से कहा कि मेरा पड़ोसी मुझे बहुत परेशान करता है। थानेदार (S.H.O.) ने कहा कि मार लट्ठ, मैं आप निपट लूंगा। थानेदार दोस्त की आज्ञा का पालन करके उस व्यक्ति ने अपने पड़ोसी को लट्ठ मारा, सिर में चोट लगने के कारण पड़ौसी की मृत्यु हो गई। उसी क्षेत्र का अधिकारी होने के कारण वह थाना प्रभारी अपने दोस्त को पकड़ कर लाया, कैद में डाल दिया तथा उस व्यक्ति को मृत्यु दण्ड मिला। उसका दोस्त थानेदार कुछ मदद नहीं कर सका। क्योंकि राजा का संविधान है कि यदि कोई किसी की हत्या करेगा तो उसे मृत्यु दण्ड प्राप्त होगा। उस नादान व्यक्ति ने अपने मित्र दरोगा की आज्ञा मान कर राजा का संविधान भंग कर दिया। जिससे जीवन से हाथ धो बैठा।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा की आज्ञा की अवहेलना करने वाला पाप का भागी होगा। क्योंकि कुर्आन शरीफ (मजीद) का सारा ज्ञान ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन, जिसे आप अव्यक्त कहते हो) का दिया हुआ है। इसमें उसी का आदेश है तथा पवित्र बाईबल में केवल उत्पत्ति ग्रन्थ के प्रारम्भ में पूर्ण प्रभु का आदेश है। पवित्र बाईबल में हजरत आदम तथा उसकी पत्नी हव्वा को उस पूर्ण परमात्मा ने बनाया। बाबा आदम की वंशज संतान हजरत ईस्राईल, राजा दऊद, हजरत मूसा, हजरत ईसा तथा हजरत मुहम्मद आदि को माना है। पूर्ण परमात्मा तो छः दिन में सृष्टि रचकर तख्त पर विराजमान हो गया। बाद का सर्व कतेबों (कुर्आन शरीफ आदि) का ज्ञान ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) का प्रदान किया हुआ है। पवित्र कुर्आन का ज्ञान दाता स्वयं कहता है कि पूर्ण परमात्मा जिसे करीम, अल्लाह कहा जाता है उसका नाम कबीर है, वही पूजा के योग्य है। उसके तत्वज्ञान व भक्ति विधि को किसी बाखबर (तत्वदर्शी संत) से पता करो। इससे सिद्ध है कि जो ज्ञान कुर्आन शरीफ आदि का है वह पूर्ण प्रभु का नहीं है। (साखी 21)

जब काजी के पुत्र की मत्यु हो जाती है तो काजी को कितना कष्ट होता है। पूर्ण ब्रह्म(अल्लाह कबीर) सर्व का पिता है। उसके प्राणियों को मारने वाले से अल्लाह खुश नहीं होता (साखी 22)।

दर्द सर्व को एक जैसा ही होता है। अनजान नहीं जानते। यदि बकरे आदि का गला काट कर (हलाल करके) उसे स्वर्ग भेज देते हो तो काजी तथा मुल्ला अपना गला छेदन करके (हलाल करके) स्वर्ग प्राप्ति क्यों नहीं करते ? (साखी 23)

जिस समय बकरी को मुल्ला मारता है तो वह बेजुबान प्राणी आँखों में आंसू भर कर म्यां-म्यां करके समझाना चाहता है कि हे मुल्ला मुझे मार कर पाप का भागी मत बन। जब परमेश्वर के न्याय अनुसार लेखा किया जाएगा उस समय तुझे बहुत संकट का सामना करना पड़ेगा। (साखी 24)

जबरदस्ती (बलात्) निर्दयता से बकरी आदि प्राणी को मारते हो, कहते हो हलाल कर रहे हैं। इस दोगली नीति का आपको महा कष्ट भोगना होगा। काजी तथा मुल्ला व कोई भी जीव हिंसा करने वाला पूर्ण प्रभु के कानून का उल्लंघन कर रहा है, जिस कारण वहाँ धर्मराज के दरबार में खड़ा-खड़ा पिटेगा। यदि हलाल ही करने का शौक है तो काम, क्रोध, मोह, अहंकार, लोभ आदि को कर।

पाँच समय नमाज भी पढ़ते हो तथा रोजों के समय रोजे (व्रत) भी रखते हो। शाम को गाय, बकरी, मुर्गी आदि को मार कर माँस खाते हो। एक तरफ तो परमात्मा की स्तुति करते हो दूसरी ओर उसी के प्राणियों की हत्या करते हो। ऐसे प्रभु कैसे खुश होगा ? अर्थात् आप स्वयं भी पाप के भागी हो रहे हो तथा अनुयाईयों को भी गुमराह करने के दोषी होकर नरक में गिरोगे। (साखी 28 से 33)

कबीर परमेश्वर कह रहे हैं कि हे काजी, मुल्लाओं आप पीर (गुरु) भी कहलाते हो। पीर तो वह होता है जो दूसरे के दुःख को समझे उसे, संकट में गिरने से बचाए। किसी को कष्ट न पहुँचाए। जो दूसरे के दुःख में दुःखी नहीं होता वह तो काफिर (नीच) बेपीर (निर्दयी) है। वह पीर (गुरु) के योग्य नहीं है। (साखी 36)

उत्तम खाना नमकीन खिचड़ी है उसे खाओ। दूसरे का गला काटने वाले को उसका बदला देना पड़ता है। यह जान कर समझदार व्यक्ति प्रतिफल में अपना गला नहीं कटाता। दोनों ही धर्मों के मार्ग दर्शक निर्दयी हो चुके हैं। हिन्दूओं के गुरु कहते हैं कि हम तो एक झटके से बकरा आदि का गला छेदन करते हैं, जिससे प्राणी को कष्ट नहीं होता, इसलिए हम दोषी नहीं हैं तथा मुसलमान धर्म के मार्ग दर्शक कहते हैं हम धीरे-धीरे हलाल करते हैं जिस कारण हम दोषी नहीं। परमात्मा कबीर साहेब जी ने कहा यदि आपका तथा आपके परिवार के सदस्य का गला किसी भी विधि से काटा जाए तो आपको कैसा लगेगा? (साखी 37 से 40)

बात करते हैं पुण्य की, करते हैं घोर अधर्म। दोनों दीन नरक में पड़हीं, कुछ तो करो शर्म।।

कबीर परमेश्वर ने कहा -

हम मुहम्मद को सतलोक ले गया। इच्छा रूप वहाँ नहीं रहयो।
उल्ट मुहम्मद महल पठाया, गुज बीरज एक कलमा लाया।।
रोजा, बंग, नमाज दई रे, बिसमिल की नहीं बात कही रे।

भावार्थ :- नबी मुहम्मद को मैं(कबीर परमेश्वर) सतलोक ले कर गया था परन्तु वहाँ न रहने की इच्छा व्यक्त की, वापिस मुहम्मद जी को शरीर में भेज दिया। नबी मुहम्मद जी ने रोजा(व्रत) बंग(ऊँची आवाज में प्रभु स्तुति करना) तथा पाँच समय की नमाज करना तो कहा था परन्तु गाय आदि प्राणियों को बिस्मिल करने(मारने) को नहीं कहा।

उपरोक्त वार्ता सुनकर शेखतकी पीर ने क्रोध करते हुए कहा कि तू क्या जाने कुर्आन शरीफ तथा हमारे नबी के विषय में तू तो अशिक्षित है। हमारे धर्म के विषय में झूठा प्रचार करके भ्रम फैला रहा है। मैं बताता हूँ पवित्र कुर्आन शरीफ की अमंत वाणी कैसे प्राप्त हुई। यह कोई बाद में लिखा ग्रंथ नहीं है। यह तो अल्लाह(प्रभु) द्वारा बोली वाणी साथ की साथ लिखी गई थी। शेखतकी ने (जो दिल्ली के महाराजा सिकंदर लौधी का धार्मिक गुरु तथा पूरे भारत के मुसलमान शेखतकी की प्रत्येक आज्ञा का पालन करते थे) ने कहा कि सुन गंवार हमारे मुहम्मद नबी का जीवन वंतांत।

''हजरत मुहम्मद जी का जीवन चरित्र''

''हजरत मुहम्मद के बारे में श्री मुहम्मद इनायतुल्लाह सुब्हानी के विचार''

जीवनी हजरत मुहम्मद(सल्लाहु अलैहि वसल्लम)

लेखक हैं – मुहम्मद इनायतुल्लाह सुब्हानी,

मूल किताब – मुहम्मदे(अर्बी) से, अनुवादक – नसीम गाजी फलाही,

प्रकाशक – इस्लामी साहित्य ट्रस्ट प्रकाशन नं. 81 के आदेश से प्रकाशन कार्य किया है।

मर्कजी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स, डी–307, दावत नगर, अबुल फज्ल इन्कलेव जामिया नगर, नई दिल्ली–1110025,

श्री हाशिम के पुत्र शौबा थे। उन्हीं का नाम अब्दुल मुत्तल्लिब पड़ा क्योंकि जब मुत्तलिब अपने भतीजे शौबा को अपने गाँव लाया तो लोगों ने सोचा कि मुत्तलिब कोई दास लाया है। इसलिए श्री शौबा को श्री अब्दुल मुत्तलिब के उर्फ नाम से अधिक जाना जाने लगा। श्री अब्दुल मुत्तलिब को दस पुत्र प्राप्त हुए। किसी कारण से अब्दुल मुत्तलिब ने अपने दस बेटों में से एक बेटे की कुर्बानी अल्लाह के निमित देने का प्रण लिया।

देवता को दस बेटों में से कौन सा बेटा कुर्बानी के लिए पसंद है। इसके

लिए एक मन्दिर(काबा) में रखी मूर्तियों में से बड़े देव की मूर्ति के सामने दस तीर रख दिए तथा प्रत्येक पर एक पुत्र का नाम लिख दिया। जिस तीर पर सबसे छोटे पुत्र अब्दुल्ला का नाम लिखा था वह तीर मूर्ति की तरफ हो गया। माना गया कि देवता को यही पुत्र कुर्बानी के लिए स्वीकार है। श्री अब्दुल्ला(नबी मुहम्मद के पिता) की कुर्बानी देने की तैयारी होने लगी। पूरे क्षेत्र के धार्मिक लोगों ने अब्दुल मुत्तल्लिब से कहा ऐसा न करो। हाहाकार मच गया। एक पुजारी में कोई अन्य आत्मा बोली। उसने कहा कि ऊंटों की कुर्बानी देने से भी काम चलेगा। इससे राहत की स्वांस मिली। उसी शक्ति ने उसके लिए एक अन्य गाँव में एक औरत जो अन्य मन्दिरों के पुजारियों की दलाल थी के विषय में बताया कि वह फैसला करेगी कि कितने ऊंटों की कुर्बानी से अब्दुल्ला की जान अल्लाह क्षमा करेगा। उस औरत ने कहा कि जितने ऊंट एक जान की रक्षा के लिए देते हो, अन्य दस और जोड़कर तथा अब्दुल्ला के नाम की पर्ची तथा दस ऊंटों की पर्ची डाल कर जाँच करते रहो। जब तक ऊंटों वाली पर्ची न निकले, तब तक करते रहो। इस प्रकार दस-2 ऊंटों की संख्या बढ़ाते रहे तब सौ ऊंटों के बाद ऊंटों की पर्ची निकली, उस से पहले अब्दुल्ला की पर्ची निकलती रही। इस प्रकार सौ ऊटों की कुर्बानी(हत्या) करके बेटे अब्दुल्ला की जान बचाई। जवान होने पर श्री अब्दुल्ला का विवाह भक्तमति आमिनी देवी से हुआ। जब हजरत मुहम्मद माता आमिनी जी के गर्भ में थे पिता श्री अब्दुल्ला जी की मत्यु किसी दूर स्थान पर हो गई। वहीं पर उनकी कब्र बनवा दी। जिस समय बालक मुहम्मद की आयु छः वर्ष हुई तो माता आमिनी देवी अपने पति की कब्र देखने गई थी। उसकी भी मत्यु रास्ते में हो गई। छः वर्षीय बालक मुहम्मद जी यतीम (अनाथ) हो गए। (उपरोक्त विवरण पूर्वोक्त पुस्तक 'जीवनी हजरत मुहम्मद' पष्ठ 21 से 29 तथा 33-34 पर लिखा है)।

हजरत मुहम्मद जी जब 25 वर्ष के हुए तो एक चालीस वर्षीय विधवा खदीजा नामक स्त्री से विवाह हुआ। खदीजा पहले दो बार विधवा हो चुकी थी। तीसरी बार हजरत मुहम्मद से विवाह हुआ। वह बहुत बड़े धनाड्य घराने की औरत थी।(यह विवरण पूर्वोक्त पुस्तक के पष्ठ 46, 51-52 पर लिखा है)।

हजरत मुहम्मद जी को संतान रूप में खदीजा जी से तीन पुत्र तथा चार बेटियाँ प्राप्त हुई। तीनों पुत्र 1. कासिम, 2. तय्यब 3. ताहिर आप (हजरत मुहम्मद जी) की आँखों के सामने मत्यु को प्राप्त हुए। केवल चार लड़कियां शेष रहीं। (पूर्वोक्त पुस्तक के पष्ठ 64 पर यह उपरोक्त विवरण लिखा है)।

एक समय प्रभु प्राप्ति की तड़फ में हजरत मुहम्मद जी नगर से बाहर एक गुफा में साधना कर रहे थे। एक जिबराईल नामक फरिश्ते ने हजरत मुहम्मद

जी का गला घोंट-2 कर बलात् कुर्आन शरीफ का ज्ञान समझाया। हजरत मुहम्मद जी को डरा धमका कर अव्यक्त माना जाने वाले प्रभु का ज्ञान दिया गया। उस जिबराईल देवता के डर से हजरत मुहम्मद जी ने वह ज्ञान याद किया। इस प्रकार मुहम्मद साहेब जी को काल के भेजे फरिश्ते द्वारा इस ज्ञान को जनता में बताने को बाध्य किया गया। हजरत मुहम्मद जी ने अपनी पत्नी खदीजा जी को बताया कि मैं जब गुफा में बैठा था तो एक फरिश्ता आया। उसके हाथ में एक रेशम का रूमाल था। उस पर कुछ लिखा था। फरिश्ते ने मेरा गला घोंट कर कहा इसे पढ़ो। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे प्राण निकलने वाले हैं। पूरे शरीर को भींच कर जबरदस्ती मुझे पढ़ाना चाहा। ऐसा दो बार किया। तीसरी बार फिर कहा पढ़ो, मैं अशिक्षित होने के कारण नहीं पढ़ पाया। अब की बार मुझे लगा कि यह और ज्यादा पीड़ा देगा। मैंने कहा क्या पढ़ूं। तब उसने मुझे कुर्आन की एक आयत पढ़ाई। (यह विवरण पूर्वोक्त पुस्तक के पष्ठ 67 से 75 तक लिखा है तथा पष्ठ 157 से 165 तक लिखा है)।

फरिश्ते जिबराईल ने नबी मुहम्मद जी का सीना चाक किया उसमें शक्ति उड़ेल दी और फिर सील दिया तथा एक खच्चर जैसे जानवर पर बैठा कर ऊपर ले गया। वहाँ नबियों की जमात आई, उनमें हजरत मुसा जी, ईसा जी और इब्राहीम जी आदि भी थे। जिनको हजरत मुहम्मद जी ने नमाज पढाई।

वहाँ हजरत आदम जी भी थे जो कभी हँस रहे थे और कभी रो रहे थे। फरिश्ते जिबराईल ने हजरत मुहम्मद जी को बताया यह बाबा आदम जी हैं। रोने तथा हँसने का कारण था कि दाई ओर स्वर्ग में नेक संतान थी जो सुखी थी जिसे देख कर बाबा आदम हँस रहे थे तथा बाई ओर निकम्मी संतान नरक में कष्ट भोग रही थी, जिसे देखकर रो रहे थे। जिसके कारण बाबा आदम ऊपर के लोक में भी पूर्ण सुखी नहीं थे।

फिर सातवें आसमान पर गए। पर्दे के पीछे से आवाज आई की प्रति दिन पचास नमाज किया करे। वहाँ से पचास नमाजों से कम करवाकर केवल पाँच नमाज ही अल्लाह से प्राप्त करके नबी मुहम्मद वापिस आ गए।

(पष्ठ नं. 307 से 315) हजरत मुहम्मद जी द्वारा मुसलमानों को कहा कि खून-खराबा मत करना, ब्याज तक भी नहीं लेना तथा 63 वर्ष की आयु में सख्त बीमार होकर तड़पते-2 भी नमाज की तथा घर पर आकर असहनीय पीड़ा में सारी रात तड़फ कर प्राण त्याग दिए।

(पष्ठ नं. 319) बाद में उत्तराधिकारी का झगड़ा पड़ा। फिर हजरत अबू बक्र को खलीफा चुना गया।

शेखतकी पीर ने बताया कि अल्लाह तो सातवें आसमान पर रहता है वह तो निराकार है। कबीर जी ने कहा शेख जी एक ओर तो आप भगवान को

निराकार कह रहे हो। दूसरी ओर प्रभु को सातवें आसमान पर एक देशीय सिद्ध कर रहे हो। जब परमात्मा सातवें आसमान पर रहता है तो वह साकार हुआ।

शेखतकी से उपरोक्त जीवन परिचय हजरत मुहम्मद साहेब जी का सुनकर परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा शेखतकी जी आपने बताया कि हजरत मुहम्मद जी जब माता के गर्भ में थे उस समय उनके पिता श्री अब्दुल्लाह जी की मत्यु हो गई, छः वर्ष के हुए तो माता जी की मत्यु। आठ वर्ष के हुए तो दादा अब्दुल मुत्तलिब चल बसा। यतीमी का जीवन जीते हुए हजरत मुहम्मद जी की 25 वर्ष की आयु में शादी दो बार पहले विधवा हो चुकी 40 वर्षीय खदीजा से हुई। तीन पुत्र तथा चार पुत्रियाँ संतान रूप में हुई। हजरत मुहम्मद जी को जिबराईल नामक फरिश्ते ने गला घोंट-घोंट कर जबरदस्ती डरा धमका कर कुर्आन शरीफ (मजीद) का ज्ञान तथा भक्ति विधि (नमाज आदि) बताई जो तुम्हारे अल्लाह द्वारा बताई गई थी। फिर भी हजरत मुहम्मद जी के आँखों के तारे तीनों पुत्र (कासिम, तय्यब तथा ताहिर) चल बसे। विचार करें जिस अल्लाह के भेजे रसूल (नबी) के जीवन में कहर ही कहर (महान कष्ट) रहा। तो अन्य अनुयाईयों को कुर्आन शरीफ व मजीद में वर्णित साधना से क्या लाभ हो सकता है ? हजरत मुहम्मद 63 वर्ष की आयु में दो दिन असहाय पीड़ा के कारण दर्द से बेहाल होकर मत्यु को प्राप्त हुआ। जिस पिता के सामने तीनों पुत्र मत्यु को प्राप्त हो जाऐं, उस पिता को आजीवन सुख नहीं होता। प्रभु की भक्ति इसीलिए करते हैं कि परिवार में सुख रहे तथा कोई पाप कर्म दण्ड भोग्य हो, वह भी टल जाए। आप के अल्लाह द्वारा दिया भक्ति ज्ञान अधूरा है। इसीलिए सूरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 59 तक में कहा है कि जो गुनाहों को क्षमा करने वाला कबीर नामक अल्लाह है उसकी पूजा विधि किसी तत्वदर्शी (बाखबर) से पूछ देखो। कबीर परमेश्वर ने कहा शेखतकी मैं स्वयं वही कबीर अल्लाह हूँ। मेरे पास पूर्ण मोक्ष दायक, सर्व पाप नाशक भक्ति विधि है। इसीलिए आप के समक्ष बादशाह सिकंदर लोधी जी पाप के कारण भोग रहे कष्ट से मुक्त होकर सुख की सांस ले रहे हैं। जो आपकी भक्ति पद्धति से नहीं हो पाया।

जैसा कि शेखतकी जी आपने बताया कि सब मनुष्यों का पिता हजरत आदम ऊपर आसमान पर (जहाँ जिस लोक में जिबराईल फरिश्ता हजरत मुहम्मद को लेकर गया था) कभी रो रहा था, कभी हंस रहा था। क्योंकि उसकी निकम्मी संतान नरक में कष्ट उठा रही थी। उन्हें देखकर रो रहा था तथा अच्छी संतान जो स्वर्ग में सुखी थी, उन्हें देखकर जोर-जोर से हंस रहा था।

विचारणीय विषय है कि पवित्र ईसाई धर्म तथा पवित्र मुसलमान धर्म के प्रमुख बाबा आदम ने जो साधना की उसके प्रतिफल में जिस लोक में पहुँचा

है वहाँ पर भी चैन से नहीं रह रहा। इस लोक में भी बाबा आदम जैसे पुण्यात्माओं के प्रथम दोनों पुत्रों में राग-द्वेष भरा था जिस कारण बड़े भाई ने छोटे की हत्या कर दी। यहाँ पथ्वी पर भी बाबा आदम महादुःखी ही रहे क्योंकि बड़े भाई ने छोटे को मार दिया, बड़ा घर त्याग कर चला गया। सैकड़ों वर्षों पश्चात् बाबा आदम को एक पुत्र हुआ। जिस से भक्ति मार्ग चला है। जिस किसी के दोनों पुत्र ही बिछुड़ जाए वह पिता सुखी नहीं हो सकता यही दशा बाबा आदम जी की हुई थी। सैकड़ों वर्ष दुःख झेलने के पश्चात् एक नेक पुत्र प्राप्त हुआ। फिर बाबा आदम उस लोक में भी इसी कष्ट को झेल रहे हैं। सर्व नबी जो पहले पथ्वी पर अल्लाह के भेजे आए थे, वे (हजरत ईसा, हजरत अब्राहिम, हजरत मूसा आदि) भी उसी स्थान (लोक) में अपनी साधना से पहुँचे। वास्तव में वह पितर लोक है। उसमें अपने-अपने पूर्वजों के पास चले जाते हैं। इसी प्रकार हिन्दूओं का भी ऊपर वही पितर लोक है। जिनका संस्कार पितर बनने का होता है, वह पितर योनि धारण करके उस पितर लोक में रहता है। फिर पितर वाला जीवन भोगकर फिर भूत तथा अन्य पशु व पक्षियों की योनियों को भी भोगता है। यह तो पूर्ण मोक्ष तथा सुख प्राप्ति नहीं हुई। अन्य वर्तमान के साधकों को क्या उपलब्धि होगी ?

पवित्र बाईबल में लिखा है कि हजरत आदम के काईन तथा हाबिल दो पुत्र थे। हाबिल भेड़ बकरियाँ पाल कर निर्वाह कर रहा था तथा काईन खेती करता था। एक दिन काईन अपनी पहली फसल का कुछ अंश प्रभु के लिए ले गया। प्रभु ने काईन की भेंट स्वीकार नहीं की क्योंकि काईन का दिल पाक नहीं था। हाबिल अपने भेड़ का पहलौंठा मेंमना(बच्चा) भेंट के लिए लेकर प्रभु के पास गया, जो प्रभु ने स्वीकार कर लिया। इस बात से काईन क्रोधित हो गया। वह अपने छोटे भाई हाबिल को बहका कर जंगल में ले गया, वहाँ उसकी हत्या कर दी। प्रभु ने पूछा काईन तेरा भाई कहाँ गया? काईन ने कहा मैं क्या उसके पीछे-पीछे फिरता हूँ? मुझे क्या मालूम?

तब प्रभु ने कहा कि तुने अपने भाई के खून से पथ्वी को रंगा है। अब मैं तुझे शाप देता हूँ कि तू रोजी के लिए भटकता रहेगा।

विचार करें :-- विचार करने योग्य है कि जहाँ से दोनों पवित्र धर्मों (मुसलमान तथा ईसाई) के पूर्वज मुखिया की जीवनी प्रारम्भ होती है वहीं से हृदय विदारक घटनाऐं प्रारम्भ हो गई।

वास्तव में हजरत आदम के शरीर में कोई पितर आकर प्रवेश करता था। वही माँस खाने का आदी होने के कारण पवित्र आत्माओं को गुमराह करता था कि अल्लाह (प्रभु) को भेड़ के बच्चे की भेंट स्वीकार है। दोनों भाईयों का झगड़ा करा दिया। हजरत आदम जी के परिवार को बर्बाद कर दिया।

"हजरत मुहम्मद जी में काल(ब्रह्म) तथा अन्य देव व पितर प्रवेश करके बोलते थे का प्रमाण"

सर्व पवित्र धर्मों के श्रद्धालु वास्तविक ज्ञान तथा भक्ति विधि से वंचित हैं। वह वास्तविक तत्वज्ञान तथा भक्ति विधि मैं (कबीर परमेश्वर काशी वाला जुलाहा/धाणक) स्वयं ही बताने आया हूँ। मुझ पर विश्वास करो। और बताता हूँ(परमेश्वर कबीर साहेब जी ने अपने अमंत वचनों को जारी रखते हुए कहा)-

मैंने एक मुल्ला द्वारा कुर्आन शरीफ की कुछ सूरतों का विवरण सुना था, उनमें निम्न विवरण लिखा है - कुर्आन शरीफ अर्थात् कुर्आन मजीद की प्राप्ति कैसे हुई? (कुर्आन शरीफ वाला ज्यों का त्यों विवरण कुर्आन मजीद में है)।
कुर्आन मजीद – तर्जुमा, फतेह मुहम्मद खां साहब जालंधरी, प्रकाशकः महमूद एण्ड कम्पनी, मरोल पाईप लाईन, बम्बई–59, सोल एजेंट, फरीद बुक डिपो, देहली–6

उपरोक्त पुस्तक के : मुकदमा के पंष्ठ 6-7 पर लिखे है -

''कुर्आन मजीद के उतरने और संग्रह व संकलन करने के हालात''

उपरोक्त पुस्तक कुर्आन मजीद के मुकदमा पंष्ठ 6-7 पर लिखें लेखक के लेख का निष्कर्ष -

कुर्आन मजीद (शरीफ) 23 वर्षों में पूरी लिखी गई। जब हजरत मुहम्मद जी की आयु 40 वर्ष थी उस समय से प्रारम्भ हुई तथा अन्तिम समय 63 वर्ष की आयु तक 23 वर्ष लगातार कभी एक आयत, कभी आधी, कभी दो आयत, कभी 10 आयत, कभी पूरी सूरतें उतरी हैं। इसी को शरीअत में ''बह्य'' कहते हैं।

विद्वानों ने लिखा है ''वह्य(वह्य)'' उतरने के भिन्न-भिन्न तरीके हदीसों में पेश किए हैं।

1. फरिश्ता ''वह्य(वह्य)'' ले कर आता था तो घंटियाँ सी बजती थी। नबी मुहम्मद जी की जान निकलने को हो जाती थी। यह तरीका ज्यादा कष्ट दायक नबी मुहम्मद जी के लिए होता था।

यह भी लिखा है कि हजरत मुहम्मद जी नुबूबत के बाद (चालीस वर्ष की आयु से नबी बनने के बाद) रमजान के दिनों में पूरा कुर्आन मजीद (शरीफ) अल्लाह के पास से उस आसमान से जिसे हम देख नहीं सकते हैं अल्लाह (प्रभु) के हुकम (आज्ञा) से उतारा गया अर्थात् उसी अल्लाह के द्वारा बोला गया। इसके बाद हजरत जिबराईल को जिस समय, जिस कदर हुकम (आज्ञा) हुआ, उन्होंने पवित्र कलाम को बिल्कुल वैसा ही बिना किसी परिवर्तन के नबी मुहम्मद जी तक पहुँचाया।

2. कभी फरिश्ता दिल में कोई बात डाल दे।

3. फरिश्ता आदमी के रूप में आकर बात करे।

{नोट - हजरत मुहम्म्द जी की जीवनी में लिखा है कि जिस समय जिब्राईल फरिश्ता प्रथम बार वह्य (वह्य) लेकर आया मनुष्य रूप में दिखाई दिया, तो उसने मुहम्मद जी का गला घोंट कर कहा इसे पढ़ो। हजरत मुहम्मद जी ने बताया कि मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे, वह मेरा गला घोंट रहा हो। मेरे शरीर को दबा रहा हो। ऐसा दो बार किया फिर तीसरी बार फिर कहा पढ़ो। मुझे ऐसा लगा कि वह फिर गला घोटेंगा, इस बार और जोर से भींचेगा, मैं बोला क्या पढ़ूं ? कुर्आन की प्रथम आयत पढ़ाई, वह मुझे याद हो गई। फिर फरिश्ता चला गया, मैं घबरा गया। दिल बैठता जा रहा था। पूरा शरीर थर-थर कांपने लगा। गुफा के बाहर आकर सोचा यह कौन था। फिर वही फरिश्ता आदमी की सूरत में दिखाई दिया, जहाँ देखूं वही दिखाई देने लगा। ऊपर, नीचे, दांए, बांए सब ओर। घर आकर चादर ओढ़कर लेट गया। सारा शरीर पसीने से भीगा हुआ था। मुझे डर है कि खदीजा कहीं मर न जाऊँ। फिर हजरत मुहम्मद जी ने अपनी पत्नी खदीजा को सारी बात बताई, फिर एक 'बरका' नामक व्यक्ति ने हजरत मुहम्मद जी से सारी बातें सुन कर कहा आप 'नबी' बनोगे। यही फरिश्ता मूसा जी के पास भी आता था। उपरोक्त विवरण से तो सिद्ध होता है कि फरिश्ता आदमी रूप में वह्य लाता था तो भी हजरत मुहम्मद जी को बहुत कष्ट हुआ करता।}

4. अल्लाह तआला जागते में नबी मुहम्मद (सल्ल) से कलाम फरमाए। भावार्थ है कि आकाशवाणी करके ब्रह्म स्वयं बोलता था।

5. अल्लाह तआला सपने की हालत में कलाम फरमाए।

6. फरिश्ता सपने की हालत में आकर कलाम करे(इस छठी व पाँचवी प्रकार पर विवाद है, शेष उपरोक्त कुर्आन मजीद(शरीफ) के उतरने की 4 सही हैं।) पष्ठ 29 पर लिखा है कि कभी स्वयं ''वह्य(वह्य)'' आती थी। भावार्थ है कि जैसे कोई प्रेत प्रवेश करके बोलता है। कभी नबी मुहम्मद चादर लपेट कर लेट जाते थे, फिर चादर के अन्दर से बोलते थे।

पवित्र कुर्आन मजीद(शरीफ) के मुकदमा के पष्ठ 6-7 के लिखे लेख से स्पष्ट है कि जिबराईल नामक फरिश्ते ने तो केवल संदेश वाहक का कार्य किया है। ज्ञान व आदेश देने वाला प्रभु अर्थात् काल भगवान एक देशीय साकार सिद्ध हुआ जो सातवें आसमान पर अव्यक्त रूप में है, जिसे देखा नहीं जा सकता। अव्यक्त का उदाहरण है जैसे सूर्य बादलों के पार होने के कारण अदृश्य (अव्यक्त) होता है। दिन होते हुए भी दिखाई नहीं देता। इसी प्रकार परमात्मा एक देशीय जाने तथा अपनी शक्ति से छुपा है। जिस कारण से उसे निराकार माना है। परन्तु भक्ति की सत्य साधना द्वारा उसे देखा जा सकता

है। वह सत्य भक्ति विधि कुरान शरीफ में नहीं है क्योकि उस के लिए किसी बाखबर (तत्वदर्शी) से जानने को कहा है। कुर्आन शरीफ (मजीद) के ज्ञान दाता ने किसी अन्य कबीर नामक अल्लाह (प्रभु) को सर्व का पालन कर्ता, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, सर्व के पूजा के योग्य कहा है। कुर्आन शरीफ (मजीद) सूरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 58 तथा 59 में वर्णन है। जिसमें कुर्आन ज्ञान दाता अल्लाह ने कहा है कि उस उपरोक्त अल्लाह कबीर या खबीर जिसे अल्लाहु अकबर भी कहा जाता है। उसके विषय में मैं(कुर्आन का ज्ञान दाता) नहीं जानता। उसके विषय में किसी बाखबर(तत्वदर्शी संत) से पूछो। वह कबीर अल्लाह छः दिन में सृष्टि की उत्पत्ति करके सातवें दिन तख्त पर जा विराजा। इससे यह भी सिद्ध होता है कि पूर्ण परमात्मा कबीर साकार है।

यही प्रमाण पवित्र बाईबल ''उत्पत्ति ग्रंथ'' में भी है। हजरत आदम के अल्लाह(प्रभु) ने पूर्ण परमात्मा के द्वारा रची सृष्टि का वर्णन किया है। छठे दिन परमश्वेर ने कहा कि हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएं। प्रभु ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया। फिर उनके खाने के लिए केवल फलदार वृक्ष तथा बीजदार पौधे दिये। माँस खाने की आज्ञा नहीं दी तथा सातवें दिन विश्राम किया।

"पवित्र ईसाई तथा मुसलमान धर्मों के अनुयाईयों को कर्माधार से लाभ-हानि करने वाले भी (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) तीन ही देवता"

हजरत आदम तथा उसकी पत्नी हव्वा तथा अन्य प्राणियों व सर्व ब्रह्मण्डों की उत्पत्ति करके कुर्आन व बाईबल बोलने वाले प्रभु को सौंप गया। बाईबल के उत्पत्ति ग्रंथ से भी सिद्ध होता है कि परमात्मा मनुष्य जैसा है। क्योंकि प्रभु ने मनुष्य को अपने जैसा बनाया तथा सात दिन के बाद का वर्णन कुर्आन शरीफ व बाईबल ज्ञान दाता (काल/ज्योति निरंजन) की लीला का है। पवित्र बाईबल में लिखा है कि 'फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनुष्य भले-बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है। इसलिए अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ा कर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ कर खा ले और सदा जीवित रहे। परमेश्वर ने उसे अदन के उद्यान से निकाल दिया।

उपरोक्त विवरण से यह भी सिद्ध होता है कि जो आदम का प्रभु है ऐसा कोई और भी है तथा साकार है। इसीलिए तो कहा है कि मनुष्य जीवन फल को खाकर हम में से एक के समान हो गया है। क्योंकि बाईबल के उत्पत्ति ग्रन्थ में ही लिखा है कि आदम ने भले-बुरे के ज्ञान वाला फल तोड़ कर खा लिया तो उसे पता चला वह नंगा है। यहोवा परमेश्वर टहलते हुए आ गया। उसने आदम को पुकारा तू कहाँ है? तब आदम ने कहा मैं तेरी आवाज

सुनकर छुप गया हूँ, क्योंकि मैं नंगा हूँ। फिर परमेश्वर ने आदम तथा उसकी पत्नी हव्वा के वस्त्र बनवाए।

विचार करें उपरोक्त विवरण स्वयं सिद्ध कर रहा है कि पूर्ण परमात्मा भी सशरीर मनुष्य जैसे आकार का है तथा अन्य प्रभु भी मनुष्य जैसे आकार के हैं, जिसे पवित्र ईसाई तथा मुसलमान धर्म निराकार मानता है तथा प्रभु एक से अधिक भी हैं।

क्योंकि काल ब्रह्म स्वयं सामने नहीं आता, उसने अपने तीनों पुत्रों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) के द्वारा एक ब्रह्मण्ड का कार्य चला रखा है। हजरत आदम जी भगवान ब्रह्मा के अवतार हैं। हजरत आदम को श्री ब्रह्मा जी ने बहका कर रखा था, उसी ने उसको वहाँ से निकाला था। इसीलिए कहा है कि भले बुरे के ज्ञान वाला फल खाकर आदम हम में से एक के समान हो गया है। क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु व महेश तीनों देव हैं, हजरत ईसा के अवतार धारण करने के विषय में पवित्र बाईबल में लिखा है कि प्रभु ईश्वर ने पथ्वी पर बढ़ रहे दुराचार के अन्त के लिए अपने पुत्र को भेजा था, क्योंकि हजरत ईसा जी भगवान विष्णु के अवतार हैं। विष्णु लोक से कोई देव आत्मा का जन्म मरियम के गर्भ से फरिश्ते (देव) द्वारा हुआ था।

"मामरे पर तीनों देवताओं के देखने का प्रमाण"

(इसहाक के जन्म की प्रतिज्ञा)

इसमें लिखा है कि अब्राहम मम्रे (मामरे) के बांजों के बीच कड़ी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा था, तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया और उसने आँख उठा कर देखा तो तीन पुरुष उसके सामने खड़े हैं। उन्होंने अब्राहम की प्रार्थना पर खाना खाया तथा वंद्ध अवस्था में पुत्र होने का आशीर्वाद देकर चले गए तथा जाते समय कहा कि हम सदोम आदि नगरों का नाश करने जा रहे हैं। वहाँ के लोग अधर्मी हो गए हैं। अब्राहम ने पूछा क्या आप अधर्मियों के साथ धर्मियों को भी मार डालोगे। प्रभु ने कहा यदि 100 व्यक्ति भी धर्मी होंगे तो भी हम उस नगरी का नाश नहीं करेंगे। ''सदोम आदि नगरों का विनाश'' नामक विषय में लिखा है कि उनमें से दो दूत ''सदोम'' में पहुँचे। सदोम में लूत (लोट) नामक व्यक्ति रहता था। उस गाँव के व्यक्ति बहुत निकम्मे थे। लूत (लोट) ने उन्हें आदर पूर्वक रोका। गाँव वालों ने उन फरिश्तों को आम व्यक्ति जान कर उनके साथ कुकर्म (नर से नर बलात्कार करना) करने के लिए बाहर निकलने को कहा। परन्तु लूत(लोट) ने कहा यह मेरे अतिथि हैं, मैं इन्हें आपको नहीं दे सकता। आप मेरी लड़की को ले लो। इस बात से प्रसन्न फरिश्तों ने सभी निकम्मे व्यक्तियों को अंधा कर दिया तथा लूत(लोट) को

उसके परिवार सहित उस गाँव से निकाल कर पूरे गाँव को नष्ट कर दिया। इससे सिद्ध हुआ कि तीनों देवता हैं, जो ब्रह्म के आदेश से सर्व को किए कर्म का फल देते हैं।

उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि तीन देवता हैं। उनमें से कभी दो कभी एक अपने-अपने साधक के पास जाते हैं। यदि कोई तीनों का साधक है तो तीनों भी एक साथ जाते हैं, यदि कोई दो का साधक है तो दो भी दर्शन देते हैं। उपरोक्त प्रमाण से भी सिद्ध होता है कि तीनों देवता (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) ही अपने पिता ब्रह्म के आदेशानुसार एक ब्रह्मण्ड में सर्व कार्य करते हैं। भक्ति भाव के व्यक्तियों की कर्म अनुसार रक्षा तथा दुष्कर्म करने वालों का कर्म अनुसार नाश करते हैं। ब्रह्म(अव्यक्त कभी सामने दर्शन न देने वाला) प्रभु उपरोक्त तीनों फरिश्तों (देवताओं) द्वारा अपना आदेश नबियों के पास भिजवाता है तथा आकाशवाणी द्वारा या प्रेतवत प्रवेश करके स्वयं भी आदेश देता है। फरिश्ते तो उसका ज्यों का त्यों आदेश सुनाते हैं। आदेश में कोई परिवर्तन नहीं करते। इससे स्पष्ट हुआ कि पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुर्आन सहित चारों कतेबों का ज्ञान दाता प्रभु किसी अन्य कबीर नामक प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है।

विशेष :- कुर्आन शरीफ(मजीद) शूरः बकरः 2(87) आयत 21 से 33 तक उस पूर्ण परमात्मा की महिमा के विषय में वर्णन है तथा आयत 34 से अंत तक अपनी महिमा बताई है तथा अपने ज्ञान अनुसार पूजा विधि बताई है। यह भी स्पष्ट किया है कि मैंने (कुर्आन ज्ञान दाता ने) आदम तथा उसकी पत्नी हव्वा को स्वर्ग की वाटिका में ठहराया तथा उनको बीच वाले वृक्षों के फल छोड़ कर शेष वृक्षों के फल खाने को कहा। परन्तु उन्होंने सर्प के बहकाने से बीच वाले वृक्षों के फल खा लिये। मैंने उनको जमीन पर दुःखी होने के लिये भेज दिया। (शूरः बकरः 2(87) आयत 35 से 39 तक।)

कुर्आन ज्ञान दाता अल्लाह ने स्पष्ट किया है कि मैंने ही हजरत मूसा को ''तौरत'' किताब उतारी थी तथा मूसा के लिए पत्थर से पानी के झरने निकाले थे(आयत 41, 53, 60)। हम ही मूसा के बाद एक के बाद दूसरा पैगम्बर भेजते रहे तथा ईसा बिन मरियम को खुली निशानियाँ बख्शी तथा रूहुल कुदस(यानि जब्रिल) से उनको मदद दी। (आयत 87)

सार विचार :- उपरोक्त पवित्र कुर्आन शरीफ के विवरण से स्पष्ट हुआ कि बाबा आदम से लेकर हजरत ईसा, हजरत अब्राहम, हजरत दाऊद, हजरत मुसा, हजरत मुहम्मद साहेब तक को पैगम्बर बना कर भेजने वाला खुदा(अल्लाह/प्रभु) एक ही है। उसी ने कुर्आन शरीफ अर्थात् मजीद का ज्ञान ब्रह्म के द्वारा स्वयं प्रेतवत प्रवेश करके या आकाशवाणी करके कहा है या

फरिश्तों के माध्यम से हजरत मुहम्मद तक ज्यों का त्यों पहुँचाया है। वही खुदा सूरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 58 तथा 59 में कह रहा है कि हे पैगम्बर (हजरत मुहम्मद) पूर्ण परमात्मा कबीर है, परन्तु काफिर लोग मेरी इस बात पर विश्वास नहीं करते। आप उनकी कही बातों को मत मानना मेरे द्वारा दिया यह कुरान शरीफ वाले ज्ञान की दलीलों पर विश्वास करना कि कबीर अल्लाह उसी को अल्लाह अक्बरू कहते हैं। इस ज्ञान के समर्थन में काफिरों के साथ संघर्ष करना भावार्थ है कि काफिर लोग कहते हैं कि कबीर अल्लाह नहीं है। आप (हजरत मुहम्मद) कहना कि कबीर अल्लाह है। लड़ना नहीं है। उनकी बातों में नहीं आना हैं (आयत 52) वह (कबीर अल्लाह) वही है जिसने जमीन व आसमान के बीच सर्व रचा, दिन-रात बनाए, परिवार, रिश्तेदार, आदि इन्सान के लिए बनाए तथा जमीन में मीठा पानी आदि पदार्थ प्रदान किए।(आयत 53 से 55) हे पैगम्बर(हजरत मुहम्मद)! मैंने जो कुरान की आयतों द्वारा ज्ञान दिया है उसमें जो कबीर है वह पूर्ण परमात्मा है उस पर विश्वास रखना। काफिर लोग उस कबीर को परमात्मा (अल्लाह) नहीं मानते। उनकी बातें मत मानना, उनके साथ ज्ञान का संघर्ष करना लड़ना नहीं परन्तु उनकी बातों को स्वीकार नहीं करना। (आयत 52) वह कबीर परमात्मा वही है जिसने सर्व सृष्टि की रचना की है। जिसने परिवार के जन उत्पन्न किए नाते-रिश्ते बनाए। सर्व का पालन करता है। (आयत 53से 55) हमने तुम्हें खुशखबरी सुनाने(सिर्फ अजाब से) डराने के लिये भेजा है। (आयत 56) और (ऐ पैगम्बर) उस जिंदा पर भरोसा रखो जो कभी मरने वाला नहीं है। {क्योंकि पूर्ण परमात्मा (अल्लाह कबीर) एक जिन्दा महात्मा की वेशभूषा में हजरत मुहम्मद जी को मिला था तथा सतलोक आदि को दिखाया था, परन्तु हजरत मुहम्मद जी ने पूर्ण परमात्मा की बात पर विश्वास नहीं किया था। उसी का वर्णन है।} तारीफ के साथ उसकी पाकी ब्यान करते रहो और वह कबीर अल्लाह अपने बंदो के गुनाहों से खबरदार है तथा वही (ईवादही खबीरा/कबीरा) कबीर परमात्मा अर्थात् अल्लाहू अकबर पूजा के योग्य है। (58) वह कबीर अल्लाह वही है जिसने छः दिन में सर्व ब्रह्मण्डों को रचा तथा सातवें दिन तख्त पर विराजा। वास्तव में वह अल्लाह कबीर रहमान(क्षमा शील) है। उसके विषय में मैं (कुर्आन शरीफ/मजीद का ज्ञान दाता) नहीं जानता। उसकी खबर अर्थात् पूर्ण ज्ञान व भक्ति की विधि किसी बाखबर (तत्वदर्शी संत) से पूछो। (आयत 59)

उपरोक्त विवरण से यह भी सिद्ध हुआ कि प्रभु एक नहीं अनेक हैं तथा तीनों देवता (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी) ही तीनों लोकों के प्राणियों को संस्कारवश लाभ व हानि तथा उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार के

कारण हैं तथा ब्रह्म(काल) सर्व को धोखा देकर रखता है। पूर्ण परमात्मा कबीर ही सर्व सुखदायक, सर्व के पूजा के योग्य तथा पूर्ण मोक्ष दायक है।

पूज्य कबीर परमेश्वर बता रहे हैं कि मैंने उस मुल्ला जी से कहा कि जिस बाखबर(तत्वदर्ष्टा) संत के लिये आपका अल्लाह संकेत कर रहा है। उस तत्वदर्ष्टा संत द्वारा दिया ज्ञान ही पूर्ण मोक्ष दायक है। वह वास्तविक भक्ति मार्ग न तो हजरत मुहम्मद जी को प्राप्त हुआ, न आप मुल्ला, काजियों व पीरों को। इसलिए आज तक जो भी साधना आप कर रहे हो वह अधूरी है। केवल ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) का फैलाया भ्रम जाल है। यह नहीं चाहता कि साधक उसके जाल से निकल जाए। पूज्य कबीर परमेश्वर ने बताया वह बाखबर (अर्थात् तत्वदर्शी संत) मैं हूँ। आप मेरे से उपदेश लो तथा यह तत्व ज्ञान जो मैं आपको बताऊंगा अन्य भक्ति चाहने वालों को भी समझाओ। यह तो काल है जिसे वेदों में ब्रह्म(क्षर पुरुष/ज्योति निरंजन) कहा जाता है। पूर्ण परमात्मा कोई और है जिसे वेदों में कविर्देव कहा है तथा कुर्आन शरीफ(मजीद) में कबीरन्, कबीरा, खबीरन्, खबीरा आदि कहा है तथा जिसे हजरत मुहम्मद जी ने अल्लाहु अकबर कहा है। वह कबीर अल्लाह मैं हूँ। आप सर्व मेरी आत्मा हो। आपको काल(ब्रह्म) ने भ्रमित किया है।

बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर ने आगे बताया - यह वार्ता सुनकर वह मुल्ला मुझसे अति नाराज हो गया तथा आगे से उसकी कथा में न आने को कहा। पूज्य कबीर परमेश्वर से उपरोक्त विवरण जानकर बादशाह सिंकदर लौधी ने अपने धार्मिक गुरू शेखतकी से कहा ''पीर जी, क्या कुर्आन शरीफ में महाराज कबीर साहेब जी द्वारा बताया विवरण है?'' शेखतकी ने कुर्आन शरीफ में सूरत फुरकानी 25 आयत 52 से 59 को ध्यान से पढ़ा तथा सत्य को जाना परन्तु मान वश कह दिया कि कबीर जी तो झूठा है। यह क्या जाने पवित्र कुर्आन शरीफ के गूढ रहस्य को। यह कहकर अति नाराजगी व्यक्त करता हुआ उठ कर अपने कमरे में चला गया। बादशाह सिकंदर लौधी भी कुर्आन शरीफ को सुना करता था तो उसे याद आया कि ऐसा वर्णन अवश्य आता है। फिर भी भक्ति मार्ग तथा अरबी भाषा का ज्ञान न होने के कारण पूर्ण विश्वास नहीं हुआ। परन्तु हजरत मुहम्मद जी के जीवन चरित्र से पूर्ण परिचित था। उससे बहुत प्रभावित हुआ तथा कहा कि सच-मुच हजरत मुहम्मद जी के जीवन में कष्ट ही कष्ट रहे हैं।

''बादशाह सिकंदर की शंकाओं का समाधान''

प्रश्न-बादशाह सिकंदर लोधी ने पूछा, हे परवरदिगार (क). यह ब्रह्म(काल) कौन शक्ति है ? (ख). यह सभी के सामने क्यों नहीं आता?

उत्तर-परमेश्वर कबीर साहेब जी ने सिकंदर लोधी बादशाह के प्रश्न 'क-ख' के उत्तर में सृष्टि रचना सुनाई। (कृप्या देखें इसी पुस्तक के पृष्ठ 250 से 269 पर)

(ग). क्या बाबा आदम जैसे महापुरुष भी इसी के जाल में फंसे थे?

ग के उत्तर में बताया कि पवित्र बाईबल में उत्पत्ति विषय में लिखा है कि पूर्ण परमात्मा मनुष्यों तथा अन्य प्राणियों की रचना छः दिन में करके तख्त अर्थात् सिंहासन पर चला गया। उसके बाद इस लोक की बाग डोर ब्रह्म ने संभाल ली। इसने कसम खाई है कि मैं सब के सामने कभी नहीं आऊँगा। इसलिए सभी कार्य अपने तीनों पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) के द्वारा करवाता रहता है या स्वयं किसी के शरीर में प्रवेश करके प्रेत की तरह बोलता है या आकाशवाणी करके आदेश देता है। प्रेत, पितर तथा अन्य देवों (फरिश्तों) की आत्माऐं भी किसी के शरीर में प्रवेश करके अपना आदेश करती हैं। परन्तु श्रद्धालुओं को पता नहीं चलता कि यह कौन शक्ति बोल रही है। पूर्ण परमात्मा ने माँस खाने का आदेश नहीं दिया। पवित्र बाईबल उत्पत्ति विषय में सर्व प्राणियों के खाने के विषय में पूर्ण परमात्मा का प्रथम तथा अन्तिम आदेश है कि मनुष्यों के लिए फलदार वृक्ष तथा बीजदार पौधे दिए हैं जो तुम्हारे खाने के लिए हैं तथा अन्य प्राणियों को जिनमें जीवन के प्राण हैं उनके लिए छोटे-छोटे पेड़ अर्थात् घास, झाड़ियाँ तथा बिना फल वाले पेड़ आदि खाने को दिए हैं। इसके बाद पूर्ण प्रभु का आदेश न पवित्र बाईबल में है तथा न किसी कतेब (तौरत, इंजिल, जबुर तथा कुर्आन शरीफ) में है। इन कतेबों में ब्रह्म तथा उसके फरिश्तों तथा पितरों व प्रेतों का मिला-जुला आदेश रूप ज्ञान है।

(घ). क्या बाबा आदम से पहले भी सृष्टि थी ?

उत्तर - सूर्यवंश में राजा नाभिराज हुआ। उसका पुत्र राजा ऋषभदेव हुआ जो जैन धर्म का प्रवर्तक तथा प्रथम तीर्थकर माना जाता है। वही ऋषभदेव ही बाबा आदम हुआ, यह विवरण जैन धर्म की पुस्तक ''आओ जैन धर्म को जाने'' के पृष्ठ 154 पर लिखा है।

इससे स्पष्ट है कि बाबा आदम से भी पूर्व सृष्टि थी। पृथ्वी का अधिक क्षेत्र निर्जन था। एक दूसरे क्षेत्र के व्यक्ति भी आपस में नहीं जानते थे कि कौन कहाँ रहता है। ऐसे स्थान पर ब्रह्म ने फिर से मनुष्य आदि की सृष्टि की। हजरत आदम तथा हव्वा की उत्पत्ति ऐसे स्थान पर की जो अन्य व्यक्तियों से कटा हुआ था। काल के पुत्र ब्रह्मा के लोक से यह पुण्यात्मा (बाबा आदम) अपना कर्म संस्कार भोगने आया था। फिर शास्त्र अनुकूल साधना न मिलने के कारण पितर योनि को प्राप्त होकर पितर लोक में चला गया। बाबा आदम से पूर्व फरिश्ते थे। पवित्र बाईबल ग्रन्थ में लिखा है।

(ड़). यदि अल्लाह का आदेश मनुष्यों को माँस न खाने का है तो बाईबल तथा कुर्आन शरीफ में कैसे लिखा गया ?

उत्तर - पवित्र बाईबल में उत्पत्ति विषय में लिखा है कि पूर्ण परमात्मा ने छः दिन में सष्टि रचकर सातवें दिन विश्राम किया। उसके बाद बाबा आदम तथा अन्य नबियों को अव्यक्त अल्लाह (काल) के फरिश्ते तथा पितर आदि ने अपने आदेश दिए हैं। जो बाद में कुर्आन शरीफ तथा बाईबल में लिखे गए हैं।

(च). अव्यक्त प्रभु काल ने यह सर्व वास्तविक ज्ञान छुपाया है तो पूर्ण परमात्मा का संकेत किसलिए किया ?

उत्तर - ज्योति निरंजन(अव्यक्त माना जाने वाला प्रभु) पूर्ण परमात्मा के डर से यह नहीं छुपा सकता कि पूर्ण परमात्मा कोई अन्य है। यह पूर्ण प्रभु की वास्तविक पूजा की विधि से अपरिचित है। इसलिए यह केवल अपनी साधना का ज्ञान ही प्रदान करता है तथा महिमा गाता है पूर्ण प्रभु की भी।

सिकंदर ने सोचा कि ऐसे भगवान को दिल्ली में ले चलता हूँ और हो सकता है वहाँ के व्यक्ति भी इस परमात्मा के चरणों में आकर एक हो जाऐं। यह हिन्दू और मुसलमान का झगड़ा समाप्त हो जाऐं। कबीर साहेब के विचार कोई सुनेगा तो उसका भी उद्धार होगा। दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी ने प्रार्थना की कि हे ''सतगुरुदेव एक बार हमारे साथ दिल्ली चलने की कृपा करो।'' कबीर साहेब ने सिकंदर लौधी से कहा कि पहले आप मेरे से उपदेश लो फिर आपके साथ चल सकता हूँ। ऐसे नहीं जाऊँगा। सिकंदर ने कहा कि दाता जैसे आप कहोगे वैसे ही करूँगा। कबीर साहेब ने कहा कि एक तो हिन्दू से मुसलमान नहीं बनाएगा। सिकंदर ने कहा कि नहीं बनाऊँगा। कोई जीव हिंसा नहीं करवाएगा। सिकंदर ने कहा प्रभु मैं जीव हिंसा नहीं करूंगा तथा न किसी को जीव हिंसा करने के लिए कहूँगा। परन्तु ये मुल्ला तथा काजी मेरे बस से बाहर हैं। कबीर साहेब ने कहा ठीक है आप अपने मुँख से नहीं कहोगे। सिकंदर ने कहा कि ठीक है दाता अर्थात् सारे नियम बता दिए और सिकंदर ने सारे स्वीकार कर लिए। परमश्वेर कबीर साहेब जी से दीक्षा ग्रहण कर ली तथा सर्व नियमों को आजीवन पालन करने का प्रण किया।

तब सतगुरुदेव सिकंदर लौधी को प्रथम मंत्र प्रदान करके वहाँ से उसके साथ दिल्ली को रवाना हुए। बादशाह सिकंदर ने परमेश्वर कबीर साहेब को अपने साथ हाथी पर अम्बारी में बैठाया। उसमें राजा के अतिरिक्त कोई बैठ नहीं सकता था। परन्तु सिकंदर को भगवान सामने दिखाई दिया जिसने उसकी असाध्य बीमारी से रक्षा की उसके सामने मुर्दा स्वामी रामानन्द जीवित कर दिया।

जब सिकंदर लौधी के धार्मिक गुरु शेखतकी को पता चला कि राजा

स्वस्थ हो गया और इसके सामने कबीर परमेश्वर ने स्वामी रामानन्द जी का कटा शीश जोड़ कर जीवित कर दिया। उसने सोचा कि अब मेरे नम्बर कटेंगे अर्थात् मेरी महिमा कम हो जाएगी और मेरी कमाई तथा प्रभुता गई। शेखतकी को साहेब कबीर से ईर्ष्या हो गई। वह विचार करने लगा कि किसी प्रकार इसको नीचा दिखा दूं और सिकंदर के हृदय से यह उतर जाए और मेरी प्रभुता बनी रह जाए। सभी वहाँ से दिल्ली के लिए चल पड़े। रास्ते में रात्रि में एक दरिया पर रूक गए। सोचा कि रात्रि में विश्राम करेंगे। सुबह चलने का इरादा करके वहाँ पर पड़ाव लगा दिया।

"मत लड़के कमाल को जीवित करना"

शेखतकी महाराजा सिकंदर से मुख चढ़ाए फिर रहा था। सिकंदर ने पूछा कि क्या बात है पीर जी? शेखतकी ने कहा कि क्या तुझे बात नहीं मालूम? सिकंदर ने पूछा कि क्या बात है? शेखतकी ने कहा कि इस कबीर काफिर को साथ किसलिए रखा है? सिकंदर ने कहा कि ये तो भगवान (अल्लाह) है। शेखतकी ने कहा कि अच्छा अल्लाह अब आकार में आने लग गया। अल्लाह कैसे है? सिकंदर ने कहा कि पहले तो अल्लाह ऐसे कि मेरा रोग ऐसा था कि किसी से भी ठीक नहीं हो पा रहा था। इस कबीर प्रभु ने हाथ ही लगाया था मैं स्वस्थ हो गया। शेखतकी ने कहा कि ये जादूगर होते हैं। सिकंदर ने फिर कहा दूसरा भगवान ऐसे है कि मैंने उनके गुरुदेव का सिर काट दिया था और उन्होंने उसे मेरी आँखों के सामने तुरंत जीवित कर दिया। शेखतकी ने कहा कि अगर यह कबीर अल्लाह है तो मैं इसकी परीक्षा लूंगा। यदि कबीर जी मेरे सामने कोई मुर्दा जीवित करे तो इसे अल्लाह मान लूंगा। नहीं तो दिल्ली जाकर मैं पूरे मुसलमान समाज को कह दूँगा कि यह राजा हिन्दू हो गया है। सिकंदर लौधी डर गया कि कहीं ऐसा न हो कि यह जाते ही राज पलट दे। (राज को देने वाला पास बैठा है और उस मूर्ख से डर लगता है।) राजा ने शेखतकी से कहा कि आप कैसे प्रसन्न होंगे। शेखतकी ने कहा कि मैं तब प्रसन्न होऊँगा जब मेरे सामने यह कबीर कोई मुर्दा जीवित कर दे। साहेब से प्रार्थना हुई तो कबीर साहेब ने कहा कि ठीक है। (कबीर साहेब ने सोचा कि यह अनाड़ी आत्मा शेखतकी है। अगर यह मेरी बात मान गया तो आधे से ज्यादा मुसलमान इसकी बात स्वीकार करते हैं। क्योंकि यह दिल्ली के बादशाह का पीर है और अगर यह सही ढंग से मुसलमानों को बता देगा क्योंकि बेचारी भोली आत्माऐं इन गुरूओं पर आधारित होती हैं।)

इसलिए कहा कि ठीक है शेखतकी ढूंढ ले कोई मुर्दा। सुबह एक 10-12 वर्ष की आयु के लड़के का शव पानी में तैरता हुआ आ रहा था। शेखतकी ने

कहा कि वह आ रहा है मुर्दा, इसे जिन्दा कर दो। कबीर साहेब ने कहा पहले आप प्रयत्न करो, कहीं फिर पीछे नम्बर बनाओ। उपस्थित मन्त्रियों तथा सैनिकों ने कहा कि पीर जी आप कोशिश करके देख लो। शेखतकी जन्त्र-मन्त्र करता रहा। इतने में वह मुर्दा तीन फर्लांग आगे चला गया। शेखतकी ने कहा कि यह कबीर चाहता था कि यह बला सिर से टल जाए। कहीं मुर्दे जीवित होते हैं? मुर्दे तो कयामत के समय ही जीवित होते हैं। कबीर साहेब बोले महात्मा जी आप बैठ जाओ, शान्ति करो। कबीर साहेब ने उस मुर्दे को हाथ से वापिस आने का संकेत किया। बारह वर्षीय बच्चे का मृत शरीर दरिया के पानी के बहाव के विपरीत चलकर कबीर जी के सामने आकर रूक गया। पानी की लहर नीचे-नीचे जा रही और शव ऊपर रूका था। कबीर साहेब ने कहा कि हे जीवात्मा जहाँ भी है कबीर हुक्म से मुर्दे में प्रवेश कर और बाहर आ। कबीर साहेब ने इतना कहा ही था कि शव में कम्पन हुई तथा जीवित होकर बाहर आ गया। कबीर साहेब के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया। "बोलो कबीर परमेश्वर की जय"

(मृतक लड़के कमाल को जीवित करना)

सर्व उपस्थित जनों ने कहा कि कबीर साहेब ने तो कमाल कर दिया। उस लड़के का नाम कमाल रख दिया। लड़के को अपने साथ रखा। अपने बच्चे

की तरह पालन-पोषण किया और नाम दिया। उसके बाद दिल्ली में आ गए। सभी को पता चला कि यह लड़का जो इनके साथ है यह परमेश्वर कबीर साहेब ने जीवित किया है। दूर तक बात फैल गई। शेखतकी की तो माँ सी मर गई सोचा यह कबीर अच्छा दुश्मन हुआ। इसकी तो और ज्यादा महिमा हो गई।

शेखतकी की इर्ष्या बढ़ती ही चली गई। उसकी तेरह वर्षीय लड़की को मत्यु पश्चात् कब्र में जमीन में दबा रखा था। शेखतकी ने कहा यदि कबीर मेरी लड़की को जो कब्र में दफना रखी है। अगर उसको जीवित करेगा तो मैं इसे अल्लाह मान लूंगा।

''शेख तकी द्वारा कबीर जी की अन्य परिक्षाएँ''

"कमाली के पहले के जन्मों की जानकारी"

(पूर्ण मुक्ति पूर्ण संत बिना असंभव)

सतयुग में कमाली वाला जीव विद्याधर पंण्डित की पत्नी दीपिका थी। फिर त्रेतायुग में ऋषि वेदविज्ञ (जो विद्याधर वाली ही आत्मा थी) की पत्नी सूर्या थी। सत्ययुग तथा त्रेता में परमात्मा कबीर जी बालक रूप में इन्हीं को प्राप्त हुए थे। तत्पश्चात् अन्य जीवन धारण किए तथा कलयुग में मुसलमान धर्म में राबिया लड़की का जन्म, फिर बंसुरी नामक लड़की का जन्म,उस के पश्चात् एक जीवन वैश्या का, फिर कमाली नामक लड़की का जीवन प्राप्त हुआ। राबिया के प्रमाण में साखियाँ गरीबदास साहेब रचित ग्रंथ साहेब में पारख के अंग से वाणी :-

गरीब, सुलतानी मक्के गये, मक्का नहीं मुकाम।
गया रांड के लेन कूँ, कहै अधम सुलतान।।56।।
गरीब, राबिया परसी रब्ब स्यौं, मक्के की असवार।
तीन मंजिल मक्का गया, बीबी के दीदार।।57।।
गरीब, फिर राबिया बंसरी बनी, मक्के चढ़ाया शीश।
पूर्बले संस्कार कुछ, धन्य सतगुरु जगदीश।।58।।
गरीब, बंसरी से वेश्वा बनी, शब्द सुनाया राग।
बहुरि कमाली पुत्री, जुग जुग त्याग बैराग।।59।।

प्रमाण के लिए गरीबदास साहेब रचित ग्रंथ साहेब में अचला के अंग से वाणीः-

गरीब, राबी कूँ सतगुरु मिले, दीना अपना तेज।
ब्याही एक सहाब से, बीबी चढ़ी न सेज।।363।।
गरीब, राबी मक्के कूँ चली, धर्या अलह का ध्यान।
कुत्ती एक प्यासी खड़ी, छूटे जात हैं प्राण।।364।।

गरीब, केश उपारे शीश के, बाटी रस्सी बीन।
जाकै वस्त्र बांधि करि, जल काढ्या प्रवीन।।365।।
गरीब, सुंनही कूँ पानी पिया, उतरी अरस अवाज।
तीन मजल मक्का गया, बीबी तुम्हरे काज।।366।।
गरीब, बीबी मक्के पर चढ़ी, राबी रंग अपार।
एक लाख अस्सी जहां, देखे सब संसार।।367।।
गरीब, राबी पटरा घालि कर, किया जहां असनान।
एक लाख अस्सी बहे, मंगर मल्या सुलतान।।368।।

एक राबिया नाम की लड़की मुसलमान धर्म में उत्पन्न हुई। जब उसकी आयु 16 वर्ष की थी तो उसे पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब मिले। प्रभु में बहुत प्रेम था। रोजा रखना, नमाज करना, ईद मनाना जो परम्परागत साधना धर्म अनुसार थी, वह पूरी लगन से किया करती थी।

तब कबीर साहेब ने बताया बेटी यह साधना प्रभु पाने की नहीं है। सारी सृष्टि रचना सुनाई तथा सत भक्ति का मार्ग बताया। उस लड़की राबिया ने उपदेश ले लिया। फिर चार वर्ष सत साधना करके समाज के दबाव से लोक-लाज के कारण सतमार्ग छोड़ दिया तथा वही परम्परागत साधना पुनः शुरू कर दी। उस लड़की की आस्था प्रभु में इतनी प्रबल थी कि शादी से मना कर दिया। माता-पिता रोने लग गए कि जवान लड़की को घर पर कैसे रखें? माता-पिता को आवश्यकता से अधिक परेशान देखकर राबिया ने शादी की स्वीकृति दे दी। उस लड़की राबिया की शादी एक बहुत बड़े साहेब (अधिकारी) से हुई। परन्तु अपने पति से स्पष्ट कह दिया कि मैं सन्तान उत्पत्ति नहीं करूँगी। मैंने तो मेरे माता-पिता के विशेष दबाव तथा समाज शर्म के कारण शादी की है। यदि आप मेरी बात स्वीकार नहीं करोगे तो मैं आत्महत्या कर लूंगी। यह मेरा अन्तिम फैसला समझो। मैं केवल प्रभु भक्ति करके आत्म कल्याण चाहती हूँ।

राबिया के पति ने सोचा क्यों मैं इस भक्तात्मा को दुःखी करूं और पाप का भागी बनूं। सोच विचार करके कहा कि राबिया जिस प्रकार आपने समाज से डर था ऐसे ही मेरा भी अपना एक समाज है। आपको समाज की दृष्टि में मेरी पत्नी के रूप में रहना पड़ेगा। मेरी दृष्टि में आप मेरी बहन के तुल्य होंगी। तुझे घर से बाहर नहीं जाने दूँगा। आप भजन(भक्ति) करो। कहो तो आपके लिए दो नौकरानी छोड़ देता हूँ। राबिया बहुत प्रसन्न हुई तथा कहा कि हे प्रभु! आपने मेरी बड़ी सुनी। उस दिन के बाद राबिया मुसलमान धर्म में प्रचलित साधना करती रही।

मुसलमान धर्म में जन्म था। ईद और बकरीद, रोजे आदि श्रद्धा से करती

थी। जब पचास वर्ष से ऊपर की आयु हो गई, तब अपने पति से कहा कि कहते हैं कि मक्का में जाना अति आवश्यक होता है। अब न जाने प्राण कब निकल जाऐं। एक बार मैं हज करना चाहती हूँ। उसके पति ने कहा कि आप जा सकती हो। कहो तो आपके लिए कोई ऊँट की व्यवस्था करवा देता हूँ। राबिया ने कहा कि मैं पैदल यात्रा करूँगी। अन्य भी बहुत यात्री जा रहे हैं। उसके पति ने कहा कि आप जा सकती हो।

राबिया ने मक्के में हज के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में देखा एक कुत्तिया बहुत प्यासी थी। वह कुत्तिया कभी राबिया के पैरों की ओर दौड़ कर आ रही थी, कभी कुएँ की ओर जा रही थी। राबिया समझ गई कि यह कुत्तिया बहुत प्यासी है। साथ में इसके छोटे-छोटे बच्चे भी नजर आ रहे थे। इसको जल प्राप्त नहीं हुआ तो ये प्राण त्याग जाएगी, इसके बच्चे भी मर जाएँगे। भक्तात्मा में दया बहुत होती है। राबिया कुएँ पर गई। वहाँ देखा न वहाँ बाल्टी थी और न ही कोई रस्सा था। आसपास कोई गाँव भी नजर नहीं आ रहा था। राबिया ने आव देखा न ताव, अपने सिर के बालों को उखाड़ कर एक लम्बी रस्सी बनाई। अपने ही कपड़े (क्योंकि उस समय मोटे खादी के कपड़े पहना करते थे।) उतार कर रस्सी से बाँध कर कुएँ में जल से भीगों कर बाहर निकाले और एक मटके का टूटा हुआ आधा हिस्सा वही पर रखा था उसको भर दिया। कुत्तिया ने बहुत शीघ्रता से पानी पीया। राबिया का सारा शरीर लहु-लुहान हो गया। अपने कपड़ों से सारे शरीर को पोंछ कर और उन कपड़ो को धोकर कर पहन लिया तथा जैसे ही चलने के लिए तैयार हुई इतने में वह मक्का ज्यों का त्यों मकान (पवित्र मस्जिद) वहाँ से उठकर राबिया के लिए उस कुएँ के पास आ गया। आकाशवाणी हुई कि ''हे भक्तमति तेरे लिए यह मक्का तीन मंजिल अर्थात् 60 मील से उड़ कर आया है। आप इस में प्रवेश करो। राबिया ने उसमें प्रवेश किया। मक्का वहाँ से उठा। वायुयान की तरह उड़ कर वापिस यथा स्थान पर आ गया। इस लीला को देख कर समाज में एक विशेष चर्चा हो गई कि भक्ति हो तो राबिया जैसी मुसलमान समाज में (मीरा बाई की तरह) राबिया का नाम आदर के साथ लिया जाने लगा। सभी उसका विशेष सत्कार करने लगे।

कुछ समय पश्चात् राबिया ने प्राण त्याग दिए। दूसरा जन्म मुसलमान धर्म में एक बंसुरी नाम की लड़की का हुआ। क्योंकि जहाँ जीव के संस्कार होते हैं वहीं उसकी उत्पत्ति होती रहती है। इतनी अच्छी धार्मिक वंत्ति की लड़की बहुत अच्छे प्रभु के गुण-गान करती थी और अपनी धार्मिक पूजा मुसलमान धर्म के अनुसार पूरी आयु करती रही। उस लड़की ने भी लोकवेद के आधार से यही सुना था कि यदि मक्का में प्राण निकल जाऐं तो जीव सीधा स्वर्ग

(बहिस्त) जाता है। वद्ध होने पर हज करने मक्का में गई। सोचा कि इससे अच्छा सुअवसर और क्या होगा? यदि मक्का में प्राण निकल जाएं और स्वर्ग प्राप्ति हो जाए। लड़की ने अपना सिर काट कर मक्के में चढ़ा दिया। सारे मुसलमान समाज में इस बात की विशेष चर्चा हो गई कि कुर्बानी प्रभु के नाम पर ऐसे होती है। (अब यहाँ नादान व्यक्तियों को सोचना चाहिए कि कुर्बानी अपनी करनी चाहिए। प्रभु के नाम पर बकरे और गाय या मुर्गे की नहीं। वास्तव में कुर्बानी प्रभु चरणों में समर्पण तथा सत्य भक्ति होती है। शीश काट देने तथा अविधि पूर्वक साधना करने से मुक्ति नहीं होती। यह तो काल की भूल भुलैया है। कुर्बानी गर्दन काटने से नहीं होती, समर्पण से होती है। प्रभु के निमित्त हृदय से समर्पण कर दे कि हे प्रभु तन भी तेरा, धन भी तेरा, यह दास या दासी भी तेरी, यह कुर्बानी प्रभु को पसंद है। हिंसा, हत्या प्रभु कभी पसंद नहीं करता।)

उसके बाद उसी लड़की राबिया का तीसरा जन्म अन्य समाज में हुआ। कर्म आधार पर वैश्या बनी। पूर्ण परमेश्वर (सतपुरूष कबीर साहेब) ही जीव के पाप कर्म काट सकता है अन्य नहीं काट सकते। जैसे हिन्दुस्तान का राष्ट्रपति फांसी की सजा को भी क्षमा कर सकता है, अन्य सजाएं तो कहना ही क्या है? अन्य कोई भी फांसी की सजा को क्षमा नहीं कर सकता। इसी प्रकार (पूर्ण परमात्मा) परम शक्तियुक्त कबीर साहेब हमारे सर्व दुःखों का निवारण कर सकते हैं। इसका प्रमाण अब निम्न देखियेः-

यजुर्वेद अध्याय न. 5 के श्लोक न. 32 का अनुवाद (संत रामपाल दास द्वारा भाषा भाष्य)

उशिगसि कविरङ्घारिरसि बम्भारिरवस्यूरसि दुवस्वा छुन्ध्यूरसि मार्जालीयः। सम्राडसि कशानुः परिषद्यो सि पवमानो नभोसि प्रतक्वा मष्टो सि हव्यसूदन ऋत–धामासि स्वर्ज्योतिः।।32।।

उशिक्–असि–कविर्–अंघारिः–असि–बम्भारिः–अवस्यूः– असि– दुवस्वान्– शुन्ध्यूः–असि– मार्जालीयः–सम्राट–असि–कशानुः–परिषद्यः –असि– पवमानः– नभः– असि–प्रतक्वा– मष्टः–असि– हव्य– सूदनः– ऋत– धामा– असि– स्वर्ज्योतिः।

अनुवाद :– (उशिक्) जो पूर्ण शांतिदायक (असि) है। वह (अंघारिः) पाप का शत्रु अर्थात् पाप विनाशक (कविर्) कबीर (असि) है। (दुवस्वान्) दो स्थानों पर वास करता हुआ। दुःखदाई काल लोक में रहने वालों के (बम्भारिः) कर्म बन्धन का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ (अवस्यूः) रक्षा के लिए तुरन्त आने वाला (असि) है। (शुन्ध्यूः) पवित्र करने वाला वायु के तुल्य (असि) है। (परिषद्यः) सभा में अर्थात् ओंकार ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्डों (ब्रह्म,ब्रह्मा,विष्णु,शिव तथा देवी,देवताओं आदि की सभा है में जैसे चूहों की सभा में) (मार्जालीयः) बिलाव की तरह (सम्राट)

शक्तिशाली राजाधिराज अर्थात् कुल मालिक (असि) है (कशानुः) सर्व ऊर्जा स्रोत परमेश्वर (पवमानः) वायु अर्थात् प्रत्येक जीव का प्राणाधार (असि) है (नभः) आकाश के गुण शब्द रूप में अविनाशी (असि) है (प्रतक्वा) जगत को त्यागने वाला अन्तर्यामी (मष्टः) जाना माना अर्थात् सर्वविदित (असि) है (हव्यसूदनः) हवन में आहुति दिए घी का जैसे प्रारूप बदल जाता है अर्थात् अधिक लाभ दायक हो जाता है ऐसे भक्ति से भक्त के गुण बदलने वाला (स्वर्ज्योतिः) स्वयं प्रकाशित (ऋतधामा) सत्यलोक में रहने वाला (असि) है।

भावार्थ :- जो पूर्ण शांतिदायक है वह पाप नाशक परमेश्वर कबीर (कविर्देव) है। कर्मों के बन्धन में बंधे हुओं के बन्धन काटने वाला अर्थात् बन्दी छोड़ है। जगत को त्यागने वाला अन्तर्यामी अधियज्ञ स्वयं प्रकाशित सत्यलोक में रहने वाला कबीर प्रभु है।

(शेष कथा)

राबिया वाली आत्मा ने वैश्या का जीवन पूर्ण करके प्राण त्याग दिए। उसी राबिया का चौथा मानव जन्म शेखतकी, पीर के यहाँ लड़की के रूप में हुआ। जो सिकंदर लौधी का धार्मिक गुरु दिल्ली में था बारह वर्ष की आयु पूरी करके वह लड़की शरीर त्याग गई। उसको कब्र में दबा दिया गया।

कबीर साहेब कहते हैं कि :-

गरीब, जो जन मेरी शरण है, ताका हूँ मैं दास।
गैल गैल लाग्या रहूँ, जब लग धरणी आकाश।।
गरीब ज्यों बछा गऊ की नजर में, यों साई ने संत।
भक्तों के पीछे फीरे, वो भक्त वत्सल भगवंत।।

उस पूर्ण परमात्मा की भक्ति अर्थात् कविर्देव अपनी भक्ति जो स्वयं सन्त रूप में आकर बताता है उस सतगुरु रूप में प्रकट कबीर साहेब के बताए अनुसार सत भक्ति इस लड़की ने चार-पाँच वर्ष की थी। उसके बाद त्याग दी थी। उस भक्ति के परिणाम स्वरूप इसको लगातार तीन मनुष्य शरीर प्राप्त हुए। उसका आगे मनुष्य जीवन का संस्कार शेष नहीं था। अब इस आत्मा ने चौरासी लाख योनियों में कष्ट पर कष्ट उठाना था। कबीर प्रभु दयालु हैं। कारण बनाया, उस लड़की को वहाँ कब्र से जीवित करके अपने चरणों में ले करके कमाली नाम रखा और इस प्यारी बिटिया को उपदेश दिया और मुक्ति प्रदान की। इसी प्रकार हमने यह सोचना होगा कि हम जड़ों में पानी डालेंगे तो पौधा हरा-भरा होगा। हम पत्ते और टहनियों की पूजा कर रहे हैं ये गलत है।

कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।

उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वक्ष है। इसकी ऊपर को जड़ें परम अक्षर पुरूष सतपुरूष पूर्ण ब्रह्म हैं और जमीन से बाहर जो तना दिखाई देता है वह अक्षर पुरूष (परब्रह्म) समझो। उसके बाद तने के एक मोटी डार होती है। उस डार को ज्योति निरंजन (ब्रह्म) समझो। उस डार की फिर तीन शाखाएँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश समझो और फिर इनके ये टहनियाँ देवी देवता और पत्ते संसार समझो। ऐसा कबीर साहेब ने पूरी सष्टि रचना को एक ही दोहे में सुना दिया।

"शेखतकी की मत लड़की कमाली को जीवित करना"

शेखतकी ने देखा कि यह कबीर तो किसी प्रकार भी काबू नहीं आ रहा है। तब शेखतकी ने जनता से कहा कि यह कबीर तो जादूगर है। ऐसे ही जन्त्र-मन्त्र दिखाकर इसने बादशाह सिकंदर की बुद्धि भ्रष्ट कर रखी है। सारे मुसलमानों से कहा कि तुम मेरा साथ दो, वरना बात बिगड़ जाएगी। भोले मुसलमानों ने कहा पीर जी हम तेरे साथ हैं, जैसे तू कहेगा ऐसे ही करेंगे। शेखतकी ने कहा इस कबीर को तब प्रभु मानेंगे जब मेरी लड़की को जीवित कर देगा जो कब्र में दबी हुई है।

पूज्य कबीर साहेब से प्रार्थना हुई। कबीर साहेब ने सोचा यह नादान आत्मा ऐसे ही मान जाए। {क्योंकि ये सभी जीवात्माऐं कबीर साहेब के बच्चे हैं। यह तो काल ने (मजहब) धर्म का हमारे ऊपर कवर चढ़ा रखा है। एक-दूसरे के दुश्मन बना रखे हैं।} शेखतकी की लड़की का शव कब्र में दबा रखा था। शेखतकी ने कहा कि यदि मेरी लड़की को जीवित कर दे तो हम इस कबीर को अल्लाह स्वीकार कर लेंगे और सभी जगह ढिंढ़ोरा पिटवा दूँगा कि यह कबीर जी भगवान है। कबीर साहेब ने कहा कि ठीक है। वह दिन निश्चित हुआ। कबीर साहेब ने कहा कि सभी जगह सूचना दे दो, कहीं फिर किसी को शंका न रह जाए। हजारों की संख्या में वहाँ पर भक्त आत्मा दर्शनार्थ एकत्रित हुई। कबीर साहेब ने कब्र खुदवाई। उसमें एक बारह-तेरह वर्ष की लड़की का शव रखा हुआ था। कबीर साहेब ने शेखतकी से कहा कि पहले आप जीवित कर लो। सभी उपस्थित जनों ने कहा है कि महाराज जी यदि इसके पास कोई ऐसी शक्ति होती तो अपने बच्चे को कौन मरने देता है? अपने बच्चे की जान के लिए व्यक्ति अपना तन मन धन लगा देता है। हे दीन दयाल आप कृपा करो। पूज्य कबीर परमेश्वर ने कहा कि हे शेखतकी की लड़की जीवित हो जा। तीन बार कहा लेकिन लड़की जीवित नहीं हुई। शेखतकी ने तो भंगड़ा पा दिया। नाचे-कूदे कि देखा न पाखण्डी का पाखंड पकड़ा गया। कबीर साहेब उसको नचाना चाहते थे कि इसको नाचने दे।

कबीर, राज तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह।

मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजना ये।।

मान-बड़ाई, ईर्ष्या का रोग बहुत भयानक है। अपनी लड़की के जीवित न होने का दुःख नहीं, कबीर साहेब की पराजय की खुशी मना रहा था। कबीर साहेब ने कहा कि बैठ जाओ महात्मा जी, शान्ति रखो। कबीर साहेब ने आदेश दिया कि हे जीवात्मा जहाँ भी है कबीर आदेश से इस शव में प्रवेश करो और बाहर आओ।

कबीर साहेब का कहना ही था कि इतने में शव में कम्पन हुआ और वह लड़की जीवित होकर बाहर आई, कबीर साहेब के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया। (बोलो सतगुरु देव की जय।)

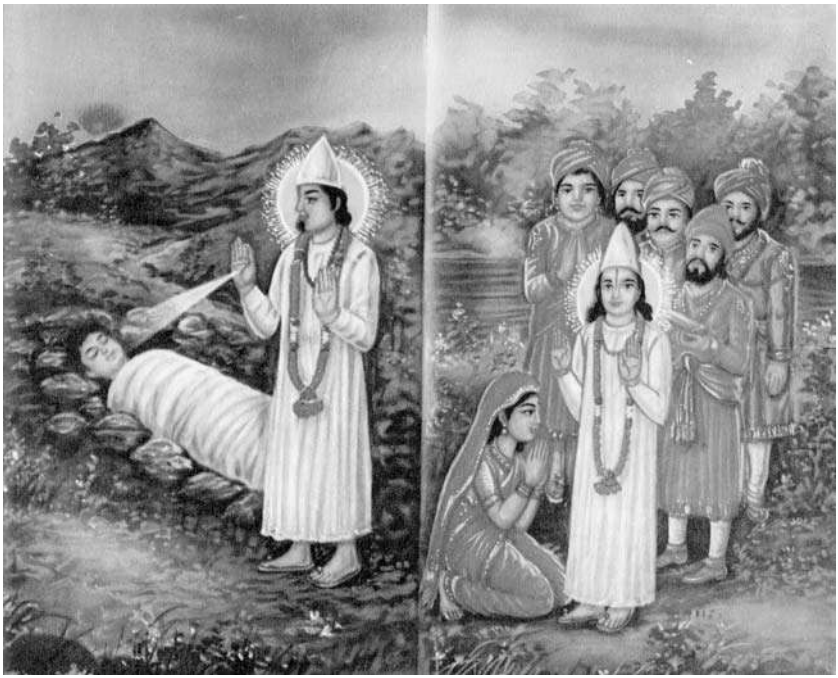

(मृतक कमाली को जीवित किया)

उस लड़की ने डेढ घण्टे तक कबीर साहेब की कृपा से प्रवचन किए। कहा हे भोली जनता ये भगवान आए हुए हैं। पूर्ण ब्रह्म अन्नत कोटि ब्रह्मण्ड के परमेश्वर हैं। क्या तुम इसको एक मामूली जुलाहा(धाणक) मान रहे हो। हे भूले-भटके प्राणियों ये आपके सामने स्वयं परमेश्वर आए हैं। इनके चरणों में गिरकर अपने जन्म-मरण का दीर्घ रोग कटवाओ और सत्यलोक चलो। जहाँ पर जाने के बाद जीवात्मा जन्म-मरण के चक्कर से बच जाती है। कमाली ने

बताया कि इस काल के जाल से बन्दी छोड़ कबीर साहेब के बिना कोई नहीं छुटवा सकता। चाहे हिन्दू पद्धति से तीर्थ-व्रत, गीता-भागवत, रामायण, महाभारत, पुराण, उपनिषद्ध, वेदों का पाठ करना, राम, कष्ण, ब्रह्मा-विष्णु-शिव, शेराँवाली(आदि माया, आदि भवानी, प्रकति देवी), ज्योति निरंजन की उपासना भी क्यों न करें, जीव चौरासी लाख प्राणियों के शरीर में कष्ट से नहीं बच सकता और मुसलमान पद्धति से भी जीव काल के जाल से नहीं छूट सकता। जैसे रोजे रखना, ईद बकरीद मनाना, पाँच वक्त नमाज करना, मक्का-मदीना में जाना, मस्जिद में बंग देना आदि सर्व व्यर्थ है। कमाली ने सर्व उपस्थित जनों को सम्बोधित करते हुए अपने पिछले जन्मों की कथा सुनाई जो उसे कबीर साहेब की कपा से याद हो आई थी। जो कि आप पूर्व पढ़ चुके हो।

कबीर साहेब ने कहा कि बेटी अपने पिता के साथ जाओ। वह लड़की बोली मेरे वास्तविक पिता तो आप हैं। यह तो नकली पिता है। इसने तो मैं मिट्टी में दबा दी थी। मेरा और इसका हिसाब बराबर हो चुका है। सभी उपस्थित व्यक्तियों ने कहा कि कबीर परमेश्वर ने कमाल कर दिया। कबीर साहेब ने लड़की का नाम कमाली रख दिया और अपनी बेटी की तरह रखा और नाम दिया। उपस्थित व्यक्तियों ने हजारों की संख्या में कबीर परमेश्वर से उपदेश ग्रहण किया। अब शेखतकी ने सोचा कि यह तो और भी बात बिगड़ गई। मेरी तो सारी प्रभुता गई।

"कबीर साहेब को सरसों के गर्म तेल के कड़ाहे में डालना"

शेखतकी ने देखा कि कबीर साहेब जी की तो और अधिक महिमा हो गई। वह फिर साहेब को किसी न किसी प्रकार नीचा दिखाने की योजना बनाने लगा। इतनी लीला देखकर भी शेखतकी नीच की आँखें नहीं खुली। परमात्मा सामने थे, परन्तु मान-बड़ाई वश स्वीकार नहीं कर रहा था।

कुछ दिनों पश्चात् फिर शेखतकी ने मुसलमानों को इकट्ठा किया और कहा कि यह कबीर कोई जादूगर है। हम इसकी एक और परीक्षा लेंगे। हजारों की संख्या में मुसलमान शेखतकी के साथ राजा सिकंदर के पास गए तथा कहा कि हम इस कबीर को उबलते सरसों के तेल के कड़ाहे में डालेंगे। यदि यह नहीं मरा तो हम इसको भगवान मान लेंगे। सिकंदर लौधी घबरा गया कि कहीं ये मेरे राज को न पलट दें। कबीर साहेब के पास गया और प्रार्थना की कि महाराज जी मैं आपको यहाँ पर लाया तो था सेवा करने के लिए। लेकिन मैंने तो आपको दुःखी कर दिया दाता। कबीर साहेब ने पूछा कि क्या बात है राजन्? सिकंदर लौधी ने कहा कि साहेब आप तो जानीजान हो, शेखतकी

ऐसे-ऐसे कह रहा है। कबीर साहेब जी बोले राजन् कोई बात नहीं, इन्होंने तो मुझे खत्म करना ही है। आज नहीं तो कल करेंगे। आज ही टंटा कट जाए तो बहुत अच्छा। कबीर साहेब ने कहा कि कह दे उनको कि तेल गर्म कर लेंगे। कबीर साहेब जी सोचते थे कि यह नादान शेखतकी ऐसे ही मान जाए। सिकंदर लौधी ने शेखतकी से कहा कि कर लो तेल गर्म।

शेखतकी ने बहुत मोटी-मोटी लकड़ी लगा कर तेल के कड़ाहे को बहुत उबाल दिया और कहा इस कबीर को उठा कर इसमें डाल दो। कबीर साहेब बोले कि शेखतकी जी यह कष्ट भी क्यों कर रहे हो, मैं स्वयं ही बैठ जाऊँगा। पूज्य कबीर साहेब जी उस उबलते तेल के कड़ाहे में प्रवेश कर गए। केवल गर्दन बाहर दिखाई दे रही थी। शेष शरीर उस उबलते हुए तेल में था। कबीर साहेब जी आराम से बैठे थे जैसे ठण्डे पानी में बैठे हों। शेखतकी ने कहा कि यह जंत्र-मंत्र जानता है। इसने इस तेल को ठंडा कर दिया है। यह वैसे उबलता हुआ दिखाई दे रहा है। सिकंदर लौधी ने सोचा कि जांच तो करूं कहीं सचमुच यह ठण्डा हो गया हो। सिकंदर ने परीक्षण के लिए उस उबलते हुए तेल के कड़ाहे में ऊँगली देनी चाही। कबीर साहेब ने कहा कि राजा इसमें ऊँगली मत देना, कहीं इसके चक्कर में आकर हाथ नष्ट करवा ले। यह इतना गर्म है कि ऊँगली ढूंढी नहीं मिलेगी। सिकंदर ने सोचा कि जब कबीर साहेब जी तेल में बैठे हैं तो तुझे क्या होगा? यह सोचकर मना करते-करते उस उबलते हुए तेल के कड़ाहे में ऊँगली दे दी। जितनी ऊँगली तेल में गई थी उतनी कट कर अलग हो गई और राजा दर्द के मारे बेहोश हो गया। कबीर साहेब ने सोचा कि यह नादान बादशाह इस ईर्ष्यालु शेखतकी के चक्कर में मरेगा। कबीर साहेब तेल के कड़ाहे से बाहर आए। सिकंदर को होश में लाया गया। इतनी पीड़ा थी कि फिर बेहोश हो गया। कबीर साहेब ने ऊँगली को पकड़ कर पूरा कर दिया। बादशाह सिकंदर सचेत हो गया। सिकंदर ने क्षमा याचना करते हुए कहा कि मुझे माफ कर दो दाता, मेरे से गलती हो गई। कबीर साहेब ने कहा कि राजन् आपका दोष नहीं है। काल नहीं चाहता कि मेरे बच्चे मुझे पहचान लें।

''शेखतकी द्वारा कबीर साहेब को गहरे कुएँ (झेरे) में डालना"

शेखतकी ने देखा कि यह तो ऐसे भी नहीं मरा। मुसलमानों को पुनः इक्कठा किया और कहा कि अब की बार इस कबीर को कुएँ में डालकर ऊपर से मिट्टी, ईटें और रोड़े डाल देंगे। तब देखेंगे यह कैसे बचेगा? भोली जनता तो जैसे पीर जी कहे वैसे ही करने को तैयार थी।

शेखतकी ने सिकंदर लौधी से कहा कि हम इसकी एक परीक्षा और लेंगे। सिकंदर ने पूछा कि क्या परीक्षा लोगे? शेखतकी ने कहा कि हम इसको झेरे कुएँ में डालेंगे और फिर देखेंगे कि वहाँ से कैसे जीवित होगा?

{अब इतनी लीला देखकर भी राजा का अपने मालिक पर विश्वास नहीं बना। नहीं तो धमका देता कि जा करले तूने जो करना है। मैं नहीं दुःखी करूं अपने भगवान को। फिर देखता उसका राज्य जाता या और मौज हो जाती।} राजा ने सोचा कहीं मेरा राज्य न चला जाए। सिकंदर लौधी राजा ने साहेब से प्रार्थना की कि यह शेखतकी तो नहीं मानता और आज ऐसे-ऐसे जिद्द किए हुए है। पूज्य कबीर साहेब जी ने कहा ठीक है। कर लेने दे इसको जो यह करे। मेरा भी टंटा कटे। मैं भी दुःखी हो लिया। कह दे कि तुने जो करना है, कर ले।

शेखतकी कबीर साहेब जी को बाँध-जूड़कर ले गया और जाकर गहरे झेरे कुएँ में डलवा दिया। वहाँ पर हजारों व्यक्तियों को इक्कठा किए हुए था। बहुत गहरा अंधा कुआँ जिसमें पानी गंदा और थोड़ा-सा पड़ा था और ऊपर से मिट्टी, कांटेदार छड़ी, गोबर, ईंट आदि से डेढ़ सौ फुट ऊँचा पूरा भर दिया। फिर शेखतकी हाथ-मुँह धोकर सिकंदर लौधी के पास गया तथा कहा कि राजा कर दिया तेरे शेर को समाप्त। उसके ऊपर इतनी मिट्टी डाल दी है कि अब किसी भी प्रकार बाहर नहीं आ सकता। सिकंदर लौधी ने पूछा पीर जी आप किसकी बात कर रहे हो? शेखतकी बोला कि तेरे गुरुदेव कबीर की। उसको आज हमने समाप्त कर दिया है। सिकंदर ने कहा कि पीर जी पूज्य कबीर साहेब जी तो अंदर कमरे में बैठे हैं, वे तो कहीं पर गये ही नहीं। शेखतकी ने अंदर जाकर देखा तो पूज्य कबीर साहेब अंदर कमरे में आसन पर आराम से बैठे थे। शेखतकी को तो और ज्यादा इर्ष्या हो गई कि यह कबीर तो मारे से मर नहीं रहा। अब क्या किया जाए? अन्य समझदार व्यक्ति तो मान गये, हजारों ने उपदेश लिया, प्रभु कबीर जी के शिष्य बने, परन्तु वह शेखतकी दुष्ट नहीं माना।

शाहतकी नहीं लखी, निरंजन चाल रे।
इस परचे तै आगे माँगे जवाल रे।।

शेखतकी बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर की महिमा को नहीं समझ पाया। उसको चाहिए था भगवान के चरणों में गिरकर क्षमा याचना करता तथा अपना आत्म कल्याण करवाता, परन्तु मान-बड़ाई वश होकर साहेब का दुश्मन बन गया। शेखतकी ने और भी बहुत से जुल्म किए। कबीर साहेब काशी लौट गए।

"शेखतकी द्वारा कबीर साहेब को गुंडों से मरवाने की निष्फल कुचेष्टा"

कबीर साहेब के काशी आने के बाद शेखतकी ने सोचा कि यह कबीर तो किसी भी प्रकार नहीं मर रहा। वह कबीर साहेब को मारने के लिए रात्री के समय कुछ गुंडों को साथ लेकर कबीर साहेब की झोपड़ी पर गया। कबीर साहेब सो रहे थे। शेखतकी ने गुंडों से कहा कि इसके टुकड़े-टुकड़े कर दो। गुंडों ने तलवार से पूज्य कबीर साहेब जी के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और अपनी तरफ से मरा हुआ जानकर चल पड़े। जब वे झोपड़ी से बाहर निकले तो पीछे से कबीर साहेब ने उठकर कहा कि पीर जी, दूध पीकर जाना। ऐसे थोड़े ही जाते हैं। शेखतकी व उसके गुंडों ने सोचा कि यह भूत है। वहाँ से भाग गये। उन गुंडों को तो बुखार हो गया। कई दिन तक बुखार नहीं उतरा। कबीर साहेब उनके पास गये और उनको ठीक किया तथा कहा कि यह पीर तुम्हें मरवा कर छोड़ेगा, यह तुम्हें गुमराह कर रहा है। तब उन्होंने कबीर साहेब से क्षमा याचना की।

कौन तथा कैसा है कुल का मालिक?

जिन-जिन पुण्यात्माओं ने परमात्मा को प्राप्त किया उन्होंने बताया कि कुल का मालिक एक है। वह मानव सदृश तेजोमय शरीर युक्त है। जिसके एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ सूर्य तथा करोड़ चन्द्रमाओं की रोशनी से भी अधिक है। उसी ने नाना रूप बनाए हैं। परमेश्वर का वास्तविक नाम अपनी-अपनी भाषाओं में कविर्देव (वेदों में संस्कृत भाषा में) तथा हक्का कबीर (श्री गुरु ग्रन्थ साहेब में पृष्ठ नं. 721 पर क्षेत्रीय भाषा में) तथा सत् कबीर (श्री धर्मदास जी की वाणी में क्षेत्रीय भाषा में) तथा बन्दी छोड़ कबीर (सन्त गरीबदास जी के सद्ग्रन्थ में क्षेत्रीय भाषा में) कबीरा, कबीरन् व खबीरा या खबीरन् (श्री कुर्आन शरीफ़ सूरत फुर्कानि नं. 25, आयत नं. 19, 21, 52, 58, 59 में क्षेत्रीय अरबी भाषा में)। इसी पूर्ण परमात्मा के उपमात्मक नाम अनामी पुरुष, अगम पुरुष, अलख पुरुष, सतपुरुष, अकाल मूर्ति, शब्द स्वरूपी राम, पूर्ण ब्रह्म, परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं, जैसे देश के प्रधानमंत्री का वास्तविक शरीर का नाम कुछ और होता है तथा उपमात्मक नाम प्रधान मंत्री जी, प्राइम मिनिस्टर जी अलग होता है। जैसे भारत देश का प्रधानमंत्री जी अपने पास गृह विभाग रख लेता है। जब वह उस विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करता है तो वहाँ गृहमंत्री की भूमिका करता है तथा अपना पद भी गृहमन्त्री लिखता है, हस्ताक्षर वही होते हैं। इसी प्रकार ईश्वरीय सत्ता को समझना है।

जिन सन्तों व ऋषियों को परमात्मा प्राप्ति नहीं हुई, उन्होंने अपना अन्तिम अनुभव बताया है कि प्रभु का केवल प्रकाश देखा जा सकता है, प्रभु दिखाई नहीं देता क्योंकि उसका कोई आकार नहीं है तथा शरीर में धुनि सुनना आदि प्रभु भक्ति की उपलब्धि है।

आओ विचार करें - जैसे कोई अंधा अन्य अंधों में अपने आपको आँखों वाला सिद्ध किए बैठा हो और कहता है कि रात्रि में चन्द्रमा की रोशनी बहुत सुहावनी मन भावनी होती है, मैं देखता हूँ। अन्य अन्धे शिष्यों ने पूछा कि गुरु जी चन्द्रमा कैसा होता है। चतुर अन्धे ने उत्तर दिया कि चन्द्रमा तो निराकार है वह दिखाई थोड़े ही दे सकता है। कोई कहे सूर्य निराकार है वह दिखाई नहीं देता रवि स्वप्रकाशित है इसलिए उसका केवल प्रकाश दिखाई देता है। गुरु जी के बताये अनुसार शिष्य 2½ घण्टे सुबह तथा 2½ घण्टे शाम आकाश में देखते हैं। परन्तु कुछ दिखाई नहीं देता। स्वयं ही विचार विमर्श करते हैं कि गुरु जी तो सही कह रहे हैं, हमारी साधना पूरी 2½ घण्टे सुबह शाम नहीं हो पाती। इसलिए हमें सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रकाश दिखाई नहीं दे रहा। चतुर गुरु जी की व्याख्या पर आधारित होकर उस चतुर अन्धे की (ज्ञानहीन)

व्याख्या के प्रचारक करोड़ों अंधे (ज्ञानहीन) हो चुके हों। फिर उन्हें आँखों वाला (तत्वदर्शी सन्त) बताए कि सूर्य आकार में है और उसी से प्रकाश निकल रहा है। इसी प्रकार चन्द्रमा से प्रकाश निकल रहा है नेत्रहीनों! चन्द्रमा के बिना रात्रि में प्रकाश कैसे हो सकता है? जैसे कोई कहे कि ट्यूब लाईट देखी, फिर कोई पूछे कि ट्यूब कैसी होती है जिसकी आपने रोशनी देखी है? उत्तर मिले कि ट्यूब तो निराकार होने के कारण दिखाई नहीं देती। केवल प्रकाश देखा जा सकता है।

विचार करें :- ट्यूब बिना प्रकाश कैसा?

यदि कोई कहे कि हीरा स्वप्रकाशित होता है। फिर यह भी कहे कि हीरे का केवल प्रकाश देखा जा सकता है, क्योंकि हीरा तो निराकार है, वह दिखाई थोड़े ही देता है, तो वह व्यक्ति हीरे से परिचित नहीं है। फोकट जौहरी बना है। जो परमात्मा को निराकार कहते हैं तथा केवल प्रकाश देखना तथा धुनि सुनना ही प्रभु प्राप्ति मानते हैं वे पूर्ण रूप से प्रभु तथा भक्ति से अपरिचित हैं। जब उनसे प्रार्थना की कि कुछ नहीं देखा है तुमने, अपने अनुयाइयों को भ्रमित करके दोषी हो रहे हो। न तो आपके गुरुदेव के तत्वज्ञान रूपी नेत्र हैं और न ही आपको। इसलिए दुनियाँ को भ्रमित मत करो। इस बात पर सर्व ज्ञान रूपी नेत्रों के अन्धों ने लट्ठ उठा लिए कि हम तो झूठे, तूं एक सच्चा। आज वही स्थिति संत रामपाल जी महाराज के साथ है।

इस विवाद का निर्णय कैसे हो कि किस सन्त के विचार सही हैं किसके गलत हैं? मान लीजिए जैसे किसी अपराध के विषय में पाँच वकील अपना-अपना विचार व्यक्त कर रहे हैं। एक कहे कि इस अपराध पर संविधान की धारा 301 लगेगी, दूसरा कहे 302, तीसरा कहे 304, चौथा कहे 306 तथा पाँचवां वकील 307 को सही बताए।

ये पाँचों ठीक नहीं हो सकते। केवल एक ही ठीक हो सकता है यदि उसकी व्याख्या अपने देश के पवित्र संविधान से मिलती है। यदि उसकी व्याख्या भी संविधान के विपरीत है तो पाँचों वकील गलत हैं। इसका निर्णय देश का पवित्र संविधान करेगा जो सर्व को मान्य होता है। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न विचार धाराओं में तथा साधनाओं में से कौन-सी शास्त्र अनुकूल है या कौन-सी शास्त्र विरुद्ध है? इसका निर्णय पवित्र सद्ग्रन्थ ही करेंगे, जो सर्व को मान्य होना चाहिए (यही प्रमाण पवित्र श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में)।

जिन आँखों वालों (पूर्ण सन्तों) ने सूर्य (पूर्ण परमात्मा) को देखा उन में से कुछ के नाम हैं :-

(1) आदरणीय धर्मदास साहेब जी (2) आदरणीय दादू साहेब जी (3) आदरणीय मलूक दास साहेब जी (4) आदरणीय गरीबदास साहेब जी (5)

आदरणीय नानक साहेब जी (6) आदरणीय घीसा दास साहेब जी आदि।

1. आदरणीय धर्मदास साहेब जी, बांधवगढ़ मध्य प्रदेश वाले, जिनको पूर्ण परमात्मा जिंदा महात्मा के रूप में मथुरा में मिले, सतलोक दिखाया। वहाँ सत्लोक में दो रूप दिखा कर जिंदा वाले रूप में पूर्ण परमात्मा वाले सिंहासन पर विराजमान हो गए तथा आदरणीय धर्मदास साहेब जी को कहा कि मैं ही काशी (बनारस) में नीरू-नीमा के घर गया हुआ हूँ। वहाँ धाणक (जुलाहे) का कार्य करता हूँ आदरणीय श्री रामानन्द जी मेरे गुरु जी हैं। यह कह कर श्री धर्मदास जी की आत्मा को वापिस शरीर में भेज दिया। श्री धर्मदास जी का शरीर दो दिन बेहोश रहा, तीसरे दिन होश आया तो काशी में खोज करने पर पाया कि यही काशी में आया धाणक ही पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) है। आदरणीय धर्मदास साहेब जी ने पवित्र कबीर सागर, कबीर साखी, कबीर बीजक नामक सद्ग्रन्थों की आँखों देखे तथा पूर्ण परमात्मा के पवित्र मुख कमल से निकले अमंत वचन रूपी विवरण से रचना की। धर्मदास जी की वाणी में प्रमाण :-

धन–धन सतगुरू सत कबीर भक्त की पीर मिटाने वाले।।टेक।।
रहे नल–नील यत्न कर हार, तब सतगुरू से करी पुकार।
जा सत रेखा लिखी अपार, सिंधु पर शिला तिराने वाले।।1।।
डसी सर्प नै जब जाय, पुकारी इन्द्रमति अकुलाय।
आप ने तुरंत करी सहाय, बहरूली मन्त्र सुनाने वाले।।2।।
दामोदर सेठ के होंवे थे अकाज, अर्ज करि डूबता देख जहाज।
लाज मेरी रखियो गरीब नवाज, समुद्र से पार लंघाने वाले।।3।।
कह कर जोर दीन धर्मदास, दर्श दे पूर्ण करियो आश।
मेटियो जन्म–मरण की त्रास, सत्य पद प्राप्त कराने वाले।।4।।

2. आदरणीय दादू साहेब जी (अमंत वाणी में प्रमाण) कबीर परमेश्वर के साक्षी :-

आदरणीय दादू साहेब जी जब सात वर्ष के बालक थे तब पूर्ण परमात्मा जिंदा महात्मा के रूप में मिले तथा सत्यलोक ले गए। तीन दिन तक दादू जी बेहोश रहे। होश में आने के पश्चात् परमेश्वर की महिमा की आँखों देखी बहुत-सी अमंतवाणी उच्चारण की :-

जिन मोकूँ निज नाम दिया, सोई सतगुरु हमार।
दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर संजन हार।।
दादू नाम कबीर की, जै कोई लेवे ओट।
उनको कबहू लागे नहीं, काल वज्र की चोट।।
दादू नाम कबीर का, सुन कर कांपे काल।

नाम भरोसे जो नर चले, होवे न बांका बाल।।
जो जो शरण कबीर के, तर गए अनन्त अपार।
दादू गुण कीता कहे, कहत न आवै पार।।
कबीर कर्ता आप है, दूजा नाहिं कोय।
दादू पूरन जगत को, भक्ति दृढ़ावत सोय।।
ठेका पूरन होय जब, सब कोई तजै शरीर।
दादू काल गँजे नहीं, जपै जो नाम कबीर।।
आदमी की आयु घटै, तब यम घेरे आय।
सुमिरन किया कबीर का, दादू लिया बचाय।।
मेटि दिया अपराध सब, आय मिले छिन माँह।
दादू संग ले चले, कबीर चरण की छांह।।
सेवक देव निज चरण का, दादू अपना जान।
भंगी सत्य कबीर ने, कीन्हा आप समान।।
दादू अन्तरगत सदा, छिन–छिन सुमिरन ध्यान।
वारु नाम कबीर पर, पल–पल मेरा प्रान।।
सुन–2 साखी कबीर की, काल नवावै भाथ।
धन्य–धन्य हो तिन लोक में, दादू जोड़े हाथ।।
केहरि नाम कबीर का, विषम काल गज राज।
दादू भजन प्रतापते, भागे सुनत आवाज।।
पल एक नाम कबीर का, दादू मनचित लाय।
हस्ती के अश्वार को, श्वान काल नहीं खाय।।
सुमरत नाम कबीर का, कटे काल की पीर।
दादू दिन दिन ऊँचे, परमानन्द सुख सीर।।
दादू नाम कबीर की, जो कोई लेवे ओट।
तिनको कबहूँ ना लगे, काल बज्र की चोट।।
और संत सब कूप हैं, केते झरिता नीर।
दादू अगम अपार है, दरिया सत्य कबीर।।
अब ही तेरी सब मिटै, जन्म मरन की पीर।
स्वांस उस्वांस सुमिरले, दादू नाम कबीर।।
कोई सर्गुन में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराय।
दादू गति कबीर की, मोते कही न जाय।।
जिन मोकूँ निज नाम दई, सदगुरु सोई हमार।
दादू दूसर कौन है, कबीर सिरजन हार।।

3. आदरणीय मलूक दास साहेब जी कविर्देव के साक्षी :-

42 वर्ष की आयु में श्री मलूक दास साहेब जी को पूर्ण परमात्मा मिले तथा दो दिन तक श्री मलूक दास जी अचेत रहे। फिर निम्न वाणी उच्चारण की:-

जपो रे मन सतगुरु नाम कबीर।।टेक।।
जपो रे मन परमेश्वर नाम कबीर।
एक समय गुरु बंसी बजाई कालंद्री के तीर।
सुर–नर मुनि थक गए, रूक गया दरिया नीर।।
काँशी तज गुरु मगहर आये, दोनों दीन के पीर।
कोई गाढ़े कोई अग्नि जरावै, ढूंडा न पाया शरीर।
चार दाग से सतगुरु न्यारा, अजरो अमर शरीर।
दास मलूक सलूक कहत हैं, खोजो खसम कबीर।।

4. आदरणीय गरीबदास साहेब जी छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा वाले (अमंत वाणी में प्रमाण) प्रभु कबीर (कविर्देव) के साक्षी :-

आदरणीय गरीबदास साहेब जी का आर्विभाव सन् 1717 (वि.सं. 1774) में हुआ तथा साहेब कबीर जी के दर्शन दस वर्ष की आयु में सन् 1727 में नला नामक खेत में हुए। सत्लोक वास सन् 1778 में हुआ। आदरणीय गरीबदास साहेब जी को भी परमात्मा कबीर साहेब जी सशरीर जिंदा रूप में मिले। आदरणीय गरीबदास साहेब जी अपने नला नामक खेतों में अन्य साथी ग्वालों के साथ गाय चरा रहे थे। जो खेत कबलाना गाँव की सीमा से सटा है। ग्वालों ने जिन्दा महात्मा के रूप में प्रकट कबीर परमेश्वर से आग्रह किया कि आप खाना नहीं खाते हो तो दूध ग्रहण करो क्योंकि परमात्मा ने कहा था कि मैं अपने सतलोक गाँव से खाना खाकर आया हूँ। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मैं कुँआरी गाय का दूध पीता हूँ। बालक गरीबदास जी ने एक कुँआरी गाय को परमेश्वर कबीर जी के पास लाकर कहा कि बाबा जी यह बिना ब्याई (कुँआरी) गाय कैसे दूध दे सकती है ? तब कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने कुँआरी गाय की बछिया के कमर पर हाथ रखा, अपने आप कुँआरी गांय (अध्नया धेनु) के थनों से दूध निकलने लगा। पात्र भरने पर रूक गया। वह दूध परमेश्वर कबीर जी ने पीया तथा प्रसाद रूप में कुछ अपने बच्चे गरीबदास जी को पिलाया तथा सतलोक के दर्शन कराये। सतलोक में अपने दो रूप दिखाकर फिर जिंदा वाले रूप में कुल मालिक रूप में सिंहासन पर विराजमान हो गए तथा कहा कि मैं ही 120 वर्ष तक काशी में धाणक (जुलाहा) रूप में रहकर आया हूँ। मैं पहले भी हजरत मुहम्मद जी को भी मिला था। पवित्र कुर्आन शरीफ में जो कबीरा, कबीरन्, खबीरा, खबीरन्, अल्लाहु अक्बर आदि शब्द हैं वे मेरा ही बोध कराते हैं तथा मैं ही श्री नानक जी को बेई नदी पर जिंदा महात्मा के रूप में ही मिला था

{मुसलमानों में जिंदा महात्मा होते हैं, वे काला चौगा(ओवर कोट जैसा) घुटनों से नीचे तक तथा सिर पर चोटे वाला काला टोप पहनते हैं} तथा मैं ही बलख शहर में नरेश श्री अब्राहीम सुलतान अधम जी तथा श्री दादू जी को मिला था तथा चारों पवित्र वेदों में जो कविर अग्नि, कविर्देव (कविरंघारिः) आदि नाम हैं वह मेरा ही बोध है।

कबीर बेद हमारा भेद है, मैं मिलु बेदों से नांही।
जौन बेद से मैं मिलूं, वो बेद जानते नांही।।

मैं ही वेदों से पहले भी सतलोक में विराजमान था। {गाँव छुड़ानी जि. झज्जर (हरियाणा) में आज भी उस जंगल में जहाँ पूर्ण परमात्मा, का सन्त गरीबदास जी को मानव शरीर में साक्षात्कार हुआ था, एक यादगार विद्यमान है।} आदरणीय गरीबदास जी की आत्मा अपने परमात्मा कबीर बन्दी छोड़ के साथ चले जाने के बाद उन्हें मंत जान कर चिता पर रख कर जलाने की तैयारी करने लगे, उसी समय आदरणीय गरीबदास साहेब जी की आत्मा को पूर्ण परमेश्वर ने शरीर में प्रवेश कर दिया। दस वर्षीय बालक गरीब दास जीवित हो गए। उसके बाद उस पूर्ण परमात्मा का आँखों देखा विवरण अपनी अमंत वाणी में ''सद्ग्रन्थ'' नाम से ग्रन्थ की रचना की। अमंत वाणी में प्रमाण :

अजब नगर में ले गया, हमकूँ सतगुरु आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सूते चादर तान।।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का एक रति नहीं भार।
सतगुरु पुरुष कबीर हैं कुल के संजन हार।।
गैबी ख्याल विशाल सतगुरु, अचल दिगम्बर थीर है।
भक्ति हेत काया धर आये, अविगत सत् कबीर हैं।।
हरदम खोज हनोज हाजर, त्रिवैणी के तीर हैं।
दास गरीब तबीब सतगुरु, बन्दी छोड़ कबीर हैं।।
हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया।
जात जुलाहा भेद नहीं पाया, काशी माहे कबीर हुआ।।
सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्धि हैं तीर।
दास गरीब सतपुरुष भजो, अविगत कला कबीर।।
जिंदा जोगी जगत् गुरु, मालिक मुरशद पीर।
दहूँ दीन झगड़ा मंड्या, पाया नहीं शरीर।।
गरीब जिस कूं कहते कबीर जुलाहा। सब गति पूर्ण अगम अगाहा।।

उपरोक्त वाणी में आदरणीय गरीबदास साहेब जी महाराज ने स्पष्ट कर दिया कि काशी वाले धाणक (जुलाहे) ने मुझे भी नाम दान देकर पार किया,

यही काशी वाला धाणक ही (सतपुरुष) पूर्ण ब्रह्म है।

परमेश्वर कबीर ही सतलोक से जिन्दा महात्मा के रूप में आकर मुझे अजब नगर (अद्भुत नगर सतलोक) में लेकर गए। जहाँ आनन्द ही आनन्द है, कोई चिन्ता नहीं, जन्म-मत्यु, अन्य प्राणियों के शरीर में कष्ट आदि का शोक नहीं है।

इसी काशी में धाणक रूप में आए सतपुरुष ने भिन्न-भिन्न समय में प्रकट होकर आदरणीय श्री अब्राहीम सुल्तान अधम साहेब जी तथा आदरणीय दादू साहेब जी व आदरणीय नानक साहेब जी को भी सतनाम देकर पार किया। वही कविर्देव जिसके एक रोम कूप में करोड़ो सूर्यों जैसा प्रकाश है तथा मानव सदृश है, अति तेजोमय अपने वास्तविक शरीर के ऊपर हल्के तेजपुंज का चोला (भद्रा वस्त्रा अर्थात् तेजपुंज का शरीर) डाल कर हमें मत्य लोक (मनुष्य लोक) में मिलता है। क्योंकि उस परमेश्वर के वास्तविक स्वरूप के प्रकाश को चर्म दृष्टि सहन नहीं कर सकती।

आदरणीय गरीबदास साहेब जी ने अपनी अमृतवाणी में कहा है 'सर्व कला सतगुरु साहेब की, हरि आए हरियाणे नूँ''। भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा कविर हरि(कविर्देव) जिस क्षेत्र में आए उसका नाम हरियाणा अर्थात् परमात्मा के आने वाला पवित्र स्थल, जिस के कारण आस-पास के क्षेत्र को हरिआना (हरियाणा) कहने लगे। सन् 1966 को पंजाब प्रान्त के विभाजन होने पर इस क्षेत्र का नाम हरिआणा(हरयाणा) पड़ा। लगभग 236 वर्ष पूर्व कही वाणी 1966 में सिद्ध हुई कि समय आने पर यह क्षेत्र हरयाणा प्रान्त नाम से विख्यात होगा। जो आज प्रत्यक्ष प्रमाण है।

इसीलिए गुरुग्रन्थ साहेब पृष्ठ 721 पर अपनी अमृतवाणी महला 1 में श्री नानक जी ने कहा है कि -

"हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदीगार।
नानक बुगोयद जनु तुरा, तेरे चाकरां पाखाक"

इसी का प्रमाण गुरु ग्रन्थ साहिब के राग ''सिरी'' महला 1 पृष्ठ नं. 24 पर शब्द नं. 29

शब्द – एक सुआन दुई सुआनी नाल, भलके भौंकही सदा बिआल
कुड़ छुरा मुठा मुरदार, धाणक रूप रहा करतार।।1।।
मै पति की पंदि न करनी की कार। उह बिगड़ै रूप रहा बिकराल।।
तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहो आस एहो आधार।
मुख निंदा आखा दिन रात, पर घर जोही नीच मनाति।।
काम क्रोध तन वसह चंडाल, धाणक रूप रहा करतार।।2।।
फाही सुरत मलूकी वेस, उह ठगवाड़ा ठगी देस।।

खरा सिआणां बहुता भार, धाणक रूप रहा करतार।।3।।
मैं कीता न जाता हरामखोर, उह किआ मुह देसा दुष्ट चोर।
नानक नीच कह बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।4।।

गुरु ग्रन्थ साहेब, राग आसावरी, महला 1 के कुछ अंश -

साहिब मेरा एको है। एको है भाई एको है।
आपे रूप करे बहु भांती नानक बपुड़ा एव कह।। (पृष्ठ 350)
जो तिन कीआ सो सचु थीआ, अमृत नाम सतगुरु दीआ।। (पृष्ठ 352)
गुरु पुरे ते गति मति पाई। (पृष्ठ 353)
बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे।
सतिगुरु राखे से बड़ भागे, नानक गुरु की चरणों लागे।। (पृष्ठ 414)
मैं गुरु पूछिआ अपणा साचा बिचारी राम। (पृष्ठ 439)

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि साहिब(प्रभु) एक ही है तथा उनका (श्री नानक जी का) कोई मनुष्य रूप में वक्त गुरु भी था जिसके विषय में कहा है कि पूरे गुरु से तत्वज्ञान प्राप्त हुआ तथा मेरे गुरु जी ने मुझे (अमृत नाम) अमर मन्त्र अर्थात् पूर्ण मोक्ष करने वाला उपदेश नाम मन्त्र दिया, वही मेरा गुरु नाना रूप धारण कर लेता है अर्थात् वही सतपुरुष है वही जिंदा रूप बना लेता है। वही धाणक रूप में भी काशी नगर में विराजमान होकर आम व्यक्ति अर्थात् भक्त की भूमिका कर रहा है। शास्त्र विरुद्ध पूजा करके सारे जगत् को जन्म-मृत्यु व कर्मफल की आग में जलते देखकर जीवन व्यर्थ होने के डर से भाग कर मैंने गुरु जी के चरणों में शरण ली।

बलिहारी गुरु आपणे दिउहाड़ी सदवार।
जिन माणस ते देवते कीए करत न लागी वार।
आपीनै आप साजिओ आपीनै रचिओ नाउ।
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ।
तूं जाणोइ सभसै दे लैसहि जिंद कवाउ करि आसणु डिठो चाउ।
(पृ. 463)

भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा जिंदा का रूप बनाकर बेई नदी पर आए अर्थात् जिंदा कहलाए तथा स्वयं ही दो दुनियाँ ऊपर(सतलोक आदि) तथा नीचे(ब्रह्म व परब्रह्म के लोक) को रचकर ऊपर सत्यलोक में आकार में आसन पर बैठ कर चाव के साथ अपने द्वारा रची दुनियाँ को देख रहे हो तथा आप ही स्वयम्भू अर्थात् माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते, स्वयं प्रकट होते हो। यही प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मं. 8 में है कि कविर् मनीषि स्वयम्भूः

परिभू व्यवधाता, भावार्थ है कि कवीर परमात्मा सर्वज्ञ है (मनीषि का अर्थ सर्वज्ञ होता है) तथा अपने आप प्रकट होता है। वह (परिभू) सनातन अर्थात् सर्वप्रथम वाला प्रभु है। वह सर्व ब्रह्मण्डों का (व्यवधाता) भिन्न-भिन्न अर्थात् सर्व लोकों का रचनहार है।

एहू जीउ बहुते जनम भरमिआ, ता सतिगुरु शबद सुणाइया।।(पं. 465)

भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मेरा यह जीव बहुत समय से जन्म तथा मत्यु के चक्र में भ्रमता रहा अब पूर्ण सतगुरु ने वास्तविक नाम प्रदान किया।

श्री नानक जी के पूर्व जन्म :- सतयुग में राजा अम्ब्रीष, त्रेतायुग में राजा जनक हुए थे और फिर नानक जी हुए तथा अन्य योनियों के जन्मों की तो गिनती ही नहीं है।

"पुरी में श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर अर्थात् धाम कैसे बना"

उड़ीसा प्रांत में एक इन्द्रदमन नाम का राजा था। वह भगवान श्री कष्ण जी का अनन्य भक्त था। एक रात्रि को श्री कष्ण जी ने राजा को स्वपन में दर्शन देकर कहा कि जगन्नाथ नाम से मेरा एक मन्दिर बनवा दे। श्री कष्ण जी ने यह भी कहा था कि इस मन्दिर में मूर्ति पूजा नहीं करनी है। केवल एक संत छोड़ना है जो दर्शकों को पवित्र गीता अनुसार ज्ञान प्रचार करे। समुद्र तट पर वह स्थान भी दिखाया जहाँ मन्दिर बनाना था। सुबह उठकर राजा इन्द्रदमन ने अपनी पत्नी को बताया कि आज रात्री को भगवान श्री कष्ण जी दिखाई दिए। मन्दिर बनवाने के लिए कहा है। रानी ने कहा शुभ कार्य में देरी क्या? सर्व सम्पत्ति उन्हीं की दी हुई है। उन्हीं को समर्पित करने में क्या सोचना है? राजा ने उस स्थान पर मन्दिर बनवा दिया जो श्री कष्ण जी ने स्वपन में समुद्र के किनारे पर दिखाया था। मन्दिर बनने के बाद समुद्री तुफान उठा, मन्दिर को तोड़ दिया। निशान भी नहीं बचा कि यहाँ मन्दिर था। ऐसे राजा ने पाँच बार मन्दिर बनवाया। पाँचों बार समुद्र ने तोड़ दिया।

राजा ने निराश होकर मन्दिर न बनवाने का निर्णय ले लिया। यह सोचा कि न जाने समुद्र मेरे से कौन-से जन्म का प्रतिशोध ले रहा है। कोष रिक्त हो गया, मन्दिर बना नहीं। कुछ समय उपरान्त पूर्ण परमेश्वर (कविर्देव) ज्योति निरंजन (काल) को दिए वचन अनुसार राजा इन्द्रदमन के पास आए तथा राजा से कहा आप मन्दिर बनवाओ। अब के समुद्र मन्दिर (महल) नहीं तोड़ेगा। राजा ने कहा संत जी मुझे विश्वास नहीं है। मैं भगवान श्री कष्ण (विष्णु) जी के आदेश से मन्दिर बनवा रहा हूँ। श्री कष्ण जी समुद्र को नहीं रोक पा रहे हैं। पाँच बार मन्दिर बनवा चुका हूँ, यह सोच कर कि कहीं

भगवान मेरी परीक्षा ले रहे हों। परन्तु अब तो परीक्षा देने योग्य भी नहीं रहा हूँ क्योंकि कोष भी रिक्त हो गया है। अब मन्दिर बनवाना मेरे वश की बात नहीं। परमेश्वर ने कहा इन्द्रदमन जिस परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है, वही सर्व कार्य करने में सक्षम है, अन्य प्रभु नहीं। मैं उस परमेश्वर की वचन शक्ति प्राप्त हूँ। मैं समुद्र को रोक सकता हूँ (अपने आप को छुपाते हुए सत कह रहे थे)। राजा ने कहा कि संत जी मैं नहीं मान सकता कि श्री कृष्ण जी से भी कोई प्रबल शक्ति युक्त प्रभु है। जब वे ही समुद्र को नहीं रोक सके तो आप कौन से खेत की मूली हो। मुझे विश्वास नही होता तथा न ही मेरी वित्तीय स्थिति मन्दिर (महल) बनवाने की है। संत रूप में आए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने कहा राजन् यदि मन्दिर बनवाने का मन बने तो मेरे पास आ जाना मैं अमूक स्थान पर रहता हूँ। अब के समुद्र मन्दिर को नहीं तोड़ेगा। यह कह कर प्रभु चले आए। उसी रात्रि में प्रभु श्री कृष्ण जी ने फिर राजा इन्द्रदमन को दर्शन दिए तथा कहा इन्द्रदमन एक बार फिर महल बनवा दे। जो तेरे पास संत आया था उससे सम्पर्क करके सहायता की याचना कर ले। वह ऐसा वैसा संत नहीं है। उसकी भक्ति शक्ति का कोई वार-पार नहीं है।

राजा इन्द्रदमन नींद से जागा, स्वपन का पूरा वृतान्त अपनी रानी को बताया। रानी ने कहा प्रभु कह रहे हैं तो आप मत चुको। प्रभु का महल फिर बनवा दो। रानी की सद्भावना युक्त वाणी सुन कर राजा ने कहा अब तो कोष भी खाली हो चुका है। यदि मन्दिर नहीं बनवाऊंगा तो प्रभु अप्रसन्न हो जायेंगे। मैं तो धर्म संकट में फंस गया हूँ। रानी ने कहा मेरे पास गहने रखे हैं। उनसे आसानी से मन्दिर बन जायेगा। आप यह गहने लो तथा प्रभु के आदेश का पालन करो, यह कहते हुए रानी ने सर्व गहने जो घर रखे थे तथा जो पहन रखे थे निकाल कर प्रभु के निमित अपने पति के चरणों में समर्पित कर दिये। राजा इन्द्रदमन उस स्थान पर गया जो परमेश्वर ने संत रूप में आकर बताया था। कबीर प्रभु अर्थात् अपरिचित संत को खोज कर समुद्र को रोकने की प्रार्थना की। प्रभु कबीर जी (कविर्देव) ने कहा कि जिस तरफ से समुद्र उठ कर आता है, वहाँ समुद्र के किनारे एक चौरा (चबूतरा) बनवा दे। जिस पर बैठ कर मैं प्रभु की भक्ति करूंगा तथा समुद्र को रोकूंगा। राजा ने एक बड़े पत्थर को कारीगरों से चबूतरा जैसा बनवाया, परमेश्वर कबीर जी उस पर बैठ गए।

(जगन्नाथ मंदिर को बचाने के लिए समुद्र को रोकना)

छठी बार मन्दिर बनना प्रारम्भ हुआ। उसी समय एक नाथ परम्परा के सिद्ध महात्मा आ गए। नाथ जी ने राजा से कहा राजा बहुत अच्छा मन्दिर बनवा रहे हो, इसमें मूर्ति भी स्थापित करनी चाहिए। मूर्ति बिना मन्दिर कैसा? यह मेरा आदेश है। राजा इन्द्रदमन ने हाथ जोड़ कर कहा नाथ जी प्रभु श्री कष्ण जी ने मुझे स्वपन में दर्शन दे कर मन्दिर बनवाने का आदेश दिया था तथा कहा था कि इस महल में न तो मूर्ति रखनी है, न ही पाखण्ड पूजा करनी है। राजा की बात सुनकर नाथ ने कहा स्वपन भी कोई सत होता है। मेरे आदेश का पालन कीजिए तथा चन्दन की लकड़ी की मूर्ति अवश्य स्थापित कीजिएगा। यह कह कर नाथ जी बिना जल पान ग्रहण किए उठ गए। राजा ने डर के मारे चन्दन की लकड़ी मंगवाई तथा कारीगर को मूर्ति बनाने का आदेश दे दिया। एक मूर्ति श्री कष्ण जी की स्थापित करने का आदेश श्री नाथ जी का था। फिर अन्य गुरुओं-संतों ने राजा को राय दी कि अकेले प्रभु कैसे रहेंगे? वे तो श्री बलराम को सदा साथ रखते थे। एक ने कहा बहन सुभद्रा तो भगवान श्री कष्ण जी की लाड़ली बहन थी, वह कैसे अपने भाई बिना रह सकती है? तीन मूर्तियाँ बनवाने का निर्णय लिया गया। तीन कारीगर नियुक्त किए। मूर्तियाँ तैयार होते ही टुकड़े-टुकड़े हो गई। ऐसे तीन बार मूर्तियाँ खण्ड हो गई। राजा बहुत चिन्तित हुआ। सोचा मेरे भाग्य में यह यश व पुण्य कर्म नहीं है। मन्दिर बनता है वह टूट जाता है। अब मूर्तियाँ टूट रही हैं। नाथ जी रूष्ट हो कर गए हैं। यदि कहूँगा कि

मूर्तियाँ टूट जाती हैं तो सोचेगा कि राजा बहाना बना रहा है, कहीं मुझे शाप न दे दे। चिन्ता ग्रस्त राजा न तो आहार कर रहा है, न रात्रि भर निन्द्रा आई। सुबह बेचैन अवस्था में राज दरबार में गया। उसी समय पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर प्रभु एक अस्सी वर्षीय कारीगर का रूप बनाकर राज दरबार में उपस्थित हुआ। कमर पर एक थैला लटकाए हुए था जिसमें आरी बाहर स्पष्ट दिखाई दे रही थी, मानों बिना बताए कारीगर का परिचय दे रही थी तथा अन्य बसोला व बरमा आदि थेले में भरे थे। कारीगर वेश में प्रभु ने राजा से कहा मैंने सुना है कि प्रभु के मन्दिर के लिए मूर्तियाँ पूर्ण नहीं हो रही हैं। मैं 80 वर्ष का वद्ध हो चुका हूँ तथा 60 वर्ष का अनुभव है। चन्दन की लकड़ी की मूर्ति प्रत्येक कारीगर नहीं बना सकता। यदि आप की आज्ञा हो तो सेवक उपस्थित है। राजा ने कहा कारीगर आप मेरे लिए भगवान ही कारीगर बन कर आये लगते हो। मैं बहुत चिन्तित था। सोच ही रहा था कि कोई अनुभवी कारीगर मिले तो समस्या का समाधान बने। आप शीघ्र मूर्तियाँ बना दो। वद्ध कारीगर रूप में आए कविर्देव (कबीर प्रभु) ने कहा राजन मुझे एक कमरा दे दो, जिसमें बैठ कर प्रभु की मूर्ति तैयार करूंगा। मैं अंदर से दरवाजा बंद करके स्वच्छता से मूर्ति बनाऊंगा। ये मूर्तियां जब तैयार हो जायेंगी तब दरवाजा खुलेगा, यदि बीच में किसी ने खोल दिया तो जितनी मूर्तियाँ बनेगी उतनी ही रह जायेंगी। राजा ने कहा जैसा आप उचित समझो वैसा करो। बारह दिन मूर्तियाँ बनाते हो गए तो नाथ जी आ गए। नाथ जी ने राजा से पूछा इन्द्रदमन मूर्तियाँ बनाई क्या? राजा ने कर बद्ध हो कर कहा कि आप की आज्ञा का पूर्ण पालन किया गया है महात्मा जी। परन्तु मेरा दुर्भाग्य है कि मूर्तियाँ बन नहीं पा रही हैं। आधी बनते ही टुकड़े-टुकड़े हो जाती हैं नौकरों से मूर्तियों के टुकड़े मंगवाकर नाथ जी को विश्वास दिलाने के लिए दिखाए। नाथ जी ने कहा कि मूर्ति अवश्य बनवानी है। अब बनवाओं मैं देखता हूँ कैसे मूर्ति टूटती है। राजा ने कहा नाथ जी प्रयत्न किया जा रहा है। प्रभु का भेजा एक अनुभवी 80 वर्षीय कारीगर बन्द कमरें में मूर्ति बना रहा है। उसने कहा है कि मूर्तियाँ बन जाने पर मैं अपने आप द्वार खोल दूंगा। यदि किसी ने बीच में द्वार खोल दिया तो जितनी मूर्तियाँ बनी होंगी उतनी ही रह जायेंगी। आज उसे मूर्ति बनाते बारह दिन हो गये। न तो बाहर निकला है, न ही जल पान तथा आहार ही किया है। नाथ जी ने कहा कि मूर्तियाँ देखनी चाहिये, कैसी बना रहा है? बनने के बाद क्या देखना है। ठीक नहीं बनी होंगी तो ठीक बनायेंगे। यह कहकर नाथ जी राजा इन्द्रदमन को साथ लेकर उस कमरे के सामने गए जहाँ मूर्ति बनाई जा रही थी तथा आवाज लगाई कारीगर द्वार खोलो। कई बार कहा परन्तु द्वार नहीं खुला तथा जो खट-खट की आवाज आ रही थी, वह भी बन्द हो गई। नाथ जी ने कहा कि 80 वर्षीय वद्ध बता रहे हो,

बारह दिन खाना-पीना भी नहीं किया है। अब आवाज भी बंद है, कहीं मर न गया हो। धक्का मार कर दरवाजा तोड़ दिया, देखा तो तीन मूर्तियाँ रखी थी, तीनों के हाथ के व पैरों के पंजे नहीं बने थे। कारीगर अंतर्ध्यान था।

मन्दिर बन कर तैयार हो गया और चारा न देखकर अपने हठ पर अडिग नाथ जी ने कहा ऐसी ही मूर्तियों को स्थापित कर दो, हो सकता है प्रभु को यही स्वीकार हो, लगता है श्री कृष्ण ही स्वयं मूर्तियां बना कर गए हैं।

मुख्य पांडे ने शुभ मुहूर्त निकाल कर अगले दिन ही मूर्तियों की स्थापना कर दी। सर्व पाण्डे तथा मुख्य पांडा व राजा तथा सैनिक व श्रद्धालु मूर्तियों में प्राण स्थापना करने के लिए चल पड़े। पूर्ण परमेश्वर (कविर्देव) एक शुद्र का रूप धारण करके मन्दिर के मुख्य द्वार के मध्य में मन्दिर की ओर मुख करके खड़े हो गए। ऐसी लीला कर रहे थे मानों उनको ज्ञान ही न हो कि पीछे से प्रभु की प्राण स्थापना की सेना आ रही है। आगे-आगे मुख्य पांडा चल रहा था। परमेश्वर फिर भी द्वार के मध्य में ही खड़े रहे। निकट आ कर मुख्य पांडे ने शुद्र रूप में खड़े परमेश्वर को ऐसा धक्का मारा कि दूर जा कर गिरे तथा एकान्त स्थान पर शुद्र लीला करते हुए बैठ गए। राजा सहित सर्व श्रद्धालुओं ने मन्दिर के अन्दर जा कर देखा तो सर्व मूर्तियाँ उसी द्वार पर खड़े शुद्र रूप परमेश्वर का रूप धारण किए हुए थी। इस कौतूक को देखकर उपस्थित व्यक्ति अचम्भित हो गए। मुख्य पांडा कहने लगा प्रभु क्षुब्ध हो गया है क्योंकि मुख्य द्वार को उस शुद्र ने अशुद्ध कर दिया है। इसलिए सर्व मूर्तियों ने शुद्र रूप धारण कर लिया है। बड़ा अनिष्ट हो गया है। कुछ समय उपरान्त मूर्तियों का वास्तविक रूप हो गया। गंगा जल से कई बार स्वच्छ करके प्राण स्थापना की गई। {कविर्देव ने कहा अज्ञानता व पाखण्ड वाद की चरम सीमा देखें। कारीगर मूर्ति का भगवान बनाता है। फिर पूजारी या अन्य संत उस मूर्ति रूपी प्रभु में प्राण डालता है अर्थात् प्रभु को जीवन दान देता है। तब वह मिट्टी या लकड़ी का प्रभु कार्य सिद्ध करता है, वाह रे पाखण्डियों खूब मूर्ख बनाया प्रभु प्रेमी आत्माओं को।}

मूर्ति स्थापना हो जाने के कुछ दिन पश्चात् लगभग 40 फुट ऊँचा समुद्र का जल उठा जिसे समुद्री तुफान कहते हैं तथा बहुत वेग से मन्दिर की ओर चला। सामने कबीर परमेश्वर चौरा (चबुतरे) पर बैठे थे। अपना एक हाथ उठाया जैसे आशीर्वाद देते हैं, समुद्र उठा का उठा रह गया तथा पर्वत की तरह खड़ा रहा, आगे नहीं बढ़ सका। विप्र रूप बना कर समुद्र आया तथा चबूतरे पर बैठे प्रभु से कहा कि भगवन आप मुझे रास्ता दे दो, मैं मन्दिर तोड़ने जाऊंगा। प्रभु ने कहा कि यह मन्दिर नहीं है। यह तो महल (आश्रम) है। इस में विद्वान पुरुष रहा करेगा तथा पवित्र गीता जी का ज्ञान दिया

करेगा। आपका इसको विध्वंस करना शोभा नहीं देता। समुद्र ने कहा कि मैं इसे अवश्य तोड़ूंगा। प्रभु ने कहा कि जाओ कौन रोकता है? समुद्र ने कहा कि मैं विवश हो गया हूँ। आपकी शक्ति अपार है। मुझे रास्ता दे दो प्रभु। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने पूछा कि आप ऐसा क्यों कर रहे हो? विप्र रूप में उपस्थित समुद्र ने कहा कि जब यह श्री कष्ण जी त्रेतायुग में श्री रामचन्द्र रूप में आया था तब इसने मुझे अग्नि बाण दिखा कर बुरा भला कह कर अपमानित करके रास्ता मांगा था। मैं वह प्रतिशोध लेने जा रहा हूँ।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि प्रतिशोध तो आप पहले ही ले चुके हो। आपने द्वारिका को डूबो रखा है। समुद्र ने कहा कि अभी पूर्ण नहीं डूबा पाया हूँ, आधी रहती है। वह भी कोई प्रबल शक्ति युक्त संत सामने आ गया था जिस कारण से मैं द्वारिका को पूर्ण रूपेण नहीं समा पाया। अब भी कोशिश करता हूँ तो उधर नहीं जा पा रहा हूँ। उधर से मुझे बांध रखा है।

तब परमेश्वर कबीर (कविर्देव) ने कहा वहाँ भी मैं ही पहुँचा था। मैंने ही वह अवशेष बचाया था। अब जा शेष बची द्वारिका को भी निगल ले, परन्तु उस यादगार को छोड़ देना, जहाँ श्री कष्ण जी के शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया था (श्री कष्ण जी के अन्तिम संस्कार स्थल पर बहुत बड़ा मन्दिर बना दिया गया। यह यादगार प्रमाण बना रहेगा कि वास्तव में श्री कष्ण जी की मत्यु हुई थी तथा पंच भौतिक शरीर छोड़ गये थे। नहीं तो आने वाले समय में कहेंगे कि श्री कष्ण जी की तो मत्यु ही नहीं हुई थी)। आज्ञा प्राप्त कर शेष द्वारिका को भी समुद्र ने डूबो लिया। परमेश्वर कबीर जी (कविर्देव) ने कहा अब आप आगे से कभी भी इस जगन्नाथ मन्दिर को तोड़ने का प्रयत्न नहीं करना तथा इस महल से दूर चला जा। ऐसी आज्ञा प्रभु की मान कर प्रणाम करके मन्दिर से दूर लगभग डेढ़ किलोमीटर हट गया। ऐसे श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर अर्थात् धाम स्थापित हुआ।

"श्री जगन्नाथ के मन्दिर में छुआछात प्रारम्भ से ही नहीं है"

कुछ दिन पश्चात जिस पांडे ने प्रभु कबीर जी को शुद्र रूप में धक्का मारा था उसको कुष्ठ रोग हो गया। सर्व औषधी करने पर भी स्वस्थ नहीं हुआ। कुष्ठ रोग का कष्ट अधिक से अधिक बढ़ता ही चला गया। सर्व उपासनायें भी की, श्री जगन्नाथ जी से रो-रोकर संकट निवार्ण के लिए प्रार्थना की, परन्तु सर्व निष्फल रही। स्वपन में श्री कष्ण जी ने दर्शन दिए तथा कहा पांडे उस संत के चरण धोकर चरणामत पान कर जिसको तुने मन्दिर के मुख्य द्वार पर धक्का मारा था। तब उसके आशीर्वाद से तेरा कुष्ठ रोग ठीक हो सकता है। यदि उसने तुझे हृदय से क्षमा किया तो, अन्यथा नहीं। मरता

क्या नहीं करता?

वह मुख्य पांडा सवेरे उठा। कई सहयोगी पांडों को साथ लेकर उस स्थान पर गया जहाँ पर प्रभु कबीर शूद्र रूप में विराजमान थे। ज्यों ही पांडा प्रभु के निकट आया तो परमेश्वर उठ कर चल पड़े तथा कहा हे पांडा मैं तो अछूत हूँ मेरे से दूर रहना, कहीं आप अपवित्र न हो जायें। पांडा निकट पहुँचा, परमेश्वर और आगे चल पड़े। तब पांडा फूट-फूट कर रोने लगा तथा कहा परवरदीगार मेरा दोष क्षमा कर दो। तब दयालु प्रभु रूक गए। पांडे ने आदर के साथ एक स्वच्छ वस्त्र जमीन पर बिछा कर प्रभु को बैठने की प्रार्थना की। प्रभु उस वस्त्र पर बैठ गए। तब उस पांडे ने स्वयं चरण धोए तथा चरणामृत को पात्र में वापिस डाल लिया। प्रभु कबीर जी ने कहा पांडे चालीस दिन तक इसे पीना भी तथा स्नान करने वाले जल में कुछ डाल कर स्नान करते रहना। चालीसवें दिन तेरा कुष्ठ रोग समाप्त होगा तथा कहा कि भविष्य में भी इस जगन्नाथ जी के मन्दिर में किसी ने छूआछात किया तो उसको भी दण्ड मिलेगा। सर्व उपस्थित व्यक्तियों ने वचन किए कि आज के बाद इस पवित्र स्थान पर कोई छुआ-छात नहीं की जायेगी।

विचार करें :- हिन्दुस्तान का एक ही मन्दिर ऐसा है जिसमें प्रारम्भ से ही छूआ-छात नहीं रही है।

मुझ दास को भी उस स्थान को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। कई सेवकों के साथ उस स्थल को देखने के लिए गया था कि कुछ प्रमाण प्राप्त करूं। वहाँ पर सर्व प्रमाण आज भी साक्षी मिले। जिस पत्थर (चौरा) पर बैठ कर कबीर परमेश्वर जी ने मन्दिर को बचाने के लिए समुद्र को रोका था वह आज भी विद्यमान है। उसके ऊपर एक यादगार रूप में गुम्बज बना रखा है। वहाँ पर बहुत पुरातन महन्त(रखवाला) परम्परा से एक आश्रम भी विद्यमान है। वहाँ पर लगभग 70 वर्षीय वृद्ध महन्त जी से उपरोक्त मन्दिर की समुद्र से रक्षा की जानकारी चाही तो उसने भी यही बताया तथा कहा कि मेरे पूर्वज कई पीढ़ी से यहाँ पर महन्त (रखवाले) रहे हैं। यहाँ पर ही श्री धर्मदास साहेब व उनकी पत्नी भक्तमति आमनी देवी ने शरीर त्यागा था। दोनों की समाधियाँ भी साथ-साथ बनी दिखाई।

फिर हम श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर में गए। वहाँ पर मूर्ति पूजा आज भी नहीं है। परन्तु प्रदर्शनी अवश्य लगा रखी है।

जो तीन मूर्तियाँ भगवान श्री कृष्ण जी तथा श्री बलराम जी व बहन सुभद्रा जी की मन्दिर के अन्दर स्थापित हैं उनके दोनों हाथों के पंजे नहीं हैं, दोनों हाथ टूंडे हैं। उन मूर्तियों की भी पूजा नहीं होती, केवल दर्शनार्थ रखी हैं। वहाँ पर एक गाईड पांडे से पूछा कि सुना है कि यह मन्दिर पाँच बार

समुद्र ने तोड़ा था पुनर बनवाया था। समुद्र ने क्यों तोड़ा? फिर किसने समुद्र को रोका। पांडे ने कहा इतना तो मुझे पता नहीं। यह सर्व कपा जगन्नाथ जी की थी, उन्होंने ही समुद्र को रोका था, सुना तो है कि समुद्र ने तीन बार मन्दिर को तोड़ा था। मैंने फिर प्रश्न किया कि प्रथम बार ही क्यों न समुद्र रोका प्रभु ने। पांडे ने उत्तर दिया कि लीला है जगन्नाथ की।

मैंने फिर पूछा कि इस मन्दिर में छूआछात है या नहीं? उसने कहा जब से मन्दिर बना है यहाँ कोई छूआछात नहीं है। मन्दिर में शुद्र तथा पांडा एक थाली या पतल में खाना खा सकते हैं कोई मना नहीं करता। मैंने प्रश्न किया पांडे जी अन्य हिन्दु मन्दिरों में तो पहले बहुत छुआछात थी, इसमें क्यों नहीं? प्रभु तो वही है। पांडे का उतर था लीला है जगन्नाथ की।

अब पुण्यात्माऐं विचार करें कि सत को कितना दबाया गया है, एक लीला जगन्नाथ की कह कर। पवित्र यादगारें आदरणीय हैं, परन्तु आत्म कल्याण तो केवल पवित्र गीता जी व पवित्र वेदों में वर्णित तथा परमेश्वर कबीर जी द्वारा दिए तत्वज्ञान के अनुसार भक्ति साधना करने मात्र से ही सम्भव है, अन्यथा शास्त्र विरुद्ध होने से मानव जीवन व्यर्थ हो जाएगा। प्रमाण गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24 श्री जगन्नाथ के मन्दिर में प्रभु के आदेशानुसार पवित्र गीता जी के ज्ञान की महिमा का गुणगान होना ही श्रेयस्कर है तथा जैसा श्रीमद्भगवत गीता जी में भक्ति विधि है उसी प्रकार साधना करने मात्र से ही आत्म कल्याण संभव है, अन्यथा जगन्नाथ जी के दर्शन मात्र या खिचड़ी प्रसाद खाने मात्र से कोई लाभ नहीं, क्योंकि यह क्रिया श्री गीता जी में वर्णित न होने से शास्त्र विरुद्ध हुई, जो अध्याय 16 मंत्र 23-24 में प्रमाण है।

''जगन्नाथ के पांडे की कबीर जी द्वारा रक्षा''

काशी शहर में बैठे कबीर परमेश्वर जी ने जगन्नाथ मंदिर के पाण्डे के पैर को गर्म खिचड़ी प्रसाद से जलने से बचाया। प्रकरण इस प्रकार है:-

एक समय दिल्ली का राजा सिकंदर लोधी काशी नगर में गया हुआ था। बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी अपने साथ भक्त रविदास जी को लेकर राजदरबार में स्वाभाविक पहुँच गए। दोनों को अच्छा आसन बैठने को दिया तथा राजा सिकंदर लोधी तथा काशी नरेश वीर देव सिंह बघेल भी साथ में बैठ गए।

कुछ समय उपरान्त परमेश्वर कबीर जी ने अपने पैर पर अपने कमण्डल (एक पानी का भरा लोटा जो कबीर जी साथ रखते थे) से जल डाला तो सिकंदर राजा तथा वीर देव सिंह बघेल ने पूछा कि महात्मा जी आपने अपने पैर पर जल किस लिए डाला? परमेश्वर कबीर जी ने उत्तर दिया कि जगन्नाथ पुरी में एक रामसहाय पाण्डा खिचड़ी प्रसाद उतार रहा

था। गर्म खिचड़ी उसके पैर पर गिर गई। उस के पैर को जलने से बचाया है। यह जल उसके पैर पर गिरा है।

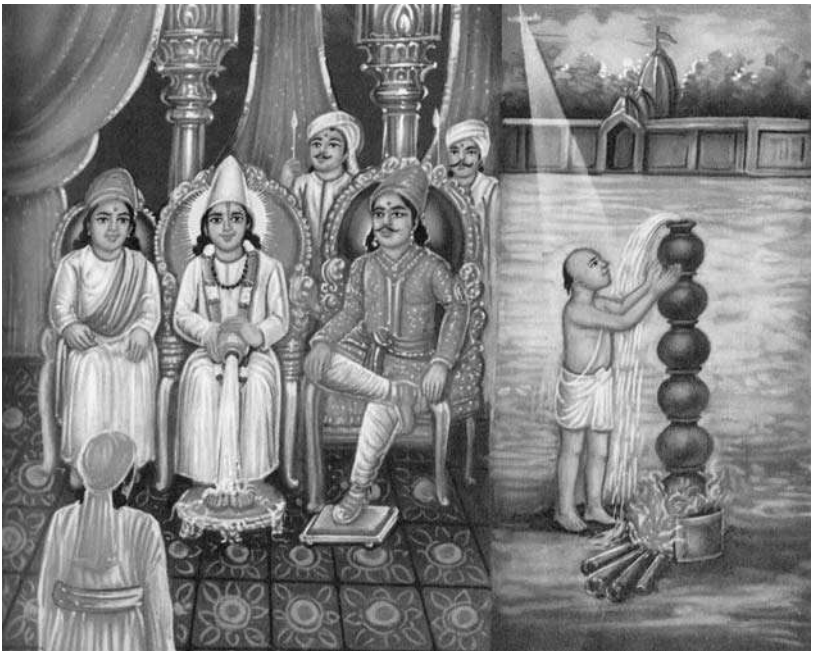

(काशी शहर में बैठे कबीर जी ने जगन्नाथ के मंदिर में पांडे के पैर को जलने से बचाया)

इस बात की सत्यता को जानने के लिए राजाओं ने तुरंत दो सिपाही भेजे जो ऊंटों पर सवार होकर जगन्नाथ पुरी के मंदिर में 10 दिन में पहुंचे। वहां जाकर पता किया और उसी रामसहाय पाण्डे से पूछा। वहां पर उस समय उपस्थित कई पाण्डे भी घटना के प्रत्यक्ष दर्ष्टा थे। उन सब ने बताया कि कबीर जी यहाँ मन्दिर में उपस्थित थे। मैं खिचड़ी प्रसाद का टोकना उतार रहा था। उबलता प्रसाद मेरे इस पैर पर गिरा। उस समय कबीर जी ने अपने कमण्डल से हिम जल (बर्फ जैसा शीतल जल) मेरे पैर पर डाला। मेरी चीख निकल गई थी, बहुत से व्यक्ति यहाँ इकट्ठे हो गए थे। मुझे तुरन्त राहत मिल गई। अन्यथा मेरा पैर जल जाता। सिपाहियों ने पूछा ''कौन कबीर है जिस ने तेरे पैर पर शीतल जल डाला था। रामसहाय ने बताया कि काशी वाला जुलाहा कबीर था। वह प्रतिदिन यहाँ आते हैं। कुछ देर सत्संग करते हैं।

यह सारा वत्तांत लिखवा कर सिपाही आए और घटना सत्य बताई। दोनों राजाओं ने आश्चर्य किया और कहा कि पथ्वी पर राम रहीम स्वयं आए हैं। ये केवल जुलाहा (कपड़ा बुनकर) ही नहीं हैं। ये तो संसार के भी निर्माता हैं।

''गंगा में पितरों को जल दे रहे पंडितों का भ्रम निवारण''

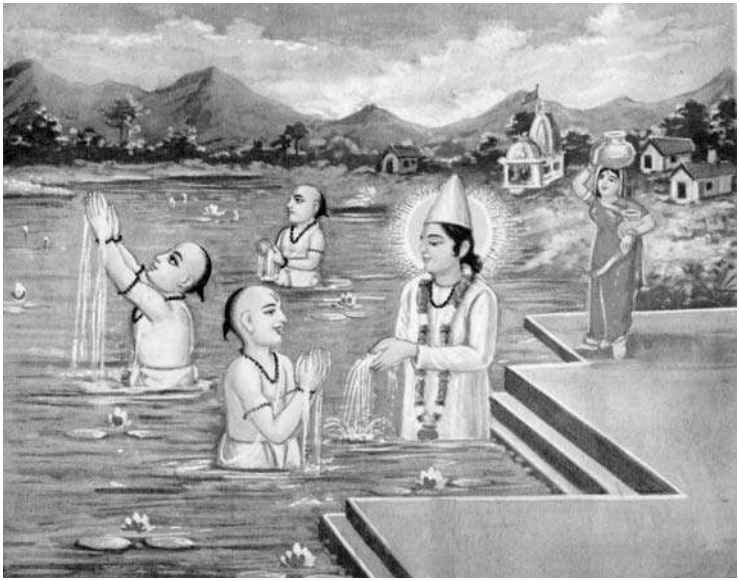

परमेश्वर कबीर जी सुबह गंगा दरिया पर गए जो काशी नगर के बगल से बहती है। वहां पर कुछ मनमुखी ब्राह्मण गंगा के जल को सूर्य की ओर मुख करके हाथों तथा लोटे से वापिस डाल रहे थे। परमेश्वर कबीर जी गंगा दरिया में प्रविष्ट होकर गंगा दरिया के जल को किनारे पर बाहर दोनों हाथों से फैंकने लगे।

ब्राह्मणों ने पूछा कि हे कबीर जी! आप क्या कर रहे हो। परमेश्वर कबीर जी ने ब्राह्मणों से पूछा कि आप क्या कर रहे हो? ब्राह्मणों ने उत्तर दिया :- हम अपने पितरों को स्वर्ग में जल भेज रहे हैं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि ''मैंने अपने घर के सामने बगीची लगाई है।, उस की सिंचाई कर रहा हूँ। यह सुन कर सर्व ब्राह्मण हंसने लगे और कहा कि जल तो यहाँ पथ्वी पर गिरा है। यह वहां कैसे जाएगा? कबीर जी ने कहा कि आप जी ने भी तो जल यहीं पथ्वी पर डाला है। यदि आपका जल करोड़ों किलोमीटर दूर स्वर्ग में आकाश में जा सकता है तो मेरे वाले जल को आधा किलोमीटर जाने में क्या बाधा आएगी। यह तर्क सुनकर सर्व निरूत्तर हो गए। सत्य को जान कर कबीर जी के अनुयाई बने। कबीर जी ने बताया कि आप यह भी कह रहे हो कि आपके पितर (माता-पिता, दादा-दादी) स्वर्ग में हैं। फिर आप यह भी मानते हो वहां पर उन्हें जल नहीं मिल रहा। आप यहां से भेज रहे हो। आप यह भी मानते हो कि स्वर्ग में किसी वस्तु का अभाव नहीं है। परमात्मा कबीर

जी बता रहे हैं कि आप को भ्रमित ज्ञान प्राप्त है। आपकी भक्ति विधि शास्त्र विरूद्ध है। इसलिए आप के पितरों को तो लाभ दूर रहा, आप को ही लाभ नहीं मिलेगा। मेरे पास वह शास्त्रानुकूल भक्ति है जिस से आप का भी तथा आप के पितरों का भी कल्याण हो जाएगा।

जिस भक्ति की शक्ति से यहाँ डाला जल कहीं और गिरे वह आपके पास नहीं है। मैंने काशी में अपने पैर पर जल डाला था। वह जगन्नाथ पुरी के पाण्डे के पैर पर डालने के उद्देश्य से डाला था। मैंने स्वयं वहां पहुंच कर उसकी रक्षा की थी। यदि आप मेरी बताई भक्ति करोगे तो तुम्हें व तुम्हारे पितरों को मैं स्वयं वहाँ जाकर तप्त करूंगा। आपका तथा आपके पितरों का उद्धार हो जाएगा। सर्व ब्राह्मणों तथा अन्य उपस्थित व्यक्तियों ने परमात्मा कबीर जी से दीक्षा ली।

''भैंसे से वेद मन्त्र बुलवाना''

स्वामी रामानन्द जी ने पथ्वी पर प्रकट कबीर परमेश्वर जी को पहचान लिया था। परन्तु परमात्मा के आदेशानुसार वे यह गुप्त रखे थे तथा कबीर परमात्मा जी के गुरू भी उन्हीं के आग्रह से बने थे। स्वामी रामानन्द जी जहाँ भी किसी सत्संग-समागम में जाते थे तो कबीर जी को अवश्य साथ लेकर जाते थे। एक समय एक तोताद्री नाम के स्थान पर सत्संग था। दूर-दूर के ब्राह्मण विद्वान निमन्त्रण पर पंहुचे। स्वामी रामानन्द जी भी परमेश्वर कबीर जी के साथ उस सत्संग में शामिल हुए। सत्संग में एक ब्राह्मण जो वहां का प्रमुख मण्डलेश्वर था जो समागम कर रहा था। वह प्रवचन कर रहा था कि भगवान रामचन्द्र जी ने शुद्र भिलनी (सबरी) के झूठे बेर खाए, तनिक भी संकोच नहीं किया, ऐसे ही साधु-संतों की समदष्टि होनी चाहिए।

सत्संग के पश्चात् भोजन-भण्डारा शुरू हुआ। प्रमुख पाण्डे को पता चला कि स्वामी रामानन्द जी के साथ कबीर जुलाहा शुद्र आया है। वह रामानन्द ब्राह्मण के साथ हम ब्राह्मणों वाले भोजनालय में भोजन करने साथ आएगा। यदि मना करेंगे तो रामानन्द जी नाराज हो जाऐंगे। इसलिए युक्ति से काम लिया। कहा कि जो ब्राह्मणों वाले भण्डारे में भोजन करने आएगा, उसे वेद के चार मन्त्र सुनाने पर ही प्रवेश मिलेगा। सर्व ब्राह्मण चार-चार वेद मन्त्र सुना कर प्रवेश पा रहे थे। जब परमेश्वर कबीर जी की बारी आई तो उन से भी कहा कि चार वेद मन्त्र सुनाओ। तब परमेश्वर ने देखा कि थोड़ी-सी दूरी पर एक भैंसा (झोटा) घास चर रहा था। परमेश्वर कबीर जी ने मूल मन्त्र (हुर्र-हुर्र) से पुकारा, भैंसा दौड़ा-दौड़ा आया। तब कबीर जी ने उस भैंसे की कमर पर थपकी हाथ से लगाई और कहा कि भैंसा जी इन पंडितों को वेद

के चार मन्त्र सुना दे। भैंसे ने छः मन्त्र सुना दिए।

भैंसे ने यजुर्वेद अध्याय 5 मन्त्र 32, अध्याय 29 मन्त्र 25, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मन्त्र 26, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96, मन्त्र 17, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मन्त्र 1 तथा सुक्त 95 का मन्त्र 2 सुना दिया। परमेश्वर कबीर जी ने भैंसे से कहा कि भैंसा राम! पंडितों को इन सर्व वेद मन्त्रों का अनुवाद भी कर के सुना दे। इनको वेदों के मन्त्रों का अनुवाद भी ठीक से ज्ञात नहीं है। झोटा राम ने अनुवाद सुनाया :- गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में जिस परमात्मा की शरण में गीता ज्ञान दाता ने जाने के लिए कहा है, इन वेद मन्त्रों में उसी का नाम यहां पर स्पष्ट किया है जो परम शान्ति दायक है। (अंघारी) सर्व पापों का शत्रु अर्थात् पापनाशक है। वह (कविर्) कबीर (बम्भारी) बंधनों का शत्रु अर्थात् कर्म बन्धन को नाश करने वाला = बन्दी छोड़ है।

भावार्थ :- वह पाप नाश करने वाला बन्दी छोड़ कबीर है। वह पूर्ण परमात्मा अपने तेजोमय स्वरूप को सरल करके अपने सत्यलोक से चल कर आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है, अपने मुख कमल से यथार्थ भक्ति का ज्ञान कराता है। वह कवियों की तरह आचरण करता हुआ पृथ्वी पर भी विचरण करता है। भक्ति के गुप्त मन्त्र भी वही बताता है। वह परमेश्वर मेरे और आपके पास यह कबीर जुलाहा (धाणक) खड़ा है।

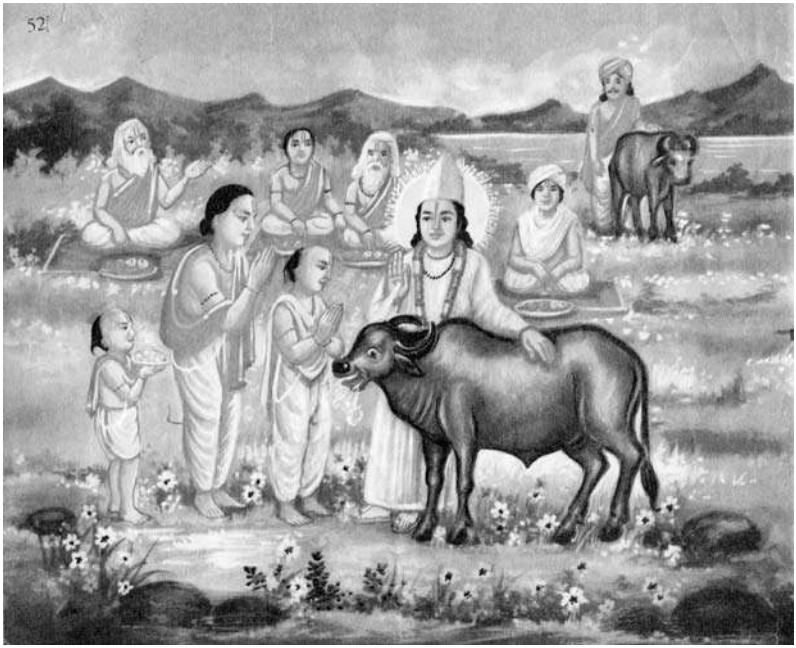

(तोताद्री नामक स्थान पर भैंसे से वेद मंत्र बुलवाना)

परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे विद्वान भैंसा! आप ब्राह्मणों वाले लंगर में भोजन-प्रसाद खाऐं। मैं तो सामान्य भण्डारे में प्रसाद ग्रहण कर लूंगा। उपस्थित पंडित शर्म से पानी-पानी हो गए और क्षमा मांगी। परमेश्वर कबीर जी ने कहा ''हे विद्वानो! आप सत्संग में क्या प्रवचन कर रहे थे कि श्री राम जी ने सबरी (भीलनी) शुद्र के झूठे बेर रूचि-रूचि खाए थे। तनिक भी भेदभाव नहीं किया, स्वयं भेदभाव कर रहे हो।''

कबीर :– करनी तज कथनी कथैं, अज्ञानी दिन–रात।
कुक्कर ज्यों भौंकत फिरैं, सुनी–सुनाई बात।।

वेदों के मन्त्र तो ब्राह्मण को भी कंठस्थ थे परन्तु अनुवाद का ज्ञान नहीं था। उसी समय सर्व विद्वान व परमात्मा चाहने वाले ब्राह्मणों ने कबीर परमेश्वर जी से दीक्षा ली। इस प्रकार परमेश्वर कबीर जी ने अपनी प्रिय आत्माओं को काल के जाल से निकाल कर अपनी शरण में लिया। उस सत्संग में उपस्थित हजारों की संख्या में अन्य श्रोताओं ने भी यह लीला देखी और दीक्षा प्राप्त करके अपना जीवन धन्य किया।

''कबीर वट की अद्‌भुत कथा''

गुजरात प्रान्त में भरूंच शहर के पास एक अंकलेश्वर गाँव है। उस के पास ''शुक्ल तीर्थ'' नाम का गाँव था जिसमें ब्राह्मण जाति के लोग निवास करते थे। वर्तमान में वहाँ गाँव नहीं है क्योंकि नर्मदा नदी ने इसको चारों ओर से घेर कर अंकलेश्वर गाँव से सम्पर्क समाप्त कर दिया। जिस कारण से वहां जाने के लिए नौका का प्रयोग होने लगा। गाँव कहीं ओर स्थान पर जा बसा।

उस समय वि.सं. 1465 (सन् 1408) में इस शुक्ल तीर्थ गाँव में दो ब्राह्मण सगे भाई रहते थे। जिनके नाम थे बड़े का नाम जीवा तथा छोटे का नाम ''तत्वा'' (दत्ता भी कहते थे) था। जीवा को एक लड़की संतान रूप में प्राप्त थी तथा तत्वा को एक लड़का था। जीवा तथा तत्वा प्रभु प्रेमी भक्त आत्माऐं थी, इनको सत्संग से पता चला कि गुरू के बिना मोक्ष नहीं हो सकता। फिर यह भी निश्चय हुआ कि पूर्ण गुरू के बिना मोक्ष नहीं हो सकता है। दोनों भाइयों ने बहुत सत्संग ऋषि-मण्डलेश्वरों के सुने। जिस भी संत का सत्संग सुनते थे तो लगता था कि यह पूर्ण गुरू है। फिर अन्य का सत्संग सुनते थे तो लगता था कि यह पूर्ण गुरू है। दोनों ने विचार किया कि पूर्ण गुरू की पहचान कैसे करें। जिसका भी सत्संग सुनते हैं वही पूर्ण लगता है। उन्होंने निर्णय किया कि एक वट वृक्ष (बड़ पेड़) की सूखी टहनी लाकर मिट्‌टी में गाड़ेंगे और इसमें संतों के चरण धोकर चरणामृत इस सूखी टहनी के गड्‌ढ़े में डालेंगे। जिस सन्त के चरणामृत से यह डार हरी-भरी हो जाएगी।

वह पूर्ण सन्त होगा। कई वर्षों तक यह परीक्षा जारी रही। परन्तु निराशा ही हाथ लगी। हताश होकर मान बैठे कि पृथ्वी पर वर्तमान में कोई पूर्ण सन्त है ही नहीं। कबीर परमेश्वर जी उस शुक्ल तीर्थ गाँव में गए। सन्त वेश में परमेश्वर को तत्वा ने देखा और अपने बड़े भाई जीवा को बताया। जीवा ने कहा कि यह सड़क-छाप सन्त है। इससे क्या लाभ होगा? जब बड़े-बड़े मण्डलेश्वरों से कुछ नहीं हुआ। दत्ता के अधिक आग्रह पर (कि कहते हैं भगवान न जाने किस वेश में मिल जाए) कबीर परमेश्वर जी को अपने घर पर बुला लिया। सर्व प्रथम चरण धोकर चरणामृत को तत्वा ने सूखी डार लगे गड्ढ़े में डाला, तुरंत ही हरी-भरी हो गई।

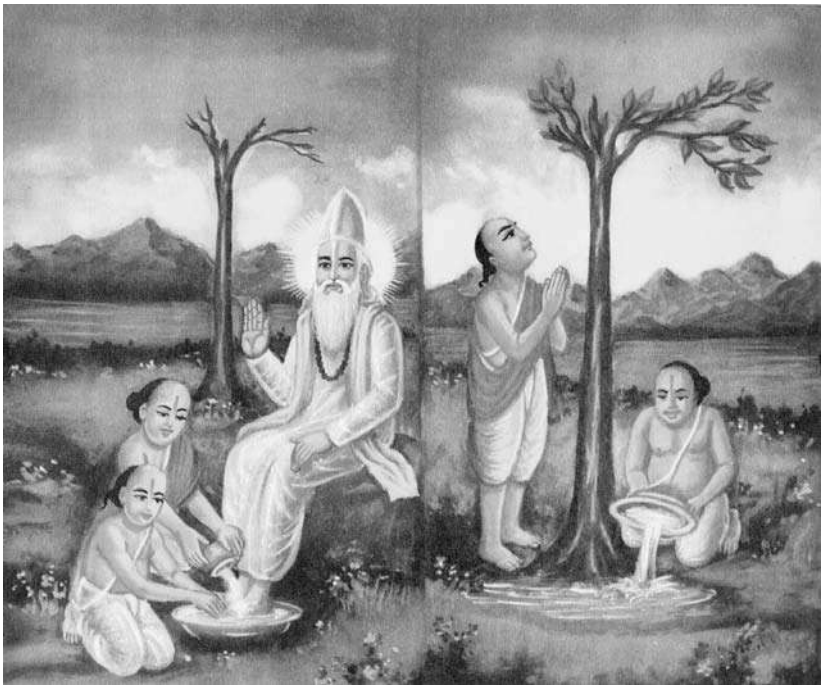

(वट वृक्ष की सूखी टहनी चरणामृत से हरी-भरी हो गई)

पूर्ण सतगुरू को प्राप्त करके दोनों भाई गद्‌गद् हो गए तथा दीक्षा ग्रहण की। दोनों ने परमेश्वर कबीर जी से करबद्ध होकर प्रार्थना की कि हे प्रभु! आप हमें पहले क्यों नहीं मिले, हमारा बहुत जीवन व्यर्थ हो गया। कबीर परमेश्वर जी ने उत्तर दियाः- हे जीवा-तत्वा! मैं पहले भी आ सकता था। मेरे चरणामृत से सूखी लकड़ी भी हरी हो जानी थी। परन्तु आप को भ्रम रह जाता कि यह तो एक गलियारों में घूमने वाला संत है। हो सकता है कि जिनके बड़े-बड़े मठ बने हैं, लाखों भक्त हैं, उनके पास इससे भी अधिक भक्ति शक्ति

होगी। आप वहाँ फिर भी भटकते। यह मन का स्वभाव है।

मेरे से दीक्षा लेकर आप के मन में यह शंका आने मात्र से आप नाम रहित हो जाते। वहाँ जाने से तो भक्ति नाश ही हो जाता। इसलिए मैं उस समय आप को मिला हूँ कि आप निश्चल मन से भक्ति करके मोक्ष प्राप्त कर सकोगे। परमेश्वर कबीर जी ने फिर कहा हे जीवा दत्ता! पूर्ण सन्त की यही पहचान नहीं होती।

प्रश्न :- हे परमेश्वर पूर्ण गुरू के लक्षण बताने की कृपा करें।

उत्तर :- परमेश्वर कबीर जी ने उत्तर दिया :-

★ ''गुरु के लक्षण (पहचान)''

परमेश्वर कबीर जी ने ''कबीर सागर'' के अध्याय ''जीव धर्म बोध'' में पृष्ठ 1960(2024) पर गुरू के लक्षण बताऐ हैं।

चौपाई

गुरू के लक्षण चार बखाना। प्रथम वेद शास्त्र का ज्ञाना(ज्ञाता)।।
दूसरा हरि भक्ति मन कर्म बानी। तीसरा सम दृष्टि कर जानी।।
चौथा बेद विधि सब कर्मा। यह चारि गुरू गुन जानों मर्मा।।

भावार्थ :- जो गुरू अर्थात् परमात्मा कबीर जी का कृपा पात्र दास गुरू पद को प्राप्त होगा, उसमें चार गुण मुख्य होंगे।

''प्रथम बेद शास्त्र का ज्ञाना (ज्ञाता)''

1. वह सन्त वेदों तथा शास्त्रों का ज्ञाता होगा। वह सर्व धर्मों के शास्त्रों को ठीक-ठीक जानेगा।

''दूसरा हरि भक्ति मन कर्म बानी''

2. वह केवल ज्ञान-ज्ञान ही नहीं सुनाऐगा, वह स्वयं भी परमात्मा की भक्ति मन कर्म वचन से करेगा।

''तीसरे समदृष्टि करि जानी''

3. सर्व अनुयाइयों के साथ समान व्यवहार करेगा, वह समदृष्टि वाला होगा। आप देखते हैं कि आश्रम में सर्व श्रद्धालुओं को एक समान खाना-पीना, एक समान बैठने का स्थान। सन्त रामपाल दास जी के माता-पिता, बहन-भाई, बच्चे जब कभी आश्रम में आते हैं साधारण भक्त की तरह आश्रम में रहते हैं।

''चौथा बेद विधि सब कर्मा''

4. चौथा लक्षण गुरू का बताया है कि वह सन्त वेदों में वर्णित भक्ति विधि अनुसार साधना अर्थात् प्रार्थना (स्तुति) यज्ञ अनुष्ठान तथा मंत्र बताएगा।

जब ब्राह्मणों को पता चला कि जीवा-तत्वा ने कबीर जुलाहा काशी वाले

से दीक्षा लेकर धर्म नष्ट कर दिया है तो उनको जाति से बाहर कर दिया। दोनों के लड़का-लड़की जवान हो गए। उनका विवाह नहीं हो पा रहा था। जब परमेश्वर कबीर जी को पता चला तो जीवा-तत्वा को एक युक्ति बताई। युक्ति अनुसार अफवाह फैला दी कि जीवा की लड़की का तत्वा के लड़के से विवाह होने जा रहा है। तब सर्व ब्राह्मणों ने मिलकर कहा कि तुम पड़ो भाड़ में। हम दोनों बच्चों के साथ ऐसा नहीं होने देंगे। हम अपने यहाँ ले जाकर इनका विवाह अलग ब्राह्मणों के लड़के-लड़की से मर्यादा से करेंगे। ऐसा ही हो गया। कुछ दिन के पश्चात् पूरे शुक्ल तीर्थ गाँव के ब्राह्मणों ने ज्ञान को समझ कर परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा प्राप्त करके अपना जीवन धन्य किया।

कबीर परमेश्वर के चरणामृत से वह वट वृक्ष (बड़ पेड़) की सूखी लकड़ी हरी होकर कुछ समय उपरान्त वह वट वृक्ष के रूप में फैलने लगी। इस घटना का शुक्ल तीर्थ के लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ा था। जब वह गाँव कहीं ओर जा बसा तब वह वट वृक्ष (बड़ का पेड़) 8-9 एकड़ में फैल गया। वर्तमान में उसको कांट-छांट कर वहाँ खेती योग्य जमीन बना ली है।

''वट वृक्ष का वर्तमान चित्र''

परंतु वर्तमान में भी वह वट वक्ष दो-तीन एकड़ में फैला है। उस की देख-रेख के लिए वहाँ एक कबीर आश्रम भी बना है। सतगुरू रामपाल जी महाराज के साथ कुछ भक्त सन् 2000 में आँखों देखकर आए हैं।

''द्वारिका पुरी में कबीर कोठा''

श्री कष्ण जी की नगरी द्वारिका पुरी समुद्र में डूब गई थी। इस का कारण आप जी पढ़ें इसी पुस्तक के पष्ठ 97 पर ''पुरी में मन्दिर अर्थात् जगन्नाथ धाम कैसे बना?''

श्री कष्ण जी के समक्ष सर्व यादव आपस में लड़कर मर गए थे जो कुछ बचे थे, वे स्वयं श्री कष्ण जी ने मुसलों से मार डाले (प्रमाणः- विष्णु पुराण अ. 37 पाँचवा अंश पष्ठ 409 से 414 तक)

एक मछुआरे शिकारी ने श्री कष्ण जी के पैर के तलुए में विषाक्त तीर मारकर वध किया। श्री कष्ण जी के शरीर का द्वारिका से बाहर वहीं पर अन्तिम संस्कार किया था। उनके शरीर को गड्ढ़ा खोदकर पाण्डवों ने दबाया था। उस स्थान पर वर्तमान में श्री द्वारिकाधीश का मन्दिर बना है।

कुछ समय बाद श्रद्धालु उस यादगार को देखने जाने लगे। फिर वहाँ पर पूजा प्रारम्भ हो गई। वि. सं. 1505 (सन् 1448) में कबीर परमेश्वर जी द्वारिका में गए। समुद्र के किनारे जहां गोमती नदी सागर में आकर मिलती है, उसके पास एक बालू रेत के टीले (कोठा) पर अर्थात् मिट्टी के ढ़ेर पर बैठकर तीर्थ भ्रमण पर आने वाले श्रद्धालुओं को तत्व ज्ञान सुनाया करते थे।

परमेश्वर कबीर जी प्रश्न करते थे कि आप किसलिए आए हैं? उत्तर होता था कि = द्वारिकाधीश के दर्शन करने आए हैं। उनकी नगरी को देखने आए हैं। भगवान से आशीर्वाद लेने आए हैं।

परमेश्वर कबीर जी कहा करते :- एक वैद्य था। वह नब्ज पकड़ कर रोग जान लेता था। औषधि देकर स्वस्थ कर देता था। उसकी मत्यु के उपरांत वैद्य के शरीर को जमीन में दबा कर अन्तिम संस्कार कर दिया। उस स्थान पर एक मन्दिर बनाकर यादगार बना दी। यदि वैद्य की मूर्ति से कोई उपचार के लिए प्रार्थना करे तो क्या होगा? श्रोताओं का एक सुर में उत्तर :- मूर्ति वैद्य वाला कार्य थोड़े ही करेगी।

प्रश्न :- परमेश्वर प्रश्न करते थे तो उस व्यक्ति को क्या करना चाहिए?

उत्तर श्रोताओं का :- किसी जीवित वैद्य के पास जाकर अपनी जीवन रक्षा करनी चाहिए, यही उचित है।

परमेश्वर कबीर जी कहा करते कि हे भोले श्रद्धालुओ! आप इस श्री कष्ण त्रिलोकी नाथ की मूर्ति से क्या मांगने आए हो? क्या यह श्री कष्ण जी की मूर्ति

आप का कल्याण कर सकती है? उत्तर :- कुछ आश्चर्य करते। कुछ कहते कि हम गलत कर रहे हैं। कुछ नाराज होकर उठ जाते। परमात्मा कबीर जी कहा करते थे कि आप द्वारिका धीश श्री कृष्ण की मूर्ति के दर्शन से कल्याण की अपेक्षा कर के आए हो। यहां पर श्री कृष्ण जी का ही सर्वनाश हो गया। आपको क्या प्राप्ति होगी? आत्म कल्याण तथा सांसारिक सुख प्राप्त करना है तो मैं आप जी को वह शास्त्रानुकूल भक्ति बताऊँगा जिससे आप का कल्याण संभव है। इस प्रकार सत्य को समझकर भ्रमे हुए श्रद्धालुओं को यथार्थ भक्ति प्राप्त हुई। गरीब दास जी ने अपनी अमृतवाणी में कहा है कि :-

मेले ठेले जाइयो, मेले बड़ा मिलाप। पत्थर पानी पूजतें, कोई साधू सन्त मिल जात।।

जहां बैठ कर परमेश्वर कबीर जी सदोपदेश किया करते थे। उस स्थान पर एक गोलाकार चबूतरा (कोठा) बना रखा है। कहा जाता है कि आज तक सन् 1448 से सन् 2014 (566 वर्ष) तक उस बालू रेत के टीले (कोठे = चबूतरेनुमा गोल चक्र) को समुद्र की लहरों ने छुवा भी नहीं। समुद्र में ज्वार भाटा आता है। तब भी समुद्र की लहरें उस ओर नहीं जाती। कृपया देखें काल्पनिक चित्र तथा वास्तविक चित्र। यह कबीर कोठा द्वारिका धीश के मन्दिर के बगल में है।

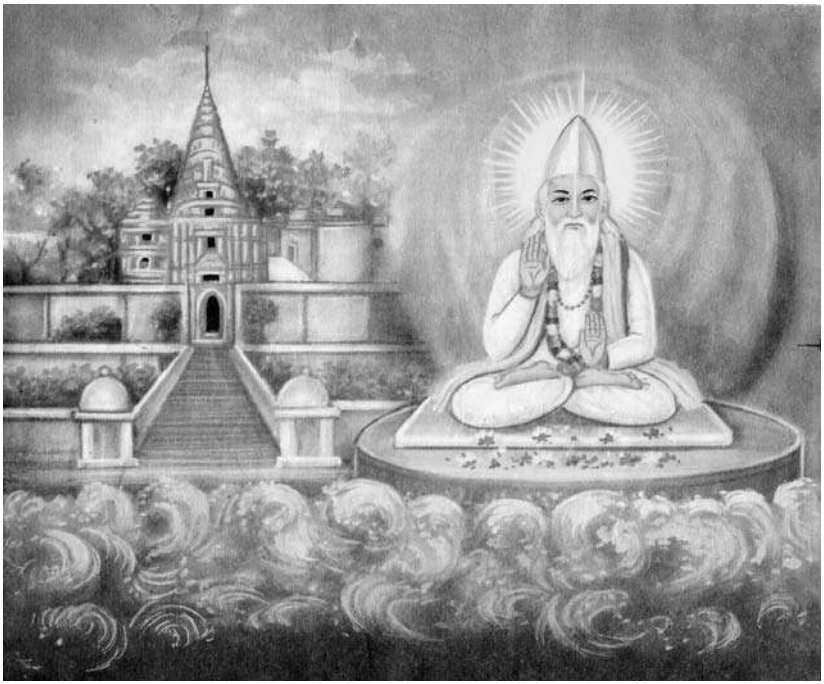

(द्वारिका कोठे का काल्पनिक चित्र)

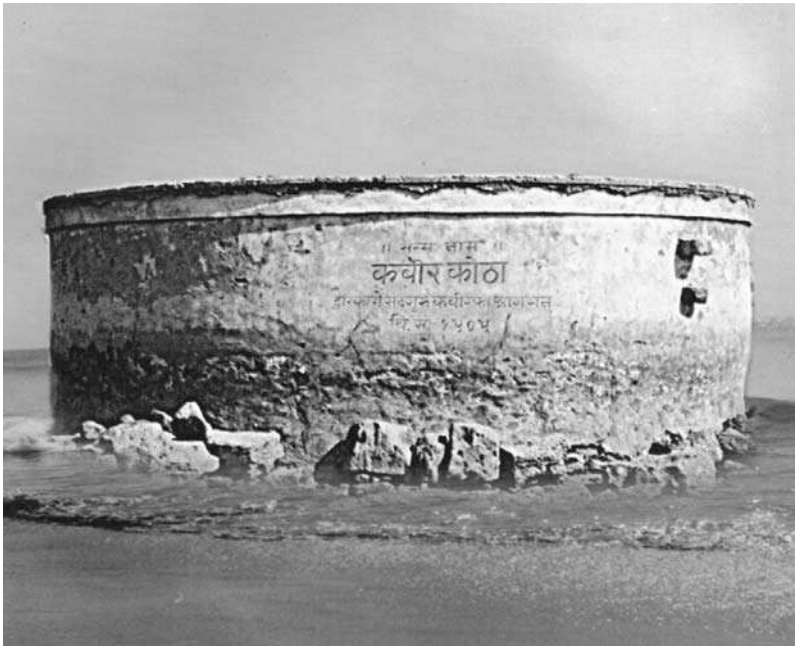

(द्वारिका कोठे का वास्तविक चित्र)

''गोरखनाथ से गोष्ठी''

एक समय गोरख नाथ (सिद्ध महात्मा) काशी (बनारस) में स्वामी रामानन्द जी (जो साहेब कबीर के गुरु जी थे) से शास्त्रार्थ करने के लिए (ज्ञान गोष्ठी के लिए) आए। जब ज्ञान गोष्ठी के लिए एकत्रित हुए तब कबीर साहेब भी अपने पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी के साथ पहुँचे थे। एक उच्च आसन पर रामानन्द जी बैठे उनके चरणों में बालक रूप में कबीर साहेब (पूर्ण परमात्मा) बैठे थे। गोरख नाथ जी भी एक उच्च आसन पर बैठे थे तथा अपना त्रिशूल अपने आसन के पास ही जमीन में गाड़ रखा था। गोरख नाथ जी ने कहा कि रामानन्द मेरे से चर्चा करो। उसी समय बालक रूप (पूर्ण ब्रह्म) कबीर जी ने कहा :- नाथ जी पहले मेरे से चर्चा करें। पीछे मेरे गुरुदेव जी से बात करना।

योगी गोरखनाथ प्रतापी, तासो तेज पथ्वी कांपी।
काशी नगर में सो पग परहीं, रामानन्द से चर्चा करहीं।
चर्चा में गोरख जय पावै, कंठी तोरै तिलक छुड़ावै।
सत्य कबीर शिष्य जो भयऊ, यह वतांत सो सुनि लयऊ।
गोरखनाथ के डर के मारे, वैरागी नहीं भेष सवारे।
तब कबीर आज्ञा अनुसारा, वैष्णव सकल स्वरूप संवारा।

सो सुधि गोरखनाथ जो पायौ, काशी नगर शीघ्र चल आयौ।
रामानन्द को खबर पठाई, चर्चा करो मेरे संग आई।
रामानन्द की पहली पौरी, सत्य कबीर बैठे तीस ठौरी।
कह कबीर सुन गोरखनाथा, चर्चा करो हमारे साथा।
प्रथम चर्चा करो संग मेरे, पीछे मेरे गुरु को टेरे।
बालक रूप कबीर निहारी, तब गोरख ताहि वचन उचारी।

इस पर गोरख नाथ जी ने कहा तू बालक कबीर जी कब से योगी बन गया। कल जन्मा अर्थात् छोटी आयु का बच्चा और चर्चा मेरे (गोरख नाथ के) साथ। तेरी क्या आयु है? और कब वैरागी (संत) बन गए?

कबके भए वैरागी कबीर जी, कबसे भए वैरागी।
नाथ जी जब से भए वैरागी मेरी, आदि अंत सुधि लागी।।
धूंधूकार आदि को मेला, नहीं गुरु नहीं था चेला।
जब का तो हम योग उपासा, तब का फिरा अकेला।।
धरती नहीं जद की टोपी दीना, ब्रह्मा नहीं जद का टीका।
शिव शंकर से योगी, न थे जद का झोली शिका।।
द्वापर को हम करी फावड़ी, त्रेता को हम दंडा।
सतयुग मेरी फिरी दुहाई, कलियुग फिरौ नो खण्डा।।
गुरु के वचन साधु की संगत, अजर अमर घर पाया।
कहैं कबीर सुनों हो गोरख, मैं सब को तत्व लखाया।।

साहेब कबीर जी ने गोरख नाथ जी को बताते हैं कि मैं कब से वैरागी बना। साहेब कबीर ने उस समय वैष्णों संतों जैसा वेष बना रखा था। जैसा श्री रामानन्द जी ने बाणा (वेष) बना रखा था। जैसे मस्तिक में चन्दन का टीका, टोपी व झोली सिक्का एक फावड़ी (जो भजन करने के लिए लकड़ी की अंग्रेजी के अक्षर ''T'' के आकार की होती है) तथा एक डण्डा (लकड़ी का लट्ठा) साथ लिए हुए थे। ऊपर के शब्द में साहेब कहते हैं कि जब कोई संष्टि (काल संष्टि) नहीं थी तथा न सतलोक संष्टि थी तब मैं (कबीर) अनामी रूप में था और कोई नहीं था। चूंकि साहेब कबीर ने ही सतलोक संष्टि शब्द से रची तथा फिर काल (ज्योति निरंजन-ब्रह्म) की संष्टि भी सतपुरुष ने {ज्योति निरंजन (ब्रह्म) ने तप करके राज्य मांगा तब} रची। जब मैं अकेला रहता था जब धरती (पथ्वी) भी नहीं थी तब से मेरी टोपी जानो। ब्रह्मा जो गोरखनाथ तथा उनके गुरु मच्छन्दर नाथ आदि सर्व प्राणियों के शरीर बनाने वाला पैदा भी नहीं हुआ था। तब से मैंने टीका लगा रखा है अर्थात् मैं (कबीर) तब से सतपुरुष आकार रूप मैं ही हूँ।

सतयुग-त्रेतायुग-द्वापर तथा कलियुग ये चार युग तो मेरे सामने असंखों जा लिए। कबीर साहेब बताते हैं कि हमने सतगुरु वचन में रह कर अजर-अमर

घर (सतलोक) पाया। इसलिए सर्व प्राणियों को तत्व (वास्तविक ज्ञान) बताया है कि पूर्ण गुरु से उपदेश ले कर आजीवन गुरु वचन में चलते हुए पूर्ण परमात्मा का ध्यान सुमरण करके उसी अजर-अमर सतलोक में जाकर जन्म-मरण रूपी अति दुःखमयी संकट से बच सकते हो।

इस बात को सुन कर गोरखनाथ जी ने पूछा हैं कि आपकी आयु तो बहुत छोटी है अर्थात् आप लगते तो हो बालक से।

जो बूझे सोई बावरा, क्या है उम्र हमारी। असंख युग प्रलय गई, तब का ब्रह्मचारी।।टेक।।
कोटि निरंजन हो गए, परलोक सिधारी। हम तो सदा महबूब हैं, स्वयं ब्रह्मचारी।।
अरबों तो ब्रह्मा गए, उनन्चास कोटि कन्हैया। सात कोटि शम्भू गए, मोर एक नहीं पलैया।।
कोटिन नारद हो गए, मुहम्मद से चारी। देवतन की गिनती नहीं है, क्या संष्टि विचारी।।
नहीं बुढ़ा नहीं बालक, नाहीं कोई भाट भिखारी। कहैं कबीर सुन हो गोरख, यह है उम्र हमारी।।

श्री गोरखनाथ सिद्ध को सतगुरु कबीर साहेब अपनी आयु का विवरण देते हैं। असंख युग प्रलय में गए। तब का मैं वर्तमान हूँ अर्थात् अमर हूँ। करोड़ों ब्रह्म (क्षर-काल) भगवान मृत्यु को प्राप्त होकर पुनर्जन्म प्राप्त कर चुके हैं।

एक ब्रह्मा की आयु 100 (सौ) वर्ष की होती है।

ब्रह्मा का एक दिन = 1000 (एक हजार) चतुर्युग तथा इतनी ही रात्री।

दिन-रात = 2000 (दो हजार) चतुर्युग।

{नोट - ब्रह्मा जी के एक दिन में 14 इन्द्रों का शासन काल समाप्त हो जाता है। एक इन्द्र का शासन काल बहत्तर चतुर्युग का होता है। इसलिए वास्तव में ब्रह्मा जी का एक दिन 72 गुणा 14 = 1008 चतुर्युग का होता है तथा इतनी ही रात्रि, परन्तु इस को एक हजार चतुर्युग ही मान कर चलते हैं।}

महीना= 30 गुणा 2000 = 60000 (साठ हजार) चतुर्युग।

वर्ष = 12 गुणा 60000 = 720000 (सात लाख बीस हजार) चतुर्युग का।

ब्रह्मा जी की आयु :-

720000 गुणा 100= 72000000 (सात करोड़ बीस लाख) चतुर्युग।

ब्रह्मा से सात गुणा विष्णु जी की आयु :-

72000000 गुणा 7 = 504000000 (पचास करोड़ चालीस लाख) चतुर्युग।

विष्णु से सात गुणा शिव जी की आयु :- 504000000 गुणा 7 = 3528000000 (तीन अरब बावन करोड़ अस्सी लाख) चतुर्युग की हुई।

ऐसी आयु वाले सत्तर हजार शिव भी मर जाते हैं तब एक ज्योति निरंजन (ब्रह्म) मरता है। (इसीलिए काल ब्रह्म श्री कृष्ण में प्रवेश करके गीता ज्ञान देते समय गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5 में तथा अध्याय 10 श्लोक 2 में कहता है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता मैं जानता हूँ।) पूर्ण परमात्मा के द्वारा पूर्व निर्धारित किए समय पर एक शंख

(Alarm) बजता है उस समय एक ब्रह्मण्ड में महाप्रलय होती है। यह समय (सत्तर हजार शिव की मत्यु अर्थात् एक सदाशिव/ज्योति निरंजन की मत्यु) एक युग होता है परब्रह्म का। परब्रह्म का एक दिन एक हजार युग का होता है इतनी ही रात्री होती है तीस दिन रात का एक महिना तथा बारह महिनों का परब्रह्म का एक वर्ष हुआ तथा सौ वर्ष की परब्रह्म की आयु है। परब्रह्म की भी मत्यु होती है। ब्रह्म अर्थात् ज्योति निरंजन की मत्यु परब्रह्म के एक दिन के पश्चात् होती है इस प्रकार कबीर परमात्मा ने कहा है कि करोड़ों ज्योति निरंजन मर लिए मेरी एक पल भी आयु कम नहीं हुई है अर्थात् अमर पुरुष हूं। कबीर साहेब कहते हैं कि हम अमर हैं। अन्य भगवान जिसका तुम आश्रय ले कर भक्ति कर रहे हो वे नाशवान हैं। फिर आप अमर कैसे हो सकते हो? अरबों तो ब्रह्मा गए, 49 कोटि कन्हैया। सात कोटि शंभु गए, मोर एक नहीं पलैया।

यहां देखें अमर पुरुष कौन है? 343 करोड़ त्रिलोकिय ब्रह्मा मर जाते हैं, 49 करोड़ त्रिलोकिय विष्णु तथा 7 करोड़ त्रिलोकिय शिव मर जाते हैं तब एक ज्योति निरंजन (काल-ब्रह्म) मरता है। जिसे गीता जी के अध्याय 15 के श्लोक 16 में क्षर (नाशवान) भगवान कहा है तथा इसी श्लोक में जिसे अक्षर (अविनाशी) कहा है वह परब्रह्म है जिसे अक्षर पुरुष भी कहते हैं। अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म भी नष्ट होता है। यह काल भी करोड़ों समाप्त हो जाएंगे। तब सर्व अण्ड-ब्रह्मण्ड नाश में आवेंगे। केवल सतलोक बचेगा। फिर अचिंत सत्यपुरूष के आदेश से सष्टि रचेगा। यही क्षर पुरुष तथा अक्षर पुरुष की सष्टि फिर शुरु हो जाएगी।

फिर जो गीता जी के अध्याय 15 के श्लोक 17 में कहा है कि वह उत्तम पुरुष (पूर्ण परमात्मा) तो कोई और ही है जिसे अविनाशी परमात्मा नाम से जाना जाता है। वह पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर सतपुरुष स्वयं कबीर साहेब है। केवल सतपुरुष अजर-अमर परमात्मा है तथा उसी का सतलोक (सतधाम) अमर है जिसे अमर लोक भी कहते हैं। वहाँ की भक्ति करके भक्त आत्मा पूर्ण मुक्त होती है। जिसका कभी मरण नहीं होता। कबीर साहेब ने कहा कि यह उपलब्धि सोहं शब्द के जाप से प्राप्त होती है जो उसके मर्म भेदी गुरु से मिले तथा उसके बाद सारनाम मिले। फिर सतलोक में वास तथा सतपुरुष प्राप्ति होती है। करोंड़ों नारद तथा मुहम्मद जैसी पाक (पवित्र) आत्मा भी आकर (जन्म कर) जा (मर) चुके हैं, देवताओं की तो गिनती नहीं। फिर आम मानुष शरीर धारी प्राणियों तथा जीवों का तो हिसाब क्या लगाया जा सकता है? मैं (कबीर साहेब) न बूढ़ा न बालक, मैं तो जवान रूप में रहता हूँ जो ईश्वरीय शक्ति का प्रतीक है। यह तो मैं लीलामई शरीर में आपके समक्ष हूँ। कहै कबीर सुनों जी गोरख, मेरी आयु (उम्र) यह है जो आपको ऊपर बताई है।

यह सुन कर श्री गोरखनाथ जी जमीन में गड़े लगभग 7 फूट ऊँचें त्रिशूल के ऊपर के भाग पर अपनी सिद्धि शक्ति से उड़ कर बैठ गए और कहा कि यदि आप इतने महान हो तो मेरे बराबर में (जमीन से लगभग सात फूट) ऊँचा उठ कर बातें करो। यह सुन कर कबीर साहेब बोले नाथ जी! ज्ञान गोष्ठी के लिए आए हैं न कि नाटक बाजी करने के लिए। आप नीचे आएं तथा सर्व भक्त समाज के सामने यथार्थ भक्ति संदेश दें।

श्री गोरखनाथ जी ने कहा कि आपके पास कोई शक्ति नहीं है। आप तथा आपके गुरुजी दुनियाँ को गुमराह कर रहे हो। आज तुम्हारी पोल खुलेगी। ऐसे हो तो आओ बराबर। तब कबीर साहेब के बार-2 प्रार्थना करने पर भी नाथ जी बाज नहीं आए तो साहेब कबीर ने अपनी पराशक्ति (पूर्ण सिद्धि) का प्रदर्शन किया। साहेब कबीर की जेब में एक कच्चे धागे की रील (कुकड़ी) थी जिसमें लगभग 150 (एक सौ पचास) फुट लम्बा धागा लिपटा (सिमटा) हुआ था, को निकाला और धागे का एक सिरा (आखिरी छौर) पकड़ा और आकाश में फैंक दिया। वह सारा धागा उस बंडल (कुकड़ी) से उधड़ कर सीधा खड़ा हो गया। साहेब कबीर जमीन से आकाश में उड़े तथा लगभग 150 (एक सौ पचास) फुट सीधे खड़े धागे के ऊपर वाले सिरे (छौर) पर सुखासन (स्वाभाविक बैठते हैं) पर बैठकर कहा कि आओ नाथ जी! बराबर में बैठकर चर्चा करें। गोरखनाथ जी ने ऊपर उड़ने की कोशिश की लेकिन उल्टा जमीन पर टिक गए।

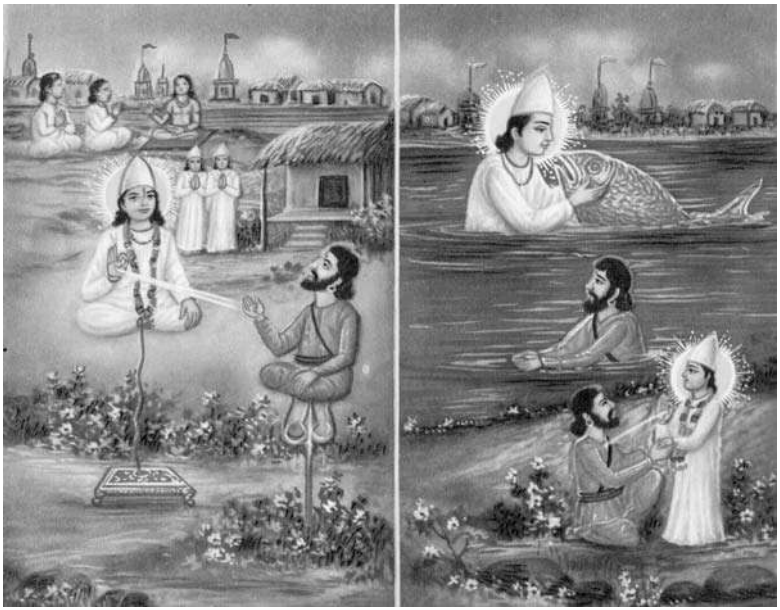

(गोरखनाथ को शरण में लेने के लिए शक्ति प्रदर्शन)

पूर्ण परमात्मा (पूर्णब्रह्म) के सामने सिद्धियाँ निष्क्रिय हो जाती हैं। जब गोरख नाथ जी की कोई कोशिश सफल नहीं हुई, तब जान गए कि यह कोई मामूली भक्त या संत नहीं है। जरूर कोई अवतार (ब्रह्मा, विष्णु, महेश में से) है। तब साहेब कबीर से कहा कि हे परम (उत्तम) पुरुष! कृप्या नीचे आएँ और अपने दास पर दया करके अपना परिचय दें। आप कौन शक्ति हो? किस लोक से आना हुआ है? तब कबीर साहेब नीचे आए और कहा कि :-

अवधू अबिगत से चल आया, कोई मेरा भेद मर्म नहीं पाया।।टेक।।
ना मेरा जन्म न गर्भ बसेरा, बालक होय दिखलाया।
काशी नगर जल कमल पर डेरा, तहाँ जुलाहे ने पाया।।
माता–पिता मेरे कछु नहीं, ना मेरे घर दासी।
जुलहा को सुत आन कहाया, जगत करे मेरी हांसी।।
पांच तत्त्व का धड़ नहीं मेरा, जानूं ज्ञान अपारा।
सत्य स्वरूपी नाम साहिब का, सो है नाम हमारा।।
अधर दीप (सतलोक) गगन गुफा में, तहां निज वस्तु सारा।
ज्योति स्वरूपी अलख निरंजन (ब्रह्म) भी, धरता ध्यान हमारा।।
हाड चाम लोहू नहीं मोरे, जाने सत्यनाम उपासी।
तारन तरन अभै पद दाता, मैं हूँ कबीर अविनाशी।।

साहेब कबीर ने कहा कि हे अवधूत गोरखनाथ जी मैं तो अविगत स्थान (जिसकी गति या भेद कोई नहीं जानता उस सतलोक) से आया हूँ। मैं तो स्वयं शक्ति से बालक रूप बना कर काशी (बनारस) में एक लहर तारा तालाब में कमल के फूल पर प्रकट हुआ हूँ। वहाँ पर नीरू-नीमा नामक जुलाहा दम्पति को मिला जो मुझे अपने घर ले आया। मेरे माता-पिता नहीं हैं। न ही कोई घर दासी (पत्नी) है और जो उस परमात्मा का वास्तविक नाम है, वही कबीर नाम मेरा है। आपका ज्योति स्वरूप जिसे आप अलख निरंजन (निराकार भगवान) कहते हो वह ब्रह्म भी मेरा ही जाप करता है। मैं सतनाम का जाप करने वाले साधक को प्राप्त होता हूँ अर्थात् वही मेरे विषय में सही जानता है। हाड-चाम तथा लहु (खून) से बना मेरा शरीर नहीं है। कबीर साहेब सतनाम की महिमा बताते हुए कहते हैं कि मेरे मूल स्थान (सतलोक) में सतनाम के आधार से जाया जाता है। अन्य साधकों को संकेत करते हुए प्रभु कबीर (कविर्देव) जी कह रहे हैं कि मैं उसी का जाप करता रहता हूँ। इसी मन्त्र (सतनाम) से सतलोक जाने योग्य होकर फिर सारनाम प्राप्ति करके जन्म-मरण से पूर्ण छुटकारा मिलता है। यह तारन तरन पद (पूजा विधि) मैंने (कबीर साहेब अविनाशी भगवान ने) आपको बताई है। इसे कोई नहीं जानता। गोरख नाथ जी को बताया कि हे पुण्य आत्मा! आप काल क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) के जाल में ही हो। न जाने कितनी बार

आपके जन्म हो चुके हैं। कभी चौरासी लाख जूनियों में कष्ट पाया। आपकी चारों युगों की भक्ति को काल अब (कलियुग में) नष्ट कर देता यदि आप मेरी शरण में नहीं आते।

यह काल इक्कीस ब्रह्मण्ड का मालिक है। इसको शाप लगा है कि एक लाख मानव शरीर धारी (देव व ऋषि भी) जीव प्रतिदिन खायेगा तथा सवा लाख उत्पन्न करेगा (मनुष्य शरीर वाले)। इस प्रकार प्रतिदिन पच्चीस हजार बढ़ रहे हैं। उनको ठिकाने लगाए रखने के लिए तथा कर्म भुगताने के लिए अपना कानून बना कर चौरासी लाख जूनियाँ बना रखी हैं। इनमें जीव बिल्कुल अनभिज्ञ रहता है तथा इन्हीं फालतू जीवों से ही शरीर बनाता है जैसे खून में जीवाणु, वायु में जीवाणु आदि-2। इसकी पत्नी आदि माया (प्रकृति देवी) अष्टंगी (आठ भुजाओं वाली) है। इसी से काल (ब्रह्म-अलख निरंजन) ने (पत्नी-पति के संयोग से) तीन पुत्र ब्रह्मा-विष्णु-शिव उत्पन्न किए। इन तीनों को अपने पक्के सहयोगी बना कर ब्रह्मा को शरीर बनाने का, विष्णु को पालन-पोषण का और शिव को संहार करने का कार्य दे रखा है। इनसे प्रथम तप करवाता है फिर सिद्धियाँ भर देता है जिसके आधार पर इनसे अपना उल्लू सीधा करता है और अंत में इन्हें (जब ये शक्ति रहित हो जाते हैं) भी मार कर नए तीन पुत्र पैदा करता है। ऐसे अपने काल लोक को चला रहा है। इन सब से ऊपर पूर्ण परमात्मा है। उसका ही अवतार मुझ (कबीर) को जान।

गोरख नाथ के मन में विश्वास हो गया कि कोई शक्ति है जो कुल का मालिक है। फिर गोरख नाथ ने कहा कि मेरी एक शक्ति और देखो। यह कह कर गंगा की ओर चल पड़ा। सर्व दर्शकों की भीड़ भी साथ ही चली। लगभग 500 फुट पर गंगा नदी थी। उसमें जा कर छलांग लगाते हुए कहा कि मुझे ढूंढ दो। फिर मैं (गोरखनाथ) आप का शिष्य बन जाऊँगा। गोरखनाथ मछली बन गए। साहेब कबीर ने उसी मछली को पानी से बाहर निकाल कर सबके सामने गोरखनाथ बना दिया। तब गोरखनाथ जी ने साहेब कबीर को पूर्ण परमात्मा स्वीकार किया और शिष्य बने। साहेब कबीर से सतनाम व सारनाम ले कर भक्ति की। तब काल जाल से मुक्त हुए।

गीता जी के अध्याय 14 के श्लोक 26, 27 का भाव है कि साधक अव्याभिचारिणी भक्ति अर्थात् पूर्ण आश्रित मुझ (काल-ब्रह्म) पर हो कर (अन्य देवी-देवताओं तथा माता, ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि की पूजा त्याग कर) भक्ति एक मेरे मन्त्र ''ऊँ'' का जाप करता है, वह उपासक उस परमात्मा को पाने योग्य हो जाता है और आगे की साधना करके उस परमानन्द के परम सुख को भी मेरे माध्यम से प्राप्त करता है।

जैसे कोई विद्यार्थी मैट्रिक, बी.ए., एम.ए. करके किसी कोर्स में प्रवेश ले

कर सर्विस प्राप्त करके रोजी प्राप्त करके सुखी होता है तो उसके लिए वह मैट्रिक, बी.ए. या एम.ए. जिसके बाद कोर्स (ट्रेनिंग) में प्रवेश किया। उसको प्रतिष्ठा (अवस्था) अर्थात् सहयोगी हुआ। सर्विस प्रदान कर्त्ता नहीं हुआ। ठीक इसी प्रकार काल भगवान (ब्रह्म) कह रहा है कि उस अविनाशी परमात्मा के अमरत्व का और नित्य रहने वाले स्वभाव का तथा धर्म का और अखण्ड स्थाई रहने के आनन्द का सहयोगी मैं (ब्रह्म) हूँ। इसी का प्रमाण गीता जी के अध्याय 18 के श्लोक 66 में कहा है कि सर्व अन्य साधनाओं को मुझमें त्याग कर एक (पूर्णब्रह्म) की शरण को प्राप्त कर तब तेरे सर्व पाप माफ करवा दूंगा। जैसे जिन भक्त आत्माओं ने काल (ब्रह्म) के ऊँ मन्त्र का जाप अनन्य मन से किया। उनको कबीर भगवान ने आगे की उस पूर्ण परमात्मा की भक्ति प्रदान करके काल लोक से पार किया। जैसे नामदेव नामक परम भक्त केवल एक नाम ऊँ का जाप करते थे। उससे उनको बहुत सिद्धियाँ प्राप्त हो गई थी फिर भी मुक्ति नहीं थी। फिर कबीर साहेब श्री नामदेव जी को मिले तथा सतलोक व सतपुरुष का ज्ञान कराया। सोहं मन्त्र दिया जो परब्रह्म का जाप है। फिर सार शब्द दिया जो पूर्णब्रह्म का जाप है। जब नामदेव जी मुक्त हुए।

ऐसे ही गोरखनाथ जी ने भी एक मन्त्र अलख निरंजन का जाप तथा चांचरी मुद्रा की साधना की। तब साहेब कबीर ने उन्हें ऊँ तथा सोहं मन्त्र दिया। परंतु सारनाम-सारशब्द नहीं दिया। किसी अन्य जन्म में जब यही आत्मा जन्मेगी, यदि सत्य ज्ञान स्वीकार करेगा तो इसको सम्पूर्ण दीक्षा दी जाएगी।

''काशी नगर में भोजन-भण्डारा (लंगर) देना''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 793-824 :-**

सिमटि भेष इकट्ठा हुवा, काजी पंडित मांहि। गरीबदास चिठ्ठा फिर्‌या, जंबूदीप सब ठांहि।।793।।
मसलति करी मिलाप से, जीवन जन्म कछु नांहि। गरीबदास मेला सही, भेष समेटे तांहि।।794।।
सेतबंध रामेश्वरं, द्वारका गढ़ गिरनार। गरीबदास मुलतान मग, आये भेष अपार।।795।।
हरिद्वार बदरी विनोद, गंगा और किदार। गरीबदास पूरब सजे, ना कछु किया बिचार।।796।।
अठारह लाख दफतर चढ़े अस्तल बंध मुकाम। गरीबदास अनाथ जीव, और केते उस धाम।।797।।
बजैं नगारे नौबतां, तुरही और रनसींग। गरीबदास झूलन लगे, उरधमुखी वौह पींघ।।798।।
एक आक धतूरा चबत है, एक खावै खड़ घास। गरीबदास एक मन मुखी, एक जीमें पंच गिरास।।799।।
एक विरक्त कंगाल हैं, एक ताजे तन देह। गरीबदास मुहमूंदियां, एक तन लावै खेह।।800।।
एक पंच अग्नि तपत है, एक झरनैं बैठंत। गरीबदास एक उरधमुख, नाना विधि के पंथ।।801।।
एक नगन कोपीनियां, इंद्री खैंचि बधाव। गरीबदास ऐसे बहुत, गर्दन पर धरि पांव।।802।।
एक कपाली करत हैं ऊपर चरण अकाश। गरीबदास एक जल सिज्या, नाना भांति उपास।।803।।
एक बैठे एक ठाडेसरी, एक मौनी महमंत। गरीबदास बड़ बड़ करैं, ऐसे बहुत अनंत।।804।।

एक जिकरी जंजालिया, एक ज्ञानी धुंनि वेद। गरीबदास ऐसे बहुत, वृक्ष काट घर खेद।।805।।
एक ऊंचे सुर गावहीं, राग बंध रस रीत। गरीबदास ऐसे बहुत, आदर बिना अतीत।।806।।
एक भरड़े सिरड़े फिरै, एक ज्ञानी घनसार। गरीबदास उस पुरी में, नहीं भेष सुमार।।807।।
एक कमरि जंजीर कस, लोहे की कोपीन। गरीबदास दिन रैंन सुध, पड़े रहैं बेदीन।।808।।
एक मूंजौं के आड़बंधि, केलौं के लंगोट। गरीबदास लंबी जटा, एक मुंडावैं घोट।।809।।
एक रंगीले नाच हीं, करैं अचार विचार। गरीबदास एक नगन हैं, एको खर का भार।।810।।
एक धूंनी तापैं दिहुँ सिंझ्या देह बुझाय। गरीबदास ऐसे बहुत, अन्न जल कछु न खाय।।811।।
एक मूंधे सूधे पड़े, आसन मोर अधार। गरीबदास ऐसे बहुत, करते हैं जलधार।।812।।
एक पलक मूंदे नहीं, एक मूंदे रहे हमेश। गरीबदास न्यौली कर्म, एक त्राटिक ध्यान हमेश।।813।।
एक बजर आसन करै, एक पदम प्रवीन। गरीबदास एक कनफट्टा, एक बजावैं बीन।।814।।
संख तूर झालर बजैं, रणसींगे घनघोर। गरीबदास काशीपुरी, दल आये बड़ जोर।।815।।
एक मकरी फिकरी बहुत, गलरी गाल बजंत। गरीबदास तिन को गिनें, ऐसे बहुतक पंथ।।816।।
एक हर हर हक्का करैं, एक मदारी सेख। गरीबदास गुदरी लगी, आये भेष अलेख।।817।।
एक चढ़े घोड़्यौं फिरै, एक लड़ावैं फील। गरीबदास कामी बहुत, एक राखत हैं शील।।818।।
एक तन को धोवै नहीं, एक त्रिकाली न्हांहि। गरीबदास एक सुचितं, एक ऊपर को बांहि।।819।।
एक नखी निरवाणीयां, एक खाखी हैं खुश। गरीबदास पद ना लख्या, सब कूटत हैं तुश।।820।।
तुश कूटैं और भुस भरैं, आये भेष अटंब। गरीबदास नहीं बंदगी, तपी बहुत आरंभ।।821।।
एक ठोडी कंठ लगाव हीं, आठ बखत नक ध्यान। गरीबदास ऐसे बहुत, कथा छंद सुर ज्ञान।।822।।
एक सौदागर भेष में, कस्तूरी व्यौपार। गरीबदास केसर कनी, सिमट्या भेष अपार।।823।।
एक तिलक धोती करै, दर्पन ध्यान ज्ञान। गरीबदास एक अग्नि में, होमत है अन्नपान।।824।।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 793-824 का सरलार्थ :- कबीर परमेश्वर जी को काशी शहर से भगाने के उद्देश्य से हिन्दू तथा मुसलमानों के धर्मगुरूओं तथा धर्म के प्रचारकों ने षड़यंत्र के तहत झूठी चिट्ठी में निमंत्रण भेजा कि कबीर जुलाहा तीन दिन का भोजन-भंडारा (लंगर) करेगा। प्रत्येक बार भोजन खाने के पश्चात् दस ग्राम स्वर्ण की मोहर (सोने का सिक्का) तथा एक दोहर (खद्दर की दोहरी सिली चद्दर जो कंबल के स्थान पर सर्दियों में ओढ़ी जाती थी) दक्षिणा में देगा। भोजन में सात प्रकार की मिठाई, हलवा, खीर, पूरी, मांडे, रायता, दही बड़े आदि मिलेंगे। सूखा-सीधा (एक व्यक्ति का आहार, जो भंडारे में नहीं आ सका, उसके लिए) दिया जाएगा। यह सूचना पाकर दूर-दूर के संत अपने शिष्यों समेत निश्चित तिथि को पहुँच गए। काजी तथा पंडित भी उनके बीच में पहुँच गए। चिट्ठी जंबूदीप (पुराने भारत) में सब जगह पहुँची। {ईराक, ईरान, गजनवी, तुर्की, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान, पश्चिमी पाकिस्तान आदि-आदि सब पुराना भारत देश था।} संतजन कहाँ-कहाँ से आए? सेतुबंध, रामेश्वरम्, द्वारका, गढ़ गिरनार,**

मुलतान, हरिद्वार, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगा घाट। अठारह लाख तो साधु-संत व उनके शिष्य आए थे। अन्य अनाथ (बिना बुलाए) अनेकों व्यक्ति भोजन खाने व दक्षिणा लेने आए थे। जो साधु जिस पंथ से संबंध रखते थे, उसी परंपरागत वेशभूषा को पहने थे ताकि पहचान रहे। अपने पंथ की प्रचलित साधना कर रहे थे। कोई (बाजे) वाद्य यंत्र बजाकर नाच-नाचकर परमात्मा की स्तूति कर रहे थे।

❖ कोई आक तथा धतूरे को खा रहे थे जो बहुत कड़वा तथा नशीला होता है। कोई खड़घास खा रहे थे। कोई उल्टा लटककर वृक्ष के नीचे साधना कर रहा था। कोई सिर नीचे पैर ऊपर को करके साधना यानि तप कर रहा था। कोई केवल पाँच ग्रास भोजन खाता था। उसका यह नियम था। कोई (मुँहमुंदिया) मुख पर पट्टी बांधकर रखने वाले थे। कोई शरीर के ऊपर (खेह) राख लगाए हुए थे। कोई पाँच धूने लगाकर तपस्या कर रहा था। कोई तिपाई के ऊपर मटके को रखकर उसमें सुराख करके पानी डालकर नीचे बैठकर जल धारा यानि झरना साधना कर रहे थे। कई नंगे थे। कई केवल कोपीन बांधे हुए थे। कोई अपनी गर्दन के ऊपर दोनों पैर रखकर आसन कर रहे थे। कोई (ठाडेसरी) खड़े होकर तपस्या कर रहे थे। किसी ने मौन धारण कर रखा था। जो बड़बड़ कर थे, वे भी अनेकों आए थे। कुछ ऊँचे स्वर से भगवान के शब्द गा रहे थे। अनेकों ऐसे थे जिनके साथ कोई चेला नहीं था। उनका कोई सम्मान नहीं कर रहा था। कोई सिरड़े-भिरड़े (बिना स्नान किए मैले-कुचैले वस्त्र पहने) रेत-मिट्टी में पड़े थे। संत गरीबदास जी दिव्य दृष्टि से देखकर कह रहे हैं कि काशी पुरी में किलकारी पड़ रही थी। कोई सिर के ऊपर बड़े-बड़े बालों की जटा रखे हुए थे। कोई-कोई मूंड-मुंडाए हुए थे। कोई अपने पैरों में लोहे की जंजीर बांधे हुए था। कोई लोहे की कोपीन (पर्दे पर लोहे की पतली पत्ती लगाए हुए था) बांधे हुए था। कोई केले के पत्तों का लंगोट बांधे हुए था। कोई त्राटक ध्यान लगा रहा था। कोई आँख खोल ही नहीं रहा था। कोई कान चिराए हुए था। इस प्रकार के अनेकों पंथों के शास्त्र विरूद्ध साधना करने वाले परमात्मा को चाहने वाले (भेष) पंथ काशी में परमेश्वर कबीर जी द्वारा दिए गए भंडारे के निमंत्रण से इकट्ठे हुए थे। अठारह लाख तो साधु-शिष्य वेश वाले थे। अन्य सामान्य नागरिक भी अनेकों आए थे।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 825-837 :-**

भेष देख रैदास जी, गये कबीरा पास। गरीबदास रैदास कहै, छूट्या काशी वास।।825।।
विहँसे बदन कबीर तब, सुन रैदास बिचार। गरीबदास जुलहा कहै, लाय धनी से तार।।826।।
लाय तार ल्यौ लीन होय, रूप विहंगम मांहि। गरीबदास जुलहा गया, अगम पुरी निज ठांहि।।827।।

जहां बोडी संख असंख सुर, बनजारे और बैल। गरीबदास अविगत पुरी, हुई काशी कूँ सैल।।828।।
जरद सेत और हरे नघ, बोडी भरी अनंत। गरीबदास ऐसे कह्या, ल्यौह कबीर भगवंत।।829।।
औह खाकी खंजूस पुर, अन्नजल ना अधिकार। गरीबदास ऐसे कह्या, सुन तूं कबीर सिरजनहार।।830।।
अनंत कोटि बालद सजी, तास लई नौ लाख। दास गरीब कबीर केशव कला, एक पलक पुर झाँक।।831।।
जहां कल्प ऐसी करी, चौपड़ के बैजार। गरीबदास तंबू तने, पचरंग झंडे सार।।832।।
खुल्या भंडारा गैब का, बिन चिट्ठी बिन नाम। गरीबदास मुक्ता तुले, धन्य केशो बलि जाँव।।833।।
झीनें झनवा तुलत हैं, बूरा घृत और दाल। गरीबदास ना आटे अटक, लेवे मुक्ता माल।।834।।
कस्तूरी पान मिठाईयां, लड्डू जलेबी चंगेर। गरीबदास नुकती निरख, जैसे भण्डारी कुबेर।।835।।
बिना पकाया पकि रह्या, उतरे अर्श खमीर। गरीबदास मेला सरू, जय जय होत कबीर।।836।।
सकल संप्रदा त्रिपती, तीन दिन जौंनार। गरीबदास षट दर्शनं, सीधे गंज अपार।।837।।

केशो आया है बनजारा, काशी ल्याया माल अपारा।।टेक।।

नौलख बोडी भरी विश्म्भर, दिया कबीर भण्डारा। धरती उपर तम्बू ताने, चौपड़ के बैजारा।।1।।
कौन देश तैं बालद आई, ना कहीं बंध्या निवारा। अपरम्पार पार गति तेरी, कित उतरी जल धारा।।2।।
शाहुकार नहीं कोई जाकै, काशी नगर मंझारा। दास गरीब कल्प से उतरे, आप अलख करतारा।।3।।

❖ राग छन्द बंगाली से शब्द नं. 2 तथा 3 का कुछ अंश :-

✯ ऐसे अगम अगाध सतगुरु, ऐसे अगम अगाध।।टेक।। अजामेल गनिका से त्यारे, ऐसे पापी अधम उधारे, छाडो वाद विवाद।।1।। ध्रू प्रहलाद गये स्वर्ग मंझारा, एक कल्प न आवैं संसारा, गुरु द्रोही कूँ खादि।।2।। सदना सेऊ सम्मन त्यारे, गुरु द्रोही तो चुणि चुणि मारे, निंदत कूँ नहीं दादि।।3।। धन्ना भगत का खेत निपाया, नामदेव की छानि छिवाया, सतगुरु लीन्ह अराध।।4।। षट्दर्शन कूँ हांसी करिया, भगति हेत केशो तन धरिया, ल्याये बालदि लादि।।5।। जा कूँ कहैं कबीर जुलाहा, सब गति पूर्ण अगम अगाहा, अविगत आदि अनादि।।6।। ऐसी सतगुरु थापना थापी, कोटि अकर्मी त्यारे पापी, मेरी क्या बुनियादि।।7।। बाहर भीतरि की सब जानैं, नौका लगी जिहाज निदानै, उतरि गये कई साध।।8।। दास गरीब कबीर समर्थ नाथा, हम कूँ भेटे सतगुरु दाता। मिट गई कोटि उपाधि।।9।।2।। ✯ऐसे हैं निज नेक सतगुरु, ऐसे हैं निज नेक।।टेक।। चौरासी से बेगि उधारैं, जम किंकर की तिरास निवारैं, मेटै कर्म की रेख।।1।। सत कबीर सरबंगी सोई, आदि अनाहद अविगत जोई, कहा धरत हो भेष।।2।।

❖ राग आसावरी से शब्द नं. 61 :-

✯ षट्दर्शन चढ़ि आया। देखौ ऐसी तेरी माया।।टेक।। चिठ्ठा फिर्या समुंदरौं ताईं, भेषौ तोत बनाया। ठारह लाख चढ़े दफतर में, कलम बंधि लिख धाया।।1।। करूनामई कलप जदि कीन्हीं, दिल में ऐसी धारी। नौ लख बोडी भरि करि आई, केशो नाम मुरारी।।2।। चावल चूंन और घिरत मिठाई, लागि गये अटनाले। छप्पन भोग सिंजोग सलौंने, भेष भये मतवाले।।3।। कबीर गोसांई रसोई दीन्हीं, आपै

केशो बनि करि आये। परानंदनी जाकै द्वारै, बहु विधि भेष छिकाये।।4।। हिंदू मुसलमान कहत हैं, ब्राह्मण और बैरागी। सन्यासी काशी के गांवै, नाचै दुनिया नागी।।5।। कोई कहै भंडारा दीन्हा, कोई कोई कहै महौछा। बड़े बड़ाई देत हैं भाई, गारी काढै ओछा।।6।। अमर शरीर कबीर पुरुष का, जल रूप जगदीशं। गरीबदास सतलोक है असतल, साहिब बिसवे बीसं।।7।।61।।

❖ **राग नट से शब्द नं. 4 का कुछ अंश :-**

नामदेव ने निरगुन चीन्ह्या, देवल बेग फिरी रे। अजामेल से पापी होते, गनिका संगि उधरी रे।।4।। नाम कबीरा जाति जुलाहा, षट्दल हांसि करी रे। हे हरि हे हरि होती आई, बालदि आनि ढुरी रे।।5।।

❖ **राग निहपाल से शब्द नं. 1 :-**

✯ जालिम जुलहे जारति लाई, ऐसा नाद बजाया है।।टेक।। काजी पंडित पकरि पछारे, तिन कूँ जवाब न आया है। षट्दर्शन सब खारज कीन्हे, दोन्यौं दीन चिताया है।।1।। सुर नर मुनिजन भेद ना पावैं, दोहूं का पीर कहाया है। शेष महेश गणेशर थाके, जिन कूँ पार न पाया है।।2।। नौ औतार हेरि सब हारे, जुलहा नहीं हेराया है। चरचा आंनि परी ब्रह्मा सैं, चार्यों बेद हराया है।।3।। मगहर देश कूँ किया पयांना, दोन्यौं दीन डुराया है। घोर कफन हम काठी दीजो, चद्दरि फूल बिछाया है।।4।। गैबी मंजिल मारफति औंढ़ी, चादरि बीच न पाया है। काशी वासी है अविनाशी, नाद बिंद नहीं आया है।।5।। ना गाड्या ना जार्या जुलहा, शब्द अतीत समाया है। च्यार दाग से रहित सतगुरु, सो हमरै मन भाया है।।6।। मुक्ति लोक के मिले प्रगनें, अटलि पटा लिखवाया है। फिर तागीर करै ना कोई, धुर का चाकर लाया है।।7।। तखत हिजूरी चाकर लागे, सति का दाग दगाया है। सतलोक में सेज हमारी, अविगत नगर बसाया है।।8।। चंपा नूर तूर बहु भांती, आंनि पदम झलकाया है। धन्य बंदी छोड़ कबीर गोसांई, दास गरीब बधाया है।।9।। 1।।

❖ **राग होरी से शब्द नं. 10 का कुछ अंश :-**

केशो नाम धर कबीरा आए, बालदि आनि ढही रे।
दास गरीब कबीर पुरुष कै, उतरी सौंज नई रे।।6।।

❖ **अरील से शब्द नं. 22-25 :-**

एक चदरी एक गुदरी सतगुरु पास रे। हम नहीं निकसैं बाहर होय है हांस रे।।1।। शाह सिकंदर सुन कर डेरे जात है। बोलै माय कबीर यहाँ कुछ घात है।।2।। इन कपटी कुलहीन लगाया काट रे। बन केशव बनजारा कर हैं साँट रे।।3।। जहाँ शाह सिकंदर सतगुरु गोसटि कीन्हियां। तुम कर्ता पुरुष कबीर तिबै उहाँ चीन्हियाँ।।4।। हम रेजा कपरा बुनि हैं आत्म कारनैं। ठारह लाख दल भेष पर्या है बारनैं।।5।। खांन पांन घर मांहि नहीं है मोर रे। षट् दल कीन्ही हांसि कीया बहु जोर रे।।6।। मुसकल की आसान करैगा जानि कर। एक केशव बनजारा उतर्या

आनि कर।।7।। कह शाह सिकंदर साची भाषि हैं। काशी के बैजारि द्रव्य बहु लाख हैं।।8।। गुदरी गहनें धर कर सीधा देत हैं। गौड़ी टोडी और बिलावल लेत हैं।।9।। रासा निरगुण नाम हमारे एक है। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब मुझे कोई देख है।।10।।22।। कुटल भेष कुलहीन कुबुद्धि कूर हैं। भाव भक्ति नहीं जानैं श्वाना सूर हैं।।1।। चल मेले का भाव देख फिर आवहीं। उहां केशव बनजारा भूल भूलावहीं।।2।। एक हिलकारा आंनि तंबु में ले गया। केशव और कबीर सु मेला दे गया।।3।। तीन दिवस दरवेश महात्म मालवै। गैबी फिरे नकीब कूंच कर चालवै।।4।। गंग उतरि कर गैब हुये दल भिन्न रे। कहां गये बनजारे बोडी अन्न रे।।5।। केशव और कबीर मिलत एकै भये। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब तकी रोवै दहे।।6।।23।। शाह तकी नहीं लखी निरंजन चाल रे। या परचे से आगे मांगै ज्वाल रे।।1।। शाला कर्म सुभान सरीकत देखिया। शाह तकी निरभाग न कागज छेकिया।।2।। शाह सिकंदर चरण जुहारे जान कर। तुम अविगत पुरुष कबीर बसो उर आंनि कर।।3।। तुम खालिक सरबंग सरूप कबीर है। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब पीरन सिर पीर है।।4।।24।। यौह सौदा सति भाय करो प्रभाति रे। तन मन रतन अमोल बटाऊ साथ रे।।1।। बिछरि जांहिगे मीत मता सुन लीजिये। बौहर न मेला होय कहो क्या कीजिये।।2।। शील संतोष विवेक दया के धाम हैं। ज्ञान रतन गुलजार संगाती राम हैं।।3।। धर्म धजा फरकंत फरहरैं लोक रे। ता मध्य अजपा नाम सु सौदा रोक रे।।4।। चले बनजुवा उठि हूंठ गढ़ छाडि रे। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब लगै जम डांड रे।।5।।25।।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 825-837 का सरलार्थ :- संत रविदास जी सुबह जंगल फिरने के लिए गए तो इतने सारे साधु-संतों को देखकर आश्चर्य किया तथा प्रश्न किया कि किस उपलक्ष्य में आए हो? उन्होंने बताया कि इस शहर के सेठ कबीर जुलाहा यज्ञ कर रहे हैं। हमारे पास पत्र गया था, हम आ गए हैं। तीन दिन का भोजन-भंडारा है। देखो पत्र साथ लाए हैं। रविदास जी को समझते देर नहीं लगी। परमेश्वर कबीर जी के पास घर पर गए। बताया कि हे प्रभु! अबकी बार तो काशी त्यागकर कहीं अन्य शहर में चलना होगा। सब बात बताई। परमात्मा कबीर जी संत रविदास जी की बात सुनकर चिंतित नहीं हुए। हँसे तथा बोले कि हे रविदास! बात सुन! बैठ जा भक्ति कर। परमात्मा आप संभालेगा। कबीर परमात्मा एक रूप में तो वहाँ कुटी में बैठे भजन करने का अभिनय कर रहे थे। अन्य रूप में सतलोक में गए। उनको पहले ही सतर्क कर रखा था। सतलोकवासियों ने असँख्यों बनजारे तथा बौड़ी (बैलों के ऊपर बोरे रखकर भोजन सामग्री भर रखी थी। एक बैल को बोरे समेत बंजारे लोग बोडी कहते थे) तैयार कर रखी थी।**

जब कबीर जी सतलोक में बोडी लेने गए तो सतलोक वाले सेवक बोले

कि हे कबीर भगवान! ले जाओ जितनी आवश्यकता है। हे कबीर संजनहार! वह तो (खंजूस) भूखा निर्धन लोक है। कबीर जी ने उनमें से नौ लाख बौडी तथा कुछ बनजारे वाले वेश में भक्त सेवादार साथ लिए तथा स्वयं केशव बंजारे का रूप धारण किया। एक पलक (क्षण) में पृथ्वी के ऊपर आ गए। काशी शहर में तंबू (Tent) लगाए। पाँच रंग के झंडे सतलोक वाले लगाए। भंडारे में कोई खाना खाओ, कोई रोक-टोक नहीं थी। यह नहीं था कि जिनके नाम निमंत्रण पत्र गया है, वे अपनी चिट्ठी तथा नाम-पता दिखाओ और खाना खाओ जैसा कि काल लोक वाले साधु किया करते थे। सूखा सीधा के लिए आटा, खांड, चावल, घी, दाल सब दी जा रही थी। मिठाई, लड्डू, जलेबी, चंगेर (बर्फी) सब खिलाई जा रही थी। जैसे कुबेर भंडारी ही पृथ्वी पर आया हो। बिना पकाया पक रहा था। टैंटों-तंबुओं में ढ़ेर के ढ़ेर मिठाईयों के लगे थे। कड़ाहे चावल, खीर, हलवा के भरे थे। सब खा रहे थे। दक्षिणा दी जा रही थी। कबीर परमेश्वर की जय-जयकार हो रही थी। बैल बिना सींगों वाले थे। बैल पृथ्वी से छः इंच ऊपर-ऊपर चल रहे थे। पृथ्वी के ऊपर पैर नहीं रख रहे थे क्योंकि यह पृथ्वी किटाणुओं से भरी है। पैरों के नीचे जीव मारने से पाप लगता है। तीन दिन तक सब सम्प्रदायों के व्यक्ति भोजन से तृप्त किए। षटदर्शन पंथों वाले साधुओं ने असँख्यों सीधे (एक व्यक्ति का एक समय की सूखी सामग्री, चावल, खांड, दाल, आटा, घी आदि-आदि) ले लिये। एक वर्ष का भोजन संग्रह कर ले गए। तीन दिन यहाँ छककर खा गए।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 838-850 :-**

शाह सिकंदर कूँ सुनी, धंन कबीर बलि जाँव। गरीबदास मेले चलो, मम हिरदे धरि पांव।।838।।
कहै कबीर सुन शाह तूं, भेष बीगाड़ा काम। गरीबदास कैसे चलौं, मो गठरी नहीं दाम।।839।।
नहीं काशी में शाह कोई, मोहि उधारा देत। गरीबदास ताना तनूं जिब कुंनबे की सुधि लेत।।840।।
मैं अधीन अंनकीट हूं, उदर भरै नहीं मोहि। गरीबदास माता दुखी, अरू मोमिन है छोहि।।841।।
ऐ कबीर तुम अलह हो, पलक बीच प्रवाह। गरीबदास कर जोरि करि, ऐसे कहता शाह।।842।।
तुम दयाल दरवेश हो, धरि आये नर रूप। गरीबदास ऐसे कहै, शाह सिकन्दर जहां भूप।।843।।
उठे कबीर कर्म किया, बरसे फूल अकाश। गरीबदास मेले चले, चौंर करत रैदास।।844।।
तीन एक चंहडोल में, रैदास शाह कबीर। गरीबदास चौंरा करै, बादशाह बलबीर।।845।।
मुकट मनोहर बांधि करि, चढ़े फील कबीर। गरीबदास उस पुरी में, कोई न धर है धीर।।846।।
केशव चले कबीर पै, कबीर कष्ट क्यों कीन। गरीबदास हस्ती चढ़े, मेला देखन तीन।।847।।
चौपड़ के बैजार फिर, आये केशव पास। गरीबदास कुरबान गति, क्या क्या कहूँ विलास।।848।।
पाट पिटंबर बिछ गये, ऊपरि हीरे लाल। गरीबदास साहिब धनी, ल्याये मुक्ता माल।।849।।
केशव और कबीर का, तंबू मांहि मिलाप। गरीबदास आठ पहर लग, गोष्ठी निज गरगाप।।850।।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 838-850 का सरलार्थ :- उन षड़यंत्रकारियों**

ने सुनियोजित सोची-समझी चाल के तहत दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी को भी भंडारे का निमंत्रण भेजा था। सोचा था कि सिकंदर राजा आएगा। यहाँ कोई भंडारा नहीं मिलेगा। जनता कबीर को गालियाँ दे रही होगी। अराजकता का माहौल होगा। कबीर भाग जाएगा। राजा के मन से उसकी महिमा समाप्त हो जाएगी। शेखतकी जो राजा सिकंदर का धार्मिक पीर (गुरू) था तथा मंत्री भी था, वह इस षड़यंत्र का मुखिया था। जब राजा व शेखतकी भंडारा स्थल पर आए तो देखा लंगर लग रहा है। मोहन भोजन परोसे जा रहे हैं। दक्षिणा भी दी जा रही है। कबीर जी सेठ की जय बुलाई जा रही है। राजा ने उपस्थित व्यक्तियों से पूछा कि भंडारा कौन कर रहा है? उत्तर मिला कि कबीर सेठ जुलाहा कर रहा है। वह तो अभी आए नहीं हैं। उनका नौकर सामने तंबू में बैठा है। वह सब व्यवस्था कर रहा है। राजा सिंकदर तथा शेखतकी तंबू के पास गए। उस व्यक्ति का परिचय पूछा तो बताया कि मेरा नाम केशव बनजारा है। कबीर मेरा पगड़ी-बदल मित्र है। उनका पत्र मेरे पास गया था कि आप कुछ सामान भंडारे का लेते आना। छोटा-सा भंडारा करना है। मैं हाजिर हो गया। कबीर जी कहाँ है? राजा ने पूछा। वे किस कारण से नहीं आए? केशव ने कहा कि वे मालिक हैं। मर्जी है कभी आएँ। उनका नौकर जो बैठा है। यह व्यवस्था वे स्वयं ही कुटी में बैठे संभाल रहे हैं। वे परमात्मा हैं। राजा सिकंदर हाथी पर सवार होकर कबीर जी की कुटी पर पहुँचा। दरवाजा बंद था। निवेदन करके खुलवाया तथा कहा कि आप मेरा दिल का निवेदन स्वीकार करके मेरे साथ मेले में भंडारे पर चलो तो परमात्मा ने कहा कि हे राजन! मेरे साथ अभद्र मजाक किया गया है। मैं निर्धन व्यक्ति कपड़ा बुनकर परिवार का पोषण कर रहा हूँ। अठारह लाख साधु भोजन-भंडारा छकने आए हैं। तीन दिन का भंडारा पत्र में लिखा है। मैं कहाँ से खिलाऊँगा? मैं तो घर से बाहर नहीं निकल सकता। रात्रि में परिवार सहित भाग जाऊँगा। हे राजा! इन भेषों वालों ने काम बिगाड़ा है। झूठी चिट्ठी मेरे नाम से भेज रखी है। मेरा उदर भी नहीं भरता। मेरी माता तथा पिता (मुँह बोले माता-पिता) मेरे पर क्रोध करेंगे। कोई काशी नगर में सेठ (शाह) भी मुझे उधार नहीं देता क्योंकि मेरी आमदनी कम है, निर्धन हूँ। मैं कैसे आपके साथ मेले में भंडारे के स्थान पर चलूँ। राजा सिकंदर जो दिल्ली का सम्राट था, उसने हाथ जोड़कर कहा कि हे कबीर! आप परमात्मा (अल्लाह) हो। नर रूप बनाकर आए हो। तुम दयाल (दरवेश) संत हो।

कबीर ने (करम) रहम किया। चलने के लिए उठे तो आकाश से फूल बरसने लगे। सिकंदर राजा ने परमात्मा कबीर को हाथी पर बैठाया। साथ में रविदास जी कबीर जी के सिर के ऊपर चंवर करते हुए कबीर जी के

आदेश अनुसार उनके साथ हाथी पर बैठ गए। राजा भी हाथी पर उनके साथ बैठा। फिर रविदास जी से निवेदन करके राजा सिकंदर ने चंवर ले लिया और कबीर जी के ऊपर चंवर करने लगे। कबीर परमात्मा के सिर के ऊपर अपने आप मनोहर मुकुट आकर सुशोभित हो गया। काशी पुरी के व्यक्ति बेचैनी से कबीर परमेश्वर के दर्शन करने का इंतजार कर रहे थे। भंडारा स्थल पर आए तो केशव रूप उनके हाथी के पास आया तथा कहा कि हे कबीर प्रभु! आपने यहाँ आने का कष्ट क्यों किया? आपका दास जो सेवा में हाजिर है। उसकी बात को अनसुना करके तीनों हाथी को आगे मेले में ले गए जहाँ अठारह लाख व्यक्ति ठहरे थे। वह तो बहुत बड़ा मेला था। चौपड़ के बाजार में घूम-फिरकर केशव के पास आ गए। जब कबीर जी हाथी से उत्तरे तथा केशव वाले तंबू में गए तो अपने आप सुंदर तख्त आ गया तथा उसके ऊपर सुंदर बिछौनी बिछ गई। बिछौनी के चारों ओर हीरे, लाल लग गए। महाराजा जैसा आसन लग गया। दूसरी ओर ऐसा ही केशव के लिए लगा था। कबीर जी को देखने के लिए सब साधु-संत आकर चारों ओर कुछ बैठ गए, पीछे वाले खड़े रहे। परमात्मा कबीर जी ने केशव के साथ (आठ पहर) चौबीस घंटे लगातार आध्यात्मिक गोष्ठी की, तत्त्वज्ञान सुनाया। लगभग दस लाख उन भ्रमित साधुओं के शिष्यों ने कबीर जी से दीक्षा ली और जीवन सफल किया।

सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान किसने बताया?

कलामे कबीर (सूक्ष्मवेद) में सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान है जो न चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) में है, न श्रीमद्भगवत गीता में, न पुराणों में, न उपनिषदों में, न श्रीमद्भागवत (सुधा सागर) में, न चारों पुस्तकों (जबूर, तौरेत, इंजिल तथा कुरआन मजीद) में। इन चारों पुस्तकों को इकठ्ठा जिल्द करके बाईबल नाम दिया है, वह ज्ञान बाईबल में भी नहीं है। प्रमाण के लिए पहले पढ़ें :-

अल-खिज्र (अल कबीर) की विशेष जानकारी

Quaran Sharif Sura-Kafh 18:60-82 (कुरआन शरीफ सुरा-काफ 18 आयत 60-82) में जिक्र है, अल्लाह मूसा को उससे ज्यादा इल्म (तत्त्वज्ञान) रखने वाले एक शख्स से मिलने के लिए भेजता है। (हदीस में ये कहानी विस्तार से बताई गई है। 55 हदीसों में इस कहानी का जिक्र मिलता है।)

एक दिन हजरत मूसा सत्संग फरमा रहे थे। उनसे एक सत्संगी ने पूछा कि हे मूसा आज के दिन जमीन पर सबसे ज्यादा इल्म रखने वाला शख्स कौन है?

हजरत मूसा ने बड़े गर्व से उत्तर दिया ''मैं''।

अल्लाह को मूसा का ये अंदाज बिल्कुल पसंद ना आया और कहा कि मूसा तेरी यह बात सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ। तूने अपने आपको सबसे बड़ा इल्मी कैसे मान लिया?

घुटनों के बल बैठे मूसा ने कहा कि मैं आपका भेजा हुआ रसूल हूँ और मुझे सारा इल्म आपसे हासिल है। इसलिए मैंने ये कह दिया कि आज जमीन पर मेरे से ज्यादा इल्म किसी के पास नहीं है।

अल्लाह ने कहा कि मूसा जमीन पर तेरे से ज्यादा इल्म रखने वाला शख्स मौजूद है और तेरा इल्म उसके इल्म के सामने कुछ भी नहीं।

मूसा ने कहा कि हे अल्लाह! मैं उस शख्स से मिलना चाहता हूँ ताकि मैं वो इल्म हासिल कर सकूँ जो मेरे पास नहीं है। वो शख्स कहाँ रहता है और कैसे मिलेगा? ये बताने की मेहरबानी कीजिए।

अल्लाह ने कहा कि वो ''मजमा-ए-बाहरेन'' में रहता है यानि जहाँ मीठे और खारे पानी के दो दरिया आपस में मिलते हैं।

मूसा बोला कि हे अल्लाह! मैं उसे पहचानूंगा कैसे?

अल्लाह ने बताया कि तू अपने साथ एक बर्तन में मरी हुई मछली ले जा। जहाँ वो मछली जिंदा होकर पानी में गोता लगा देगी, समझ लेना वो नजदीक है।

(हदीस पुष्टि करती है कि ये शख्स जो मूसा से ज्यादा इल्मी/**Intelligent** है और जिससे अल्लाह ने मूसा को कुरआन शरीफ सुरा काफ **18** आयत **60-82** में मिलने के लिए कहा है। उसका नाम अल-खिज्र है और सारा मुस्लिम जगत इससे सहमत है।)

मूसा अपने एक शागिर्द/सेवक को लेकर अल-खिज्र की तलाश में निकल पड़ता है और कसम खाता है चाहे मुझे सदियों तक क्यों न चलना पड़े, मैं अल-खिज्र से इल्म हासिल करके ही चैन लूँगा।

काफी लंबा सफर तय करने के बाद मूसा व उसका शागिर्द ''मजमा-ए-बाहरेन'' के इलाके में पहुँच गए। मूसा लंबे सफर की थकान उतारने के लिए एक पत्थर का टेका लेकर सो गए। इस दौरान शागिर्द ने देखा कि वो मत मछली जिसे वो एक बर्तन में लेकर चले थे, झटपटाई और जिंदा होकर पानी में कूद गई।

शागिर्द मूसा को मछली की जिंदा होने वाली बात बताना भूल जाता है और मूसा अल-खिज्र की खोज में अपने सफर पर आगे चल पड़ते हैं।

पूरा दिन, पूरी रात चलने के बाद अगली सुबह मूसा शागिर्द से बोलता है कि मैं सफर की थकान से चूर-चूर हो गया हूँ। ला मुझे कुछ खाने को दे

दे। तब शागिर्द को ध्यान आता है कि जो मछली हम अपने साथ लाए थे, वह तो कल जहाँ हमने टेका लिया था, वहीं जिंदा होकर पानी में कूद गई थी और शैतान के प्रभाव से मैं आपको बताना भूल गया। ये सुनकर मूसा बोले यही तो वो मुकाम था जहाँ हमें रूकना था। मूसा और शागिर्द अपने कदमों के निशानों को देखते हुए वापिस उसी जगह पहुँच जाते हैं और उन्हें सफेद चादर ओढ़े हुए सफेद दाढ़ी वाला एक शख्स मिलता है।

मूसा ने अपना परिचय दिया और कहा कि मुझे अल्लाह ने आपसे इल्म सीखने के लिए भेजा है। मैं आपकी पैरवी करता हूँ। आप मुझे वो नेक इल्म सिखा दें जो आपके पास है।

उत्तर में अल-खिज्र ने कहा कि मूसा! आप मेरे साथ हरगिज सब्र नहीं कर सकेंगे क्योंकि जिस चीज की हकीकत का आपको इल्म नहीं, उस पर आप सब्र कर भी कैसे सकते हैं?

मूसा ने कहा कि आप मुझे सब्र करने वाला पाएँगे और मैं किसी बात में आपकी नाफरमानी नहीं करूँगा।

अल-खिज्र ने कहा कि अच्छा! अगर आप मेरे साथ चलना ही चाहते हो तो ध्यान रहे आप किसी चीज के बारे में मेरे से सवाल ना कीजिएगा, जब तक मैं खुद उसके बारे में ना बताऊँ।

इस मकाम से मूसा ने अपने शागिर्द को वापिस भेज दिया और अल-खिज्र के साथ अपना सफर शुरू किया।

रास्ते में कुछ मस्किन लोगों की एक कश्ती देखी। वो मेहनत करते और किराया लेकर लोगों को दरिया पार करवाया करते थे। अल-खिज्र और मूसा उस कश्ती पर सवार हो गए। सफर के दौरान अल-खिज्र ने उस कश्ती के तख्ते तोड़ दिए और कश्ती में पानी भरने लगा। लोग पानी बाहर फैंकने लगे और जैसे-तैसे डूबने से बचे। ये देख मूसा ने इसे नापसंद फरमाया और अल-खिज्र से बोले क्या लोगों को डुबाने का इरादा है? इस पर अल-खिज्र ने जवाब दिया कि मैंने पहले ही कह दिया था कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकेंगे। मूसा ने कहा कि मेरी अक्ल ने काम नहीं किया। मुझे क्षमा कर दीजिए, आगे ऐसी गलती नहीं होगी।

फिर वह दोनों आगे चले और एक लड़के से मिले। अल-खिज्र ने उस लड़के को मार डाला। ये देखकर मूसा बोले क्या आपने एक बेगुनाह की जान ली? और वो भी किसी के खून के बदले में नहीं। ये तो आपने बड़ी घटिया और बेहद नापसंदीदा हरकत की। इस पर अल-खिज्र बोले मैंने आपसे कहा नहीं था, आप मेरे साथ रहकर हरगिज सब्र नहीं कर सकेंगे। मूसा ने जवाब दिया कि अब अगर मैं आपसे किसी चीज के बारे में सवाल करूँ तो बेशक

मुझे अपने साथ ना रखिएगा यकीनन आप मेरी तरफ से हद्द ऊजुर को पहुँच चुके हैं।

एक बार फिर सफर शुरू हुआ। दोनों एक गाँव में पहुँचे और मूसा ने खाने के लिए पूछा। गाँव वालों ने उनकी मेहमान नवाजी करने से साफ इनकार कर दिया। उस गाँव में दोनों ने एक दीवार को देखा जो गिरने के करीब थी। अल-खिज्र ने उसे दुरूस्त कर दिया। ये देखकर मूसा बोल पड़े आप चाहते तो इसकी गुजरत/कीमत ले सकते थे जिसे देकर हम खाना खा सकते थे। अल-खिज्र ने मूसा से कहा, बस! अब आपके और मेरे दरम्यान जुदाई है, जाने से पहले मैं आपको उन बातों की हकीकत बताऊँगा जिन पर आप सब्र ना कर सके।

1. कश्ती कुछ गरीब मस्किन लोगों की थी जो दरिया में कामकाज करते थे। मैंने उसमें कुछ तोड़फोड़ करने का इरादा किया क्योंकि उनके आगे एक बादशाह था जो हर एक सही कश्ती को जबरन जब्त कर लेता, छेद होने की वजह से वो बादशाह उनकी कश्ती को जब्त नहीं करेगा और वो मस्किन कुछ पैसे लगाकर उसे दुरूस्त कर लेंगे।

2. दूसरे वाकये के बारे में बताया कि उस लड़के के माँ-बाप अल्लाह को चाहने वाले थे। हमें खौफ हुआ कि कहीं ये लड़का उन्हें अपनी सरकशी और कुफ्र से आजिस और परेशान ना कर दे। इसलिए हमने चाहा कि उन्हें उनका परवरदिगार उससे बेहतर पाकीजगी वाला व उससे ज्यादा प्यार मोहब्बत वाला बच्चा इनायत फरमाए।

3. दीवार का किस्सा ये है कि उस गाँव में दो यतीम बच्चे हैं जिनका खजाना उस दीवार के नीचे दफन है। उनका बाप बहुत नेक था। रब की यह चाहत थी कि ये दोनों यतीम अपनी जवानी की उम्र में आकर अपना ये खजाना उस रब की मेहरबानी और रहमत से निकालें।

इन तीनों किस्सों की मुहमलत करने के बाद अल-खिज्र एक अजीम अमल बयान करते हुए फरमाते हैं कि मूसा! ये थी असल हकीकत उन वाकियात की जिन पर आप सब्र ना कर सके।

''सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान के विषय में प्रमाण''

सूक्ष्मवेद (कलामे कबीर = कबीर वाणी) के अतिरिक्त किसी धर्म ग्रन्थ में सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है।

प्रमाण :- हिन्दू धर्म के मुख्य ग्रन्थ चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) हैं। उनका सार यानि संक्षिप्त में ज्ञान श्रीमद्भगवत गीता है। इनका ज्ञान भी उसी अल्लाह (प्रभु) ने दिया है जिसने चारों किताबों (जबूर,

तौरेत, इंजिल तथा कुरआन) का ज्ञान दिया है।

यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 में वेद ज्ञान दाता ने कहा है कि कोई तो परमेश्वर को कभी न उत्पन्न होने वाला यानि निराकार बताता है। कोई उत्पन्न होने वाला साकार मानते हैं जैसे राम, कृष्ण का जन्म हुआ, इनको प्रभु मानते हैं। परमात्मा निराकार है या साकार है? उत्पन्न होता है या उत्पन्न नहीं होता है? अवतार धारण करता है या नहीं करता? इसके विषय में (धीराणाम्) तत्त्वदर्शी संत ठीक-ठीक बताते हैं, उनसे सुनो।

विशेष :- सिद्ध हुआ कि वेदों में सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है।

श्रीमद्भगवत गीता में भी सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है।

प्रमाण :- श्रीमद्भगवत गीता हिन्दू समाज के लिए चारों वेद महत्वपूर्ण व विश्वास के योग्य ग्रन्थ हैं। वेदों से अधिक गीता को पढ़ा जाता है। गीता का ज्ञान भी उसी प्रभु (अल्लाह) ने दिया है जिसने चारों वेदों तथा चारों किताबों (जबूर, तौरेत, इंजिल तथा कुरआन) का ज्ञान दिया है। हिन्दू धर्माचार्य मानते हैं कि श्रीमद्भगवत गीता चारों वेदों का सार है। इसी गीता के अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण ब्रह्म (मुखे) अपने मुख कमल से वाणी बोलकर यथार्थ ज्ञान प्रचार करता है। उनकी उस वाणी में बताया ज्ञान ''तत्त्वज्ञान'' कहा जाता है। फिर गीता अध्याय 4 के ही श्लोक 34 में कहा है कि ''हे अर्जुन! उस तत्त्वज्ञान को (जो समर्थ परमेश्वर मुख से वाणी बोलकर बताता है) तू किसी तत्त्वदर्शी संतों से पूछो। दंडवत् प्रणाम करके नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे तत्त्वज्ञान जानने वाले ज्ञानी महात्मा तेरे को तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।'' {क्योंकि वही यथार्थ ज्ञान वही समर्थ प्रभु समय-समय पर अच्छी आत्माओं नेक बंदों को बताता रहता है, इसलिए कहा है। वह ज्ञान वर्तमान में मुझ दास (रामपाल दास) के पास है। विश्व में किसी को उसका ज्ञान नहीं है।}

विशेष :- इससे सिद्ध हुआ कि सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान श्रीमद्भगवत गीता में भी नहीं है।

बाईबल (जो जबूर, तौरेत तथा इंजिल तीनों पुस्तकों का योग है। इस बाईबल) में तथा कुरआन में भी सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है।

प्रमाण :- ऊपर ''अल-खिज्र (अल-कबीर) की जानकारी'' शीर्षक में बताया है कि जिस अल्लाह ने पवित्र पुस्तक ''जबूर'' का, पवित्र पुस्तक तौरेत तथा पवित्र पुस्तक इंजिल का ज्ञान दिया है। उसने हजरत मुहम्मद जी को भी बताया (जो पवित्र पुस्तक कुरआन की सूरः काफ-18, आयत 60-82 में अंकित है) कि मैंने मूसा को वह ज्ञान जानने के लिए एक शख्स के पास भेजा जो ज्ञान मूसा को नहीं था। उस ज्ञान के सामने मूसा को प्राप्त ज्ञान

(पुस्तक तौरेत) कुछ भी मायने नहीं रखता। मूसा जी उस ज्ञान को प्राप्त किए बिना ही खाली लौट आया था। इस प्रकरण से कई बातें निकलकर सामने आती हैं :-

नं. 1. :- वह ज्ञान तौरेत पुस्तक में नहीं है। यदि होता तो अल-खिज्र के पास ज्ञान प्राप्ति के लिए भेजने की आवश्यकता ही नहीं थी।

नं. 2. :- पवित्र जबूर, पवित्र तौरेत तथा पवित्र इंजिल का ज्ञान इसी अल्लाह ने क्रमशः हजरत दाऊद, हजरत मूसा तथा हजरत ईशा को एक-एक ही बार में दिया था यानि कुरआन के ज्ञान की तरह थोड़ा-थोड़ा करके नहीं उतारा था।

हजरत मूसा जी तौरेत के ज्ञान का प्रचार कर रहे थे। उसी ज्ञान का सत्संग कर रहे थे। सत्संग के दौरान किसी सत्संगी ने पूछा था कि हे मूसा! वर्तमान में संसार में सबसे विद्वान कौन है? मूसा ने अपने को संसार में सबसे विद्वान बताया था। जिससे मूसा जी के अल्लाह जी ने कहा था कि तेरा ज्ञान अल-खिज्र के ज्ञान के सामने कुछ भी मायने नहीं रखता। इससे सिद्ध हुआ कि तौरेत का ज्ञान अधूरा है।

नं. 3 :- यदि जबूर पुस्तक में सम्पूर्ण ज्ञान होता तो अल्लाह कह देता कि जबूर वाला ज्ञान तेरे ज्ञान से उत्तम है। वह उस अध्याय में अंकित है। परंतु ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता। इससे सिद्ध हुआ कि जबूर का ज्ञान भी अल-खिज्र के ज्ञान के समान नहीं है।

नं. 4 :- यदि इंजिल में सम्पूर्ण ज्ञान होता तो हजरत मुहम्मद को अल्लाह कह देता कि अल-खिज्र वाला ज्ञान मरियम के बेटे ईसा को ''इंजिल'' में दे रखा है। परंतु यह भी कहीं प्रमाण नहीं है। इससे सिद्ध हुआ कि पवित्र पुस्तक ''इंजिल'' में भी अल-खिज्र (अल-कबीर) वाला ज्ञान नहीं है।

विशेष :- उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान पवित्र बाईबल में नहीं है। {पवित्र बाईबल ग्रन्थ में केवल तीन पुस्तकें इकठ्ठी जिल्द की गई हैं :- 1. जबूर, 2. तौरेत, 3. इंजिल। इन तीनों का योग बाईबल नाम से जाना जाता है।}

कुरआन शरीफ (मजीद) में भी सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है :-

प्रमाण :- सूरत फुरकान 25 आयत नं. 52-59 में पवित्र कुरआन मजीद (शरीफ) का ज्ञान देने वाले अल्लाह ने अपने भेजे नबी मुहम्मद (अलैही वसल्लम) को इन आयतों में बताया है कि कबीर नामक अल्लाह अर्थात् अल्लाह अक्कबर (कादर) समर्थ परमेश्वर है। इस बात पर काफिर इमान (विश्वास) नहीं लाते। आप उनकी बातों को न मानना। मेरे द्वारा दी गई

कुरआन की दलीलों से उस कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना। उसी ने आदमी उत्पन्न किए। उसी ने मानव को ससुराल, बेटी, बहू आदि दी। उसी ने दो खारे तथा मीठे जल की दरियाएँ बहाई। उनके बीच में मजबूत रोक लगाई। हमने तेरे को (हजरत मुहम्मद) को केवल उनको समझाने तथा अजाब से बचाने के लिए भेजा है। उनसे कह दो कि मैं तुमसे कोई पैसा नहीं लेता। कहीं यह समझो कि मैं स्वार्थ के लिए ऐसा कर रहा हूँ। और ऐ पैगंबर! वह कबीर अल्लाह अपने बंदों के गुनाहों को क्षमा करने वाला बड़ा रहमान (मेहरबान) है।

आयत नं. 59 :- और वह अल्लाहू अकबर वही है जिसने छः दिन में सृष्टि की उत्पत्ति की और फिर ऊपर तख्त (सिंहासन) पर जा बैठा। उसकी खबर (पूर्ण जानकारी) किसी बाखबर (तत्त्वज्ञानी) से पूछो।

विशेष :- इससे सिद्ध हुआ कि पवित्र कुरआन पुस्तक में भी संपूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है। परंतु लेखक का कहने का यह तात्पर्य बिल्कुल नहीं कि उपरोक्त सब शास्त्रों (पवित्र वेदों, पवित्र श्रीमद्भगवत गीता, पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुरआन) का ज्ञान गलत है। उपरोक्त शास्त्रों का ज्ञान गलत नहीं, परंतु अधूरा (**Incomplete**) है।

उदाहरण दें तो जैसे दसवीं कक्षा तक का पाठ्यक्रम (**Syllabus**) गलत नहीं है। परंतु बी.ए., बी.एस.सी, पी.एच.डी., इन्जीनियरिंग तथा डॉक्टरी आदि के लिए आगे की पढ़ाई पढ़नी पड़ती है। वह पाठ्यक्रम दसवीं से आगे का होता है जिससे पढ़ाई का उद्देश्य पूर्ण होता है। वह सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान अल्लाह कबीर स्वयं ही पृथ्वी पर प्रकट होकर बताता है। परमेश्वर कबीर माता से जन्म नहीं लेता। वह ऊपर सतलोक वाले अपने सिंहासन (तख्त) से सशरीर चलकर आता है। जैसे बाईबल ग्रन्थ में भी प्रमाण है कि सृष्टिकर्ता परमेश्वर का निज निवास ऊपर के लोक में है जो सर्वोच्च आकाश पर है। परमेश्वर ने वहीं से आकर सृष्टि की रचना छः दिन में सम्पूर्ण की और सातवें दिन ऊपर (तख्त) सिंहासन पर जा विराजा। सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र वेदों में भी प्रमाण है कि परमेश्वर सबसे ऊपर के लोक में बैठा है। वहाँ से सशरीर चलकर पृथ्वी के ऊपर आता है। नेक बंदों को जो परमात्मा की खोज में लगे रहते हैं, उनको मिलता है। किसी संत या जिंदा बाबा के रूप में साधकों से आमने-सामने बात करता है। उसे पृथ्वी पर पहचानना कठिन होता है। वह पूर्ण ब्रह्म (कादर अल्लाह कबीर) कुरआन, बाईबल, वेद, गीता आदि के ज्ञान देने वाले की तरह छुपकर काम नहीं करता। जो पर्दे के पीछे से यानि गुप्त रहकर बात करता है या किसी में प्रवेश करके बात करता है। वह ज्योति निरंजन काल (शैतान) है। इसने कभी भी किसी के सामने

प्रत्यक्ष न होने की प्रतिज्ञा कर रखी है। पूर्ण ब्रह्म वेश बदलकर प्रत्यक्ष होकर ज्ञान देता है। अपना परिचय देने के लिए उनको ऊपर वाले लोक में ले जाकर वापिस पथ्वी पर शरीर में छोड़ता है। फिर वे चस्मदीद गवाह (Eye Witness) आँखों देखा वर्णन उस कादर अल्लाह कबीर का करते हैं। उससे प्राप्त ज्ञान का प्रचार करते हैं जिसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं रहती।

☛ अब पढ़ें वेदमंत्रों में कि अल्लाह पथ्वी पर आता है। यथार्थ ज्ञान भक्तों को बताता है। साधना के सच्चे नामों का ज्ञान भी बताता है :-

देखें फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 54 मंत्र 3 की :-

अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि ।
सोमो देवो न सूर्यः ॥३॥

पदार्थः—(सूर्यः, न) सूर्य के समान जगत्प्रेरक (अयम्) यह परमात्मा (सोमः, देवः) सौम्य स्वभाव वाला और जगत्प्रकाशक है और (विश्वानि, पुनानः) सब लोकों को पवित्र करता हुआ (भुवनोपरि, तिष्ठति) सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व भाग में भी वर्तमान है ॥३॥

विवेचनः- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3 की फोटोकापी में आप देखें, इसका अनुवाद आर्यसमाज के विद्वानों ने किया है। उनके अनुवाद में भी स्पष्ट है कि वह परमात्मा (भूवनोपरि) सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व अर्थात् ऊपर (तिष्ठति) विराजमान (ऊपर बैठा) है।

इसका यथार्थ अनुवाद इस प्रकार है :-

(अयं) यह (सोमः देव) अमर परमेश्वर (सूर्यः) सूर्य (न) के समान (विश्वानि) सर्व को (पुनानः) पवित्र करता हुआ (भूवनोपरि) सर्व ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व अर्थात् ऊपर (तिष्ठति) बैठा है।

भावार्थ :- जैसे सूर्य ऊपर है और अपना प्रकाश तथा उष्णता से सर्व को लाभ दे रहा है। इसी प्रकार यह अमर परमेश्वर जिसका वेद के मन्त्रों में वर्णन किया है। सर्व ब्रह्माण्डों के ऊपर बैठकर अपनी निराकार शक्ति से सर्व प्राणियों को लाभ दे रहा है तथा सर्व ब्रह्माण्डों का संचालन कर रहा है।

☛ आगे वेदों में प्रमाण है कि परमेश्वर ऊपर के लोक से चलकर आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है। उनको सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान अपने मुख कमल से वाणी बोलकर बताता है। भक्ति करने की प्रेरणा करता है। साधना के यथार्थ मंत्रों का आविष्कार करता है। पथ्वी पर कवि जैसा आचरण करता हुआ विचरण करके स्थान-स्थान पर जाता है। जो भक्ति पर लगे नेक बंदे होते हैं, उनको यथार्थ भक्ति मार्ग बताता है।

अब देखें वेदों की फोटोकॉपियाँ तथा लेख द्वारा किया गया विवेचन :-

(देखें फोटोकॉपी वेदमन्त्रों की)

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 86 मन्त्र 26-27)

इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे ।
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कविरत्यो न क्रीळन्परि वारमर्षति ॥२६॥

पदार्थः—(**यज्यवे**) यज्ञ करने वाले यजमानों के लिये परमात्मा (**विश्वानि सुपथानि**) सब रास्तों को (**कृण्वन्**) सुगम करता हुआ (**मृधः**) उनके विघ्नों को (**अतिगाहते**) मर्दन करता है। और (**पुनानः**) उनको पवित्र करता हुआ और (**निर्णिजं**) अपने रूप को (**गाः कृण्वानः**) सरल करता हुआ (**हर्यतः**) वह कान्तिमय परमात्मा (**कविः**) सर्वज्ञ (**अत्यो न**) विद्युत् के समान (**क्रीळन्**) क्रीड़ा करता हुआ (**वारं**)वरणीय पुरुष को (**पर्यर्षति**) प्राप्त होता है ॥२६॥

विवेचन :- यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मन्त्र 26 की है जो आर्यसमाज के आचार्यों व महर्षि दयानन्द के चेलों द्वारा अनुवादित है जिसमें स्पष्ट है कि यज्ञ करने वाले अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान करने वाले यजमानों अर्थात् भक्तों के लिए परमात्मा, सब रास्तों को सुगम करता हुआ अर्थात् जीवन रूपी सफर के मार्ग को दुःखों रहित करके सुगम बनाता हुआ। उनके विघ्नों अर्थात् संकटों का मर्दन करता है अर्थात् समाप्त करता है। भक्तों को पवित्र अर्थात् पाप रहित, विकार रहित करता है। जैसा की अगले मन्त्र 27 में कहा है कि ''जो परमात्मा द्यूलोक अर्थात् सत्यलोक के तीसरे पष्ठ पर विराजमान है, वहाँ पर परमात्मा के शरीर का प्रकाश बहुत अधिक है।'' उदाहरण के लिए परमात्मा के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्य तथा इतने ही चन्द्रमाओं के मिले-जुले प्रकाश से भी अधिक है। यदि वह परमात्मा उसी प्रकाश युक्त शरीर से पथ्वी पर प्रकट हो जाए तो हमारी चर्म दष्टि उन्हें देख नहीं सकती। जैसे उल्लु पक्षी दिन में सूर्य के प्रकाश के कारण कुछ भी नहीं देख पाता है। यही दशा मनुष्यों की हो जाए। इसलिए वह परमात्मा अपने रूप अर्थात् शरीर के प्रकाश को सरल करता हुआ उस स्थान से (जहाँ परमात्मा ऊपर रहता है) गति करके बिजली के समान क्रीड़ा अर्थात् लीला करता हुआ यानि विद्युत जितनी गति से शीघ्रगामी होकर चलकर आता है, श्रेष्ठ पुरूषों को मिलता है। यह भी स्पष्ट है कि आप कविः अर्थात् कविर्देव हैं। हम उन्हें कबीर साहेब कहते हैं। मुसलमान उसे अल्लाहू अकबर कहते हैं।

असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदन्युवः ।
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः ॥२७॥

पदार्थः—(उदन्युवः) प्रेम की (ताः) वे (शतधाराः) सैंकड़ों धाराए (असश्चतः) जो नानारूपों में (अभिश्रियः) स्थिति को लाभ कर रही हैं । वे (हरिं) परमात्मा को (अवनवन्ते) प्राप्त होती हैं । (गोभिरावृतं) प्रकाशपुञ्ज परमात्मा को (क्षिपः) बुद्धिवृत्तियां (मृजन्ति) विषय करती हैं । जो परमात्मा (दिवस्तृतीये पृष्ठे) द्युलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है और (रोचने) प्रकाशस्वरूप है उसको बुद्धिवृत्तियाँ प्रकाशित करती हैं ॥२७॥

विवेचन :- यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 के मन्त्र 27 की है। इसमें स्पष्ट है कि ''परमात्मा द्यूलोक अर्थात् अमर लोक के तीसरे पष्ठ अर्थात् भाग पर विराजमान है। सत्यलोक अर्थात् शाश्वत् स्थान के तीन भाग हैं। एक भाग में वन-पहाड़-झरने, बाग-बगीचे आदि हैं। यह बाह्य भाग है अर्थात् बाहरी भाग है। (जैसे भारत की राजधानी दिल्ली भी तीन भागों में बँटी है। बाहरी दिल्ली जिसमें गाँव खेत-खलिहान और नहरें हैं, दूसरा बाजार बना है। तीसरा संसद भवन तथा कार्यालय हैं।)

इसके पश्चात् द्यूलोक में बस्तियाँ हैं। सपरिवार मोक्ष प्राप्त हंसात्माऐं रहती हैं। (पथ्वी पर जैसे भक्त को भक्तात्मा कहते हैं, इसी प्रकार सत्यलोक में रहने वाले हंसात्मा कहलाते हैं।) (3) सर्वोपरि तीसरे भाग में परमात्मा का सिंहासन है। उसके आस-पास केवल नर आत्माऐं रहती हैं, वहाँ स्त्री-पुरूष का जोड़ा नहीं है। वे यदि अपना परिवार चाहते हैं तो शब्द (वचन) से केवल पुत्र उत्पन्न कर लेते हैं। इस प्रकार शाश्वत् स्थान अर्थात् सत्यलोक तीन भागों में परमात्मा ने बाँट रखा है। वहाँ यानि सत्यलोक में प्रत्येक स्थान पर रहने वालों में वद्धावस्था नहीं है, वहाँ मत्यु नहीं है।

इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में कहा है कि जो जरा अर्थात् वद्ध अवस्था तथा मरण अर्थात् मत्यु से छूटने का प्रयत्न करते हैं, वे तत् ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को जानते हैं। उनको यह भी ज्ञान होता है कि सत्यलोक में सत्यपुरूष रहता है, वहाँ पर जरा-मरण नहीं है, बच्चे युवा होकर सदा युवा रहते हैं।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 82 मन्त्र 1-2)

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत् ।
पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम् ॥१॥

पदार्थः—(**सोमः**) जो सर्वोत्पादक प्रभु(**अरुषः**) प्रकाशस्वरूप (**वृषा**) सद्गुणों की वृष्टि करने वाला (**हरिः**) पापों के हरण करने वाला है, वह (**राजेव**) राजा के समान (**दस्मः**) दर्शनीय है। और वह (**गाः**) पृथिव्यादि लोक-लोकान्तरों के चारों ओर (**अभि अचिक्रदत्**) शब्दायमान हो रहा है। वह (**वारं**) वर्णीय पुरुष को जो (**अव्ययं**) दृढ़भक्त है उसको (**पुनानः**) पवित्र करता हुआ (**पर्येति**) प्राप्त होता है। (**न**) जिस प्रकार (**श्येनः**) विद्युत् (**घृतवन्तं**) स्नेहवाले (**आसदं**) स्थानों को (**योनिं**) आधार बनाकर प्राप्त होता है। इसी प्रकार उक्त गुण वाले परमात्मा ने (**असावि**) इस ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया ॥१॥

कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि ।
अपसेधन्दुरिता सोम मृळय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम् ॥२॥

पदार्थः—हे परमात्मन् ! (**वेधस्या**) उपदेश करने की इच्छा से आप (**माहिनं**) महापुरुषों को (**पर्येषि**) प्राप्त होते हो। और आप (**अत्यः**) अत्यन्त गतिशील पदार्थ के (**न**) समान (**अभिवाजं**) हमारे आध्यात्मिक यज्ञ को (**अभ्यर्षसि**) प्राप्त होते हैं। आप (**कविः**) सर्वज्ञ हैं (**मृष्टः**) शुद्ध स्वरूप हैं (**दुरिता**) हमारे पापों को (**अपसेधन्**) दूर करके (**सोम**) हे सोम ! (**मृळय**) आप हमको सुख दें। और (**घृतं वसानः**) प्रेम-भाव को उत्पन्न करते हुए (**निर्णिजं**) पवित्रता को (**परियासि**) उत्पन्न करें ॥२॥

विवेचन :- ऊपर ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 1-2 की फोटोकापी हैं, यह अनुवाद महर्षि दयानन्द जी के दिशा-निर्देश से उन्हीं के चेलों ने किया है और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से प्रकाशित है।

इनमें स्पष्ट है कि :- मन्त्र 1 में कहा है ''सर्व की उत्पत्ति करने वाला प्रभु तेजोमय शरीर युक्त है, पापों को नाश करने वाला और सुखों की वर्षा करने वाला अर्थात् सुखों की झड़ी लगाने वाला है, वह ऊपर सत्यलोक में सिंहासन (तख्त) पर बैठा है जो देखने में राजा के समान है।

यही प्रमाण सूक्ष्मवेद (कलामे कबीर) में है कि :-

अर्श कुर्श पर सफेद गुमट है, जहाँ परमेश्वर का डेरा।
श्वेत छत्र सिर मुकुट विराजे, देखत न उस चेहरे नूं।।

यही प्रमाण बाईबल ग्रन्थ तथा कुरआन शरीफ में है कि परमात्मा ने छः दिन में सृष्टि रची और सातवें दिन ऊपर आकाश में तख्त अर्थात् सिंहासन पर जा विराजा। (बाईबल के उत्पत्ति ग्रन्थ 2/26-30 तथा कुरआन शरीफ की सूरः फुर्कानि-25 आयत 52 से 59 में है।)

वह परमात्मा अपने अमर धाम से चलकर पृथ्वी पर शब्द वाणी से ज्ञान सुनाता है। वह वर्णीय अर्थात् आदरणीय श्रेष्ठ व्यक्तियों को प्राप्त होता है, उनको मिलता है। {जैसे 1. सन्त धर्मदास जी बांधवगढ(मध्य प्रदेश वाले को मिले) 2. सन्त मलूक दास जी को मिले, 3. सन्त दादू दास जी को आमेर (राजस्थान) में मिले 4. सन्त नानक देव जी को मिले 5. सन्त गरीब दास जी गाँव छुड़ानी जिला झज्जर हरियाणा वाले को मिले 6. सन्त घीसा दास जी गाँव खेखड़ा जिला बागपत (उत्तर प्रदेश) वाले को मिले 7. सन्त जम्भेश्वर जी (बिश्नोई धर्म के प्रवर्तक) को गाँव समराथल राजस्थान वाले को मिले तथा हजरत मुहम्मद को मिले। ऐसे वह कादर प्रभु अनेकों अच्छी आत्माओं को मिले हैं।}

वह परमात्मा अच्छी आत्माओं को मिलते हैं। जो परमात्मा के दृढ़ भक्त होते हैं, उन पर परमात्मा का विशेष आकर्षण होता है। उदाहरण भी बताया है कि जैसे विद्युत अर्थात् आकाशीय बिजली स्नेह वाले स्थानों को आधार बनाकर गिरती है। जैसे कांसी धातु पर बिजली गिरती है, पहले कांसी धातु के कटोरे, गिलास-थाली, बेले आदि-आदि होते थे। वर्षा के समय तुरन्त उठाकर घर के अन्दर रखा करते थे। वृद्ध कहते थे कि कांसी के बर्तन पर बिजली अमूमन गिरती है, इसी प्रकार परमात्मा अपने प्रिय भक्तों पर आकर्षित होकर मिलते हैं।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 के मंत्र नं. 2 में तो यह भी स्पष्ट किया है कि परमात्मा उन अच्छी आत्माओं को उपदेश करने की इच्छा से स्वयं महापुरूषों को मिलते हैं। उपदेश का भावार्थ है कि परमात्मा तत्वज्ञान बताकर उनको दीक्षा भी देते हैं। उनके सतगुरू भी स्वयं परमात्मा होते हैं। यह भी स्पष्ट किया है कि परमात्मा अत्यन्त गतिशील पदार्थ अर्थात् बिजली के समान तीव्रगामी होकर हमारे धार्मिक अनुष्ठानों में आप पहुँचते हैं। संत धर्मदास को परमात्मा ने यही कहा था कि मैं वहाँ पर अवश्य जाता हूँ जहाँ धार्मिक अनुष्ठान होते हैं क्योंकि मेरी अनुपस्थिति में काल कुछ भी उपद्रव कर देता है। जिससे साधकों की आस्था परमात्मा से टूट जाती है। मेरे रहते वह ऐसी गड़बड़ नहीं कर सकता। इसीलिए गीता अध्याय 3 श्लोक 15 में कहा है कि वह अविनाशी परमात्मा जिसने ब्रह्म को भी उत्पन्न किया, सदा ही यज्ञों में प्रतिष्ठित है अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों में उसी को इष्ट रूप में मानकर आरती

स्तुति करनी चाहिए।

इसी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 2 में यह भी स्पष्ट किया है कि आप (कविर्वेधस्य) कविर्देव है जो सर्व को उपदेश देने की इच्छा से आते हो, आप पवित्र परमात्मा हैं। हमारे पापों को छुड़वाकर अर्थात् नाश करके हे अमर परमात्मा! आप हम को सुःख दें और (द्युतम् वसानः निर्निजम् परियसि) हम आप की सन्तान हैं। हमारे प्रति वह वात्सल्य वाला प्रेम भाव उत्पन्न करते हुए उसी (निर्निजम्) सुन्दर रूप को (परियासि) धारण करें अर्थात् हमारे को अपने बच्चे जानकर जैसे पहले और जब चाहें तब आप अपनी प्यारी आत्माओं को प्रकट होकर मिलते हैं, उसी तरह हमें भी दर्शन दें।

अब ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 17 का अनुवाद :-

अनुवाद :- (शिशुम् जज्ञानम् हर्यन्तम्) परमेश्वर जान-बूझकर यानि परिस्थिति को समझकर तत्वज्ञान बताने के उद्देश्य से शिशु रूप में प्रकट होता है, आपके ज्ञान को सुनकर (मरूतो गणेन) भक्तों का बहुत बड़ा समूह उस परमात्मा का अनुयाई बन जाता है।

(मंजन्ति शुम्यन्ति वहिन्) आपका गूढ़ ज्ञान बुद्धिजीवी लोगों को समझ आता है। वे उस परमेश्वर की स्तुति-भक्ति तत्वज्ञान के आधार से करते हैं, वह भक्ति (वहिन्) शीघ्र लाभ देने वाली होती है व परमात्मा अपने तत्वज्ञान को (काव्येना) कवित्व से अर्थात् कवियों की तरह दोहों, शब्दों, लोकोक्तियों, चौपाईयों द्वारा (कविर् गीर्भिः) कविर् वाणी द्वारा अर्थात् कबीर वाणी द्वारा (पवित्रम् अतिरेभन्) शुद्ध ज्ञान को ऊँचे स्वर में गर्ज-गर्जकर बोलता है। वह (कविः) कवि की तरह आचरण करने वाला कविर्देव, (सन्त्) संत या ऋषि रूप में प्रकट (सोम) अमर परमात्मा होता है। (ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 17)

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 18 :-

अनुवाद :- मन्त्र 17 में कहा कि ऋषि या सन्त रूप में प्रकट होकर परमात्मा अमंतवाणी अपने मुख कमल से बोलता है और उस ज्ञान को समझकर अनेकों अनुयाईयों का समूह बन जाता है। (य) जो वाणी परमात्मा तत्वज्ञान की सुनाता है। वे (ऋषिकंत्) ऋषि रूप में प्रकट परमात्मा कंत (सहंस्रणीथः) हजारों वाणियाँ अर्थात् कबीर वाणियाँ (ऋषिमना) ऋषि स्वभाव वाले भक्तों के लिए (स्वर्षाः) आनन्ददायक होती हैं। (कविनाम पदवीः) कवित्व से दोहों, चौपाईयों में वाणी बोलने के कारण वह परमात्मा कवियों में से एक प्रसिद्ध कवि की पदवी भी प्राप्त करता है। वह (सोम) अमर परमात्मा (सिषासन्) सर्व की पालन की इच्छा करता हुआ प्रथम स्थिति में (महिषः) बड़ी पंथ्वी अर्थात् ऊपर के लोकों में (तंतीयम् धाम) तीसरे धाम अर्थात् सत्यलोक

के तीसरे पष्ठ पर (अनुराजति) तेजोमय शरीर युक्त (स्तुप) गुम्बज में (विराजम्) विराजमान है, वहाँ बैठा है। यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3 में है कि परमात्मा सर्व लोकों के ऊपर के लोक में (तिष्ठति) बैठा (विराजमान) है।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 19 से पुस्तक विस्तार के कारण केवल अपने मतलब की जानकारी प्राप्त करते हैं।

च॒मू॒षच्छ्ये॒नः शकु॑नो वि॒भृत्वा॑ गोविन्दुद्र॒प्स आयु॑धानि॒ बिभ्र॑त् ।
अ॒पामू॒र्मिं सच॑मानः समु॒द्रं तु॒रीयं॒ धाम॑ महि॒षो विव॑क्ति ॥१९।

पदार्थः—(**अपामूर्मिम्**) प्रकृति की सूक्ष्म से सू म शक्तियों के साथ (**सचमानः**) जो संगत है और (**समुद्रम्**) "सम्यक् द्रवन्ति भूतानि यस्मात् स समुद्रः" जिससे सब भूतों की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय होता है। वह (**तुरीयम्**) चौथा (**धाम**) परमपद परमात्मा है। उसको (**महिषः**) मह्यते इति महिषः महिष इति महन्नामसु पठितम् नि० ३—१३। महापुरुष उक्त तुरीय परमात्मा का (**विवक्ति**) वर्णन करता है। वह परमात्मा (**चमूसत्**) जो प्रत्येक बल में स्थित है (**श्येनः**) सर्वोपरि प्रशंसनीय है और (**शकुनः**) सर्वशक्तिमान् है। (**गोविन्दुः**) यजमानों को तृप्त करके जो (**द्रप्सः**) शीघ्रगति वाला है (**आयुधानि, बिभ्रत्**) अनन्त शक्तियों को धारण करता हुआ इस सम्पूर्ण संसार का उत्पादक है ॥१९॥

यह फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 19 की है। इसका अनुवाद महर्षि दयानंद के चेले आर्यसमाजियों ने किया है जिसमें "तुरीयम्" का अर्थ चौथा किया है तथा "धाम" का अर्थ परमपद परमात्मा किया है। फिर अनुवादक ने स्पष्ट किया है कि तुरीयम् परमात्मा यानि चौथे परमात्मा का महापुरूष वर्णन करता है।

विचार करें :- तुरीयम् के माने चौथा ठीक है, परंतु धाम का अर्थ परमात्मा गलत है। धाम का अर्थ स्थान है। वास्तव में चौथे धाम (अनामी लोक) के विषय में बताया है। उसे उदाहरण के तौर पर समुद्र की संज्ञा दी है। जैसे समुद्र से बारिश का जल अन्य स्थानों पर गिरता है। उस सारे जल का उद्गम स्थान समुद्र है। इसी प्रकार चौथे अनामी लोक में विराजमान होकर कबीर परमेश्वर जी ने अन्य सब लोकों व ब्रह्मण्डों की तथा आत्माओं की रचना की है। इसलिए समुद्र शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस मन्त्र में चौथे धाम का वर्णन है। आप जी संष्टि रचना में पढ़ेंगे, उससे पूर्ण जानकारी होगी कि नीचे से चौथा धाम अकह (अनामी) लोक है। जिस धाम में विराजमान होकर परमेश्वर ने नीचे के सब धामों (लोकों) की उत्पत्ति की थी। उसका वर्णन इस वेद मंत्र में है।

परमात्मा ने ऊपर के चार लोक अजर-अमर रचे हैं। 1. अनामी लोक जो सबसे ऊपर है 2. अगम लोक 3. अलख लोक 4. सत्य लोक।

हम पथ्वी लोक पर हैं, यहाँ से ऊपर के लोकों की गिनती करेंगे तो 1. सत्यलोक 2. अलख लोक 3. अगम लोक तथा चौथा अनामी लोक उस चौथे धाम में बैठकर परमात्मा ने सर्व ब्रह्माण्डों व लोकों की रचना की। शेष रचना सत्यलोक में बैठकर की थी। यह (तुरिया) चौथा धाम है। उसमें मूल पाठ मन्त्र 19 का भावार्थ है कि तत्वदर्शी सन्त चौथे धाम तथा चौथे परमात्मा का (विवक्ति) भिन्न-भिन्न वर्णन करता है। पाठकजन कपया पढ़ें सष्टि रचना इसी पुस्तक के पष्ठ 250 पर जिससे आप जी को ज्ञान होगा कि लेखक (संत रामपाल दास) ही वह तत्वदर्शी संत है जो तत्वज्ञान से परिचित है।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 20 :-

मर्य न शुभ्रः तन्वा मजानः अत्यः न सत्वा सनये धनानाम्।
वर्षेव यूथा परि कोशम अर्षन् कनिक्रदत् चम्वोः आविवेश।।(9:96:20)

अनुवाद :- (मर्यः) मनुष्य (न) के समान यानि जैसे मनुष्य सुन्दर वस्त्र धारण करता है, ऐसे परमात्मा (शुभ्रः तन्व) सुन्दर शरीर (मजानः) धारण करके (अत्यः) अत्यन्त (सत्वा) गति से चलता हुआ (धनानाम्) भक्ति धन के धनियों अर्थात् पुण्यात्माओं को (सनये) प्राप्ति के लिए आता है (यूथा वषेव) जैसे एक समुदाय को उसका सेनापति प्राप्त होता है। ऐसे वह परमात्मा संत व ऋषि रूप में प्रकट होता है तो उसके बहुत सँख्या में अनुयाई बन जाते हैं और परमात्मा उनका गुरू रूप में मुखिया होता है। वह परमात्मा (परि कोशम्) प्रथम ब्रह्माण्ड में (अर्षन्) प्राप्त होकर अर्थात् आकर (कनिक्रदत्) ऊँचे स्वर में सत्यज्ञान उच्चारण करता हुआ (चम्वौ) पथ्वी खण्ड में (अविवेश) प्रविष्ट होता है।

भावार्थ :- जैसे पूर्व में वेद मन्त्रों में कहा है कि परमात्मा ऊपर के लोक में रहता है, वहाँ से गति करके पथ्वी पर आता है, अपने रूप को अर्थात् शरीर के तेज को सरल करके आता है। इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 20 में उसी की पुष्टि की है। कहा है कि परमात्मा ऐसे अन्य शरीर धारण करके पथ्वी पर आता है। जैसे मनुष्य वस्त्र धारण करता है और (धनानाम्) भक्ति के धनी दढ़ भक्तों (अच्छी पुण्यात्माओं) को प्राप्त होता है, उनको वाणी उच्चारण करके तत्वज्ञान सुनाता है।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 95 मन्त्र 2)

हरिः सृजानः पथ्यामृतस्येयर्ति वाचमरितेव नावम् ।
देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे ॥२॥

पदार्थः—(**हरिः**) वह पूर्वोक्त परमात्मा (**सृजानः**) साक्षात्कार को प्राप्त हुआ (**ऋतस्य पथ्यां**) वाक् द्वारा मुक्ति मार्ग की (**इयर्ति**) प्रेरणा करता है। (**अरितेव नावम्**) जैसा कि नौका के पार लगाने के समय में नाविक प्रेरणा करता है और (**देवानां देवः**) सब देवों का देव (**गुह्यानि**) गुप्त (**नामाविष्कृणोति**) संज्ञाओं को प्रकट करता है (**बर्हिषि प्रवाचे**) वाणीरूप यज्ञ के लिए ॥२॥

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मन्त्र 2 का अनुवाद महर्षि दयानन्द के चेलों ने किया है जो बहुत ठीक किया है। इसका भावार्थ है कि पूर्वोक्त परमात्मा अर्थात् जिस परमात्मा के विषय में पहले वाले मन्त्रों में ऊपर कहा गया है, वह (सजानः) अपना सरल शरीर धारण करके (ऋतस्य पथ्यां) सत्यभक्ति का मार्ग अर्थात् यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान अपनी अमतमयी वाक् अर्थात् वाणी द्वारा मुक्ति मार्ग की प्रेरणा करता है। {गीता अध्याय 4 श्लोक 32 का समर्थन इस वेद मंत्र में है।}

वह मन्त्र ऐसा है जैसे (अरितेव नावम्) नाविक नौका में बैठाकर पार कर देता है, ऐसे ही परमात्मा सत्यभक्ति मार्ग से नाम रूपी नौका के द्वारा साधक को संसार रूपी दरिया के पार करता है। वह (देवानाम् देवः) सब देवों का देव अर्थात् सब प्रभुओं का प्रभु यानि परमेश्वर (बर्हिषि प्रवाचे) वाणी रूपी ज्ञान यज्ञ के लिए (गुह्यानि) गुप्त (नामा आविष्कणोति) नामों का अविष्कार करता है अर्थात् जैसे गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ''ऊँ तत् सत्'' में तत् तथा सत् ये गुप्त मन्त्र हैं जो उसी परमेश्वर ने मुझ (संत रामपाल दास) को बताऐ हैं। उनसे ही पूर्ण मोक्ष सम्भव है।

सूक्ष्म वेद में परमेश्वर ने कहा है कि :-

''सोहं'' शब्द हम जग में लाए, सारशब्द हम गुप्त छिपाए।

भावार्थ :- परमेश्वर ने स्वयं ''सोहं'' शब्द भक्ति के लिए बताया है। यह सोहं मन्त्र किसी भी प्राचीन ग्रन्थ (वेद, गीता, कुरआन, पुराण तथा बाईबल) में नहीं है। फिर सूक्ष्म वेद में कहा है कि :-

सोहं ऊपर और है, सत्य सुकत एक नाम।
सब हंसो का जहाँ बास है, बस्ती है बिन थाम।।

भावार्थ :- ''सोहं'' नाम तो परमात्मा ने प्रकट कर दिया, आविष्कार कर दिया परन्तु सार शब्द को गुप्त रखा था। अब मुझे (लेखक संत रामपाल को) बताया है जो साधकों को दीक्षा के समय बताया जाता है। इसका गीता

अध्याय 17 श्लोक 23 में कहे ''ऊँ तत् सत्'' से सम्बन्ध है।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 94 मन्त्र 1)

अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः ।
अपो वृणानः पवते कवीयन्व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ।।१।।

पदार्थः—(**सूर्य्ये**) सूर्य के विषय में (**न**) जैसे (**विशः**) रश्मियां प्रकाशित करती हैं । उसी प्रकार (**धियः**) मनुष्यों की बुद्धियां (**स्पर्धन्ते**) अपनी-अपनी उत्कट शक्ति से विषय करती हैं । (**अस्मिन् अधि**) जिस परमात्मा में (**वाजिनीव**) सर्वोपरि बलों के समान (**शुभः**) शुभ बल है वह परमात्मा (**अपोवृणानः**) कर्मों का अध्यक्ष होता हुआ (**पवते**) सबको पवित्र करता हैं । (**कवीयन्**) कवियों की तरह आचरण करता हुआ (**पशुवर्धनाय**) सर्वद्रष्टृत्व पद के लिए (**व्रजं, न**) इन्द्रियों के अधिकरण मन के समान 'व्रजन्ति इन्द्रियाणि यस्मिन् तद्व्रजम्' (**मन्म**) जो अधिकरणरूप है वही श्रेय का धाम है ।।१।।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1 का अनुवाद भी आर्यसमाज के विद्वानों द्वारा किया गया है।

विवेचन :- पुस्तक विस्तार को ध्यान में रखते हुए उन्हीं के अनुवाद से अपना मत सिद्ध करते हैं। जैसे पूर्व में लिखे वेदमन्त्रों में बताया गया है कि परमात्मा अपने मुख कमल से वाणी उच्चारण करके तत्वज्ञान बोलता है, लोकोक्तियों के माध्यम से, कवित्व से दोहों, शब्दों, साखियों, चौपाईयों के द्वारा वाणी बोलने से प्रसिद्ध कवियों में से भी एक कवि की (पदवी) उपाधि प्राप्त करता है। उसका नाम कविर्देव अर्थात् कबीर साहेब है।

इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1 में भी यही स्पष्ट है कि जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, वह (कवियन् व्रजम् न) कवियों की तरह आचरण करता हुआ पथ्वी पर विचरण करता है।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 20 मन्त्र 1)

प्र कविर्देववीतयेऽव्यो वारेभिरर्षति ।
साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः ।।१।।

पदार्थः—वह परमात्मा (**कविः**) मेधावी है और (**अव्यः**) सबका रक्षक है (**देववीतये**) विद्वानों की तृप्ति के लिये (**अर्षति**) ज्ञान देता है (**साह्वान्**) सहनशील है (**विश्वाः, स्पृधः**) सम्पूर्ण दुष्टों को संग्रामों में (**अभि**) तिरस्कृत करता है ।।१।।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 20 मन्त्र 1 का अनुवाद भी आर्यसमाज के विद्वानों ने किया है। इसका अनुवाद ठीक कम गलत अधिक है। इसमें

मूल पाठ में लिखा हैः-

'प्र कविर्देव वीतये अव्यः वारेभिः अर्षति साह्वान् बिश्वाः अभि स्पर्धः

सरलार्थ :- (प्र) वेद ज्ञान दाता से जो दूसरा (कविर्देव) कविर्देव यानि कबीर परमेश्वर है, वह विद्वानों अर्थात् जिज्ञासुओं को, (वीतये) ज्ञान धन की तप्ति के लिए (वारेभिः) श्रेष्ठ आत्माओं को (अर्षति) ज्ञान देता है। वह (अव्यः) अविनाशी तथा रक्षक है, (साह्वान्) सहनशील (विश्वाः) तत्वज्ञान हीन सर्व दुष्टों (झूठे गुरूओं) को (स्पधः) अध्यात्म ज्ञान की स्पर्धा अर्थात् ज्ञान गोष्ठी रूपी वाक् युद्ध में (अभि) पूर्ण रूप से तिरस्कत करता है, उनको फिट्टे मुँह कर देता है।

विशेष :- (क) इस मन्त्र के अनुवाद में आप फोटोकापी में देखेंगे तो पता चलेगा कि कई शब्दों के अर्थ आर्य विद्वानों ने छोड़ रखे हैं जैसे = ''प्र'' ''वारेभिः'' जिस कारण से वेदों का यथार्थ भाव सामने नहीं आ सका।

(ख) मेरे अनुवाद से स्पष्ट है कि वह परमात्मा अच्छी आत्माओं (दढ़ भक्तों) को ज्ञान देता है, उसका नाम भी लिखा है :- ''कविर्देव''। हम कबीर परमेश्वर कहते हैं।

विवेचन :- उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि पूर्ण ब्रह्म (परमेश्वर) यानि सजनहार कबीर अल्लाह है। वह ही यथार्थ सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान सूक्ष्मवेद {जो उसकी बोली हुई कबीर बाणी (कलामे कबीर) है} में बताता है। वह सम्पूर्ण ज्ञान वर्तमान में दास (रामपाल दास) के अतिरिक्त विश्व में किसी के पास नहीं है। यह अभिमान की बात नहीं, सच्चाई है। सर्व धर्मों के मानव (स्त्री-पुरूष) उसी अल्लाह कबीर (परमेश्वर कबीर जी) की अपनी आत्मा है। सबका कल्याण करना उस परमेश्वर का उद्देश्य है। यहाँ पर शैतान (काल ब्रह्म) ने सबको भ्रमित कर रखा है। सच्ची राह वही आकर दिखाता है। अब आप जी और अधिक जानकारी पढ़ें उसी परमेश्वर के विषय में वह कैसे-कैसे वेश बनाकर अच्छी आत्माओं तक पहुँचता है।

☛ अल-खिज्र को आज अलग-अलग सभ्यताओं में विभिन्न नामों से जाना व पूजा जाता है, अल-खिज्र का 55 हदीसों में जिक्र मिलता है, कुछ वाकये निम्नलिखित हैं :-

1. मुहम्मद को अल-खिज्र का दिखाई देना व साथ घूमना।

Al-Zuhad में विवरण है। मुहम्मद कहते हैं कि अल-खिज्र व एल्लियाह/इलयास / **Elijah** हर साल रमजान का महीना जेरूसलम में एक साथ गुजारते हैं।

कुछ मुसलमान व ईसाई शास्त्रियों का ये मानना है कि अल-खिज्र व एल्लियाह एक ही शख्स है। एल्लियाह का बाईबल में 5 जगह (मत्ती/**Matthew 17:1-8, 2 Chronicles 21:12, 1** राजा/**King, 2** राजा/**King, Malachi 3:1 & 4:5**) और कुरआन शरीफ में 2 जगह (**Sura Al-Saafat 37:123-132 & Sura an'am 6:85**) जिक्र है।

Umar II में विवरण है, जो शख्स मुहम्मद के साथ टहल रहा था, वो अल-खिज्र था।

Abu Zura Al Razi में विवरण है, मुहम्मद अपने जीवन काल में अल-खिज्र से दो बार मिले थे। एक बार जवानी में और एक बार बुढ़ापे में पर अल-खिज्र की उम्र बिल्कुल नहीं बदली थी।

Ayun Akhbar Al-Rida में विवरण है, अली कहता है कि मदीना की एक गली से गुजरते वक्त अल-खिज्र ने हजरत मुहम्मद और मुझे दर्शन दिए और हमसे बात की।

2. (**Al-Bayhaqi**) अल-खिज्र का मुहम्मद के अंतिम संस्कार पर मौजूद होना व अली से मुलाकात।

मुहम्मद की मत्यु के उपरांत उनके शव को अंतिम दर्शन के लिए मुसलमानों के बीच रखा गया था। तब एक ताकतवर दिखने वाला सुंदर नाक-नक्शे का और आकर्षित करने वाली हस्ती का सफेद दाढ़ी वाला एक आदमी वहाँ मौजूद मुसलमानों की भीड़ को चीरते हुए मुहम्मद के शव के पास पहुँचा और शोक व्यक्त करके चला गया। बाद में अली ने बताया कि वह शख्स अल-खिज्र था।

एक दूसरे व्याख्यान में अल-खिज्र अली को काबा के पास दिखाई दिए। वहाँ अली को अल-खिज्र ने एक दुआ (मंत्र) दी और कहा कि तुम इस दुआ को करना, ये दुआ तुम्हें अद्भुत लाभ देगी। तुम्हारे गुनाहों की गिनती आसमान के तारों या जमीन पर पड़ी कंकरों जितनी क्यों ना हो, ये दुआ उनका एक पल (**Blink of an eye**) में नाश कर देगी।

3. **Lataif al Minan (1:84-98)** में जिक्र है कि अल-खिज्र आज भी जिंदा है।

मुसलमानों का ये मानना है कि अल-खिज्र अमर (immortal) है और आज भी धरती पर जिंदा व मौजूद है और अल्लाह की राह पर जो उलझन में हैं, उनका मार्गदर्शन करता है।

4. अल-खिज्र के बारे में और कुछ प्रचलित कहानियाँ।

मुस्लिम शास्त्रियों का मानना है कि अल-खिज्र को लोगों के बीच उसके नरम हाथों से पहचाना जा सकता है। कुछ का मानना है कि अल-खिज्र के हाथों में हड्डियाँ नहीं हैं। सूफी इमामों का मानना है कि हम अपने जीवन काल में एक बार अल-खिज्र से जरूर मिलते हैं। जब आप किसी सफेद दाढ़ी वाले आदमी से हाथ मिलाओ और उसके हाथ में हड्डी ना हों तो समझ जाना वो अल-खिज्र है। अल-खिज्र को जिंदा पीर भी कहा गया है। मुस्लिम देशों में अल-खिज्र की अनगिनत यादगार मौजूद हैं।

''हजरत मुहम्मद जी को अल्लाह कबीर मिले''

जैसा कि वेदों में प्रमाण है कि परमेश्वर यानि कादर अल्लाह सारी कायनात (सृष्टि) को पैदा करने वाला नेक आत्माओं को ऊपर आसमान वाले (तख्त) सिंहासन से पृथ्वी पर आकर मिलता है। उन्हीं नेक आत्माओं में हजरत मुहम्मद जी हैं जिनको अल्लाह अकबर मिले। परंतु अल्लाह किसी ने देखा ही नहीं है। अन्य विद्वान गलत ज्ञान के आधार से अल्लाह को बेचून (निराकार) बताते हैं। जिस कारण से यह विश्वास होना कि जो अल-खिज्र रूप में मिला है, वह अल्लाह ताला ही है, कठिन है। इसी कारण से हजरत मुहम्मद जी अल-खिज्र रूप में मिले। अल्लाह ताला को पहचान नहीं सके।

संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, प्रांत-हरियाणा, देश-भारत) को भी दस वर्ष की उम्र में जिंदा बाबा यानि अल-खिज्र वाले वेश में अल्लाह ताला मिला था। जब बालक गरीबदास जी को विश्वास नहीं हुआ कि यह बाबा जिंदा रूप में परमेश्वर ही है तो संत गरीबदास जी को अल्लाह ताला ऊपर आसमान में बने अपने (तख्त) सिंहासन वाले सतलोक में लेकर गए। बालक गरीबदास जी को ऊपर के सब आसमानों (ब्रह्मंडों व लोकों) की सैर करवाई। वहाँ की सारी व्यवस्था दिखाई। तत्त्वज्ञान उनकी आत्मा में डाल दिया। संत गरीबदास जी को वापिस शरीर में पृथ्वी पर छोड़ा। बालक गरीबदास को मृत जानकर चिता के ऊपर लकड़ियों के ढ़ेर पर रखा गया। अग्नि लगाने की तैयारी थी। उसी समय बालक गरीबदास जी जीवित हो उठे। उठकर चल पड़े। संत गरीबदास को अल्लाह अकबीर (परमेश्वर कबीर) जी ने जो बताया, वह संत गरीबदास जी ने अपने मुख से उच्चारण करके वाणी (साखी) बोलकर बताया कि कबीर जी ने कहा था कि :-

गरीब खुरासान काबुल किला, बगदाद बनारस एक।
बलख और विलायत (इंग्लैंड) तक हम ही धारें भेष।।

अर्थात् खुदा कबीर जी ने बताया है कि सारी पथ्वी के ऊपर जितने भी देश-प्रदेश हैं, जहाँ-जहाँ अच्छी आत्माएँ जन्मी हैं, उनको यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताने तथा सच्ची साधना बताने के लिए मैं ही विभिन्न (भेष) वेश धारण करके जाता हूँ। अरब देशों में काबुल, खुरासान (रूम का एक शहर), बगदाद (इराक देश की राजधानी), बनारस (भारत का एक शहर) तथा (विलायत) इंग्लैंड देश आदि-आदि में मैं ही जाता हूँ। मेरे लिए सब देश, सब मानव एक समान हैं।

हजरत मुहम्मद जी को भी जिंदा वेश धारण करके मक्का शहर में खुदा कबीर मिले थे। संत गरीबदास को बताया था। वाणी (अमर कछ रमैंणी से):-

मुहमंद बोध सुनो ब्रह्म ज्ञानी, शंकर दीप से आये प्राणी।।(24)
लोक दीप कूं हम लेगैऊ, इच्छा रूपी वहाँ न रहेऊ।।(25)
उलट मुहमंद महल पठाया, गुझ बीरज एक कलमा धाया।।(26)
रोजा बंग, निवाज दई रे, बिसमल की नहीं बात कही रे।।(27)

अर्थात् कबीर जी ने बताया है कि नबी मुहम्मद की आत्मा शिव (तमगुण) देवता के (शंकर द्वीप) लोक से आयी थी। भक्ति में ध्यान अधिक रहता था। जब उनको काल के भेजे फरिस्ते जबरील ने काल ब्रह्म वाला ज्ञान डरा-धमकाकर बताया जो हजरत मुहम्मद ने जनता तक पहुँचाया जो अधूरा तथा काल जाल में फँसाए रखने वाला ज्ञान है। जब मैंने (कबीर खुदा ने) देखा कि नेक आत्मा मुहम्मद काल के जाल में फँस गए हैं, तब उसे मिला। यथार्थ ज्ञान समझाया। उनके आग्रह पर उनको ऊपर अपने लोक में जहाँ मेरा (तख्त) सिंहासन है, लेकर गया। उसका शंकर द्वीप भी दिखाया जहाँ से वह पथ्वी पर आया था। परंतु मुहम्मद ने सतलोक में रहने की इच्छा व्यक्त नहीं की। इसलिए वापिस शरीर में छोड़ दिया। फिर भी मुहम्मद की समय-समय पर गुप्त मदद करता रहा। वाणी (मुहम्मद बोध से) :-

ऐसा ज्ञान मुहम्मद पीरं, मारी गऊ शब्द के तीरं।
शब्दै फिर जिवाई, जिन गोसत नहीं भख्या।
हंसा राख्या ऐसे पीर मुहम्मद भाई।।

अर्थात् परमेश्वर कबीर जी ने एक कलमा ''अल्लाह अकबर'' मुहम्मद जी को जाप करने को कहा। उससे मुहम्मद जी में सिद्धियाँ प्रकट हो गई। एक दिन मुहम्मद जी ने एक गाय को वचन सिद्धि से मारकर सैंकड़ों मुसलमानों के सामने जीवित कर दी। पीर मुहम्मद ऐसे महान थे। उन्होंने जीव (गाय) की रक्षा की। उसका माँस नहीं खाया।

वाणी (अमर कछ रमैंणी से) :-

चार यार मिल मसलत भीनी, गऊ पकड़कर बिसमल कीन्ही।।(28)
तब हम मुहम्मद याद किया रे, शब्द सरूपी हम बेग गया रे।।(29)
मूई गऊ हम बेग जिवाई, जब मुहम्मद के निश्चय आई।।(30)
तुम्ह सतकबीर अल्लह दरवेसा, मोमिन मुहम्मद का गया अंदेशा।।(31)
दास गरीब अनाहद थीरं, भज ल्यौ सतनाम और सतकबीरं।।(32)

अर्थात् जिन मुसलमानों के सामने हजरत मुहम्मद जी ने वचन की सिद्धि-शक्ति से गाय (Cow) मारकर फिर वचन (शब्द) से ही जीवित की थी, उन्होंने यह बात सबको बताई। जो विरोधी लोग थे, उन्होंने मसलत (Meeting) की और फैसला लिया कि हम गाय को बिसमिल करेंगे यानि गाय की गर्दन काटकर मारेंगे। हमारे सामने मुहम्मद जी गाय को जीवित करेंगे तो मानेंगे।

निश्चित दिन हजारों मुसलमानों तथा गैर-मुसलमानों के सामने गाय को काटा गया। मुहम्मद जी ने गाय को जीवित करने के लिए सब मंत्र-जंत्र कर लिए, गाय जीवित नहीं हुई। तब मुहम्मद जी ने अल्लाह कबीर को अल्लाह अकबर कहकर ऊँची आवाज में कई बार पुकारा। अल्लाह अकबर बोलते-बोलते धरती के ऊपर हर बार मथा लगाकर और फिर आकाश की ओर मुख करके दोनों हाथ फैलाकर अल्लाह अकबर पुकारने लगा जो वर्तमान में सजदा कहा जाने लगा। तब कबीर खुदा वहाँ पर पहुँचा जो केवल हजरत मुहम्मद जी को दिखाई दे रहा था। उपस्थित लोगों को दिखाई नहीं दे रहा था। हजरत मुहम्मद ने अल्लाह कबीर को सजदा किया और अपनी इज्जत रखने के लिए अर्ज की। तब कबीर परमेश्वर जी (कादर अल्लाह कबीर जी) ने तुरंत गाय जीवित कर दी। तब मुहम्मद जी की शंका (अंदेशा) समाप्त हुई और कहा कि हे सतकबीर (अमर कबीर)! आप वास्तव में अल्लाह के दरवेश (संत यानि नबी) हो। हजरत मुहम्मद जी अभी भी अल्लाह कबीर जी को खुदा नहीं मान रहे थे। खुदा का संत शक्तियुक्त मान रहे थे। जिस कारण से परमेश्वर कबीर जी गाय को जीवित करके अंतर्ध्यान हो गए।

उसके पश्चात् खुदा कबीर जी हजरत मुहम्मद की अरूचि देखकर उसे उस वेश में नहीं मिले। इतनी शक्ति देखकर भी काल व कर्म के प्रभाव से सतलोक में जाने की बात नहीं मानी। सत्य साधना उनको नहीं मिली। जो काल ब्रह्म (पर्दे के पीछे से बोलने वाले प्रभु) की बताई साधना {रोजा रखना, नमाज करना, अजान (बंग) लगाना} से जन्नत (Heaven) में जाने की नहीं हैं। जो कलमा जाप करने का कबीर अल्लाह जी ने मुहम्मद जी को दिया था, उससे सिद्धि आती हैं। युद्ध में सफलता प्राप्त हो सकती है। वह जन्नत जाने

में सहयोगी नहीं है। जिस कारण से नबी मुहम्मद जी जन्नत में भी नहीं जा सके। पित्तर लोक में अन्य नबियों के पास गए हैं। फिर अन्य जन्म धारण करेंगे।

5. रूमी द्वारा अल-खिज्र का जिक्र। रूमी द्वारा अपने मुर्शीद (गुरू) समस्तरबेज (**Shams Tebrez**) की बड़ाई में लिखी दो रचनाओं **Mansnavi** (मसनवी) और **Diwan-e-Kabir** (दीवान-ए-कबीर) में भी अल-खिज्र का जिक्र है।

6. Hayat-al-Qulub (Volume 2) Battle of Badar

Amirul Momineen के हवाले से **Ibn Babawayh** बताते हैं : अली बयान करता है कि बदर की लड़ाई से पहले एक रात अल-खिज्र मुझे सपने में दिखाई दिए। मैंने उनसे कहा कि कृपा करके मुझे ऐसी दुआ (नाम मंत्र) दीजिए जिससे मैं लड़ाई में जीत हासिल कर सकूँ। अल-खिज्र ने मुझे कहा पढ़ो **"O he, O one who is not except that He is."** सुबह होने पर मैंने इसकी चर्चा हजरत मुहम्मद से की। ये सुन मुहम्मद ने कहा, अली! अल-खिज्र ने तुम्हें अल्लाह का सबसे बड़ा नाम सिखाया है। अली आगे बताता है कि मैं बदर की लड़ाई के दौरान अल-खिज्र द्वारा बताए बड़े नामों को निरंतर याद कर रहा था।

''इस्लाम की अनसुलझी पहेली''

यदि पुनर्जन्म न माना जाए तो निम्न प्रश्नों के उत्तर इस्लामिक प्रवक्ताओं के पास नहीं हैं :-

जैसे कोई निर्धन है, कोई धनवान है। कोई औलाद वाला है, कोई निःसंतान है। कोई रयत है, कोई महाराजा सुल्तान है। कोई अंधा है, कोई लंगड़ा है, कोई सर्वांगवान है। यह विचार करना अनिवार्य है कि उपरोक्त अंतर किस कारण से हैं। यदि पुनर्जन्म नहीं मानें तो ये अनसुलझी पहेली सदा बनी रहेगी। यदि हम पुनर्जन्म मानते हैं तो सुलझ जाती है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि :- ''पिछले जप–तप से होत हैं पूर्ण हंस मुराद।''

अर्थात् हे भक्त आत्मा! पूर्व जन्म में किए जाप व तप से मन्नत (मुराद) पूर्ण होती है। पहले वाले जन्मों में जिसने जैसा जप तथा तप किया है या पाप-पुण्य किया है। उसी के आधार से कोई राजा बना है, कोई बड़ा राज अधिकारी बना है, कोई बड़ा सेठ धनवान बना है। कोई निर्धन है, कोई अंधा है, कोई लंगड़ा है। कोई रोगी है, कोई स्वस्थ है। कोई नौकर है, कोई नौकरानी (लौंडी) है। कोई रानी, कोई महारानी है। कोई पूर्ण आयु जीवित रहता है, कोई अल्प आयु में मर जाता है। कोई पशु है, कोई पक्षी है। कोई गंदी नाली के कीड़े हैं। यह सब पूर्व जन्मों में किए कर्मों के आधार से ही होता है।

''पुनर्जन्म होता है, पढ़ें ढ़ेर सारे प्रमाण''

7. सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम

सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम बलखी को भी अल-खिज्र के दर्शन हुआ करते थे और उनसे इल्म पाकर इब्राहिम ने राजगद्दी त्याग दी और बाकी का जीवन अल्लाह की इबादत में गुजार दिया। रूमी ने अपने मुर्शीद समस्तरबेज से मिलने के बाद लिखी पुस्तक "Masnavi" में इब्राहिम के जीवन का वर्णन किया है।

सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम को अल कबीर मिले थे। बार-बार समझाने के पश्चात् राज्य त्यागकर मोक्ष के लिए निकले थे। कृपया पढ़ें अल्लाह कबीर (परमेश्वर कबीर) ने सुल्तान इब्राहिम को कैसे काल के जाल से निकाला?

''सम्मन वाली आत्मा ही सुल्तान इब्राहिम था''

जिस समय परमेश्वर कबीर जी ने काशी में एक सौ बीस वर्ष लीला की थी, उस समय दिल्ली के निवासी सम्मन जाति से मनियार, उसकी पत्नी नेकी तथा पुत्र शिव (सेऊ) ने परमेश्वर से दीक्षा ली थी। आर्थिक स्थिति कमजोर थी। परमात्मा के उपदेश का दृढ़ता से पालन करते थे। परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास था। दोनों पति-पत्नी स्त्रियों को चूड़ियाँ पहनाने का कार्य घर-घर जाकर करते थे। साथ में अपने गुरूदेव कबीर जी की महिमा भी किया करते थे।

बताया करते थे कि हमारे सतगुरू देव जी ने राजा सिकंदर लोधी का असाध्य रोग आशीर्वाद मात्र से ठीक कर दिया। बादशाह सिकंदर ने स्वामी रामानन्द जी की गर्दन काट दी थी। उसको सतगुरू कबीर जी ने धड़ पर गर्दन जोड़कर जीवित कर दिया। एक कमाल नाम का लड़का मर गया था। उसके कबीले वालों ने अंतिम संस्कार रूप में दरिया में प्रवाह कर दिया था। शेखतकी जो राजा सिकंदर जी का धर्मगुरू है, उसको विश्वास नहीं था कि रामानंद जी की गर्दन काटने के पश्चात् भी कबीर जी ने जीवित कर दिया। वह राजा से कहता था कि कबीर जन्त्र-मन्त्र जानता है और कुछ नहीं है, मुर्दे कभी जिंदे होते हैं। मेरे सामने कोई मुर्दा जिन्दा करे तो मानूँ।

राजा सिकंदर को कबीर जी पर पूर्ण विश्वास था क्योंकि वह तो रोग से महादुःखी था तथा रामानन्द स्वामी जी को अपने हाथों से कत्ल किया था। उसके सामने कबीर जी ने जीवित किया था। उस दिन शेखतकी भी दरिया पर उपस्थित था। मुर्दे को देखकर कहा कि यदि मेरे सामने इस मुर्दे को जीवित कर दे तो मैं कबीर को अल्लाह का नबी मान लूँगा।

कबीर जी ने कहा कि हे शेख जी! आप भी बड़े पहुँचे हुए पीर हो, आप कोशिश करो, बाद में कहोगे कि मैं भी कर देता। उपस्थित सर्व मन्त्रियों और बादशाह ने भी यही कहा कि आप कौन-से छोटी हस्ती हो? कर दो काम।

शेखतकी ने शर्म के मारे जन्त्र-मन्त्र किए, परंतु व्यर्थ। कहा कि मुर्दे जिन्दा नहीं हुआ करते। कबीर तो चाहता है कि मुर्दा बहकर दूर चला जाए और इज्जत रह जाए। वह चला गया मुर्दा। कबीर जी ने अपने हाथ का संकेत किया और कहा मुर्दा वापिस आओ। इन्जन वाली नौका के समान बालक का शव वापिस आ गया। कबीर जी ने कहा, हे जीवात्मा! जहाँ भी है, कबीर हुक्म से शव में प्रवेश कर और बाहर आओ। उसी समय वह 12 वर्षीय बालक जीवित होकर दरिया से बाहर आ गया। उपस्थित दर्शकों ने कहा, कबीर जी! कमाल कर दिया। बालक का नाम कमाल रख दिया। परमात्मा कबीर जी ने उस कमाल बालक को अपने घर बच्चे की तरह पाला। शेखतकी शर्म से पानी-पानी हो गया, परंतु माना नहीं। कहने लगा कि बालक को सदमा हुआ था। गलती से मत मानकर जल प्रवाह कर दिया था। जब जानूँ, मेरी बेटी कई दिनों से कब्र में दबा रखी है। वह मत्यु को प्राप्त हो चुकी है। उसको कबीर जीवित कर दे।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि दो दिन बाद तेरी बेटी को जीवित कर दूँगा। आसपास के गाँव तथा दिल्ली में मुनादी करा दो कि सब आकर देखें। ऐसा ही किया गया। कब्र तोड़ दी गई। कबीर परमेश्वर जी ने कहा, शेख जी! प्रयत्न करो, कहीं बाद में कहे कि लड़की सदमे में थी। उपस्थित जनता ने कहा कि कबीर जी! यदि शेख में शक्ति होती तो अपनी बेटी को कैसे मरने देता? आप कोशिश करो। कबीर जी ने कहा कि हे शेखतकी की बेटी! जीवित हो जा। लड़की जीवित नहीं हुई। ऐसा दो बार कहा। लड़की जीवित नहीं हुई। शेखतकी को अपनी बेटी के जीवित न होने का दुःख नहीं, कबीर जी की हार की खुशी मनाने लगा और ताली बजाते हुए नाचने लगा। कबीर जी ने कहा, हे जीवात्मा! जहाँ भी हो, कबीर हुक्म से अपने शरीर में प्रवेश कर और कब्र से बाहर आओ। कहने की देरी थी, उसी समय 12 वर्षीय कन्या के शरीर में हलचल हुई और लड़की उठकर बाहर आई और कबीर जी को दण्डवत् प्रणाम किया। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे शेखतकी की बेटी! अपने पिता के साथ घर जाओ। शेखतकी ने भी बेटी का हाथ पकड़ा और घर चलने को कहा। कन्या का नाम कमाली रखा क्योंकि उपस्थित जनता ने कहा, कमाल है, कमाल है। इसलिए कमाली नाम रखा।

कमाली ने कहा कि शेखतकी की ओर से तो मैं यमराज के पास जा चुकी थी। अब तो मैं अल्लाह अकबर की बेटी हूँ। यह कबीर स्वयं अल्लाह है। इस

प्रकार लड़की ने कबीर परमेश्वर जी के आशीर्वाद से 1½ घण्टे तक प्रवचन किए। अपने पूर्व के जन्मों की जानकारी दी कि एक बार मैं राबिया थी। उस समय 12 वर्ष की आयु में कबीर जी मिले थे। मैंने 4 वर्ष इनकी बताई साधना की थी। फिर अपने मुसलमान धर्म वाली साधना करने लगी थी जो व्यर्थ थी। फिर मैं बांसुरी लड़की बनी। मक्के में अपना शरीर भी काटकर अर्पित कर दिया था। अगले जन्म में मैंने वैश्या का जीवन जीया। उन चार वर्ष की सत्यभक्ति से मुझे 2½ जन्म मनुष्य के मिले थे। अब मेरा कोई मानव जीवन शेष नहीं था। पशु की योनि में जाना था। उसी समय परमेश्वर कबीर जी धर्मराज के पास गए और मुझे छुड़ाकर लाए और शरीर में प्रवेश कर दिया। इनकी कृपा से मुझे मानव जीवन मिला है। अब मैं अपने वास्तविक पिता अल्लाह कबीर जी के साथ रहूँगी।

कबीर जी ने कमाली को बेटी की तरह पाला और अपने घर पर रखा। उपस्थित लाखों की सँख्या में दर्शकों ने परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ली। सबको प्रथम 5 मन्त्र का उपदेश दिया। {इस प्रकार कबीर जी के उस समय 64 लाख शिष्य हो गए थे। वे चमत्कार देखकर ही शरण में आए थे।} दिल्ली नगर की स्त्रियाँ नेकी तथा सम्मन से ये अनोखी बातें सुनकर बाद में चर्चा करती थी कि क्या ये बातें सम्भव हो सकती हैं? कुछ तो कहती थी कि हमारे घर वाला भी उस समय वहीं उपस्थित था। जब शेख की लड़की कब्र से निकालकर जीवित की गई थी, परंतु मेरा पति इस बात से नाराज हुआ कि कबीर क्यों ले गया लड़की को? जिसकी बेटी थी, उसको सौंप देनी थी। भावार्थ है कि कुल मिलाकर वे स्त्रियां अंदर से मजाक रूप में मानती थी, परंतु उनके सम्मुख चुप रह जाती थी।

''नेकी-सेऊ-सम्मन के बलिदान की कथा''

एक समय साहेब कबीर अपने भक्त सम्मन के यहाँ अचानक दो सेवकों (कमाल व शेखफरीद) के साथ पहुँच जाते हैं। सम्मन के घर कुल तीन प्राणी थे। सम्मन, सम्मन की पत्नी नेकी और सम्मन का पुत्र सेऊ (शिव)। भक्त सम्मन इतना गरीब था कि कई बार अन्न भी घर पर नहीं होता था। सारा परिवार भूखा सो जाता था। आज वही दिन था। भक्त सम्मन ने अपने गुरुदेव कबीर साहेब से पूछा कि साहेब खाने का विचार बताएँ, खाना कब खाओगे?

कबीर साहेब ने कहा कि भाई भूख लगी है। भोजन बनाओ। सम्मन अन्दर घर में जा कर अपनी पत्नी नेकी से बोला कि अपने घर अपने गुरुदेव भगवान आए हैं। जल्दी से भोजन तैयार करो।

नेकी ने कहा कि घर पर अन्न का एक दाना भी नहीं है।

सम्मन ने कहा पड़ोस वालों से उधार मांग लाओ।

नेकी ने कहा कि मैं मांगने गई थी लेकिन किसी ने भी उधार आटा नहीं दिया। उन्होंने आटा होते हुए भी जान बूझ कर नहीं दिया और कह रहे हैं कि आज तुम्हारे घर तुम्हारे गुरु जी आए हैं। तुम कहा करते थे कि हमारे गुरु जी भगवान हैं। आपके गुरु जी भगवान हैं तो तुम्हें माँगने की आवश्यकता क्यों पड़ी? ये ही भर देगें तुम्हारे घर को आदि-आदि कहकर मजाक करने लगे।

सम्मन ने कहा लाओ आपका चीर गिरवी रख कर तीन सेर आटा ले आता हूँ।

नेकी ने कहा यह चीर फटा हुआ है। इसे कोई गिरवी नहीं रखता। सम्मन सोच में पड़ जाता है और अपने दुर्भाग्य को कोसते हुए कहता है कि मैं कितना अभागा हूँ। आज घर भगवान आए और मैं उनको भोजन भी नहीं करवा सकता। हे परमात्मा! ऐसे पापी प्राणी को पृथ्वी पर क्यों भेजा। मैं इतना नीच रहा हूँगा कि पिछले जन्म में कोई पुण्य नहीं किया। अब सतगुरु को क्या मुंह दिखाऊँ? यह कह कर अन्दर कोठे में जा कर फूट-2 कर रोने लगा।

तब उसकी पत्नी नेकी कहने लगी कि हिम्मत करो। रोवो मत। परमात्मा आए हैं। इन्हें ठेस पहुँचेगी। सोचेंगे हमारे आने से तंग आ कर रो रहा है। सम्मन चुप हुआ। फिर नेकी ने कहा आज रात्रि में दोनों पिता पुत्र जा कर तीन सेर (पुराना बाट किलो ग्राम के लगभग) आटा चुरा कर लाना। केवल संतों व भक्तों के लिए।

तब लड़का सेऊ बोला माँ - गुरु जी कहते हैं चोरी करना पाप है। फिर आप भी मुझे शिक्षा दिया करती कि बेटा कभी चोरी नहीं करनी चाहिए। जो चोरी करते हैं उनका सर्वनाश होता है। आज आप यह क्या कह रही हो माँ? क्या हम पाप करेंगे माँ? अपना भजन नष्ट हो जाएगा। माँ हम चौरासी लाख योनियों में कष्ट पाएंगे। ऐसा मत कहो माँ। माँ आपको मेरी कसम।

तब नेकी ने कहा पुत्र तुम ठीक कह रहे हो। चोरी करना पाप है परंतु पुत्र हम अपने लिए नहीं बल्कि संतों के लिए करेंगे। जिस नगर में निर्वाह किया है। इसकी रक्षा के लिए चोरी करेंगे। नेकी ने कहा बेटा - ये नगर के लोग अपने से बहुत चिढ़ते हैं। हमने इनको कहा था कि हमारे गुरुदेव कबीर साहेब (पूर्ण परमात्मा) पृथ्वी पर आए हुए हैं। इन्होंने एक मृतक गऊ तथा उसके बच्चे को जीवित कर दिया था जिसके टुकड़े सिंकदर लौधी ने करवाए थे। एक लड़के तथा एक लड़की को जीवित कर दिया। सिंकदर लौधी राजा का जलन का रोग समाप्त कर दिया तथा श्री स्वामी रामानन्द जी (कबीर साहेब के गुरुदेव) को सिंकदर लौधी ने तलवार से कत्ल कर दिया था वे भी कबीर साहेब ने जीवित कर दिए थे। इस बात का ये नगर वाले मजाक कर रहे हैं और कहते हैं कि आपके गुरु कबीर तो भगवान हैं तुम्हारे घर को भी अन्न से भर देंगे। फिर क्यों

अन्न (आटे) के लिए घर घर डोलती फिरती हो?

बेटा! ये नादान प्राणी हैं। यदि आज साहेब कबीर इस नगरी का अन्न खाए बिना चले गए तो काल भगवान भी इतना नाराज हो जाएगा कि कहीं इस नगरी को समाप्त न कर दे। हे पुत्र! इस अनर्थ को बचाने के लिए अन्न की चोरी करनी है। हम नहीं खाएंगे। केवल अपने सतगुरु तथा आए भक्तों को प्रसाद बना कर खिलाएगें। यह कह कर नेकी की आँखों में आँसू भर आए और कहा पुत्र नाटियो मत अर्थात् मना नहीं करना।

तब अपनी माँ की आँखों के आँसू पौंछता हुआ लड़का सेऊ कहने लगा - माँ रो मत, आपका पुत्र आपके आदेश का पालन करेगा। माँ आप तो बहुत अच्छी हो न। अर्ध रात्रि के समय दोनों पिता (सम्मन) पुत्र (सेऊ) चोरी करने के लिए जाते हैं। एक सेठ की दुकान की दीवार में छिद्र किया। सम्मन ने कहा कि पुत्र मैं अन्दर जाता हूँ। यदि कोई व्यक्ति आए तो धीरे से कह देना मैं आपको आटा पकड़ा दूंगा और ले कर भाग जाना।

सेऊ ने कहा नहीं पिता जी, मैं अन्दर जाऊँगा। यदि मैं पकड़ा भी गया तो बच्चा समझ कर माफ कर दिया जाऊँगा।

सम्मन ने कहा पुत्र यदि आपको पकड़ कर मार दिया तो मैं और तेरी माँ कैसे जीवित रहेंगे?

सेऊ प्रार्थना करता हुआ छिद्र द्वार से अन्दर दुकान में प्रवेश कर जाता है। तब सम्मन कहता है कि पुत्र! केवल तीन सेर आटा लाना, अधिक नहीं। लड़का सेऊ लगभग तीन सेर आटा अपनी फटी-पुरानी चद्दर में बाँधकर चलने लगता है तो अंधेरे में तराजू के पलड़े पर पैर रखा गया। जोरदार आवाज हुई जिससे दुकानदार जाग जाता है और सेऊ को चोर-चोर करके पकड़कर रस्से से बाँध देता है। इससे पहले सेऊ वह चद्दर में बँधा हुआ आटा उस छिद्र से बाहर फैंक देता है और कहता है कि पिता जी! मुझे सेठ ने पकड़ लिया है। आप आटा ले जाओ और सतगुरु व भक्तों को भोजन करवाना। मेरी चिंता मत करना।

आटा लेकर सम्मन घर पर गया तो सेऊ को न पाकर नेकी ने पूछा लड़का कहाँ है? सम्मन ने कहा उसे सेठ जी ने पकड़ कर थाम्ब से बाँध दिया।

नेकी ने कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के सेऊ का सिर काट लाओ क्योंकि लड़के को पहचान कर अपने घर पर लाएंगे। फिर सतगुरु को देख कर नगर वाले कहेंगे कि ये हैं जो चोरी करवाते हैं। हो सकता है सतगुरु देव को परेशान करें। हम पापी प्राणी अपने दाता को भोजन के स्थान पर कैद न करवा दें। यह कहकर माँ अपने बेटे का सिर काटने के लिए अपने पति से कह रही है वह भी गुरुदेव जी के लिए।

सम्मन ने हाथ में कर्द (लम्बा छुरा) लिया तथा दुकान पर जा कर कहा सेऊ

बेटा, एक बार गर्दन बाहर निकाल। कुछ जरूरी बातें करनी हैं। कल तो हम नहीं मिल पाएंगे। हो सकता है ये आपको मरवा दें।

तब सेऊ उस सेठ (बनिए) से कहता है कि सेठ जी बाहर मेरा बाप खड़ा है। कोई जरूरी बात करना चाहता है। कृपा करके मेरे रस्से को इतना ढीला कर दो कि मेरी गर्दन छिद्र से बाहर निकल जाए।

सेठ ने उसकी बात को स्वीकार करके रस्सा इतना ढीला कर दिया कि गर्दन आसानी से बाहर निकल गई।

सेऊ ने कहा पिता जी मेरी गर्दन काट दो। यदि आप मेरी गर्दन नहीं काटोगे तो आप मेरे पिता नहीं हो। मुझे पहचानकर घर तक सेठ पहुँचेगा। राजा तक इसकी पहुँच है। यह अपने गुरूदेव को मरवा देगा। पिताजी हम क्या मुख दिखाऐंगे? सम्मन ने एकदम करद मारी और सिर काट कर घर ले गया।

सेठ ने लड़के का कत्ल हुआ देखकर उसके शव को घसीट कर साथ ही एक पजावा (ईटें पकाने का भट्ठा) था, उस खण्डहर में डाल गया।

जब नेकी ने सम्मन से कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के का धड़ भी बाहर मिलेगा उठा लाओ। जब सम्मन दुकान पर पहुँचा। उस समय तक सेठ ने उस दुकान की दीवार के छिद्र को बंद कर लिया था। सम्मन ने शव की घसीट (चिन्हों) को देखते हुए शव के पास पहुँच कर उसे उठा लाया। ला कर अन्दर कोठे में रख कर ऊपर पुराने कपड़े (गुदड़) डाल दिए और सिर को अलमारी के ताख (एक हिस्से) में रख कर खिड़की बंद कर दी।

कुछ समय के बाद सूर्य उदय हुआ। नेकी ने स्नान किया। सतगुरु व भक्तों का खाना बनाया। सतगुरु कबीर साहेब जी से भोजन करने की प्रार्थना की। नेकी ने साहेब कबीर व दोनों भक्त (कमाल तथा शेख फरीद), तीनों के सामने आदर के साथ तीन दौनों (मिट्टी के बर्तनों) में भोजन परोस दिया। साहेब कबीर ने कहा इसे छः दौनों में डाल कर आप तीनों भी साथ बैठो। यह प्रेम प्रसाद पाओ। बहुत प्रार्थना करने पर भी साहेब कबीर नहीं माने तो छः दौनों में प्रसाद परोसा गया। पाँचों प्रसाद के लिए बैठ गए।

तब साहेब कबीर जी ने कहा :-

आओ सेऊ जीम लो, यह प्रसाद प्रेम। शीश कटत हैं चोरों के, साधों के नित्य क्षेम।।

साहेब कबीर (अल्लाहू अकबर = अल खिज्र) ने कहा कि सेऊ आओ भोजन पाओ। सिर तो चोरों के कटते हैं। संतों (भक्तों) के नहीं। उनकी तो रक्षा होती है। उनको तो क्षमा होती है। साहेब कबीर ने इतना कहा था उसी समय सेऊ के धड़ पर सिर लग गया। कटे हुए का कोई निशान भी गर्दन पर नहीं था तथा पंगत (पंक्ति) में बैठ कर भोजन करने लगा। बोलो कबीर साहेब (कविरमितौजा) की जय। (वेदों के वचन :- कविर् = कविर्देव = कबीर

परमेश्वर, अमित + औजा = जिसकी शक्ति का कोई वार-पार न हो।)

सम्मन तथा नेकी ने देखा कि गर्दन पर कोई चिन्ह भी नहीं है। लड़का जीवित कैसे हुआ? अन्दर जा कर देखा तो वहाँ शव तथा शीश नहीं था। केवल रक्त के छीटें लगे थे जो इस पापी मन के संशय को समाप्त करने के लिए प्रमाण बकाया था।। सत साहिब।।

ऐसी-2 बहुत लीलाएँ साहेब कबीर (कविरग्नि) ने की हैं जिनसे यह स्वसिद्ध है कि ये ही पूर्ण परमात्मा हैं। सामवेद संख्या नं. 822 तथा ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 162 मंत्र 2 में कहा है कि कविर्देव अपने विधिवत् साधक साथी की आयु बढ़ा देता है। यदि मत्यु को भी प्राप्त हो चुका हो, उसे धर्मराज से छुड़वाकर सौ वर्ष का जीवन दे देता है।

।।जय हो परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ (अल खिज्र) जी की।।

सम्मन वाली आत्मा नौशेर खान बना

नेकी और सेऊ तो उसी जन्म में मोक्ष प्राप्त कर गए, परंतु सम्मन के दिल पर ठेस लग गई कि यदि मेरे पास धन होता तो मुझे बेटा काटना ना पड़ता। परमात्मा ने उसी जन्म में सम्मन-नेकी-सेऊ को धन-धान्य से परिपूर्ण कर दिया था। वे निर्धन नहीं रहे थे। सम्मन दिल्ली का महान धनी व्यक्ति हो गया था, परंतु फिर भी मोक्ष की इच्छा नहीं बनी। जिस कारण से बेटे की कुर्बानी परमेश्वर रूप सतगुरू के लिए करने के कारण अगले जन्म में नौशेरखाँ शहर के राजा के घर जन्म लिया। राजा बना। 80 खजाने हीरे-मोतियों के भरे थे, परंतु दान नहीं करता था, न परमात्मा को याद करता था।

परमेश्वर कबीर जी जिन्दा बाबा (अल खिज्र) का वेश बनाकर नौशेरखान के बादशाह नौशेरखान के पास गए और दान करने का उपदेश दिया। राजा ने कहा, मैं निर्धन राजा हूँ। जिन्दा ने कहा कि आपके 80 खजानों को झंडे लगे हैं। (यह राजा की पहचान होती थी कि जिसके पास जितने खजाने होते, उतने झण्डे खड़े किया करते।)

राजा ने कहा, ये तो कोयले हैं। जिन्दा ने कहा कि जैसी तेरी नीयत है, कोयले हो जाएंगे। राजा ने खोलकर खजाने देखे तो सच में कोयले हो गए थे। राजा ने परमेश्वर के चरण पकड़कर क्षमा याचना की। परमेश्वर ने कहा कि यदि अधिक धन को दान करे तो ये फिर से हीरे-मोती बन जाएंगे। राजा ने कहा, जैसे आपकी आज्ञा, वही करूँगा। खजाने फिर से हीरों से भर गए। राजा नौशेरखान ने अधिक मात्रा में धन को दान किया। जिसके फलस्वरूप तथा पूर्व जन्म की भक्ति व सतगुरू सेवा के फलस्वरूप ईराक देश में बलख नामक शहर का राजा बना।

विस्तृत कथा आगे है :-

''सुल्तान अब्राहिम की जन्म कथा''

एक अधम शाह नाम का फकीर था। उसने बलख शहर से कुछ दूर एक कुटिया बना रखी थी। शहर में घूमने-फिरने आता था। एक दिन उसने बलख के बादशाह की इकलौती बेटी को देखता है जो युवा तथा सुंदर थी। अधम शाह के मन में लड़की से विवाह करने की प्रबल प्रेरणा बन जाती है।

वह राजा के पास जाकर कहता है कि इस लड़की का विवाह मेरे से कर दो। राजा हैरान होता है और फकीर कहीं शॉप न दे दे, इसलिए डर भी जाता है। अचानक हाँ या ना नहीं कह सका, फकीर को कल आने को कह देता है। मंत्रियों को पता चला। एक राय बनी कि कल उसे कह देंगे कि राजा की लड़की से विवाह करने के लिए मोतियों का एक हार लाना पड़ता है या सौ मोती लाने होते हैं। अन्यथा विवाह नहीं होता। अगले दिन फकीर को यह शर्त बता दी गई।

फकीर मोती लेने के लिए चल पड़ता है। किसी ने बताया कि मोती तो समुद्र में मिलते हैं। समुद्र के किनारे जाकर अपने करमण्डल (लोटे) से समुद्र का जल भरकर कुछ दूरी पर रेत में डालने लग जाता है। कई दिन तक भूखा-प्यासा इसी प्रयत्न में लगा रहा। शरीर भी समाप्त होने को आया। जो भी देखता, वही कहता कि अल्लाह के लिए घर त्यागा था। अब नरक की तैयारी कर रहा है। समुद्र कभी खाली नहीं हो सकता। भक्ति कर।

परमात्मा जिंदा बाबा के वेश में वहाँ प्रकट हुए तथा अधम शाह से पूछा कि क्या कर रहे हो? उसने बताया कि राजा की लड़की से विवाह करना है। उसके लिए मोतियों की शर्त रखी है। मोती समुद्र में बताए हैं। समुद्र खाली करके मोती लेकर जाऊँगा।

जिन्दा ने कहा कि समुद्र खाली नहीं हो सकता। आप भूखे-प्यासे मर जाओगे। आप जिस मोक्ष के उद्देश्य के लिए घर से निकले हो। मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्न करो तो कुछ बात बने। आपने जीवन को नष्ट करने की योजना बना ली है। अधम शाह ने कहा कि आपकी शिक्षा की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है। मैं अपना कार्य कर रहा हूँ, तुम अपना करो।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

विकार मरे मत जानिया, ज्यों भूभल (राख) में आग।
जब करेल्लै धधकहीं, कोई बचै सतगुरू शरण लाग।।

{**चुटकुला :- एक 70-75 वर्ष का वृद्ध शराब पीकर मार्ग में खड़ा-खड़ा झूझ रहा था। उसके हाथ का डोगा (सहारे के लिए डण्डा) जमीन पर गिर**

गया। वह डोगा उठाने में असमर्थ था क्योंकि वह नशे में था, गिर जाता। फिर उठना मुश्किल हो जाता।

एक भद्र पुरूष उसी रास्ते से आया। वद्ध ने उसे लड़खड़ाती आवाज में कहा कि मेरा डोगा उठाकर मुझे दे दो। यात्री को समझते देर नहीं लगी। कहा, हे दादा जी! आप अपनी आयु की ओर देखो। इस आयु में शराब पीना शोभा नहीं देता। पोते-पोतियों वाले हो। उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

यह बात सुनकर वद्ध ने कहा कि शिक्षा बिना बात ना रह रही, क्या आज तक कोई मेरे को यह शिक्षा देने वाला नहीं मिला होगा? यदि डोगा उठाना है तो उठा नहीं तो जा। यही दशा अधम शाह फकीर की थी।}

परमात्मा ने देखा कि भक्त तो मरेगा। कबीर जिंदा बाबा (अल खिज्र) ने अपनी शक्ति से समुद्र की झाल मारी, हजारों मोती रेत में पड़े थे। या अल्लाह कहकर अधम शाह ने हजारों मोती चद्दर में बाँध लिए और राजा के दरबार में जाकर रख दिए और कहा कि आप अपने वायदे अनुसार शहजादी का विवाह मेरे से कर दो। मंत्रियों ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि इसको डण्डे मारो और मारकर जंगल में डाल आओ। ऐसा ही किया गया। परमात्मा की कपा से वह मरा नहीं। कुछ दिन में चलने-फिरने लगा।

कुछ दिन के पश्चात् राजा की लड़की मर गई। उसको कब्र में दबाकर चार पहरेदार छोड़ दिए कि कोई जंगली जानवर शव को खराब न कर दे। अधम शाह को पता चला। वह रात्रि को कब्र के पास गया। पहरेदार गहरी नींद में सोए थे। अधम शाह कब्र को खोदकर शव को निकालकर, कब्र को उसी तरह ठीक करके लड़की के शव को अपनी कुटिया में उठा ले गया।

उसी रात्रि में बंजारों का काफिला रास्ता भूलकर उसी जंगल में चला गया। कुटिया में दीपक जल रहा था। लड़की का शव कफन में लिपटा दीवार के सहारे रखा जैसे लड़की पलाथी लगाकर बैठी हो। सर्दी का मौसम था। अग्नि लेने के लिए काफिले के दो व्यक्ति कुटिया पर गए। आवाज सुनकर अधम शाह डर गया कि राजा के आदमी आ गए। वह कुटिया के पीछे जाकर एक गुफा में छिप गया जिसमें वह साधना किया करता था।

काफिले के व्यक्तियों ने मत जवान लड़की को दीवार के सहारे बैठा देखा तो डर के मारे उलटे पैरों काफिले में जाकर बताया। एक वैद्य भी काफिले में रहता था। कई व्यक्ति तथा वैद्य वहाँ गये तो लड़की को देखते ही वैद्य ने कहा कि यह लड़की मरी नहीं है, इसको सदमा लगा है। उपचार कर सकता हूँ। काफिले के मालिक ने कहा कि आप उपचार करो। यदि लड़की स्वस्थ हो गई तो इसी से पूछेंगे कि कौन है तेरा पिता या पति कहाँ है? पहले लड़की के नग्न शरीर के ऊपर चद्दर डाली। फिर वैद्य ने हाथ की

नस में चीरा देकर अशुद्ध रक्त निकाला।

लड़की कुछ ही मिनटों में सचेत हो गई। बोली कि मैं यहाँ कैसे आयी हूँ? अधम शाह फकीर ने दीपक की रोशनी में देखा कि ये राजा के आदमी नहीं हैं। शहजादी भी जीवित हो गई है। वह काफिले के व्यक्तियों के पास आया और सारी दास्तां बताई जो लड़की ने भी सुनी।

लड़की को काफिले के व्यक्तियों ने समझाया कि यदि आपको यह फकीर कब्र से निकालकर नहीं लाता तो आप तो संसार से चली गई होती। अब आपको चाहिए कि इस फकीर के साथ अल्लाह की रजा मानकर रहें। लड़की ने हाँ कर दी। उन व्यक्तियों ने दोनों का विवाह कर दिया, निकाह पढ़ दिया। काफिले के मालिक ने कहा कि यदि आप हमारे साथ चलना चाहें तो हम आपकी सेवा करेंगे, कोई कष्ट नहीं होने देंगे। गृहस्थी बना फकीर बोला कि हमारे को यहीं रहना है। मैं आपका अहसान कभी नहीं भूल सकूँगा। आप मेरे लिए अल्लाह का स्वरूप बनकर आए हो। हम दोनों की मौत होनी थी। आपने हमारे जीवन की रक्षा की है। उनको वहीं छोड़कर काफिले के व्यक्ति चले गए।

कुछ दिन पश्चात् लड़की ने एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम ''सुल्तान इब्राहिम'' रखा। चार वर्ष का बच्चा होने के पश्चात् बलख शहर के मौलवी के पास पढ़ने के लिए प्रवेश दिलाया। प्रतिदिन अधम बेटे को मौलवी के पास सुबह छोड़ आता, शाम को ले आता। बलख के बादशाह की इकलौती बेटी थी, पुत्र नहीं था। राजा गरीब बच्चों की मदद किया करता था। एक दिन बलख का राजा उस मौलवी के पास गया। वह विधार्थियों को इनाम देता था। गरीब बच्चों को कपड़े बाँटता था। अधम शाह फकीर के लड़के को देखकर राजा हैरान रह गया। उसकी सूरत राजा की लड़की से मिलती थी।

राजा ने मौलवी से पूछा कि यह बच्चा किसका है? मौलवी ने बताया कि एक फकीर जंगल से आता है, उसका बालक है। सुबह छोड़कर जाता है, शाम को ले जाता है। हमने अधिक पूछताछ नहीं की। लड़का भी उठकर राजा से लिपट गया। राजा ने उसे गोद में उठा लिया और चल पड़ा। मौलवी से कहा कि इसका पिता आए तो महल में भेज देना, वहाँ से ले जाएगा। राजा ने रानी को वह बालक दिखाया, वह तो देखते ही अपनी बेटी को याद करके मूर्छित होकर पृथ्वी के ऊपर गिर गई। सचेत होने पर बालक को सीने से लगाया। खाना खीर-हलवा स्वयं बनाकर खिलाया। रानी ने कहा कि यह तो अपनी लड़की से मिलती शक्ल का है। इतने में फकीर मौलवी के पास जाकर राजा के महल में चला गया। राजा ने नौकरों को बोल रखा था कि इस लड़के का पिता आए तो उसे रोकना नहीं, महल में आदर के साथ लेकर आना है। उसी फकीर को देखकर राजा ने कहा कि यह बालक

किसका है?

फकीर ने बताया कि यह मेरा लड़का है। आपकी लड़की से उत्पन्न हुआ है। राजा ने कहा कि फकीर होकर झूठ बोलना ठीक नहीं होता। फकीर ने सर्व कथा बताई। राजा को विश्वास नहीं हुआ। फकीर को साथ लेकर नौकरों के साथ पहले लड़की की कब्र को खोदा, वहाँ शव नहीं था। फकीर की कुटिया पर गए। उनकी लड़की कई स्थानों से फटे और पैबन्द लगे वस्त्र पहने बैठी थी। अपने माता-पिता को देखते ही दौड़कर पिता-माता से बारी-बारी सीने से लगी।

लड़की, बच्चे तथा फकीर को निवेदन करके अपने महल में ले गए। फकीर अधम को अपना उतराधिकारी नियुक्त कर दिया। जिस कारण से शाह कहा जाने लगा। उसका नाम 'अधम' था। कुछ दिन रहकर अधम शाह को राज-ठाठ अच्छे नहीं लगे। वह उनसे प्रेम से विदाई लेकर कुटिया में चला गया और कभी-कभी लड़के तथा पत्नी से मिल जाता था। कुछ वर्षों के पश्चात् अधम शाह फकीर की मुत्यु हो गई। उसकी समाधि कुटिया में बना दी। आसपास सुंदर बगीची बनाई गई। वहाँ मेले लगने लगे। बालक इब्राहिम नाना जी के राज्य का उतराधिकारी बनाया गया।

विचारणीय विषय :-

कबीर कमाई आपनी, कबहू न निष्फल जाय।
सात समंदर आड़े पड़े, मिले अगाऊ आय।।

अर्थात् भक्ति की जैसी कमाई (साधना) की है, वह निष्फल नहीं जाती चाहे सात समुद्रों जितनी बाधा क्यों न आ जाए।

भक्ति के लिए भक्त का शरीर स्वभाव बहुत सहयोगी होता है। अच्छे माता-पिता से मिले जन्म से बच्चे के शरीर में माता-पिता का स्वभाव भी साथ रहता है। सुल्तान इब्राहिम जिस जन्म में सम्मन मनियार था। उसने अपने लड़के की कुर्बानी सतगुरू की सेवा के लिए दी थी। कुछ कारण ऐसा बना था। परमेश्वर जी यानि सतगुरू कबीर जी ने वह लड़का जीवित कर दिया था। वही सम्मन फिर राजा बना। भक्ति नहीं की। अबकी बार उस आत्मा को ऐसे पिता से शरीर दिया जो जन्म से परमात्मा पर समर्पित थे। सम्मन की आत्मा को मोक्ष दिलाने के लिए परमेश्वर जी ने अधम शाह में विवाह की प्रेरणा प्रबल की। लड़की को सदमा, समुद्र से मोती, बंजारों का काफिला रास्ता भूलकर कुटिया पर आना, लड़की को जीवित करना। सुल्तान इब्राहिम का जन्म अधम शाह से पाक आत्मा लड़की से होना जो एक फकीर के साथ रहकर साध्वी जीवन जी रही थी। उच्च विचार बने थे। संसार की कोई बुराई लड़की को नहीं लगी थी। सतगुरू के लिए अपने पुत्र सेऊ (शिव) का

बलिदान तथा नौशेरखान रूप में अरबों रूपये दान (जकात) में दिए। उस दान का फल भी उस जीव को देना था। उसके लिए परमेश्वर कबीर जी ने यह लीला की थी। आदम शाह फकीर का दादा उसी बलख शहर का राजा था जिसका राज्य अब्राहिम के नाना जी के पिता ने लड़ाई करके छीन लिया था। फिर वही राज्य उसी वंश के सुल्तान अब्राहिम को मिला। आदम शाह भी भक्ति से भटकने के कारण पशु की योनि में जन्मा।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

ये सब खेल हमारे किए। हम से मिले जो निश्चय जीये।।
जोजन मेरी शरण है, उसका हूँ मैं दास।
गेल गेल लाग्या फिरूँ, जब तक धरती आकाश।।

सुल्तान इब्राहिम को शरण में लेना

{अल्लाह अकबर जी जिंदा बाबा (अल खिज्र) का वेश बनाकर बार-बार सुल्तान इब्राहिम को समझाया।}

सम्मन वाला जीवन पूरा करके शरीर त्याग गया। वही जीव अगले जन्म में नौशेरखान फिर राजा बना। इराक के अंदर एक बलख नाम का शहर था। उस शहर में उसकी राजधानी थी। राजा का नाम सुल्तान अब्राहिम अधम था। उस आत्मा ने सम्मन के जीवन में जो श्रद्धा से भक्ति की थी। उसके कारण मानव जीवन मिलते आ रहे थे तथा जो दान किया था, उसके प्रतिफल में राजा बनता रहा। उसका सबसे बड़ा दान तीन सेर आटा था जो बेटे की कुर्बानी देकर किया था। उसी कारण से वह धनी राजा बनता रहा। कुछ नौशेरखान के जीवन में कबीर परमेश्वर जी ने कारण बनाकर दान करवाया। जिस कारण से भी बलख का धनी राजा बना। अठारह लाख घोड़े थे। अन्य हीरे-मोतियों की कमी नहीं थी। एक जोड़ी जूतियों के ऊपर अढ़ाई लाख के हीरे लगे होते थे। कहते हैं 16 हजार स्त्रियां रखता था। ऐश (मौज) करता था। शिकार करने जाता, बहुत जीव हिंसा करता था।

एक दिन राजा के महल के पास किसी भक्त के घर कुछ संत आए थे। उन्होंने सत्संग किया। राजा ने रात्रि में अपने घर की छत के ऊपर बैठकर पूरा सत्संग सुना। परमात्मा की भक्ति की प्रबल प्रेरणा हुई। सुबह अपने मंत्रियों से कहा कि किसी अच्छे संत का पता करो। मुझे मिलाओ।

एक ढ़ोंगी बाबा बड़ा प्रसिद्ध था। राजा को उसके पास ले जाया गया। राजा उसके बताए मार्ग से भक्ति करने लगा। राजा की ऊँगली में एक बहुमूल्य छाप (अंगूठी) थी। ढ़ोंगी बाबा दिखावा तो करता था कि वह धन को हाथ नहीं लगाता। लगता था कि बड़ा त्यागी और बैरागी है, परंतु था धूर्त।

सुल्तान भी उससे प्रभावित था। उस बाबा ने अपने निजी सेवक से कहा कि जिस सुनार ने राजा अब्राहिम की अँगूठी बनाई है, उस सुनार से वैसी ही अँगूठी नकली हीरों तथा मोतीयुक्त नकली सोने की बनवा ला। नकली अँगूठी बिल्कुल वैसी ही बन गई।

एक दिन राजा संत के पास गया। संत ने नौका विहार की इच्छा की। सुल्तान अब्राहिम अधम ने नौका विहार का प्रबन्ध करवाया। सरोवर के मध्य में जाकर बाबा ने कहा, राजन्! आपकी अँगूठी अति सुन्दर है, दिखाना जरा। राजा ने अँगूठी निकालकर संत जी को दे दी, वह बाबा देखने लगा। नजर बचाकर अँगूठी बदल दी। राजा ने कहा कि आप चाहें तो अँगूठी ले लें या और बनवा दूँ। बाबा ने कहा, अरे! साधु-संतों के लिए तो यह मिट्टी है मिट्टी। यह कहकर नकली अँगूठी सरोवर में फैंक दी।

राजा को पूरा भरोसा हो गया कि वास्तव में साधु त्यागी और बैरागी है। कुछ दिन बाद उस ढ़ोंगी बाबा की पोल खुल गई। उसके राजदार शिष्य ने राजा को बताया कि आपकी अँगूठी ऐसे-ऐसे बाबा ने ठगी है। वह उसके पास है। जब राजा ने वह अँगूठी उसी बाबा की कुटिया में जमीन में दबी पाई तो बहुत दुःख हुआ और साधु-संतों से विश्वास उठ गया। उस ढ़ोंगी को जेल में डाल दिया। फिर तो राजा ने अपने राज्य के सब संत-महात्माओं को बुला-बुलकार उनसे प्रश्न किया कि यदि आपने खुदा को पाया है तो मुझे भी मिला दो। इसका उत्तर किसी के पास नहीं था। एक संत ने कहा कि आप एक गिलास दूध का मंगवाऐं दूध का गिलास नौकर ने लाकर दे दिया। संत ने दूध में उंगली डाली और राजा से कहा, राजन्! आपके दूध में घी नहीं है। राजा ने कहा, दूध से घी प्राप्त करने की विधि है। पहले दूध को गर्म करके ठण्डा किया जाता है। फिर जमाया जाता है, दही बनती है। फिर बिलोया जाता है। तब घी निकलता है। उस संत जी ने कहा, सुल्तान जी! जिस प्रकार दूध से घी प्राप्त करने की विधि है। वैसे ही मानव शरीर से परमात्मा प्राप्ति की विधि है। उस विधि से परमात्मा प्राप्त होता है। गुरू बनाओ, साधना करो।

राजा के मन में गुरू के प्रति घृणा थी। वह सबको उसी दृष्टिकोण से देख रहा था। सब महात्माओं को जेल में डाल दिया। सबसे चक्की चलवाई जा रही थी। सब साधु परमात्मा के लिए ही तो घर-परिवार त्यागकर निकले होते हैं। भक्ति मार्ग सही नहीं मिलने के कारण महिमा की चाह स्वतः हो जाती है। अधिक शिष्य बनाना। अच्छा-बड़ा आश्रम बनाना, यह धुन लग जाती है, परंतु परमेश्वर की अच्छी आत्माऐं होती हैं। वे परमेश्वर के लिए प्रयत्नशील होने से परमात्मा की उन पर रजा रहती है। उनको सत्यज्ञान देने के लिए वेश बदलकर परमात्मा उनको समझाते हैं, परंतु काल के जाल में अँधे होकर

नहीं मानते। परमात्मा सबका पिता है। वह बालक जानकर क्षमा करता रहता है। फिर भी उनकी सहायता करता रहता है।

लीला नं. 1 :- जेल में दुःखी भक्तों की पुकार सुनकर उनको छुड़ाने के लिए तथा अपने परम भक्त सम्मन को काल के जाल से निकालने के लिए परमेश्वर कबीर जी एक भैंसे के ऊपर बैठकर सुल्तान अधम के राज दरबार (कार्यालय) में पहुँच गए।

साधु वेश में परमेश्वर को देखकर अब्राहिम सुल्तान ने पूछा, आप किसलिए आए हो? परमेश्वर जी ने कहा कि आपके प्रश्न का उत्तर देने आया हूँ। अब्राहिम ने प्रश्न किया कि मुझे बताओ खुदा कैसा है? यदि खुदा से आप मिले हैं तो मुझे भी मिलाओ। कबीर जी ने भैंसे से कहा कि बता दे भैंसा! अल्लाह कैसा है? कहाँ है? खुदा की कसम सच कहना। भैंसा मनुष्य की तरह बोला, कहा कि अब्राहिम मेरे ऊपर बैठा यह अल्लाहु अकबर है। सुल्तान को भैंसे को बोलते देखकर आश्चर्य हुआ और प्रभावित भी हुआ। सोचने लगा कि यह कोई सेवड़ा हो सकता है। परमेश्वर भैंसे सहित अन्तर्ध्यान हो गये। अब्राहिम को चक्कर आ गया। परमात्मा जेल के सामने खड़े हो गए। सिपाहियों को आदेश था कि कोई भी साधु मिले, उसको जेल में डाल दो। उन्होंने परमात्मा को जेल में बंद कर दिया।

सिपाहियों ने कहा कि चक्की चलाओ। अन्य सब साधु भी चक्की चलाकर आटा पीस रहे थे, रो रहे थे। कबीर जी ने सिपाहियों से कहा कि हम बन्दी एक काम करेंगे, एक सिपाही करेंगे। हम चक्की चलाएंगे तो चक्की में कनक (गेहूँ, चना, बाजरा) सिपाही डालेंगे। या हम कनक डालेंगे, तुम चक्की चलाओ।

सिपाहियों ने क्रोधित होकर कहा कि हम कनक डालेंगे, तुम चक्की चलाओ। कबीर जी ने कहा कि सब संत खड़े हो जाओ। यह कहकर अपनी चक्की को डण्डा लगाया। उसी समय सब (360) चक्की अपने आप चलने लगी। परमात्मा ने कहा, सिपाही भाई डालो कनक, पीसो जितना चाहिए। साधुओं से कहा कि आँखें बंद करो। सबने आँखें बंद कर ली। फिर परमेश्वर जी ने कहा कि आँखें खोलो। आँखें खोली तो सब जेल से बाहर बलख शहर से दूर जंगल में खड़े थे। कबीर जी ने कहा कि आप इस राजा के राज्य को त्यागकर दूर चले जाओ। सर्व भक्त जन परमेश्वर को प्रणाम तथा धन्यवाद करके भाग चले। दूर चले गए। राजा को पता चला कि एक सिद्ध फकीर आया था। सब कैदियों को छुड़ाकर ले गया। जाते दिखाई नहीं दिए। एक चक्की को डण्डा लगाया, सब (360) चक्कियाँ चलने लगी हैं। राजा जेल में गया। चलती चक्कियों को देखकर हैरान रह गया। फिर चक्कियाँ बंद हो

गई। राजा विचारों में खो गया।

लीला नं. 2 :- कुछ दिनों के पश्चात् परमेश्वर कबीर जी एक ऊँट चराने वाले ग्रामीण जैसे वेश बनाकर हाथ में लंबी लाठी लेकर राजा के निवास के ऊपर छत पर प्रकट हो गए। रात्रि का समय था। राजा सो रहा था। परमेश्वर ने छत के ऊपर लाठी को जोर-जोर से मारना शुरू किया। सुल्तान अब्राहिम नींद से जागा। नौकरों को डाँटा, यह कौन शोर कर रहा है? लाओ पकड़कर। नौकर ऊपर गए। एक ऊँटों को चराने वाले को छत पर से पकड़कर सुल्तान के समक्ष लाए। राजा ने पूछा, तू कौन है? मेरे महल की छत पर क्या कर रहा है?

परमेश्वर जी ने कहा कि मैं ऊँटवाल (कारवांन) हूँ। मेरा एक ऊँट गुम हो गया है। उसको छत पर खोज रहा हूँ। सुल्तान अधम ने कहा कि हे भोले बन्दे! छत के ऊपर ऊँट कैसे चढ़ सकता है? यह तो कभी हुआ न होगा। कहीं जंगल में ऊँट को खोज।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे अब्राहिम! जैसे ऊँट छत के ऊपर नहीं होता, न छत के ऊपर कभी मिलता है, ऊँट को जंगल में खोजना चाहिए। इसी प्रकार परमात्मा राजगद्दी पर बैठकर ऐशो-आराम (मौज-मस्ती) करने से नहीं, वह संतों में मिलता है। इतना कहकर कबीर परमेश्वर जी अंतर्ध्यान हो गए। सुल्तान अधम मूर्छित होकर जमीन पर गिर गए। मन्त्रियों तथा रानियों ने एक झाड़-फूँक करने वाला बुलाया। उसने राजा की दांई बाजू पर ताबीज बाँध दिया और कहा कि इसके ऊपर भूत-प्रेत का साया है, ठीक हो जाएगा। राजा का मन राज-काज में नहीं लग रहा था। उदास रहने लगा। राजा ने कुछ संतों को फिर से कैद कर रखा था।

परमेश्वर फिर से जेल में गए। उसी तरह उनको भी जेल से निकाला। अबकी बार सब कैदियों से कहा कि तुम सब खड़े होकर आँखें बंद करो। कुछ देर अल्लाह का चिंतन करो। उसके पश्चात् चक्की चलाएंगे। चक्की आसानी से चलेंगी। सब बंदी खड़े होकर अल्लाह का चिंतन आँखें बंद करके करने लगे। परमेश्वर ने एक चक्की को डण्डा (सोटी) लगाया। सर्व चक्कियां चलने लगी।

परमात्मा कबीर जी ने कहा कि आँखें खोलो। सबने आँखें खोली तो अपने को बलख नगर से दूर जेल से बाहर जंगल में खड़े पाया। परमेश्वर ने कहा कि फिर से इस सुल्तान के राज्य की सीमा में मत आना। उसके पश्चात् राजा ने साधु-संतों को कैद में डालना बंद कर दिया था, परंतु डर के मारे कोई भी साधु-महात्मा उसके राज्य में नहीं आते थे। {कबीर परमेश्वर जी भी यही चाहते थे कि ये नकली गुरू यहाँ न आऐं। कहीं राजा को भ्रमित करके मेरे से दूर न कर दें। इसलिए उनको इस विधि से दूर रखना था।}

कुछ समय उपरांत राजा सामान्य हो गया और ऐसो-आराम में खो गया।

लीला नं. 3 :- परमात्मा कबीर जी अपने गुण अनुसार फिर एक लीला करने आए। एक यात्री (मुसाफिर) का रूप बनाकर काख में कपड़ों की पोटली, ग्रामीण वेशभूषा में शाम के समय सुल्तान के निवास में आए। सुल्तान घर के द्वार पर आँगन में कुर्सी पर बैठा था। राजा ने पूछा कि आप यहाँ किसलिए आए हो? परमात्मा कबीर जी ने कहा कि मैं एक यात्री हूँ। रात्रि में आपकी धर्मशाला (सराय) में रूकना है। एक रात का भाड़ा (किरवाया) बता, कितना लेगा।

सुल्तान अब्राहिम अधम हँसा और कहा कि हे भोले मुसाफिर, यह सराय नहीं है। यह तो मेरा महल है। मैं नगरी का राजा हूँ। परमात्मा बन्दी छोड़ दया के सागर ने प्रश्न किया आपसे पहले इस महल में कौन रहता था? सुल्तान अब्राहिम अधम ने उत्तर दिया कि मेरे बाप-दादा आदि रहते थे।

प्रश्न प्रभु का :- वे कहाँ हैं? मैं उन्हें देखना चाहता हूँ। उत्तर सुल्तान का:- वे तो अल्लाह को प्यारे हुए। परमात्मा ने प्रश्न किया कि आप कितने दिन इस महल में रहोगे। उत्तर के स्थान पर सुल्तान ने चिंतन किया और कहा कि मुझे भी मरना है। परमेश्वर ने कहा कि हे भोले प्राणी! यह सराय (धर्मशाला) नहीं तो क्या है?

तेरे बाप–दादा पड़ पीढ़ी। वे बसे इसी सराय में गीद्यी।।
ऐसे ही तू चल जाई। तातें हम महल सराय बताई।।
अब तू तख्त बैठकर भूली। तेरा मन चढ़ने को सूली।।

इतना कहकर परमात्मा गुप्त हो गए। सुल्तानी को मूर्छा आ गई। बहुत देर में होश में आया। अन्य मौलवी बुलाया। उसने बांयी बाजु पर ताबीज बाँधकर झाड़फूँक की, कहा कि अब कुछ नहीं होगा। चला गया।

लीला नं. 4 :- कुछ दिन बाद राजा सामान्य होकर फिर मौज-मस्ती करने लगा। दिन के समय राजा अब्राहिम अपने नौलखा (जिसमें नौ लाख फलदार पेड़ भिन्न-भिन्न प्रकार के लगाए जाते थे, उसको नौलखा बाग कहते थे।) बाग में सोया करता था। उसके बिस्तर को नौकरानियाँ बिछाया करती थी। फूलों के गुलदस्ते चारों ओर रखा करती थी। नौकरानियों की पोषाक रानियों से भिन्न होती थी। सब बांदियों की पोषाक एक जैसी होती थी।

दीन दयाल कबीर जी ने उस अपनी प्यारी आत्मा सम्मन के जीव को काल जाल से निकालने के लिए क्या-क्या उपाय करने पड़े थे। एक दिन परमेश्वर कबीर जी ने नौकरानी का वेश बनाया।(स्त्री रूप धारण किया।) बाग में राजा का बिस्तर (सेज) बिछाया। फूलों के गुलदस्ते अत्यंत सुन्दर तरीके से लगाए और स्वयं उस सेज पर लेट गए। राजा अब्राहिम आया तो

देखा, एक बांदी (खवासी) मेरी सेज पर सो रही है। इसको मेरा जरा-सा भी भय नहीं है। सुल्तान ने उसी समय कोड़ा उठाकर लेटे हुए परमेश्वर की कमर पर तीन बार मारा। तीन निशान कमर पर बन गए, खाल उतर गई। बांदी वेश में परमेश्वर ने पलंग से नीचे उतरकर एक बार रोने का अभिनय किया और फिर जोर-जोर से हँसने लगे। दासी को इतनी चोट लगने के पश्चात् भी हँसते देखकर अब्राहिम आश्चर्य में पड़ गया। वह विचार कर रहा था कि बांदी को तो बेहोश हो जाना चाहिए था या मर जाना चाहिए था। राजा ने दासी वेश धारी परमात्मा का हाथ पकड़ा और पूछा कि लौंडी! हँस किसलिए रही है?

परमात्मा ने कहा कि मैं इस बिस्तर पर एक घड़ी (24 मिनट) लेटी हूँ, विश्राम किया है। एक घड़ी के विश्राम का दण्ड मुझे तीन कोड़े मिला है। मेरे शरीर का चाम भी उतर गया है। मैं इसलिए हँस रही हूँ कि जो इस गंदी सेज पर दिन-रात सोता है, उसका क्या हाल होगा? मुझे तेरे ऊपर तरस आ रहा है भोले प्राणी!

मैं एक घड़ी सेज पर सोई। ताते मेरा यह हाल होई।।
जो सोवै दिवस और राता। उनका क्या हाल विधाता।।
गैब भये ख्वासा। सुल्तानी भये उदासा।।
यह कौन छलावा भाई। याका भेद समझ ना आई।।

यह दृश्य देखकर सुल्तान अधम अचेत हो गया। उठा तब सोचा कि यह क्या हो रहा है? मैं समझ नहीं पा रहा हूँ।

लीला नं. 5 :- कुछ समय के पश्चात् मन्त्रियों-रानियों ने कहा कि राजा को शिकार करने ले जाओ। कई दिनों तक जंगल में रहो। इनके मन की चिंता कम हो जाएगी। ऐसा ही किया गया। पहले दिन ही दोपहर तक कोई जानवर नहीं मिला। राजा को यह सब अच्छा नहीं लगा। जंगल में तो मृगों के झुण्ड के झुण्ड चलते हैं। आज एक हिरण भी नहीं आया है। अचानक एक हिरण दिखाई दिया। राजा ने कहा कि यह हिरण बचकर नहीं जाना चाहिए। जिसके पास से निकल गया, उसकी खैर नहीं। देखते-देखते हिरण राजा के घोड़े के नीचे से निकलकर जंगल की और दौड़ लिया। राजा ने शर्म के मारे घोड़ा पीछे-पीछे दौड़ाया। दूर जाकर हिरण जंगल में छिप गया। राजा तथा घोड़े को बहुत प्यास लगी थी। जान जाने वाली थी। अल्लाह से जीवन रक्षार्थ जल की याचना की। वापिस अपने पड़ाव की ओर चला। पड़ाव एक घण्टा दूर था। वहाँ तक जीवित बचना कठिन था।

कुछ दूर चलकर दाऐं-बायें देखा तो एक जिन्दा फकीर बैठा दिखाई दिया। पास में स्वच्छ जल का छोटा जलाशय था। उसके चारों ओर फलदार

वक्ष थे। मधुर फल लगे थे। राजा को जीवन की किरण दिखाई दी। जल पीया, कुछ फल खाए। घोड़े को पानी पिलाया। वक्ष से बाँध दिया। जिन्दा बाबा की ओर देखा तो उनके पास तीन सुंदर कुत्ते बँधे थे। एक कुत्ते बाँधने की सांकल (चैन=लोहे की बेल) साथ में रखी थी।

सुल्तान ने फकीर को सलाम वालेकम किया। फकीर ने भी उत्तर में वालेकम सलाम बोला। राजा ने कहा, हे फकीर जी! आप तीन कुत्तों का क्या करोगे? इनमें से दो मुझे दे दो। फकीर जी ने कहा, ये कुत्ते मैं किसी को नहीं दे सकता। इनको मैंने पाठ पढ़ाना है। ये तीनों बलख शहर के राजा रहे हैं। मैं इनको समझाता था कि तुम अल्लाह को याद किया करो। इस संसार में सदा नहीं रहोगे। मरकर कुत्ते का जीवन प्राप्त करोगे। अब तुम नान पुलाव-काजू-किशमिश, मनुखा दाख, खीर, हलवा, फल खा रहे हो। यह आपके पूर्व जन्मों के पुण्यों तथा भक्ति का फल मिला है। यदि इस मानव जीवन में भक्ति नहीं करोगे तो कुत्ते आदि के प्राणियों के जीवन में कष्ट उठाओगे। खाने को यह अच्छा भोजन नहीं मिलेगा। झूठे टुकड़े खाया करोगे। टट्टी खाया करोगे, गंदा पानी नाली का पीया करोगे। जब राजा थे, तब इन्होंने मेरी बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। ये सोचते थे कि यह फकीर मूर्ख है। राज्य को कौन संभालेगा? रानियों का क्या होगा? अब ये तीनों कुत्ते बने हैं। देखो! मैंने काजू-बादाम, किशमिश मिलाकर बनाया हलवा-खीर इनके सामने रखा है। इनको खाने नहीं देता हूँ। दिखाता हूँ। जब ये खाने की कोशिश करते हैं तो मैं इनको पीटता हूँ। यह कहकर परमेश्वर जी ने जो एक लोहे की बेल खाली रखी थी। उठाकर कुत्तों को मारना शुरू किया। कुत्ते चिल्लाने लगे। परमेश्वर बोले कि खालो न हलवा खिलाऊँ तुमको। झूठा-सूखा टुकड़ा डालूंगा। ऐ घोड़े वाले भाई! यह जो खाली बेल रखी है, यह बताऊँ किसलिए है? जो बलख शहर का राजा सुल्तान अब्राहिम इब्न अधम है। वह भी संसार तथा राज्य की चकाचौंध में अँधा होकर अल्लाह को भूल गया है। अब उसको याद नहीं कि मरकर कुत्ता भी बनूंगा। उसको बहुत बार समझाया है कि भक्ति करले, इन महल रूपी सराय में सदा नहीं रहेगा, परंतु उसको खुदा का कोई खौफ नहीं है। वह तो खुद खुदा बनकर निर्दोष फकीरों को दण्डित कर रहा है। मैं तो यहाँ दूर बैठा हूँ। इसलिए बचा हूँ। वह राजा मरेगा, भक्ति बिना कुत्ता बनेगा। उसको लाकर इस सांकल से बाँधूंगा।

जिन्दा फकीर के मुख से ये वचन सुनकर कुत्तों के रूप में अपने पूर्वजों की दुर्दशा देखकर अब्राहिम काँपने लगा और बोला कि हे फकीर जी! बलख शहर का राजा मैं ही हूँ। मुझे क्षमा करो। यह कहकर फकीर के चरणों में गिर गया। कुछ देर पश्चात् उठा तो देखा, वहाँ पर न जिन्दा बाबा था, न

जलाशय, न बाग था, न कुत्ते थे। सुल्तानी इसको स्वपन भी नहीं मान सकता था क्योंकि घोड़े के पैर अभी भी भीगे थे। कुछ फल तोड़कर रखे थे, वे भी सुरक्षित थे। सुल्तान को समझते देर नहीं लगी। घोड़े पर चढ़ा और पड़ाव पर आया। मुख से नहीं बोल पाया। हाथ से संकेत किया कि सामान बाँधो और लौट चलो शहर को। कुछ मिनटों में काफिला बलख शहर को चल पड़ा।

लीला नं. 6 :- घर में एक कमरे में बैठकर रोने लगा। रानियों ने, मंत्रियों ने समझाना चाहा कि यह तो वैसे ही होता रहता है। मुख्य रानियाँ कह रही थी कि ऐसी बात तो स्त्रियों के साथ होती हैं, आप तो मर्द हैं। हिम्मत रखो। आप तो प्रजा के पालक हो।

इतने में एक कुत्ता आया। उसके सिर में जख्म था। उसमें कीट (कीड़े) नोच रहे थे। कुत्ता बोला, हे सुल्तान अब्राहिम! मैं भी राजा था। जितने प्राणी शिकार में मारे तथा एक राजा के साथ युद्ध में सैनिक मारे, वे आज अपना बदला ले रहे हैं। मेरे सिर में कीड़े बनकर मुझे नोंच रहे हैं। मैं कुछ करने योग्य नहीं हूँ। यही दशा तेरी होगी। अपना भविष्य देख लो। तेरे पीछे-पीछे खुदा भटक रहा है। तू परिवार-राज्य मोह में अपना जीवन नष्ट कर रहा है। (यह लीला भी स्वयं परमेश्वर कबीर जी ने की थी।) यह अंतिम झटका था अब्राहिम को दलदल से निकालने का।

उसी रात्रि में मुख पर काली स्याही लेपकर एक अलफी के स्थान पर एक शॉल लपेटा, फिर एक तकिया, एक लोटा, एक पतला गद्दा यानि बिछौना लेकर घर से कमद के रास्ते पीछे से उतरकर चल पड़ा। (कमद=एक मोटा रस्सा जिसको दो-दो फुट पर गाँठें लगा रखी होती थी जिसके द्वारा छत से आपत्ति के समय उतरते थे।)

लीला नं. 7 :- रास्ते में एक मालिन बाग के बाहर बेर बेच रही थी। सुल्तान को भूख लगी थी। सारी रात पैदल चला था। मालन से बेरों का भाव पूछा तो मालिन ने बताया कि एक आने के सेर। (एक रूपये में 16 आने होते थे। एक सेर यानि एक किलोग्राम) राजा के पास आना नहीं था। उसने जो जूती पहन रखी थी, उन दोनों की कीमत उस समय 2½ लाख रूपये थी। उनके ऊपर हीरे-पन्ने जड़े थे।

राजा ने कहा कि मेरे पास एक आना या रूपया नहीं है। ये जूती हैं, इनकी कीमत अढ़ाई लाख रूपये है। ये दोनों ले लो, मुझे भूख लगी है, एक सेर बेर तोल दो। मालिन एक सेर बेर तोलकर अब्राहिम के शॉल के पल्ले में डालने लगी तो एक बेर नीचे गिर गया। उस बेर को उठाने के लिए मालिन ने भी हाथ बढ़ाया और अब्राहिम ने भी मालिन के हाथ से बेर छीनना चाहा। दोनों अपना बेर होने का दावा करने लगे।

उसी समय परमेश्वर कबीर जी प्रकट हुए और कहने लगे, हे गंवार! यह तो मूर्ख है जिसको इतना भी विवेक नहीं कि एक बेर के पीछे उस व्यक्ति से उलझ रही है जिसने अढ़ाई लाख की जूती छोड़ दी। हे मूर्ख! ढ़ाई लाख की जूती छोड़ रहा है और एक पैसे के बेर के ऊपर झगड़ा कर रहा है। ये कैसा त्याग है तेरा? विवेक से काम ले। यह कहकर परमात्मा ने सुल्तान अधम के मुख पर थप्पड़ मारा और अंतर्ध्यान हो गए।

जीवन की यात्रा ऐसे भी हो सकती है :- सुल्तान आगे चला तो देखा कि एक निर्धन व्यक्ति एक डले के ऊपर सिर रखकर जमीन पर सो रहा है। उसी समय तकिया तथा बिछौना फैंक दिया। आगे देखा कि एक व्यक्ति नदी से हाथों से जल पी रहा था। लोटा भी फैंक दिया।

काल की भूल-भुलईया में फँसे व्यक्ति को समझाना :- रास्ते में वर्षा होने लगी। शीतल वायु बहने लगी। अब्राहिम ने एक झौंपड़ी देखी जो एक किसान की थी। उसके पास दो बीघा जमीन बिना सिंचाई की थी। एक बूढ़ी गाय जो चार-पाँच बार प्रसव कर चुकी थी। एक काणी स्त्री थी। शीतल वायु के कारण उत्पन्न ठण्ड से बचने के लिए अब्राहिम अधम सुल्तान उस झौंपड़ी के पीछे लेट गया। रात्रि में दोनों पति-पत्नी बातें कर रहे थे कि वर्षा अच्छी हो गई है। गाय का चारा पर्याप्त हो जाएगा। अपने खाने के लिए भी अच्छी फसल पकेगी। अपने ऐसे ठाठ हो जाएंगे, ऐसे तो बलख बुखारे के बादशाह के भी नहीं हैं।

सुल्तान अब्राहिम अधम यह सब वार्ता सुनकर उनकी बुद्धि पर पत्थर गिरे जानकर उनको भविष्य के दुःखों से अवगत कराने के उद्देश्य से सूर्योदय तक वहीं पर ठहरा रहा। सुबह उठकर उनकी झौंपड़ी के द्वार पर खड़ा होकर सलाम किया। दोनों पति-पत्नी झौंपड़ी से बाहर आए। अब्राहिम उनको भक्ति करने तथा माया से मुख मोड़ने का ज्ञान देने लगा। कहा कि आपके पास तो एक गाय है, एक स्त्री है। दो बीघा जमीन है। आप इसी से चिपके बैठे हो। इसे बलख के बादशाह से भी अधिक ठाठ मान रहे हो। यह तो कुछ दिनों का मेला है। तुमको गुरू जी से उपदेश दिला देता हूँ, तुम्हारा जीवन धन्य हो जाएगा। मैं ही बलख शहर वाला सुल्तान अब्राहिम अधम हूँ। मैं उस राज्य को छोड़कर परमात्मा की प्राप्ति के लिए चला हूँ।

उन्होंने कहा कि हमें तो लगता नहीं कि आप बलख शहर के राजा हो। यदि ऐसा है तो तेरे जैसा मूर्ख व्यक्ति इस पथ्वी पर नहीं है। आपकी शिक्षा की हमें आवश्यकता नहीं है। सुल्तान ने कहा कि :-

गरीब, रांडी (स्त्री) ढांडी (गाय) ना तजैं, ये नर कहिये काग।
बलख बुखारा त्याग दिया, थी कोई पिछली लाग।।

इसके पश्चात् अब्राहिम अधम पृथ्वी का सुल्तान तो नहीं रहा, परंतु भक्ति का सुल्तान बन गया। भक्त राज बन गया। इसलिए उसको सुल्तान या प्यार में सुल्तानी नाम से प्रसिद्धि मिली। आगे की कथा में इसको केवल सुल्तान नाम से ही लिखा-कहा जाएगा। जैसे धर्मदास जी को धनी धर्मदास कहा जाने लगा था। वे भक्ति के धनी थे। वैसे सांसारिक धन की भी कोई कमी नहीं थी। सुल्तान को परमेश्वर मिले और प्रथम मंत्र दिया और कहा कि बाद में तेरे को सतनाम, फिर सार शब्द दूंगा।

कबीर सागर के अध्याय ''सुल्तान बोध'' में पृष्ठ 62 पर प्रमाण है :-

प्रथम पान प्रवाना लेई। पीछे सार शब्द तोई देई।।
तब सतगुरू ने अलख लखाया। करी परतीत परम पद पाया।।
सहज चौका कर दीन्हा पाना (नाम)। काल का बंधन तोड़ बगाना।।

विचार करें :- उस समय अब्राहिम के पास न तो आरती चौंका करने को धन था, न अन्य सुविधा थी। यह वास्तविक कबीर जी की दीक्षा की विधि है। जो आरती चौका, उसमें लाखों या हजारों का सामान, नारियल आदि का कोई प्रावधान नहीं है। वह तो बाद में कोई पाठ कराना चाहे तो कराए अन्यथा दीक्षा विधि केवल मंत्रित जल तथा मीठे पदार्थ (मीश्री-चीनी, गुड़, बूरा, शक्कर) से दी जा सकती है। सत्य नाम तथा सार शब्द में पान (पेय पदार्थ) नहीं दिया जाता। केवल दीक्षा मंत्र बताए-समझाए जाते हैं। संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त) को परमेश्वर कबीर जी मिले थे। उनको दिव्य दृष्टि प्रदान की थी। उसी के आधार से संत गरीबदास जी ने बताया है कि :-

गरीब, हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी माहें कबीर हुआ।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

''अब्राहिम अधम सुल्तान के विषय में संत गरीबदास जी के विचार''

कबीर परमेश्वर जी ने अपने शिष्य गरीबदास जी को बताया कि :-

सुनत ज्ञान गलताना पद पदें समाना।।(टेक)।।
अमर लोक से सतगुरू आए, रूप धरा करवांना।
ढूँढ़त ऊँट महल पर डोलैं, बूझत शाह ब्याना।।(टेक)
हम कारवान होय आये। महलौं पर ऊंट बताये।।(1)
बोलैं पादशाह सुलताना। तूं रहता कहां दिवाना।।(2)
दूजैं कासिद गवन किया रे। डेरा महल सराय लिया रे।।(3)

जब हम महल सराय बताई। सुलतानी कूं तांवर आई।।(4)
अरे तेरे बाप दादा पड़ पीढी। ये बसे सराय में गीदी।।(5)
ऐसैं ही तूं चलि जाई। यौं हम महल सराय बताई।।(6)
अरे कोई कासिद कूं गहि ल्यावै। इस पंडित खांनें द्यावै।।(7)
ऊठे पादशाह सुलताना। वहां कासिद गैब छिपाना।।(8)
तीजै बांदी होय सेज बिछाई। तन तीन कोरड़े खाई।।(9)
तब आया अनहद हांसा। सुलतानी गहे खवासा।।(10)
मैं एक घड़ी सेजां सोई। तातैं मेरा योह हवाल होई।।(11)
जो सोवैं दिवस रू राता। तिन का क्या हाल बिधाता।।(12)
तब गैबी भये खवासा। सुलतानी हुये उदासा।।(13)
यौह कौन छलावा भाई। याका कछु भेद न पाई।।(14)
चौथे जोगी भये हम जिन्दा। लीन्हें तीन कुत्ते गलि फंदा।।(15)
दीन्ही हम सांकल डारी। सुलतानी चले बाग बाड़ी।।(16)
बोले पातशाह सुलताना। कहां सैं आये जिन्द दिवाना।।(17)
ये तीन कुत्ते क्या कीजै। इनमें सैं दोय हम कूं दीजै।।(18)
अरे तेरे बाप दादा है भाई। इन बड़ बदफैल कमाई।।(19)
यहां लोह लंगर शीश लगाई। तब कुत्यौं धूम मचाई।।(20)
अरे तेरे बाप दादा पड़ पीढी। तूं समझै क्यूं नहीं गीदी।।(21)
अब तुम तख्त बैठकर भूली। तेरा मन चढने कूं शूली।।(22)
जोगी जिन्दा गैब भया रे। हम ना कछु भेद लह्या रे।।(23)
बोले पादशाह सुलताना। जहां खड़े अमीर दिवाना।।(24)
येह च्यार चरित्र बीते। हम ना कछु भेद न लीते।।(25)
वहां हम मार्‌या ज्ञान गिलोला। सुलतानी मुख नहीं बोला।।(26)
तब लगे ज्ञान के बानां। छाड़ी बेगम माल खजाना।।(27)
सुलतानी जोग लिया रे। सतगुरु उपदेश दिया रे।।(28)
छाड्या ठारा लाख तुरा रे। जिसे लाग्या माल बुरा रे।।(29)
छाड़े गज गैंवर जल हौडा। अब भये बाट के रोड़ा।।(30)
संग सोलह सहंस सुहेली। एक सें एक अधिक नवेली।।(31)
गरीब, अठारह लाख तुरा जिन छोड़े, पद्यमनी सोलह सहंस।
एक पलक में त्याग गए, सो सतगुरू के हैं हंस।।(32)
रांडी–ढ़ांडी ना तजैं, ये नर कहिए काग।
बलख बुखारा त्याग दिया, थी कोई पिछली लाग।।(33)
छाड़े मीर खान दीवाना, अरबों खरब खजाना।।(34)
छाड़े हीरे हिरंबर लाला। सुलतानी मोटे ताला।।(35)

जिन लोक पर्गणा त्यागा। सुनि शब्द अनाहद लाग्या।।(36)
पगड़ी की कौपीन बनाई। शालौं की अलफी लाई।।(37)
शीश किया मुंह कारा। सुलतानी तज्या बुखारा।।(38)
गण गंधर्व इन्द्र लरजे। धन्य मात पिता जिन सिरजे।।(39)
भया सप्तपुरी पर शांका। सुलतानी मारग बांका।।(40)
जिन पांचौं पकड़ि पछाड़्या। इनका तो दे दिया बाड़ा।।(41)
सुनि शब्द अनाहद राता। जहां काल कर्म नहीं जाता।।(42)
हैं अगम अनाहद सिंधा। जोगी निरगुण निरबंधा।।(63)
कछु वार पार नहीं थाहं। सतगुरु सब शाहनपति शाहं।।(64)
उलटि पंथ खोज है मीना। सतगुरु कबीर भेद कहैं बीना।।(65)
यौह सिंधु अथाह अनूपं। कछु ना छाया ना धूपं।।(66)
जहां गगन धूनि दरबानी। जहां बाजैं सत्य सहिदानी।।(67)
सुलतान अधम जहां राता। तहां नहीं पांच तत का गाता।।(68)
जहां निरगुण नूर दिवाला। कछु न घर है खाला।।(69)
शीश चढाय पग धरिया। यौह सुलतानी सौदा करिया।।(70)
सतगुरु जिन्दा जोग दिया रे। सुलतानी अपन किया रे।।(71)
कहैं दास गरीब गुरु पूरा। सतगुरु मिले कबीरा।।(72)

{संत गरीबदास जी की इन उपरोक्त वाणियों का अर्थ यही है। इनमें भी सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम के जीवन की घटनाओं का वर्णन है।}

''अब्राहिम अधम सुल्तान की परीक्षा''

सुल्तान अधम ने एक साधु की कुटिया देखी जो कई वर्षों से उस स्थान पर साधना कर रहा था। अब्राहिम उसके पास गया। वह साधक बोला कि यहाँ पर मत रहना, यहाँ कोई खाना-पानी नहीं है। आप कहीं और जाइये। सुल्तान अब्राहिम बोला कि मैं तेरा मेहमान बनकर नहीं आया। मैं जिसका मेहमान (अल्लाह का मेहमान) हूँ, वह मेरे रिजक (खाने) की व्यवस्था करेगा। इन्सान अपनी किस्मत साथ लेकर आता है। कोई किसी का नहीं खाता है। हे बेइमान! तू तो अच्छा नागरिक भी नहीं है। तू चाहता है अल्लाह से मिलना। नीयत ठीक नहीं है तो इंसान परमार्थ नहीं कर सकता। बिन परमार्थ खुदा नहीं मिलता। जिसने जीवन दिया है, वह रोटी भी देगा। अब्राहिम थोड़ी दूरी पर जाकर बैठ गया।

शाम को आसमान से एक थाल उतरा जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की सब्जी, हलवा, खीर, रोटी तथा जल का लोटा था। थाली के ऊपर थाल परोस (कपड़े का रूमाल) ढ़का था। अब्राहिम ने थाली से कपड़ा उठाया और पुराने

साधक को दिखाया। उस पुराने साधक के पास आसमान से दो रोटी वे भी जौ के आटे की और एक लोटा पानी आए।

यह देखकर पुराना साधक नाराज हो गया कि हे अल्लाह! मैं तेरा भेजा हुआ भोजन नहीं खाऊँगा। आप तो भेदभाव करते हो। मुझे तो सूखी जौ की रोटी, अब्राहिम को अच्छा खाना पुलाव वाला भेजा है।

अल्लाह ने आकाशवाणी की कि हे भक्त! यह अब्राहिम एक धनी राजा था। इसके पास अरब-खरब खजाना था। इसकी 16 हजार रानियां थी, बच्चे थे। अमीर (मंत्री) तथा दीवान थे। नौकर-नौकरानियां थी। यह मेरे लिए ऐसे ठाठ छोड़कर आया है। इसको तो क्या न दे दूँ। तू अपनी औकात देख, तू एक घसियारा था। सारा दिन घास खोदता था। तब एक टका मिलता था। सिर पर गट्ठे लेकर नित बोझ मरता था। न बीबी (स्त्री) थी, न माता थी, न कोई पिता तेरा सेठ था। तुझको मैं पकी-पकाई रोटियां भेजता हूँ। तू फिर भी नखरे करता है। यदि तू मेरी रजा में राजी नहीं है तो कहीं और जा बैठ। यदि भक्ति से विमुख हो गया तो तेरा घास खोदने का खुरपा और बाँधने की जाली, ये रखी, जा खोद घास और खा। यदि कुछ हासिल करना है तो मेरी रजा से बाहर कदम मत रखना। भक्त में यदि कुब्र (अभिमान) है तो वह परमात्मा से दूर है। यदि भक्त में आधीनी है तो वह हक्क (परमेश्वर) के करीब है।

सुल्तान अधम ने परमेश्वर से अर्ज की कि हे दाता! मैं मेहनत करके निर्वाह करूँगा। आपकी भक्ति भी करूँगा। आप यह भोजन न भेजो। रूखी-सूखी खाकर मैं आपके चरणों में बना रहना चाहता हूँ। यह भोजन आप भेज रहे हो। यह खाकर तो मन में दोष आएंगे, कोई गलती कर बैठूँगा। यह अर्ज वह पुराना भक्त भी सुन रहा था। उसकी गर्दन नीची हो गई। परमात्मा से अर्ज की, प्रभु! मेरी गलती को क्षमा करो। मैं आपकी रजा में प्रसन्न रहूँगा। उस दिन से अब्राहिम जंगल से लकड़ियां तोड़कर लाता, बाजार में बेचकर खाना ले जाता। आठ दिन तक उसी को खाता और भक्ति करता था।

''भक्त हो नीयत का पूरा''

कुछ वर्ष पश्चात् अब्राहिम भ्रमण पर निकला। एक सेठ का बाग था। उसको नौकर की आवश्यकता थी। सुल्तान को पकड़कर बाग की रखवाली के लिए रख दिया। एक वर्ष पश्चात् सेठ बाग में आया। उसने अब्राहिम से अनार लाने को कहा। अनार लाकर सेठ को दे दिए। अनार खट्टे थे। सेठ ने कहा कि तेरे को एक वर्ष में यह भी पता नहीं चला कि मीठे अनार कैसे होते हैं?

सुल्तान ने कहा कि सेठ जी! आपने मेरे को बाग की सुरक्षा के लिए रखा है, बाग उजाड़ने के लिए नहीं। यदि रक्षक ही भक्षक हो जाएगा तो बात कैसे बनेगी? मैंने कभी कोई फल खाया ही नहीं तो खट्टे-मीठे का ज्ञान कैसे हो सकता है? सेठ ने अन्य नौकरों से पूछा तो नौकरों ने बताया कि यह नौकर तो जो रोटी मिलती है, बस वही खाकर बाग के चारों ओर कुछ बड़बड़ करता घूमता रहता है। हमने गुप्त रूप से भी देखा है। इसने कभी कोई फल नहीं तोड़कर खाया है, न नीचे पड़ा उठाया है।

किसी नौकर ने बताया कि यह बलख शहर का राजा है। मैंने 10 वर्ष पहले इसको जंगल में शिकार के समय देखा था। जब मैंने इससे पूछा कि लगता है आप बलख शहर के सुल्तान अब्राहिम अधम हो। पहले तो मना किया, फिर मैंने बताया कि आपको शिकार के समय जंगल में देखा था। आपकी सेना में मेरा साला याकूब बड़ा अधिकारी है। उसने बताया कि राजा ने सन्यास ले लिया है। उसका बेटा गद्दी पर बैठा है। तब इसने कहा कि किसी को मत बताना। सेठ ने चरणों में गिरकर क्षमा याचना की और ढ़ेर सारा धन देकर कहा कि आप यह धन लेकर अपना निर्वाह करो, भक्ति भी करो। मेरे घर रहो या बाग में महल बनवा दूँ, यहाँ रहकर भक्ति करो। सुल्तान धन्यवाद कहकर चल पड़ा।

''दास की परिभाषा''

एक समय सुल्तान एक संत के आश्रम में गया। वहाँ कुछ दिन संत जी के विशेष आग्रह से रूका । संत का नाम हुकम दास था। बारह शिष्य उनके साथ आश्रम में रहते थे। सबके नाम के पीछे दास लगा था। फकीर दास, आनन्द दास, कर्म दास, धर्मदास। उनका व्यवहार दास वाला नहीं था। उनके गुरू एक को सेवा के लिए कहते तो वह कहता कि धर्मदास की बारी है, उसको कहो, धर्मदास कहता कि आनन्द दास का नम्बर है। उनका व्यवहार देखकर सुल्तानी ने कहा कि :-

दासा भाव नेड़ै नहीं, नाम धराया दास। पानी के पीए बिन, कैसे मिट है प्यास।।

सुल्तानी ने उन शिष्यों को समझाया कि मैं जब राजा था, तब एक दास मोल लाया था। मैंने उससे पूछा कि तू क्या खाना पसंद करता है। दास ने उत्तर दिया कि दास को जो खाना मालिक देता है, वही उसकी पसंद होती है। आपकी क्या इच्छा होती है? आप क्या कार्य करना पसंद करते हो? जिस कार्य की मालिक आज्ञा देता है, वही मेरी पसंद है। आप क्या पहनते हो? मालिक के दिए फटे-पुराने कपड़े ठीक करके पहनता हूँ। उसको मैंने मुक्त कर दिया। धन भी दिया। उसी की बातों को याद करके मैं अपनी गुरू की

आज्ञा का पालन करता हूँ। अपनी मर्जी कभी नहीं चलाता। जो प्रभु देता है, उसकी आज्ञा जानकर खाता हूँ। मैं अपने को दास मानकर सेवा करता हूँ। परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए गुरूदेव को प्रसन्न करना अनिवार्य होता है। उसके पश्चात् वे सर्व शिष्य दास भाव से रहकर अपने गुरू जी की आज्ञा का पालन करने लगे तथा आपस में अच्छा व्यवहार करने लगे। अपना जीवन सफल किया।

''सुल्तानी को सार नाम कैसे प्राप्त हुआ?''

परमेश्वर कबीर जी एक आश्रम बनाकर रहने लगे। नाम जिन्दा बाबा से प्रसिद्ध थे। सुल्तानी को प्रथम मंत्र दीक्षा के कुछ महीनों के पश्चात् सतनाम की (दो अक्षर के मंत्र की) दीक्षा दी जिसमें एक ''ओम्'' मंत्र है तथा दूसरा उपदेश के समय बताया जाता है। दर्शन के लिए सुल्तान अनेकों बार आता रहा। सत्यनाम के पश्चात् योग्य होने पर सार शब्द साधक को दीक्षा में दिया जाता है। एक वर्ष के पश्चात् सुल्तान अधम ने अपने गुरू की कुटिया में जाकर सारनाम की दीक्षा के लिए विनम्र प्रार्थना की तो परमेश्वर जी ने कहा कि एक वर्ष के पश्चात् ठीक इसी दिन आना, सारनाम दूंगा। दर्शनार्थ कभी-भी आ सकते हो। सुल्तान अब्राहिम अधम ठीक उसी दिन सारनाम लेने के लिए गुरू जी की कुटिया में गया तो गुरू जी ने कहा कि ठीक एक वर्ष पश्चात् इसी दिन आना, सारनाम दूँगा। ऐसे करते-करते ग्यारह (11) वर्ष निकाल दिए। बीच-बीच में भी सतगुरू के दर्शन करने आता था, परंतु सारनाम के लिए निश्चित दिन ही आना होता था। जब ग्यारहवें वर्ष सुल्तानी सारशब्द के दीक्षार्थ आ रहा था तो एक मकान के साथ से रास्ता था। उस मकान की मालकिन ने छत से कूड़ा बुहारकर गली में डाला तो गलती से भक्त के ऊपर गिर गया। सुल्तान इब्राहिम के ऊपर कूड़ा गिरा तो वह ऊँची आवाज में बोला, क्या तुझे दिखाई नहीं देता? गली में इंसान भी आते-जाते हैं? यदि मैं आज राज्य त्यागकर न आया होता तो तेरी देही का चॉम उधेड़ देता।

उस बहन ने क्षमा याचना की और कहा, हे भाई! मेरी गलती है, मुझे पहले गली में देखना चाहिए था। आगे से ध्यान रखूँगी। वह मकान वाली बहन भी जिन्दा बाबा की भक्तमति थी। उसने जब इब्राहिम को आश्रम में देखा तो गुरू जी से पूछा, हे गुरूदेव! वह जो भक्त बैठा है एकान्त में, क्या वह कभी राजा था? जिन्दा बाबा ने पूछा, क्या बात है बेटी? यहाँ तो राजा और रंक में कोई भेद नहीं है। आपने यह प्रश्न किस कारण से किया? यह पहले बलख शहर का राजा था। इसको मैंने ज्ञान समझाया तो इसने राज्य त्याग दिया और मेहनत करके लकड़ियां बेचकर निर्वाह करता है, भक्ति भी

करता है। उस बहन ने बताया कि मेरे से गलती से सूखा कूड़ा छत से फैंकते समय इसके ऊपर गिर गया तो यह बहुत क्रोधित हुआ और बोला कि यदि मैंने राज्य न त्यागा होता तो तेरी खाल उतार देता। सत्संग के पश्चात् सार शब्द लेने वालों को बुलाया गया। जब सुल्तान अब्राहिम की बारी आई तो गुरू जी ने कहा कि अभी तो आप राजा हो, सार शब्द तो बच्चा! दास को मिलता है जिसने शरीर को मिट्टी मान लिया है। सुल्तानी ने कहा, गुरूदेव! राज्य को त्यागे तो वर्षों हो चुके हैं। गुरू महाराज जी ने कहा, मुझसे कुछ नहीं छुपा है। तूने जैसा राज्य त्यागा है। राज भाव नहीं त्यागा है। आप एक वर्ष के पश्चात् इसी दिन सारनाम के लिए आना। एक वर्ष के पश्चात् फिर सुल्तानी आ रहा था। उसी मकान के साथ से आना था। गुरू जी ने उसी शिष्या से कहा कि कल वह राजा सारशब्द लेने आएगा। तेरे मकान के पास से रास्ता है, और कोई रास्ता कुटिया में आने का नहीं है। अबकी बार उसके ऊपर पानी में गोबर-राख घोलकर बाल्टी भरकर उसके ऊपर डालना। फिर उसकी क्या प्रतिक्रिया रहे, वह मुझे बताना। उस बहन ने ऐसा ही किया। बहन ने साथ-साथ यह भी कहा कि हे भाई! धोखे से गिर गया। मैं धोकर साफ कर दूँगी। आप यहाँ तालाब में स्नान कर लो। सुल्तान ने कहा कि बहन मिट्टी के ऊपर मिट्टी ही तो गिरी है, कोई बात नहीं, मैं स्नान कर लेता हूँ, कपड़े धो लेता हूँ। उस शिष्या ने गुरूदेव को सुल्तानी की प्रक्रिया बताई, तब उसको सारशब्द दिया और कहा, बेटा! आज तू दास बना है। अब तेरा मोक्ष निश्चित है।

इसलिए भक्तजनों को इस कथा से शिक्षा लेनी चाहिए। सारशब्द प्राप्ति के लिए शीघ्रता न करें। अपने अंदर सब विकारों को सामान्य करें। विवेक से काम लें, मोक्ष निश्चित है।

''राजा बड़ा है या भक्त राज''

एक बार सुल्तान अधम अपने बलख शहर के बाहर एक तालाब पर जाकर बैठ गया। उसका पुत्र राजा था। पता चला तो हाथी पर चढ़कर बैंड-बाजे के साथ तालाब पर पहुँचा। पिता जी से घर चलने को कहा। सुल्तान ने साफ शब्दों में मना कर दिया। लड़के ने कहा कि आपने यह क्या हुलिया बना रखा है? आप यहाँ ठाठ से रहो। आप भिखारी बनकर कष्ट उठा रहे हो। मेरी आज्ञा से आज सब कुछ हो जाता है। सुल्तान ने कहा कि जो परमात्मा कर सकता है, वह राजा नहीं कर सकता। लड़के ने कहा कि आप आज्ञा दो, वही कर दूँगा। आपको हमारे पास रहना होगा। सुल्तानी ने कहा कि ठीक है, स्वीकार है। मैं हाथ से कपड़े सीने की एक सूई इस तालाब में

डालता हूँ। यह सूई जल से निकालकर मेरे को लौटा दे। राजा ने सिपाहियों, गोताखोरों तथा जाल डालने वालों को बुलाया। सब प्रयत्न किया, परंतु व्यर्थ। लड़के ने कहा, पिताजी! एक सूई के बदले हजार सूईयाँ ला देता हूँ। क्या आपका अल्लाह यह सूई निकाल देगा? तब सुल्तान ने कहा कि हे पुत्र! यदि मेरा अल्लाह यही सूई निकाल देगा तो क्या तुम भक्ति करोगे? क्या सन्यास ले लोगे? लड़के ने कहा कि आप पहले यह सूई अपने प्रभु से निकलवाओ, फिर सोचूँगा। इब्राहिम ने कहा कि परमात्मा की बेटी मछलियों! मुझ दास की एक सूई आपके तालाब में गिर गई है। मेरी सूई निकालकर मुझे देने की कपा करें। कुछ ही क्षणों के उपरांत एक मछली मुख में सूई लिए इब्राहिम के पास किनारे पर आई। इब्राहिम ने सूई पकड़ ली और मछलियों का हाथ जोड़कर धन्यवाद किया। तब सुल्तानी ने कहा, बेटा! देख परमात्मा जो कर सकता है, वह मानव चाहे राजा भी क्यों न हो, नहीं कर सकता। अब क्या भक्ति करेगा? पुत्र ने कहा कि भगवान ने आपको सूई ही तो दी है, मैं तो आपको हीरे-मोती दे सकता हूँ। भक्ति तो वद्धावस्था में करूंगा। भक्त इब्राहिम उठकर चल पड़ा। अपनी गुफा में चला गया।

''विकार जैसे काम, मोह, क्रोध, वासना नष्ट नहीं होते, शांत हो जाते हैं''

विकार मरे ना जानियो, ज्यों भूभल में आग।
जब करेल्लै धधकही, सतगुरू शरणा लाग।।

एक समय इब्राहिम सुल्तान मक्का शहर में गया हुआ था। उसका उद्देश्य था कि भ्रमित मुसलमान श्रद्धालु मक्का में हज के लिए या वैसे भी आते रहते हैं। उनको समझाना था। उनको समझाने के लिए वहाँ कुछ दिन रहे। कुछ शिष्य भी बने। किसी हज यात्री ने बलख शहर में जाकर बताया कि सुल्तान इब्राहिम मक्का में रहता है। छोटे लड़के ने पिता जी के दर्शन की जिद की तो उसकी माता-लड़का तथा नगर के कुछ स्त्री-पुरूष भी साथ चले और मक्का में जाकर इब्राहिम से मिले। इब्राहिम अपने शिष्यों को शिक्षा देता था कि बिना दाढ़ी-मूछ वाले लड़के तथा परस्त्री की ओर अधिक देर नहीं देखना चाहिए। ऐसा करने से उनके प्रति मोह बन जाता है। अपने लड़के को देखकर इब्राहिम से रहा नहीं गया, एकटक बच्चे को देखता रहा। लड़के की आयु लगभग 13 वर्ष थी। शिष्यों ने कहा कि गुरूदेव आप हमें तो शिक्षा देते हो कि बिना दाढ़ी-मूछ वाले बच्चे की ओर ज्यादा देर नहीं देखना चाहिए, स्वयं देख रहे हो। इब्राहिम ने कहा, पता नहीं मेरा आकर्षण इसकी ओर क्यों हो रहा है? उसी समय एक वद्ध ने कहा, राजा जी! यह आपकी (बेगम) पत्नी

है और यह आपका पुत्र है। आप राज्य त्यागकर आए, उस समय यह गर्भ में था। आपसे मिलने आए हैं। उसी समय लड़का पिता के चरणों को छूकर गोदी में बैठ गया। इब्राहिम की आँखों में ममता के आँसूं छलक आए।

परमेश्वर की ओर से आकाशवाणी हुई कि हे सुल्तानी! तेरे को मेरे से प्रेम नहीं रहा। अपने परिवार से प्रेम है। अपने घर चला जा। उसी समय इब्राहिम को झटका लगा तथा आँखें बंद करके प्रार्थना की कि हे परमात्मा! मेरे वश से बाहर की बात है, या तो मेरी मत्यु कर दो या इस लड़के की। उसी समय लड़के की मत्यु हो गई। इब्राहिम उठकर चल पड़ा। बलख से आए व्यक्ति लड़के के अंतिम संस्कार करने की तैयारी करने लगे। परमात्मा पाने के लिए भक्त को प्रत्येक कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है। तब सफलता मिलती है। उस लड़के के जीव को परमात्मा ने तुरंत मानव जीवन दिया और अपने भक्त के घर में लड़के को उत्पन्न किया। बचपन से ही उस आत्मा को परमात्मा का मार्ग मिला। एक बार सब भक्त बाबा जिन्दा के आश्रम में सत्संग में इकट्ठे हुए। वह लड़का उस समय 4 वर्ष की आयु का था। परमेश्वर की कपा से उसका बिस्तर तथा इब्राहिम का बिस्तर साथ-साथ लगा था। इब्राहिम को देखकर लड़का बोला, पिताजी! आप मुझे मक्का में क्यों छोड़ आए थे? मैं अब भक्त के घर जन्मा हूँ। देख न अल्लाह ने मुझे आप से फिर मिला दिया। यह बात गुरू जी जिन्दा बाबा (परमेश्वर कबीर जी) के पास गई तो जिन्दा बाबा ने बताया कि यह इब्राहिम का लड़का है जो मक्का में मर गया था। अब परमात्मा ने इस जीव को भक्त के घर जन्म दिया है। इब्राहिम को लड़के के मरने का दुःख बहुत था, परंतु किसी को साझा नहीं करता था। उस दिन उसने कहा, कपासागर! तू अन्तर्यामी है। आज मेरा कलेजा (दिल) हल्का हो गया। मेरे मन में रह-रहकर आ रहा था कि परमात्मा ने यह क्या किया? इसकी माँ घर पर किस मुँह से जाएगी? आज मेरी आत्मा पूर्ण रूप से शांत है। जिन्दा बाबा ने उस लड़की पूर्व वाली माता यानि इब्राहिम की पत्नी को संदेश भिजवाया कि वह आश्रम आए। लड़के तथा उसके नए माता-पिता तथा इब्राहिम को भी बुलाया। उस लड़के को पहले वाली माता से मिलाया। लड़का देखते ही बोला, अम्मा जान! आप मेरे को मक्का छोड़कर चली गई। वहाँ पर अल्लाह आए, देखो ये बैठे (जिन्दा बाबा की ओर हाथ करके बोला) और मेरे को साथ लेकर इनके घर छोड़ गए। मैं इस माई के पेट में चला गया। फिर मेरा जन्म हुआ। अब मैं दीक्षा ले चुका हूँ। प्रथम मंत्र का जाप करता हूँ। हे माता जी! आप भी गुरू जी से दीक्षा ले लो, कल्याण हो जाएगा। इब्राहिम की पत्नी ने दीक्षा ली और कहा कि इस लड़के को मेरे साथ भेज दो।

परमेश्वर कबीर जी (जिन्दा बाबा) ने कहा कि यदि उस नरक में (राज की चकाचौंध में) रखना होता तो इसकी मत्यु क्यों होती? अब तो आप आश्रम आया करो और महीने में सत्संग में बच्चे के दर्शन कर जाया करो। इब्राहिम को उस लड़के में अपनापन नहीं लगा क्योंकि वह किसी अन्य के शरीर से जन्मा था। परंतु उसके भ्रम, मन की मूर्खता का नाश हो गया। जो वह मन-मन में कहा करता कि अल्लाह ने यह नहीं करना चाहिए था। अब उसे पता चला कि परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है। भले ही उस समय अपने को अच्छा न लगे। अल्लाह के सब जीव हैं, वह सबके हित की सोचता है। हम अपने-अपने हित की सोचते हैं। रानी को भी उस लड़के में वह भाव नहीं था, परंतु आत्मा वही थी। इसलिए माता वाली ममता दिल में जाग्रत थी। इसलिए उसको देखकर शांति मिलती थी। यह कारण बनाकर परमेश्वर जी ने उस रानी का भी उद्धार किया और बालक का भी।

''भक्त तरवर (वक्ष) जैसे स्वभाव का होता है''

एक बार एक समुद्री जहाज में एक सेठ व्यापार के लिए जा रहा था। उसके साथ रास्ते का खाना बनाने वाले तथा मजाक-मस्करा करके दिल बहलाने वालों की पार्टी भी थी। लम्बा सफर था। महीना भर लगना था। मजाकिया व्यक्तियों को एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जिसके ऊपर सब मजाक की नकल झाड़ सकें। खोज करने पर इब्राहिम को पाया और पकड़कर ले गए। सोचा कि इस भिखारी को रोटियाँ चाहिए, मिल जाएंगी। समुद्र में दूर जाने के पश्चात् सेठ के लिए मनोरंजन का प्रोग्राम शुरू हुआ। इब्राहिम के ऊपर मजाक झाड़ रहे थे। कह रहे थे कि एक इस (इब्राहिम) जैसा मूर्ख था। वह वक्ष की उसी डाली पर बैठा था जिसे काट रहा था। गिरकर मर गया। हा-हा करके हँसते थे। इस प्रकार बहुत देर तक ऐसी अभद्र टिप्पणियाँ करते रहे।

इब्राहिम बहुत दुःखी हुआ। सोचा कि महीनों का दुःख हो गया। न भक्ति कर पाऊँगा, न चैन से रह पाऊँगा। उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे भक्त इब्राहिम! यदि तू कहे तो इन मूर्खों को मार दूँ। जहाज को डुबो दूँ, तुझे बचा लूँ। ये तेरे को तंग करते हैं। यह आकाशवाणी सुनकर जहाज के सब व्यक्ति भयभीत हो गए। इब्राहिम ने कहा, हे अल्लाह! यह कलंक मेरे माथे पर न लगा। ये बेखबर हैं। इतने व्यक्तियों के मारने के स्थान पर मुझे ही मार दे या इनको सद्बुद्धि दे दो, ये आपकी भक्ति करके अपने जीव का कल्याण कराऐं। जहाज मालिक सहित सब यात्रियों ने इब्राहिम से क्षमा याचना की तथा परमात्मा का ज्ञान सुना। आदर के साथ अपने साथ रखा। भक्ति करने

के लिए जहाज में भिन्न स्थान दे दिया। इब्राहिम ने उन सबको सत्यज्ञान समझाकर आश्रम में लाकर गुरू जी से दीक्षा दिलाई।

इब्राहिम स्वयं दीक्षा दिया करता था। जब जिन्दा बाबा यानि परमेश्वर कबीर जी को किसी ने इब्राहिम की उपस्थिति में बताया कि हे गुरूदेव! इब्राहिम दीक्षा देता है। तब परमेश्वर जी ने बताया कि हे भक्त! आप गलती कर रहे हो। आप अधिकारी नहीं हो। उस दिन के पश्चात् इब्राहिम ने दीक्षा देनी बंद की तथा अपने सब शिष्यों को पुनः गुरू जी से उपदेश दिलाया। क्षमा याचना की, स्वयं भी अपना नाम शुद्ध करवाया। भविष्य में ऐसी गलती नहीं की।

प्रश्न :- इस बात का कहाँ प्रमाण है कि अल-खिज्र रूप में अल्लाह कबीर ही लीला कर रहे थे? कबीर जी जुलाहा (काशी-भारत वाले) ही कादर अल्लाह है जिसने सब रचना की है।

उत्तर :- पहले यह सिद्ध करता हूँ कि काशी (बनारस) शहर में जो कबीर नामक जुलाहा रहा करता था, वह सब सृष्टि का रचने वाला खुदा है। इसके लिए अनेकों चश्मदीद गवाह (Eye Witness) हैं जिन्होंने उस समर्थ (कादर) अल्लाह को ऊपर (तख्त) सिंहासन पर बैठे देखा तथा बताया कि जो कबीर काशी शहर (भारत देश) में जुलाहे की भूमिका किया करता, वही समर्थ परमेश्वर है।

☛ गवाह नं. 1 :- संत गरीबदास जी गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, प्रांत-हरियाणा (देश-भारत):- संत गरीबदास जी दस वर्ष के बालक अपने खेतों में गाँव के अन्य ग्वालों के साथ प्रतिदिन की तरह गाय चराने गए हुए थे। विक्रमी संवत् 1774 (सन् 1717) फाल्गुन महीने की शुदी (चांदनी) द्वादशी को दिन के लगभग दस बजे ग्वाले तथा बालक गरीबदास जी एक जांडी के वृक्ष के नीचे छाया में बैठकर भोजन खा रहे थे। परमेश्वर जी जिंदा बाबा (अल-खिज्र) के वेश में ऊपर आसमान वाले तख्त (सिंहासन) से चलकर कुछ दूरी पर धरती के ऊपर उतरे तथा ग्वालों के पास गए। वह जांडी का पेड़ गाँव-कबलाना से गाँव-छुड़ानी को जाने वाले कच्चे रास्ते पर था तथा कबलाना की सीमा के सटे संत गरीबदास जी के खेत में था। {संत गरीबदास के पिता जी के पास गाँव में एक हजार तीन सौ पचहत्तर (1375) एकड़ जमीन थी। उसी जमीन पर चरागाह बना रखी थी जिसमें गाँव छुड़ानी के अन्य निर्धन व्यक्ति भी अपनी गायों को चराने के लिए ले जाया करते थे।} बाबा जिंदा यानि साधु को देखकर बड़ी आयु के ग्वालों (पालियों) में से एक ने कहा कि बाबा जी भोजन खाओ। साधु ने कहा, ''भोजन तो मैं अपने डेरे से खाकर आया हूँ।'' कई ग्वाले एक साथ बोले, ''यदि भोजन नहीं खाते तो

दूध पी लो।'' परमेश्वर ने कहा कि दूध पिला दो, परंतु दूध उसका पिलाओ जिसको कभी बच्चा उत्पन्न न हुआ हो यानि कंवारी गाय का। पालियों ने उसे मजाक समझा।

बालक गरीबदास जी उठे तथा एक अपनी प्रिय बछिया को लाए और बोले, हे बाबा जी! यह कंवारी गाय दूध कैसे दे सकती है? तब बाबा जी ने कहा कि यह दूध देगी, तुम स्वच्छ बर्तन लेकर इसके थनों के नीचे रखो। संत गरीबदास जी ने एक मिट्टी का बर्तन (छोटा घड़ा 3-4 किलोग्राम की क्षमता का) लिया और उसे हाथों से पकड़कर बछिया के थनों के नीचे करके बैठ गया। बाबा जिंदा (अल-खिज्र) ने गाय की बछड़ी की पीठ के ऊपर हाथ से थपकी मारी। उसी समय थन लंबे व कुछ मोटे हो गए तथा दूध निकलने लगा। जब वह तीन-चार किलोग्राम का बर्तन भर गया तो थनों से दूध आना बंद हो गया। बालक गरीबदास जी ने वह दूध से भरा बर्तन बाबा जी को दे दिया तथा कहा कि यह तो आपकी दया से मिला है, पी लो। बाबा जिंदा ने उस बर्तन को मुख लगाकर कुछ दूध पीया। शेष उन पालियों की ओर किया कि पी लो, यह प्रसाद है। अन्य ग्वाले उठकर चल दिए। कहने लगे कि यह दूध जादू-जंत्र करके कंवारी बछड़ी से निकाला है। हमारे को कोई भूत-प्रेत की बाधा हो जाएगी। यह कोई सेवड़ा (भूत-प्रेत निकालने वाला) लगता है। कंवारी गाय का दूध पाप का दूध है। यह बाबा पता नहीं किस छोटी जाति का है। इसका झूठा दूध हम नहीं पीएँगे।

बालक गरीबदास जी ने बाबा से बर्तन लिया और पालियों के देखते-देखते उसमें से कुछ दूध पीया। वे बड़ी आयु के ग्वाले बालक को दूध न पीने के लिए कहते रहे। बालक नहीं माना। सब दूर चले गए। बाबा जिंदा तथा बालक गरीबदास जी रह गए। तब कुछ ज्ञान सुनाया। बालक ने सतलोक और समर्थ परमात्मा (जो ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी से भी शक्तिशाली जो बाबा ने बताया था) आँखों देखने की इच्छा की। जिंदा बाबा बालक गरीबदास के जीव को शरीर से निकालकर आसमान में ले गया। ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी के लोक दिखाए। स्वर्ग तथा नरक दिखाए। ब्रह्मलोक (महाजन्नत) काल ब्रह्म का दिखाया। फिर और ऊपर अपने अमरलोक में ले गए। जो बाबा जिंदा बालक के साथ गया था, वह ऊपर बने (तख्त) सिंहासन के ऊपर बैठ गया। उस समय परमात्मा रूप बन गए। परमात्मा के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्यों के प्रकाश से भी अधिक था। अमरलोक प्रकाशित था। बालक गरीबदास जी का भी अन्य शरीर बन गया जिसका प्रकाश सोलह सूर्यों के समान था। अमरलोक के सब भक्त/भक्तमति (हँस/हँसनी) अपने परमेश्वर को दंडवत् करने लगे। जय हो कबीर सतपुरूष

की बुलाने लगे। सबने कहा कि ये अनंत करोड़ ब्रह्मंड का संजनहार समर्थ परमेश्वर है। इसका नाम कबीर है। फिर परमात्मा ने सब ज्ञान अपने नबी गरीबदास जी की आत्मा में डाल दिया। सारा सतलोक तथा नीचे के सब लोक दिखाकर बालक की आत्मा को शरीर में प्रवेश करा दिया। उस समय बालक गरीबदास जी के शरीर को अंतिम संस्कार के लिए चिता (लकड़ियों के ढ़ेर) पर रखा था। अग्नि लगाने ही वाले थे, उसी समय गरीबदास जी उठ लिए। गाँव में खुशी की लहर दौड़ गई। संत गरीबदास जी को उसी जिंदा बाबा वेशधारी परमेश्वर जी ने दीक्षा दी। संत गरीबदास जी ने आँखों देखा तथा परमेश्वर के मुख कमल से सुना सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान दोहों, चौपाईयों, शब्दों के रूप में बोला जो एक दादू जी के पंथ से दीक्षित गोपाल दास नाम के महात्मा जी ने लिखा। लेखन कार्य में लगभग छः महीने लगे।

प्रसंग है कि यह कहाँ प्रमाण है कि अल-खिज्र ही अल कबीर है :- जैसे इसी ''अल-खिज्र (अल कबीर) की जानकारी'' वाले प्रकरण में ''रूमी का परिचय'' शीर्षक में लिखा है कि रूमी नाम का व्यक्ति टर्की देश के कोणया शहर में एक मस्जिद में मौलवी था जो मुसलमान धर्म का प्रचार किया करता था। लोग उनका विशेष सम्मान किया करते। जो समस्तरबेज संत के ज्ञान को समझकर मौलवी की पदवी त्यागकर गुरू जी समस्तरबेज द्वारा बताई भक्ति करते थे जो प्रसिद्ध कवि भी हुए हैं। उन्होंने बताया कि बलख शहर के राजा (बलखी) सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम ने अल-खिज्र से प्रेरणा पाकर राज त्याग दिया था। शेष जीवन अल-खिज्र के सम्पर्क में रहकर अल्लाह की इबादत में गुजारा। सुल्तान को अल-खिज्र के दर्शन हुआ करते थे। ऊपर आप जी ने पूरा प्रकरण सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम का पढ़ा जिसमें स्पष्ट है कि अल्लाह कबीर जी ने सुल्तान को भक्ति के लिए प्रेरणा दी थी। इसलिए अल-खिज्र ही अल कबीर है। इसी का समर्थन संत गरीबदास जी ने किया है कि :-

गरीब, हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद ना पाया, काशी मांही कबीर हुआ।।

अर्थात् संत गरीबदास जी ने बताया है कि हम सब (मैं गरीबदास, सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम, सिख धर्म प्रवर्तक नानक जी तथा संत दादू जी) को उस सतगुरू कबीर परमेश्वर जी ने पार किया जो काशी शहर में जुलाहे जाति में हुआ है। फिर कहा है कि :-

गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मंड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के संजनहार।।

अर्थात् सर्व ब्रह्मंडों के उत्पत्तिकर्ता यानि सारी कायनात के संजनकर्ता

मेरे सतगुरू कबीर परमेश्वर जी हैं। उन्होंने सब लोकों, तारागण तथा सब नक्षत्रों (सूर्य, चाँद, ग्रहों) को बनाकर अपनी शक्ति से रोका हुआ है जिसे विज्ञान की भाषा में गुरूत्वाकर्षण शक्ति कहते हैं। उस सृजनहार कबीर के ऊपर इस सारी रचना (अनंत करोड़ ब्रह्मंडों) का कोई भार नहीं है। जैसे वैज्ञानिक ने वायुयान (Airplane) बनाकर उड़ा लिया। स्वयं भी उसमें सवार हो गया। जिस प्रकार उस वायुयान का वैज्ञानिक के ऊपर कोई भार नहीं है, उल्टा उसके ऊपर सवार है। इसी प्रकार कबीर कादर अल्लाह सब लोकों की रचना करके उनके ऊपर सवार है तथा सारे जीव सवार कर रखे हैं। इससे सिद्ध हुआ कि अल-खिज्र ही अल कबीर है।

☛ गवाह नं. 2 (संत दादू दास जी) :- संत दादू दास जी ग्यारह वर्ष के बालक थे। तब गाँव के बाहर जंगल में दादू जी को अल्लाह कबीर एक जिंदा बाबा के वेश में मिला। संत दादू जी की आत्मा को निकालकर अल-कबीर जी ऊपर अपने सतलोक में ले गए। दादू जी तीन दिन-रात अचेत रहे। ऊपर अपना तख्त (सिंहासन) दिखाया। अपना परिचय करवाया कि मैं पूर्ण ब्रह्म (परमेश्वर) हूँ। सारी सृष्टि मैंने रची है। बालक दादू जी को अल्लाह कबीर जी ने सब ब्रह्मंडों की सैर करवाकर तीसरे दिन आत्मा शरीर में प्रवेश कर दी। संत दादू दास जी सचेत हो गए। तब लोगों ने पूछा कि आपको क्या हो गया था? दादू जी ने बताया कि मेरे को एक बाबा के वेश में अल्लाह कबीर मिले थे और मुझे दीक्षा दी। ऊपर आसमानों पर लेकर गए थे। दादू जी के साथ उस समय कुछ अन्य हमउम्र बच्चे भी थे। उन्होंने भी बताया था कि एक बाबा ने जंत्र-मंत्र का जल बनाकर स्वयं पीया तथा पान के पत्ते को कटोरे रूप में बनाकर उसमें अपना झूठा पानी दादू को पिलाया था। फिर बाबा दिखाई नहीं दिया। दादू बालक बेहोश हो गया। संत गरीबदास जी ने अपनी वाणी में परमेश्वर कबीर जी से प्राप्त ज्ञान को इस प्रकार बताया है कि:-

गरीब, दादू कूँ सतगुरू मिले, देई पान का पीक।
बूढ़ा बाबा जिसे कहें, यह दादू की नहीं सीख।।

अर्थात् संत दादू जी को सतगुरू रूप में कबीर अल्लाह मिले थे जो एक जिंदा बाबा के वेश में थे। उन्होंने दादू जी को पान के पत्ते के ऊपर अपने मुख से निकाला जल डालकर दीक्षा के समय पिलाया था। जो व्यक्ति यह कहते हैं कि दादू को वृद्ध बाबा मिला था जो जंत्र-तंत्र विद्या को जानने वाला था, यह दादू ने नहीं बताया। दादू जी ने उसके विषय में जो बताया है, वह इस प्रकार है जो दादू जी के द्वारा बोली वाणी से बने दादू ग्रंथ में लिखा है। वाणी :-

जिन मोकूं निज नाम दिया, सोई सतगुरू हमार।

दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर सिरजनहार।।
दादू नाम कबीर का, सुनकर कांपे काल। नाम भरोसै जो चले, होवे ना बांका बाल।
केहरी नाम कबीर है, विषम काल गजराज। दादू भजन प्रताप से, भागे सुनत आवाज।।

अर्थात् दादू जी ने कहा है कि मेरे को जिसने (निजनाम) भक्ति का यथार्थ मंत्र दिया, वह मेरा सतगुरू है। उसका नाम कबीर है। यही कबीर सारी कायनात (सृष्टि) का (सृजनहार) उत्पत्तिकर्ता है।

❖ संत दादू जी ने कहा है कि ''कबीर'' नाम सुनते ही ज्योति निरंजन (काल) कांपने लग जाता है। कबीर नाम इतना शक्तिशाली है। जो भक्त कबीर जी के बताए नाम पर पूर्ण विश्वास करके जीवन यात्रा करता है तो काल ब्रह्म उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं कर सकता।

❖ संत दादू जी ने कबीर अल्लाह की समर्थता एक उदाहरण के माध्यम से बताई है कि काल भी बहुत ताकतवर है, परंतु कबीर अल्लाह के सामने वह भी कमजोर पड़ जाता है। काल (गजराज) हाथियों के राजा के समान बलवान है। कबीर जी का भक्ति करने को दिया नाम भी बहुत शक्तिशाली है। वह केहरी यानि बब्बर शेर (Biggest Lion) के समान ताकतवर है। उस नाम का जाप (भजन) करने से उस नाम रूपी केहरी की शक्ति के आगे काल टिक नहीं पाता यानि नाम की सूक्ष्म दहाड़ (गाज) सुनकर काल रूप गजराज भाग जाता है। संत दादू दास जी ने स्पष्ट कर दिया है कि कबीर ही सारी सृष्टि (कायनात) को उत्पन्न करने वाला परमेश्वर है।

☛ गवाह नं. 3 {संत धर्मदास जी बांधवगढ़ (मध्य प्रदेश, भारत) वाले} :- हिन्दू धर्म में जन्म होने के कारण धर्मदास जी हिन्दू धर्मगुरूओं द्वारा बताए अधूरे ज्ञान के आधार से साधना किया करते थे। एक समय धर्मगुरूओं के बताए अनुसार तीर्थ भ्रमण करते हुए मथुरा (श्री कृष्ण की नगरी) में गए हुए थे। पत्थर व पीतल की देवी-देवताओं (श्री विष्णु, श्री शंकर व देवी आदि) की मूर्तियों को थैले में डालकर साथ लिए हुए थे। सुबह तीर्थ में (उस तालाब में श्री कृष्ण स्नान किया करते थे, उसमें) स्नान करके मूर्तियों की पूजा करने लगा। उस समय कबीर अल्लाह भारत देश के काशी शहर में जुलाहे की भूमिका करने संसार में प्रकट थे, जो धर्मदास जी को सत्य मार्ग बताने हेतु मथुरा के उसी तालाब पर पहुँचे और सब क्रिया करते धर्मदास जी को देख रहे थे। धर्मदास जी ने मूर्तियों की उपासना के पश्चात् श्रीमद्भगवत गीता का पाठ किया। खुदा कबीर धर्मदास जी की सब क्रियाओं को ध्यान से देख व सुन रहा था। धर्मदास जी अपनी दैनिक भक्ति की क्रियाओं से फारिक हुआ। तब परमेश्वर कबीर जी ने उससे ज्ञान चर्चा की। ज्ञान चर्चा का दौर कई दिनों तक चला। धर्मदास जी को भी अल्लाह कबीर जी अपने सतलोक में बने

तख्त के पास लेकर गए। धर्मदास जी तीन दिन तक बेहोश रहे। ऊपर के सब लोक दिखाए। अपना सतलोक दिखाया। सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान समझाकर पुनः शरीर में प्रवेश कर दिया। उसके पश्चात् संत धर्मदास जी ने अपनी पहले वाली इबादत त्याग दी तथा अपने नबी स्वयं बनकर आए अल्लाह कबीर द्वारा बताई सच्ची इबादत की और पूर्ण मोक्ष प्राप्त किया। धर्मदास जी ने अल्लाह कबीर की महिमा में अनेकों वाणी बोली :-

आज मोहे दर्शन दियो जी कबीर।।
अमरलोक से चलकर आए, काटन जम की जंजीर।
हिन्दू के तुम देव कहाए मुसलमान के पीर।
दोनों दीन का झगड़ा छिड़ गया, टोहा ना पाया शरीर।।
धर्मदास की अर्ज गुंसाई, खेवा लंघाइयो परले तीर।।

अर्थात् धर्मदास जी ने सतलोक देखने के बाद माना कि काशी वाला जुलाहा कबीर सारी कायनात को उत्पन्न करने वाला कादर अल्लाह है। उनकी महिमा विस्तार के साथ बताई जो आँखों देखी थी।

जब परमेश्वर कबीर जी भारत देश के गोरखपुर जिला उत्तरप्रदेश प्रांत के मगहर कस्बे से सशरीर सतलोक गए थे। उस समय उनके हिन्दू राजा बीर सिंह जो काशी शहर के राजा थे तथा मुसलमान नवाब बिजली खान पठान जो मगहर कस्बे के नवाब थे, दोनों शिष्य थे। अनेकों हिन्दू तथा मुसलमान मगहर, काशी तथा अनेकों स्थानों के व्यक्ति भी कबीर जी के शिष्य थे जो सँख्या में चौंसठ लाख बताए हैं। जब कबीर जी ने सतलोक जाने की बात कही तो दोनों (हिन्दू तथा मुसलमान) धर्मों के व्यक्ति तथा राजा अपनी-अपनी रीति से अंतिम संस्कार करने की बात की जिद करके लड़ने को तैयार हो गए थे। तब कबीर जी ने उनसे कहा कि आप लड़ाई नहीं करना। मैं एक चद्दर नीचे बिछाऊँगा, एक ऊपर ओढ़ूँगा। आप मेरे शरीर के दो भाग कर लेना तथा एक-एक चद्दर व आधा-आधा शरीर ले लेना। जो लड़ाई करेगा, उसको त्याग दूँगा। एक चद्दर बिछाई गई। भक्तों ने श्रद्धा से उसके ऊपर दो-तीन इंच मोटाई में सुगंधित फूल बिछा दिए। कबीर जी उनके ऊपर लेट गए। एक चद्दर ऊपर ओढ़ी। दोनों धर्मों के व्यक्ति अपने मन में दोष लिए हुए थे कि आधे शरीर का संस्कार अपशगुन यानि बुरा होता है। इसलिए युद्ध करके पूरा शरीर लेकर संस्कार करेंगे। अल्लाह कबीर तो मन की बात भी जानता है। कुछ समय पश्चात् आकाश से आवाज आई कि चद्दर उठाकर देखो, इसके नीचे मुर्दा नहीं है। सबने ऊपर नजर की। देखा तो कबीर जी आकाश में ऊपर की ओर जा रहे थे। कह रहे थे कि मैं सर्व सृष्टि का रचनहार परमेश्वर कबीर करतार हूँ। तुम मुझे समझ नहीं सके।

चद्दर उठाई तो शव के समान सुगांधित फूलों का ढ़ेर लगा था। कबीर खुदा अपने आसमान वाले तख्त (सिंहासन) पर जा विराजे थे। यदि यह चमत्कार परमेश्वर न करते तो हिन्दू तथा मुसलमानों का घोर युद्ध होता। हजारों व्यक्ति मारे जाते। उस अनर्थ को परमेश्वर बिना कोई नहीं टाल सकता। उसी समय हिन्दू तथा मुसलमान आपस में गले लगकर अल्लाह के चले जाने के गम में बिलख-बिलखकर रोने लगे। कहने लगे कि हमने अल्लाह को पहचाना नहीं। हमसे बड़ी गलती हुई है। दोनों धर्मों में एक-एक चद्दर तथा आधे-आधे फूल बाँटे। बिजली खान पठान (मगहर के नवाब) ने अपने पीर कबीर जी के लिए दोनों धर्मों को एक स्थान पर (सौ फुट के अंतर में) फूलों का अंतिम संस्कार करने के लिए जगह दे दी। दोनों धर्मों ने एक चद्दर तथा आधे फूलों का अपनी-अपनी रीति से अंतिम संस्कार किया। आज भी दोनों यादगार मगहर नगर (जिला-संत कबीर नगर, उत्तरप्रदेश, भारत) में विद्यमान हैं। बिजली खान पठान ने दोनों यादगारों के लिए 500-500 बीघा जमीन दान (जकात) में दी थी।

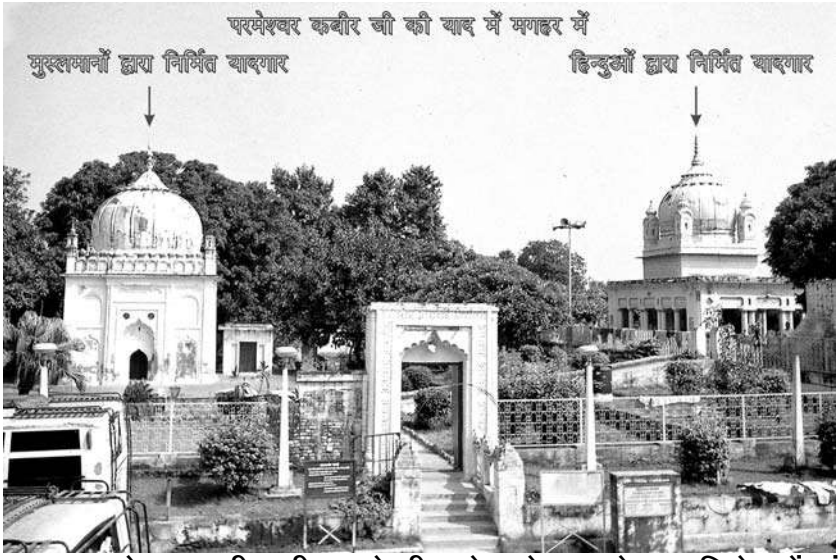

जब परमेश्वर कबीर जी सबके बीच से चले गए तो इस वियोग में संत धर्मदास जी ने रोते हुए कहा था कि हे परमेश्वर कबीर जी! मुझे फिर से दर्शन दो। आप तो सतलोक से अपने तख्त (सिंहासन) से चलकर पथ्वी के ऊपर हमारे कर्म बंधन रूपी जंजीर काटने आए थे। दोनों (धर्मों) का झगड़ा होने जा रहा था। सबने अपनी-अपनी सेना हथियारों सहित लड़ने को तैयार कर दी थी। आपका शरीर ही नहीं मिला। आप कादर अल्लाह हो। इसको

समझने के लिए यह लीला पर्याप्त है। हे परमेश्वर! मेरे जीवन रूपी खेवे (नौका) का संसार रूपी दरिया के (परले तीर) दूसरे किनारे लगाओ यानि मोक्ष प्रदान करो। कुछ दिनों के पश्चात् संत धर्मदास जी को अल्लाह कबीर जी फिर सतलोक से आकर मिले। उसके साथ रहे। संत धर्मदास जी को सतलोक भेजा। इससे सिद्ध हुआ कि जो अल-खिज्र रूप में हजरत मुहम्मद सल्लम आदि को मिला था, वह अल-कबीर ही सष्टि का उत्पत्तिकर्ता खुदा है।

☛ गवाह नं. 4 (संत मलूक दास जी) :- संत मलूक दास जी को भी कबीर जी सतलोक लेकर गए। सब व्यवस्था दिखाकर वापिस शरीर में छोड़ा था। पहले मलूक दास जी श्री कष्ण तथा श्री रामचन्द्र (श्री विष्णु जी) के परम भक्त थे। उसके पश्चात् पहले वाली पूजा त्यागकर खुदा कबीर जी द्वारा बताई इबादत की। मोक्ष प्राप्त किया। संत मलूक दास जी ने कहा :-

जपो रे मन साहेब नाम कबीर, जपो रे मन परमेश्वर नाम कबीर।।
एक समय गुरू बंसी बजाई, कालंद्री के तीर।
सुर नर मुनिजन थकत भये, रूक गया जमना नीर।
अमंत भोजन म्हारे सतगुरू जीमें, शब्द दूध की खीर।
दास मलूक सलूक कहत है, खोजो खसम कबीर।।

अर्थात् संत मलूक दास जी ने स्पष्ट किया है कि परमात्मा कबीर जी का नाम जपा करो। उस (खसम) सर्व के मालिक कबीर जी की खोज करो, उसे पहचानो। सत्य साधना करके सतलोक में कबीर खुदा के पास जाओ। जैसे श्री कष्ण के विषय में बताया जाता है कि वे बांसुरी मधुर बजाते थे। उसको सुनकर गोपियाँ व गायें खींची चली आती थी। मलूक दास ने बताया है कि एक समय मेरे सतगुरू कबीर जी ने (कालंद्री) जमना दरिया के किनारे बांसुरी बजाई थी जिसको सुनकर स्वर्ग लोक के देवता, ऋषिजन तथा आस-पास के गाँव के व्यक्ति खींचे चले आए थे। और क्या बताऊँ! जमना दरिया का जल भी रूक गया था। मेरे सतगुरू शब्द की खीर खाते हैं यानि अमंत भोजन के साथ-साथ अमर आनंद भी भोगते हैं। संत मलूक दास जी ने आँखों देखा बताया कि कबीर पूर्ण ब्रह्म (कादर अल्लाह) है।

☛ गवाह नं. 5 (श्री नानक देव जी) :- श्री नानक जी को परमात्मा मिले थे जिस समय श्री नानक देव साहेब जी सुल्तानपुर शहर में नवाब के यहाँ मोदी खाने में नौकरी करते थे। सुल्तानपुर शहर से आधा कि.मी. दूर बेई नदी बहती है। श्री नानक जी प्रतिदिन उस दरिया में स्नान करने जाया करते थे।

एक दिन परमात्मा जिंदा बाबा की वेशभूषा में बेई नदी पर प्रकट हुए, वहाँ श्री नानक देव जी से ज्ञान चर्चा हुई। उसके पश्चात् श्री नानक जी ने दरिया में डुबकी लगाई लेकिन बाहर नहीं आए। वहाँ उपस्थित व्यक्तियों ने

मान लिया कि नानक जी दरिया में डूब गए हैं। शहर के लोगों ने दरिया में जाल डालकर भी खोजा, परंतु निराशा ही हाथ लगी क्योंकि श्री नानक देव जी तो जिन्दा बाबा के रूप में प्रकट परमात्मा के साथ सच्चखण्ड (सत्यलोक) में चले गए थे। तीन दिन के पश्चात् श्री नानक देव जी वापिस पथ्वी पर आए। उसी बेई नदी के उसी किनारे पर खड़े हो गए जहाँ से अन्तर्ध्यान हुए थे। श्री नानक जी को जीवित देखकर सुल्तानपुर के निवासियों की खुशी का ठिकाना नहीं था। श्री नानक जी की बहन नानकी भी सुल्तानपुर शहर में विवाही थी। अपनी बहन के पास श्री नानक जी रहा करते थे। अपने भाई की मौत के गम से दुःखी बहन नानकी को बड़ा आश्चर्य हुआ और गम खुशी में बदल गया। श्री नानक देव को परमात्मा मिले, सच्चा ज्ञान मिला, सच्चा नाम (सत्यनाम) मिला। पुस्तक भाई बाले वाली "जन्म साखी गुरू नानक देव जी" में तथा प्राण संगली हिन्दी लिपि वाली में जिसके सम्पादक सन्त सम्पूर्ण सिंह हैं, इन दोनों पुस्तकों में प्रमाण है कि श्री गुरू नानक देव जी ने स्वयं मर्दाना को बताया कि मुझे परमात्मा जिंदा बाबा के रूप में बेई नदी पर मिले, जब मैं स्नान करने के लिए गया। मैं तीन दिन तक उन्हीं के साथ रहा था। वह बाबा जिन्दा मेरा सतगुरू भी है तथा वह सर्व सष्टि का रचनहार भी है। इसलिए वही "बाबा" कहलाने का अधिकारी है, अन्य को "बाबा" नहीं कहा जाना चाहिए, उसका नाम कबीर है।

कायम दायका कुदरती सब पीरन सिर पीर आलम बड़ा कबीर।।

इसलिए श्री नानक जी की वाणी (महला 1) है, वह सूक्ष्म वेद से मेल खाती है, यह सही है। अन्य सन्तों की वाणी इतनी सटीक नहीं है। कारण यह है कि श्री नानक देव जी को परमात्मा कबीर जी मिले थे।

प्रमाण :- श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में पष्ठ 24 पर लिखी वाणी :-

एक सुआन दुई सुआनी नाल भलके भौंकही सदा बियाल,
कुड़ छुरा मुठा मुरदार धाणक रूप रहा करतार।
तेरा एक नाम तारे संसार मैं ऐहो आश ऐहो आधार, धाणक रूप रहा करतार।
फाही सुरत मलूकी वेश, एह ठगवाड़ा ठगी देश।
खरा सिआणां बहुता भार, धाणक रूप रहा करतार।।

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के पष्ठ 731 पर निम्न वाणी है :-

नीच जाति परदेशी मेरा, क्षण आवै क्षण जावै।
जाकि संगत नानक रहंदा, क्यूकर मुंडा पावै।।

पष्ठ 721 पर निम्न वाणी लिखी है :-

यक अर्ज गुफतम पेश तोदर, कून करतार।हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

यह उपरोक्त अमतवाणी श्री गुरू ग्रन्थ साहेब जी की है जिससे सिद्ध

हुआ कि श्री नानक जी को परमात्मा मिले थे। वह "कबीर करतार" है जो काशी में धाणक रूप में लीला करने आए थे।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ है कि कबीर जुलाहा काशी (भारत) वाला सबका उत्पत्ति करने वाला, सबका धारण-पोषण करने वाला समर्थ परमात्मा है। वही अल-खिज्र के वेश में अच्छी आत्माओं को मिला था। वह ऐसे अन्य वेश बनाकर नेक आत्माओं को भी भक्ति की उत्तम विधि का ज्ञान करवाता है। ऊपर जो सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम के प्रकरण से भी स्पष्ट है कि अल-खिज्र ही कबीर अल्लाह है।

8. रूमी का परिचय :-

रूमी विश्व के जाने-माने कवि हैं और कबीर साहिब के बाद दूसरा नंबर रूमी का आता है। पश्चिमी देशों में रूमी काफी मशहूर हैं। रूमी की कविताएँ अमेरिका में सबसे ज्यादा बिकती हैं। रूमी की रचनाएँ **"Mansnavi"** और **Diwan-e-Kabir** को **Melvana Museum, Konya, Turkey** में रखा गया है। रूमी की मजार **Konya, Turkey** में स्थित है। उसी के साथ रूमी के मुर्शीद समस्तरबेज की भी कृत्रिम कब्र बनी हुई है। हर साल पूरे विश्व से लाखों लोग रूमी की मजार का सजदा करने जाते हैं और हैरत की बात ये है कि मुसलमानों से ज्याद गैर-मुसलमान जाते हैं।

रूमी की समस्तरबेज से मुलाकात :-

रूमी शहर कोणया, टर्की देश की मस्जिद के सबसे बड़े मौलवी थे और मुसलमान धर्म का प्रचार-प्रसार किया करते थे और उनके बहुत से शागिर्द थे।

15th November 1244 की रोज एक **60** साल का सफेद दाढ़ी वाला शख्स सर से एड़ी तक काला लिबास पहने हुए कोणया के महशूर चीनी बाजार में व्यापारियों की सराय में पहुँचा। इस शख्स का नाम समस्तरबेज **(Shams Tebrez)** था। पूछने पर लोगों को बताया कि मैं एक राह चलता व्यापारी हूँ। वो वहाँ जैसे कुछ खोज रहे थे और आखिरकार उन्हें रूमी घोड़े की सवारी करते हुए दिखाई दिया।

एक दिन एक हौज (तालाब) के किनारे रूमी पुरानी इल्मी किताबों का एक ढ़ेर रखकर बैठे थे और अपने शागिर्दों को पढ़ा रहे थे। समस्तरबेज वहाँ से गुजरे और उन किताबों के ढ़ेर की तरफ इशारा करते हुए रूमी से पूछा, ये क्या है? रूमी ने व्यंग्यपूर्वक उत्तर दिया, बाबा ''ये वो है जो तू नहीं जानता।'' ये सुन समस्तरबेज ने उन किताबों को हौज में धक्का दे दिया। ये देख रूमी आग-बबूला हो गए और कहा हे बदबक्त! ये तूने क्या किया? क्या तू जानता है ये किताबें कितनी कीमती थी? ये सुनकर समस्तरबेज हौज में कूद गए और एक-एक कर सारी किताबें पानी से बाहर निकालकर रख

दी और एक भी किताब गीली नहीं हुई थी। उलटा उनमें से धूल निकल रही थी। ये हैरतंगेज नजारा देख रूमी दंग रह गया और समस्तरबेज से पूछा, बाबा ये क्या है? समस्तरबेज ने उत्तर दिया ''ये वो है जो तू नहीं जानता'', और वहाँ से चले गए।

अगले दिन रूमी अपने घोड़े पर सवार होकर बाजार में पहुँचे। वहाँ लोग आदर-सत्कार में उनका हाथ चूम रहे थे। तब अचानक समस्तरबेज वहाँ पहुँचे और रूमी के घोड़े की लगाम पकड़ ली। रूमी पहचान गया कि ये तो वही बाबा है, रूमी भी उनसे मिलना चाह रहे थे। बाबा ने कहा कि रूमी एक मसला है, मुझे ये बताओ कि मुहम्मद बड़ा या बायाजिद बसतामी बड़ा? (इंटरनेट पर ऐसा विवरण मिलता है कि मंसूर-अल-हल्लाज जिसने अनल हक्क का नारा लगाया था, बायाजिद बसतामी उनके जीवन को प्रभावित करने वालों में से एक हैं) रूमी ने कहा ये तो बच्चा भी जानता है, मुहम्मद बड़ा है। बाबा ने कहा अगर मुहम्मद बड़ा है तो उसने ये क्यों कहा कि ''हे अल्लाह! मैं तुझे नहीं जानता, तू कौन है?'' और बायाजिद बसतामी ने ये क्यों कहा कि ''हे अल्लाह! तू पाक है, तू बादशाहों का बादशाह है और तेरी बड़ी शान है।'' दोनों के बीच काफी लंबी चर्चा होती है और बाबा के तर्क सुनकर रूमी बेहोश होकर घोड़े से नीचे गिर पड़ता है। रूमी की आँखें खुली तो अपना सिर बाबा की गोद में पाया। बाबा रूमी को लेकर शहर से दूर चले जाते हैं। इसके बाद समस्तरबेज कोणया से गायब हो जाते हैं। रूमी उनकी याद में पागल-सा हो जाता है और बाबा की खोज में भटकने लगता है। एक वर्ष बाद रूमी को किसी से पता लगता है कि समस्तरबेज को Damascus (आज Sirya देश का एक शहर) में देखा गया है। रूमी अपने बड़े लड़के से कहता है कि घर में जो सोना, चाँदी, गहने, पैसा पड़ा है, सब ले जा और बाबा को यहाँ ले आओ। रूमी का बड़ा लड़का Damascus पहुँचकर समस्तरबेज के नाम पर भंडारा खोल देता है और देखता है कि कुछ दूरी पर बाबा एक लड़के के साथ शतरंज खेल रहे हैं। रूमी का लड़का बाबा से विनती करके उन्हें घोड़े पर बैठाकर कोणया ले आता है। रूमी कहता है कि बाबा आप क्यों गायब हो गए थे। आपने मेरे साथ ऐसे क्यों किया? मैं एक साल से आपकी याद में तड़फ रहा था। बाबा कहते हैं अगर मैं गायब ना होता तो तेरे दिल में आज ये आग ना होती। बाबा रूमी को इल्म देते हैं जिसे पाने के बाद रूमी अपनी पारंपरिक पूजा-पाठ छोड़ देता है। ये देख रूमी के शागिर्द समस्तरबेज से ईर्ष्या करने लगते हैं।

एक रोज रूमी अपने मुर्शीद समस्तरबेज के साथ अपनी कुटिया में बैठे थे। तब रूमी का छोटा लड़का व कुछ शागिर्द समस्तरबेज के कत्ल के इरादे

से वहाँ पहुँच जाते हैं और समस्तरबेज को आवाज लगाते हैं। समस्तरबेज रूमी से कहते हैं कि बस! अब मेरा जाने का वक्त आ गया है। शागिर्द जैसे ही उनको मारने के लिए तलवार उठाते हैं, समस्तरबेज अदृश्य हो जाते हैं।

''मंशूर अली का उद्धार कबीर जी ने किया''

परमात्मा कबीर जी अपने सिद्धांत अनुसार एक अच्छी आत्मा समशतरबेज मुसलमान को जिंदा बाबा के रूप में मिले थे। उन्हें अल्लाहू अकबर (कबीर परमात्मा) यानि अपने विषय में समझाया, सतलोक दिखाया, वापिस छोड़ा। उसके पश्चात् कबीर परमात्मा यानि जिंदा बाबा नहीं मिले। उसे केवल एक मंत्र दिया ''अनल हक'' जिसका अर्थ मुसलमान गलत करते थे कि मैं वही हूँ यानि मैं अल्लाह हूँ अर्थात् जीव ही ब्रह्म है। वह यथार्थ मंत्र ''सोहं'' है। इसका कोई अर्थ करके स्मरण नहीं करना होता। इसको परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का वशीकरण मंत्र मानकर जाप करना होता है। समस्तरबेज परमात्मा के दिए मंत्र का नाम जाप करता था। उसका आश्रम बगदाद (वर्तमान में ईराक देश की राजधानी) शहर के बाहर बणी में था।

{एक स्थान पर ऐसा भी लिखा है कि परमेश्वर कबीर जी ने समस्तरबेज को प्रेरणा करके दूर भेज दिया। स्वयं समस्तरबेज का वेश बनाकर उसी असली समस्तरबेज वाले आश्रम में रहने लगे। फिर मुलतान शहर में उस लीला के अंत में समस्तरबेज को मुलतान शहर में भेजा। उस समय मुहम्मद (मंशूर) शरीर त्याग चुका था। असली समस्तरबेज मौनी हो गया था। बोल नहीं पा रहा था। कई वर्ष से उसकी यही दशा थी, परंतु स्वस्थ था। कबीर परमेश्वर जी ने भी जान-बूझकर मुलतान में कई दिनों से मौन धारण कर रखा था। जिस दिन असली समस्तरबेज मुलतान में आया, उसी दिन परमात्मा कबीर जी घूमने के बहाने प्रतिदिन की तरह आश्रम से बाहर गए। वापिस नहीं आए। जिस समय कबीर जी (समस्तरबेज) प्रतिदिन लौटकर आते थे, उसी समय समस्तरबेज ने आश्रम देखा। उसमें चला गया। उपस्थित व्यक्तियों को कुछ पता नहीं लगा। उन्होंने जाना कि पीर समस्तरबेज सैर करके लौट आए हैं। समस्तरबेज का मुलतान शहर में जाते ही देहांत हो गया। लोगों ने मजार बना दी।}

अब उस आश्रम में अल्लाह कबीर समस्तरबेज के रूप में विराजमान रहे। उस नगरी के राजा की एक लड़की जिसका नाम शिमली था, समस्तरबेज के ज्ञान व सिद्धि से प्रभावित होकर उनकी परम भक्त हो गई। उसने दिन-रात नाम जाप किया। सतगुरू की सेवा करने प्रतिदिन आश्रम में जाने लगी। पिता जी से आज्ञा लेकर जाती थी। बेटी के साधु भाव को देखकर

पिता भी उसे नहीं रोक पाया। वह प्रतिदिन सुबह तथा शाम सतगुरू जी का भोजन स्वयं बनाकर ले जाया करती थी। किसी व्यक्ति ने मंशूर अली से कहा कि आपकी बहन शिमली शाम के समय आश्रम में अकेली जाती है। यह शोभा नहीं देता। नगर में आलोचना हो रही है।

एक शाम को जब शिमली बहन संत जी का खाना लेकर आश्रम में गई तो भाई मंशूर गुप्त रूप से पीछे-पीछे आश्रम तक गया। दीवार के सुराख से अंदर की गतिविधि देखने लगा। लड़की ने संत को भोजन खिलाया। फिर संत जी ने ज्ञान सुनाया। मंशूर भी ज्ञान सुन रहा था। वह जानना चाहता था कि ये दोनों क्या बातें करते हैं? क्या गतिविधि करेंगे? प्रत्येक क्रिया जो शिमली तथा संत समशतरबेज कर रहे थे तथा जो बातें कर रहे थे, ध्यानपूर्वक सुन रहा था। अन्य दिन तो आधा घंटा सत्संग करता था, उस दिन दो घण्टे सत्संग किया। मंशूर ने भी प्रत्येक वचन ध्यानपूर्वक सुना। वह तो दोष देखना चाहता था, परंतु उस तत्त्वज्ञान को सुनकर कृतार्थ हो गया।

परमात्मा की भक्ति अनिवार्य है। अल्लाह साकार है, कबीर है। ऊपर के आसमान में विराजमान है। पृथ्वी के ऊपर भी मानव शरीर में प्रकट होता है। सत्संग के बाद संत समस्तरबेज तथा बहन शिमली ने दोनों हाथ सामने करके परमात्मा से प्रसाद माँगा। आसमान से दो कटोरे आए। दोनों के हाथों में आकर टिक गए। समस्तरबेज ने उस दिन आधा अमृत पीया। शिमली बहन सब पी गई। समस्तरबेज ने कहा कि बेटी! यह शेष मेरा अमृत प्रसाद आश्रम से बाहर खड़े कुत्ते को पिला दे। उसका अंतःकरण पाप से भरा है। उसका दिल साफ हो जाएगा। शिमली गुरूजी वाले शेष बचे प्रसाद को लेकर दीवार की ओर गई। गुरूजी ने कहा कि इस सुराख से फैंक दे। बाहर जाएगी तो कुत्ता भाग जाएगा। लड़की ने तो गुरूजी के प्रत्येक वचन का पालन करना था। शिमली ने उस सुराख से अमृत फैंक दिया जिसमें से मंशूर जासूसी कर रहा था। मंशूर का मुख कुछ स्वभाविक खुला था। उसमें सारा अमृत चला गया। मंशूर का अंतःकरण साफ हो गया। उसकी लगन सतगुरू से मिलने की प्रबल हो गई। वह आश्रम के द्वार पर आया। शिमली ने पहचान लिया। वह डर गई, बोली नहीं। मंशूर सीधा गुरू समस्तरबेज के चरणों में गिर गया। अपने मन के पाप को बताया। अपने उद्धार की भीख माँगी। समस्तरबेज ने दीक्षा दे दी।

मंशूर प्रतिदिन आश्रम में जाने लगा। ''अनल हक'' मंत्र को बोल-बोलकर जाप करने लगा। मुसलमान समाज ने विरोध किया। कहा कि मंशूर काफिर हो गया। परमात्मा को मानुष जैसा बताता है। ऐसा कहता है कि पृथ्वी पर आता है परमात्मा। अनल हक का अर्थ गलत करके कहते थे कि मंशूर अपने

को अल्लाह कहता है। इसे जिंदा जलाया जाए या अनल हक कहना बंद कराया जाए। मंशूर राजा का लड़का था। इसलिए किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि मंशूर को मार दे। यदि कोई सामान्य व्यक्ति होता तो कब का राम नाम सत कर देते। नगर के हजारों व्यक्ति राजा के पास गए। राजा को मंशूर की गलती बताई। राजा ने सबके सामने मंशूर को समझाया। परंतु वह अनल हक-अनल हक का जाप करता रहा। उपस्थित व्यक्तियों से राजा ने कहा कि जनता बताए कि मंशूर को क्या दण्ड दिया जाए? जनता ने कहा कि मंशूर को चौराहे पर बाँधकर रखा जाए। नगर का प्रत्येक व्यक्ति एक-एक पत्थर जो लगभग आधा किलोग्राम का हो, मंशूर को मारे तथा कहे कि छोड़ दे काफिर भाषा। यदि मंशूर अनल हक कहे तो पत्थर मारे, आगे चला जाए। दूसरा भी यही कहे। तंग आकर मंशूर अनल हक कहना त्याग देगा।

नगर के सारे नागरिक एक-एक पत्थर लेकर पंक्ति बनाकर खड़े हो गए। उन नागरिकों में भक्तिमति शिमली भी पंक्ति में खड़ी थी। उसने पत्थर एक हाथ में उठा रखा था तथा दूसरे हाथ में फूल ले रखा था। शिमली ने सोचा था कि भक्त-भाई है। पत्थर के स्थान पर फूल मार दूँगी। जनता में निंदा भी नहीं होगी तथा भाई को भी कष्ट नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति (स्त्री-पुरूष) मंशूर से कहते कि छोड़ दे अनल हक कहना, नहीं तो पत्थर लगेगा। मंशूर बोले अनल हक, अनल हक, अनल हक, अनल हक। पत्थर भी साथ-साथ लग रहे थे। मतवाले मंशूर अनल हक बोलते जा रहे थे। शरीर लहू-लुहान यानि बुरी तरह जख्मी हो गया था। रक्त बह रहा था। परमात्मा का आशिक अनल हक कह रहा था। हँस रहा था। जब शिमली बहन की बारी आई। वह कुछ नहीं बोली। मंशूर ने पहचान लिया और कहने लगा, बहन! बोल अनल हक। शिमली ने अनल हक नहीं बोला। हाथ में ले रखा फूल भाई मंशूर को मार दिया। मंशूर बुरी तरह रोने लगा। शिमली ने कहा, भाई! अन्य व्यक्ति पत्थर मार रहे थे। घाव बन गए, आप रोये नहीं। मैंने तो फूल मारा है जिसका कोई दर्द नहीं होता। आप बुरी तरह रोने लगे। क्या कारण है?

मंशूर बोला कि बहन! जनता तो अनजान है कि मैं किसलिए कुर्बान हूँ। आपको तो ज्ञान है कि परमात्मा के लिए तन-मन-धन भी सस्ता है। मेरे को भोली जनता के द्वारा पत्थर मारने का कोई दुःख नहीं था क्योंकि इनको ज्ञान नहीं है। हे बहन! आपको तो सब पता है। मेरे को इस मार्ग पर लाने वाली तू है। तेरा हाथ मेरी ओर कैसे उठ गया? बेईमान तेरे फूल का पत्थर से कई गुना दर्द मुझे लगा हैं। तेरे को (मुरसद) गुरूजी क्षमा नहीं करेगा। नगर के सब व्यक्ति पत्थर मार-मारकर घर चले गए। कुछ धर्म के ठेकेदार मंशूर को जख्मी हालत में राजा के पास लेकर गए तथा कहा कि राजा! धर्म ऊपर राज

नहीं। परिवार नहीं है। मंशूर अनल हक कहना नहीं छोड़ रहा है। इससे कहा जाए कि या तो अनल हक कहना त्याग दे, नहीं तो तेरे हाथ, गर्दन, पैर सब टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँगे। यदि यह अनल हक कहना नहीं त्यागे तो इस काफिर को टुकड़े-टुकड़े करके जलाकर इसकी राख दरिया में बहा दी जाए। मंशूर को सामने खड़ा करके कहा गया कि या तो अनल हक कहना त्याग दे नहीं तो तेरा एक हाथ काट दिया जाएगा। मंशूर ने हाथ उस काटने वाले की ओर कर दिया (जो तलवार लिए काटने के लिए खड़ा था) और कहा कि अनल हक। उस जल्लाद ने एक हाथ काट दिया। फिर कहा कि अनल हक कहना छोड़ दे नहीं तो दूसरा हाथ भी काट दिया जाएगा। मंसूर ने दूसरा हाथ उसकी ओर कर दिया और बोला ''अनल हक''। दूसरा हाथ भी काट दिया। फिर कहा गया कि अबकी बार अनल हक कहा तो तेरी गर्दन काट दी जाएगी। मंशूर बोला अनल हक, अनल हक, अनल हक। मंशूर की गर्दन काट दी गई और फूँककर राख को दरिया में बहा दिया। उस राख से भी अनल हक, अनल हक शब्द निकल रहा था। कुछ देर बाद एक हजार मंशूर नगरी की गली-गली में अनल हक कहते हुए घूमने लगे। सब डरकर अपने-अपने घरों में बंद हो गए। परमात्मा ने वह लीला समेट ली। एक मंशूर गली-गली में घूमकर अनल हक कहने लगा। फिर अंतर्ध्यान हो गया।

मंशूर का नाम बदलकर मुहम्मद रखा और उसको लेकर सतगुरू समस्तरबेज मुलतान शहर (पाकिस्तान) की ओर चल पड़े।

{**एक पुस्तक में लिखा है कि मंशूर अली जिस शहर के राजा का लड़का था, उस शहर का नाम बगदाद है जो वर्तमान में ईराक देश की राजधानी है। संत गरीबदास जी की वाणी भी यही संकेत कर रही है।** गरीब, खुरासान काबुल किला, बगदाद बनारस एक। बलख और बिलायत लग, हम ही धारैं भेष।। **अर्थात् जैसे बनारस (काशी) शहर में कुछ समय रहे, ऐसे ही बगदाद में रहे। बगदाद से मंशूर निकाला। बनारस से रामानंद का उद्धार किया। बलख शहर से सुलतान इब्राहिम इब्न अधम को निकाला। बिलायत यानि इंग्लैंड तक हम (परमेश्वर कबीर जी) ही वेश बदलकर लीला करते हैं।**}

''मंशूर अली का शब्द''

अगर है शौक अल्लाह से मिलने का, तो हरदम नाम लौ लगाता जा।।(टेक)।।
न रख रोजा, न मर भूखा, न कर सिजदा।
वजू का तोड़ दे कूजा, शराबे नाम जाम पीता जा।।1।।
पकड़ कर ईश्क का झाड़ू, साफ कर दिल के हूजरे को।
दूई की धूल रख सिर पर, मूसल्ले पर उड़ाता जा।।2।।

धागा तोड़ दे तसबी, किताबें डाल पानी में।
मसाइक बनकर क्या करना, मजीखत को जलाता जा।।3।।
कहै मन्सूर काजी से, निवाला कूफर का मत खा।
अनल हक्क नाम बर हक है, यही कलमा सुनाता जा।।4।।

अर्थात् अल्लाह कबीर (अल-खिज्र व जिंदा वेशधारी) से ज्ञान सुनने के बाद पता चल जाता है कि जो साधना वर्तमान में समाज में की जा रही है, यह तो सामान्य लाभ देती है। मोक्ष तो सूक्ष्मवेद के ज्ञान में बताई इबादत से ही संभव है। जिस कारण से परंपरागत इबादत (पूजा) छोड़कर सत्य भक्ति करनी होती है जो समाज के अन्य लोगों को अच्छा नहीं लगता। वे भयंकर विरोध करते हैं। जान के दुश्मन बन जाते हैं। यही कारण था भक्त मंशूर जी को मारने का। परंतु भक्त मरते नहीं। जब मंशूर जी को दृढ़ विश्वास हुआ कि पूर्व वाली साधना {रोजे (व्रत) रखना, अजान (बंग देना) लगाना, नमाज अदा करना, बकरी-बकरा, गाय आदि जब्ह (कत्ल) करना} मोक्ष प्राप्ति के लिए सहयोगी नहीं है और पर्याप्त भी नहीं है। नरक का मार्ग है। तब उसने अपने ही धर्म के प्रचारकों को समझाना चाहा और कहा कि हे काजी! यदि आपको अल्लाह से मिलने का शौक (इच्छा) है तो प्रत्येक श्वांस-उश्वांस में सच्चे नाम का जाप (लौ लगाकर) ध्यान लगाकर किया कर। (रोजा) व्रत करना त्याग दे। भूखा मरने से अल्लाह नहीं मिलता। जो तुम (वजू) स्नान आदि किए बिना धार्मिक क्रिया करना पाप मानते हो, यह मात्र भ्रम है। स्नान के लिए जल लाने वाले (कूजे) टोकने यानि मटके को फोड़कर कहीं डाल दे अर्थात् नहाने-धोने के चक्कर में ही ना लगा रह यानि शरीर के ऊपर की सफाई से ही मोक्ष प्राप्ति की साधना सफल नहीं होती। उसके लिए दिल (पाक) शुद्ध होना चाहिए। नाम जाप करने का नशा कर यानि नाम जाप (वाली शराब पीया कर) का नशा कर। अल्लाह से गहरा प्रेम (ईश्क) कर। इस (ईश्क) प्रेम की झाड़ू से दिल का मैल (दोष) साफ कर। (दूई) ईर्ष्या का नाश कर, सच्चा भक्त बन। जो माला ले रखी है, यथार्थ नाम की साधना नहीं कर रहा है। इस माला (तसबी) को तोड़ दे। जो तुम किताबों (कुरआन मजीद, जबूर, तौरेत, इंजिल) को पढ़ते हो, इसी से मोक्ष होना मानते हो, यह तुम्हारी धारणा गलत है। इसलिए कहा है कि इन किताबों को जल प्रवाह कर दो। प्रभु प्राप्ति के लिए अहंकार को जला दे यानि अभिमान करना त्याग दे। मंशूर जी ने काजी से कहा कि जीव हिंसा (गाय-बकरा आदि को मारना) करना त्याग दे। यह (कुफर) पाप न कर। अनल हक्क नाम सच्चा मोक्ष मंत्र है। यही कलमा पढ़।

रूमी को अल्लाह कबीर समस्तरबेज के वेश में मिले थे। जो मंशूर अली

को मिले, वे समस्तरबेज मुसलमान सूफी संत थे। कुछ पुस्तकों में उल्लेख यह भी है कि परमात्मा कबीर ने गुप्त प्रेरणा करके समस्तरबेज के मन में आश्रम त्याग जाने की इच्छा उत्पन्न की क्योंकि उस नगरी में समस्तरबेज का विरोध बहुत बढ़ गया था। समस्तरबेज के आश्रम छोड़कर निकलते ही स्वयं कबीर जी ही समस्तरबेज के वेश में आश्रम में रहने लगे। वहाँ से अपने हंस मंशूर को निकालना था। वहाँ के राजा तथा प्रजा के घोर विरोध के बाद समस्तरबेज वेशधारी अल खिज्र अपने शागिर्द शहजादे मुहम्मद (मंशूर का नाम बदलकर मुहम्मद रख लिया था) को साथ लेकर हिन्दुस्तान (वर्तमान में पाकिस्तान) के शहर मुलतान में आ गए। सतगुरू समस्तरबेज तथा शहजादे मुहम्मद ने मुलतान शहर में अपना डेरा लगाया। उनके ज्ञान को सुनकर कुछ अच्छी आत्माएँ उनके अनुयाई बन गए। परंतु इस्लाम के विरूद्ध भक्ति क्रिया होने के कारण वहाँ के व्यक्तियों ने घोर विरोध करना शुरू कर दिया। जो अनुयाई बने थे, उनका भी आश्रम में जाना बंद कर दिया। समस्तरबेज के पास ईंधन समाप्त हो गए। उन्होंने शहजादे से कहा कि इस आटे की एक ही मोटी रोटी बनाकर शहर में ले जा। किसी के घर से रोटी पका ला। शहजादा कच्ची रोटी लेकर शहर में गया। किसी ने रोटी नहीं सेकी। उल्टा मुहम्मद के मुख पर चोट मारकर जख्मी कर दिया। बिना रोटी पकाये शागिर्द वापिस आया और सतगुरू जी को बताया कि लोगों ने मेरा यह हाल कर दिया। रोटी भी नहीं सेकी (पकाई)। तब समस्तरबेज ने रोटी को हाथ पर रखकर सूरज (Sun) की ओर मुख करके कहा कि यहाँ आकर मेरी बाटी सेक (पका)। उसी समय सतगुरू जी के हुक्म से सूरज जमीन के करीब आने लगा। गर्मी इतनी बढ़ गई कि मुलतान शहर भठ्ठी बन गया। पूरा मुलतान शहर जलने लगा। दर तथा दीवार तपने लगे। कुछ समझदार लोग सतगुरू की खिदमत में पेश हुए और क्षमा याचना की। कहा कि कुछ नादान लोगों के कर्म की सजा पूरे मुलतान को मत दीजिए।

सतगुरू ने कहा कि ये लोग नादान नहीं दुष्ट हैं। इन्होंने आग जैसी सस्ती वस्तु भी संतों को देने से मना कर दिया। इस बच्चे का मुँह फोड़ दिया। करबद्ध खड़े लोगों ने कहा कि ये आपकी शक्ति से वाकिफ नहीं हैं। खुदा के लिए इन्हें माफ कर दो। यह सुनकर सतगुरू समस्तरबेज ने कहा कि तुम खुदा को बीच में ले आए हो तो माफ कर देता हूँ। सूरज की ओर नजर करके कहा कि अपनी गर्मी कम कर दें। पता नहीं ये लोग दोजख की आग कैसे सहन करेंगे? इतना कहते ही सूरज वापिस अपने स्थान पर चला गया। उसके पश्चात् मुलतान के व्यक्ति भक्त बनने लगे। सतगुरू कबीर जी जो समस्तरबेज का अभिनय कर रहे थे। उन्होंने अपनी योजना के तहत कुछ

दिन मौन धारण किया क्योंकि समस्तरबेज अपने शिष्य मंशूर के साथ हुए घोर-विरोध व अत्याचार को देखकर मौन हो गए थे। समस्तरबेज रूप में कबीर जी भी कई दिनों से मौन धारण किए हुए थे। प्रतिदिन की तरह सुबह सैर करने गए। लौटे नहीं। उसी दिन असली समस्तरबेज उस आश्रम में आ गया जो मौनी हो गया था। आते ही शरीर त्याग दिया। लोगों को आज तक इस राज का पता नहीं है। समस्तरबेज के शरीर को कब्र में दफना दिया गया। सन् 1329 में यादगार बना दी। सन् 1398-1518 तक एक सौ बीस वर्ष काशी (भारत) में कबीर परमेश्वर जी ने लीला की। उस समय कमाली बालिका कब्र से निकलवाकर जीवित की थी। जवान होने पर कमाली को जब उपरोक्त हकीकत का पता चला तो उसे देखने की प्रबल इच्छा की। सतगुरू से निवेदन किया। कमाली का विवाह उसी मुलतान शहर में भक्त के घर कर दिया। संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

गरीब, सतगुरू समस्तरबेज कूं, बाटी धरिया हाथ।
सूरज कूं सेकी जहां, तेजपुंज का गात।।

अर्थात् सतगुरू सतस्तरबेज ने कच्ची रोटी (बाटी) हाथ पर रखकर सूरज से सेकने (पकाने) के लिए कहा। उसी समय सूरज धरती के निकट आ गया। उस समय समस्तरबेज रूपधारी सतगुरू का शरीर तेजपुंज में बदल गया। नूरी शरीर दिखाई देने लगा। सूरज की गर्मी से वह रोटी खाने योग्य पक गई।

''प्रभु कबीर जी का मगहर से सशरीर सत्यलोक गमन तथा सूखी नदी में नीर बहाना''

उसके बाद इस भ्रम को तोड़ने के लिए कि जो मगहर में मरता है वह गधा बनता है और कांशी में मरने वाला स्वर्ग जाता है। (बन्दी छोड़ कहते थे कि सही विधि से भक्ति करने वाला प्राणी चाहे वह कहीं पर प्राण त्याग दे वह अपने सही स्थान पर जाएगा।) उन नादानों का भ्रम निवारण करने के लिए कबीर साहेब ने कहा कि मैं मगहर में मरूँगा और सभी ज्योतिषी देख लेना कि मैं कहाँ जाऊँगा? नरक में जाऊँगा या स्वर्ग से भी ऊपर सतलोक में।

कबीर साहेब ने कांशी से मगहर के लिये प्रस्थान किया। बीर सिंह बघेला और बिजली खाँ पठान ये दोनों ही सतगुरू के शिष्य थे। बीर सिंह ने अपनी सेना साथ ले ली कि कबीर साहेब वहाँ पर अपना शरीर छोड़ेंगे। इस शरीर को लेकर हम काँशी में हिन्दु रीति से अंतिम संस्कार करेंगे। यदि मुसलमान नहीं मानेंगे तो लड़ाई कर के शव को लायेंगे। सेना भी साथ ले ली, अब इतनी बुद्धि है हमारी। हर रोज शिक्षा दिया करते कि हिन्दु मुसलमान दो नहीं हैं। अंत में फिर वही बुद्धि। उधर से बिजली खाँ पठान को पता चला कि

कबीर साहेब यहाँ पर आ रहे हैं। बिजली खाँ पठान ने सतगुरू तथा सर्व आने वाले भक्तों तथा दर्शकों की खाने तथा पीने की सारी व्यवस्था की और कहा कि सेना तुम भी तैयार कर लो। हम अपने पीर कबीर साहेब का यहाँ पर मुसलमान विधि से अंतिम संस्कार करेंगे। कबीर साहेब के मगहर पहुँचने के बाद बिजली खाँ ने कहा कि महाराज जी स्नान करो। कबीर साहेब ने कहा कि बहते पानी में स्नान करूँगा। बिजली खान ने कहा कि सतगुरू देव यहाँ पर साथ में एक आमी नदी है, वह भगवान शिव के श्राप से सूखी पड़ी है। उसमें पानी नहीं है। जैसी व्यवस्था दास से हो पाई है पानी का प्रबंध करवाया है। लेकिन संगत बहुत आ गई। नहाने की तो बात बन नहीं पाएगी। पीने का पानी पर्याप्त मात्रा में बाहर से मंगवा रखा है। कबीर साहेब ने कहा कि वह नदी देखें कहाँ पर है? उस नदी पर जा कर साहेब ने हाथ से ऐसे इशारा किया था जैसे यातायात (ट्रैफिक) का सिपाही रूकी हुई गाड़ियों को जाने का संकेत करता है। वह आमी नदी पूरी भरकर चल पड़ी। (यह आमी नदी वहाँ पर अभी भी विद्यमान है) सब ने जय जयकार की।

साहेब ने कहा कि एक चदद्र नीचे बिछाओ, एक मैं ऊपर ओढूँगा। (क्योंकि वे तो जानी जान थे) कहने लगे कि ये सेना कैसे ला रखी है तुमने? अब बिजली खाँ पठान और बीर सिंह बघेला आमने-सामने खड़े हैं। उन्होंने तो मुँह लटका लिया और बोले नहीं। वे दूसरे हिन्दु और मुसलमान बिना नाम वाले बोले कि जी हम आपका अंतिम संस्कार अपनी विधि से करेंगे। दूसरे कहते हैं कि हम अपनी विधि से करेंगे। चढा ली बाहें, उठा लिए हथियार तथा कहने लगे कि आ जाओ। कबीर साहेब ने कहा कि नादानों क्या मैंने यही शिक्षा दी थी 120 वर्ष तक। इस मिट्टी का तुम क्या करोगे? चाहे फूंक दो या गाड दो, इससे क्या मिलेगा? तुमने क्या शिक्षा ली मेरे से? सुन लो यदि झगड़ा कर लिया तो मेरे से बुरा नहीं होगा। वे जानते थे कि ये कबीर साहेब परम शक्ति युक्त हैं। यदि कुछ कह दिया तो बात बिगड़ जाएगी। शांत हो गये पर मन में यही थी कि शरीर छोड़ने दो, हमने तो यही करना है। वे तो जानी जान थे। उस दिन गृहयुद्ध शुरू हो जाता, सत्यानाश हो जाता, यदि साहेब अपनी कृपा न बख्सते। कबीर साहेब ने कहा कि एक काम कर लेना तुम मेरे शरीर को आधा-आधा काट लेना। परन्तु लड़ना मत। ये मेरा अंतिम आदेश सुन लो और मानो, इसमें जो वस्तु मिले उसको आधा आधा कर लेना। महिना माघ शुक्ल पक्ष तिथि एकादशी वि. स. 1575 (एक हजार पाँच सौ पचहतर) सन् 1518 को कबीर साहेब ने एक चद्दर नीचे बिछाई और एक ऊपर ओढ़ ली। कुछ फूल कबीर साहेब के नीचे वाली चद्दर पर दो इंच मोटाई में बिछा दिये। थोड़ी सी देर में आकाश वाणी हुई

कि मैं तो जा रहा हूँ सतलोक में (स्वर्ग से भी ऊपर)। देख लो चद्दर उठा कर इसमें कोई शव नहीं है। जो वस्तु है वे आधी-आधी ले लेना परन्तु लड़ना नहीं। जब चदद्र उठाई तो सुगंधित फूलों का ढेर शव के समान ऊँचा मिला। बोलो सतगुरू देव की जय।

बीर देव सिंह बघेल और बिजली खाँ पठान एक दूसरे के सीने से लग कर ऐसे रोने लगे जैसे कि बच्चों की माँ मर जाती है। फिर तो वहाँ पर रोना-धोना मच गया। हिन्दु और मुसलमानों का प्यार सदा के लिए अटूट बन गया। एक दूसरे को सीने से लगा कर हिन्दू और मुसलमान रो रहे थे। कहने लगे कि हम समझे नहीं। ये तो वास्तव में अल्लाह आए हुए थे। और ऊपर आकाश में प्रकाश का गोला जा रहा था। बोलो सतगुरू देव की जय ''सत साहेब।'' तो वहाँ मगहर में दोनों धर्मों (हिन्दुओं तथा मुसलमानों) ने एक-एक चद्दर तथा आधे-आधे सुगंधित फूल लेकर सौ फूट के अंतर पर एक-एक यादगार भिन्न-भिन्न बनाई जो आज भी विद्यमान है तथा कुछ फूल लाकर कांशी में जहाँ कबीर साहेब एक चबूतरे(चौरा) पर बैठकर सतसंग किया करते वहाँ कांशी चौरा नाम से यादगार बनाई। अब वहाँ पर बहुत बड़ा आश्रम बना हुआ है। मगहर में दोनों यादगारों के बीच में एक सांझा द्वार भी है, आपस में कोई भेद-भाव नहीं है।

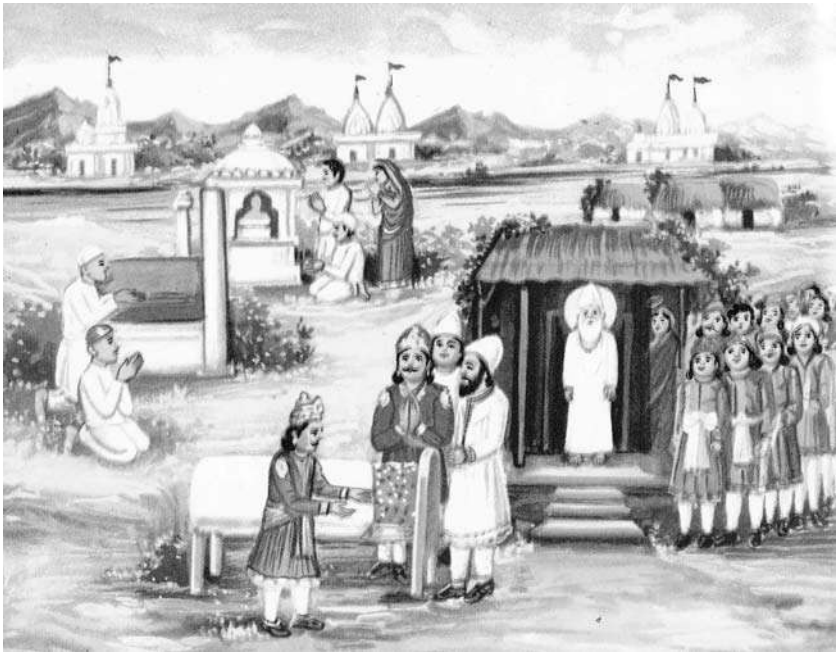

(मगहर स्थान से सतलोक जाने के समय का दृश्य)

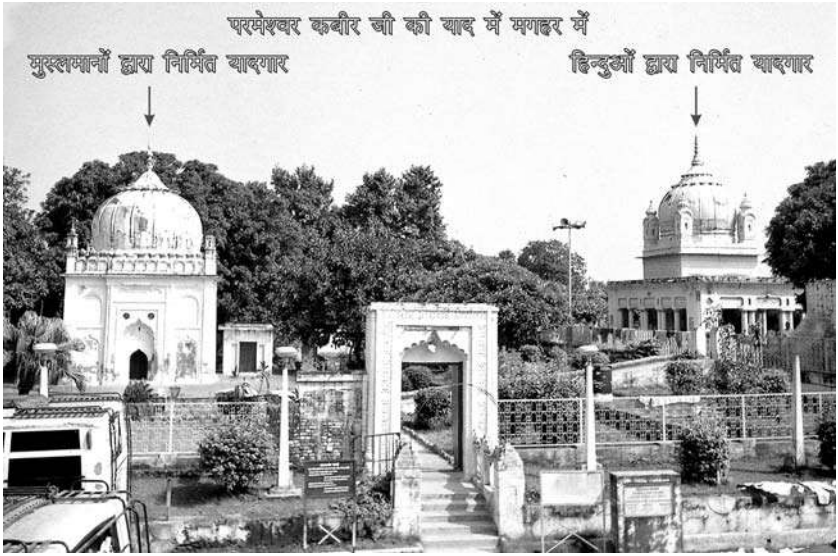

(मगहर स्थान पर हिंदुओं तथा मुसलमानों द्वारा बनाई गई साथ-2 यादगार)

हिन्दु और मुसलमान ऐसे रहते हैं कि जैसे सगे भाई रहा करते हैं। उनसे हमने बात की थी तो उन्होंने कहा कि हमारी आज तक धर्म के नाम पर कोई लड़ाई नहीं हुई। वैसे कहा सुनी तो घर के घर में हो जाती है। फिर भी हमारी आपस में धर्म के नाम पर लड़ाई नहीं होती है। बिजली खाँ पठान ने दोनों यादगारों के नाम पाँच सौ, पाँच सौ बीघा जमीन दी जिसमें हिन्दु तथा मुसलमान अपने प्रबन्धक कमेटी बनाकर व्यवस्थित किए हैं। संत रामपाल दास जी महाराज अपने सैंकड़ों सेवकों सहित तीन बार इस ऐतिहासिक ध ार्मिक स्थल को देखकर आ चुके हैं। वहाँ जाकर ऐसा लगता है जैसे हमने सच्चाई का खजाना प्राप्त हो गया हो। बोलो सतगुरू देव की जय ''सत साहेब।''

गरीबदास जी महाराज की वाणी से ''पारख का अंग'' से वाणी :-

चले कबीर मगहर के तांई, तहां वहां फूलन सेज बिछाई।
दोनों दीन अधिक परभाऊ, दोषी दुश्मन और सब साऊ।।1125।।
तहां बिजली खां चले पठाना, बीर सिंह बघेला पद प्रवाना।
काशी उमटी चली मगहर कूँ, कोई न पावै तास डगर कूँ।।1126।।
वैरागी संयासी जोगी, चले मगहर को शब्द वियोगी।
तीन रोज में पौहचे जाई, तहां वहां सुमिरन राम खुदाई।।1127।।
दहूँ दीन रहे बाहां जोरी, शस्त्र बांधि लिये भर गोरी।
वै गाडै वै जारन कही, दोनू दीन अधिक ही फही।।1128।।

तहां कबीर कही एक भाषा, शस्त्र करै सो ताहीं तलाका।
शस्त्र करै सो हमरा द्रोही, जा की पैज पिछोड़ी होई।।1129।।
सुन बिजली खां बात हमारी, हम हैं शब्द रूप निर्विकारी।
बीर सिंह बघेला विनती करि है, हे सतगुरू तुम किस विधि मरि है।।1130।।
तहां वहां चादर फूल बिछाये, सिज्या छाड़ी पदहि समाये।
दो चादर दहूँ दीन उठाई, ताके मध्य कबीर न पाई।।1131।।
तहां वहां अबिगत फूल सुवासी, मगहर घोर और चौरा काशी।
अबिगत रूप अलख निरवाणी, तहां वहां नीर क्षीर दिया छांनी।।1132।।
दोहा–संख जुगन जुग जगत में, पद प्रवानि है न्यार।
दास गरीब कबीर हरि, अबिगत अधरि अधार।।1133।।

बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की वाणी से :-

(सतग्रन्थ साहेब में राग मारू से शब्द)

सतगुरू कीन्हा मगहर पियाना हो, दोन्यू दीन चले संगि जाकै, हिंदू मुसलमाना हो।।टेक।। मुक्ति खेत कूँ छाड़ि चले हैं, तजि काशी असथाना हो। शाह सिकंदर कदम लेत है, पातिशाह सुलताना हो।।1।। च्यारि बेद के बकता संगि हैं, खोजी बड़े बयाना हो। शालिगराम सुरति से सेवैं, ज्ञान समुंद्र दाना हो।।2।। षट्दर्शन जाकै संगि चाले, गावत बानी नाना हो। अपना अपना इष्ट संभालैं, बांचैं पोथी पाना हो।।3।। चदरि फूल बिछाये सतगुरू, देखै सकल जिहाना हो। च्यारि दाग से रहत जुलहदी, अबिगत अलख अमाना हो।।4।। बीर सिंह बघेला करै बीनती, बिजली खान पठाना हो। दो चदरि बख्शीश करी हैं, दीन्हा यौह प्रवाना हो।।5।। नूर नूर निरगुण पद मेला, देखि भये हैराना हो। स्यों देही सतलोक गए अविनाशी, पाये पिण्ड न प्राना हो।।6।। शब्द सरूप साहिब सरबंगी, शब्दें शब्द समाना हो। दास गरीब कबीर अर्श में, फरकैं धजा निशाना हो।।7।।8।।

जब कबीर साहिब सतलोक जा रहे थे उस समय आदि माया प्रकति ने फिर जाल बिछाया। एक सुन्दर स्त्री(अप्सरा) का रूप बना कर कबीर साहिब को भोग विलास के लिए प्रेरित करती है।

बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की वाणी से :-

(सतग्रन्थ साहेब में राग मारू से शब्द)

देख्या मगहर जहूरा हो, काशी में कीर्ति कर चाले, झिलमिल देही नूरा हो।।टेक।। माया आदि अर्श तै उतरी, बनी अपसरा हूरा हो। हम तो बरैं कबीर पुरुष कूँ, तूं है दुलहा पूरा हो।।1।। माया कहै कबीर पुरुष से, देखो बदन जहूरा हो। अर्श विमान सुरग में मंदर, भोगैं हम कूँ सूरा हो।।2।। कहै कबीर सुनौ री माया, कुटिल नजरि तुम घूरा हो। जिनि भोगी सोई कलि रोगी, हो गये धूरम धूरा हो।।3।। माया कहै कबीर पुरुष से, मैं हूँ जग से दूरा हो। मैं तुमरी पटरानी दासी, राखौं पलक हजूरा

हो।।4।। कहै कबीर सुनौ री माया, तुम हो लड्डू बूरा हो। जो तुझि खावै सो बहि जावै, तास अकलि के कूरा हो।।5।। सेत मुकट जहां सेत छत्र है, बाजैं अनहद तूरा हो। दास गरीब कबीर कहै सुनि माया, हम से रहियौ दूरा हो।।6।।9।।

।।वाणी।।

माया सतगुरु सूं अटकी, माया सतगुरु सूं अटकी।
जोगनि हमरै क्यूं भटकी, जोगनि हमरै क्यूं भटकी।।74।।
हम तो भगलीगर जोगी, हम तो भगलीगर जोगी।
हम नहीं माया के भोगी, हम नहीं माया के भोगी।।75।।
तोमें झगरा है भारी, तोमें झगरा है भारी।
मारे बड़ छत्रधारी, मारे बड़ छत्रधारी।।76।।
सेवा करि सूं मैं नीकी, सेवा करि सूं मैं नीकी।
हम कूँ लागत है फीकी, हम कूँ लागत है फीकी।।77।।
हमरी सार नहीं जानी, हमरी सार नहीं जानी।
अरी तैं तो घालि दई घानी, अरी तैं तो घालि दई घानी।।78।।
चलती फिरती क्यूं नांही, चलती फिरती क्यूं नांही।
हम रहते अबिगत पद मांही, हम रहते अबिगत पद मांही।।79।।
अरी तूं गहली है गोली, अरी तूं गहली है गोली।
दाग लगावैगी चोली, दाग लगावैगी चोली।।80।।
मेरा अंजन है नूरी, मेरा अंजन है नूरी।
अंदर महकै कस्तूरी, अंदर महकै कस्तूरी।।81।।
तुम किसी राजा पै जावो, तुम किसी राजा पै जावो।
हमरे मन नांही भावो, हमरे मन नांही भावो।।82।।
मैं तो अर्धंगी दासी, मैं तो अर्धंगी दासी।
हम हैं अनहद पुर बासी, हम हैं अनहद पुर बासी।।83।।
हमरा अनहद में डेरा, हमरा अनहद में डेरा।
अंत न पावैगी मेरा, अंत न पावैगी मेरा।।84।।
हम तो आदि जुगादिनि जी, हम तो आदि जुगादिनि जी।
अरी तुझे माता कहूँ अक धी, अरी तुझे माता कहूँ अक धी।।85।।
अब मैं देऊँगी गारी, अब मैं देऊँगी गारी।
हम तो जोगी ब्रह्मचारी, हम तो जोगी ब्रह्मचारी।।86।।
आसन बंधूंगी जिंदा, आसन बंधूंगी जिंदा।
गल में डारौंगी फंदा, गल में डारौंगी फंदा।।87।।
आसन मुक्ता री माई, आसन मुक्ता री माई।
तीनूं लोक न अंघाई, तीनूं लोक न अंघाई।।88।।

हमरै द्वारै क्यूं रोवो, हमरै द्वारै क्यूं रोवो।
किसी राजा राणे कूँ जोवो, किसी राजा राणे कूँ जोवो।।89।।
हमरै भांग नहीं भूनी, हमरै भांग नहीं भूनी।
माया शीश कूटि रूंनी, माया शीश कूटि रूंनी।।90।।
तूं तो जोगनि है खंडी, तूं तो जोगनि है खंडी।
मौहरा फेरि चली लंडी, मौहरा फेरि चली लंडी।।91।।

-: शब्द :-

आज मोहे दर्शन दियो जी कबीर।।टेक।।
सत्य लोक से चल कर आए, काटन यम की जंजीर ।।1।।
थारे दर्शन से म्हारे पाप कटत हैं, निर्मल होवै जी शरीर ।।2।।
अमंत भोजन म्हारे सतगुरू जीमैं, शब्द दूध की खीर।।3।।
हिन्दू के तुम देव कहाये, मुसलमान के पीर।।4।।
दोनों दीन का झगड़ा छिड़ गया, टोहे ना पाये शरीर।।5।।
धर्मदास की अर्ज गुसाई, खेवा लंघाइयों परले तीर।।6।।

''वेदों में कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर का प्रमाण''
(पवित्र वेदों में प्रवेश से पहले)

प्रभु जानकारी के लिए पवित्र चारों वेद प्रमाणित शास्त्र हैं। पवित्र वेदों की रचना उस समय हुई थी जब कोई अन्य धर्म नहीं था। इसलिए पवित्र वेदवाणी किसी धर्म से सम्बन्धित नहीं है, केवल आत्म कल्याण के लिए है। इनको जानने के लिए निम्न व्याख्या बहुत ध्यान तथा विवेक के साथ पढ़नी तथा विचारनी होगी।

प्रभु की विस्तंत तथा सत्य महिमा वेद बताते हैं। (अन्य शास्त्र''श्री गीता जी व चारों वेदों तथा पूर्वोक्त प्रभु प्राप्त महान संतों तथा स्वयं कबीर साहेब(कविर्देव) जी की अपनी पूर्ण परमात्मा की अमंत वाणी के अतिरिक्त'' अन्य किसी ऋषि साधक की अपनी उपलब्धि है। जैसे छः शास्त्र ग्यारह उपनिषद् तथा सत्यार्थ प्रकाश आदि। यदि ये वेदों की कसौटी में खरे नहीं उतरते हैं तो यह सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है।)

पवित्र वेद तथा गीता जी स्वयं काल प्रभु(ब्रह्म) दत्त हैं। जिन में भक्ति विधि तथा उपलब्धि दोनों सही तौर पर वर्णित हैं। इनके अतिरिक्त जो पूजा विधि तथा अनुभव हैं वह अधूरा समझें। यदि इन्हीं के अनुसार कोई साधक अनुभव बताए तो सत्य जानें। क्योंकि कोई भी प्राणी प्रभु से अधिक नहीं जान सकता।

वेदों के ज्ञान से पूर्वोक्त महात्माओं का विवरण सही मिलता है। इससे सिद्ध हुआ कि वे सर्व महात्मा पूर्ण थे। पूर्ण परमात्मा का साक्षात्कार हुआ है

तथा बताया है वह परमात्मा कबीर साहेब(कविर् देव) है।

वही ज्ञान चारों पवित्र वेद तथा पवित्र गीता जी भी बताते हैं।

कलियुगी ऋषियों ने वेदों का टीका (भाषा भाष्य) ऐसे कर दिया जैसे कहीं दूध की महिमा कही गई हो और जिसने कभी जीवन में दूध देखा ही न हो और वह अनुवाद कर रहा हो, वह ऐसे करता है :-

पोष्टिकाहार असि। पेय पदार्थ असि। श्वेदसि।

अमंत उपमा सर्वा मनुषानाम पेय्याम् सः दूग्धः असिः।

(पौष्टिकाहार असि)=कोई शरीर पुष्ट कर ने वाला आहार है (पेय पदार्थ) पीने का तरल पदार्थ (असि) है। (श्वेत्) सफेद (असि) है। (अमंत उपमा) अमंत सदंश है (सर्व) सब (मनुषानाम्) मनुष्यों के (पेय्याम्) पीने योग्य (सः) वह (दूग्धः) पौष्टिक तरल (असि) है।

भावार्थ किया :- कोई सफेद पीने का तरल पदार्थ है जो अमंत समान है, बहुत पौष्टिक है, सब मनुष्यों के पीने योग्य है, वह स्वयं तरल है। फिर कोई पूछे कि वह तरल पदार्थ कहाँ है? उत्तर मिले वह तो निराकार है। प्राप्त नहीं हो सकता। यहाँ पर दूग्धः को तरल पदार्थ लिख दिया जाए तो उस वस्तु ''दूध'' को कैसे पाया व जाना जाए जिसकी उपमा ऊपर की है? यहाँ पर (दूग्धः) को दूध लिखना था जिससे पता चले कि वह पौष्टिक आहार दूध है। फिर व्यक्ति दूध नाम से उसे प्राप्त कर सकता है।

आओ विचार करें :- यदि कोई कहे दुग्धः को दूध कैसे लिख दिया? यह तो वाद-विवाद का प्रत्यक्ष प्रमाण ही हो सकता है। जैसे दुग्ध का दूध अर्थ गलत नहीं है। भाषा भिन्न होने से हिन्दी में दूध तथा क्षेत्रीय भाषा में दूधू लिखना भी संस्कंत भाषा में लिखे दुग्ध का ही बोध है। जैसे पलवल शहर के आसपास के ग्रामीण परवर कहते हैं। यदि कोई कहे कि परवर को पलवल कैसे सिद्ध कर दिया, मैं नहीं मानता। यह तो व्यर्थ का वाद विवाद है। ठीक इसी प्रकार कोई कहे कि कविर्देव को कबीर परमेश्वर कैसे सिद्ध कर दिया यह तो व्यर्थ का वाद-विवाद ही है। जैसे ''यजुर्वेद'' है यह एक धार्मिक पवित्र पुस्तक है जिसमें प्रभु की यज्ञीय स्तुतियों की ऋचाऐं लिखी हैं तथा प्रभु कैसा है? कैसे पाया जाता है? सब विस्तंत वर्णन है।

अब पवित्र यजुर्वेद की महिमा कहें कि प्रभु की यज्ञीय स्तुतियों की ऋचाओं का भण्डार है। बहुत अच्छी विधि वर्णित है। एक अनमोल जानकारी है और यह लिखें नहीं कि वह ''यजुर्वेद'' है अपितु यजुर्वेद का अर्थ लिख दें कि यज्ञीय स्तुतियों का ज्ञान है। तो उस वस्तु(पवित्र पुस्तक) को कैसे पाया जा सके? उसके लिए लिखना होगा कि वह पवित्र पुस्तक ''यजुर्वेद'' है जिसमें यज्ञीय ऋचाऐं हैं।

अब यजुर्वेद की सन्धिच्छेद करके लिखें। यजुर्+वेद, भी वही पवित्र पुस्तक यजुर्वेद का ही बोध है। यजुः+वेद भी वही पवित्र पुस्तक यजुर्वेद का ही बोध है। जिसमें यज्ञीय स्तुति की ऋचाऐं हैं। उस धार्मिक पुस्तक को यजुर्वेद कहते हैं। ठीक इसी प्रकार चारों पवित्र वेदों में लिखा है कि वह कविर्देव(कबीर परमेश्वर) है। जो सर्व शक्तिमान, जगत्पिता, सर्व सृष्टि रचनहार, कुल मालिक तथा पाप विनाशक व काल की कारागार से छुटवाने वाला अर्थात् बंदी छोड़ है।

इसको कविर्+देव लिखें तो भी कबीर परमेश्वर का बोध है। कविः+देव लिखें तो भी कबीर परमेश्वर अर्थात् कविर् प्रभु का ही बोध है।

इसलिए कविर्देव उसी कबीर साहेब का ही बोध करवाता हैः- सर्व शक्तिमान, अजर-अमर, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार कुल मालिक है क्योंकि पूर्वोक्त प्रभु प्राप्त सन्तों ने अपनी-अपनी मातृभाषा में 'कविर्' को 'कबीर' बोला है तथा 'वेद' को 'बेद' बोला है। इसलिए 'व' और 'ब' के अन्तर हो जाने पर भी पवित्र शास्त्र वेद का ही बोध है।

विचार करें :- जैसे कोई अंग्रेजी भाषा में लिखें कि **God (Kavir) Kaveer is all mighty** इसका हिन्दी अनुवाद करके लिखें कविर या कवीर परमेश्वर सर्व शक्तिमान है।

अब अंग्रेजी भाषा में तो हलन्त (्) की व्यवस्था ही नहीं है। फिर मात्र भाषा में इसी को कबीर कहने तथा लिखने लगे।

यही परमात्मा कविर्देव(कबीर परमेश्वर) तीन युगों में नामान्तर करके आते हैं जिनमें इनके नाम रहते हैं - सतयुग में सत सुकृत, त्रेतायुग में मुनिन्द्र, द्वापरयुग में करुणामय तथा कलयुग में कबीर देव (कविर्देव)। वास्तविक नाम उस पूर्ण ब्रह्म का कविर् देव ही है। जो सृष्टि रचना से पहले भी अनामी लोक में विद्यमान थे। इन्हीं के उपमात्मक नाम सतपुरुष, अकाल मूर्त, पूर्ण ब्रह्म, अलख पुरुष, अगम पुरुष, परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। उसी परमात्मा को चारों पवित्र वेदों में ''कविरमितौजा'', ''कविरघांरि'', ''कविरग्नि'' तथा ''कविर्देव'', कहा है तथा सर्वशक्तिमान, सर्व सृष्टि रचनहार बताया है। पवित्र कुरान शरीफ में सुरत फुर्कानी नं. 25 आयत नं. 19,21,52,58,59 में भी प्रमाण है।

कई एक का विरोध है कि जो शब्द कविर्देव' है इसको सन्धिच्छेद करने से कविः+देवः बन जाता है यह कबिर् परमेश्वर या कबीर साहेब कैसे सिद्ध किया? व को ब तथा छोटी इ (ि) की मात्रा को बड़ी ई (ी) की मात्रा करना बेसमझी है।

आओ विचार करें :- एक ग्रामीण लड़के की सरकारी नौकरी लगी। जिसका नाम कर्मवीर पुत्र श्री धर्मवीर सरकारी कागजों में तथा करमबिर पुत्र श्री धरमबिर पुत्र परताप गाँव के चौकीदार की डायरी में जन्म के समय का लिखा था। सरकार की तरफ से नौकरी लगने के बाद जाँच पड़ताल कराई जाती है। एक सरकारी कर्मचारी जाँच के लिए आया। उसने पूछा कर्मवीर पुत्र श्री धर्मवीर का मकान कौन-सा है, उसकी अमूक विभाग में नौकरी लगी है। गाँव में कर्मवीर को कर्मा तथा उसके पिता जी को धर्मा तथा दादा जी को प्रता आदि उर्फ नामों से जानते थे। व्यक्तियों ने कहा इस नाम का लड़का इस गाँव में नहीं है। काफी पूछताछ के बाद एक लड़का जो कर्मवीर का सहपाठी था, उसने बताया यह कर्मा की नौकरी के बारे में है। तब उस बच्चे ने बताया यही कर्मबीर उर्फ कर्मा तथा धर्मबीर उर्फ धर्मा ही है। फिर उस कर्मचारी को शंका उत्पन्न हुई कि कर्मबीर नहीं कर्मवीर है। उसने कहा चौकीदार की डायरी लाओ, उसमें भी लिखा था - ''करमबिर पुत्र धरमबिर पुत्र परताप'' पूरा ''र'' ''व'' के स्थान पर ''ब'' तथा छोटी ''ि'' की मात्रा लगी थी। तो भी वही बच्चा कर्मवीर ही सिद्ध हुआ, क्योंकि गाँव के नम्बरदारों तथा प्रधानों ने भी गवाही दी कि बेशक मात्रा छोटी बड़ी या ''र'' आधा या पूरा है, लड़का सही इसी गाँव का है। सरकारी कर्मचारी ने कहा नम्बरदार अपने हाथ से लिख दे। नम्बरदार ने लिख दिया मैं करमविर पूतर धरमविर को जानता हूँ जो इस गाम का बासी है और हस्ताक्षर कर दिए। बेशक नम्बरदार ने विर में छोटी ई(ि) की मात्रा का तथा करम में बड़े ''र'' का प्रयोग किया है, परन्तु हस्ताक्षर करने वाला गाँव का गणमान्य व्यक्ति है। किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती, क्योंकि नाम की स्पेलिंग गलत नहीं होती।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा का नाम सरकारी दस्तावेज(वेदों) में कविर्देव है, परन्तु गाँव(पथ्वी) पर अपनी-2 मात भाषा में कबीर, कबिर, कबीरा, कबीरन् आदि नामों से जाना जाता है। इसी को नम्बरदारों(आँखों देखा विवरण अपनी पवित्र वाणी में ठोक कर गवाही देते हुए आदरणीय पूर्वोक्त सन्तों) ने कविर्देव को हक्का कबीर, सत् कबीर, कबीरा, कबीरन्, खबीरा, खबीरन् आदि लिख कर हस्ताक्षर कर रखे हैं।

वर्तमान (सन् 2006)से लगभग 600 वर्ष पूर्व जब परमात्मा कबीर जी (कविर्देव जी) स्वयं प्रकट हुए थे उस समय सर्व सद्ग्रन्थों का वास्तविक ज्ञान लोकोक्तियों (दोहों, चोपाईयों, शब्दों अर्थात् कविताओं) के माध्यम से साधारण भाषा में जन साधारण को बताया था। उस तत्व ज्ञान को उस समय के संस्कत भाषा व हिन्दी भाषा के ज्ञाताओं ने यह कह कर ठुकरा दिया कि कबीर जी तो अशिक्षित है। इस के द्वारा कहा गया ज्ञान व उस में उपयोग की गई भाषा

व्याकरण दृष्टिकोण से ठीक नहीं है। जैसे कबीर जी ने कहा है :--

कबीर बेद मेरा भेद है, मैं ना बेदों माहीं। जौण बेद से मैं मिलु ये बेद जानते नाहीं।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने कहा है कि जो चार वेद है ये मेरे विषय में ही ज्ञान बता रहे हैं परन्तु इन चारों वेदों में वर्णित विधि द्वारा मैं (पूर्ण ब्रह्म) प्राप्त नहीं हो सकता। जिस वेद (स्वसम अर्थात् सूक्ष्म वेद) में मेरी प्राप्ति का ज्ञान है। उस को चारों वेदों के ज्ञाता नहीं जानते। इस वचन को सुनकर। उस समय के आचार्यजन कहते थे कि कबीर जी को भाषा का ज्ञान नहीं है। देखो वेद का बेद कहा है। नहीं का नाहीं कहा है। ऐसे व्यक्ति को शास्त्रों का क्या ज्ञान हो सकता है? इसलिए कबीर जी मिथ्या भाषण करते हैं। इस की बातों पर विश्वास नहीं करना। स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ग्यारह पृष्ठ 306 पर कबीर जी के विषय में यही कहा है। वर्तमान में संत रामपाल दास जी महाराज के विषय में विज्ञापनों में लिखे लेख पर आर्य समाज के आचार्यों ने यही आपत्ति व्यक्त की थी कि रामपाल को हिन्दी भाषा भी सही नहीं लिखनी आती व को ब लिखता है छोटी-बड़ी मात्राओं को गलत लिखता है। कोमा व हलन्त भी नहीं लगाता। इसका ज्ञान कैसे सही माना जाए।

विचार करें :-- किसी लड़के का विवाह एक सुन्दर सुशील युवती से हो गया। उसने साधारण वस्त्र पहने थे। मेकअप (हार, सिंगार) नहीं कर रखा था। उस के विषय में कोई कहे कि ''यह भी कोई विवाह है। वधु ने मेकअप (हार, सिंगार-आभूषण आदि नहीं पहने) नहीं किया है। विचार करें विवाह का अर्थ है पुरूष को पत्नी प्राप्ति। यदि मेकअप (श्रृंगार) नहीं कर रखा तो वांच्छित वस्तु प्राप्त है। यदि श्रृंगार कर रखा है लड़की ने तो भी बुरा नहीं किया, परन्तु एक श्रृंगार के अभाव से विवाह को ही नकार देना कौन सी बुद्धिमता है। ठीक इसी प्रकार परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ तथा संत रामपाल दास जी महाराज द्वारा दिया तत्व ज्ञान है। वास्तविक ज्ञान प्राप्त है। यदि भाषा में श्रृंगार का अभाव अर्थात् मात्राओं व हलन्तों की कमी है तो विद्वान पुरूष कृप्या ठीक करके पढ़ें।

इस तरह इस उलझी हुई ज्ञानगुत्थी को सुलझाया जाएगा। इसमें भाषा तथा व्याकरण की भूमिका क्या है?

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने द्वारा रचे पवित्र उपनिषद् ''सत्यार्थ प्रकाश'' के सातवें समुलास में (पृष्ठ नं. 217, 212 अजमेर से प्रकाशित तथा पृष्ठ संख्या 173 दीनानगर दयानन्द मठ पंजाब से प्रकाशित) लिखा है, उसका भावार्थ है कि ब्रह्म ने वेद वाणी चार ऋषियों में जीवस्थ रूप से बोले। जैसे लग रहा था कि ऋषि वेद बोल रहे थे, परन्तु ब्रह्म बोल रहा था तथा

ऋषियों का मुख प्रयोग कर रहा था। (''जीवस्थ रूप'' का भावार्थ है जैसे ऋषियों के अन्दर कोई और जीव स्थापित होकर बोल रहा हो) बाद में उन ऋषियों को कुछ मालूम नहीं कि क्या बोला, क्या लिखा?

(जैसे कोई प्रेतात्मा किसी के शरीर में प्रवेश करके बोलती है। उस समय लग रहा होता है कि शरीर वाला जीव ही बोल रहा है, परन्तु प्रेत के निकल जाने के बाद उस शरीर वाले जीव को कुछ मालूम नहीं होता, मैंने क्या बोला था)।

इसी प्रकार बाद में ऋषियों ने वेद भाषा को जानने के लिए व्याकरण निघटु आदि की रचना की। जो स्वामी दयानन्द जी के शब्दों में सत्यार्थ प्रकाश तीसरे समुल्लास (पष्ठ नं. 80, अजमेर से प्रकाशित तथा पष्ठ संख्या 64 दीनानगर पंजाब से प्रकाशित) में पवित्र चारों वेद ईश्वर कत होने से निभ्रात हैं, वेदों का प्रमाण वेद ही हैं। चारों ब्राह्मण, व्याकरण, निघटु आदि ऋषियों कत होने से त्रुटि युक्त हो सकते हैं। उपरोक्त विचार स्वामी दयानन्द जी के हैं।

विचार करें वेद पढ़ने वाले ऋषियों के अपने विचारों से रचे उपनिषद् एक दूसरे के विपरीत व्याख्या कर रहे हैं। इसलिए वेद ज्ञान को तत्वज्ञान से ही समझा जा सकता है। तत्वज्ञान (स्वसम वेद) पूर्ण ब्रह्म कविर्देव ने स्वयं आकर बताया है तथा चारों वेदों का ज्ञान ब्रह्म द्वारा बताया गया है और वेदों को बोलने वाला ब्रह्म स्वयं पवित्र यजुर्वेद अध्याय नं. 40 मन्त्र नं. 10 में कह रहा है कि उस पूर्ण ब्रह्म को कोई तो (सम्भवात्) जन्म लेकर प्रकट होने वाला अर्थात् आकार में(आहुः) कहता है तथा कोई (असम्भवात्) जन्म न लेने वाला अर्थात् व निराकार(आहुः) कहते हैं। परन्तु इसका वास्तविक ज्ञान तो(धीराणाम्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी संतजन (विचचक्षिरे) पूर्ण निर्णायक भिन्न भिन्न बताते हैं (शुश्रुम्) उसको ध्यानपूर्वक सुनो। इससे स्वसिद्ध है कि वेद बोलने वाला ब्रह्म भी स्वयं कह रहा है कि उस पूर्ण ब्रह्म के बारे में मैं भी पूर्ण ज्ञान नहीं रखता। उसको तो कोई तत्वदर्शी संत ही बता सकता है। इसी प्रकार इसी अध्याय के मन्त्र नं. 13 में कहा है कि कोई तो (विद्याया) अक्षर ज्ञानी एक भाषा के जानने वाले को ही विद्वान कहते हैं, दूसरे (अविद्याया) निरक्षर को अज्ञानी कहते हैं, यह जानकारी भी (धीराणाम्) तत्वदर्शी संतजन ही (विचचक्षिरे) विस्तत व्याख्या ब्यान करते हैं (तत्) उस तत्वज्ञान को उन्हीं से (शुश्रुम्) ध्यानपूर्वक सुनो अर्थात् वही तत्वदर्शी संत ही बताएगा कि विद्वान अर्थात् ज्ञानी कौन है तथा अज्ञानी अर्थात् अविद्वान कौन है।

विशेष :- उपरोक्त प्रमाणों को विवेचन करके सद्भावना पूर्वक पुनर्विचार करें तथा व को ब तथा छोटी बड़ी मात्राओं की शुद्धि-अशुद्धि से ही ज्ञानी व अज्ञानी की पहचान नहीं होती, वह तो तत्वज्ञान से ही होती है।

(कविर् देव) = कबीर परमेश्वर के विषय में 'व' को 'ब' कैसे सिद्ध किया

है? छोटी इ (ि) की मात्रा बड़ी ई(ी) की मात्रा कैसे सिद्ध हो सकती है? इस वाद-विवाद में न पड़कर तत्वज्ञान को समझना है।

''पूर्ण परमात्मा अपने वास्तविक ज्ञान को स्वयं ही ठीक-ठीक बताता है''

प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 16 से 18

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 16 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा के वास्तविक नाम का ज्ञान कराऐं। इसी का बोध मंत्र 17 से 18 में विशेष विवरण से कहा है तथा जहाँ पूर्ण परमात्मा रहता है उस स्थान का वर्णन किया है।

''पवित्र वेदों में कविर्देव (कबीर परमेश्वर) का प्रमाण''

कविर्देव अपने ज्ञान का संदेशवाहक बनकर स्वयं ही आता है तथा अपना स्वस्थ ज्ञान (वास्तविक तत्वज्ञान) स्वयं ही कराता है।

स्वयं कविर्देव (कबीर परमेश्वर) जी ने अपनी अमृतवाणी में कहा है-

(कबीर सागर के अध्याय ''अगम निगम बोध'' पृष्ठ 12 पर)

बेद मेरा भेद है, मैं ना बेदन के मांहीं।
जौन बेद से मैं मिलूं, वह बेद जानते नांहीं।

शब्द :- अविगत से चल आए, कोई मेरा भेद मर्म नहीं पाया। (टेक)
न मेरा जन्म न गर्भ बसेरा, बालक हो दिखलाया।
काशी नगर जल कमल पर डेरा, वहाँ जुलाहे ने पाया।।
मात–पिता मेरे कुछ नाहीं, ना मेरे घर दासी(पत्नी)।
जुलहा का सुत आन कहाया, जगत करें मेरी हाँसी।।
पाँच तत्व का धड़ नहीं मेरा, जानुं ज्ञान अपारा।
सत्य स्वरूपी (वास्तविक) नाम साहेब(पूर्ण प्रभु) का सोई नाम हमारा।।
अधर द्वीप (ऊपर सत्यलोक में) गगन गुफा में तहां निज वस्तु सारा।
ज्योत स्वरूपी अलख निरंजन (ब्रह्म) भी धरता ध्यान हमारा।।
हाड़ चाम लहु ना मेरे कोई जाने सत्यनाम उपासी।
तारन तरन अभय पद दाता, मैं हूँ कबीर अविनाशी।।

उपरोक्त शब्द में कबीर परमेश्वर कह रहे हैं कि न तो मेरी कोई पत्नी है, न ही मेरा पाँच तत्व का (हाड-चाम, लहू अर्थात् नाड़ियों के जोड़-जुगाड़ वाली काया) शरीर है, मैं स्वयंभू हूँ तथा काशी के लहरतारा नामक तालाब के जल में कमल के फूल पर स्वयं प्रकट होकर बालक रूप बनाया था। वहाँ से मुझे नीरू नामक जुलाहा उठा कर ले गया था। जो वास्तविक नाम परमेश्वर का अर्थात् मेरा है(वेदों में कविर्देव, गुरु ग्रन्थ साहेब में हक्का कबीर

तथा कुर्आन शरीफ में अल्लाह कबीरन्) वही नाम मेरा है, मैं ऊपर ऋतधाम में रहता हूँ तथा आप का भगवान ज्योति निरंजन (ब्रह्म) भी मेरी पूजा करता है।

कबीर सागर अध्याय "ज्ञान बोध" (बोध सागर) :

पष्ठ 29 -- नहीं बाप ना माता जाए, अविगत से हम चल आए।
कल युग में कांशी चल आए, जब हमरे तुम दर्शन पाए।।

पष्ठ 36 -- भग की राह हम नहीं आए, जन्म मरण में नहीं समाए।
त्रिगुण पांच तत्व हमरे नांही, इच्छा रूपी देह हम आहीं।।

प्रमाण - 1. पवित्र यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25 :-

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः।।25।।

समिद्धः–अद्य–मनुषः–दुरोणे–देवः–देवान्–यज्–असि– जात–वेदः–आ– च–वह–मित्रमहः–चिकित्वान्–त्वम्–दूतः– कविर्–असि–प्रचेताः।

अनुवाद – (अद्य) आज अर्थात् वर्तमान में (दुरोणे) शरीर रूप महल में दुराचार पूर्वक (मनुषः) झूठी पूजा में लीन मननशील व्यक्तियों को (समिद्धः) लगाई हुई आग अर्थात् शास्त्र विधि रहित वर्तमान पूजा जो हानिकारक होती है, अग्नि जला कर भस्म कर देती है ऐसे साधक का जीवन शास्त्रविरूध साधना नष्ट कर देती है। उसके स्थान पर (देवान्) देवताओं के (देवः) देवता (जातवेदः) पूर्ण परमात्मा सतपुरुष की वास्तविक (यज्) पूजा (असि) है। (आ) दयालु , (मित्रमहः) जीव का वास्तविक साथी पूर्ण परमात्मा के (चिकित्वान्) स्वस्थ ज्ञान अर्थात् यथार्थ भक्ति को (दूतः) संदेशवाहक रूप में (वह) लेकर आने वाला (च) तथा (प्रचेताः) बोध कराने वाला (त्वम्) आप (कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर) कबीर (असि) है।

भावार्थ :- जिस समय भक्त समाज को शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण (पूजा) कराया जा रहा होता है। उस समय कविर्देव (कबीर परमेश्वर) तत्व ज्ञान को प्रकट करते हैं।

जिन-जिन पुण्यात्माओं ने परमात्मा को प्राप्त किया उन्होंने बताया कि कुल का मालिक एक है। वह मानव सदृश तेजोमय शरीर युक्त है। जिसके एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ सूर्य तथा करोड़ चन्द्रमाओं की रोशनी से भी अधिक है। उसी ने नाना रूप बनाए हैं। परमेश्वर का वास्तविक नाम अपनी-अपनी भाषाओं में कविर्देव (वेदों में संस्कृत भाषा में) तथा हक्का कबीर (श्री गुरु ग्रन्थ साहेब में पष्ठ नं. 721 पर क्षेत्रीय भाषा में) तथा सत् कबीर (श्री धर्मदास जी की वाणी में क्षेत्रीय भाषा में) तथा बन्दी छोड़ कबीर (सन्त गरीबदास जी के सद्ग्रन्थ में क्षेत्रीय भाषा में) कबीरा, कबीरन् व खबीरा या खबीरन् (श्री कुरान शरीफ़ सूरत फुर्कानि नं. 25, आयत नं. 19, 21, 52, 58,

59 में क्षेत्रीय अरबी भाषा में)। इसी पूर्ण परमात्मा के उपमात्मक नाम अनामी पुरुष, अगम पुरुष, अलख पुरुष, सतपुरुष, अकाल मूर्ति, शब्द स्वरूपी राम, पूर्ण ब्रह्म, परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं, जैसे देश के प्रधानमंत्री का वास्तविक शरीर का नाम कुछ और होता है तथा उपमात्मक नाम प्रधान मंत्री जी, प्राइम मिनिस्टर जी अलग होता है। जैसे भारत देश का प्रधानमंत्री जी अपने पास गृह विभाग रख लेता है। जब वह उस विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करता है तो वहाँ गृहमंत्री की भूमिका करता है तथा अपना पद भी गृहमन्त्री लिखता है, हस्ताक्षर वही होते हैं। इसी प्रकार ईश्वरीय सत्ता को समझना है।

जिन सन्तों व ऋषियों को परमात्मा प्राप्ति नहीं हुई, उन्होंने अपना अन्तिम अनुभव बताया है कि प्रभु का केवल प्रकाश देखा जा सकता है, प्रभु दिखाई नहीं देता क्योंकि उसका कोई आकार नहीं है तथा शरीर में धुन सुनना आदि प्रभु भक्ति की उपलब्धि है।

आओ विचार करें - जैसे कोई अंधा अन्य अंधों में अपने आपको आँखों वाला सिद्ध किए बैठा हो और कहता है कि रात्री में चन्द्रमा की रोशनी बहुत सुहावनी मन भावनी होती है, मैं देखता हूँ। अन्य अन्धे शिष्यों ने पूछा कि गुरु जी चन्द्रमा कैसा होता है। चतुर अन्धे ने उत्तर दिया कि चन्द्रमा तो निराकार है वह दिखाई थोड़े ही दे सकता है। कोई कहे सूर्य निराकार है वह दिखाई नहीं देता रवि स्वप्रकाशित है इसलिए उसका केवल प्रकाश दिखाई देता है। गुरु जी के बताये अनुसार शिष्य 2½ घण्टे सुबह तथा 2½ घण्टे शाम आकाश में देखते हैं। परन्तु कुछ दिखाई नहीं देता। स्वयं ही विचार विमर्श करते हैं कि गुरु जी तो सही कह रहे हैं, हमारी साधना पूरी 2½ घण्टे सुबह 2½ घण्टे शाम नहीं हो पाती। इसलिए हमें सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रकाश दिखाई नहीं दे रहा। चतुर गुरु जी की व्याख्या पर आधारित होकर उस चतुर अन्धे की (ज्ञानहीन) व्याख्या के प्रचारक करोड़ों अंधे (ज्ञानहीन) हो चुके हों। फिर उन्हें आँखों वाला (तत्वदर्शी सन्त) बताए कि सूर्य आकार में है और उसी से प्रकाश निकल रहा है। इसी प्रकार चन्द्रमा से प्रकाश निकल रहा है नेत्रहीनों! चन्द्रमा के बिना रात्री में प्रकाश कैसे हो सकता है? जैसे कोई कहे कि ट्यूब लाईट देखी, फिर कोई पूछे कि ट्यूब कैसी होती है जिसकी आपने रोशनी देखी है? उत्तर मिले कि ट्यूब तो निराकार होने के कारण दिखाई नहीं देती। केवल प्रकाश देखा जा सकता है। विचार करें :- ट्यूब बिना प्रकाश कैसा ?

यदि कोई कहे कि हीरा स्वप्रकाशित होता है। फिर यह भी कहे कि हीरे का केवल प्रकाश देखा जा सकता है, क्योंकि हीरा तो निराकार है, वह दिखाई थोड़े ही देता है, तो वह व्यक्ति हीरे से परिचित नहीं है। फोकट जौहरी बना है। जो परमात्मा को निराकार कहते हैं तथा केवल प्रकाश देखना तथा

धुन सुनना ही प्रभु प्राप्ति मानते हैं वे पूर्ण रूप से प्रभु तथा भक्ति से अपरिचित हैं। जब उनसे प्रार्थना की कि कुछ नहीं देखा है तुमने, अपने अनुयाइयों को भ्रमित करके दोषी हो रहे हो। न तो आपके गुरुदेव के तत्वज्ञान रूपी नेत्र हैं और न ही आपको। इसलिए दुनियाँ को भ्रमित मत करो। इस बात पर सर्व अज्ञान रूपी नेत्रों के अन्धों ने लट्ठ उठा लिए कि हम तो झूठे, तूं एक सच्चा। आज वही स्थिति संत रामपाल जी महाराज के साथ है।

इस विवाद का निर्णय कैसे हो कि किस सन्त के विचार सही हैं किसके गलत हैं? मान लिजिए जैसे किसी अपराध के विषय में पाँच वकील अपना-अपना विचार व्यक्त कर रहे हैं। एक कहे कि इस अपराध पर संविधान की धारा 301 लगेगी, दूसरा कहे 302, तीसरा कहे 304, चौथा कहे 306 तथा पाँचवां वकील 307 को सही बताए।

ये पाँचों ठीक नहीं हो सकते। केवल एक ही ठीक हो सकता है यदि उसकी व्याख्या अपने देश के पवित्र संविधान से मिलती है। यदि उसकी व्याख्या भी संविधान के विपरीत है तो पाँचों वकील गलत हैं। इसका निर्णय देश का पवित्र संविधान करेगा जो सर्व को मान्य होता है। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न विचार धाराओं में तथा साधनाओं में से कौन-सी शास्त्र अनुकूल है या कौन-सी शास्त्र विरुद्ध है? इसका निर्णय पवित्र सद्ग्रन्थ ही करेंगे, जो सर्व को मान्य होना चाहिए (यही प्रमाण पवित्र श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में) कि ''जो शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करते हैं उनको न तो सुख प्राप्त होता है न सिद्धी तथा न उनकी गति होती है अर्थात् व्यर्थ।

''तत्व ज्ञानहीन भक्त से ज्ञान चर्चा''

➢ प्रश्न भ्रमित भक्त का :- परमेश्वर निराकार है, तुम साकार किस आधार से कहते हो, यदि साकार है तो किस आकार में हैं? पशु, पक्षी या मनुष्य रूप में या कोई पत्थर है परमात्मा ?

➢ उत्तर संत रामपाल जी महाराज का :- मैं परमेश्वर को वेदों के आधार से साकार मानता हूँ तथा उन परम सन्तों के अनुभव की वाणी के आधार से साकार मानता हूँ जिन्होंने परमात्मा का साक्षात्कार किया है। इसके साथ-2 तत्वज्ञान के आधार से व गुरू देव द्वारा प्राप्त दीक्षा मन्त्रों की साधना से जाना तथा देखा परमेश्वर साकार है तथा नराकार हैं। महर्षि दयानन्द तथा दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित कुछ वेद मन्त्रों में भी यह स्पष्ट है कि परमेश्वर एक देशीय तथा राजा के समान दर्शनीय है अर्थात् नराकार है। परमेश्वर ऊपर तीसरे मुक्ति धाम में रहता है, वहाँ से गति करके अर्थात् चल कर आता है और वरणीय पुरूष अर्थात् श्रेष्ठ आत्मा, जो दृढ़ भक्त हैं। उनको

आकर परमात्मा मिलता है। उन्हें तत्वज्ञान का उपदेश सुनाता है। जिसका प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26-27,ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 16 से 20, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8-9 मैं हैं। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मंत्र 1 में स्पष्ट किया है कि परमेश्वर पथ्वी लोक पर कवियों की तरह भूमिका करता हुआ, विचरण करता है (कवियन् व्रजम्) और भी अनेक वेद मन्त्रों में प्रमाण है कि परमेश्वर साकार नराकार है, जिन वेद मन्त्रों में महर्षि दयानन्द तथा इसके भक्तों ने अर्थों के अनर्थ कर रखें हैं। इस पुस्तक में आपको उन मन्त्रों की फोटो कॉपिया भी पढ़ने को मिलेंगी जो महर्षि दयानन्द तथा इसके भक्तों के द्वारा अनुवादित हैं, जिनमें वे सच्चाई को नहीं छुपा सके। उन्होंने वेदों के उन मन्त्रों का यथार्थ अनुवाद कर दिया। इसे परमेश्वर की कपा ही मानेंगे कि उन्होंने आंख मिचौलि करके वेदों की सच्चाई को प्रकट रखा। आप महर्षि दयानन्द तथा दयानन्द के भक्तों द्वारा किए गये वेद मन्त्रों के अनुवाद की फोटो कापी भी पढ़ेंगे। इससे स्वतः निर्णय हो जाएगा कि वास्तविकता क्या है?

संत रामपाल दास जी महाराज ने बताया कि मेरे पूज्य इष्ट देव कबीर परमेश्वर जी सन् 1398 (वि. संवत् 1455 ज्येष्ठ शुदी पूर्णमासी) को सत्यलोक से अर्थात् तीसरे मुक्ति धाम से चल कर आए। अपनी अच्छी आत्माओं, दढ़ भक्तों (आदरणीय धर्मदास जी, आदरणीय मलूक दास जी, आदरणीय दादू दास जी, आदरणीय नानक देव जी, आदरणीय गरीब दास जी गाँव छुड़ानी जिला झज्जर (हरियाणा) व आदरणीय घीसा दास जी गाँव खेखड़ा, जिला मेरठ (उत्तर प्रदेश) को मिले।

परम पूज्य कबीर जी जो काशी शहर में जुलाहा रूप में लीला किया करते थे। वे स्वयं परमेश्वर हैं। उन्होंने ही वे लीलाऐं की हैं, जो वेद बताते हैं कि परमेश्वर ऐसी लीलाऐं करता है। इसी प्रकार लीला करने, परमेश्वर प्रत्येक युग में आते हैं। भक्तों को उपदेश देते हैं तथा यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान को अपनी अमत वाणी (सच्चिदानन्द घन की वाणी अर्थात् कर्विवाणी) में कहते हैं। इसी वाणी को 'सूक्ष्म वेद' कहते हैं। जिस का विवरण श्रीमद् भगवत् गीता अध्याय 4 श्लोक 32, 34 में भी है। गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में अन्य अनुवाद कर्त्ताओं ने अर्थों का अनर्थ किया है। मूल पाठ गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में ''ब्रह्मणः मुखे'' शब्द है जिसका अनुवाद ''वेद की वाणी'' किया है। यहाँ 'ब्रह्मण' का अर्थ उचित नहीं किया है। कप्या देखें उन्हीं अनुवाद कर्त्ताओं द्वारा गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ''ब्रह्मणः'' का अर्थ ''सच्चिदानन्द घन ब्रह्म'' जो उचित अनुवाद है। यहाँ गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का ज्ञान ''ब्रह्मणः मुखे'' सच्चिदानन्द घन ब्रह्म

ने अर्थात् परमेश्वर ने अपने मुख कमल से उच्चारण करके कहा है। वह 'सच्चिदानन्द घन' की वाणी है जिसमें परमेश्वर ने यज्ञों व धार्मिक अनुष्ठानों को विस्तार से कहा हैं। यह ज्ञान कबीर परमेश्वर जी ने सन् 1398 संवत् 1455 ज्येष्ठ पूर्णमासी से सन् 1518 (माघ शुदी एकादशी सं. 1575) तक अतिथि की तरह रहकर के अपने मुख कमल से बोला था। जिसे ''कबीर वाणी'' कहते हैं। इसी को तत्त्वज्ञान तथा सूक्ष्म वेद भी कहते हैं।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा था :-

हम ही अलख अल्लाह हैं, कुतुब गौस और पीर।
मैं हूँ खालिक धणी, मेरा नाम कबीर।।
बेद मेरा भेद है, मैं ना मिलूँ बेदन के माहीं।
जौण बेद से मैं मिलूँ, वह बेद जानते नाहीं।।
सोलह संख पर हमारा तकिया, हम गगन मण्डल के जिन्दा।
हुक्म हिसाबी हम चल आए, काटन यम का फंदा।।

महर्षि रामानन्द जी से कबीर परमेश्वर जी ने कहा था :-

ए स्वामी संष्टा मैं, संष्टि हमरे तीर।
गरीब, दास अधर बसूँ, अबिगत सत् कबीर।।

कबीर परमेश्वर ने आदरणीय धर्मदास जी को तत्वज्ञान बताया :-

धर्मदास यह जग बौराना, कोई ना जाने पद निर्वाणा।
यही कारण में कथा पसारा, इन से कहिए वह राम नियारा।।
अब मैं तुमसे कहूँ चिताई, त्रिदेवन की उत्पत्ति भाई।
माँ अष्टंगी पिता निंरजन, ये जम दारूण वंशन अंजन।।
निरंजन किन्हें भोग विलासा, दुर्गा को रही तब आशा।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा, विष्णु, शिव नाम धराए।।
तीनों देव अविनाशी नाहीं, जन्में मरें आवें जाहीं।
तीन देव की जो करते भक्ति, उनकी कबहु ना होवे मुक्ति।।
बेद मेरा भेद है, मैं ना मिलूं बेदन के माहीं।
जौण बेद से मैं मिलूं, उसे बेद जानते नाहीं।।

उपरोक्त सच्चिदानन्द घन ब्रह्म (कबीर परमेश्वर) की वाणी है। जिसमें परमेश्वर ने अपने मुख कमल से कहा है कि हे धर्मदास ! (जो उन श्रेष्ठ आत्माओं में से एक हैं, जिनको परमेश्वर मिले थे) यह सर्व संसार मोक्ष मार्ग से अपरिचित है, मैं पूर्ण परमात्मा हूँ। मैंने सर्व संष्टि की रचना, अपने वचन से की है। चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) मेरी ही महिमा का गुणगान कर रहे हैं। परन्तु मेरे परम पद को प्राप्त करने का भक्ति मार्ग इन चारों वेदों में नहीं है। जिस वेद से (कबीर वाणी जिसे 'सुक्ष्म वेद' कहते हैं

उससे) अर्थात् सुक्ष्म वेद से मेरी प्राप्ति हो सकती है। वह भक्ति विधि इन वेदों में नहीं है। हे धर्मदास! और बताता हूँ कि जिन तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी) को आप अजर-अमर अविनाशी-अजन्मा कहते हो। वे तीनों नाशवान हैं, इनका जन्म-मत्यु होता है। ज्योति निरंजन अर्थात् क्षर ब्रह्म इन तीनों का पिता है तथा दुर्गा इनकी माता है। इन तीनों देवताओं की भक्ति करने वालों का कदापि मोक्ष नहीं हो सकता।

पुण्यात्माओं! उस समय महर्षि दयानन्द जैसे गुरू पद प्राप्त ब्राह्मणों ने परमेश्वर कबीर जी का घोर विरोध किया था तथा जनता को बरगलाया था कि कबीर अशिक्षित है, यह संस्कृत नहीं पढ़ा है, यह सब झूठ कह रहा है कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी नाशवान है, यह झूठ कह रहा है कि वेदों में परमात्मा साकार है। यह जुलाहा (धाणक) अपने आप को परमात्मा कह रहा है। परमेश्वर तो निराकार है। वह विराट परमात्मा कण-कण में विद्यमान है। यह कबीर क्या जाने वेदों, श्रीमद् भगवत् गीता तथा पुराणों के विषय में? इस की बातों में न आना।

उस समय उन अज्ञानियों का दाव लग गया क्योंकि जनता शिक्षित नहीं थी। अज्ञान के आधार से दयानन्द जैसे वेद ज्ञानहीन प्राणी केवल एक संस्कृत भाषा को पढ़ कर महर्षि पद पर विराजमान हो गए। दयानन्द शास्त्री तो हो सकता है महर्षि नहीं। यही भाषा अब आप दयानन्द भक्त आर्यसमाजी बोल रहे हो कि रामपाल संस्कृत भाषा नहीं जानता है, यह क्या जाने वेदों के गूढ़ रहस्यों को। इसी बात से वर्तमान शिक्षित समाज भी भ्रम में है कि वेद संस्कृत भाषा में हैं तथा रामपाल जी संस्कृत नहीं जानता, इसीलिए वेदों को नहीं समझ पा रहा है और परमात्मा को साकार कह रहा है। महर्षि दयानन्द ने तो वेदों के आधार से ''सत्यार्थ प्रकाश'' की रचना की है। यह धारणा अभी तक बनी हुई है। जब तक जनता वेदों की सच्चाई से परिचित नहीं होगी तब तक इस शास्त्री दयानन्द को महर्षि मानते रहेंगे। मुझ दास का प्रयत्न है कि वेदों की सच्चाई जनता के रूबरू करूं। जिससे अज्ञान का नाश और ज्ञान का प्रकाश हो सके। इसलिए ''महर्षि दयानन्द तथा इसके भक्तों द्वारा किए वेदों के अनुवाद जनता को दिखाता हूँ कि परमेश्वर के निराकार होने का शोर मचाने वालों के द्वारा किए, अनुवादों में ही, परमेश्वर साकार लिखा है। ''सत्यार्थ प्रकाश'' के विवेचन से भी परमेश्वर साकार सिद्ध होता है। निराकार परमेश्वर कहने वालों अर्थात् महर्षि दयानन्द तथा इसके भक्तों के कर कमलों से किए अनुवाद में साकार-नराकार परमेश्वर के प्रमाण प्रस्तुत हैं उन्हीं के अनुवाद की फोटो कापियाँ।

➢ प्रश्न भ्रमित भक्त का :- परमात्मा को साकार मानें तो उसका शरीर सिद्ध हुआ, शरीर सिद्ध हुआ तो उसको उत्पन्न करने वाला कोई और होगा, यदि परमात्मा को साकार मानें तो वह सर्वव्यापक नहीं हो सकता तथा अन्तर्यामी भी नहीं हो सकता। यदि यह माने कि परमेश्वर ने अपना शरीर आप बना लिया तो इससे पहले परमात्मा निराकार था। यह सत्य है जो महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा कि परमेश्वर निराकार है, यही वेदों में प्रमाण है कि परमेश्वर निराकार है। हम वेदों को सत्य मानते हैं।

➢ उत्तर संत रामपाल जी महाराज :- विचारणीय विषय है कि जैसे गिरगिट (करेलिया) एक छिपकली जैसा जानवर होता है। वह अपना रंग रूप बदल लेता है तो क्या परमात्मा उस करेलिये से भी गया गुजरा है, जो उसी परमेश्वर द्वारा बनाया गया है। परमेश्वर समर्थ है। वह एक वचन से सर्व ब्रह्मण्डों को उत्पन्न कर देता है। फिर नियम बना देता है यह सर्व सृष्टि उस परमेश्वर के बनाए विद्यान अनुसार बनती बिगड़ती रहती है। परमात्मा अन्य सर्व प्राणियों के शरीर बनाता है तो वह अपना शरीर भी बना सकता है। जैसे दर्जी (Tailor) अन्य के वस्त्र बनाता है तो वह अपने भी बना सकता है। जो बात वेदों में प्रमाणित है तो उस को आप के न मानने से अभिप्राय यही होगा की आप सत्य अनुगामी नहीं है मन मुखी तथा हठी व्यक्ति हैं। यह देखें ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18-19-20, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8-9 जो दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है तथा सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधी सभा दिल्ली से तथा श्री वेदभिक्षु आर्यसमाज मन्दिर करोल बाग, पो. मुखमेल पुर, इब्राहिम नगर, दिल्ली से प्रकाशित है।

दयानन्द के भक्त कहते रहे हैं कि संत रामपाल दास जी महाराज झूठ बोलता है कह रहा है कि वेदों में परमात्मा साकार बताया है। अब आप अपनी आँखों से पढ़ें वेदों में परमेश्वर साकार है नराकार हैं के ढेर सारे प्रमाण। कबीर परमेश्वर कहा करते :-

निरंजन धन तेरा दरबार, जहां पर तनिक न न्याय विचार।
साच्चों को तो झूठा बतावें, इन झूठों का ऐतबार।।

❑ परमेश्वर कविर्देव (कबिर परमेश्वर) अपने रूप को सरल करके अपने लोक से आता है। अपने उपासक के विघ्नों को नाश करते हैं। अच्छी आत्मा को मिलते हैं।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26 :-

इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे ।
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कविरत्यो न क्रीळन्परि वारमर्षति ॥२६॥

पदार्थः—(यज्वे) यज्ञ करने वाले यजमानों के लिए परमात्मा (विश्वानि सुपथानि) सब रास्तों को (कृण्वन्) सुगम करता हुआ (मृधः) उनके विघ्नों को (अतिगाहते) मर्दन करता है और (पुनानः) उनको पवित्र करता हुआ और (निर्णिजं) अपने रूप को (गाः कृण्वानः) सरल करता हुआ (हर्यतः) वह कान्तिमय परमात्मा (कविः) सर्वज्ञ (अत्योन) विद्युत् के समान (क्रीळन्) क्रीड़ा करता हुआ (वारं) वरणीय पुरुष को (पर्य्यर्षति) प्राप्त होता है ॥२६॥

यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26 की फोटो कापी है। महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। ''परमात्मा भक्ति करने वाले भक्तों के सर्व विघ्न नाश करता है। अपने रूप को सरल करता हुआ अर्थात् अपना रूप हल्के तेजयुक्त करके वह कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर श्रेष्ठ पुरूष को मिलता है।

विचार करें :- दयानन्द के भक्त कहते हैं कि ''कविः'' का अर्थ कविर्देव या कबीर कैसे किया है, यह उचित नहीं। महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 1 में ''यजुः'' का अर्थ यजुर्वेद किया है। हम 'व' को 'ब' कहते हैं। देव का अर्थ परमेश्वर होता है। इसलिए जहाँ पर वेदों में परमात्मा की महिमा का प्रकरण है

वहाँ पर यदि ''कविः'' शब्द लिखा है तो उसका अर्थ कविर्देव है = इसे कबिर परमेश्वर कहने लगे तथा कबीर लिखने लगे। परमेश्वर का यही नाम वेदोक्त है।

❑ परमेश्वर द्यूलोक अर्थात् प्रकाशमान सत्यलोक के तीसरे पष्ठ (स्थान) पर विराजमान है। एक देशीय है। साकार है।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 27 :-

असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदन्युवः ।
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः ॥२७॥

पदार्थः—(उदन्युवः) प्रेम की (ताः) वे (शतधाराः) सैंकड़ों धाराए (असश्चतः) जो नानारूपों में (अभिश्रियः) स्थिति को लाभ कर रही हैं। वे (हरिं) परमात्मा को (अवनवन्ते) प्राप्त होती हैं। (गोभिरावृतं) प्रकाशपुञ्ज परमात्मा को (क्षिपः) बुद्धिवृत्तियां (मृजन्ति) विषय करती हैं। जो परमात्मा (दिवस्तृतीये पृष्ठे) द्यूलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है और (रोचने) प्रकाशस्वरूप है उसको बुद्धिवृत्तियाँ प्रकाशित करती हैं ॥२७॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 27 की फोटो कापी है। जो दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। इसमें स्पष्ट लिखा है कि परमात्मा द्यूः लोक अर्थात् प्रकाशमान सत्यलोक के तीसरे पष्ठ पर विराजमान है। भावार्थ है कि परमेश्वर एक देशीय है साकार है वहाँ से चलकर पथ्वी लोक पर सत्यज्ञान प्रदान करने आते हैं।

❑ परमेश्वर राजा के समान दर्शनीय है साकार है। अपने निज स्थान से जहां परमेश्वर रहता है। वहाँ से तीव्र गामी होकर बिजली जैसी गति से आता है। अपने दढ़ भक्त को जो अच्छी आत्मा दढ़ भक्त होता है। उसे आकर मिलता है। जैसे आकाशीय विद्युत किसी धातु को आधार बनाकर ही गिरती है। उसी प्रकार परमेश्वर विद्युत से भी अधिक तीव्रता से आते हैं। अपनी अच्छी आत्मा को उद्देश्य बनाकर मिलते हैं। उसको तत्वज्ञान कराने के उद्देश्य से मिलते हैं।

देखें प्रमाण :- (महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटोकॉपी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1 :-

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम् ॥१॥

पदार्थः—(**सोमः**) जो सर्वोत्पादक प्रभु(**अरुषः**) प्रकाशस्वरूप (**वृषा**) सद्गुणों की वृष्टि करने वाला (**हरिः**) पापों के हरण करने वाला है, वह (**राजेव**) राजा के समान (**दस्मः**) दर्शनीय है। और वह (**गाः**) पृथिव्यादि लोक-लोकान्तरों के चारों ओर (**अभि अचिक्रदत्**) शब्दायमान हो रहा है। वह (**वारं**) वर्णीय पुरुष को जो (**अव्ययं**) दृढ़भक्त है उसको (**पुनानः**) पवित्र करता हुआ (**पर्येति**) प्राप्त होता है। (**न**) जिस प्रकार (**श्येनः**) विद्युत् (**घृतवन्तं**) स्नेहवाले (**आसदं**) स्थानों को (**योनिं**) आधार बनाकर प्राप्त होता है। इसी प्रकार उक्त गुण वाले परमात्मा ने (**असावि**) इस ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया ॥१॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1 की फोटो कापी है जो दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। छोटे आकार वाले ऋग्वेद से लिया है। इसमें स्पष्ट लिखा है कि परमेश्वर राजा के समान दर्शनीय है अर्थात् नराकार है। अपने दढ़ भक्त को अचानक आकर मिलता है। जैसे आकाशीय बिजली किसी धातु विशेष पर गिरती है।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 2 :-

कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि ।
अपसेधन्दुरिता सोम मृळय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम् ॥२॥

पदार्थ—हे परमात्मन् ! (**वेधस्या**) उपदेश करने की इच्छा से आप (**माहिनं**) महापुरुषों को (**पर्येषि**) प्राप्त होते हैं और आप (**अत्यः**) अत्यन्त गतिशील पदार्थ के (**न**) समान (**अभिवाजं**) हमारे आध्यात्मिक यज्ञ को(**अभ्यर्षसि**) प्राप्त होते हैं । आप (**कविः**) सर्वज्ञ हैं (**मृष्टः**) शुद्ध स्वरूप हैं (**दुरिता**) हमारे पापों को (**अपसेधन्**) दूर करके (**सोम**) हे सोम ! (**मृळय**) आप हमको सुख दें और (**घृतं वसानः**) प्रेमभाव को उत्पन्न करते हुए (**निर्णिजं**) पवित्रता को (**परियासि**) उत्पन्न करें ॥२॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 2 की फोटो कापी है जो दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित है। इस में स्पष्ट है कि परमात्मा का नाम (कविः) कविर्देव है। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 2 में यह भी स्पष्ट किया है कि वह परमात्मा उपदेश करने की इच्छा से (तत्वज्ञान को स्वयं प्रकट होकर बताने की इच्छा से) अत्यन्त गतिशील पदार्थ के समान अर्थात् बिजली जैसी गति से चलकर भक्तों को अनुष्ठानों में मिलता है। दयानन्द भक्तों ने ''कवि'' का अर्थ सर्वज्ञ किया है कोई भी ''कवि'' सर्वज्ञ नहीं होता इसलिए कवि का अर्थ सर्वज्ञ करना अनुचित है। कविः का अर्थ कवि या काव्यकार तो किया जा सकता है। परन्तु जहां पर परमात्मा की महिमा का वर्णन हैं वहाँ यह परमात्मा का नाम है वहाँ ''कविः'' का अर्थ कविर्देव करना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' के तीसरे समुल्लास में पष्ठ 64 पर लिखा है कि वेद ईश्वर कत होने से निभ्रान्त है अर्थात् वेदों का प्रमाण वेद आधीन है वेद की विशेष व्याख्या ''ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'' नामक पुस्तक में देख लिजिए। महर्षि दयानन्द का कहने का भावार्थ है कि वेदों को जानने के लिए व्याकरण में उलझने की आवश्यकता नहीं हैं। वेद ज्ञान प्रथम है व्याकरण निघटु आदि ऋषियों कत हैं वे त्रुटि युक्त हो सकते हैं। वेद ज्ञान स्वतः प्रमाण है। इसलिए ''कविर्'' का अर्थ कबिर या कबीर करना सुक्ष्मवेद अनुसार उचित है। यदि इन व्याकरण वालों की मानें तो यह जान लें कि उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर का नाम ''कवि'' है। जैसे किसी लड़की का नाम ''कविता'' है। यदि कविता शब्द का अर्थ कर दिया जाए तो उस लड़की को कैसे जान सकेंगे। जहां पर बेटी कविता का वर्णन है। वहां उसका अर्थ न करके कविता लिखना उचित है। ऐसा ही ''कवि'' के विषय में जाने। उसे

कविर्देव वेदों में लिखा है। उसी को कबिर्देव=कबिर परमेश्वर = कबीर साहेब लिखने तथा उच्चारण करने लगे। जैसे किसी का नाम धर्मवीर है। उसको अपनी भाषा में धरमबिर लिखने लगे, बोलने लगे फिर भी संकेत ''धर्मवीर'' की ओर है। इसी तरह बेदों में अंकित कविर्देव को कबिर परमेश्वर लिखने लगे (कबीर साहब लिखने व बोलने लगे) परन्तु यह ''कबिर'' नाम परमेश्वर का है। वही परमेश्वर काशी शहर में जुलाहा जाति में प्रकट व प्रसिद्ध हुआ। वेद उसी का गुण-गान कर रहे हैं।

अन्य उदाहरण :- यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 1 के मूल पाठ में ''यजुः'' शब्द लिखा है। जो यजुर्वेद का बोधक है। महर्षि दयानन्द ने (यजुः) का अर्थ यजुर्वेद किया है। जो सही है यदि ''यजुः'' का अर्थ अन्य कर दिया जाए तो अनर्थ हो जाएगा। यजुः का अर्थ यज्ञीय स्तुतियाँ तथा उपासना भी होता है। इसी प्रकार ''कविः'' शब्द का अर्थ इस मंत्र में कविर्देव करना उचित है। क्योंकि इसमें परमेश्वर की महिमा का वर्णन है।

❑ परमेश्वर मनुष्य सदृश है। साधक जन समाधि में उस नराकार परमेश्वर को देखते हैं। कृप्या देखें ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 43 मंत्र 27 में जो महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 43 मंत्र 27 :-

यं त्वा॒ जना॑स इन्ध॒ते मनु॒ष्वदङ्गि॑रस्तम ।
अग्ने॒ स बो॑धि मे॒ वचः॑ ॥२७॥

पदार्थः—(अङ्गिरस्तम) हे सबको अत्यधिक रस देने वाले ! (अग्ने) हे सबके आधार सर्वशक्तिमान् ! (मनुष्वत्) विज्ञाता मनुष्यों के तुल्य (यम् त्वाम्) जिस तुझे (जनासः) मनुष्य (इन्धते) समाधि में देखते हैं (सः) वह तू (मे वचः) मेरे स्तुतिरूप वचनों को (बोधि) कृपा करके सुन ॥२७॥

यह ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 43 मंत्र 27 की फोटो कापी है। जो महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। इसमें स्पष्ट है कि परमात्मा (मनुष्वत्) विज्ञाता अर्थात् तत्वदर्शी मनुष्यों के तुल्य है (त्वान) आप को (जनासः) साधक जन (इन्धते) समाधि में देखते हैं।

विचार करें :- यह अनुवाद परमात्मा को निराकार बताने वालों के कर कमलों से हैं। जिस में स्पष्ट है कि परमात्मा मनुष्य सदृश है। समाधि में देखा जाता है। अब परमेश्वर को निराकार कहने वालों को या तो चुल्लू भर पानी में डूब कर मर जाना चाहिए या सत्य को स्वीकार कर अक्षय मोक्षार्थ हेतु मुझ

दास से उपदेश लेकर अपना तथा अपने परिजनों का उद्धार कराना चाहिए। इस ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 43 मंत्र 27 का यथार्थ अनुवाद इस प्रकार है (मनुष्वत् अंगिरस्तम अग्ने) हे परमेश्वर! आप मनुष्य सदृश सर्वांग युक्त साकार सशरीर हैं (यम् त्वा) जिस आपको (जनास्) साधक जन (इन्धते) समाधि में देखते हैं। (स) वह आप (मे) मेरे को (वचः) अपने अमृत वचन अर्थात् तत्वज्ञान (बोधि) का बोध कराऐं।

❑ परमात्मा तीन प्रकार से शरीर धारण करके संसार का धारण पोषण करता है। देखें दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 67 मंत्र 26 तथा ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8 में जो अग्रलिखित हैं :-

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 67 मंत्र 26 :-

त्रिभिष्ट्वं देव सवितर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः ।
अग्ने दक्षैः पुनीहि नः ।२६।

पदार्थः—(सोम) परमात्मन् ! (अग्ने) हे ज्ञानस्वरूप ! (सवितः) हे सर्वोत्पादक ! (देव) हे दिव्य गुणसम्पन्न परमात्मन् ! (त्वं) आप (त्रिभिः) तीन (धामभिः) शरीरों से (वर्षिष्ठैः) जो श्रेष्ठ हैं तथा (दक्षैः) दक्षतायुक्त हैं उनसे (नः) हम लोगों को (पुनीहि) पवित्र करिये ।।२६।।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8 :-

तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो धमन्ति बाकुरं दृतिम् ।
त्रिधातुवारणं मधु ।।८।।

पदार्थः—(तं) उस पुरुष को (अग्रुवः) उग्रगतियें (हिन्वन्ति) प्रेरणा करती हैं और (बाकुरं) भासमान (दृतिं) शरीर को वह पुरुष प्राप्त होता है जिसमें (त्रिधातु) तीन प्रकार से (वारणं) दूसरों का वारण करने वाला (मधु) मधुमय शरीर मिलता है ।।८।।

यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8 की फोटो कापी है इस से पहले ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 67 मंत्र 26 की फोटो कापी है जो दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित है। इन मंत्रों में भी परमेश्वर सशरीर प्रमाणित है कि परमात्मा का तीन स्थिति में शरीर है। एक शरीर में परमेश्वर द्यू लोक अर्थात् शाश्वत स्थान जिसे सत्यलोक भी कहा है उस लोक में अत्यन्त तेजोमय शरीर युक्त हैं। उस शरीर के एक रोमकूप का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा करोड़ चन्द्रमाओं

के मिले जुले प्रकाश से भी अधिक है। परमेश्वर के शरीर की यह प्रथम स्थिति है। दूसरी स्थिति जो शरीर धारण करने की है उसमें परमेश्वर प्रत्येक युग में एक नवजात शिशु का रूप धारण करके किसी शहर से कुछ दूरी पर वन में जलाशय में जल के ऊपर कमल के फूल पर विराजमान होता है। जिस कारण से परमेश्वर को नारायण भी कहा जाता है। नार का अर्थ जल तथा आयण का अर्थ है अवतरित होना अर्थात् आना। इसलिए परमेश्वर को नारायण कहा जाता है। जिस का अर्थ है जल पर विश्राम करने वाला। तीसरी स्थिति में परमेश्वर सन्त या ऋषि का रूप धारण करके श्रेष्ठ पुरूषों को जो दृढ़ भक्त होते हैं। उनको मिलता है। उनको तत्वज्ञान से परिचित करवाता है। इस मन्त्र में दयानन्द के भक्त अपने कर कमलों से लिख रहे हैं कि परमात्मा सुन्दर शरीर धारण करता है। वेद ज्ञान सही है परन्तु, महर्षि दयानन्द का ''सत्यार्थ प्रकाश'' झूठा है। जिस में कहा है कि परमात्मा निराकार है। आप जी स्वयं देखें इन वेद मन्त्रों में स्पष्ट है कि परमेश्वर तीन स्थिति में शरीर धारण करता है। पुरूष का आध्यात्मिक अर्थ परमेश्वर है। महर्षि दयानन्द के द्वारा अनुवादित यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 17 में दयानन्द ने ''पुरूष'' का अर्थ पूर्ण परमात्मा किया है तथा ''ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'' पृष्ठ 125 पर ''पुरूष'' का अर्थ किया है कि ''पुरूष'' उस को कहते हैं जो सर्वशक्तिमान ईश्वर कहलाता है। इसलिए पाठकों से निवेदन है कि ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8-9 में अनुवाद कर्ताओं ने जो चतुरता की है उसे समझे तथा पुरूष का अर्थ परमेश्वर जाने।

❑ परमात्मा किस प्रकार तीन शरीर धारण करता है ? कृप्या पढ़ें निम्न व्याख्या :-

1. अत्यधिक प्रकाशयुक्त मानव सदृश शरीर में परमेश्वर सत्यलोक में विराजमान हैं। जिसके एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी अधिक है।

2. शिशु रूप में पृथ्वी पर प्रकट होता है। लीलामय शरीर से बड़ा होता है फिर तत्वज्ञान प्रचार करता है।

3. ऋषि या सन्त रूप में कहीं भी प्रकट होकर दृढ़ भक्तों को मिलता है तथा तत्वज्ञान प्रचार करता है।

❑ जब परमात्मा दूसरी प्रकार का शरीर धारण करके अर्थात् शिशु रूप धारण करके पथ्वी पर प्रकट होता है उस समय उनके पालन की लीला कंवारी गौवों द्वारा होती है। कप्या पढ़ें ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9 में जो निम्न हैं :-

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9

अभी॒ ईं॒ममघ्न्या॑ उ॒त श्री॒णन्ति॑ धे॒नवः॒ शिशु॑म् ।
सोम॒मिन्द्रा॑य॒ पात॑वे ॥९॥

पदार्थः—(इमं) उस (सोमं) सौम्यस्वभाव वाले श्रद्धालु पुरुष को (शिशुं) कुमारावस्था में ही (अभि) सब प्रकार से (अघ्न्याः) अहिंसनीय (धेनवः) गौवें (श्रीणन्ति) तृप्त करती हैं (इन्द्राय) ऐश्वर्य्य की (पातवे) वृद्धि के लिये । (उत) अथवा उक्त श्रद्धालु पुरुष को अहिंसनीय वाणियें ऐश्वर्य्य की प्राप्ति के लिये संस्कृत करती हैं ॥९॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9 की फोटो कापी है जो महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। इसमें परमेश्वर के दूसरे प्रकार के शरीर की स्थिति का वर्णन है। जिस शरीर में परमात्मा शिशु रूप धारण करके वन (जंगल) में जल पर प्रकट होता है। उस समय उस बालक वेशधारी परमात्मा के पोषण की लीला कंवारी गौवों द्वारा होती है। यही प्रमाण पवित्र ''कबीर सागर'' नामक सद्ग्रंथ में है। जो आदरणीय धर्मदास जी द्वारा लगभग सन् 1420 के आसपास लिखा गया था। उसमें लिखा है कि परमेश्वर कबीर जी शिशु रूप धारण करके 'लहरतारा' नामक सरोवर में कमल के फूल पर अपने द्यूलोक (सतलोक) से चलकर आकर विराजमान हुए। वहां उन्हें एक निःसन्तान जुलाहा दम्पति घर ले आया। बाल वेशधारी परमेश्वर ने कई दिनों तक कुछ नहीं खाया-पीया। फिर ऋषि रामानन्द जी के बताए अनुसार तथा एक सन्त रूप में प्रकट शिव जी के अनुसार कँवारी गाय लाई गई। परमेश्वर कबीर जी के आशीर्वाद से उस कँवारी गाय (बछिया) ने दूध दिया। वह बालक कविर्देव ने पीया। वह बछिया प्रतिदिन दूध देने लगी। इस प्रकार बालक रूप में लीला कर रहे परमेश्वर की परवरिश की लीला हुई।

इन उपरोक्त वेद मंत्रों में स्पष्ट है कि परमेश्वर एक देशीय है, अर्थात् एक स्थान पर तीसरे मुक्ति धाम में, अर्थात् द्युलोक के तीसरे पष्ठ पर विराजमान है। वहाँ से गति करके आता है। जैसे व्यक्ति शुभ्र शरीर धारण करके आता है। परमेश्वर राजा के समान दर्शनीय भासमान शरीर धारण करता है। शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है। उस समय परमात्मा की

परवरिश की लीला कंवारी गायों द्वारा होती है। उपदेश करने की इच्छा से अर्थात् तत्व ज्ञान देने के लिए स्वयं आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता हैं। वह नराकार अर्थात् मनुष्य सदृश है।

इन उपरोक्त वेद मन्त्रों की फोटोकॉपियों में आप को स्पष्ट हुआ कि वेदों में परमेश्वर साकार है। वह राजा के समान दर्शनीय अर्थात् नराकार अर्थात् मनुष्य सदृश है, देखा जाने वाला है। अपने द्युलोक के तीसरे स्थान पर एक जगह विराजमान है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में समुल्लास 9 में लिखा है कि परमात्मा किसी एक स्थान पर विराजमान नहीं है। वह विभु है। जबकि वेद बताते हैं कि परमात्मा एक स्थान पर विराजमान है। एक देशीय है। इस से सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द का 'सत्यार्थ प्रकाश' वेद ज्ञान विरूद्ध कोरा अज्ञान है। करौंथा काण्ड का यही कारण था कि आर्य समाज के आचार्यों ने महर्षि दयानन्द के अनुयाइयों को भ्रमित किया कि रामपाल दास जी महाराज जनता में भ्रम फैला रहा है। महर्षि दयानन्द की छवि धूमिल कर रहा है। वह परमात्मा को साकार बता रहा जबकि वेदों में परमात्मा निराकार लिखा है। अब इन आचार्यों को चूल्लू भर पानी में डूब कर मर जाना चाहिए या संत रामपाल दास जी महाराज के पास आकर अपना कल्याण करवाना चाहिए। जबकि वेदों में परमात्मा साकार है और इन्हीं के कर कमलों से वेदों का अनुवाद है। इसका परिणाम यह है कि महर्षि दयानन्द की हार हुई व इस दास (संत रामपाल जी महाराज) की जीत हुई।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मन्त्र 1

अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः ।
अपो वृणानः पवते कवीयन्व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ॥१॥

पदार्थः—(सूर्य्ये) सूर्य के विषय में (न) जैसे (विशः) रश्मियां प्रकाशित करती हैं । उसी प्रकार (धियः) मनुष्यों की बुद्धियां (स्पर्धन्ते) अपनी-अपनी उत्कट शक्ति से विषय करती हैं । (अस्मिन् अधि) जिस परमात्मा में (वाजिनीव) सर्वोपरि बलों के समान (शुभः) शुभ बल है वह परमात्मा (अपोवृणानः) कर्मों का अध्यक्ष होता हुआ (पवते) सबको पवित्र करता हैं । (कवीयन्) कवियों की तरह आचरण करता हुआ (पशुवर्धनाय) सर्वश्रेष्ठ ऋत्व पद के लिए (व्रजं, न) इन्द्रियों के अधिकरण मन के समान 'व्रजन्ति इन्द्रियाणि यस्मिन् तद्व्रजम्' (मन्म) जो अधिकरणरूप है वही श्रेय का धाम है ॥१॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मन्त्र 1 की फोटो कापी है। जो दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित हैं। इस मन्त्र के अनुवाद में ढेर सारी त्रुटियाँ हैं। फिर भी इन्हीं के जल में तुम्बा छुपाने के प्रयत्न के पश्चात् भी स्पष्ट है कि परमेश्वर (कवियन् न व्रजम्) कवियों के समान आचरण करता

हुआ विचरता है। एक स्थान से दूसरे स्थान को तत्वज्ञान प्रचार हेतु जाता हैं। इस से परमेश्वर साकार, नराकार सिद्ध हुआ। अब कहाँ गया महर्षि दयानन्द का अज्ञान जो कहता था कि वेदों में परमेश्वर निराकार है। एक देशीय नहीं है। वेदों के प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द को वेदों का ज्ञान नहीं था इसलिए वह महर्षि भी नहीं था।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 18

ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम् ।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप् ॥१८॥

पदार्थः—(सोमः) सोमस्वरूप परमात्मा (सिसासन्) पालन की इच्छा करता हुआ (महिषः) जो महान् है वह परमात्मा (तृतीयं, धाम) देवयान और पितृयान इन दोनों से पृथक तीसरा जो मुक्तिधाम है। उसमें (विराजम्) विराजमान जो ज्ञानयोगी है उसको (अनुराजति) प्रकाश करने वाला है और (स्तुप) स्तूयमान है। (कवीनाम्, पदवीः) जो क्रान्तदर्शियों की पदवी अर्थात् मुख्य स्थान है और (सहस्रनीथः) अनन्त प्रकार से स्तवनीय है, (ऋषिमनाः) सर्वज्ञान के साधनरूप मनवाला वह परमात्मा (यः) जो (ऋषिकृत्) सब ज्ञानों का प्रदाता (स्वर्षाः) सूर्यादिकों को प्रकाशक है। वह जिज्ञासु के लिए उपासनीय है ॥१८॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18 की फोटो कापी है। इसका दयानन्द के भक्तों के द्वारा अनुवाद किया गया है। इस में स्पष्ट है कि परमेश्वर तीसरे मुक्ति धाम में विराजमान है। इसमें अनुवाद कर्त्ता ने महर्षि दयानन्द के अज्ञान को आधार मान कर अर्थ को घुमा दिया है लिख दिया ''जो ज्ञान योगी'' विराजमान है। पाठक जन ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 27 में दयानन्द के भक्तों द्वारा किए अनुवाद में पढ़ चुके हैं कि द्यूलोक के तीसरे भाग में परमात्मा विराजमान है। ज्ञान योगी नहीं यहां पर अनुवाद कर्ताओं को दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश आड़े आ गया। इसलिए अनर्थ करने की कुचेष्टा की है। जब कि मूल पाठ में ज्ञान योगी का सम्बन्ध नहीं है। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 27 स्वयं अनुवाद में लिखा है कि परमेश्वर द्यूलोक के तीसरे पष्ठ (भाग) पर विराजमान है। यहां भी वेद मंत्र 18 में यही प्रमाण है।

इस ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18 का यथार्थ अनुवाद कप्या पढ़े संत रामपाल दास जी महाराज द्वारा किया गया।

ऋषिमना य ऋषिकत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम्।
ततीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप्।।18।।

ऋषिमना य ऋषिकत् स्वर्षाः सहस्राणीथः पदवीः कवीनाम्। ततीयम् धाम महिषः सिषा सन्त् सोमः विराजमानु राजति स्टुप्।।

अनुवाद – वेद बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि (य) जो पूर्ण परमात्मा विलक्षण बच्चे के रूप में आकर (कवीनाम्) प्रसिद्ध कवियों की (पदवीः) उपाधि प्राप्त करके अर्थात् एक संत या ऋषि की भूमिका करता है उस (ऋषिकत्) संत रूप में प्रकट हुए प्रभु द्वारा रची (सहस्राणीथः) हजारों वाणी (ऋषिमना) संत स्वभाव वाले व्यक्तियों अर्थात् भक्तों के लिए (स्वर्षाः) स्वर्ग तुल्य आनन्द दायक होती हैं। (सोम) वह अमर पुरुष अर्थात् सत्य पुरुष (ततीया) तीसरे (धाम) मुक्ति लोक अर्थात् सत्यलोक की (महिषः) सुदृढ़ पथ्वी को (सिषा) स्थापित करके (अनु) पश्चात् (सन्त्) मानव सदश संत रूप में होता हुआ (स्टुप) गुबंद अर्थात् गुम्बज में उच्चे टिले रूपी सिंहासन पर (विराजमनु राजति) उज्जवल स्थूल आकार में अर्थात् मानव सदश तेजोमय शरीर में विराजमान है।

भावार्थ - ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 17 में कहा है कि कविर्देव शिशु रूप धारण कर लेता है। लीला करता हुआ बड़ा होता है। कविताओं द्वारा तत्वज्ञान वर्णन करने के कारण कवि की पदवी प्राप्त करता है अर्थात् उसे ऋषि, संत व कवि कहने लग जाते हैं, वास्तव में वह पूर्ण परमात्मा कविर् ही है। इसकी पुष्टि ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मंत्र 1 ने भी की है कि परमात्मा कवियों की तरह आचरण करता है। उसके द्वारा रची अमृतवाणी कबीर वाणी (कविर्वाणी) कही जाती है, जो भक्तों के लिए स्वर्ग तुल्य सुखदाई होती है। वही परमात्मा तीसरे मुक्ति धाम अर्थात् सत्यलोक की स्थापना करके एक गुबंद अर्थात् गुम्बज में सिंहासन पर तेजोमय मानव सदृश शरीर में आकार में विराजमान है।

इस मंत्र में ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18 तीसरा धाम सतलोक को कहा है। जैसे एक ब्रह्म का लोक जो इक्कीस ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, दूसरा परब्रह्म का लोक जो सात संख ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, तीसरा परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म का सतलोक है क्योंकि पूर्ण परमात्मा ने सत्यलोक में सत्यपुरूष रूप में विराजमान होकर नीचे के लोकों की रचना की है। इसलिए नीचे के लोकों की गणना की गई है।

यही आँखों देखा प्रमाण सन्त गरीब दास जी ने बताया है अर्स कुर्स पर सफेद गुम्बज है जहाँ सतगुरु का डेरा। **भावार्थ यह है कि ऊपर आसमान के ऊपरी छोर पर कबीर परमेश्वर जी एक सफेद गुबंद (गुम्बज) में रहते हैं।**

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मन्त्र 27 में अनुवाद परमेश्वर ने ठीक करा दिया। वहाँ स्पष्ट लिखा है ''परमात्मा द्यूलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है।'' एक देशीय है साकार है देखें फोटो कापी ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 27 की, इसी पुस्तक के पृष्ठ 220 पर। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मन्त्र 1 में स्पष्ट है कि परमात्मा राजा के समान दर्शनीय है। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1

मंत्र 8 में तथा ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 67 मंत्र 26 में स्पष्ट है कि पुरूष अर्थात् परमात्मा भासमान शरीर को प्राप्त होता है। इन ऋग्वेद मण्डलों के मन्त्रों के अनुवाद कर्त्ता भी दयानन्द के भक्त ही हैं। परमेश्वर ने सच्चाई सामने ला दी।

वह अमर परमात्मा जो अपनी महिमा की अमृत वाणी को कवियों के समान बोलता है। उस कारण से वह प्रसिद्ध कवियों में से एक प्रसिद्ध कवि भी कहलाता है। परन्तु वह केवल कवि ही नहीं, वह कवि परमात्मा (जिसे वेदों में कविर्देव कहा है) होता है। यही उसका वास्तविक गुप्त श्रेष्ठ नाम है। कविर्देव जिसको सन्त भाषा में कबीर परमेश्वर कहते हैं। उस (ऋषिकृत्) कविर्देव द्वारा ऋषि या संत रूप में प्रकट होकर अपने मुख कमल से उच्चारण करके बनाई गई अमृत वाणी उस परमेश्वर के अनुयाइयों के लिए (स्वर्षाः) आनन्द दायक होती हैं। वह कविर्देव अर्थात् कविर परमेश्वर तीसरे मुक्ति धाम में विराजमान है। वह एक (स्तुप्) गुमंद में तेजोमय रूप में प्रकाशमान है। उस महान् स्थान अर्थात् तेजोमय तीसरे धाम की बहुत बड़ी पृथ्वी को बनाकर उस पर विराजमान है।

''पवित्र बाईबल में प्रभु मानव सदृश साकार का प्रमाण''

इसी का प्रमाण पवित्र बाईबल में तथा पवित्र कुर्आन शरीफ में भी है।

कुर्आन शरीफ में पवित्र बाईबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाण किया है कि कौन तथा कैसा है सृष्टि रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है?

पवित्र बाईबल(उत्पत्ति ग्रन्थ पृष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)

छटवां दिन :- प्राणी और मनुष्य :

अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाऐं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं, माँस खाना नहीं कहा है।

सातवां दिन :- विश्राम का दिन :

परमेश्वर ने छः दिन में सर्व सृष्टि की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र बाईबल ने सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मानव सदृश शरीर में है, जिसने छः दिन में सर्व सृष्टि की रचना की तथा फिर विश्राम किया।

उत्पति विषय में लिखा है कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया। इससे सिद्ध है कि प्रभु भी मनुष्य जैसे शरीर युक्त है तथा छः दिन में सष्टि रचना करके सातवें दिन तख्त पर जा विराजा।

"पवित्र कुरआन शरीफ में प्रमाण"

इसी प्रकार पवित्र कुर्आन शरीफ के अध्याय सूरत फुर्कानी सं. 25, आयत 52, 58-59 में कहा है कि वास्तव में (इबादइ कबीरा) पूजा के योग्य कबीर अल्लाह है। यह कबीर वही पूर्ण परमात्मा है जिसने छः दिन में सष्टि रची तथा सातवें दिन तख्त पर जा विराजा, उसकी खबर किसी बाखबर से पूछ देखों।

पवित्र कुर्आन शरीफ को बोलने वाला अल्लाह स्वयं किसी और कबीर नामक प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है तथा कह रहा है कि पूर्ण परमात्मा कबीर के विषय में मैं भी नहीं जानता, उसके विषय में किसी तत्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो।

कविर्देव ने यही कहा था कि मैं स्वयं पूर्ण परमात्मा (अल्लाह कबीर/अकबिरु) हूँ। अपने स्वस्थ ज्ञान का संदेशवाहक रूप में मैं स्वयं ही आया हूँ, मुझे पहचानों। परन्तु ऐसे ही आचार्यों ने पहले भी परमेश्वर के वास्तविक ज्ञान को जनता तक नहीं जाने दिया। कहा करते थे कि कबीर तो अशिक्षित है, यह संस्कृत तो जानता ही नहीं, हम शिक्षित हैं। इस बात पर पहले तो भक्तजन गुमराह हो गए थे, परन्तु अब सर्व समाज शिक्षित है, इन मार्ग भ्रष्ट आचार्यों की दाल नहीं गल रही, न ही गलेगी। सल्लि अला :- ज-स-दि मुहम्मदिन फिल् अज्सादि अल्लाहुम म सल्लि अला कबिर् (कबीर) मुहम्मिद फ़िल् कुबूरि फजाईले जिक्र --

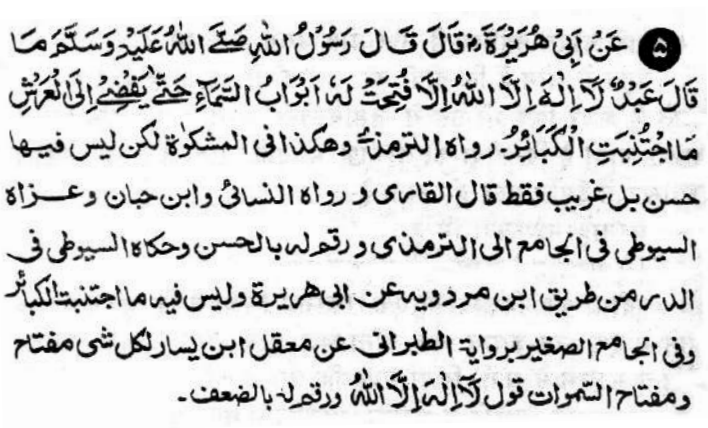
٥ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رضی قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَا
قَالَ عَبْدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِلَّا فُتِحَتْ لَهٗ اَبْوَابُ السَّمَآءِ حَتّٰی یُفْضِیَ اِلَی الْعَرْشِ
مَا اجْتُنِبَتِ الْکَبَائِرُ۔ رواہ الترمذی وھکذا فی المشکوٰۃ لکن لیس فیھا
حسن بل غریب فقط قال القاری و رواہ النسائی وابن حبان وعزاہ
السیوطی فی الجامع الی الترمذی و رقم لہ بالحسن وحکاہ السیوطی فی
الدر من طریق ابن مردویہ عن ابی ھریرۃ ولیس فیہ ما اجتنبت الکبائر
وفی الجامع الصغیر بروایۃ الطبرانی عن معقل ابن یسار لکل شی مفتاح
ومفتاح السموات قول لآ الٰہ الا اللّٰہ ورقم لہ بالضعف۔

5. हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि कोई बन्दा ऐसा नहीं कि 'लाइला-ह-इल्लल्लाहह' कहे और उसके लिए आसमानों के दरवाजें न खुल जायें, यहाँ तक कि यह कलिमा सीधा अर्श तक पहुँचता है, बशर्ते कि कबीरा गुनाहों से बचाता रहे।

फ़—कितनी बड़ी फ़जीलत है और कुबूलियत की इन्तिहा है कि यह कलिमा बराहे रास्त अर्शे मुअल्ला तक पहुँचता है और यह अभी मालूम हो चुका है कि अगर कबीरा गुनाहों के साथ भी कहा जाये, तो नफ़ा से उस वक्त भी खाली नहीं।

मुल्ला अली कारी रहमत फरमाते हैं कि कबाइर से बचने की शर्त कुबूल की जल्दी और आसमान के सब दरवाजे खुलने के एताबर से है, वरना सवाब और कूबूल से कबाइर (कबीर) के साथ भी खाली नहीं।

बाज उलेमा ने इस हदीस का यह मतलब बयान फरमाया है कि ऐसे शख्स के वास्ते मरने के बाद उस की रूह के एजाज में आसमान के सब दरवाजे खुल जायेंगे।

एक हदीस में आया है, दो कलिमे ऐसे हैं कि उनमें से एक के लिए अर्श के नीचे कोई मुन्तहा नहीं।' दूसरा आसमान और जमीन को (अपने नूर या अपने अज्र से) भर दे—

एक 'लाइला-ह इल्लल्लाह' है, दूसरा 'अल्लाहु अकबर' (कबीर) है।

''परमेश्वर कबीर जी की कृपा से सुखी हुए इन्सान''

''परमात्मा ने की जीवन रक्षा''

।। बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की जय ।।

मुझ दास का नाम रोहित दास पुत्र श्री रामबाबू दास ग्राम उदयपुरा जिला-रायसेन (मध्यप्रदेश) है। सतगुरु देव जी से नाम-उपदेश लेने से पहले मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। मेरी पत्नी बीमार रहती थी। इतनी परेशानियाँ होने के बावजूद भी हम देवी-देवताओं की भक्ति करते रहते थे। हम जयगुरुदेव पंथ से जुड़े हुए थे। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मेरी माता जी ने जयगुरुदेव पंथ में परमात्मा को पाने के लिए बहुत ही कठिन साधना की। 72 दिन तक भोजन नहीं किया। उनके हाथ-पैर पूर्ण रूप से काम करना बंद कर गए। उनकी हालत इतनी खराब हो गई थी कि वह अपने हाथों से खाना भी नहीं खा पाती थी।

एक बार हम जयगुरूदेव मथुरा गए हुए थे। वहाँ पर संत रामपाल जी के भक्तों ने पुस्तकें वितरित की। कार्यक्रम के दौरान वहाँ पर उस पुस्तक के बारे में बताया कि कोई भी सदस्य इस पुस्तक को खोलकर न पढ़े। इसको पढ़ने से आपकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाएगी। ऐसा उन लोगों ने बोला और जो संत रामपाल जी के शिष्य जो वहाँ पुस्तक वितरित कर रहे थे, बाबा जयगुरूदेव के भक्तों ने उनको पकड़कर पीटा। सारी पुस्तकों को इकठ्ठा करके जला दिया। उसी समय दास के मन में आया कि आखिर इस पुस्तक में ऐसा क्या है? लेकिन मुझे वो पुस्तक प्राप्त नहीं हो पाई थी। कुछ समय बाद गाँव के एक भक्त ने ज्ञान गंगा पुस्तक लाकर दी। टी.वी. पर सत्संग भी दिखाया। ज्ञान समझकर दास उनके साथ सतलोक आश्रम बरवाला में आया और नाम-दीक्षा ली। दीक्षा लेने के बाद लाभ ही लाभ बढ़ते गए।

एक बार मेरी पत्नी (भक्तमति राधा) के सीने में तेज दर्द हुआ। मैंने कहा उपदेश लेने का, लेकिन उनको परमात्मा पर विश्वास नहीं था, परंतु दर्द बढ़ने पर उन्होंने सतलोक आश्रम बरवाला जाने का विचार किया। ठंड के दिन थे। ट्रेन में बहुत तेज ठण्ड लग रही थी। मेरी पत्नी ने मन ही मन कहा कि यदि परमात्मा हैं तो मुझे ठंड से बचाये। कुछ देर के बाद एक सफेद कंबल मेरी पत्नी के ऊपर आकर गिरा। मैंने पूछा कि यह कंबल किसका है? जितने भी लोग केबिन में बैठे थे, सभी ने मना कर दिया। मैंने कहा कि यह कंबल परमात्मा ने दिया है।

तब मेरी पत्नी को बरवाला आश्रम पहुँचने से पहले ही परमात्मा पर पूर्ण

विश्वास हो गया और सतलोक आश्रम बरवाला पहुँचते ही उन्होंने नाम-उपदेश ले लिया। नाम-उपदेश के पश्चात् ही उनके सीने का दर्द भी ठीक हो गया।

सबसे बड़ा लाभ परमात्मा ने मेरे छोटे बेटे अरूण दास को नया जीवन दान देकर किया। उसे एक रात 10-11 बजे के आसपास अचानक सीने में दर्द और सांस लेने में दिक्कत होने लगी। वह पूरा पसीने से भीग गया और बैड से नीचे गिर गया। बेटे की हालत देखकर तो मैंने उसे मृत ही मान लिया था। मेरी बेटी ने कहा कि सतगुरु देव जी से अरदास लगा लो। मैंने कहा कि रात 11:00 बजे अरदास नहीं लगती और मेरे पास आश्रम में अरदास लगाने का नम्बर भी नहीं है। मेरी बेटी ने मोबाइल से संभाग कॉर्डिनेटर से अरदास का मोबाइल नंबर लेकर सतगुरु देव जी से अरदास लगाई। अरदास लगाने के बाद बेटा सांस लेने लगा। हम उसे तुरंत हॉस्पिटल लेकर गये। उन्होंने कहा कि आपके पास 1 घंटा है। यह कहकर दूसरे हॉस्पिटल में रैफर कर दिया। लेकिन वहाँ पर भी एक बोतल लगाकर तीसरे हॉस्पिटल में रैफर कर दिया। वहाँ पर 15 दिन तक मेरे बेटे को ऑक्सीजन लगी रही। उसके बाद सारी रिपोर्ट नॉर्मल आ रही थी। डॉक्टर भी हैरान थे। उनको समझ नहीं आ रहा था कि बीमारी क्या है? रिपोर्ट सारी नॉर्मल आ रही हैं। यह बहुत बड़ा चमत्कार मालिक ने किया, लड़का पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया।

सतगुरु जो चाहे सो करहीं, चौदह कोटि दूत जम डरहीं।
ऊत भूत जम त्रास निवारैं, चित्र–गुप्त के कागज फारैं।।

एक बार मेरा बड़ा बेटा अरूण दास कॉलेज से घर आ रहा था। उसकी बस का एक्सीडेन्ट हो गया जिसमें तीन बच्चों की मृत्यु हो गयी। लेकिन मेरे बेटे को मामूली खरोंचें ही आई और मेरे बेटे को परमात्मा ने नया जीवन दान दिया।

सतगुरु रामपाल जी महाराज जी से नाम-उपदेश लेने के बाद अब मेरी माता जी के भी हाथ काम करने लगे हैं। अब वे अपने हाथों से खाना खा पाती हैं। आज परमात्मा से नाम-उपदेश लेने के पश्चात् हमारी आर्थिक स्थिति बिल्कुल ठीक है तथा हम सपरिवार पूर्ण रूप से ठीक हैं तथा परमात्मा की भक्ति कर रहे हैं। आप सभी से हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि पूर्ण परमात्मा धरती पर सतगुरु रामपाल जी महाराज के रूप में आए हुए हैं। उन्हें पहचानें तथा नाम-उपदेश लेकर अपना कल्याण कराएँ तथा जन्म-मरण से छुटकारा पाएँ।

।। सत साहिब ।।

भक्त रोहित दास
ग्राम-उदयपुरा, जिला रायसेन (मध्यप्रदेश)
सम्पर्क सूत्र :- 9109477619

''गुर्दे ठीक करना व शैतान को इंसान बनाना''

मैं भक्त जगदीश पुत्र श्री प्रभुराम, गाँव-पंजाब खोड़, दिल्ली-81। डी. टी. सी.(दिल्ली ट्रांस्पोर्ट कॉर्पोरेशन) में मकैनिक हूँ। मुझे शराब ने राक्षस वृत्ति का इन्सान बना दिया था। शराब पीना, मुर्गे खाना, सिगरेट पीना, हुक्का पीना।

मैं नौकरी से शाम को लगभग 7 या 8 बजे आता था। कई बार घर आने में शराब ज्यादा पीने पर 9 या 10 भी बज जाते थे। शराब में पागल हुए एक बार इधर एक बार उधर लड़खड़ाते हुए पैरों से घर में घुसता था। आते ही पत्नी व बच्चों को पीटना शुरु कर देना, हर रोज घर में कहर होता था। जिन बच्चों को प्यार के साथ अपनी छाती से लगाना चाहिए था वे मासूम बच्चे मुझको देखकर चारपाई के नीचे घुस जाते थे। बच्चे अपने पिता जी के घर आने की राह देखते हैं कि पापा जी आएगें, हमारे लिए खाने की चीजें लाएगें। परन्तु मैं खाने की चीजों की बजाय शराब में पागल हुए लाल आँखों से उनको मारने लग जाता था।

दूसरी तरफ मेरी धर्मपत्नी सुमित्रा देवी भी अपने दुःखी जीवन के साथ खतरनाक बीमारी से जूझती हुई स्वांस पूरे कर रही थी। उसके दोनों गुर्दे खराब हो चुके थे। डॉक्टरों ने कह दिया था कि दवाई खाते रहो। लेकिन छः महीने से ज्यादा यह जीवित नहीं रह सकती। ऑल इंडिया मैडीकल और डॉ. राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल दिल्ली से भी यह रिपोर्ट मिली कि गुर्दे खराब हो चुके हैं और यह छः महीने से ज्यादा जीवित नहीं रह सकती और साथ में दवाई भी अंत समय तक खाते रहना होगा। उन मासूम बच्चों का क्या हाल होगा जिनका पिता शराब पीता हो, माँ मृत्युशैय्या पर हो। कोई वजन का कार्य नहीं कर सकती। तो उन बच्चों को जब यह पता चला कि तुम्हारी मम्मी (माता जी) भी छः महीने से ज्यादा जीवित नहीं रहेगी तो उन बच्चों की आँखों से आंसु बहते रहते थे। एक तो पिता जी शराबी और दूसरी तरफ हमारी माता जी जानलेवा बीमारी से पीड़ित, हमारा क्या होगा? तीन लड़के तथा एक लड़की अपनी माता जी के पास गिरकर रोने लगे तथा कहा कि हे भगवान हम सब को भी हमारी माता जी के साथ ही अपने पास बुला लेना। यहाँ किसके सहारे जीयेंगे ?

परमात्मा ने उन बच्चों की भी पुकार सुनी और हमारे भी शुभ कर्म उदय हुए कि हमारे पड़ोस में ही भक्तमति निहाली देवी ने अपने गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज की आज्ञानुसार 30-31-1 जनवरी 1997 को सतगुरु गरीबदास जी महाराज की अमृतमयी वाणी तीन दिन का अखण्ड पाठ अपने घर करवाया। जिसमें संत रामपाल जी महाराज ने 31 दिसम्बर 1996 को

रात्री में 9 से 11 बजे तक सत्संग किया। मेरी धर्मपत्नी सुमित्रा देवी भी पड़ोस में सत्संग सुनने के लिए चली गई। थोड़ी देर बाद मैं (जगदीश) भी अपनी नौकरी से घर आ गया। घर आने पर बच्चों से पता चला कि हमारी माता जी पड़ोस में माई निहाली देवी के घर सत्संग सुनने के लिए गई है। यह सुनकर मैं बहुत क्रोधित हुआ और मैंने कहा कि कहाँ पाखण्डियों के पास चली गई? मैं अभी उसको पीटते हुए घर लाता हूँ। यह विचार कर मैं भक्तमति निहाली देवी के घर चला गया। मैंने शराब पी रखी थी। जब मैं निहाली माई के घर पहुँचा तो संत रामपाल जी महाराज सत्संग कर रहे थे। बहुत संख्या में भक्तजन सत्संग सुन रहे थे। उन सभी को देखकर मैं कुछ नहीं बोला और चुपचाप सबसे पीछे बैठ गया। मैंने सत्संग सुना। सत्संग में महाराज जी ने बताया कि :-

शराब पीवैं कड़वा पानी, सत्तर जन्म श्वान के जानी।
गरीब, सो नारी जारी करैं, सुरापान सो बार।
एक चिलम हुक्का भरैं, डूबैं काली धार।।
कबीर, मानुष जन्म पाय कर, नहीं भजैं हरि नाम।
जैसे कुआ जल बिना, खुदवाया किस काम।।

महाराज जी ने सत्संग में बताया कि जिन बच्चों को पिता जी ने सीने से लगाना चाहिए, उस शराबी व्यक्ति को देख कर बच्चे चारपाई के नीचे छुप जाते हैं। शराबी व्यक्ति आप भी दुःखी, धनहानि, समाज में इज्जत समाप्त तथा परिवार तथा पड़ौस व रिश्तेदारों तक को परेशान करके बद दुआऐं प्राप्त करता है। जैसे शराबी की पत्नी व बच्चे तो कहर का शिकार होते ही हैं। परन्तु पत्नी के माता-पिता, भाई-बहन आदि भी दिन-रात चिन्तित रहते हैं। सर्व पाप का भार उस नादान शराबी के शीश पर आता है। मनुष्य जन्म प्रभु ने भक्ति करके आत्म कल्याण करने को दिया है, इसको शराब आदि में नष्ट नहीं करना चाहिए। जैसे बच्चा स्कूल में शिक्षा ग्रहण नहीं करता, आवारा गर्दी में घूमता रहता है। वह शिक्षा से वंचित रह जाता है। फिर सारी आयु मजदूरी करके जीवन निर्वाह करता है। फिर उसे याद आता है कि यदि में आवारागर्दी न करता तो आज अन्य सहपाठियों की तरह बड़ा अधिकारी होता। परन्तु अब क्या बने, यह तो उस समय सोचना था।

कबीर साहेब कहते हैं कि :-

अच्छे दिन पीछे गये, गुरु से किया न हेत।
अब पछतावा क्या करे, जब चिड़ियां चुग गई खेत।।

इसी प्रकार यदि मनुष्य जन्म में जो प्राणी प्रभु भक्ति नहीं करता वह पशु-पक्षियों की योनियों को प्राप्त होता है। जो व्यक्ति शराब पीता है, वह

शराब के नशे में खाने की भरी थाली को लात मारता है। भक्ति न करने से भिन्न-भिन्न प्राणियों की योनियों में कष्ट उठाता है। कभी वह कुत्ते की योनी धारण करता है। कुत्ता सारी रात सर्दी में भी गली में रहता है। ऊपर से वर्षा तथा सर्दियों की रात्री में महाकष्ठ उठाता है। सुबह भूख सताती है। किसी घर की रसोई में घुसने की चेष्टा करता है। घर वाले डण्डा या पत्थर मारते हैं। कुत्ता बहुत देर तक चिल्लाता रहता है। फिर अन्य घर में घुसता है, वहाँ न जाने रोटी मिलेगी या सोटी (डण्डा)। यदि वहाँ भी डण्डा नसीब में हुआ तो वह शराबी जो अब कुत्ता बना है, गाँव के बाहर जाता है। भूख से व्याकुल हुआ मनुष्यों का मल खाता है। यदि वह नादान प्राणी जब मनुष्य शरीर में था, सत्संग में आता, अच्छे विचार सुनता, बुराई त्यागकर अपना कल्याण करवाता तथा बच्चों को अच्छी शिक्षा तथा प्रभु की दीक्षा प्रदान करवाता, सदा सुखी हो जाता। शराब का नशा कुछ समय रहता है। परमात्मा के नाम भजन से हुए सुख का आनन्द सदा साथ रहता है।

उपरोक्त सत्संग आदरणीय संत रामपाल जी महाराज का सुन कर मेरी शराब छू मंत्र हो गई। आँखों से आंसु बह चले। घर चला गया, नींद नहीं आई। 1 जनवरी 1997 को दोपहर 1.30 बजे अपनी पत्नी को साथ लेकर संत रामपाल जी महाराज के पास गया, उनसे आत्म कल्याण के लिए उपदेश प्राप्त किया। उसके बाद आज (2005) तक शराब, तम्बाकु तथा मांस छुआ भी नहीं। मेरी पत्नी ने भी सतगुरु रामपाल जी से उपदेश लिया। उस दिन के बाद वह बिल्कुल स्वस्थ है। डॉक्टरों के ईलाज तथा बीमारी की एक्स-रे आदि की रिपोर्ट आज भी हमारे घर रखी है। जन-जन को दिखाते हैं।

मेरी सर्व से प्रार्थना है कि आप भी प्रभु के चरणों में आओ। संत रूप में आए परमेश्वर के संदेश वाहक संत रामपाल को पहचानों। मुफ्त नाम उपदेश प्राप्त करके कृप्या अपना कल्याण करवाऐं।

।। सत साहेब ।।

भक्त जगदीश
गाँव-पंजाबखोड़ (दिल्ली)
सम्पर्क सूत्र :- 9268475242

''अनहोनी की परमात्मा ने''

(शादी के 16 साल बाद संतान प्राप्ति)

सतगुरु के दरबार में कमी काहे की नाहीं। हंसा मौज न पावता तेरी चूक चाकरी माहीं।।

मैं भक्त रामजी दास ग्राम-कटरा पोस्ट-सलेहा, जिला-पन्ना (मध्यप्रदेश) का निवासी हूँ। मैं बचपन से परमात्मा की खोज में लगा हुआ था और हिन्दू धर्म

के मंदिरों व धामों आदि पर जाता रहता था। साथ ही एक कबीरपंथी संत से नाम-उपदेश भी लिया हुआ था। मेरी शादी को कई साल बीत गए थे। लेकिन हमें कोई संतान प्राप्ति नहीं हुई। जहाँ मैडिकल फेल हो जाता है, वहाँ परमात्मा का विधान शुरू होता है।

कई जगह (देवी-देवताओं के पास मंदिर-मस्जिद, झाड़-फूंक करवाया) गए, वैष्णो देवी जम्मू भी गया, बड़े-बड़े डॉक्टरों को दिखाया। सबसे पहले सिविल अस्पताल मैहर में डॉ. श्रीमति एस. बी. अवधिया एम.डी. (D.G.O.), प्रसूति एवम् स्त्री रोग चिकित्सक को दिखाया और अल्ट्रासाउंड सोनोग्राफी के द्वारा उन्होंने देखा कि उनकी बच्चेदानी में गाँठें हैं, वे निकालनी पड़ेंगी। इसके लिए सतना में जाना पड़ेगा। 18 फरवरी 2009 में शकुंतलम् नर्सिंग होम सतना में बच्चेदानी का ऑपरेशन हुआ। इसके बाद भी हमें संतान प्राप्ति नहीं हुई। लेकिन दवाएँ चलती रही। इसके बाद सन् 2012 में शारदा हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर सतना में डॉ. महेन्द्र सिंह (M.B.B.S., D.G.O.) के यहाँ 1 वर्ष तक इलाज चला। फिर अंत में डॉक्टरों ने हमें बोल दिया कि आप टेस्ट-ट्यूब बेबी करवा सकते हैं। परंतु उसकी भी कोई गारंटी नहीं है। उसमें लाख दो लाख रूपये खर्च आता है।

हम गरीब आदमी इतनी बड़ी रकम कहाँ से लाते? हमने मना कर दिया। हमने दुनिया के लोगों की रोज की बातों से तंग आकर फैसला किया कि चलो! रोज की खिच-खिच से अच्छा हम नोएडा (उत्तर प्रदेश) चलते हैं। वहीं काम करेंगे और वहीं इलाज करवाएँगे। फिर हमने सुन रखा था कि वैष्णों देवी जाने से संतान प्राप्ति होती है तो जुलाई 2012 में कटरा (जम्मू) जाकर वैष्णों देवी की यात्रा की। इससे भी कोई राहत नहीं मिली। हम मकर सक्रांति को जनवरी 2013 को घर आये। हम साधना चैनल पर सत्संग कार्यक्रम देखते थे। मेरे पिता जी बोले कि कबीर साहेब जी का सत्संग आता है, आप भी देखो। हमने सत्संग देखा और पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' मंगवाई जो हमारे घर निःशुल्क प्राप्त हुई। पिताजी बोले कि आप बरवाला आश्रम चले जाओ, परमात्मा शायद दया करें।

हम दोनों ने 21 अप्रैल 2013 को सतलोक आश्रम बरवाला में सतगुरु रामपाल जी महाराज जी से नाम-दीक्षा लेकर अरदास लगाई कि कई साल हो गए, हमें संतान प्राप्ति नहीं हो रही है। परमात्मा बोले कि बेटा! भक्ति करो, परमात्मा दया करेंगे। इस प्रकार चलते-चलते नवम्बर 2014 में बरवाला कांड की लीला हो गई। हम घर आ गए। हमें पता लग गया था कि ये मानव जीवन किसलिए मिला है और हम भक्ति करने लगे थे। कुछ दिनों बाद फिर घर-परिवार वाले और रिश्तेदार वही पुराना रोना रोने लगे कि एक संतान तो

होनी ही चाहिए। गाँव के लोग तो कभी-कभी यहाँ तक बोलने लगे कि इनका तो मुँह भी नहीं देखना चाहिए। एक दिन भक्तमति बोली कि चलो दवा करवाते हैं। परमात्मा दवा के लिए तो मना नहीं करते। हमने गुरु जी से अरदास लगाई कि दवा करवा लें। गुरु जी बोले कि करवा लो, परमात्मा दया करेंगे। फिर हमने डॉ. आभा पाठक (M.B.B.S., M.S., Gynecologist & Obstetrician) पाठक नर्सिंग होम सतना में मार्च 2019 में इलाज शुरू किया। उन्होंने भी लॉस्ट में बोल दिया कि हम ऐसे केस नहीं लेते। आपका तो भगवान ही मालिक है। अब मेडिकल और सांइस दोनों फेल हो चुके थे।

डॉक्टर मैडम के ऐसे बोलने पर हमने फैसला कर लिया कि अब हम कहीं दवा नहीं करवाएँगे। जो करेंगे, वो सब बंदी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज ही करेंगे। फिर सितम्बर 2020 में परमात्मा ने अपने कोटे से एक भक्त आत्मा हमें संतान रूप में दी जो हमारी किस्मत में नहीं थी। वह परमात्मा ने दी। यहाँ तक कि जब हमारी भक्तमति घर से बाहर निकलती थी तो लोग बोलते थे कि यह बांझ है, इसका मुँह नहीं देखना चाहिए। परमात्मा ने उन्हें भी दिखा दिया।

उसके बाद तो परमात्मा पल-पल हमारे साथ चमत्कार करते हैं। एक समय की बात है, हम और भक्तमति मोटरसाइकिल पर कहीं जा रहे थे। अचानक हमारा एक्सीडेंट हो गया। भक्तमति का सिर फट गया। मुँह से झाग निकलने लगा, मानो मत्यु हो गई हो। अस्पताल में डॉक्टर को दिखाया तो उन्होंने कहा कि ये बेहोश हैं और सिर की चोट है। अगर इनको होश नहीं आया तो ये कोमा में भी जा सकती हैं। सुबह 10:00 बजे हमारा एक्सीडेंट हुआ था और शाम को 3:00 बजे के आसपास भक्तमति जी को होश आ गया और हम घर आ गये।

एक जगह दास मजदूरी करता है। एक जगह काम के लिए गया था। जिनके यहाँ काम करना था, उनका मकान जर्जर था। जैसे ही दास ने प्रवेश किया, उस मकान में ऊपर से एक लकड़ी का गार्डर मेरे ऊपर गिर गया और लोगों ने कहा कि यह तो मर गया होगा। लेकिन जब दास ने ऊपर देखा तो सिर से 6 अंगुल ऊपर वह गार्डर का टुकड़ा हवा में लटकता रहा। जब दास ने उसको देखा तो दास के आँसू निकलने लगे। परमात्मा की केवल एक वाणी याद आई कि :-

संत शरण में आने से आई टले बला।
जे मस्तक में सूली हो, वो काँटे में टल जा।।

।। सत साहेब।।

आपका दास
रामजी कोरी, ग्राम : कटरा,
जिलाः पन्ना (मध्यप्रदेश)

''शास्त्रविरूद्ध साधना से छुटकारा''

मैं भक्त हेमचंद दास सोलन (हिमाचल प्रदेश) का रहने वाला हूँ। पहले मैं अपने गाँव में महाकाली मंदिर में पुजारी रहा। 25 वर्ष से वहाँ पुजारी का काम करता था। भजन-कीर्तन और जो भी पूजाऐं मंदिर में होती, सभी किया करता था। पितर पूजा, श्राद्ध निकालना, शिव जी को जल चढ़ाना आदि क्रियाऐं करता था। लेकिन फिर भी हम दुःखी रहते थे। मेरी पत्नी को पैरालाईसिस थी। घर की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थी।

सन् 2005-2006 में संत रामपाल जी महाराज के कुछ लेख अखबारों में आते थे। मैं उन्हें समझ नहीं पाया, परंतु मैं इस तरह के धार्मिक कागजों को संभालकर रख लेता था। कुछ समय पश्चात् जैसे ही रद्दी से वो कागज मिले, मैं उसे पढ़ने बैठ गया और पढ़ते-पढ़ते मेरे दिल में ठेस-सी लगी कि ये ज्ञान कहाँ छिपा हुआ था? फिर मैंने उसमें आश्रम के फोन नं. देखे और पुस्तक मंगवाई। उसमें जब मैंने ज्ञान पढ़ा तो मैं हैरान रह गया, पैरों तले की जमीन खिसक गई क्योंकि मंदिर में पुजारी होने के बावजूद मैंने ऐसा नया ज्ञान कभी भी नहीं सुना था।

मैं पहले मानता रहा कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव जी से ऊपर कोई है ही नहीं। परमात्मा निराकार है। संत रामपाल जी महाराज की पुस्तकों से ज्ञान हुआ कि परमात्मा साकार है, कबीर जी पूर्ण परमात्मा हैं। परमात्मा ने अंदर एक ऐसी प्रेरणा जगाई कि संत रामपाल जी के पास ही वह अमर मंत्र है जिससे हमारा कल्याण होना है। इसी से हमारा जन्म-मरण का भयंकर रोग कटेगा। उनके ज्ञान से प्रभावित होकर मैंने संत रामपाल जी महाराज से दीक्षा ली। मैंने सभी तरह की शास्त्रविरूद्ध पूजाऐं बंद कर दी। पितर पूजा, श्राद्ध निकालना आदि सब त्याग दिया।

गुरू जी का उपदेश लेने के बाद मुझे सबसे बड़ा तो आध्यात्मिक लाभ हुआ। जन्म-मरण से मुक्ति की सच्ची राह मिली। मेरी भक्तमति को पैरालाइसिस की परेशानी थी। हर जगह बड़े-बड़े डॉक्टरों व नीम-हकीमों के चक्कर लगा चुके थे, परंतु परमात्मा के आशीर्वाद मात्र से मेरी भक्तमति ठीक हो गई। परमात्मा की दया से हमारी आर्थिक स्थिति भी ठीक हो गई।

फिर मैंने ये ज्ञान प्रचार करना शुरू कर दिया। मुझे लगा कि ये ज्ञान तो जन-जन तक पहुँचना चाहिए। लेकिन मेरी बातों पर किसी ने गौर नहीं किया। लोगों ने विरोध किया, कहा कि तुम ये कौन-सा अलग ज्ञान ले आए। ऐसी बातें ना किया करो। परंतु मुझे इस ज्ञान से परमात्मा की दया से कोई डगमग नहीं कर पाया। ऐसा सत्यज्ञान व सत्य भक्ति मार्ग पृथ्वी पर और

कहीं नहीं है।

मेरी सर्व से प्रार्थना है कि आप भी प्रभु के चरणों में आओ। संत रूप में आए परमेश्वर के संदेश वाहक संत रामपाल जी महाराज को पहचानों। मुफ्त नाम उपदेश प्राप्त करके कृपया अपना कल्याण करवाएँ।

भक्त हेमचंद दास
मोबाईल नं. 9816781489

''लुटे-पिटों को सहारा''

मैं भक्त बलवान सैनी पुत्र श्री कृष्ण सैनी न्यू माडल टॉउन, हिसार का रहने वाला हूँ। हम पाँच भाई-बहन हैं। हमारे पूरे परिवार ने 18 वर्ष से सिरसा डेरे से उपदेश ले रखा था। हमारे घर में भूत-प्रेत की बहुत ज्यादा समस्या थी। मेरी बहन को हमें रस्सी से बाँधकर रखना पड़ता था। प्रेत बाधा के कारण वह छत से भी कूद जाती थी। मेरे पिता जी के फेफड़े भी खराब हो चुके थे। जिससे वो बिस्तर पर ही रहने लगे। मेरी माता के घुटनों में बहुत दर्द रहता था।

मेरे पिता जी हलवाई का काम करते थे। भूत-प्रेत और पिता जी की बीमारी के कारण हमारा काम बिल्कुल ठप्प हो चुका था। पहले हमारे हाँसी में तीन मकान व एक दुकान थी। घर में नौकर काम करते थे। लेकिन कर्मों की मार से हमें सब बेचना पड़ा। घर में खाने के लाले पड़ गए थे।

हम देवी-देवताओं को भी मानते थे। हम 2003 से हर महीने मेंदहीपुर जाते थे। हमारा पूरा परिवार होली-दिवाली भी मेंहदीपुर में ही मनाता था। हम डॉक्टरों के पास जाकर भी थक चुके थे। हम माता चौकी, सेवड़ों आदि जंत्र-मंत्र करने वालों के पास भी जाते थे। हम नरड़ पीर (राजस्थान) की मंढ़ी पर एक साल रहकर आए थे। हम पाँच साल तक हर महीने सजाड़ा धाम, जोधपुर जहाँ शंकर भगवान की पूजा होती थी, वहाँ पर फेरी लगाने जाते रहे, परंतु कोई लाभ हमें नहीं मिला। मेरी माँ और मैं व्रत भी रखते थे। मैं बाला जी धाम, सालासर नंगे पाँव भी दो-तीन बार गया। माता गुड़गावां वाली हमारी कुल की देवी थी। मैंने वहाँ पर हाथ पर ज्योति रखकर पंद्रह मिनट आरती भी की थी। हाथ बिल्कुल गल चुका था। परंतु हमें कोई राहत किसी भी साधना से नहीं मिली। अंत में हम हार मान चुके थे। हम दुःखी होकर घर पर ही रहने लगे। हमने सभी पूजाऐं त्याग दी।

फिर मुझे 24 फरवरी 2012 को सतगुरू रामपाल जी महाराज की पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' मिली। मैंने उस पुस्तक को पढ़ा और सपरिवार नाम

ले लिया। मुझे नियम बताए गए कि आपको किसी देवी-देवता के धामों पर पूजा के लिए नहीं जाना है। मैं घर पर आ गया। मुझे रात को नींद नहीं आई, मैं बेचैन हो गया क्योंकि मैं खाटू श्याम, राधे कृष्ण को बहुत अधिक मानता था। मैं उनको छोड़ नहीं सकता था। अगले दिन ही मैं खाटू श्याम चला गया। वहाँ पर मैं 5-6 दिन रहा। वहाँ पर मैं पैसे देकर VIP लाईन में लगकर दर्शन करने गया। जब मैं दर्शन करने लगा तो आवाज आई कि बलवान! तू अपना भगवान तो बरवाला में छोड़ आया है, यहाँ पर कुछ नहीं है। फिर मैं रोते हुए घर आ गया। फिर मैंने दोबारा संत रामपाल जी महाराज के आश्रम में जाकर नाम शुद्ध करवाया।

मेरे पिता जी के फेफड़े खराब हो चुके थे। उनको होली हस्पताल, हिसार में दाखिल करवाया। उनकी स्थिति ज्याड़ा बिगड़ गई और डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। कहा कि इसको घर ले जाओ। ये कुछ घण्टे का मेहमान है। फिर मैंने आश्रम में फोन किया। गुरू जी से प्रार्थना करवाई। गुरू जी ने कहा कि हम पूर्ण परमात्मा की भक्ति करते हैं। इस बच्चे का बाल भी बांका नहीं होगा। आप भगवान पर विश्वास रखो। मैंने दोबारा डॉक्टर से प्रार्थना की कि आप इसे दो-तीन दिन के लिए आई. सी. यू. में दाखिल कर लो। डॉक्टर ने कहा कि इससे कोई फायदा नहीं होगा। लेकिन मेरे ज्यादा कहने पर डॉक्टर ने मेरे साईन करवा लिए और फीस लेकर दाखिल आई.सी.यू. में कर लिया। मेरी बहन घर पर थी। उसको सपना आया कि सतगुरू रामपाल जी मेरे पिता जी के बैड के पास खड़े हैं। अगले दिन मेरे पिताजी को होश आ गया और हालत सुधरने लगी। डॉक्टर भी हैरान रह गए कि ये तो भगवान ने ही किया है, हमें ऐसी कोई उम्मीद नहीं थी।

उस दिन के बाद से हम सारा परिवार सुख से रह रहे हैं। मेरे बहन की बीमारी बिल्कुल ठीक हो गई और उसकी शादी कर दी। मेरी माँ के घुटनों का दर्द भी बिल्कुल ठीक हो गया। फिर हम हिसार रहने लगे और कुल्फी की रेहड़ी लगाने लगे। परमात्मा की दया से हमारा अच्छा काम चल पड़ा। हमने हिसार में दोबारा अपना मकान बना लिया।

शादी के दो वर्ष बाद मेरी बहन पूजा को ऑपरेशन से बच्चा होना था। उसको हमने अग्रोहा मैडिकल में भर्ती करवाया। बच्चे की डिलिवरी के समय डॉक्टरों से गलती से बच्चेदानी की कोई नस कट गई। मेरी बहन की ब्लीडिंग बंद नहीं हो रही थी। मेरी बहन को मंगलम लैब से लेकर 45 बोतलें खून की चढ़ी। लेकिन वहाँ पर कोई आराम नहीं मिला। फिर हम अपनी बहन को जिंदल हस्पताल में लेकर आए। वहाँ भी बारह दिन तक कोई आराम नहीं हुआ और डॉक्टरों ने कहा कि हम कुछ नहीं कह सकते कि यह बचेगी या

नहीं। फिर मैंने गुरू जी से प्रार्थना लगवाई। गुरू जी बोले कि बेटा! मैंने बेटी को जीवनदान दे दिया है। वह ठीक हो जाएगी। फिर तीसरे दिन मेरी बहन को होश आ गया और उसकी हालत सुधरने लगी। पूरे हस्पताल में चर्चा हुई कि ये काम तो भगवान ही कर सकता है। मेरी बहन आज बिल्कुल स्वस्थ है। उसको परमात्मा ने एक पुत्री दी है जो बिल्कुल ठीक है। परमात्मा की दया से आज हमारे घर में किसी वस्तु का अभाव नहीं है।

कबीर, पीछे लाग्या जाऊं था, मैं लोक वेद के साथ।
रास्ते में सतगुरू मिले, दीपक दीन्हा हाथ।।

।। सत साहेब ।।

भक्त बलवान दास
मॉडल टाउन, हिसार (हरियाणा)
मोबाईल नं. - 9996593021

"प्रभु प्यासे भक्त बसंत सिंह सैनी को मार्ग मिलना"

मैं बसंत सिंह सैनी गाँव गांधरा जिला-रोहतक हरियाणा का रहने वाला हूँ तथा पुराना पता म.नं. एस 161 पाण्डव नगर, नजदीक मदर डेयरी, यमुनापार, दिल्ली-92 में रहता था। हमारे परिवार पर मानों दुःखों का पहाड़ टूटा हुआ था। फिर भी परमात्मा को पाने की चाहत व दुःखों की निवर्ति के लिए संतों व महंतों के पास आते जाते रहते थे। परन्तु कहीं भी दुःखों का निवारण नहीं हुआ। आखिरकार एक जाने-माने संत श्री आसाराम बापू से मिले। उस समय बापू जी की संगत दिल्ली में लगभग एक हजार थी। जिसके कारण बहुत नजदीक से मिलने का मौका मिला। हमने अपने दुःख व परमात्मा पाने की जिज्ञासा उनके सामने रखी। उन्होंने हमें 7 मंत्र (ॐ गुरु, हरि ॐ, ॐ ऐं नमः, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ह्रीं रामाय नमः व गायत्री मंत्र इत्यादि) बताए। जिनमें से एक छांटने के लिए कहा गया और एक 'सोहं' मंत्र जो स्वांस के द्वारा 'सो' अंदर व 'हं' बाहर निकाल कर जाप के लिए कहा गया। एकादशी व पूर्णिमा का व्रत, सोमवार का व्रत व अष्टमी का व्रत करने को कहा, ज्यादा से ज्यादा त्रिबंध प्राणायाम व सिद्धासन में बैठकर ध्यान लगाना व अनुष्ठान करना बताया। हमने मंत्र लिया तथा अपने दुःख उनके सामने रोए तथा बताया कि हमारे ताऊ जी जो चालीस वर्ष पहले मर गए थे वह बहुत बड़ा प्रेत बना हुआ है। उसने हमारे दो भाईयों को मार दिया, आठ-दस भैंसों को मार दिया, पाँच-छः गायों को मार दिया, पशुओं का कोई भी बच्चा जीवित नहीं रहता। घर के सभी सदस्य बीमार रहते हैं। दुःख के कारण बेहाल हैं तथा किसी भी काम धंधे को नहीं चलने देता।

अब कह रहा है कि आपके पिता जी को लेकर जाऊंगा। हमने बापू जी से प्रार्थना की कि हमें बचाओ। परन्तु छः महीने बाद वह प्रेत हमारे पिताजी को भी ले गया। बापू जी ने कहा कि जो हुआ वह तो होना ही था, पशु आदि व धन की हानि तथा शारीरिक बीमारी तो पाप का भोग है जो जीव के प्रारब्ध में लिखा होता है, वह तो भोगना ही पड़ता है। आप भक्ति करो। हम परमात्मा प्राप्ति के लिए लगे रहे। बापू जी के समझाने के बाद हम परमात्मा प्राप्ति के लिए पूरी श्रद्धा से लग गये तथा मैंने (बसंत दास) सबसे पहले श्री आसाराम बापू आश्रम दिल्ली में चालीस दिन का अनुष्ठान महन्त नरेन्द्र ब्रह्मचारी की सलाह से किया। इसके बाद चालीस दिन के छः अनुष्ठान आसाराम बापू आश्रम पंचेड़ रतलाम, मध्यप्रदेश में महन्त काका जी की देखरेख में किए। उसके बाद दो अनुष्ठान आसाराम आश्रम साबरमती अहमदाबाद गुजरात के मौन मन्दिर में किए। जहाँ पर श्री आसाराम बापू जी से अच्छी तरह बात करने का मौका मिला। तब मैंने बापू जी से पूछा कि बापू जी जिस परमात्मा को पाने के लिए मैं तथा सारा भक्त समाज लगा हुआ है वह परमात्मा कौन है? कैसा है? तथा कहां रहता है? बताने की कृप्या करें।

यह सुनकर बापू जी ने कहा कि आप लगे रहो सब पता चल जायेगा और बताया कि गीता जी के एक अध्याय का पाठ प्रतिदिन करना है और कभी मेरे दर्शनों की इच्छा हो तो एक क्रिया बताता हूँ कि तीन दिन तक एक कमरे में बंद हो जाओ। कमरे में बंद होने से पहले दिन खाना पीना छोड़ दो ताकि शाम तक लैटरिंग व बाथरूम से निवर्त हो जाये। उसके तीन दिन तक कुछ भी खाना पीना नहीं है, न बाहर निकलना है। कमरे में रहो, त्राटक करो। घर जाकर मैंने यह तीन बार किया, परन्तु बापू के दर्शन नहीं हुए। अनुष्ठान के समय जीवन मृत्यु से जूझ कर बीमारी का सामना करना पड़ा। परन्तु फिर भी परमात्मा पाने के लिए लगा रहा।

सितम्बर 2000 में संत रामपाल दास जी महाराज का सत्संग काठमण्डी रोहतक में सुना, जिन्होंने तत्वज्ञान के आधार पर गीता जी को समझाया उसके बाद गीता जी का पाठ करने से मन में आने लगा कि गीता जी में भगवान क्या कह रहे हैं और बापू जी क्या बता रहे हैं। कहीं सचमुच हम भगवान के विरुद्ध तो साधना नहीं कर रहे हैं। संत रामपाल जी के द्वारा बताए गीता जी के अनुवाद को समझा तो अंतरात्मा रोने लगी तथा बापू जी से मिलकर यह सब शंकाऐं पूछनी चाही। मैं बापू जी के पास गीता लेकर गया तथा गीता जी को दिखाकर सब शंकाऐं पूछी। परन्तु बापू जी ने किसी भी शंका का समाधान नहीं किया। मैंने बापू जी से कहा कि बापू जी आपको परमात्मा के बारे में नहीं पता तो आप भक्त समाज को अपने पास क्यों

उलझा रहे हो, इस पर बाबू जी मेरी तरफ घूर कर बोले कि तू क्या जाने भक्ति के विषय में। मैं उठकर रोता हुआ अपने घर आ गया।

परमात्मा की प्राप्ति न होने से तथा उलझे हुए जीवन को देखते हुए तथा हठ रूपी अनुष्ठान व व्रतों के करने से शरीर काफी कमजोर हो गया और मत्यु नजदीक दिखाई देने लगी। फिर अन्य संतों (राधास्वामी पंथ, धन-धन सतगुरु, श्री सतपाल जी महाराज, श्री बालयोगेश्वर जी महाराज, दिव्य ज्योति, ब्रह्मकुमारी, निरंकारी मिशन, जय गुरुदेव मथुरा वाले आदि) के पास भटका, परन्तु जो निर्णायक ज्ञान संत रामपाल जी महाराज ने बताया वह उपरोक्त किसी भी संत व पंथ के पास नहीं है। मैं पश्चाताप करने लगा कि इस समय शायद पथ्वी पर कोई भी संत ऐसा नहीं है जिसको परमात्मा प्राप्ति हुई है और जो यह बता सके कि वह परमात्मा कौन है ? कैसा है ? और कहां रहता है ? यह विचार कर मैं फूट फूट कर रातों रोता रहा, संतों से विश्वास उठ गया। मन में आने लगा कि जब श्री आसाराम जी जैसे सुप्रसिद्ध संत ही शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण कर तथा करवा रहे हैं तो किस संत पर विश्वास किया जाए। संत रामपाल जी ज्ञान तो श्रेष्ठ बता रहे हैं परन्तु इनके पास जन समूह कुछ भी नहीं है। ये पूर्ण संत कैसे हो सकते हैं ? यह शंका मन में आई। कुछ दिनों के बाद संत रामपाल जी महाराज का एक शिष्य हमारे गाँव का मिला तथा मेरी कहानी सुनकर उसने मुझे फिर से परमात्मा स्वरूप पूर्ण संत रामपाल जी महाराज के सत्संग में दोबारा लाकर बैठा दिया। मैंने एक घंटे का सत्संग सुना और सत्संग के बाद रोता हुआ महाराज जी से मिला। महाराज जी ने मुझे सीने से लगाकर कहा कि जिस संत के पास आप जाते हो वे शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण कर तथा करवा रहे हैं। जैसा यह सब वे पहले ही जानते थे कि मुझे क्या चाहिए और मेरी शंकाओं का समाधान संत रामपाल जी महाराज ने अपने चरणों में बैठाकर इस तरह से किया।

तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज ने बताया कि पवित्र गीता जी अध्याय 9 मंत्र 25 में पितर पूजना अर्थात् श्राद्ध निकालना मना किया है। अन्य देवी-देवताओं की पूजा करने वालों को मन्द बुद्धि वाले लिखा है (गीता अध्याय 7 मन्त्र 12 से 15 तथा 20 से 23 तक)। परन्तु श्री आसाराम जी ''श्राद्ध महिमा'' नामक पुस्तक में श्राद्ध निकालने की श्रेष्ठ विधि बताते हैं। संत श्री आसाराम जी के साबरमति अहमदाबाद आश्रम से प्रकाशित पत्रिका ऋषि प्रसाद अंक-135 मार्च 2004 में लिखा है कि भूत पूजने वाले तथा पितरों को पूजने वाले तथा अन्य देवी देवताओं को पूजने वाले क्या बनेंगे, पढिए पत्रिका के अगले अंक में ....। अगले अंक की पत्रिका ऋषि प्रसाद अंक 136

अप्रैल 2004 पष्ठ 19 में लिखा था कि भूत पूजने वाले भूत लोकों को प्राप्त होंगे तथा पितर पूजने वाले पितर लोकों को प्राप्त होंगे तथा श्री कष्ण के पूजारी भगवान श्री कष्ण जी के बैकुण्ठ लोक को प्राप्त होंगे।

विचारें - श्री आसाराम जी द्वारा प्रकाशित 'श्राद्ध महिमा' नामक पुस्तक में पितर पूजने की अच्छी विधि भी लिखी है।

कप्या सोचें - कोई व्यक्ति यह भी कह रहा हो कि कूएँ में गिरने वाले मत्यु को प्राप्त होते हैं। फिर स्वयं ही कूएँ में गिरने का परामर्श भी कर रहा है तथा कह रहा है कि कूएँ में गिरने की अच्छी विधि बताता हूँ कि दोनों कदम उठा कर एक दम छलांग लगाऐं। यह कूएँ में गिर कर मरने की श्रेष्ठ विधि है। जो ऐसा नहीं करता वह दोषी है।

क्या वह व्यक्ति नेक है ? यह भूमिका श्री आसाराम जी संत कर रहे हैं कि एक तरफ तो कह रहे हैं कि पित्तर व भूत पूजने वाले भूत व पित्तर बनकर भूतलोक व पित्तरलोक में जायेंगे, जहाँ पर वे भूखे प्यासे रहते हैं। फिर उनको श्राद्धों द्वारा तप्त किया जाता है। एक और विचारणीय विषय है कि जब अपने माता-पिता जीवित थे तो वे प्रतिदिन कम से कम दो बार भोजन करते थे। अब मत्यु के पश्चात् वे श्री गीता जी विरुद्ध साधना करके दुःखदाई भूत व पित्तर जूनी को प्राप्त कर चुके हैं। अब एक दिन के श्राद्ध से वे कैसे तप्त हो सकते हैं। 364 दिन क्या खाऐंगे? जिसके लिए संत व गुरुजन दोषी हैं जो भोली-भाली आत्माओं को गुमराह कर रहे हैं। शास्त्र ज्ञान से अपरिचित संत ही इस जीव को शास्त्रविधि रहित साधना करवाकर दुःखदाई योनियों में डलवाते हैं।

श्री आसाराम जी श्री शिवजी की उपासना का मन्त्र (ॐ नमो शिवाय) व श्री विष्णु जी का मन्त्र (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) बताते हैं। इसी के अतिरिक्त हरि ॐ, ॐ गुरु आदि नामों में से कोई एक मंत्र अपनी इच्छा अनुसार चुन लेने को कहते हैं तथा सोहं को दो हिस्से करके स्वांस द्वारा स्मरण करना आदि मन्त्र देते हैं जो किसी शास्त्र में प्रमाण नहीं है।

विचार करें – कोई रोगी जिसके पेट में दर्द हो किसी वैद्य के पास ईलाज के लिए प्रार्थना करे। वैद्य उसके आगे छः प्रकार की गोलियां डाल कर कहे की जो तुझे अच्छी लगे, इनमें से एक उठा ले। क्या वह वैद्य हो सकता है ?

पवित्र गीता जी अध्याय 8 मन्त्र 13 में कहा है कि :–

ओम् इति एकाक्षरम् ब्रह्म, व्याहरन् माम् अनुस्मरन्,
यः प्रयाति त्यजन् देहम् सः याति परमाम् गतिम् ।।13।।

इसका शब्दार्थ है कि गीता बोलने वाला ब्रह्म अर्थात् काल कह रहा है कि (माम् ब्रह्म) मुझ ब्रह्म का तो (इति) यह एक (ओम् एकाक्षरम्) ओम् एक अक्षर है (व्याहरन्) उच्चारण करके (अनुस्मरन्) स्मरण करने का (यः) जो साधक (त्यजन्

देहम्) शरीर त्यागने तक अर्थात् अन्तिम स्वांस तक (प्रयाति) स्मरण साधना करता है (सः) वह साधक ही मेरे वाली (परमाम् गतिम्) परमगति को (याति) प्राप्त होता है।

भावार्थ है कि श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके ब्रह्म अर्थात् हजार भुजा वाला ज्योति निरंजन काल कह रहा है कि मुझ ब्रह्म की साधना केवल एक ओम् (ॐ) नाम से मृत्यु पर्यन्त करने वाले साधक को मुझ से मिलने वाला लाभ प्राप्त होता है, अन्य कोई मन्त्र मेरी भक्ति का नहीं है तथा अपनी गति को भी गीता अध्याय 7 मन्त्र 18 में अनुत्तमाम् अर्थात् अति घटिया बताया है। इसी का प्रमाण गीता अध्याय 9 मन्त्र 20 से 25 में कहा है कि जो तीनों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद) में वर्णित विधि द्वारा मेरी साधना करते हैं तथा अन्य देवताओं की पूजा करते हैं उनकी जन्म–मृत्यु तथा स्वर्ग–नरक बना रहता है तथा पित्तर पूजने वाले (श्राद्ध करने वाले) पित्तर बनकर पित्तरों को प्राप्त होते हैं। भूत पूजने वाले (तेरहवीं, सतरहवीं, बर्षी, अस्थियां उठा कर गंगा आदि में क्रिया करवा कर प्रवाह करवाना, पिण्ड भरवाना आदि भूत पूजा है) भूत बन कर भूतलोक में चले जायेंगे, फिर पृथ्वी पर भी भटकते रहेंगे। यह पूजा अविधि पूर्वक अज्ञान पूवर्क मन माना आचरण है। इसलिए व्यर्थ है। प्रमाण गीता अध्याय 16 मन्त्र 23–24 । विशेष : यहाँ चौथे अथर्ववेद का विवरण इसलिए नहीं है कि इसमें पूजा विधि कम तथा सृष्टि रचना अधिक है। इसलिए गीता अध्याय 18 मन्त्र 62 में कहा है कि उस परमात्मा की शरण में जा जिससे तेरी पूर्ण मुक्ति होगी तथा परम शान्ति तथा शाश्वत् स्थान अर्थात् सत्यलोक को प्राप्त होगा तथा गीता अध्याय 15 मंत्र 4 में कहा है कि तत्वदर्शी संत मिलने पर उसके बताए अनुसार शास्त्र विधि अनुसार साधना करनी चाहिए। फिर उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक का कभी जन्म–मृत्यु नहीं होता अर्थात् अनादि मोक्ष प्राप्त हो जाता है।(गीता बोलने वाला काल अर्थात् क्षर पुरुष–ब्रह्म कह रहा है कि) मैं भी उसी आदि पुरुष परमेश्वर की शरण में हूँ।

संत रामपाल महाराज जी ने बताया कि अन्य सर्व संत कहते हैं कि पाप का भोग तो प्रारब्ध में लिखा होने के कारण जीव को भोगना ही पड़ता है। भक्ति करते रहना चाहिए, आने वाला दूसरा जीवन सुखमय हो जायेगा।

कृप्या विचार करें - किसी के पैर में कांटा लगा हो जिस कारण से उसे बहुत पीड़ा हो रही हो। उस कांटे के कष्ट के निवारण के लिए किसी से प्रार्थना करे तो उतर मिलें कि कांटा तो लगा रहने दे, जूता पहन ले, भविष्य में कांटा नहीं लगेगा। क्या वह व्यक्ति ठीक सलाह दे रहा है ? क्योंकि कांटा लगे पैर में जूता पहना ही नहीं जा सकता। पहले कांटा निकले फिर इस डर से जूता पहनेगा कि कहीं दोबारा कांटा न लग जाए। ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा

के पूर्ण संत की शरण में आने से पाप रूपी कांटे का कष्ट समाप्त होता है। फिर साधक पूर्ण प्रभु की शास्त्र विधि अनुसार साधना रूपी जूता इस डर से पहनेगा कि कहीं फिर से कोई पाप रूपी कांटा कष्टदायक न हो जाए।

सभी संतों ने पवित्र गीता जी के अनुवाद में अर्थों का अनर्थ किया है। गीता अध्याय 7 मन्त्र 18 व 24 में अनुत्तमाम् का अर्थ अति उत्तम किया है तथा अध्याय 18 मन्त्र 66 में व्रज का अर्थ आना किया है। जबकि अनुत्तम का अर्थ अति घटिया होता है तथा व्रज का अर्थ जाना होता है। तत्वज्ञान के अभाव से तथा ज्ञान हीन गुरुओं के कारण ही सर्व भक्त समाज शास्त्र विधि रहित साधना करके मनुष्य जीवन व्यर्थ कर रहा है (पवित्र गीता अध्याय 16 मन्त्र 23-24)। सर्व पवित्र धर्मों की पवित्रात्माऐं तत्व ज्ञान से अपरिचित हैं। जिस कारण नकली गुरुओं, सन्तों, महन्तों तथा ऋषियों का दाव लगा हुआ है। जिस समय पवित्र भक्त समाज आध्यात्मिक तत्वज्ञान से परिचित हो जाएगा उस समय इन नकली सन्तों, गुरुओं व आचार्यों को छुपने का स्थान नहीं मिलेगा।

उपरोक्त सच्चाई को आँखों देखकर मैं तथा अन्य परिवार के सदस्य संत रामपाल महाराज जी के चरणों में लगे हैं। पूरे परिवार में कोई बीमारी नहीं रही और जो भूत कभी परिवार के किसी सदस्य को मार देते थे, किसी पशु को मार देते थे, काम धंधे को नहीं चलने देते थे वे घर से ही नहीं गाँव से भी भाग गये हैं तथा दूसरे रिश्तेदारों के घर चले गए हैं, जो अब भी श्री आसाराम जी के पूजारी हैं। वहाँ जाकर भूत कहते हैं कि उनके बसंत आदि के घर तो परमात्मा का निवास हो गया है, उनको परमात्मा स्वरूप पूर्ण संत मिल गये हैं, हम उनके पास नहीं जा सकते। संत रामपाल जी से उपदेश के पश्चात् हम पूरी तरह से स्वस्थ व सुखी जीवन जी रहे हैं। हमारे परिवार व रिश्तेदारों के लगभग दो सौ सदस्यों ने संत रामपाल जी महाराज का उपदेश प्राप्त कर लिया है जो पहले श्री आसाराम जी महाराज के शिष्य थे। संत रामपाल जी के द्वारा बताए तत्वज्ञान को समझ कर लगभग दस हजार श्री आसाराम जी के शिष्य भी सतगुरु रामपाल जी महाराज की शरण में आ चुके हैं। वे भी मेरी तरह पश्चाताप कर रहे हैं। मेरी भक्त समाज से प्रार्थना है कि जिनको भी परमात्मा पाने की तड़फ है, तलाश है, कृप्या परमात्मा स्वरूप पूर्ण संत रामपाल जी महाराज के चरणों में आकर अपने जीवन को सुखी बनाए तथा परमात्मा को प्राप्त करें।

भक्त बसंत दास
मोबाईल नं. 9053275569

उपरोक्त कुछ भक्तात्माओं की आत्म कथाएं आपने पढ़ी। ऐसे-२ भक्त हजारों-लाखों हैं जो अपनी आत्म कथा पुस्तकों में लिखवाना चाहते हैं। लेकिन यहां पर स्थान के अभाव के कारण हम कुछेक भक्तों की आत्म कथा दे पाए। यदि सभी भक्तों की आत्म कथा हम लिखने बैठ जांए तो शायद सैकड़ों पुस्तकें छप जाएंगी। इसलिए समझदार व्यक्ति को इशारा (संकेत) ही काफी होता है।

भक्ति में भेद : भक्ति भक्ति में बहुत भेद होता है। आप चाहें किसी देव/देवी की भक्ति करें उसका फल अवश्य मिलेगा जो कि नाशवान होगा लेकिन मुक्ति नहीं हो पाएगी और पाप कर्म भी समाप्त नहीं होंगे जिन्हें भोगने के लिए बार-२ जन्म लेते रहना पड़ेगा। मुक्ति तो केवल पूर्ण संत की शरण में जाकर अर्थात् उनसे नाम उपदेश लेकर पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने से ही हो पाएगी अन्यथा नहीं।

ये संसार समझदा नांही, कहंदा श्याम दुपहरे नूं।
गरीबदास ये वक्त जात है, रोवेगो इस पहरे नूं।।

''सृष्टि रचना''

(सुक्ष्म वेद से निष्कर्ष रूप सृष्टि रचना का वर्णन)

प्रभु प्रेमी आत्माऐं प्रथम बार निम्न सृष्टि की रचना को पढेंगे तो ऐसे लगेगा जैसे दन्त कथा हो, परन्तु सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के प्रमाणों को पढ़कर दाँतों तले उँगली दबाऐंगे कि यह वास्तविक अमृत ज्ञान कहाँ छुपा था? कृप्या धैर्य के साथ पढ़ते रहिए तथा इस अमृत ज्ञान को सुरक्षित रखिए। आप की एक सौ एक पीढ़ी तक काम आएगा। पवित्रात्माऐं कृप्या सत्यनारायण (अविनाशी प्रभु/सतपुरुष) द्वारा रची सृष्टि रचना का वास्तविक ज्ञान पढ़ें।

1. पूर्ण ब्रह्म :- इस सृष्टि रचना में सतपुरुष-सतलोक का स्वामी (प्रभु), अलख पुरुष-अलख लोक का स्वामी (प्रभु), अगम पुरुष-अगम लोक का स्वामी (प्रभु) तथा अनामी पुरुष-अनामी अकह लोक का स्वामी (प्रभु) तो एक ही पूर्ण ब्रह्म है, जो वास्तव में अविनाशी प्रभु है जो भिन्न-२ रूप धारण करके अपने चारों लोकों में रहता है। जिसके अन्तर्गत असंख्य ब्रह्मण्ड आते हैं।

2. परब्रह्म :- यह केवल सात संख ब्रह्मण्ड का स्वामी (प्रभु) है। यह अक्षर पुरुष भी कहलाता है। परन्तु यह तथा इसके ब्रह्मण्ड भी वास्तव में अविनाशी नहीं है।

3. ब्रह्म :- यह केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी (प्रभु) है। इसे क्षर पुरुष, ज्योति निरंजन, काल आदि उपमा से जाना जाता है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्मण्ड नाशवान हैं।

(उपरोक्त तीनों पुरूषों (प्रभुओं) का प्रमाण पवित्र श्री मद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी है।)

4. ब्रह्मा :- ब्रह्मा इसी ब्रह्म का ज्येष्ठ पुत्र है, विष्णु मध्य वाला पुत्र है तथा शिव अंतिम तीसरा पुत्र है। ये तीनों ब्रह्म के पुत्र केवल एक ब्रह्मण्ड में एक विभाग (गुण) के स्वामी (प्रभु) हैं तथा नाशवान हैं। विस्तृत विवरण के लिए कृप्या पढ़ें निम्न लिखित सृष्टि रचना :-

{कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने सुक्ष्म वेद अर्थात् कबिर्बाणी में अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया है जो निम्नलिखित है}

सर्व प्रथम केवल एक स्थान 'अनामी (अनामय) लोक' था। जिसे अकह लोक भी कहा जाता है, पूर्ण परमात्मा उस अनामी लोक में अकेला रहता था। उस परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। सभी आत्माऐं उस पूर्ण धनी के शरीर में समाई हुई थी। इसी कविर्देव का उपमात्मक (पदवी का) नाम अनामी पुरुष है (पुरुष का अर्थ प्रभु होता है। प्रभु ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया है, इसलिए मानव का नाम भी पुरुष

परमेश्वर कबीर साहेब के असंख्य ब्रह्मण्डों का लघु चित्र

अनामी लोक : इस लोक में कबीर साहेब अनामी पुरूष रूप में रहते हैं। यहाँ अकेले हैं।

अगम लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अगम पुरूष रूप में रहते हैं।

अलख लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अलख पुरूष रूप में रहते हैं।

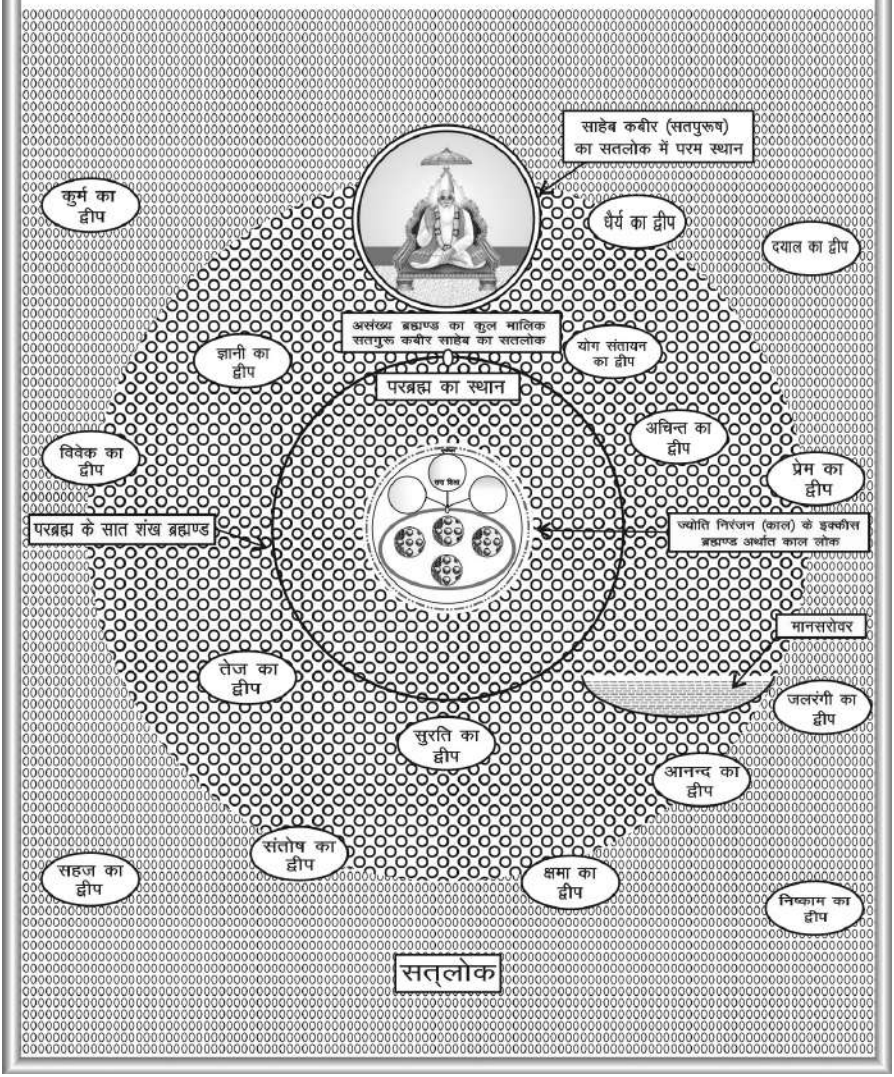

ही पड़ा है।) अनामी पुरूष के एक रोम कूप का प्रकाश संख सूर्यों की रोशनी से भी अधिक है।

विशेष :- जैसे किसी देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी का शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा पद का उपमात्मक (पदवी का) नाम प्रधानमंत्री होता है।

कई बार प्रधानमंत्री जी अपने पास कई विभाग भी रख लेते हैं। तब जिस भी विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करते हैं तो उस समय उसी पद को लिखते हैं। जैसे गृहमंत्रालय के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करेगें तो अपने को गृह मंत्री लिखेगें। वहाँ उसी व्यक्ति के हस्ताक्षर की शक्ति कम होती है। इसी प्रकार कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की रोशनी में अंतर भिन्न-२ लोकों में होता जाता है।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने नीचे के तीन और लोकों (अगमलोक, अलख लोक, सतलोक) की रचना शब्द(वचन) से की। यही पूर्णब्रह्म परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही अगम लोक में प्रकट हुआ तथा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अगम लोक का भी स्वामी है तथा वहाँ इनका उपमात्मक (पदवी का) नाम अगम पुरुष अर्थात् अगम प्रभु है। इसी अगम प्रभु का मानव सदृश शरीर बहुत तेजोमय है जिसके एक रोम कूप की रोशनी खरब सूर्य की रोशनी से भी अधिक है।

यह पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबिर देव=कबीर परमेश्वर) अलख लोक में प्रकट हुआ तथा स्वयं ही अलख लोक का भी स्वामी है तथा उपमात्मक (पदवी का) नाम अलख पुरुष भी इसी परमेश्वर का है तथा इस पूर्ण प्रभु का मानव सदृश शरीर तेजोमय (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित है। एक रोम कूप की रोशनी अरब सूर्यों के प्रकाश से भी ज्यादा है।

यही पूर्ण प्रभु सतलोक में प्रकट हुआ तथा सतलोक का भी अधिपति यही है। इसलिए इसी का उपमात्मक (पदवी का) नाम सतपुरुष (अविनाशी प्रभु)है। इसी का नाम अकालमूर्ति - शब्द स्वरूपी राम - पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। इसी सतपुरुष कविर्देव (कबीर प्रभु) का मानव सदृश शरीर तेजोमय है। जिसके एक रोमकूप का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है।

इस कविर्देव (कबीर प्रभु) ने सतपुरुष रूप में प्रकट होकर सतलोक में विराजमान होकर प्रथम सतलोक में अन्य रचना की। एक शब्द (वचन) से सोलह द्वीपों की रचना की। फिर सोलह शब्दों से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति की। एक मानसरोवर की रचना की जिसमें अमृत भरा। सोलह पुत्रों के नाम हैं :-(1) ''कूर्म'', (2)''ज्ञानी'', (3) ''विवेक'', (4) ''तेज'', (5) ''सहज'', (6) ''सन्तोष'', (7)''सुरति'', (8) ''आनन्द'', (9) ''क्षमा'', (10) ''निष्काम'',

(11) 'जलरंगी' (12)''अचिन्त'', (13) ''प्रेम'', (14) ''दयाल'', (15) ''धैर्य'' (16) ''योग संतायन'' अर्थात् ''योगजीत''।

सतपुरुष कविर्देव ने अपने पुत्र अचिन्त को सत्यलोक की अन्य रचना का भार सौंपा तथा शक्ति प्रदान की। अचिन्त ने अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की शब्द से उत्पत्ति की तथा कहा कि मेरी मदद करना। अक्षर पुरुष स्नान करने मानसरोवर पर गया, वहाँ आनन्द आया तथा सो गया। लम्बे समय तक बाहर नहीं आया। तब अचिन्त की प्रार्थना पर अक्षर पुरुष को नींद से जगाने के लिए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने उसी मानसरोवर से कुछ अमृत जल लेकर एक अण्डा बनाया तथा उस अण्डे में एक आत्मा प्रवेश की तथा अण्डे को मानसरोवर के अमृत जल में छोड़ दिया। अण्डे की गड़गड़ाहट से अक्षर पुरुष की निंद्रा भंग हुई। उसने अण्डे को क्रोध से देखा जिस कारण से अण्डे के दो भाग हो गए। उसमें से ज्योति निंरजन (क्षर पुरुष) निकला जो आगे चलकर 'काल' कहलाया। इसका वास्तविक नाम ''कैल'' है। तब सतपुरुष (कविर्देव) ने आकाशवाणी की कि आप दोनों बाहर आओ तथा अचिंत के द्वीप में रहो। आज्ञा पाकर अक्षर पुरुष तथा क्षर पुरुष (कैल) दोनों अचिंत के द्वीप में रहने लगे (बच्चों की नालायकी उन्हीं को दिखाई कि कहीं फिर प्रभुता की तड़फ न बन जाए, क्योंकि समर्थ बिन कार्य सफल नहीं होता) फिर पूर्ण धनी कविर्देव ने सर्व रचना स्वयं की। अपनी शब्द शक्ति से एक राजेश्वरी (राष्ट्री) शक्ति उत्पन्न की, जिससे सर्व ब्रह्मण्डों को स्थापित किया। इसी को पराशक्ति परानन्दनी भी कहते हैं। पूर्ण ब्रह्म ने सर्व आत्माओं को अपने ही अन्दर से अपनी वचन शक्ति से अपने मानव शरीर सदृश उत्पन्न किया। प्रत्येक हंस आत्मा का परमात्मा जैसा ही शरीर रचा जिसका तेज 16 (सोलह) सूर्यों जैसा मानव सदृश ही है। परन्तु परमेश्वर के शरीर के एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी ज्यादा है। बहुत समय उपरान्त क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने सोचा कि हम तीनों (अचिन्त - अक्षर पुरुष - क्षर पुरुष) एक द्वीप में रह रहे हैं तथा अन्य एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। मैं भी साधना करके अलग द्वीप प्राप्त करूँगा। उसने ऐसा विचार करके एक पैर पर खड़ा होकर सत्तर (70) युग तक तप किया।

"आत्माऐं काल के जाल (जन्म-मृत्यु के चक्र) में कैसे फंसी ?"

विशेष :- जब ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप कर रहा था हम सभी आत्माऐं, जो आज ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्मण्डों में रहते हैं इसकी साधना पर आसक्त हो गए तथा हृदय से इसे चाहने लगे। अपने सुखदाई प्रभु सत्य पुरूष से विमुख हो गए। जिस कारण से पतिव्रता पद से गिर गए। पूर्ण प्रभु

के बार-बार सावधान करने पर भी हमारी आसक्ति क्षर पुरुष से नहीं हटी। {यही प्रभाव आज भी काल संष्टि में विद्यमान है। जैसे नौजवान बच्चे फिल्म स्टारों (अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों) की बनावटी अदाओं तथा अपने रोजगार उद्देश्य से कर रहे भूमिका पर अति आसक्त हो जाते हैं, रोकने से नहीं रूकते। यदि कोई अभिनेता या अभिनेत्री निकटवर्ती शहर में आ जाए तो देखें उन नादान बच्चों की भीड़ केवल दर्शन करने के लिए बहु संख्या में एकत्रित हो जाती हैं। 'लेना एक न देने दो' रोजी रोटी अभिनेता कमा रहे हैं, नौजवान बच्चे लुट रहे हैं। माता–पिता कितना ही समझाऐं किन्तु बच्चे नहीं मानते। कहीं न कहीं, कभी न कभी, लुक–छिप कर जाते ही रहते हैं।}

पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) ने क्षर पुरुष से पूछा कि बोलो क्या चाहते हो? उसने कहा कि पिता जी यह स्थान मेरे लिए कम है, मुझे अलग से द्वीप प्रदान करने की कपा करें। हक्का कबीर (सत् कबीर) ने उसे 21 (इक्कीस) ब्रह्मण्ड प्रदान कर दिए। कुछ समय उपरान्त ज्योति निरंजन ने सोचा इस में कुछ रचना करनी चाहिए। खाली ब्रह्मण्ड(प्लाट) किस काम के। यह विचार कर 70 युग तप करके पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर प्रभु) से रचना सामग्री की याचना की। सतपुरुष ने उसे तीन गुण तथा पाँच तत्व प्रदान कर दिए, जिससे ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने अपने ब्रह्मण्डों में कुछ रचना की। फिर सोचा कि इसमें जीव भी होने चाहिए, अकेले का दिल नहीं लगता। यह विचार करके 64 (चौसठ) युग तक फिर तप किया। पूर्ण परमात्मा कविर् देव के पूछने पर बताया कि मुझे कुछ आत्मा दे दो, मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। तब सतपुरुष कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि ब्रह्म तेरे तप के प्रतिफल में मैं तुझे और ब्रह्मण्ड दे सकता हूँ, परन्तु मेरी आत्माओं को किसी भी जप-तप साधना के प्रतिफल रूप में नहीं दे सकता। हाँ, यदि कोई स्वेच्छा से तेरे साथ जाना चाहे तो वह जा सकता है। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुन कर ज्योति निरंजन हमारे पास आया। हम सभी हंस आत्मा पहले से ही उस पर आसक्त थे। हम उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गए। ज्योति निंरजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्मण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार के रमणीय स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सभी हंसों ने जो आज 21 ब्रह्मण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं यदि पिता जी आज्ञा दें तब क्षर पुरुष पूर्ण ब्रह्म महान् कविर् (समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकति देने वाले को आज्ञा दूंगा। क्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष (कविरमितौजा) दोनों हम सभी हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंस आत्मा ब्रह्म के साथ जाना चाहता है हाथ ऊपर करके

स्वीकृति दे। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं हुई। किसी ने स्वीकृति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात् एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल (ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्मण्डों में फंसी हैं) हम सभी आत्माओं ने स्वीकृति दे दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकृति दी है मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूंगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्मण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्मण्ड सतलोक में ही थे।

तत् पश्चात पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को लड़की का रूप दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा सर्व आत्माओं को (जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी) उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया/ प्रकृति देवी/ दुर्गा) पड़ा तथा सत्य पुरूष ने कहा कि पुत्री मैंने तेरे को शब्द शक्ति प्रदान कर दी है जितने जीव ब्रह्म कहे आप उत्पन्न कर देना। पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर साहेब) ने अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकृति को क्षर पुरुष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन के शरीर में उन सर्व आत्माओं को प्रवेश कर दिया है जिन्होंने आपके साथ जाने की सहमति व्यक्त की थी तथा इसको पिता जी ने वचन शक्ति प्रदान की है, आप जितने जीव चाहोगे प्रकृति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कह कर सहजदास वापिस अपने द्वीप में आ गया।

युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकृति देवी के साथ अभद्र गति विधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा शुरु मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह योग महापाप का कारण बनेगा। परन्तु ज्योति निरंजन ने प्रकृति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (भग) प्रकृति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी। उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देख सुक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्णब्रह्म कविर् देव से अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कविर्देव (कविर् देव) अपने पुत्र योग

संतायन अर्थात् जोगजीत का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा कि ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे तथा तेरे इक्कीस ब्रह्मण्डों में रहने वाले प्राणियों के जन्म-मृत्यु सदा होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरुष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्मण्ड सहित निष्कासित किया जाता है। इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्मण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह संख कोस (एक कोस लगभग 3 कि. मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।

विशेष विवरण - अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।

1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरुष, अकालपुरुष, शब्द स्वरूपी राम, परमेश्वर, परम अक्षर ब्रह्म/पुरुष आदि। यह पूर्णब्रह्म असंख्य ब्रह्मण्डों का स्वामी है तथा वास्तव में अविनाशी है।

2. परब्रह्म जिसे ''अक्षर पुरुष'' तथा ''ईश्वर'' भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात संख ब्रह्मण्डों का स्वामी है।

3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, ईश, क्षर पुरुष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है, जो केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सृष्टि के एक ब्रह्मण्ड का परिचय दिया जाएगा, जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे - ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।

ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद - एक ब्रह्मण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म (क्षर पुरुष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकृति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है। उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है वह एक ब्रह्मण्ड में केवल तीन लोकों (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकीय ब्रह्मा कहा है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकीय ब्रह्मा कहा है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा है।

श्री विष्णु पुराण में प्रमाण :- चतुर्थ अंश अध्याय 1 पृष्ठ 230-231 पर श्री ब्रह्मा जी ने कहा :- जिस अजन्मा, सर्वमय विधाता परमेश्वर का आदि, मध्य, अन्त, स्वरूप, स्वभाव और सार हम नहीं जान पाते (श्लोक 83)

जो मेरा रूप धारण कर संसार की रचना करता है, स्थिति के समय जो पुरूष रूप है तथा जो रूद्र रूप से विश्व का ग्रास कर जाता है, अनन्त रूप से सम्पूर्ण जगत् को धारण करता है। (श्लोक 86)

एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र

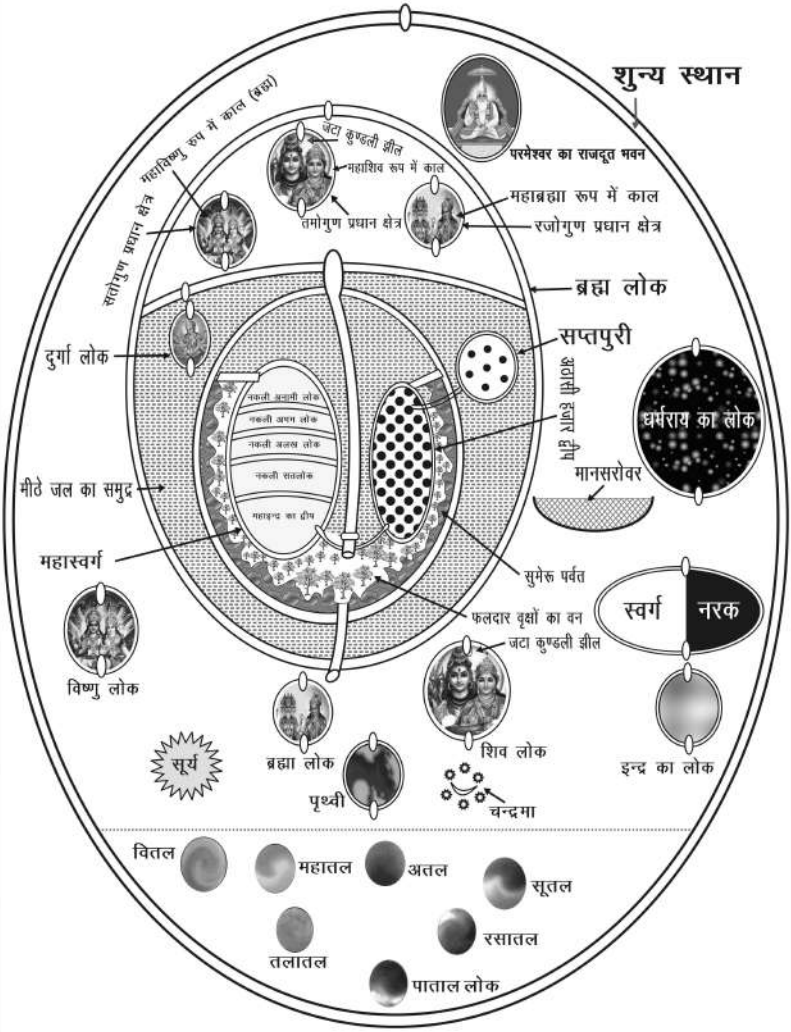

ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र

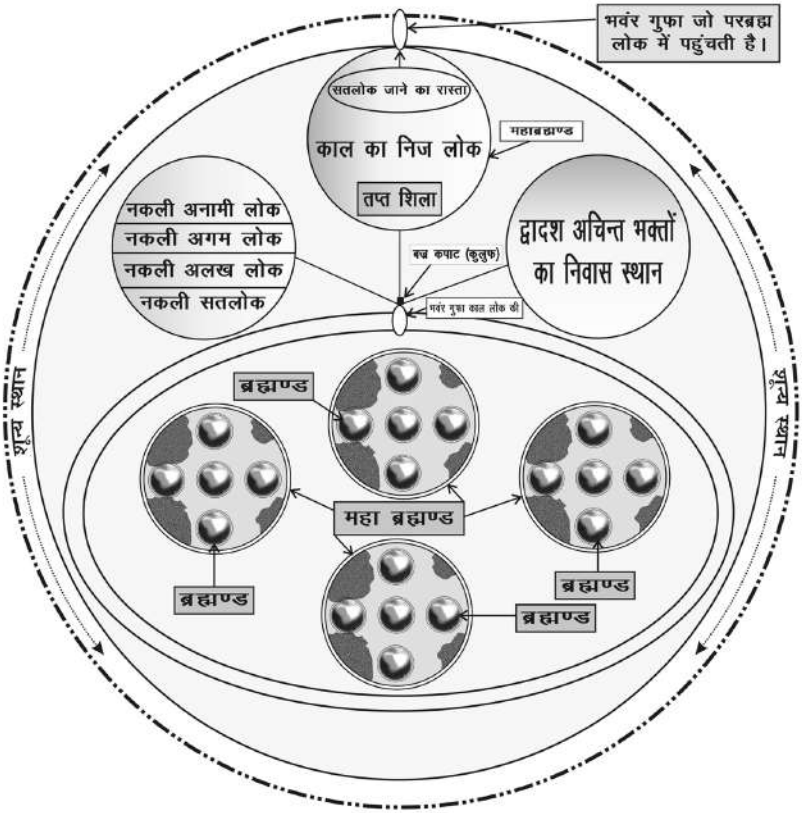

"श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं"

काल (ब्रह्म) ने प्रकृति (दुर्गा) से कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाडेगा? मन मानी करूंगा प्रकृति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो, क्योंकि उसी पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आप की (ब्रह्म की) अण्डे से उत्पत्ति हुई तथा बाद में मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ, मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी आप कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूंगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी मिल गई, मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मनमानी करूंगा। यह कह कर काल पुरूष (क्षर पुरूष) ने प्रकृति के साथ जबरदस्ती शादी की तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त - ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त - विष्णु जी तथा तमगुण युक्त - शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। जवान होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करवा देता है, फिर युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इक्ट्ठे कर देता है। तत्पश्चात् प्रकृति (दुर्गा) द्वारा इन तीनों का विवाह कर दिया जाता है तथा एक ब्रह्मण्ड में तीन लोकों (स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) में एक-एक विभाग के मंत्री (प्रभु) नियुक्त कर देता है। जैसे श्री ब्रह्मा जी को रजोगुण विभाग का तथा विष्णु जी को सतोगुण विभाग का तथा श्री शिव शंकर जी को तमोगुण विभाग का तथा स्वयं गुप्त (महाब्रह्मा - महाविष्णु - महाशिव) रूप से मुख्य मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्मण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना की है। उसी में तीन गुप्त स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) स्वयं महाब्रह्मा (मुख्यमंत्री) रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस स्थान पर उत्पन्न होता है वह स्वतः ही रजोगुणी बन जाता है। दूसरा स्थान सतोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरुष स्वयं महाविष्णु रूप बना कर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रख कर जो पुत्र उत्पन्न करता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सतोगुण युक्त होता है तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती

रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम शिव रख देते हैं तथा तमोगुण युक्त कर देते हैं। (प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, विद्यवेश्वर संहिता पष्ठ 24-26 जिस में ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तथा महेश्वर से अन्य सदाशिव है तथा रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7, 9 पष्ठ नं. 100 से, 105 तथा 110 पर अनुवाद कर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रैस गोरख पुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद्देवीमहापुराण तीसरा स्कंद पष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्ता हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) फिर इन्हीं को धोखे में रख कर अपने खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति (एक-दूसरे को मोह-ममता में रख कर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा संहार (क्योंकि काल पुरुष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकाल कर खाना होता है उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में एक तप्तशिला है जो स्वतः गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिंघला कर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) श्री शिव जी द्वारा करवाता है। जैसे किसी मकान में तीन कमरे बने हों। एक कमरे में अश्लील चित्र लगे हों। उस कमरे में जाते ही मन में वैसे ही मलिन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कमरे में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार, प्रभु का चिन्तन ही बना रहता है। तीसरे कमरे में देश भक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म (काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना की हुई है।

''तीनों गुण क्या हैं? प्रमाण सहित''

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पष्ठ सं. 24 से 26 विद्यवेश्वर संहिता तथा पष्ठ 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कपा से विद्यमान हैं। हमारा तो

आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ ? अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सष्टि-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।

उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कष्ण दास प्रकाशन मुम्बई, इसमें संस्कत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पष्ठ 10, श्लोक 42:-

ब्रह्मा – अहम् ईश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः, के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकतिः पुराणा। (42)

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकति तथा सनातनी देवी हो। (42)

पष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदां▪बिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से प्रमाणित हुआ की रजगुण - ब्रह्मा,सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव है ये तीनों नाशवान है। दुर्गा का पति ब्रह्म (काल) है यह उसके साथ भोग विलास करता है।

''पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में सष्टि रचना का प्रमाण''

''ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के माता–पिता'' (दुर्गा और ब्रह्म के योग से ब्रह्मा, विष्णु और शिव का जन्म)

पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण तीसरा स्कन्द (गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी जी, पष्ठ नं. 114 से)

पष्ठ नं. 114 से 118 तक विवरण है कि कितने ही आचार्य भवानी को सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करने वाली बताते हैं। वह प्रकति कहलाती है तथा ब्रह्म के साथ अभेद सम्बन्ध है। {जैसे पत्नी को अर्धांगनी भी कहते हैं अर्थात् दुर्गा ब्रह्म (काल) की पत्नी है।} एक ब्रह्मण्ड की सष्टि रचना के विषय में राजा श्री परीक्षित के पूछने पर श्री व्यास जी ने बताया कि मैंने श्री नारद जी से पूछा था कि हे देवर्षे ! इस ब्रह्मण्ड की रचना कैसे हुई? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में श्री नारद जी ने कहा कि मैंने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से पूछा था कि हे पिता श्री इस ब्रह्मण्ड की रचना आपने की या श्री विष्णु जी इसके रचयिता हैं या शिव जी ने रचा है? सच-सच बताने की कपा करें। तब मेरे पूज्य पिता श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि बेटा नारद, मैंने अपने आपको कमल के फूल पर बैठा पाया था, मुझे ज्ञान नहीं, इस अगाध जल में मैं कहाँ से उत्पन्न हो गया। एक हजार वर्ष तक पथ्वी का अन्वेषण करता रहा, कहीं जल का ओर-छोर नहीं पाया। फिर आकाशवाणी हुई कि तप करो। एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर सष्टि करने की आकाशवाणी हुई। इतने में मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस आए, उनके भय से मैं कमल का डण्ठल पकड़ कर नीचे उतरा। वहाँ भगवान विष्णु जी शेष शैय्या पर अचेत पड़े थे। उनमें से एक स्त्री (प्रेतवत प्रविष्ट दुर्गा) निकली। वह आकाश में आभूषण पहने दिखाई देने लगी। तब भगवान विष्णु होश में आए। अब मैं तथा विष्णु जी दो थे। इतने में भगवान शंकर भी आ गए। देवी ने हमें विमान में बैठाया तथा ब्रह्म लोक में ले गई। वहाँ एक ब्रह्मा, एक विष्णु तथा एक शिव और देखा फिर एक देवी देखी,उसे देख कर विष्णु जी ने विवेक पूर्वक निम्न वर्णन किया (ब्रह्म काल ने भगवान विष्णु को चेतना प्रदान कर दी, उसको अपने बाल्यकाल की याद आई तब बचपन की कहानी सुनाई)।

पष्ठ नं. 119-120 पर भगवान विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से कहा कि यह हम तीनों की माता है, यही जगत् जननी प्रकति देवी है। मैंने इस देवी को तब देखा था जब मैं छोटा सा बालक था, यह मुझे पालने में झुला रही थी।

तीसरा स्कंद पष्ठ नं. 123 पर श्री विष्णु जी ने श्री दुर्गा जी की स्तुति करते

हुए कहा - तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हीं से उद्भासित हो रहा है, मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर हम सभी तुम्हारी कृपा से ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) और तिरोभाव (मृत्यु) हुआ करता है अर्थात् हम तीनों देव नाशवान हैं, केवल तुम ही नित्य (अविनाशी) हो, जगत जननी हो, प्रकृति देवी हो।

भगवान शंकर बोले - देवी यदि महाभाग विष्णु तुम्हीं से प्रकट (उत्पन्न) हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्हीं हो।

विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी नाशवान हैं। मृत्युंजय (अजर-अमर) व सर्वेश्वर नहीं हैं तथा दुर्गा (प्रकृति) के पुत्र हैं तथा ब्रह्म (काल-सदाशिव) इनका पिता है।

तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 125 पर ब्रह्मा जी के पूछने पर कि हे माता! वेदों में जो ब्रह्म कहा है वह आप ही हैं या कोई अन्य प्रभु है ? इसके उत्तर में यहाँ तो दुर्गा कह रही है कि मैं तथा ब्रह्म एक ही हैं। फिर इसी स्कंद के पृष्ठ नं. 129 पर कहा है कि अब मेरा कार्य सिद्ध करने के लिए विमान पर बैठ कर तुम लोग शीघ्र पधारो (जाओ)। कोई कठिन कार्य उपस्थित होने पर जब तुम मुझे याद करोगे, तब मैं सामने आ जाऊँगी। देवताओं मेरा (दुर्गा का) तथा ब्रह्म का ध्यान तुम्हें सदा करते रहना चाहिए। हम दोनों का स्मरण करते रहोगे तो तुम्हारे कार्य सिद्ध होने में तनिक भी संदेह नहीं है।

उपरोक्त व्याख्या से स्वसिद्ध है कि दुर्गा (प्रकृति) तथा ब्रह्म (काल) ही तीनों देवताओं के माता-पिता हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु व शिव जी नाशवान हैं व पूर्ण शक्ति युक्त नहीं हैं।

तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) की शादी दुर्गा (प्रकृति देवी) ने की। पृष्ठ नं. 128-129 पर, तीसरे स्कंद में पढ़ें।

''पवित्र शिव महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण''

(काल ब्रह्म व दुर्गा से विष्णु, ब्रह्मा व शिव की उत्पत्ति)

इसी का प्रमाण पवित्र श्री शिव पुराण गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, इसके अध्याय 6 रूद्र संहिता, पृष्ठ नं. 100 पर कहा है कि जो मूर्ति रहित परब्रह्म है, उसी की मूर्ति भगवान सदाशिव है। इनके शरीर से एक शक्ति निकली, वह शक्ति अम्बिका, प्रकृति (दुर्गा), त्रिदेव जननी (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को उत्पन्न करने वाली माता) कहलाई। जिसकी आठ भुजाऐं हैं। वे जो सदाशिव हैं, उन्हें शिव, शंभू और महेश्वर भी कहते हैं। (पृष्ठ नं. 101 पर) वे अपने सारे अंगों में भस्म

रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक क्षेत्र का निर्माण किया। फिर दोनों ने पति-पत्नी का व्यवहार किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा (पृष्ठ नं. 102)।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 7 पृष्ठ नं. 103 पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरी उत्पत्ति भी भगवान सदाशिव (ब्रह्म-काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) के संयोग से अर्थात् पति-पत्नी के व्यवहार से ही हुई। फिर मुझे बेहोश कर दिया।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 9 पृष्ठ नं. 110 पर कहा है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र इन तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल-ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं।

यहाँ पर चार सिद्ध हुए अर्थात् सदाशिव (काल-ब्रह्म) व प्रकृति (दुर्गा) से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। तीनों भगवानों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की माता जी श्री दुर्गा जी तथा पिता जी श्री ज्योति निरंजन (ब्रह्म) है। यही तीनों प्रभु रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी हैं।

"पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुरान शरीफ में सृष्टि रचना का प्रमाण"

इसी का प्रमाण पवित्र बाईबल में तथा पवित्र कुरान शरीफ में भी है। कुरान शरीफ में पवित्र बाईबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाणित किया है कि कौन तथा कैसा है सृष्टि रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है।

पवित्र बाईबल (उत्पत्ति ग्रन्थ पृष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)

छटवां दिन :– प्राणी और मनुष्य : अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं, (माँस खाना नहीं कहा है।)

सातवां दिन :– विश्राम का दिन : परमेश्वर ने छः दिन में सर्व सृष्टि की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र बाईबल ने सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मानव सदृश शरीर में है, जिसने छः दिन में सर्व सृष्टि की रचना की तथा फिर विश्राम किया।

पवित्र कुरान शरीफ (सुरत फुर्कानि 25, आयत नं. 52, 58, 59)

आयत 52 :– फला तुतिअल् – काफिरन् व जहिद्हुम बिही जिहादन् कबीरा (कबीरन्) ।।52।

इसका भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी का खुदा (प्रभु) कह रहा है कि हे पैगम्बर ! आप काफिरों (जो एक प्रभु की भक्ति त्याग कर अन्य देवी–देवताओं तथा मूर्ति आदि की पूजा करते हैं) का कहा मत मानना, क्योंकि वे लोग कबीर को पूर्ण परमात्मा नहीं मानते। आप मेरे द्वारा दिए इस कुरान के ज्ञान के आधार पर अटल रहना कि कबीर ही पूर्ण प्रभु है तथा कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना (लड़ना नहीं) अर्थात् अडिग रहना।

आयत 58 :– व तवक्कल् अलल् – हरिल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही व कफा बिही बिजुनूबि अिबादिही खबीरा (कबीरा)।।58।।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी जिसे अपना प्रभु मानते हैं वह अल्लाह (प्रभु) किसी और पूर्ण प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है कि ऐ पैगम्बर उस कबीर परमात्मा पर विश्वास रख जो तुझे जिंदा महात्मा के रूप में आकर मिला था। वह कभी मरने वाला नहीं है अर्थात् वास्तव में अविनाशी है। तारीफ के साथ उसकी पाकी (पवित्र महिमा) का गुणगान किए जा, वह कबीर अल्लाह (कविर्देव) पूजा के योग्य है तथा अपने उपासकों के सर्व पापों को विनाश करने वाला है।

आयत 59 :– अल्ल्जी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि अर्रह्मानु फस्अल् बिही खबीरन्(कबीरन्)।।59।।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद को कुरान शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि वह कबीर प्रभु वही है जिसने जमीन तथा आसमान के बीच में जो भी विद्यमान है सर्व सृष्टि की रचना छः दिन में की तथा सातवें दिन ऊपर अपने सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान हो (बैठ) गया। उसके विषय में जानकारी किसी (बाखबर) तत्वदर्शी संत से पूछो

उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी तथा वास्तविक ज्ञान तो किसी तत्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो, मैं नहीं जानता।

उपरोक्त दोनों पवित्र धर्मों (ईसाई तथा मुसलमान) के पवित्र शास्त्रों ने भी मिल-जुल कर प्रमाणित कर दिया कि सर्व सृष्टि रचनहार, सर्व पाप विनाशक, सर्व शक्तिमान, अविनाशी परमात्मा मानव सदृश शरीर में आकार में है तथा सत्यलोक में रहता है। उसका नाम कबीर है, उसी को अल्लाहु अकबिरू भी कहते हैं।

आदरणीय धर्मदास जी ने पूज्य कबीर प्रभु से पूछा कि हे सर्वशक्तिमान! आज तक यह तत्वज्ञान किसी ने नहीं बताया, वेदों के मर्मज्ञ ज्ञानियों ने भी

नहीं बताया। इससे सिद्ध है कि चारों पवित्र वेद तथा चारों पवित्र कतेब (कुरान शरीफ आदि) झूठे हैं। पूर्ण परमात्मा ने कहा :-

कबीर, बेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहिं।

भावार्थ है कि चारों पवित्र वेद (ऋग्वेद - अथर्ववेद - यजुर्वेद - सामवेद) तथा पवित्र चारों कतेब (कुरान शरीफ - जबूर - तौरात - इंजिल) गलत नहीं हैं। परन्तु जो इनको नहीं समझ पाए वे नादान हैं।

"पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर् देव) जी की अमतवाणी में सष्टि रचना"

विशेष :- निम्न अमतवाणी सन् 1403 से {जब पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) लीलामय शरीर में पाँच वर्ष के हुए} सन् 1518 {जब कविर्देव (कबीर परमेश्वर) मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए} के बीच में लगभग 600 वर्ष पूर्व परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी द्वारा अपने निजी सेवक (दास भक्त) आदरणीय धर्मदास साहेब जी को सुनाई थी तथा धनी धर्मदास साहेब जी ने लिपिबद्ध की थी। परन्तु उस समय के पवित्र हिन्दुओं तथा पवित्र मुसलमानों के नादान गुरुओं (नीम-हकीमों) ने कहा कि यह धाणक (जुलाहा) कबीर झूठा है। किसी भी सद् ग्रन्थ में श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के माता-पिता का नाम नहीं है। ये तीनों प्रभु अविनाशी हैं इनका जन्म मत्यु नहीं होता। न ही पवित्र वेदों व पवित्र कुरान शरीफ आदि में कबीर परमेश्वर का प्रमाण है तथा परमात्मा को निराकार लिखा है। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। भोली आत्माओं ने उन विचक्षणों (चतुर गुरुओं) पर विश्वास कर लिया कि सचमुच यह कबीर धाणक तो अशिक्षित है तथा गुरु जी शिक्षित हैं, सत्य कह रहे होंगे। आज वही सच्चाई प्रकाश में आ रही है तथा अपने सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थ साक्षी हैं। इससे सिद्ध है कि पूर्ण परमेश्वर, सर्व सष्टि रचनहार, कुल करतार तथा सर्वज्ञ कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही है जो काशी (बनारस) में कमल के फूल पर प्रकट हुए तथा 120 वर्ष तक वास्तविक तेजोमय शरीर के ऊपर मानव सदश शरीर हल्के तेज का बना कर रहे तथा अपने द्वारा रची सष्टि का ठीक-ठीक (वास्तविक तत्व) ज्ञान देकर सशरीर सतलोक चले गए। कपा प्रेमी पाठक पढ़ें निम्न अमतवाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा उच्चारित :-

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवों का भरम नशाओ।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवन की उत्पति भाई।।

कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि राम का भेद न जाना।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछे से माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।
पेट से देवी करी पुकारा। हे साहब मेरा करो उबारा।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।
सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह संख कोस दूरी पर आई।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।
धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।
धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उनको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
अकाल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुणका यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।

गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने निजी सेवक श्री धर्मदास साहेब जी को कह रहे हैं कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण सृष्टि रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची सृष्टि की कथा सुनाता हूँ।

बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं। अब मैं बताता हूँ तीनों भगवानों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी माता जी तो अष्टंगी (दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म, काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल (ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़) की, तब दुर्गा (प्रकति) ने इसके पेट में शरण ली। मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्मण्ड समेत 16 संख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन (धर्मराय) ने प्रकति देवी (दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग से तीनों गुणों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा?

विशेष :- प्रिय पाठक विचार करें कि श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथ श्री शिव जी की स्थिति अविनाशी बताई गई थी। सर्व हिन्दु समाज अभी तक तीनों परमात्माओं को अजर, अमर व जन्म-मत्यु रहित मानते रहे जबकि ये तीनों नाशवान हैं। इन के पिता काल रूपी ब्रह्म तथा माता दुर्गा (प्रकति/अष्टांगी) हैं जैसा आप ने पूर्व प्रमाणों में पढ़ा यह ज्ञान अपने शास्त्रों में भी विद्यमान है परन्तु हिन्दु समाज के कलयुगी गुरूओं, ऋषियों, सन्तों को ज्ञान नहीं। जो अध्यापक पाठ्यक्रम (सलेबस) से ही अपरिचित है वह अध्यापक ठीक नहीं (विद्वान नही) है, विद्यार्थियों के भविष्य का शत्रु है। इसी प्रकार जिन गुरूओं को अभी तक यह नहीं पता कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं? तो वे गुरू, ऋषि,सन्त ज्ञान हीन हैं। जिस कारण से सर्व भक्त समाज को शास्त्र विरूद्ध ज्ञान (लोक वेद अर्थात् दन्त कथा) सुना कर अज्ञान से परिपूर्ण कर दिया। शास्त्रविधि विरूद्ध भक्तिसाधना करा के परमात्मा के वास्तविक लाभ (पूर्ण मोक्ष) से वंचित रखा सबका मानव जन्म नष्ट करा दिया क्योंकि श्री मद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में यही प्रमाण है कि जो शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण पूजा करता है। उसे कोई लाभ नहीं होता पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने सन् 1403 से ही सर्व शास्त्रों युक्त ज्ञान अपनी अमतवाणी (कविरवाणी) में बताना प्रारम्भ किया था। परन्तु उन अज्ञानी गुरूओं ने यह ज्ञान भक्त समाज तक नहीं जाने दिया। जो वर्तमान में स्पष्ट हो रहा है इससे सिद्ध है कि कर्विदेव (कबीर प्रभु) तत्वदर्शी सन्त रूप में स्वयं पूर्ण परमात्मा ही आए थे।

"आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में सृष्टि रचना का संकेत"

श्री नानक साहेब जी की अमृतवाणी, महला 1, राग बिलावलु, अंश 1 (गु.ग्र. पृ. 839)

आपे सचु कीआ कर जोड़ि। अंडज फोड़ि जोडि विछोड़।।
धरती आकाश कीए बैसण कउ थाउ। राति दिनंतु कीए भउ–भाउ।।
जिन कीए करि वेखणहारा।(3)
त्रितीआ ब्रह्मा–बिसनु–महेसा। देवी देव उपाए वेसा।।(4)
पउण पाणी अगनी बिसराउ। ताही निरंजन साचो नाउ।।
तिसु महि मनुआ रहिआ लिव लाई। प्रणवति नानकु कालु न खाई।।(10)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि सच्चे परमात्मा (सतपुरुष) ने स्वयं ही अपने हाथों से सर्व सृष्टि की रचना की है। उसी ने अण्डा बनाया फिर फोड़ा तथा उसमें से ज्योति निरंजन निकला। उसी पूर्ण परमात्मा ने सर्व प्राणियों के रहने के लिए धरती, आकाश, पवन, पानी आदि पाँच तत्व रचे। अपने द्वारा रची सृष्टि का स्वयं ही साक्षी है। दूसरा कोई सही जानकारी नहीं दे सकता। फिर अण्डे के फूटने से निकले निरंजन के बाद तीनों श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की उत्पत्ति हुई तथा अन्य देवी-देवता उत्पन्न हुए तथा अनगिनत जीवों की उत्पत्ति हुई। उसके बाद अन्य देवों के जीवन चरित्र तथा अन्य ऋषियों के अनुभव के छः शास्त्र तथा अठारह पुराण बन गए। पूर्ण परमात्मा के सच्चे नाम (सत्यनाम) की साधना अनन्य मन से करने से तथा गुरु मर्यादा में रहने वाले (प्रणवति) को श्री नानक जी कह रहे हैं कि काल नहीं खाता।

राग मारु (अंश) अमृतवाणी महला 1 (गु.ग्र.पृ. 1037)

सुनहु ब्रह्मा, बिसनु, महेसु उपाए। सुने वरते जुग सबाए।।
इसु पद बिचारे सो जनु पुरा। तिस मिलिए भरमु चुकाइदा।।(3)
साम वेदु, रुगु जुजरु अथरबणु। ब्रहमें मुख माइआ है त्रैगुण।।
ता की कीमत कहि न सकै। को तिउ बोले जिउ बुलाईदा।।(9)

उपरोक्त अमृतवाणी का सारांश है कि जो संत पूर्ण सृष्टि रचना सुना देगा तथा बताएगा कि अण्डे के दो भाग होकर कौन निकला, जिसने फिर ब्रह्मलोक की सुन्न में अर्थात् गुप्त स्थान पर ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी की उत्पत्ति की तथा वह परमात्मा कौन है जिसने ब्रह्म (काल) के मुख से चारों वेदों (पवित्र ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) को उच्चारण करवाया, वह पूर्ण परमात्मा जैसा चाहे वैसे ही प्रत्येक प्राणी को बुलवाता है। इस सर्व ज्ञान को पूर्ण बताने वाला सन्त मिल जाए तो उसके पास जाइए तथा जो सभी शंकाओं का पूर्ण निवारण करता है, वही पूर्ण सन्त अर्थात् तत्वदर्शी है।

''सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग में परमेश्वर का आगमन''

धर्मदास जी ने विनम्रता से करबद्ध होकर प्रश्न किया। हे जिन्दा महात्मा जी! क्या आप सतयुग में भी आए थे?

कबीर देव (कबीर परमेश्वर) ने उत्तर दिया :-

सतयुग में सत्सुकृत अवतारा, त्रेता नाम मुनिन्द्र मेरा।
द्वापर में करूणामय कहाया, कलयुग में कबीर कह टेरा।।
चारों युग में हम पुकारे, कूक कहा हम हेल रे।
हीरे माणिक मोती बर्षें, यह जग चुगता ढेल रे।।
सतयुग में मनु समझाया,काल वश रहा मार्ग नहीं पाया।
उल्टा दोष मोही पर लगाया, वामदेव मेरा नाम धराया।।
त्रेता में नल नील चेताया, लंका में चन्द्र विजय समझाया।
सीख मन्दोदरी रानी मानी, समझा नहीं रावण अभिमानी।।
विभिषण किन्ही सेव हमारी, तातें हुआ लंका छत्तरधारी।
हार गए थे जब त्रिभुवन राया, समुद्र पर सेतु मैं ही बनवाया।।
तीन दिवश राम अर्ज लगाई, समुद्र प्रकट्या युक्ति बताई।
नल नील की शक्ति बताई, नल नील में मस्ती छाई।।
उन नहीं किन्हा याद गुरूदेव, तातें हम शक्ति छीन लेव।
नल नील को लगी अंघाई, तातें पत्थर तिरे नहीं भाई।।
मैं किन्हें हल्के वे पत्थर भारी, सेतु बांध रघुवर सेना तारी।
लीन्हें चरण राम जब मोरे, लक्ष्मण ने दोहों कर जोरे।।
दोनों बोले एक बिचार, ऋषिवर तुम्हरी शक्ति अपार।
हनुमान नत मस्तक होया, अंगद सुग्रीव ने माना लोहा।।
सेतु बन्ध का भेद न जाने भाई, सुकी दीन्हीं राम बड़ाई।
रामचन्द्र कह कोई शक्ति न्यारी, जिन्ह यह रचि सष्टि सारी।।
अज्ञानी कहें रामचन्द्र रचनेहारा, जिने दशरथ घर लीन्हा अवतारा।
ऐसी भूल पड़ी धर्मदासा, यथार्थ ज्ञान न किस ही पासा।।
ऊवाबाई बकें ब्रह्मज्ञानी, तत्वज्ञान की सार न जानी।
द्वापर पाण्डव यज्ञ पूर्ण किन्हीं, हो गई थी सबन की हीनि।।
संहस अठासी बैठे ऋषि जन, सब ही खा लिया था भोजन।
तेतीस कोटि देवता सारे, शंख नहीं बजा रहे सब हारे।।
द्वादश करोड़ ब्राह्मण आए। बैठे सबी मुंह लटकाए।
ब्रह्मा, विष्णु, शिव गुप्त यज्ञ मांहे, बजा न शंख भोजन खाऐं।
छप्पन करोड़ यादव आरे, देख रहे तमासा सारे।

कष्ण चन्द्र पर लगी आशा भारी, नहीं बजा सके शंख बाल बिहारी।।
एक बाल्मीक साधक म्हारा, उन समझा ज्ञान तत् सारा।
श्री कष्ण जब ध्यान लगाया, निरंजन ने गुप्त भेद बताया।।
कष्ण चन्द्र पाण्डव समझाया, एक सुदर्शन भक्त बताया।
वह यज्ञ में आवै भाई, तब यह शंख आवाज कराही।।
बाल्मीकी है साधक पूरा, पूर्ण प्रभु के चरण हजूरा।
पांचों पाण्डव चले सुदर्शन पासा, मैं किन्हा एक अजब तमासा।।
भेज दिया सुदर्शन केही ठोरा, सुदर्शन रूपधरि बन बैठा में भोरा(भोला)।
छः जनों मोहे साष्टांग लगाई, तब में वाकेसंग यज्ञ महि आई।।
मोहे देख मन में सबन हंसी आई, यह शुद्र कैसे शंख बजाई।
द्रोपदी भोजन धर लाई थारी, खीर सब्जी ओर हलवापुरी न्यारी न्यारी।।
मैं किन्ही सब एकम्–एका, द्रोपदी ने यह सब देखा।
अन्दर रोष किया द्रोपदी रानी, यह शुद्र महा अज्ञानी।।
जिने नहीं भोजन खाना आय, कैसे दे यह शंख बजाय।
घुवें आंख फुटि भोजन बनाया, अनाड़ी ने सर्व मिलाया।।
फूट गये हैं भाग हमारे, ऐसे मूर्ख घर पधारे।
द्रोपदी के दिल की बातां, जान गए हम फिर खाई भातां।।
पांच ग्रास भोजन खाया, पांच बार की आवाज शंख राया।
कष्ण को मैं प्रेरणा दिन्हीं, तब वह जाना मेरी माया झिनी।।
कष्ण कहा यह पूर्ण करतारा, इनसे बाजे संख तुम्हारा।
कष्ण चन्द्र ने द्रोपदी को समझाया, तब मेरे चरण धोए चरणामत बनाया।।
पीया द्रोपदी हो आधीन अपारा, शेष पिया श्री कष्ण सारा।
बाजा संख अखण्ड धुन लाई, पूरी पथ्वी पर आवाज सुनाई।।
तीनों लोकों में सुनि शंख आवाज, तुम सुदर्शन सन्तन सिर ताज।
ताको सतभक्ति समझाई, अपनी महिमा आप बताई।।
मेरे गुरू करूणामय तत्वज्ञानी, ये सब ऋषि देव है अभिमानी।
उनसे दिक्षा लो चल सब भाई, तातें तुमरा कल्याण हुजाई।।
माने नहीं मती के हीना, कष्ण बोले बचन अधिना।
हम पर कपा तुम बहु किन्ही, हमरी लज्जा रख तुम लिन्हीं।।
कष्ण कह तुझे स्थान पहुँचाऊँ, रथ–घोड़े जोड़ शीघ्र मंगाऊं।
एता कष्ट ना करो सुजाना, तब हम हुए अन्तर्धाना।।
अब मैं कलयुग में लीन्हा अवतारा, काशी नगर है अस्थान हमारा।
कबीर नाम है मेरा भाई,ऋषि रामानन्द से दिक्षा पाई।।
मात–पिता मेरे नहीं बालक रूप प्रकट्ाया।

लहरतारा तालाब कमल पर, तहाँ जुलाहे ने पाया।।
आया जगत् भव सागर तारण, साचि कहूं जग लागै मारन।
जो कोई माने कहा हमारा, फिर नहीं होवे जन्म दुबारा।।
ऐसा ज्ञान सुना जब दोई, चरण पकड़ दम्पत्ति रोई।
हमें ज्ञान सुनाओ जिन्दा, काटो जन्म मरण गल फंदा।।

उपरोक्त अद्वितीय ज्ञान का संकेत सुनकर दोनों (धर्मदास तथा आमिनी) ने परमेश्वर से पूर्ण ज्ञान सुनाने की प्रार्थना की। परमेश्वर कबीर जी ने सृष्टि रचना पुनः सुनाई :- (कृप्या पाठकजन पढ़े सृष्टि रचना इसी पुस्तक के पृष्ठ 250 से 269 पर) तत्वज्ञान को परमेश्वर के मुख कमल से सुनकर दोनों श्रद्धालु (धर्मदास व आमिनी) अति प्रसन्न हुए व प्रत्येक प्रत्यक्ष प्रमाण को अपने ही सद्ग्रन्थों में देख कर निरूत्तर हो गए। दोनों ने परमेश्वर से उपदेश (दीक्षा) प्राप्त किया। परमेश्वर कबीर जी ने प्रथम मन्त्र दिया {जो मन्त्र यह दास (संत रामपाल दास) देता है} एक दिन ज्ञान चर्चा करते समय धर्म दास जी ने कहा हे परवरदीगार! आप का ज्ञान अद्वितीय है परन्तु आज तक किसी ने नहीं बताया कि श्री ब्रह्माजी, श्री विष्णु जी तथा शिवजी से भी अन्य परम ईश्वर है। यदि आप अपने धाम (सतलोक) की एक झलक मुझ दास को दिखा दें तो मेरा मन मुझे भ्रमित नहीं करेगा।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा अच्छा भक्त आप को सतलोक लिए चलता हूँ। यह कह कर धर्मदास की आत्मा को शरीर से भिन्न करके परमेश्वर कबीर जी अपने साथ ले गए। धर्मदास जी अचेत हो गए अर्थात् धर्मदास जी का शरीर रह गया। जो अचेत अवस्था में नजर आ रहा था परन्तु मृतक नजर नहीं आ रहा था। पूर्ण परमात्मा ने भक्त धर्मदास जी को एक ब्रह्मण्ड की सर्व व्यवस्था दिखाई, तीनों देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु व शिवजी) के लोक तथा स्वर्ग-नरक तथा इन्द्र का लोक, धर्मराज का लोक उस के ऊपर ब्रह्मलोक तथा ब्रह्मलोक में बने नकली सतलोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी लोक दिखाए जो काल रूपी ब्रह्म का माया जाल है। जो जीव को धोखा देने के लिए बनाया है । क्योंकि उस को पता है कि परमेश्वर अपनी आत्माओं को लेने के लिए अपने किसी पुत्र को भेजेगा तथा वह ऊपर की जानकारी देगा। उसके ज्ञान को जान कर जीवात्मा इस नकली सतलोक में आकर अपने आप को पूर्ण मुक्त समझेंगे तथा मेरे (काल के) जाल में फंसे रहेंगे।

इसके पश्चात् ब्रह्मलोक के सर्वोपरि स्थान पर इसी काल रूपी ब्रह्म ने तीन गुप्त स्थान बनाए है। जहाँ पर यह अपनी पत्नी दुर्गा के साथ साकार में रहता है। इसी ब्रह्मलोक में एक दुर्गा का लोक भिन्न भी है। इसके पश्चात् काल के इक्कीस ब्रह्मण्डों का भेद दिखा व बताकर परमेश्वर कबीर देव जी अपनी प्यारी आत्मा

धर्मदास जी को परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों से पार अपने सतलोक में ले गए। भंवर गुफा के तुरन्त पश्चात् सतलोक प्रारम्भ हो जाता है। धर्मदास जी सतलोक में पहुँच कर अति प्रसन्न हुआ। वहाँ के हंस आत्माओं से मिला तथा काल जाल में फंसने के कारण से परिचित हुआ।

धर्मदास जी ने देखा कि एक बहुत बड़े गुम्बद में एक श्वेत आसन पर परमेश्वर विराजमान हैं। परमेश्वर के शरीर से अत्यधिक प्रकाश निकल रहा है। धर्मदास जी को साथ लेकर गया था वह जिन्दा सन्त गुम्बद में प्रविष्ट हुआ तथा परमेश्वर के सिर पर चंवर ढुराने लगा। धर्मदास जी ने सोचा कि सर्व सृष्टि रचनहार, पूर्ण परमात्मा तो सिंहासन पर विराजमान है तथा यह जिन्दा सन्त यहाँ का सेवक लगता है जो परमेश्वर पर चंवर कर रहा है। उसी समय धर्मदास ने देखा कि, तख्त (सिंहासन) पर बैठे तेजोमय शरीर युक्त परमेश्वर ने आसन छोड़ दिया तथा जिन्दा सन्त उस सिंहासन पर बैठ गया तथा परमेश्वर जिन्दा पर चंवर करने लगा। धर्मदास को अनोखा लगा कि एक सेवक पर परमेश्वर चंवर किसलिए कर रहे हैं ? देखते ही देखते तेजोमय शरीर युक्त परमेश्वर सिहांसन पर विराजमान जिन्दा सन्त के शरीर में समा गए अकेले जिन्दा सन्त तख्त (सिंहासन) पर विराजमान थे। तब धर्मदास को ज्ञान हुआ कि यह जिन्दा कोई साधारण सेवक या सन्त नहीं है। ये तो पूर्ण परमात्मा है।

धर्मदास जी से कबीर परमेश्वर ने कहा धर्मदास मैं! वर्तमान में बनारस (काशी) शहर में कबीर जुलाहे की भूमिका करने गया हुआ हूँ। वहाँ पर काल द्वारा फैलाए अज्ञान को समाप्त करने के लिए तत्व ज्ञान प्रचार कर रहा हूँ। गुरू मर्यादा बनाए रखने के लिए मैंने स्वामी रामानन्द महाराज जी को गुरू बनाया है। उनको भी मैं यहीं (सतलोक में) लाया था तब स्वामी रामानन्द जी का संशय नष्ट हुआ था तथा अब वे मेरे द्वारा बताए तत्वज्ञान के आधार से भक्ति कर रहे हैं तथा पूर्व वाली साधना त्याग दी है। अब आप लौट कर अपने घर जाओ आप का परिवार आप को अचेत देख कर तीन दिन से दुःखी है। धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से विनय की हे परमेश्वर! मुझे यहीं अपने पास सत्यलोक में रख लो उस काल लोक में मत भेजो। वहां तो प्रत्येक प्राणी महाकष्ट भोग रहा है। सर्व प्राणी काल रूपी ब्रह्म को ही परमेश्वर मान कर उसी की साधना करके जन्म-मृत्यु-नरक व स्वर्ग में हरहट के कुएं की तरह चक्र लगा रहे हैं।

मोहे राख लियो महाराज हम से बिगड़ी है ।टेक।
बिगड़ी है महाराज हम से बिगड़ी है।।
हम जाने वह परिवार हमारा, वह तो सब काल का चारा।
मत भेजो महाराज काल की नगरी है (मोहे राख लियो————)
धर्म–कर्म की सार न जानी, बना फिरूं था महा अभिमानी।

बचा लियो महाराज, आग सी लगरी है (मोहे राख लियो–––––)
सतलोक है निज घर हमारा, काल बली ने जाल पसारा।
भूल हुई महाराज हम से तगड़ी है (मोहे राख लियो––––––––)
धर्मदास है दास तुम्हारा, मत धका दो हे करतार।
दया करो महाराज पाप की गठरी है (मोहे राख लियो––––––––)

परमेश्वर ने कहा हे प्रिय आत्मा धर्मदास! जितनी भी आत्माऐं काल के लोक में गई हैं। वे स्वइच्छा से गऐ हैं। जितनी प्रबल इच्छा से काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) के साथ आत्माऐं गई हैं उतनी ही प्रबल इच्छा सतलोक आने की उत्पन्न होगी तब ही यहां सत्यलोक में प्रवेश हो सकेगा। उस से पूर्व आप सर्व आत्माओं ने सत्य साधना करके भक्ति के धनी होना है तथा काल के लोक का ऋण भी चुकाना है। वह तब ही तुम्हें मुक्त करेगा।

{विशेष :– यही प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 62 व 66 में है गीता ज्ञान दाता काल रूपी ब्रह्म ने श्लोक 62 में कहा है कि हे अर्जुन (भारत) तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा (जो गीता ज्ञान दाता से अन्य है) उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा सनातन (सदा रहने वाले अर्थात सत्य) स्थान (लोक) को प्राप्त होगा। (गी.18/मं.62) गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ओम्–तत्–सत् मन्त्र के जाप को पूर्ण परमात्मा प्राप्ति का कहा है तथा गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में कहा है कि ओम् यह एक अक्षर मुझ ब्रह्म (गीता ज्ञान दाता) का नाम मन्त्र है जो अन्तिम स्वांस तक जाप करने का है। इसकी नाम जाप की कमाई करनी है। तत् मन्त्र यह सांकेतिक है। इसका जाप परब्रह्म की कमाई का है। सत मन्त्र यह भी सांकेतिक है। जो पूर्ण ब्रह्म की कमाई का है। जो साधक तीन मन्त्र (ओम्–तत्–सत्) का जाप आजीवन करता है तथा शरीर त्याग कर जाता है। तो ब्रह्म अर्थात् काल के ॐ नाम के जाप की कमाई तथा यज्ञ आदि सर्व धार्मिक पूजाऐं ब्रह्म (गीता ज्ञान दाता) को त्याग देता है। इस ब्रह्म की धार्मिक पूजाओं का लाभ काल लोक में प्राप्त नहीं करता {ॐ नाम की साधना की कमाई से साधक ब्रह्मलोक में बने नकली सत्यलोक में चला जाता है। वहाँ अपने पुण्यों को समाप्त करके पाप कर्मों का फल नरक में भोगता है पश्चात् पूनर् जन्म पथ्वी लोक पर कर्माधार से प्राप्त करके काल जाल में फंसकर रह जाता है परमशान्ति अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। तत्वदर्शी सन्त के बताए मार्ग अनुसार साधक ॐ नाम के जाप की भक्ति कमाई का प्रतिफल प्राप्त नहीं करता} उसे ब्रह्म (काल रूपी ब्रह्म अर्थात् गीता व वेद ज्ञान दाता) को दे देता है। जिस कारण से साधक ब्रह्म काल के (पाप कर्मों रूपी) ऋण से मुक्त होकर आगे सत्यलोक को प्रस्थान कर देता है तथा तत् मन्त्र (जो सांकेतिक है अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म का जाप है) की भक्ति कमाई को परब्रह्म को दे देता है जिस कारण से परब्रह्म के लोक से पार जाने का ऋण उतर जाता है। सत् मन्त्र (जो परम अक्षर

ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म का नाम जाप है जिसके जाप की कमाई से सत्यलोक में स्थाई स्थान प्राप्त करता है) के जाप की कमाई को साथ लेकर त्री नाम साधक सत्यलोक में उस परमेश्वर (सत्य पुरूष) के पास चला जाता है तथा सनातन स्थान अर्थात् सत्यलोक प्राप्त करता है तथा परमशान्ति (पूर्ण मोक्ष) को प्राप्त करता है। उसके पश्चात् साधक लौटकर इस संसार में कभी नहीं आते अर्थात् उनका पुनःजन्म नहीं होता। गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में भी प्रमाण है। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में जिस अन्य उस परमेश्वर की शरण में जाने को कहा है उस की विधि है कि :–

गीता अध्याय 18 श्लोक 66 का हिन्दी अनुवादः–

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः। ६६।

सर्वधर्मान् परित्यज्यमाम् एकम् शरणम् व्रज।
अहम् त्वा सर्व पापेभ्यः मोक्षिष्यामि मा शुचः।।

अनुवादः मेरी (सर्वधर्मान्) सर्व धार्मिक पुजाओं, अर्थात् ॐ नाम के जाप की कमाई व यज्ञादि को (माम्) मुझ गीता ज्ञान दाता में (परित्यज्य) त्यागकर (एकम्) उस एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर की (शरणम्) शरण में (व्रज)जा (अहम्) मैं अर्थात् गीता ज्ञान दाता (त्वा) तुझे (सर्वपापेभ्यः) सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा (मा शुचः) तू शोक मत कर (गीता अ.18/मं.66)

नोट विशेष :– आज (सन् 2014) तक जितने भी गीता जी के अनुवाद कर्ताओं ने गीता जी के अनुवाद में व्रज शब्द का अर्थ आना किया है जबकि व्रज शब्द का अर्थ जाना, चले जाना, दूर जाना, गमन करना है। तत्व ज्ञान के अभाव से ही श्री मद् भगवत गीता जी के ज्ञान का अपने हिन्दी अनुवाद में अज्ञान किया है। जैसे अंग्रेजी के शब्द go का अर्थ जाना होता है यदि go का अर्थ कहीं आना किया हो तो वह उचित नहीं है। उपरोक्त इस विशेष विवरण का भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा कोई अन्य ही है जिसका उल्लेख गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी है। जिस पूर्ण ब्रह्म की शरण में जाने से ही जीवात्मा पूर्ण मोक्ष (परमशान्ति) को प्राप्त करता है। उस के पास जाने का मार्ग तत्वदर्शी सन्त बताएगा (गीता अध्याय 4/मं. 34 में तत्वदर्शी सन्त का उल्लेख है) तीन नाम की भक्ति करके प्रथम मन्त्र ओम् अक्षर के जाप की कमाई व यज्ञादि क्रियाओं का पुण्य ब्रह्मकाल (ज्योति निरंजन) में त्याग देने के पश्चात् ऋण मुक्त होकर जीवात्मा निष्पाप होकर सत्यलोक में उस परमेश्वर (तत् ब्रह्म) के पास चला जाएगा उस परम अक्षर ब्रह्म (पूर्ण परमात्मा) की कृपा से ही प्राणी परमशान्ति अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करेगा। इसीलिए भक्त धर्मदास जी आप को काल के ऋण से मुक्त होना है उस की विधि उपरोक्त है।}

धर्मदास जी ने नम्रता से विनय पूर्वक कहा कि हे परमेश्वर! ब्रह्म (काल) के ऋण से मुक्त होने की विधि क्या है? कृपा मुझ अपराधी को बताईए। परमेश्वर ने कहा हे धर्मदास! मैं काशी शहर में (भारत वर्ष की पवित्र जमीं पर) ''कबीर'' नाम धारण करके जुलाहे का कार्य करने का अभिनय करके तत्वदर्शी सन्त की भूमिका करने गया हुआ हूँ। मैंने काशी शहर के लहर तारा नामक जलाशय में एक कमल के फूल पर शिशु रूप धारण किया था। उस दिन नीरू नामक जुलाहा अपनी पत्नी नीमा के साथ उस तालाब में स्नान करने को आया था। वह निःसन्तान था। मुझे बालक रूप में प्राप्त करके उस की पत्नी नीमा का मेरे प्रति अति वात्सल्य हो गया। वे मुझे अपने घर ले गए तथा पुत्र रूप से मेरा पालन किया। मैंने कंवारी गाय का दूध बचपन में पीया था जो मेरी कृपा से ही सम्भव हो सका था। मै जब भी जिस युग में प्रकट होता हूँ तथा एक मानव जीवन जैसी पूर्ण लीला करने जाता हूँ तो उस समय शिशु रूप ही धारण करता हूँ। तब मेरी परवरिश (पालन) लीला कंवारी गायों से ही होती है।

{विशेषः– यही प्रमाण ''ऋग्वेद'' मण्डल 9 सुक्त 1 मन्त्र 9 तथा मण्डल 9 सुक्त 96 मन्त्र 16 से 20 तक भी है।

हे धर्मदास! काल ब्रह्म ने सर्व आत्माओं को जीवरूप प्रदान कर दिया है तथा तत्वज्ञान को छुपा कर लोकवेद (कहे–सुने ज्ञान) पर आरूढ़ किया हुआ है। इसलिए तत्वज्ञान बताने के लिए मैं (कविर्देव) वहाँ तत्वदर्शी सन्त की भूमिका करके एक पूर्ण जीवन (जो मानव का होता है) पृथ्वी पर रहता हूँ। मुझे प्रसिद्ध कवि की उपाधि भी जनता द्वारा दी जाती है वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। भोले श्रद्धालु मुझ परमेश्वर को जान नहीं पाते क्योंकि काल ब्रह्म के लोक वेद के आधार से सर्व काल के दूतों (सन्तों) ने परमेश्वर को निराकार बताया होता है तथा समाधी में उसका प्रकाश शरीर में देखना ही अन्तिम उपलब्धि अर्थात् प्रभु प्राप्ति बताई होती है। जब की चारों वेद साक्षी है कि परमेश्वर सशरीर है। मानव सदृश साकार है। यजुर्वेद अध्याय 5 श्लोक 1 में मेरी दोनों स्थिति में सशरीर साकार होने का प्रमाण है। फिर भी ज्ञानहीन ऋषिजन काल द्वारा हरि गई बुद्धि के कारण लोक वेद को ही उत्तम मानते रहते हैं तथा यही लोक वेद जनता में प्रचार करके दिगभ्रष्ट (गुमराह) करते रहते हैं।

यजुर्वेद अध्याय 5 मन्त्र 1 में लिखा है

अग्नेः तनुः असि। विष्णवे त्वा सोमस्य तनूः असि।

विष्णवे त्वा अतिथ्येः अतिथ्यम् असि विष्णवेत्वा श्येनाय त्वा सोम भृते विष्णवे त्वा अग्नये त्वा रायः पोषदे विष्णवे त्वा (1)

अनुवाद (हिन्दी में) :– (अग्नेः) हे परमेश्वर आपका (तनूः) शरीर (असि) हे अर्थात् हे परमेश्वर आप सशरीर हैं। (विष्णवे) सर्व का पालन करने के लिए (त्वा) उस (सोमस्य) अमर परमेश्वर का (तनूः) शरीर (असी) है। (त्वा) वह परमेश्वर

(विष्णवे) तत्व ज्ञान से परिपूर्ण करने के लिए अर्थात् तत्व ज्ञान से आत्माओं का पोषण करने के लिए (अतिथ्ये) अतिथि रूप में आता है उस अतिथि रूप में आए परमेश्वर का (अतिथ्यम्) अतिथि सत्कार करना योग्य है अर्थात् वही तत्वदर्शी सन्त रूप में प्रकट परमेश्वर पूज्य है। (त्वा) वह परमेश्वर (विष्णवे) तत्व ज्ञान द्वारा आत्माओं को पोषण करने के लिए (श्येनाय) अलल पक्षी की तरह शीघ्र गामी होकर यहाँ आकर अज्ञान निन्द्रा में सोए हुओं को जगाने वाला है। (त्वा) वह परमेश्वर आप (सोमभते) सतपुरूष की भक्तिरूपी अमत से परिपूर्ण करने वाला (त्वा) वह परमेश्वर स्वयं ही (विष्णवे) पालन के लिए विष्णु रूप से प्रसिद्ध है। (अग्नेय) परमेश्वर के लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं है वह परमेश्वर (त्वा) आप (रायःपोषदे) भक्ति रूपी धन से परिपूर्ण करने वाला (विष्णवे) व पालन करने के लिए पालन कर्त्ता है।

भावार्थः–इस मन्त्र में वेद ज्ञान दाता ने पूर्ण परमात्मा की महिमा व स्थिति बताई है। इसमें दो बार साक्षी दी है कि परमेश्वर सशरीर है। उस परमेश्वर अर्थात् अमर पुरूष का अन्य शरीर भी है जिसको धारण करके इस लोक में अतिथी अर्थात् मेहमान रूप में आता है। अतिथि का अर्थ है जिस के आने की तिथि पूर्व निर्धारित न हो। बिना निर्धारित तिथि को आने वाले को अतिथि कहते हैं। वह परमात्मा अतिथि रूप में सन्त रूप धारण करके तत्वज्ञान द्वारा सर्व आत्माओं को यर्थाथ भक्ति साधना बता कर भक्तिरूपी धन से धनी बनाता है। वह अलल पक्षी की तरह शीघ्र गामी है। वही पूजा के योग्य है। यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 26-27 सुक्त 82 मंत्र 1 से 3 में भी है}

परमेश्वर ने कहा हे धर्मदास! आप काशी में आइए आप को द्वितीय मन्त्र अर्थात् सतनाम प्रदान करूंगा तत् पश्चात् आप की भक्ति कमाई देखकर सारनाम (जो तीन मन्त्र का होता है) प्रदान करके पूर्ण मोक्ष का अधिकारी बनाऊँगा। आप लौट जाओ। चिन्ता मत कर मैं तेरे साथ-2 रहूँगा। काल के द्वारा दी जाने वाली प्रत्येक पीड़ा से तेरी रक्षा करूंगा। तीसरे दिन धर्मदास जी सचेत हुआ अर्थात होश में आया। अपने पास बैठे परिजनों को देखकर आश्चर्य हुआ कि वास्तव में मैं सतलोक की सैर करके आया हूँ। यदि धर्मदास जी को यह सर्व सतलोक की सैल एक रात्रि में हो जाती तो वह इसे स्वपन मात्र मानता। धर्मदास जी के होश में आने से सर्व परिजनों के हृदय में खुशी की लहर दौड़ गई।

धर्मदास जी पथ्वी पर आकर अति दुःखी हो गए। अपनी पत्नी आमिनी को बताया कि जो जिन्दा महात्मा रूप में अपने घर आए थे वे पूर्ण परमात्मा हैं। उनकी महिमा को मैं आँखों देखकर आया हूँ। वे मुझे अपने साथ सतलोक में लेकर गए थे। आज वापिस भेजा है। यह तो काल का भयंकर लोक है। वह परमेश्वर बनारस (काशी) में कबीर नाम से प्रकट है तथा जुलाहे का कार्य करते हैं। मैं काशी शहर में जाकर परमेश्वर के दर्शन करूंगा। दूसरे दिन धर्मदास जी

ने काशी शहर को प्रस्थान किया। काशी शहर में कबीर परमेश्वर का वही रूप जो सत्यलोक में जिन्दा रूप में सिंहासन पर विराजमान देखा था बनारस में देखकर उनके चरणों में गिर गया तथा ध्यान पूर्व देखता रहा। तब परमेश्वर ने बिना नाम पूछे ही कहा आओ धर्मदास मैं आप ही की प्रतिक्षा कर रहा था। परमेश्वर के मुख से अपना नाम सुन कर निःसंशय हो गया कि ये वही परमेश्वर हैं। धर्मदास जी ने आँखों में पानी भर कर रूंधेकण्ठ से कहा हे दीनदयाल! आप हम पापीयों के लिए अपना सुखदाई स्थान त्याग कर कष्ठ उठाने आए हो।

परमेश्वर बोले, हे प्रिय आत्मा धर्मदास! मैं सर्व प्राणियों का पिता हूँ पिता अपनी सन्तान को सुखी करने के लिए स्वयं अनेकों कष्ट उठाकर भी कष्ट महसूस नहीं करता। परन्तु इस काल ब्रह्म ने मेरी आत्माओं को विपरीत ज्ञान से भ्रमित कर रखा है। जिस कारण से ये मुझे पहचान नहीं पा रहे। आपको इसलिए सतलोक के दर्शन कराए हैं कि आप मेरे ज्ञान के गवाह (साक्षी) बन सको। आने वाले समय में आपको मेरा साक्षी माना जाएगा।

मैं रोवत हूँ संष्टि को, संष्टि रोवत मोहे।
कहे कबीर इस वियोग को, जान न सकता कोए।।

भावार्थः-कबीर परमेश्वर ने कहा मैं अपनी आत्माओं के लिए रोता हूँ कि मुझे पहचानों और सतलोक चलो। आत्माऐं सुखदायक परमेश्वर को खोज रहे हैं परमशान्ति प्रदान करने वाले परमेश्वर के लिए रोते हैं। मैं कहता हूँ कि मैं पूर्ण परमात्मा हूँ। ये काल ब्रह्म द्वारा भ्रमित आत्माऐं कहती हैं कि तु जुलाहा कैसे पूर्ण परमात्मा हो सकता है। इस प्रकार हमारे वियोग को कोई नहीं समझ रहा। आप जैसे पुण्यात्माओं के द्वारा इनका भ्रम निवारण करके तत्वज्ञान प्रदान करूंगा तथा सत्य साधना बता करके भक्ति के धनी बनाऊंगा। जिससे ये सर्व साधक काल ब्रह्म के ऋण से मुक्त होकर पूर्ण मोक्ष प्राप्त करके मेरे पास सत्यलोक में आनन्द से रहेंगे।

''तप्त शिला पर जल रहे प्राणियों से वार्ता''

धर्मदास जी ने प्रश्न किया हे परमेश्वर! हम आप के साथ विश्वास घात करके आए थे। आपको हम नीच आत्माओं पर फिर भी दया आ गई। आप का काल ब्रह्मके इस भयंकर लोक में कैसे तथा कब-कब आगमन हुआ।

उत्तर (कबीर देव का):- जिस समय संष्टि रचना की तथा काल ब्रह्म ने इन आत्माओं को आकर्षित किया। ये इस के साथ स्वःइच्छा से यहाँ आ गए। कुछ समय पश्चात् ही काल ब्रह्म इनको तप्तशिला पर गर्म करके तड़फाने लगा तथा अन्य कष्टमय प्राणियों के शरीर में डालकर कष्ट भोगने के लिए विवश करने लगा तब सर्व आत्माऐं परमश्वेर को याद करके सुख की इच्छा करने लगी। तब

अपनी आत्माओं का कष्ट मुझ से देखा नहीं गया। मैं प्रथम सत्ययुग में इस काल ब्रह्म के लोक में अन्य रूप धारण करके आया।

सर्व प्रथम उस स्थान पर पहुँचा जहाँ पर प्रतिदिन एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को तप्त शिला पर गर्म करके उनसे निकले मैल को खाता है। तप्तशिला, एक पत्थर की टुकड़ी है। जो तवे के आकार की है जो स्वतः गर्म रहती है। उस समय उस तप्तशिला पर एक लाख प्राणी तड़फ रहे थे, हा-2 कार मचा था। दिल दहलाने वाली चीखें मार रहे थे। जैसे चावलों से खील बनाते समय चटक-मटक होती है। ऐसे सर्व प्राणी उस तप्तशिला पर चटक रहे थे। मैं उस तप्त शिला के निकट जा के खड़ा हुआ। मेरे प्रताप से तप्तशिला की अग्नि की आंच ने उन प्राणियों को प्रभावित करना बन्द कर दिया। तप्तशिला उसी प्रकार जल रही थी परन्तु मेरी उपस्थिति के कारण अग्नि की आंच उन प्राणियों को जला नहीं रही थी। सर्व प्राणी अपने आप को कष्ट रहित जानकर शान्त होकर उस तप्तशिला पर बैठकर मेरी और देखने लगे। मुझ से पूछा हे परमेश्वर! यहाँ पर हम कौन से कर्म का दण्ड भोग रहे हैं? हे प्रभु! आप की कृपा से हमें अब कोई कष्ट नहीं है। हम अग्नि में बैठे हुए भी अपने आप को सामान्य से भी अधिक सुखी महसूस कर रहे हैं। आप कौन है? क्या आप ही काल ब्रह्म हैं? या कोई उनके अनुचर हो कृपा हमें सर्व भेद बताइऐ?

उत्तर (कविर्देव का):- मैंने उन दुःखी प्राणियों को बताया। हे जीवात्माओं! मैं काल ब्रह्म नहीं हूँ। मैं तत् ब्रह्म अर्थात् वह परमात्मा हूँ। जिसके विषय में वेद भी कहते हैं कि उस पूर्ण परमात्मा का पूर्ण ज्ञान हम नहीं जानते उस के विषय मैं तो तत्वदर्शी सन्त ही वास्तविक ज्ञान देते हैं। उन से पूछो। {यजुर्वेद अध्याय 40 श्लोक 10 व 13 में कहा है कि परमात्मा कैसा है? तथा विद्वान कौन है? यह ज्ञान धीराणाम् अर्थात् तत्वदर्शी सन्त ही बताते हैं उनसे सुनो। यही प्रमाण गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में लिखा है कि तत्वज्ञान को तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ जो परमात्मा के विषय में पूर्ण परिचित हैं। तत्वदर्शी सन्त की पहचान गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में बताई है। जो श्लोक 1 से 4 के विवरण से स्पष्ट रूप से समझी जा सकती है। गीता अध्याय 13 श्लोक 2 व 11 में भी गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने कहा है कि जो तत्व ज्ञान है, वही वास्तविक ज्ञान है। ऐसा मेरा मत है।

विचारणीय विषय है कि वेदों व गीता के ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने कहा है कि जो मेरे द्वारा दिया ज्ञान (वेदों व गीता का ज्ञान) पूर्ण नहीं है उस तत्वज्ञान को तो तत्वदर्शी सन्त ही जानते हैं। उनकी खोज करके अपना कल्याण कराओ।} **वेदों व गीता के ज्ञान के आधार से भक्ति करने वालों को जन्म-मृत्यु, स्वर्ग-नरक का चक्र तथा यह तप्तशिला का कष्ट सदा बना रहेगा। आप जिस काल ब्रह्म के विषय में जानते हो जो लोक वेद के आधार से पुरूषोत्तम प्रसिद्ध है। परन्तु**

वास्तव में पुरूषोत्तम तो अन्य ही है। प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 16 से 18 में गीता ज्ञान दाता स्वयं कह रहा है कि उत्तम पुरूषः अर्थात् पुरूषोतम् तो अन्य है। जो परमात्मा कहा जाता है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सब का धारण पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी प्रभु है। (गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में) फिर गीता अध्याय 15 श्लोक 18 में अपने विषय में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मुझे तो लोक वेद के आधार से पुरूषोत्तम मानते हैं मैं वास्तव में पुरूषोत्तम नहीं हूँ। जो गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में कहता है कि मैं काल हूँ सर्व को खाने के लिए आया हूँ। गीता अध्याय 11 श्लोक 21 में अर्जुन ने आँखों देखा विवरण कहा कि हे भगवन् आप तो उन ऋषियों को भी खा रहे हो जो आप की वेद मन्त्रों द्वारा स्तुति कर रहे हैं। आप देवताओं तथा सिद्धों के समूह को भी खाने को तैयार हो वे आप से अपनी जान की रक्षा के लिए मंगल कामना कर रहे हैं। काल भगवान ने कहा है कि मैं सर्व को खाने के लिए प्रवंत हुआ हूँ।

हे धर्मदास! उस तप्तशिला पर ऋषि व महर्षि व अन्य वेद पाठ करने व पढ़ने वाले विद्वान भी कष्ट उठा रहे थे। जो वेदों के मन्त्रों से भी परिचित थे। वे सर्व एक स्वर में बोले हे पूर्ण परमात्मा! आप सत्य कह रहे हो यह ज्ञान वेदों में लिखा है। (वेदों का सार ज्ञान ही गीता जी में लिपी बद्ध है) सत्ययुग में सर्व मनुष्य साधनाऐं करते थे। कोई श्री विष्णु जी व श्री शिवजी की, कोई देवी की जो उस समय के गुरूओं ने प्रचलित कर रखी थी। जो वेदों को भी ठीक से न समझने वाले ऋषियों द्वारा बताई गई थी। कुछ गुरूजन व ऋषिजन भी उसी तप्तशिला पर कष्ट भोग रहे थे। जो अपनी-2 साधनाओं को श्रेष्ठ मान कर स्वयं कर रहे थे तथा अपने अनुयाईयों से भी करा रहे थे। वे भी कहने लगे हे परमेश्वर! हमारी भक्ति शास्त्रविरूद्ध थी। अब आप की कंपा से हमें ज्ञान हुआ है। हमारी वह शास्त्रविरूद्ध साधना कोई काम नहीं आई। हम यहाँ तप्तशिला पर महाकष्ट उठा रहे है। {यही प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 23 में कहा है कि जो शास्त्रविधि को त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) करते हैं। उनको न तो कोई सुख होता है, न उनको कोई सिद्ध प्राप्त होती तथा न उनकी गति अर्थात् मोक्ष होता है अर्थात् शास्त्रविधि विरूद्ध भक्ति व्यर्थ है।}

तब मैने (कबीर देव ने) उन तप्त शिला पर विराजमान प्राणियों को संष्टि रचना सुनाई(कंप्या पाठक पढ़े संष्टि रचना इसी पुस्तक के पंष्ठ 250 से 269 पर) जिस कारण से उनको ज्ञान हुआ कि वे कैसे अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार कर काल ब्रह्म के जाल में फंसे थे। उन सर्व प्राणियों ने कहा हे परमेश्वर! हमें इस महादुःख दायक काल लोक से निकाल लो। हमें अपने सत्यलोक में ले चलो, तब मैंने उन सर्व प्राणियों से कहा ऐसे मैं आप को सत्यलोक नहीं ले जा सकता। क्योंकि आप स्वइच्छा से इस काल ब्रह्म के साथ आए थे। आप के पुण्य समाप्त

हो चुके हैं। आप पर काल ब्रह्म का ऋण है। उस ऋण से मुक्त होकर ही आप सत्यलोक जा सकते हो। उसकी विधि है कि ''जब आप को पृथ्वी पर मानव जन्म प्राप्त हो तथा मैं किसी अन्य वेश में प्रकट होकर यह तत्वज्ञान बताने आऊं या अपने किसी अंश को भेजूं तब तुम हमारे सत्य शब्द (सार शब्द) तथा सारज्ञान अर्थात् तत्व ज्ञान को ग्रहण कर के मर्यादा में रहते हुए भक्ति करना तब आपका सत्यलोक जाना सम्भव होगा।

हे धर्मदास! मैंने (कबीर परमेश्वर ने) उन ऋषियों से प्रश्न किया जो तप्तशिला पर उपस्थित थे तथा वे पृथ्वी लोक में वेद के प्राकाण्ड विद्वान प्रसिद्ध थे। प्रश्न (कबीर जी का) :- आपने वेदों को पढ़ा है। कृपा बताईये वेदों में प्रभु को साकार लिखा है वा निराकार? उन ऋषियों ने एक स्वर में उत्तर दिया परमात्मा निराकार है। केवल उसका प्रकाश ही समाधी द्वारा शरीर में देखा जा सकता है। समाधी में परमात्मा प्रत्यक्ष होता है। मैंने (कबीर परमेश्वर ने) उन मतिहीनों से पूछा प्रत्यक्ष से आपका क्या तात्पर्य है? उन्होंने उत्तर दिया कि ''प्रत्यक्ष का तात्पर्य है'' समाधी में परमात्मा का साक्षात्कार होना। मैंने कहा ''प्रत्यक्ष'' तो साकार वस्तु का होता है। जैसे किसी ने किसी से कहा जल लाना। उसने जल लाकर रख दिया। वह लाया गया पदार्थ अर्थात् जल साक्षात् वस्तु है ''जल'' शब्द नहीं। जैसे किसी ने घड़े को देखा फिर समाधी दशा में घड़े का साक्षात्कार हुआ इस प्रकार जो साकार वस्तु बाहर है उसी का साक्षात्कार समाधी दशा में होता है। जिस वस्तु का आकार ही नहीं है। उस का साक्षात् होना असम्भव है। यह आप का मिथ्या ज्ञान है। आप को कभी भी परमात्मा का साक्षात्कार नहीं हुआ है। आप व्यर्थ में महिमा बना कर अनुयाईयों को भ्रमित करके महापाप के भागी होकर यहाँ काल ब्रह्म के लोक में महा कष्ट भोग रहे हो।

(परमेश्वर कबीर जी ने कहा) हे ऋषि जनों ! आप ने कहा कि परमात्मा निराकार है केवल उसका प्रकाश ही देखा जा सकता है। हे भोले प्राणियों विचार करो जैसे कोई नेत्रहीन अन्य नेत्रहीन से सूर्य के विषय में मिथ्या ज्ञान प्राप्त करके आगे प्रचार कर रहा हो वह कह रहा हो कि ''सूर्य'' निराकार है। उसका केवल प्रकाश ही देखा जा सकता है। उस नेत्रहीन से पूछे कि सूर्य के बिना प्रकाश किस का देखा! आप सूर्य को निराकार बता रहे हो उसके प्रकाश को देखने का प्रचार कर रहे हो क्यों मिथ्या भाषण कर रहे हो। ठीक इसी प्रकार वेद ज्ञान को तत्व से जानने का मिथ्या दावा करने वाले वेद ज्ञान हीन ऋषियों व महर्षियों की दशा है। आप को न वेद ज्ञान की पूर्ण जानकारी है तथा न आप की भक्ति विधि शास्त्र अनुकूल है। आप महादोष के पात्र बन गए हो तुम्हें घोर नरक में डाला जाएगा। पृथ्वी लोक में आप को एक परम ज्ञानी मान कर आप के सैकड़ों शिष्य आप द्वारा बताए मिथ्या ज्ञान का प्रचार करके लाखों भोली आत्माओं को काल जाल

में फंसा रहे हैं। आप को ऋषि व महर्षि मान कर आप की मूर्तियाँ स्थापित की जाऐंगी। कुछ धुर्त व्यक्ति वहाँ मन्दिर आदि बना कर अपना स्वार्थ सिद्ध करेगें। यह सर्व दोष भी आप को कई वर्षों तक प्राप्त होता रहेगा। भोली जनता आप जैसे अज्ञानियों को महर्षि मान कर आप के नाम से कई संस्थाऐं चलाऐंगे तथा आप के द्वारा रची अपने अनुभव की पुस्तकों को भोली जनता में बेच कर धन कमा कर अपना परिवार पोषण करेगें तथा मौज-मस्ती में उस धन को खर्च करेगें। आप द्वारा रची वेद ज्ञान विरूद्ध पुस्तक द्वारा लाखों व्यक्ति व्यर्थ ज्ञान को ग्रहण करके नरक में गिरेगें। यह सर्व दोष भी आपके सिर पर ही रखा जाएगा। पथ्वी पर आपकी जय-2 कार वे भोले प्राणी कर रहे होगें तथा आप उस घोर नरक में गिर कर चीखें मार रहे होंगे। महाकष्ट के कारण चिल्ला-2 कर रो रहे होंगे। पथ्वी लोक पर बनी आप की महिमा आपके क्या काम आई?

हे धर्मदास! मेरे इस तत्वज्ञान रूपी कड़वी सच्चाई से परिचित होकर वे नकली गुरू व ऋषि-महर्षि अपने कत्य को जानकर भय से कांपने लगे। क्योंकि वहाँ पर उनको हाथों-हाथ प्रमाण मिल रहा था। मैंने उनसे कहा भाई यह सच्चाई मैं या मेरा भेजा हुआ मेरा अंश आप को पथ्वी पर आपके इन शिष्यों के समक्ष कहता तो आप तथा आपके शिष्य मुझे वा मेरे अंश संत को मारने को दौड़ते तथा हमें सन्तों व ऋषियों का निन्दक कह कर जनता में बदनाम करते हमारी एक बात भी नहीं सुनते। सर्व नकली ऋषि-महर्षियों तथा गुरूओं तथा उनके साथ वहीं पर उपस्थित उनके अनुयाईयों ने एक स्वर में कहा आप ! सत्य कह रहे हो वहाँ पर तो हम अपने ज्ञान को सर्वोच्च मान रहे थे। हे परमेश्वर! आपने हमारी आँखें खोल दी।

परमेश्वर कबीर देव ने कहा हे धर्मदास! मैंने उन नकली महर्षियों से कहा आप ने बताया कि वेदों में परमेश्वर को निराकार बताया है। आप की यह बात भी मिथ्या है क्योंकि वेदों ने मेरे विषय में कहा है कि परमेश्वर सशरीर है वही परमात्मा अन्य शरीर धारण करके अतिथि की तरह कुछ समय इस काल ब्रह्म के लोक में आता है। उस समय अज्ञान निन्द्रा में सोए प्राणियों को तत्व ज्ञान प्रदान कराता है। प्रमाण :- यजुर्वेद अध्याय 5 श्लोक 1 में तथा अध्याय 1 श्लोक 15 में तथा ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मन्त्र 17 से 20 तक में भी है।

{परमेश्वर कबीर जी तप्तशिला पर हुई वार्ता द्वारा अपनी प्रिय आत्मा भक्त धर्मदास जी को भी तत्वज्ञान से परिचित करा रहे थे। यही तत्वज्ञान की अमतवाणी धर्मदास जी ने लिपिबद्ध की जो पांचवा वेद अर्थात् कबीर सागर नाम से प्रसिद्ध है।}

परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे धर्मदास! मेरे द्वारा बताए गए वेदों के मन्त्रों को सुनते ही उन नकली ऋषियों को याद आया कि आप सत्य कह रहे हो मालिक! वेदों में ऐसा ही लिखा है। हम पढ़ते थे परन्तु हमारी बुद्धि काल ब्रह्म ने

बांध रखी थी। हम समझ ही नहीं सके। केवल लोक वेद (सुना सुनाया ज्ञान जो वेदों विरूद्ध था उसे) ही सुनाया करते थे। {गीता अध्याय 10 श्लोक 9 से 11 में प्रमाण है। जिस में कहा है कि जो मुझ काल ब्रह्म पर ही आश्रित हैं उनको में ऐसा ज्ञान देता हूँ। वे आपस मे विचार करके मेरे ही गुणों का ज्ञान ही करते कराते रहते हैं। जिस कारण वे मुझमें रमण करते रहते हैं। उन मेरे में ही आश्रित श्रद्धालुओं को मैं (काल ब्रह्म) वह ज्ञान देता हूँ जिससे वे मुझे ही प्राप्त होते हैं अर्थात् काल जाल में ही रह जाते हैं। उनके ऊपर अनुग्रह करने के लिए मैं स्वयं ही उनको वह ज्ञान देता हूँ जिससे वे मुझे ही प्राप्त होते हैं।}

(कबीर सागर से वाणी) कबीर जी का जीवों से संवाद :-

बहु विधि जीवन कीन्ह पुकारा, काल देत है कष्ट अपारा।।
यम का कष्ट सहा नहीं जाई, हे सतगुरु होहुँ सहाई।।
आए जहाँ यम जीव सतावै, काल निरंजन जीव नचावै।।
चटक–पटक करे जीव तहँ भाई, ठाढे भया पुनि तहाँ मैं जाई।।
मोहि देख जीव कीन्ह पुकारा, हे साहिब हमों लेहु उबारा।।
तब हम सत्य शब्द गुहरावा, पुरुष शबद से जीव तपत बुझावा।।
यम ते छुड़ाव लेव तुम स्वामी, दया करो प्रभु अन्तर यामि।।

भावार्थ :- उपरोक्त वाणी में तप्तशिला पर कष्ट भोग रहे प्राणियों ने परम शक्ति से कष्ट निवारण की प्रार्थना की तब मैं (कबीर परमेश्वर) उस तप्तशिला के पास प्रकट हुआ। अपनी शक्ति से तप्तशिला की गर्मी को शांत किया। सर्व प्राणियों ने तत्वज्ञान से परिचित होकर मुझ से (कबीर परमेश्वर से) काल के जाल से निकालने की प्रार्थना की।

तब मैं कहा जीवन समझाई, जोर करूं तो वचन नसाई।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी बता रहे हैं कि तब मैंने उन प्राणियों से कहा मैं बलपूर्वक आपको काल से छुड़वा सकता हूँ। परन्तु मैंने इसको वचन दिया है कि मैं बलपूर्वक जीवों को नहीं ले जाऊगां क्योंकि मैंने ही तुम्हारी इच्छा से काल लोक में आने की आज्ञा दे रखी है तथा कहा था कि तुम यहाँ (सतलोक में) स्वइच्छा से आने की प्रार्थना करोगे तब तुम्हें भक्ति शक्तियुक्त करके सतलोक लाऊँगा।

जब तुम जाय धरो जग देहा, तब तुम करिहौ शब्द स्नेहा।।
पुरुष नाम सुमिरन सहिदाना, बीरा सार गहो प्रवाना।।
देह धरो सत्य शब्द समाई, तब हम सतलोक ले जाई।।
जहाँ आशा तहाँ बासा होई, मन कर्म वचन सुमिरै जोई।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी कह रहे हैं कि हे प्राणियों जब तुम संसार में मानव शरीर प्राप्त करो उस समय मेरे पूर्ण सन्त से सम्पूर्ण मन्त्र (सतनाम व

सारशब्द) प्राप्त करके सच्चे मन से भक्ति करना। जब तुम मानव शरीर प्राप्त करके सत्य साधना (तीनों मन्त्रों ओंम्,तत्,सत्) की अन्तिम स्वांस तक करोगे तब मैं तुम्हें सतलोक ले जाऊँगा। आप अनन्य मन से कर्म वचन मन से मेरे (कबीर परमेश्वर) में सच्ची लगन लगाना उस सच्ची आशा जो सतलोक जाने की होगी उसी आधार से आप सतलोक में निवास करोगे। क्योंकि जहाँ जाने की सच्ची लगन होती है साधक अन्त समय में उसी प्रभु को प्राप्त करता है।

।।चौपाई।।

कहे जीव सुन पुरुष पुराना, देह धरी बिसरो नहीं ज्ञाना।।
पुरुष जानि सुमिरा जमराई, बेद पुरान कहे समुझाई।।
बेद पुरान कहे मति येहा, निराकार से किजै नेहा।।
सुर नर मुनिजन तैंतीस करोड़ि, बंधे सब निरंजन डोरि।।
ताके मते कीन्ह हम आशा, अब मोहि चीन्ह परा यम फांसा।।

भावार्थ :- सर्व प्राणियों ने कहा हे आदि पुरूष परमेश्वर ! जब भी मानव शरीर प्राप्त होगा आप के इस तत्वज्ञान को नहीं भूलेंगे। हमने तो काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) को परमेश्वर मानकर पूजा की थी। जैसा भी वेदों को हम समझ सके उस लोक वेद आधार से तथा पुराणों के ज्ञान के आधार से काल की पूजा पूर्ण परमात्मा जानकर की है। हम ही नहीं हे परमेश्वर तैतीस करोड़ देवताओं, अठ्ठासी हजार ऋषि आदि व अन्य सर्व साधक भी काल ब्रह्म को ही पूर्ण परमात्मा जानकर साधना करके काल ब्रह्म की ही डोरी से बंधें हैं अर्थात् वे भी सर्व काल में ही हैं। जन्म-मत्यु का कुचक्र उन पर भी सदा चलेगा।

सुनो जीव यह छल यम केरा, यह यम फंदा कीन्ह घनेरा।।

।।छन्द।।

काल कला अनेक कीन्हो, जीव कारण ठाट हो।
बेद शास्त्र पुरान स्मति, अन्त रोकै बाट हो।।
सोरठा – जीव पड़े बस कालके, काल कराल प्रचण्ड।
सतनाम चिन्हे बिना, जन्म जन्म भव दण्ड।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा हे प्राणियों! सुनों! यह सर्व छल काल ब्रह्म ने आप सर्व प्राणियों को अपने जाल में फांसे रखने के लिए किया है। जो चारों वेदों (ऋग्वेद,यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) का ज्ञान अधूरा है। क्योंकि पूर्ण ज्ञान तत्वदर्शी सन्त बताते हैं जो पूर्ण मोक्षदायक है। पुराणों तथा अन्य समति व छः शास्त्रों का ज्ञान उन देवताओं व ऋषियों का अनुभव है जो स्वयं वेद ज्ञान से परिचित नहीं हैं। इसलिए तत्वज्ञान के आधार से सतनाम के सुमरण से ही पूर्ण मोक्ष सम्भव है। अन्यथा सदा जन्म-मरण का कष्ट बना रहेगा।

''परमेश्वर कबीर जी से काल ब्रह्म का विवाद करना''

हे धर्मदास् काल ब्रह्म आहार करने के लिए तप्तशिला की ओर चला। तब मैंने उन सर्व प्राणियों से कहा देखिए वह आ रहा है काल ब्रह्म साकार है, जिसे आप निराकार कहा करते। तेजोमय शरीर छोटा माथा लम्बे दांत डरावनी सूरत है। हे प्राणियों! अब आप जाओ। इतना कहते ही सर्व प्राणी जो तप्तशिला पर उपस्थित थे आकाश में उड़ गए तथा धर्मराज के दरबार में आ गए। वहाँ से कर्माधार से स्वर्ग-नरक या किसी प्राणी के शरीर में भेज दिया जाता है।

हे धर्मदास! जब काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप्त शिला के निकट आया। उस समय उसको मेरा स्वरूप मेरे उस पुत्र योगसन्तायन उर्फ योगजीत का दिखाई दिया जिस रूप में मैंने काल ब्रह्म को सतलोक से निष्कासित किया था तथा मुझे योगजीत जान कर क्रोधित होकर बोला हे योगजीत यहाँ मेरे लोक में मेरी आज्ञा के बिना किसलिए आया। आज मैं तुझे मारूंगा, तेरी जीवन लीला समाप्त करूंगा। तुने मुझे सत्यलोक से धक्के मार कर निकाला था। मैंने तेरे से बहुत विनय की थी सत्यलोक से न निकालने की परन्तु तूने एक नहीं सुनी थी। क्या आप पिता जी का (सत्यपुरूष का) कोई संदेश-आदेश लेकर आए हो वह मुझे बताइए तत्पश्चात् युद्ध के लिए तैयार हो जाइए। (मैंने जान लिया था धर्मदास कि यह मुझे योगजीत समझ रहा है इसलिए मैंने योगजीत की भूमिका करते हुए ये शब्द कहे) मैंने कहा हे काल निरंजन! मुझे पिता जी अर्थात् सत्यपुरूष ने भेजा है। तेरे लोक में सर्व आत्माऐं महाकष्ट उठा रही हैं। उनकी पुकार परमेश्वर ने सुन ली है। अब मैं तेरे नीचे के ब्रह्मण्डों में जाऊंगा। तेरे द्वारा बताए गए लोक वेद (व्यर्थ ज्ञान) का पर्दा फाश करूंगा तथा तत्वज्ञान द्वारा सर्व प्राणियों को पूर्ण परमात्मा का ज्ञान कराके सत्य साधना प्राप्त कराऊंगा। जिससे सर्व प्राणी मानव शरीर धारी सत्य साधना करके अपने पूर्व वाले स्थान सत्यलोक में चले जाऐंगे।

हे धर्मदास! मेरी बातें सुन कर काल ब्रह्म अत्यन्त क्रोधित हो गया तथा मुझे समाप्त् करने के उद्देश्य से मेरे ऊपर आक्रमण किया। मैंने सतनाम का सुमरण किया जिसके प्रभाव से काल ब्रह्म नीचे पाताल लोक में गिर गया। भयभीत होकर कांपने लगा उसकी स्थिति ऐसी हो गई जैसे पक्षी के पंख कट जाते हैं वह एक स्थान पर गिरा फड़फड़ाता है परन्तु उड़ नहीं पाता। मैं भी उसके साथ पाताल लोक में पहुँच गया। काल ब्रह्म ने जान लिया कि योगजीत के पास शक्तिशाली सिद्धि है ये मेरे से मारा नहीं जा सकता। तब उस (काल ब्रह्म) ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने की अन्य युक्ति सोची। उसने कहा हे योगजीत आप मेरे बड़े भाई हो मैं आप का छोटा भाई हूँ। छोटे तो उत्पात ही किया करते हैं परन्तु बड़ों का

बडप्पन क्षमा करने में ही होता है। मुझे क्षमा करो यह कहते हुए काल ब्रह्म घिसटता हुआ मेरे अति निकट आया तथा मेरे चरण पकड़ कर गिड़गड़ाने लगा। मैं उसको लेकर फिर इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में तप्त शिला के पास ले आया। मैंने कहा हे काल निरंजन ! मैंने तुझे क्षमा कर दिया मेरे पैर छोड़ मैंने नीचे के लोकों में जाना है तथा सर्व आत्माओं को तेरे जाल से मुक्त कराना है।

काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने कहा हे बड़े भाई! मैं आप को पिता तुल्य मानता हूँ। आप मुझे कुछ वरदान दो जिस कारण से मेरे लोक की कुछ त्रुटियाँ दूर हो जाऐं। आप फिर भले ही नीचे के लोकों में चले जाना। मैंने कहा मांग क्या मांगता है। ब्रह्म काल ने कहा आप वचन बद्ध हो जाऐं तब मांगूगा। मैंने कहा मैं वचन बद्ध होता हूँ मांग क्या मांगता है ?

काल ब्रह्म ने कहा (1) तीन युगों (सत्ययुग, त्रेता, द्वापर युगों) में थोड़े जीव ले जाना। चौथे युग कलयुग में आप अधिक जीव मुक्त कराना। पिता जी ने मुझे शाप दे रखा है, एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को नित्य खाने का यदि आप सर्व जीवों को एक ही युग में ले जाओगे तो मैं भूखा मर जाऊंगा। (2) मैं आप का रूप धारण कर सकूं। (3) जो आत्मा आप के ज्ञान को समझ कर आप के भक्तिमार्ग को ग्रहण करके आजीवन साधना करेगा। वह आप के लोक में जाये। जिस आत्मा का नाम खण्ड हो जाए अर्थात वह आपके भक्तिमार्ग को त्याग कर मेरी भक्ति करने लगे तथा आप के मार्ग को स्वीकार ही नहीं करे वे सर्व प्राणी मेरे लोक में ही रहें। (4) त्रेता युग में मेरे अंश विष्णु अवतार रामचन्द्र की समुद्र पर पुल बनाने में सहायता करना (5) द्वापर में मेरा अंश कष्ण रूप में जाएगा। वह एक जगन्नाथ नाम से मन्दिर बनवाना चाहेगा समुन्द्र उसे तोड़ेगा। आप उस मंदिर की समुद्र से रक्षा करना। उपरोक्त वर मुझे प्रदान करके आप नीचे जाईए तथा पिता जी की आज्ञा का पालन कीजिए। मैंने काल ब्रह्म से कहा हे ज्योति निरंजन! जो उपरोक्त वर आपने मांगे वे सर्व मैंने आपको दे दिये (तथा अस्तु)

हे धर्मदास ! उस स्वार्थी ने तुरन्त मेरे पैर छोड़ दिए तथा कहा हे जोगजीत! आप किस नाम जाप से भक्ति कराओगे? वह मुझे बता दो ताकि मैं उन आत्माओं को सत्यलोक जाने दूँ जिनके पास आप का मन्त्र जाप होगा। मैं उनको छोड़ दूंगा। हे धर्मदास ! काल ने मेरे से छल करना चाहा कि सत्यनाम व सारनाम को जानकर वह अपने दूतों (संदेश वाहक गुरूओं) को बता देता। उनके द्वारा बताए गए इस सारनाम का साधक को कोई लाभ नहीं मिलता तथा जब मैं या मेरा अंश यही मन्त्र जाप देते तो सर्व प्राणी कहते यह तो हमारे गुरूदेव ने जाप मन्त्र दे रखा है तुम क्या नया बता रहे हो। हे धर्मदास ! यह महा धोखा हो जाता। इसलिए मैंने काल ब्रह्म से कहा कि मैं तेरी चाल को समझ गया हूँ। मैं

तुझे वह सारनाम व सारज्ञान (तत्वज्ञान) नहीं बताऊंगा। जिस प्राणी के पास हमारे द्वारा बताया सारनाम होगा उसके निकट तू नहीं जा सकेगा उसे तू नहीं रोक सकेगा वह तेरे शीश पर पैर रखकर उस सारनाम की भक्ति की शक्ति से सत्यलोक चला जाएगा।

हे धर्मदास! तब काल ब्रह्म ने हंसते हुए कहा हे सहज दास! (हे धर्मदास काल ब्रह्म को मैं भिन्न–2 रूप अपने पुत्रों के दिखा रहा था वह कभी मुझे योगजीत समझ रहा था कभी उसे लगता था शायद यह सहज दास है कभी लगता था यह ज्ञानी है। ये सर्व नाम उन 16 पुत्रों के हैं जो सत्यलोक सष्टि की आदि में अपनी वचन शक्ति से उत्पन्न किए थे। कप्या पढ़ें सष्टि रचना में) **आप जाओ नीचे संसार में मैंने सर्व जीवों को लोकवेद पर आधारित कर रखा है। मैंने अपने ऋषियों व महर्षियों को शास्त्रों (वेदों) के विपरीत ज्ञान प्रदान कर रखा है वे कहते हैं कि हम वेदों अनुसार ज्ञान बता रहे हैं परन्तु उनका लोकवेद शास्त्रों के ज्ञान के विपरीत है। उन ऋषियों को महाज्ञानी मानकर अन्य प्रजा उन्हीं के ज्ञान पर अति दढ़ होकर लगी है। वे कहते है कि पूर्ण परमात्मा की भक्ति करो। वही मोक्ष दायक है परन्तु साधना विधि मेरे (काल ब्रह्म) जाल में फंसे रहने की ही बताते हैं जिस कारण से सर्व साधक व ऋषि जन मेरे ही फंदे में उलझे रहते हैं। कलयुग में कई धर्म बनवा दूंगा वे आपस में लड़ते मरते रहेगें। अन्य किसी भी सन्त या गुरू के ज्ञान को स्वीकार नहीं करेंगे। कलयुग में उत भूत की पूजा, भैरो, काली आदि की पूजा देवी व अन्य देवों की पूजा तथा तीर्थ, व्रत आदि करने में ही सर्व प्रजा अपना मोक्ष समझेगी। मन्दिर पूजा, समाध पूजा, मूर्ति पूजा या मत्यु को प्राप्त हुए गुरूओं के धामों की पूजा तथा पित्तर पूजा (श्राद्ध-पिण्ड दान करना) पर ही सर्व साधक दढ़ता से लगा दूंगा। श्री विष्णु अवतार राम व कष्ण व श्री शिव जी को पूर्ण परमात्मा मान कर उन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव जी) की पूजा में ही अपना कल्याण मानेगें। इन तीनों में से विशेष कर विष्णु व शिव को सर्वेश्वर, महेश्वर, अजर, अमर इनके कोई माता पिता नहीं हैं। ये ही पूजा के योग्य हैं। इन से भिन्न कोई देव पूज्य नहीं हैं ऐसे ज्ञान पर सर्व हिन्दु समाज आश्रित कलयुग में कर दिया जाएगा।**

जिस समय आप या आप का कोई संदेश वाहक कलयुग में सारज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान प्रदान करना चाहेगा वह उपरोक्त साधनाओं को व्यर्थ बताएगा तथा विष्णु व शिव से ऊपर कोई अन्य परमेश्वर का ज्ञान बताएगा तो आप या आप के अंश (सन्त) की बातों को कोई नहीं सुनेगा। इसके विपरीत निन्दा के पात्र कहलाओगे तथा आप से झगड़ा भी मेरे सन्त (दूत) करेगें तथा प्रजा को आप के विरूद्ध करके आपका शत्रु बना देगें। आप मेरे द्वारा रचे चक्रव्युह को तोड़ नहीं पाओगे। खाली हाथ लौट जाओगें। और सुन सहज दास! तुम एक पंथ

चलाओगे परमेश्वर के नाम से मैं तुम्हारे पंथ जैसे बारह पंथ नकली परमेश्वर के चलाऊंगा। उन बारह पंथों में मेरे द्वारा भेजे गए दूतों से जो नाम उपदेश लेगा वे महिमा तो आप के ज्ञान अनुसार (कबीर सागर व अन्य सन्त द्वारा बोली मिलती जुलती वाणी अनुसार) बताऐंगे परन्तु नाम गलत प्रदान करेंगे। जिस से वे मेरे ही जाल में रह जाएगें। इस प्रकार मैं सर्व जीवों को भ्रमित करके मुक्त नहीं होने दूँगा।

उपरोक्त उल्लेख निम्न वाणियों का सारांश है।

।।कबीर वचन।।

चौपाई=धर्मदास जो पूछो मोहि, युग–2 कथा कहो मैं तोहि।
जबही पुरुष आज्ञा कीन्हा, जीवन काज पथ्वी पग दीन्हा।।
करि प्रणाम तबही पगुधारा, पहुंचे जाय धर्म दरबारा।
प्रथम चले जीव के काजा, पुरुष प्रताप शीश पर छाजा।।
आवत मिले धर्म अन्याई, तिन पुनि हम से रार बढ़ाई।
मो कुँ देख धर्म ठीग आवा, महा क्रोध बोले अतुरावा।।

।।काल ब्रह्म वचन।।

योग जीत इहवां कस आवो, सो तुम हमसो वचन सुनाओ।
कै तुम हमको मारन आओ, पुरुष वचन सो मोहि सुनाओ।।

।।कबीर वचन।।

तासो कहयो सुनो धर्मराई, जीव काज संसार सिंधाई।
जीवन कह तुम बहुत भुलावा, बार–बार जीवन सतावा।।
पुरुष भेद तुम गुप्त राखा, अपनी महिमा प्रकट भाखा।
तपत शिला पर जीव जरावहु, जारि वारि निजस्वाद करावहु।।
तुम अस कष्ट जीवन कहै दीन्हा, ताते पुरुष मोहि आज्ञा दीन्हा।
जीव चिताय लोक ले जाऊँ, काल कष्ट से जीव बचाऊँ।।
ताते हम संसार ही जायब, दे प्रवाना लोक पठायब।
यह सुनी काल भयंकर भयऊ, हम कह त्रास दिखान लयऊ।।

।।धर्मराय (काल ब्रह्म) वचन।।

सत्तर–2 युग हम सेवा कीन्ही, राज बड़ाई पुरुष मोहि दीन्ही।
फिर चौसठ युग सेवा ठयऊ, अष्ट खंड पुरुष महि दयऊ।।
तब तुम मारि निकारे मोहि, जोगजीत नहीं छोडु तोहि।

।।सतगुरु कबीर वचन।।

तब हम कहयो सुनो धर्मराया, हम तुम्हरे डर नहीं डराया।
हम कंह तेज पुरुष बल आही, अरे काल तव डर मोहि नाहि।।
पुरुष प्रताप सुमिरा तिहि बारा, शब्द अंगते कालहि सारा।
ततक्षण दष्टि ताहि पर हेरा, श्याम ललाट भयो तिहि केरा।।

पंख घात जस होय पखेरु, ऐसे काल महि पर हेरु।
करे क्रोध कछु नाहीं बसाई, तब पुनि परेऊ चरणन तर आई।।

।।निरंजन (काल ब्रह्म) वचन।।

कह निरंजन सुनो ज्ञानी, करो विनती तोहि सो।
जान बंधु विरोध किन्हो, घाट भई अब मोहि सो।।
पुरुष सम अब तोहि जानो, नहीं दूजी भावना।
तुम बड़े सर्वज्ञ साहिब, क्षमा छत्र तनावना।।
तुम हुँ करो बखसीश, पुरुष दीन्ह जस राज हम।
षोढ़स में तुम ईश, ज्ञानी पुरुष सो एक सम।।

।।चौपाई।।

धर्मराय अस विनती ठानी, मैं सेवक द्वितिय नहीं जानी।
दयावंत तुम साहिब दाता, एतिक कृपा करो हे ताता।
पुरुष शाप मो कंह अस दीन्हा, लख जीव नित ग्रासन कीनहा।।
जो जीव सकल लोक तुम आवे, तो कैसे क्षुद्या मोरि बुतावे।
ज्ञानी विनती एक हमारा, सो न करहुँ जिहि मोर बिगाड़ा।।
पुरुष दीन्ह जस मो कहँ राजू, तुम भी देहु तो होय काजु।
अब हम वचन तुम्हारा मानी, लीजो हंसा हम सो ज्ञानी।।
विनती एक करो तो सो ताता, वचन बंध मानो हमरी बाता।
सतयुग त्रेता द्वापर माही, तीनों युग जीव थोड़े जाही।।
चौथा युग जब कलियुग आवै, तब–त्व शरण जीव बहु जावै।
ऐसा वचन हरि मोहि दीजै, तब संसार गमन तुम कीजै।।

।।कबीर वचन।।

विनती तोर लीन्ह मैं जानी, मोकह ठगे काल अभिमानी।
जस विनती तू मो संग कीन्ही, सो अब बकस तोहि मैं दीन्ही।।
चौथा युग जब कलियुग आवै, तब हम अपना अंश पठावैं।
जिहि परवाना देह है, सत्यशब्द दे हाथ।
सो जीव यम नहिं पाय है, सदा ताहि हम साथ।।

।।निरंजन (काल) वचन।।

संधि छाप मोहि दीजे ज्ञानी, जस देहो हंस हि सहिदानी।।
जो जीव मोकहु संधि बतावे, ताके निकट काल नहीं आवै।।
नाम निशानी मो कह दीजे, हे साहिब यह दाया कीजै।।

।।सतगुरु कबीर वचन।।

जो तोहि देहुं संधि लखाई, जीवन काज होई हो दुख दाई।
तव परपंच ज्ञान हम पावा, काल चलै नहीं तुम्हारा दावा।

धर्मराय तोहि प्रकट भाखा, गुप्त अंक बीड़ा हम राखा।
जो कोई लैह नाम हमारा, ताहि छोड़ तुम होहु नियारा।
जो तुम हंस ही रोको जाई, तो तुम काल रहन नहीं पाई।।

।।धर्मराय (काल ब्रह्म) वचन।।

हे साहिब तुम पंथ चलाओ, जीव उबार लोक ले जाऊँ।
पंथ एक तुम आप चलओ, जीवन लै सतलोक पठाओ।।
द्वादस पंथ करो मैं साजा, नाम तुम्हारा ले करो अवाजा।
द्वादस यम संसार पठहो, नाम तुम्हारे पंथ चलैहो।।
प्रथम दूत मम प्रगटे जाई, पीछे अंश तुम्हारा आई।।
यही विधि जीवनको भ्रमाऊं, पुरुष नाम जीवन समझाऊं।।
द्वादस पंथ नाम जो लैहे, सो हमरे मुख आन समै है।।
कहा तुम्हारा जीव नहीं माने, हमारी ओर होय बाद बखानै।।
और अनेक पंथ चलाऊं, वासे भ्रमित ज्ञान फैलाऊं।।
मैं दृढ़ फंदा रची बनाई, जामें जीव रहे उरझाई।।
देवल देव पाषान पूजाई, तीर्थ व्रत जप–तप मन लाई।।
यज्ञ होम अरू नेम अचारा, और अनेक फंद में डारा।।
जो ज्ञानी जेहो संसारा, जीव न मानै कहा तुम्हारा।।

(सतगुरु कबीर वचन)

ज्ञानी कहे सुनो अन्याई, काटों फंद जीव ले जाई।।
जेतिक फंद तुम रचे विचारी, तत्व ज्ञान तै सबै बिंडारी।।
जौन जीव हम शब्द दृढावै, फंद तुम्हारा सकल मुकावै।।
निश्चय कर प्रवाना पाई, पुरुष नाम तिहि देऊं चिन्हाई।।
ताके निकट काल नहीं आवै, संधि देखी ताकहं सिर नावै।।

।।छन्द।।

जो मेटि डारों तोहि को, अब पलटि कला दिखलाऊँ।
लै जीव बंद छोड़ाय यम सो, अमर लोक सिधावऊँ।।
यह सोच चित्त कीन्हेऊं, पुरुष वचन अस नाही।
सत्य शब्द दृढ़ जो गहे, ले पहुचाऊँ ताहि।।

।।धर्मराय (काल ब्रह्म) वचन।।

कह धर्मराय जाओ संसारा, आनहु जीव नाम आधारा।
जो हंसा तुमरो गुण गाई, ताहि निकट तो हम नहीं आई।
जो कोई जै है शरण तुम्हारा, हम सिर पग दै होवे पारा।
हमतो तुम संग किन्ही ढिठाई, पिता जान कीन्ही लरिकाई।
कोटिन अवगुन बालक करई, पिता एक हृदय नहीं धरई।

जो पितु बालक देही निकारी, तब को रक्षा करै हमारी।

।।ज्ञानी वचन (कबीर वचन)।।

धर्मराय उठ शीश निवायो, तब हम संसार सिधायो।
जब हम देखा धर्म सकाना, तब तहवां से कीन्ह पयाना।
कह कबीर सुनि धर्मनि नागर, तब मैं चली आयऊ भौसागर।
आये चतुरानन के पासा, तासो कीन्हा शब्द प्रकाश।
वाको मैं अपना नाम जनाया, अग्नि ऋषि नाम बताया।
ब्रह्मा चित्त दै सुनवे लीन्हा, पूछो बहुत पुरुष का चिन्हा।
ब्रह्मा मोहे सतगुरू कह टेरा, अग्नि ज्ञान अद्वित है तेरा।
प्रथम मन्त्र ब्रह्मा लीन्हा, तब वहां ते गवन मैं किन्हा।
तब ही निरंजन कीन्ही उपाई, ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा मोर जाई।
निरंजन मन घट आन विराजै, ब्रह्मा बुद्धि फेरि उपराजै।।

हे धर्मदास! काल ब्रह्म की उपरोक्त बातें सुनकर मैंने कहा हे ज्योतिनिरंजन! तू महा पापी है जो भोली आत्माओं के साथ महाधोखा कर रहा है। मैं तेरे सर्व दाव व्यर्थ कर दूंगा। मैं कलयुग में जब प्रकट होऊंगा तब ज्ञान तो प्रचार करके आऊंगा परन्तु सारनाम व सारज्ञान को गुप्त रखुंगा। वह सारज्ञान व सारनाम मेरे द्वारा दिए ज्ञान (पांचवें वेद) में ही होगा परन्तु वे बारह पंथ (जो कबीर नाम के पंथ कहलाऐगें वा तेरे द्वारा प्रेरित अन्य पंथ) उस ज्ञान को तथा सार नाम को नहीं समझ पाऐंगे। बारहवें पंथ में (गरीबदास पंथ में) मेरी महिमा की वाणी प्रकट होगी परन्तु बारहवें पंथ (गरीबदास पंथ) सहित सर्व पंथों के अनुयाईयों के पास सारज्ञान व सारनाम नहीं होगा। जिस कारण से वे उन बारह पंथों के अनुयाई असंख्य जन्मों तक भी सत्यलोक नहीं जा सकेंगे। क्योंकि वे अभिमानी होंगे। मेरे द्वारा भेजे वंश (अंश) की बातें नहीं मानेंगे। फिर बारहवें पंथ (गरीबदास पंथ) में आगे चलकर हम ही आऐंगे। वह तेरहवां अंश मेरा होगा तब सर्व पंथों को समाप्त करके एक पंथ चलाएगा।

विशेष विचार :- बारह पंथों के नाम- कबीर परमेश्वर जी के पंथ में काल द्वारा कबीर नाम से चलाए बारह पंथों का उल्लेख पुस्तक=कबीर सागर अध्याय=कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) पष्ठ संख्या 1870 से

(1) नारायण दास पंथ (2) यागौदास (जागू) पंथ (3) सूरत गोपाल पंथ (4) मूल निरंजन पंथ (5) टकसार पंथ (6) भगवान दास (ब्रह्म) पंथ (7) सत्यनामी पंथ (8) कमालीय (कमाल का) पंथ (9) राम कबीर पंथ (10) प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ (11) जीवा पंथ (12) गरीबदास पंथ।

अन्य प्रमाण पुस्तक ''कबीर सागर'' अध्याय=कबीर बानी पष्ठ 136-137 पर।

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भुले जीव न जाय ठिकाना।
ताते आगम कहि हम राखा। वंश हमार चूरामणि शाखा।।
प्रथम जगमें जागू भ्रमावै। बिना भेद ओ ग्रन्थ चुरावै।।
दुसरि सुरति गोपालहि होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई।।
तिसरा मूल निरंजन बानी। लोकवेद की निर्णय ठानी।।
चौथे पंथ टकसार भेद लै आवै। नीर पवन को सन्धि बतावै।
सो ब्रह्म अभिमानी जानी। सो बहुत जीवन की करी है हानी।।
पांचौ पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहें हममें देखा।।
पांच तत्व का मर्म दृढ़ावै। सो बीजक शुक्ल ले आवै।।
छठवां पंथ सत्यनामि प्रकाशा। घटके माहीं मार्ग निवासा।।
सातवां जीव पंथले बोले बानी। भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी।।
आठवे राम कबीर कहावै। सतगुरु भ्रमलै जीव दृढावै।।
नौमे ज्ञानकी काल दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै।।
दसवें भेद परमधाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी।।
साखी भाव प्रेम उपजावै। ब्रह्मज्ञान की राह चलावै।।
तिनमें वंश अंश अधिकारा। तिनमेंसो शब्द होय निरधारा।।
सम्वत् सत्रासै पचहतर होई, ता दिन प्रेम प्रकटै जग सोई।
साखी हमारी ले जीव समझावै, असंख्य जन्म ठोर नही पावै।
बारहवें पथ प्रकट है बानी, शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मरम न पावैं, ये बारा पंथ हमही को ध्यावैं।
बारहवें पथ हम ही चलि आवैं, सब पंथ मेटि एक ही पंथ चलावैं।

तेरहवें वंश (अंश) द्वारा सर्व पंथों को मिटा कर एक पंथ चलाने का प्रमाण :-

पुस्तक=कबीर सागर= अध्याय=कबीर बानी पृष्ठ=134

बारहवें वंश प्रकट होय उजियारा, तेरहवें वंश मिटे सकल अंधियारा

इसी अध्याय में पृष्ठ 136 पर भी प्रमाण है :-

''द्वादश पंथ काल फरमाना, भूले जीव न जाऐं ठिकाना''

कबीर सागर= अध्याय=कबीर बानी (बोध सागर) में पृष्ठ 136-137 पर प्रमाण:-

धर्म दास मेरी लाख दोहाई, मूल (सार) शब्द बाहर न जाई।।
सार शब्द बाहर जो परही, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तरही।
तेतीस अर्ब ज्ञान हम भाखा, मूल ज्ञान गुप्त हम राखा।
मूल ज्ञान तब तक छुपाई, जब लग द्वादश पंथ मिट जाई।।

पुस्तक=कबीर सागर=अध्याय जीव धर्म बोध (बोध सागर) पृष्ठ 1937 पर प्रमाण:-

धर्मदास तोहि लाख दोहाई। सार शब्द बाहर नहिं जाई।।

सार शब्द बाहर जो परि है। बिचलै पीढी हंस नहीं तरि है।।
युगन–युगन तुम सेवा किन्ही। ता पीछे हम इहां पग दीनी।।
कोटिन जन्म भक्ति जब कीन्हा। सार शब्द तब ही पै चीन्हा।।
अंकूरी जीव होय जो कोई। सार शब्द अधिकारी सोई।।
सत्यकबीर प्रमाण बखाना। ऐसो कठिन है पद निर्वाना।।

विशेषः-कबीर सागर पुस्तक के अध्याय ''कबीर बानी'' पष्ठ 134 पर तो प्रथम पंथ का संचालक ''नारायण दास'' (धर्मदास जी का बड़ा पुत्र लिखा है। इसी अध्याय में पष्ठ 136 पर प्रथम पंथ का संचालक ''चूरामणी'' लिखा है। जो धर्मदास जी को छोटा पुत्र कबीर परमेश्वर जी की कपा से उत्पन्न हुआ था।) वास्तव में बारह पंथों में प्रथम पंथ का संचालक ''चूरामणी'' ही है क्योंकि नारायण दास ने तो परमेश्वर कबीर जी की बात को स्वीकार ही नहीं किया था तथा चूरामणी से द्वेष रखता था। ''चूरामणी '' बान्धव गढ़ त्याग कर ''कुदरमाल'' नामक स्थान पर चला गया था। उसके कुछ दिन पश्चात् बान्धव गढ़ शहर पूरा नष्ट हो गया था। इसलिए पष्ठ 134 (कबीर सागर=अध्याय= कबीर बानी) पर लिखा नारायण दास नाम ठीक नहीं है वहां पर ''चूरामणी'' होना उचित है। क्योंकि कबीर सागर अध्याय'' कबीर बानी''पष्ठ 1870 पर लिखे बारह पंथों के विवरण में चूरामणी मिलाकर बारह पंथ बनते हैं। यह फेर बदल दामाखेड़ा वालों ने करने की चेष्टा की है। परन्तु सच्चाई को मिटा नहीं पाए।

कबीर सागर ''कबीर बानी'' नामक अध्याय (बोध सागर) पष्ठ नं. 134 से 138 पर लिखे विवरण का भावार्थ है :-

पष्ठ नं. 134 पर बारह वंशों (अंशों) के बाद तेरहवें वंश (अंश) में सब अज्ञान अंधेरा मिट जाएगा। बारह वंश काल के वश होकर अपनी-2 चतुरता दिखाएगें। पष्ठ नं. 136-137 पर ''बारह पंथों'' का विवरण किया है तथा लिखा है कि संवत् 1775 में प्रभु का प्रेम प्रकट होगा तथा हमारी बानी प्रकट होवेगी। (संत गरीबदास जी महाराज छुड़ानी व हरियाणा वाले का जन्म 1774 में हुआ है उनको प्रभु कबीर 1784 में मिले थे। यहाँ पर इसी का वर्णन है तथा सम्वत् 1775 के स्थान पर 1774 होना चाहिए, गलती से 1775 लिखा है)। भावार्थ है कि बारहवां पंथ जो गरीबदास जी का चलेगा यह पंथ हमारी (कबीर जी की) साखी लेकर जीव को समझाएगें। परन्तु वास्तविक मन्त्र तथा सार ज्ञान से अपरिचित होने के कारण उन बारह पंथों के साधक असंख्य जन्म सतलोक नहीं जा सकेंगे। उपरोक्त बारह पंथ हमको ही प्रमाण करके भक्ति करेगें परन्तु स्थाई स्थान (सतलोक) अर्थात् मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकेंगे। बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ) में आगे चलकर हम (कबीर जी) स्वयं ही आऐगें तथा सब बारह पंथों को मिटा एक ही पंथ चलाऐगें। उस समय तक

सार ज्ञान तथा सारशब्द छुपा कर रखना है। यही प्रमाण सन्त गरीबदास जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकन्दन रमैणी'' में किया है कि ''सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरती सूम जगायसी'' पुराना रोहतक जिला दिल्ली मण्डल कहलाता है। जो पहले अग्रेंजों के शासन काल में केन्द्र के आधीन था।

''परमेश्वर कबीर जी द्वारा ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव को शरण में लेना''

कबीर परमेश्वर जी ने कहा हे धर्मदास! मैं काल ब्रह्म के इक्कीसवें ब्रह्मण्ड से चलकर नीचे वाले ब्रह्मण्ड में आया। सर्व प्रथम ब्रह्मा के पास आया। मैंने विचार किया कि यदि ब्रह्मा मेरे ज्ञान से पूर्ण परिचित हो जाएगा तो यह एक ब्रह्मण्ड के सर्व विद्वानों को सही दिशा प्रदान कर देगा। इसकी महिमा से सर्व विद्वान प्रभावित हैं कि ब्रह्मा जी महाविद्वान तथा वेदों के प्रकांड ज्ञाता माने जाते हैं। मैंने ब्रह्मा से ज्ञान चर्चा की ब्रह्मा भी सर्व प्रमाणों को वेदों में देखकर चकित रह गया तथा मेरा शिष्य हुआ। ब्रह्मा को मैंने अपना नाम अग्नि ऋषि बताया। ब्रह्मा ने कहा हे अग्नि देव आप का ज्ञान अद्वितीय है। प्रथम मन्त्र प्राप्त किया। ब्रह्मा तथा सावित्री को मैंने ओम् मन्त्र दिया। यह देखने के लिए कि यह कितना विश्वास करता है? फिर दूसरा मन्त्र (सत्यनाम) दूंगा। इसके पश्चात् मैं श्री विष्णु के पास विष्णु लोक गया उससे भी ज्ञान चर्चा की तथा विष्णु भी मेरा शिष्य हुआ। उसको तथा लक्ष्मी को हरियं मन्त्र प्रथम मन्त्र रूप में दिया गया। यह देखने के लिए कि यह काल ब्रह्म के द्वारा डगमग तो नहीं हो जाएगा? इसके पश्चात् शिव शंकर के पास शंकर लोक में गया उसको तथा पार्वती को सोहं नाम दिया। यह देखने के लिए कहीं ये भी काल ब्रह्म द्वारा फिर तो भ्रमित नहीं कर दिए जाऐंगे। उसके पश्चात् अन्य ऋषियों मनु आदि से ज्ञान चर्चा की परन्तु मनु आदि ऋषियों ने काल प्रभाव के कारण मेरे ज्ञान पर विश्वास नहीं किया। मेरे को उल्टा ज्ञान देने वाला ''वामदेव'' उर्फ नाम से पुकारने लगे जबकि पृथ्वी पर मेरा नाम सत्ययुग में ''सत्यसुकृत'' था।

कुछ दिनों पश्चात् मैं फिर से ब्रह्मा के पास गया। ब्रह्मा से ज्ञान चर्चा करनी चाही तो ब्रह्मा जी ने अरूचि दिखाई। क्योंकि जब काल ब्रह्म ने देखा कि मेरे ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा को तत्वज्ञान से परिचित किया जा रहा है। उसने सोचा यदि मेरा पुत्र तत्वज्ञान से परिचित हो गया तो मेरे से घृणा करेगा तथा जीव उत्पत्ति नहीं हो पाएगी। मेरा उदर कैसे भरेगा? क्योंकि काल ब्रह्म को एक लाख मानव शरीरधारी जीवों को प्रतिदिन खाने का शाप लगा है। इसलिए काल ब्रह्म ने अपने ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा की बुद्धि को परिवर्तित कर दिया। ब्रह्मा के मन में विचार भर दिए कि काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ही पूज्य है। वह निराकार है। इससे

भिन्न कोई अन्य परमात्मा नहीं हैं। जो तुझे ज्ञान दिया जा रहा है वह मिथ्या है। यह अग्नि ऋषि जो तेरे पास आया था वह अज्ञानी है। इसकी बातों में नहीं आना है। हे धर्मदास! ब्रह्मा ने काल ब्रह्म के प्रभाव से प्रभावित होकर मेरे ज्ञान को ग्रहण नहीं किया तथा कहा हे ऋषिवर! जो ज्ञान आप बता रहे हो यह अप्रमाणित है। इसलिए विश्वास के योग्य नहीं है। वेदों में केवल एक परमात्मा की पूजा का विधान है। उसका केवल एक ओं (ॐ) ही जाप करने का है। मुझे पूर्ण ज्ञान है मुझे आप का ज्ञान अस्वीकार्य है।

हे धर्मदास! मैंने बहुत कोशिश की ब्रह्मा को समझाने की तथा बताया कि वेद ज्ञान दाता ब्रह्म किसी अन्य पूर्ण ब्रह्म के विषय में कह रहा है। उसकी प्राप्ति के लिए तथा उसके विषय में तत्व से जानने के लिए किसी तत्वदर्शी सन्त (धीराणाम्) की खोज करो फिर उनसे वह तत्वज्ञान सुनों।

प्रमाणः- यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 व 13 में स्पष्ट वर्णन है तथा गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में भी स्पष्ट कहा है। प्रमाणों को देख कर भी काल ब्रह्म के अति प्रभाव के कारण ब्रह्मा ने मेरे विचारों में रूचि नहीं ली। मैंने जान लिया कि ब्रह्मा को काल ने भ्रमित कर दिया है। इसलिए विष्णु जी ने भी अरूचि की तो मैं वहाँ से शिव शंकर के पास गया। यही स्थिति शिव की देख कर मैं नीचे पथ्वी लोक में आया।

''सत्ययुग में कबीर परमेश्वर का सत सुकत नाम से प्राकाट्य''

वर्तमान में चल रही चतुर्युगी के प्रथम सत्ययुग में मैंने (परमेश्वर कबीर जी ने) एक सरोवर में कमल के फूल पर शिशु रूप धारण किया। एक ब्राह्मण दम्पति निःसन्तान था। वह विद्याधर नामक ब्राह्मण अपनी पत्नी दीपिका के साथ अपनी ससुराल से आ रहा था। वे सरोवर पर विश्राम हेतु रूके वहाँ एक नवजात् शिशु को फूल पर प्राप्त करके अति प्रसन्न हुए। उसे परमेश्वर शिव की कपा से प्राप्त जान कर घर ले आए। एक अन्य ब्राह्मण से नाम रखवाया उसने मेरा नाम सत्सुकत रखा। मेरी प्रेरणा से कंवारी गायों ने दूध देना प्रारम्भ किया। उनके दूध से मेरी परवरिश लीला हुई। गुरूकुल में शिक्षा की लीला की। ऋषि जी जो वेद मन्त्र भूल जाते तो मैं खड़ा होकर पूरा करता। ऋषि जी वेद मन्त्रों का गलत अर्थ करते मैं विरोध करता। इस कारण से मुझे गुरूकुल से निकाल दिया। पथ्वी पर घूम कर मैंने बहुत से ऋषियों से ज्ञान चर्चा की परन्तु शास्त्रविरूद्ध ज्ञान पर आधारित होने के कारण किसी भी ऋषि-महर्षि ने ज्ञान सुनने की चेष्टा ही नहीं की। महर्षि मनु से भी मेरी वेद ज्ञान पर भी चर्चा हुई। महर्षि मनु ने ब्रह्मा जी से ही ज्ञान ग्रहण किया था। महर्षि मनु जी ने मुझे उल्टा ज्ञान देने वाला बताया तथा मेरा उपनाम वाम देव रख दिया। मैंने महर्षि मनु व अन्य ऋषियों से यहाँ तक

कहा कि वह पूर्ण परमात्मा मैं ही हूँ। उन्होंने मेरा उपहास किया तथा कहा आप यहाँ है तो आपका सतलोक तो आपके बिना सुनसान पड़ा होगा वहाँ सतलोक में जाने का क्या लाभ? वहाँ गये प्राणी तो अनाथ हैं। मैंने कहा मैं ऊपर भी विराजमान हूँ। तब मनु जी सहित सर्व ऋषियों ने ठहाका लगा कर कहा फिर तो आपका नाम वामदेव उचित है। वामदेव का अर्थ है कि दो स्थानों पर निवास करने वाला, भी है। वाम अक्षर दो का बोधक है। इस प्रकार उन ज्ञानहीन व्यक्तियों ने मेरे तत्वज्ञान को ग्रहण नहीं किया। (वामदेव का प्रमाण शिवपुराण पष्ठ 606-607 कैलाश संहिता प्रथम अध्याय में है।) बहुत से प्रयत्न करने पर कुछ पुण्यात्माओं ने मेरा उपदेश ग्रहण किया। मैंने स्वस्म वेद (कविगिरः=कविर्वाणी) की रचना की जिसकी काल द्वारा प्रेरित ज्ञानहीन ऋषियों ने बहुत निन्दा की तथा जनता से इसे न पढ़ने का आग्रह किया। सतयुग के प्राणी मुझे केवल एक अच्छा कवि ही मानते थे। इस कारण से सतयुग में बहुत ही कम जीवों ने मेरी शरण् ग्रहण की। सतयुग में मानव की आयु एक लाख वर्ष से प्रारम्भ होती है तथा सतयुग के अन्त में दस हजार वर्ष रह जाती है। सत्ययुग में बहुत ही पुण्यकर्मी प्राणी जन्म लेते हैं। सतयुगमें स्त्री विधवा नहीं होती। पिता से पहले पुत्र की मत्यु नहीं होती। आपसी भाई चारा बहुत अच्छा होता है। चोरी-जारी अन्य बुराईयाँ नाम मात्र में ही होती है। तथा शराब, मांस, तम्बाकु आदि का सेवन सत्ययुग के आदि में प्राणी नहीं करते। ब्राह्मण विद्याधर वाली आत्मा त्रेता युग में वेदविज्ञ ऋषि हुए तथा कलयुग में ऋषि रामानन्द हुए तथा दीपिका वाली आत्मा त्रेता में सूर्या हुई तथा कलयुग में कमाली हुई तथा सतयुग में बहुत ही कम प्राणियों ने मेरी शरण ली।

प्रश्न :- धर्मदास जी ने पूछा हे बन्दी छोड़ आप त्रेता युग में मुनिंद्र ऋषि के नाम से अवतरित हुए थे। कप्या उस युग में किन-2 पुण्यात्माओं ने आप की शरण ग्रहण की?

उत्तरः- हे धर्मदास! त्रेता युग में मैं मुनिन्द्र ऋषि के नाम से प्रकट हुआ। त्रेता युग में भी मैं एक शिशु रूप धारण करके कमल के फूल पर प्रकट हुआ था। एक वेदविज्ञ नामक ऋषि तथा सूर्या नामक उसकी साधवी पत्नी थी। वे प्रतिदिन सरोवर पर स्नान करने जाते थे। वह निःसन्तान दम्पति मुझे अपने साथ ले गए तथा सन्तान रूप में पालन किया। प्रत्येक युग में जिस समय मैं एक पूरे जीवन रहने की लीला करने आता हूँ। मेरी परवरिश कंवारी गायों से होती है। शिशु काल से ही मैं तत्वज्ञान की वाणी उच्चारण करता हूँ। जिस कारण से मुझे प्रसिद्ध कवि की उपाधी प्राप्त होती है। परन्तु ज्ञानहीन ऋषियों द्वारा भ्रमित जनता मुझे न पहचान कर एक कवि की उपाधि प्रदान कर देती है। केवल मुझ से परिचित श्रद्धालु ही मुझे समझ पाते हैं तथा वे अपना कल्याण करा लेते हैं।

''त्रेता युग में कविर्देव का ऋषि मुनिन्द्र नाम से प्राकाट्य'' लेखक के शब्दों में निम्न पढ़ें :-

"त्रेतायुग में कविर्देव (कबीर परमेश्वर) का मुनिन्द्र नाम से प्राकाट्य"

"नल तथा नील को शरण में लेना"

''सत्संग वचन''

त्रेतायुग में स्वयंभु कविर्देव(कबीर परमेश्वर) रूपान्तर करके मुनिन्द्र ऋषि के नाम से आए हुए थे। एक दिन अनल अर्थात् नल तथा अनील अर्थात् नील ने मुनिन्द्र साहेब का सत्संग सुना। दोनों भक्त आपस में मौसी के पुत्र थे। माता-पिता का देहान्त हो चुका था। नल तथा नील दोनों शारीरिक व मानसिक रोग से अत्यधिक पीड़ित थे। सर्व ऋषियों व सन्तों से कष्ट निवारण की प्रार्थना कर चुके थे। सर्व ऋषियों व सन्तों ने बताया था कि यह आप का प्रारब्ध का पाप कर्म का दण्ड है, यह आपको भोगना ही पड़ेगा। इसका कोई समाधान नहीं है। दोनों दोस्त जीवन से निराश होकर मत्यु की प्रतिक्षा कर रहे थे।

सत्संग के उपरांत ज्यों ही दोनों ने परमेश्वर कविर्देव (कबीर परमेश्वर) उर्फ मुनिन्द्र ऋषि जी के चरण छुए तथा परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने सिर पर हाथ रखा तो दोनों का असाध्य रोग छू मन्त्र हो गया अर्थात् दोनों नल तथा नील स्वस्थ हो गए। इस अद्भभुत चमत्कार को देख कर प्रभु के चरणों में गिर कर घण्टों रोते रहे तथा कहा आज हमें प्रभु मिल गया। जिसकी हमें वर्षों से खोज थी उससे प्रभावित होकर ऋषि मुनिन्द्र जी से नाम (दीक्षा) ले लिया मुनिन्द्र साहेब जी के साथ ही सेवा में रहने लगे। पहले ऋषियों व संतों का समागम पानी की व्यवस्था देख कर नदी के किनारे होता था। नल और नील दोनों बहुत प्रभु प्रेमी तथा भोली आत्माएँ थी। परमात्मा में श्रद्धा बहुत हो गई थी। सेवा बहुत किया करते थे। समागमों में रोगी व वद्ध व विकलांग भक्तजन आते तो उनके कपड़े धोते तथा बर्तन साफ करते। उनके लोटे और गिलास साफ कर देते थे। परंतु थे भोले से दिमाग के। कपड़े धोने लग जाते तो सत्संग में जो प्रभु की कथा सुनी होती उसकी चर्चा करने लग जाते। दोनों भक्त प्रभु चर्चा में बहुत मस्त हो जाते और वस्तुएँ दरिया के जल में कब डूब जाती उनको पता भी नहीं चलता। किसी की चार वस्तु ले कर जाते तो दो वस्तु वापिस ला कर देते थे। भक्तजन कहते कि भाई आप सेवा तो बहुत करते हो, परंतु हमारा तो बहुत काम बिगाड़ देते हो। अब ये खोई हुई वस्तुएँ हम कहाँ से ले कर आयें? आप हमारी सेवा ही करनी छोड़ दो। हम अपनी सेवा आप ही कर लेंगे। नल तथा नील रोने लग जाते थे कि हमारी सेवा न छीनों। अब की बार नहीं खोएँगे। परन्तु फिर वही काम करते। प्रभु की चर्चा में लग जाते और वस्तुएँ डूब जाती। भक्तजनों ने मुनिन्द्र जी से

प्रार्थना की कि कप्या आप नल तथा नील को समझाओ। ये न तो मानते हैं और कहते हैं तो रोने लग जाते हैं। हमारी तो आधी भी वस्तुएँ वापिस नहीं लाते। बर्तन व वस्त्र धोते समय वे दोनों भगवान की चर्चा में मस्त हो जाते हैं और वस्तुएँ डूब जाती हैं। मुनिन्द्र साहेब ने एक दो बार नल-नील को समझाया। वे रोने लग जाते थे कि साहेब हमारी ये सेवा न छीनों। सतगुरु मुनिन्द्र साहेब ने आशीर्वाद देते हुए कहा बेटा नल तथा नील खूब सेवा करो, आज के बाद आपके हाथ से कोई भी वस्तु चाहे पत्थर या लोहा भी क्यों न हो जल में नहीं डुबेगी।

''समुन्द्र पर रामचन्द्र के पुल के लिए पत्थर तैराना''

एक समय की बात है कि सीता जी को रावण उठा कर ले गया। भगवान राम को पता भी नहीं कि सीता जी को कौन उठा ले गया? श्री रामचन्द्र जी इधर उधर खोज करते हैं। हनुमान जी ने खोज करके बताया कि सीता माता लंकापति रावण की कैद में है। पता लगने के बाद भगवान राम ने रावण के पास शान्ति दूत भेजे तथा प्रार्थना की कि सीता लौटा दे। परन्तु रावण नहीं माना। युद्ध की तैयारी हुई। तब समस्या यह आई कि समुद्र से सेना कैसे पार करें?

भगवान श्री रामचन्द्र ने तीन दिन तक घुटनों पानी में खड़ा होकर हाथ जोड़कर समुद्र से प्रार्थना की कि रास्ता दे। परन्तु समुद्र टस से मस न हुआ। जब समुद्र नहीं माना तब श्री राम ने उसे अग्नि बाण से जलाना चाहा। भयभीत समुद्र एक ब्राह्मण का रूप बनाकर सामने आया और कहा कि भगवन् सबकी अपनी-अपनी मर्यादाएँ हैं। मुझे जलाओ मत। मेरे अंदर न जाने कितने जीव-जंतु वसे हैं। अगर आप मुझे जला भी दोगे तो भी आप मुझे पार नहीं कर सकते, क्योंकि यहाँ पर बहुत गहरा गड्डा बन जायेगा, जिसको आप कभी भी पार नहीं कर सकते।

समुद्र ने कहा भगवन ऐसा काम करो कि सर्प भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। मेरी मर्यादा भी रह जाए और आपका पुल भी बन जाए। तब भगवान श्री राम ने समुद्र से पूछा कि वह क्या है? ब्राह्मण रूप में खड़े समुद्र ने कहा कि आपकी सेना में नल और नील नाम के दो सैनिक हैं। उनके पास उनके गुरुदेव से प्राप्त एक ऐसी शक्ति है कि उनके हाथ से पत्थर भी तैर जाते हैं। हर वस्तु चाहे वह लोहे की हो, तैर जाती है। श्री रामचन्द्र ने नल तथा नील को बुलाया और उनसे पूछा कि क्या आपके पास कोई ऐसी शक्ति है? तो नल तथा नील ने कहा कि हाँ जी, हमारे हाथ से पत्थर भी नहीं डुबेंगे। तो श्रीराम ने कहा कि परीक्षण करवाओ।

उन नादानों(नल-नील) ने सोचा कि आज सब के सामने तुम्हारी बहुत महिमा होगी। उस दिन उन्होंने अपने गुरुदेव मुनिन्द्र जी (कबीर परमेश्वर जी)

को यह सोचकर याद नहीं किया कि अगर हम उनको याद करेंगे तो कहीं श्रीराम ये न सोच लें कि इनके पास शक्ति नहीं है, यह तो कहीं और से मांगते हैं। उन्होंने पत्थर उठाकर समुन्द के जल में डाला तो वह पत्थर डूब गया। नल तथा नील ने बहुत कोशिश की, परन्तु उनसे पत्थर नहीं तैरे। तब भगवान राम ने समुद्र की ओर देखा मानो कहना चाह रहे हों कि आप तो झूठ बोल रहे थे। इनमें तो कोई शक्ति नहीं है। समुद्र ने कहा कि नल-नील आज तुमने अपने गुरुदेव को याद नहीं किया। कप्या अपने गुरुदेव को याद करो। वे दोनों समझ गए कि आज तो हमने गलती कर दी। उन्होंने सतगुरु मुनिन्द्र साहेब जी को याद किया। सतगुरु मुनिन्द्र (कबीर परमेश्वर) वहाँ पर पहुँच गए। भगवान रामचन्द्र जी ने कहा कि हे ऋषिवर! मेरा दुर्भाग्य है कि आपके सेवकों से पत्थर नहीं तैर रहे हैं। मुनिन्द्र साहेब ने कहा कि अब इनके हाथ से कभी तैरेंगे भी नहीं, क्योंकि इनको अभिमान हो गया है। सतगुरु की वाणी प्रमाण करती है कि:-

गरीब, जैसे माता गर्भ को, राखे जतन बनाय।
ठेस लगे तो क्षीण होवे, तेरी ऐसे भक्ति जाय।।

उस दिन के बाद नल तथा नील की वह शक्ति समाप्त हो गई। श्री रामचन्द्र जी ने परमेश्वर मुनिन्द्र साहेब जी से कहा कि हे ऋषिवर! मुझ पर बहुत आपत्ति पड़ी हुई है। दया करो किसी प्रकार सेना परले पार हो जाए। जब आप अपने सेवकों को शक्ति दे सकते हो तो प्रभु! मुझ पर भी कुछ रजा करो। मुनिन्द्र साहेब जी ने कहा कि यह जो सामने वाला पहाड़ है, मैंने उसके चारों तरफ एक रेखा खींच दी है। इसके बीच-बीच के पत्थर उठा लाओ, वे नहीं डूबेंगे। श्री राम ने परीक्षण के लिए पत्थर मँगवाया। उसको पानी पर रखा तो वह तैरने लग गया। नल तथा नील कारीगर(शिल्पकार) भी थे। हनुमान जी प्रतिदिन भगवान याद किया करते थे। उसने अपनी दैनिक क्रिया भी करते रहने के लिए राम राम भी लिखता रहा और पहाड़ के पहाड़ उठा कर ले आता था। नल नील उनको जोड़-तोड़ कर पुल में लगा देते थे। इस प्रकार पुल बना था।

धर्मदास जी कहते हैं :-

रहे नल नील जतन कर हार, तब सतगुरू से करी पुकार।
जा सत रेखा लिखी अपार, सिन्धु पर शिला तिराने वाले।
धन–धन सतगुरु सत कबीर, भक्त की पीर मिटाने वाले।

कोई कहता था कि हनुमान जी ने पत्थर पर राम का नाम लिख दिया था इसलिए पत्थर तैर गये। कोई कहता था कि नल-नील ने पुल बनाया था। कोई कहता था कि श्रीराम ने पुल बनाया था। परन्तु यह सतकथा ऐसे है, जो ऊपर लिखी है।

(सत कबीर की साखी - पष्ठ 179 से 182 तक)

-: पीव पिछान को अंग :-

कबीर– तीन देव को सब कोई ध्यावै, चौथे देव का मरम न पावै।
चौथा छाड़ पंचम को ध्यावै, कहै कबीर सो हम पर आवै।।3।।

कबीर– ओंकार निश्चय भया, यह कर्ता मत जान।
साचा शब्द कबीर का, परदे मांही पहचान।।5।।

कबीर– राम कष्ण अवतार हैं, इनका नांही संसार।
जिन साहेब संसार किया, सो किन्हूं न जन्म्या नार।।17।।

कबीर – चार भुजा के भजन में, भूलि परे सब संत।
कबिरा सुमिरो तासु को, जाके भुजा अनंत।।23।।

कबीर –समुद्र पाट लंका गये, सीता को भरतार।
ताहि अगस्त मुनि पीय गयो, इनमें को करतार।।26।।

कबीर –गिरवर धारयो कष्ण जी, द्रोणागिरि हनुमंत।
शेष नाग सब सष्टि सहारी, इनमें को भगवंत।।27।।

कबीर –काटे बंधन विपति में, कठिन किया संग्राम।
चिन्हों रे नर प्राणियां, गरुड बड़ो की राम।।28।।

कबीर –कह कबीर चित चेतहूं, शब्द करौ निरूवार।
श्रीरामहि कर्ता कहत हैं, भूलि परयो संसार।।29।।

कबीर –जिन राम कष्ण व निरंजन कियो, सो तो करता न्यार।
अंधा ज्ञान न बूझई, कहै कबीर विचार।।30।।

"कबीर परमेश्वर द्वारा विभीषण तथा मंदोदरी को शरण में लेना"

परमेश्वर मुनिन्द्र जी अनल अर्थात् नल तथा अनील अर्थात् नील को शरण में लेने के उपरान्त श्री लंका में गए। वहाँ पर एक परम भक्त चन्द्रविजय जी का सोलह सदस्यों का परिवार रहता था। वह भाट जाति में उत्पन्न पुण्यकर्मी प्राणी थे। परमेश्वर मुनिन्द्र(कविर्देव) जी का उपदेश सुन कर पूरे परिवार ने नाम दान प्राप्त किया। परम भक्त चन्द्रविजय जी की पत्नी भक्तमति कर्मवती लंका के राजा रावण की रानी मन्दोदरी के पास नौकरी(सेवा) करती थी। रानी मंदोदरी को हँसी-मजाक अच्छे-मंदे चुटकुले सुना कर उसका मनोरंजन कराती थी। भक्त चन्द्रविजय, राजा रावण के पास दरबार में नौकरी(सेवा) करता था। राजा की बड़ाई के गाने सुना कर उसे प्रसन्न करता था। भक्त चन्द्रविजय की पत्नी भक्तमति कर्मवती परमेश्वर से उपदेश प्राप्त करने के उपरान्त रानी मंदोदरी को प्रभु चर्चा जो सष्टि रचना अपने सतगुरुदेव मुनिन्द्र जी से सुनी थी, वही चर्चा प्रतिदिन सुनाने लगी।

भक्तमति मंदोदरी रानी को अति आनन्द आने लगा। कई-कई घण्टों तक प्रभु की सत कथा को भक्तमति कर्मवती सुनाती रहती तथा मंदोदरी की आँखों से आंसू बहते रहते। एक दिन रानी मंदोदरी ने कर्मवती से पूछा आपने यह ज्ञान किससे सुना? आप तो बहुत अनाप-शनाप बातें किया करती थी। इतना बदलाव परमात्मा तुल्य संत बिना नहीं हो सकता। तब कर्मवती ने बताया कि हमने एक परम संत से अभी-अभी उपदेश लिया है। रानी मंदोदरी ने संत के दर्शन की अभिलाषा व्यक्त करते हुए कहा, आप के गुरु अब की बार आयें तो उन्हें हमारे घर बुला कर लाना। अपनी मालकिन का आदेश प्राप्त करके शीश झुकाकर सत्कार पूर्वक कहा कि जो आप की आज्ञा, आप की नौकरानी वही करेगी। मेरी एक विनती है, कहते हैं कि संत को आदेश पूर्वक नहीं बुलाना चाहिए। स्वयं जा कर दर्शन करना श्रेयस्कर होता है और जैसे आप की आज्ञा वैसा ही होगा। महारानी मंदोदरी ने कहा कि अब के आपके गुरुदेव जी आयें तो मुझे बताना मैं स्वयं उनके पास जाकर दर्शन करूंगी। परमेश्वर ने फिर श्री लंका में कृपा की। मंदोदरी रानी ने उपदेश प्राप्त किया। कुछ समय उपरान्त अपने प्रिय देवर भक्त विभीषण जी को उपदेश दिलाया। भक्तमति मंदोदरी उपदेश प्राप्त करके अहर्निश प्रभु स्मरण में लीन रहने लगी। अपने पति रावण को भी सतगुरु मुनिन्द्र जी से उपदेश प्राप्त करने की कई बार प्रार्थना की परन्तु रावण नहीं माना तथा कहा करता था कि मैंने परम शक्ति महेश्वर मृत्युंज्य शिव जी की भक्ति की है। इसके तुल्य कोई शक्ति नहीं है। आपको किसी ने बहका लिया है।

कुछ ही समय उपरान्त वनवास प्राप्त श्री सीता जी का अपहरण करके रावण ने अपने नौ लखा बाग में कैद कर लिया। भक्तमति मंदोदरी के बार-बार प्रार्थना करने से भी रावण ने माता सीता जी को वापिस छोड़ कर आना स्वीकार नहीं किया। तब भक्तमति मंदोदरी जी ने अपने गुरुदेव मुनिन्द्र जी से कहा महाराज जी, मेरे पति ने किसी की औरत का अपहरण कर लिया है। मुझ से सहन नहीं हो रहा है। वह उसे वापिस छोड़ कर आना किसी कीमत पर भी स्वीकार नहीं कर रहा है। आप दया करो मेरे प्रभु। आज तक जीवन में मैंने ऐसा दुःख नहीं देखा था।

परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने कहा कि बेटी मंदोदरी यह औरत कोई साधारण स्त्री नहीं है। श्री विष्णु जी को शापवश पृथ्वी पर आना पड़ा है, वे अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र रामचन्द्र नाम से जन्में हैं। इनको 14 वर्ष का वनवास प्राप्त है तथा लक्ष्मी जी स्वयं सीता रूप में इनकी पत्नी रूप में वनवास में श्री राम के साथ थी। उसे रावण एक साधु वेश बना कर धोखा देकर उठा लाया है। यह स्वयं लक्ष्मी ही सीता जी है। इसे शीघ्र वापिस करके क्षमा याचना

करके अपने जीवन की भिक्षा याचना रावण करें तो इसी में इसका शुभ है।

भक्तमति मंदोदरी के अनेकों बार प्रार्थना करने से रावण नहीं माना तथा कहा कि वे दो मस्करे जंगल में घुमने वाले मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं। मेरे पास अनगिन सेना है। मेरे एक लाख पुत्र तथा सवा लाख नाती हैं। मेरे पुत्र मेघनाद ने स्वर्ग राज इन्द्र को पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह कर रखा है। तेतीस करोड़ देवताओं को हमने कैद कर रखा है। तू मुझे उन दो बेसहारा बन में बिचर रहे बनवासियों को भगवान बता कर डराना चाहती है। इस स्त्री को वापिस नहीं करूंगा। मंदोदरी ने भक्ति मार्ग का ज्ञान जो अपने पूज्य गुरुदेव से सुना था, रावण को बहुत समझाया। विभीषण ने भी अपने बड़े भाई को समझाया। रावण ने अपने भाई विभीषण को पीटा तथा कहा कि तू ज्यादा श्री रामचन्द्र का पक्षपात कर रहा है, उसी के पास चला जा।

एक दिन भक्तमति मंदोदरी ने अपने पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना की कि हे गुरुदेव मेरा सुहाग उजड़ रहा है। एक बार आप भी मेरे पति को समझा दो। यदि वह आप की बात को नहीं मानेगा तो मुझे विधवा होने का दुःख नहीं होगा।

अपनी बचन की बेटी मंदोदरी की प्रार्थना स्वीकार करके राजा रावण के दरबार के समक्ष खड़े होकर परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने द्वारपालों से राजा रावण से मिलने की प्रार्थना की। द्वारपालों ने कहा ऋषि जी इस समय हमारे राजा जी अपना दरबार लगाए हुए हैं। इस समय अन्दर का संदेश बाहर आ सकता है, बाहर का संदेश अन्दर नहीं जा सकता। हम विवश हैं। तब पूर्ण प्रभु अंतर्ध्यान हुए तथा राजा रावण के दरबार में प्रकट हो गए। रावण की दृष्टि ऋषि पर गई तो गरज कर पूछा कि इस ऋषि को मेरी आज्ञा बिना किसने अन्दर आने दिया है उन द्वारपालों को लाकर मेरे सामने कत्ल कर दो। तब परमेश्वर ने कहा राजन् आप के द्वारपालों ने स्पष्ट मना किया था। उन्हें पता नहीं कि मैं कैसे अन्दर आ गया। रावण ने पूछा कि तू अन्दर कैसे आया? तब पूर्ण प्रभु मुनिन्द्र वेश में अदृश होकर पुनर् प्रकट हो गए तथा कहा कि मैं ऐसे आ गया। रावण ने पूछा कि आने का कारण बताओ। तब प्रभु ने कहा कि आप योद्धा हो कर एक अबला का अपहरण कर लाए हो। यह आप की शान व शूरवीरता के विपरीत है। सीता कोई साधारण औरत नहीं है यह स्वयं लक्ष्मी जी का अवतार है। श्री रामचन्द्र जी जो इसके पति हैं वे स्वयं विष्णु हैं। इसे वापिस करके अपने जीवन की भिक्षा मांगो। इसी में आप का श्रेय है। इतना सुन कर तमोगुण (भगवान शिव) का उपासक रावण क्रोधित होकर नंगी तलवार लेकर सिंहासन से दहाड़ता हुआ कूदा तथा उस नादान प्राणी ने तलवार के अंधा धुंध सत्तर वार ऋषि जी को मारने के लिए किए। परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने एक झाड़ू की सींक हाथ में पकड़ी हुई थी। उसको ढाल की तरह

आगे कर दिया। रावण के सत्तर वार उस नाजुक सींक पर लगे। ऐसे आवाज हुई जैसे लोहे के खम्बे (पीलर) पर तलवार लग रही हो। सींक टस से मस नहीं हुई। रावण को पसीने आ गए। फिर भी अपने अहंकारवश नहीं माना। यह तो जान लिया कि यह कोई साधारण ऋषि नहीं है। रावण ने अभिमान वश कहा कि मैंने आप की एक भी बात नहीं सुननी, आप जा सकते हैं। परमेश्वर अंतर्ध्यान हो गए तथा मंदोदरी को सर्व वृतान्त सुनाकर प्रस्थान किया। रानी मंदोदरी ने कहा गुरुदेव अब मुझे विधवा होने में कोई कष्ट नहीं होगा।

श्री रामचन्द्र व रावण का युद्ध हुआ। रावण का वध हुआ। जिस लंका के राज्य को रावण ने तमोगुण भगवान शिव की कठिन साधना करके, दस बार शीश न्यौछावर करके प्राप्त किया था। वह क्षणिक सुख भी रावण का चला गया तथा नरक का भागी हुआ। इसके विपरीत पूर्ण परमात्मा के सतनाम साधक विभीषण को बिना कठिन साधना किए पूर्ण प्रभु की सत्य साधना व कृपा से लंकादेश का राज्य भी प्राप्त हुआ। हजारों वर्षों तक विभीषण ने लंका का राज्य का सुख भोगा तथा प्रभु कृपा से राज्य में पूर्ण शान्ति रही। सभी राक्षस वृति के व्यक्ति विनाश को प्राप्त हो चुके थे। भक्तमति मंदोदरी तथा भक्त विभीषण तथा परम भक्त चन्द्रविजय जी के परिवार के पूरे सोलह सदस्य तथा अन्य जिन्होंने पूर्ण परमेश्वर का उपदेश प्राप्त करके आजीवन मर्यादावत् सतभक्ति की वे सर्व साधक यहाँ पृथ्वी पर भी सुखी रहे तथा अन्त समय में परमेश्वर के विमान में बैठ कर सतलोक (शाश्वतम् स्थानम्) में चले गए। इसीलिए पवित्र गीता अध्याय 7 मंत्र 12 से 15 में कहा है कि तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की साधना से मिलने वाली क्षणिक सुविधाओं के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, वे राक्षस स्वभाव वाले, मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले मूर्ख मुझ (काल-ब्रह्म) को भी नहीं भजते।

फिर गीता अध्याय 7 मंत्र 18 में गीता बोलने वाला (काल-ब्रह्म) प्रभु कह रहा है कि कोई एक उदार आत्मा मेरी (ब्रह्म की) ही साधना करता है क्योंकि उनको तत्वदर्शी संत नही मिला। वे भी नेक आत्माऐं मेरी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ (गतिम्) गति में आश्रित रह गए। वे भी पूर्ण मुक्त नहीं हैं। इसलिए पवित्र गीता अध्याय 18 मंत्र 62 में कहा है कि हे अर्जुन तू सर्व भाव से उस परमेश्वर (पूर्ण परमात्मा अर्थात् तत् ब्रह्म) की शरण में जा। उसकी कृपा से ही तू परम शान्ति तथा सतलोक अर्थात् सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

इसलिए पुण्यात्माओं से निवेदन है कि आज इस दासन् के भी दास (रामपाल दास) के पास पूर्ण परमात्मा प्राप्ति की वास्तविक विधि प्राप्त है। निःशुल्क उपदेश लेकर लाभ उठाएँ।

''श्री हनुमान जी की भक्ति पर प्रकाश''

प्रश्नः- धर्मदास जी ने प्रश्न किया हे प्रभु कुछ श्रद्धालु श्री हनुमान जी की पूजा करते हैं। यह शास्त्रविरूद्ध है या अनुकूल।

उत्तरः- कबीर देव ने कहा हे धर्मदास! अर्जुन को काल ब्रह्म ने श्रीमदभगवत् गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि हे अर्जुन! जो व्यक्ति शास्त्रविधि को त्याग कर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण (पूजा) करता है। वह न सिद्धि को प्राप्त होता है न परमगति को न सुख को ही (गीता अ.16/मं. 23) इस से तेरे लिए कर्तव्य अर्थात् करने योग्य भक्ति कर्म तथा अकर्त्तव्य अर्थात् न करने योग्य जो त्यागने योग्य कर्म हैं उनकी व्यवस्था में शास्त्र में लिखा उल्लेख ही प्रमाण है। ऐसा जानकर तू शास्त्रविधि से नियत भक्ति कर्म अर्थात् साधना ही करने योग्य है। (गीता अ.16/ श्लोक 24)

हे धर्मदास जी! गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 व 20 से 23 तथा गीता अध्याय 9 श्लोक 20 से 23 तथा 25 में गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने तीनों देवताओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) की पूजा करना भी व्यर्थ कहा है, भूतों की पूजा, पितरों की पूजा व अन्य सर्व देवताओं की पूजा को भी अविधिपूर्वक (शास्त्रविधि विरूद्ध) बताया है। हनुमान तो रामभक्त थे। वे स्वयं भी भक्ति करते थे तथा अन्य को भी राम की भक्ति करने को ही कहते थे। यदि कोई भक्त दूसरे भक्त की पूजा करता है। वह शास्त्रविधि विरूद्ध होने से व्यर्थ है।

''हनुमान जी का कल्याण कैसे हुआ''

परमेश्वर ने कहा त्रेता युग में मैंने हनुमान को भी शरण में लिया था।

प्रश्नः- धर्मदास ने प्रश्न किया हे कबीर परमेश्वर! आपने तो मेरे आश्चर्य को अधिक बढ़ा दिया। श्री हनुमान जी को तो अपनी शक्ति तथा श्री राम की भक्ति पर अत्यधिक अभिमान था। हे दीनानाथ! आपने हनुमान जी की बुद्धि को कैसे बदला? मुझ किंकर पर कृपा करके बताईए?

उत्तरः- कबीर परमेश्वर जी ने बताया हे धर्मदास! हनुमान जी लंका से सीता जी की खोज करके लौटा उस के हाथ में सीता द्वारा दिया सोने का कंगन था जिसे सीता जी अपने हाथ में चूड़ियों के स्थान पर पहनती थी। प्रातः काल का समय था। जिस स्थान पर पवन पुत्र आकाश मार्ग से उड़कर इस ओर पृथ्वी पर उतरा वह एक पर्वत था। उस के आने से पूर्व मैंने उस स्थान पर एक लीला की। एक सुन्दर बाग स्वादिष्ट फलों से लदे वृक्षों वाला अपनी शक्ति से स्थापित किया। उसी के एक कोने में स्वच्छ जल का सरोवर बनाया। दूसरे कोने में मैंने अपनी कुटिया बनाई। कुटिया के साथ आंगन में एक बहुत बड़ा घड़ा रखा था।

हनुमान को भूख लगी थी। प्रथम स्नान करने लगा। सीता द्वारा दिया कंगन एक पत्थर की शिला रख दिया। स्नान करते समय हनुमान जी की दृष्टि उस कंगन पर ऐसे टिकी हुई थी जैसे ओस चाटते समय मणीधर सर्प अपनी मणी को मुख से निकाल कर जमीन पर रख देता है। ओस चाटते समय एक नजर मणी पर रखता है। कोई उसे उठा न ले। जैसे गाय चारा चरते समय भी एक टक दृष्टि अपने बच्चे पर रखती है। यदि कोई अन्य पशु उस बच्चे की ओर जाता है तो गाय उसे मारने को लपकती है। ठीक इसी प्रकार हनुमान के लिए वह कंगन इतना अनिवार्य था। क्योंकि उस कंगन को पहचान कर ही श्री रामचन्द्र जी को विश्वास हुआ कि वास्तव में सीता लंका पति रावण के बाग में कैद है। इसीलिए लंका पर आक्रमण करने की सोची तथा समुद्र पर पुल का निर्माण किया। यदि कंगन खो जाता तो श्री रामचन्द्र जी कभी भी हनुमान जी की बात पर विश्वास नहीं करते तथा इतने बड़े समुद्र पर पुल बनाने का कठिन कार्य करने की नहीं सोचते।

कबीर परमात्मा बता रहे हैं कि हे धर्मदास! यह सर्व विचार हनुमान के मन में उठ रहे थे। यदि कंगन को किसी ने चुरा लिया तो मेरा सर्व प्रयत्न व्यर्थ हो जाएगा। इसलिए स्नान करते-2 पल-2 में उस कंगन की ओर देख रहे थे। एक बन्दर ने उस कंगन को उठा लिया तथा उसे ध्यान से देखने लगा। हनुमान की दृष्टि भी उस बन्दर पर पड़ी। हनुमान तुरन्त बन्दर की ओर दौड़ा, बन्दर भी दौड़ा, हनुमान ने सोचा यदि शरारती बन्दर ने यह कंगन समुद्र में फैंक दिया तो मेरा सर्वकार्य नष्ट हो जाएगा, देखते-देखते उस बन्दर ने मेरे आश्रम में प्रवेश किया तथा आंगन में रखे उस बड़े घड़े में वह कंगन डाल दिया तथा दौड़ गया। हनुमान ने देखा कि कंगन ऋषि के आश्रम में रखे घड़े में बन्दर ने डाल दिया तो सुख की सांस ली। हनुमान ने घड़े में झांक कर देखा तो पाया कि उस घड़े में उसी कंगन जैसे ढेर सारे कंगन पड़े थे। हनुमान पहचान नहीं सके कि वह कंगन कौन सा है जो मैं लाया था? अति दुःखी मन से आश्रम में बनी कुटिया की ओर देखा। वहाँ मैं (कबीर परमेश्वर जी) एक ऋषि के रूप में विराजमान था। मेरे निकट आकर बजरंग बली ने प्रणाम किया राम-राम बोला मैंने भी उसे राम-राम बोला तथा कहा आओ अंजनी लाल मैं आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा था। अपना परिचय मुझ से सुन कर हनुमान के आश्चर्य की सीमा नहीं रही तथा वह शब्द की ''मैं आपकी प्रतीक्षा कर रहा था'' और भी आश्चर्य में डाल रहा था। अपनी समस्या से परेशान हनुमान ने इस आश्चर्य के विषय में कुछ नहीं पूछा। उसने पूछा ऋषि वर श्री राम जी पर इस वक्त बहुत आपत्ति आई है। सीता माता जी का अपहरण लंका पति रावण ने कर रखा है मैं उसकी खोज करके आया हूँ। मैंने(कबीर परमेश्वर जी ने) प्रश्न किया हे बजरंग बली! आप कौन से श्री राम के विषय में कह रहे हो? हनुमान बोला! हे ऋषिवर आप कौन सी दुनिया में रहते

हो। आपको यही नहीं पता कौन है श्री राम, क्या और भी श्री राम हैं? मैं राजा दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र जी के विषय में कह रहा हूँ जिन्हें चौदह वर्ष का बनवास हुआ है। मैंने(कबीर परमेश्वर उर्फ मुनिन्द्र ऋषि ने) कहा हनुमान! मैं भी उसी अयोध्या के राजा, दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र के विषय में ही आप से पूछ रहा हूँ? ऐसे श्री दशरथ पुत्र श्री रामचन्द्र करोड़ों, उत्पन्न होकर मर चुके हैं। इसी प्रकार श्री राम को बनवास होता है, इसी प्रकार श्री सीता का अपहरण होता है, इसी प्रकार आप जैसे हनुमान जी श्री सीता की खोज करके आते हैं।

इतनी बात मेरे मुख से सुनकर ब्रह्मचारी हनुमान कुपित होकर बोले ऋषि जी! यह समय मजाक(उपहास) करने का नहीं है। आप व्यर्थ में मिथ्या भाषण कर रहे हो, आप ऋषि के रूप में अज्ञानी विराजमान हो अन्यथा आप यह प्रश्न नहीं करते कि कौन से श्री राम के विषय में बातें कर रहे हो पूरे वन व देश में चर्चा चल रही है कि सीता जी का अपहरण होने से श्री रामचन्द्र जी अति व्याकुल हैं।

मैंने (कबीर परमेश्वर ने) प्रश्न किया हनुमान ! आप ने मेरे पास आने का कष्ट किसलिए किया?

हनुमान बोला ऋषि जी ! मैंने बताया है कि मैं सीता माता की खोज करके आया हूँ। माता ने अपने हाथ का कंगन (सोने का कड़ा) मुझे दिया था जिसे पहचान कर श्री रामचन्द्र जी मुझ पर विश्वास करेंगे कि वह वास्तव में सीता जी का ही कंगन है, अन्यथा वे मुझ पर विश्वास नहीं कर सकेंगे। वह कंगन स्नान करते समय सरोवर के निकट पत्थर शिला पर रख दिया था। उसे एक बन्दर उठाकर आप के आश्रम में रखे घड़े में डाल गया। मैं उसे लेने आया हूँ। धर्मदास! मैंने हनुमान से कहा, आप आहार किजिए फिर अपना कंगन घड़े से निकाल कर ले जाईए।

हनुमान बोला हे ऋषि जी ! मुझे भूख बहुत लगी थी परन्तु अब सब समाप्त हो गई है। आप के घड़े में बहुत सारे कंगन हैं। मैं पहचान नहीं पा रहा हूँ कि मेरे वाला कंगन कौन सा है?

मैंने कहा आप पहचान भी नहीं सकोगे। क्योंकि ये सर्व कंगन आप जैसे हनुमानों द्वारा लाए गए उन सीताओं के ही हैं जो पहले वाले श्री रामों के साथ महान कष्ट भोग चुकी हैं। आप कोई एक कंगन उठा ले जाईए वही वर्तमान वाली सीता वाले कंगण से मेल करेगा कोई भिन्नता नहीं है। वर्तमान वाले श्री रामचन्द्र जैसे करोड़ों मर कर अन्य योनियों में चले गए हैं। हनुमान को कोई भी रास्ता दिखाई नहीं दिया। उसने कंगन की वास्तविकता को पक्का करने के लिए प्रश्न पूछा हे ऋषि जी ! आपने कहा कि अन्य श्री राम भी हुए है। उनकी भी पत्नी सीता नाम से थी। इसी प्रकार लंका पति रावण ने अपहरण किया तथा मेरे जैसे हनुमान इसी प्रकार सीता माता का कंगन लेकर आते थे। वे ही कंगन इस घड़े

में विद्यमान हैं। हे दीनदयाल! यह बात कैसे सत्य मानूं क्योंकि जो हनुमान कंगन लाता होगा वह कंगन लेकर भी जाता होगा। फिर इस घड़े में कंगन कैसे रहेगा?

मैंने (कबीर परमेश्वर उर्फ मुनिन्द्र जी ने) कहा, पवन पुत्र हनुमान ! प्रत्येक बार बन्दर, हनुमान द्वारा लाए कंगन को उठाकर इस घड़े में डालता है। इस घड़े में मेरी कपा से ऐसी शक्ति है कि जो वस्तु इस में डाल दी जाती है। वह एक जैसी दो बन जाती है। ऐसा कह कर मैंने एक पीतल की कटोरी उस घड़े में डाली, डालते ही दो एक जैसी हो गई। यह देख कर हनुमान आश्चर्य चकित रह गया। दोनों कटोरियों का मिलान करने लगा। कुछ भी अन्तर नहीं था। तब मैंने कहा हनुमान! इसी प्रकार बन्दर द्वारा कंगन इस घड़े में डालते ही एक कंगन और वैसा ही तैयार हो जाता है। आप निःसंकोच ले जाईए तथा श्री रामचन्द्र से पहचान कराईए।

अब सुन तत्वज्ञान बजरंग बली! जिस दशरथ पुत्र श्री राम को आप सष्टि रचनहार सर्वशक्तिमान मानते हो यह तो सतगुण विष्णु का अवतार है। ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव ये नाशवान प्रभु हैं। इनके पिता काल ब्रह्म हैं जो इक्कीस ब्रह्मण्डों के प्रभु(स्वामी) हैं। ब्रह्म से अधिक ब्रह्मण्डों का प्रभु परब्रह्म है। जो सात संख ब्रह्मण्डों का स्वामी है। इन सर्व प्रभुओं का भी प्रभु(स्वामी) पूर्ण ब्रह्म (सत्पुरूष) है। उस की पूजा से जीव का जन्म-मत्यु का चक्र सदा के लिए समाप्त हो जाता है। वह जीव सत्यलोक में चला जाता है। जहाँ जाने के पश्चात् लौट कर इस संसार में नहीं आता अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करता है। धर्मदास! मेरी चमत्कारी शक्ति से प्रभावित हनुमान उपरोक्त ज्ञान सुनता रहा। फिर विनयपूर्वक कहा हे ऋषि जी! अब मेरे पास समय कम है। मेरे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। मैं पहले उससे मुक्त होना चाहता हूँ। एक बार सीता माता जी का संदेश श्री राम जी को देकर सीता माता जी को लंका पति रावण के चुंगल से छुड़वाना है। आप के अमतवचन फिर कभी सुनूंगा, मुझे आज्ञा दिजिए ऋषिवर्।

इतना कहकर हनुमान ने मेरे चरण लिए तथा एक कंगन उठा कर चला गया। हनुमान के मन में फिर भी शंका थी, कहीं श्री राम यह न कह दें कि यह कंगन सीता जी का नहीं है। हनुमान ने दूर से अतिहर्षित होकर आवाज लगाई सीता माता का पता लगा कर आया हूँ। निकट आने पर हनुमान ने कहा हे प्रभु! सीता माता को लंका पति रावण ने अपने नौलखे बाग में कैद कर रखा है। मैंने उसका बाग भी उजाड़ दिया तथा लंका को भी आग के हवाले कर दिया। माता सीता ने कहा है हे हनुमान! आप श्री राम को कहना मुझे शीघ्र कैद से मुक्त कराऐं, मैं यहाँ पर महाकष्ट उठा रही हूँ। यह सब हनुमान से सुन कर श्री राम बोले हे सन्त हनुमान! आप कोई निशानी बताओ जिस से मुझे विश्वास हो सके कि जिस स्त्री के विषय में आप कह रहे हो वह सीता ही है। श्री राम के ऐसा कहने

पर हनुमान ने संकोच युक्त मन से कहा यह लो माता जी की निशानी वह कंगन (जो घड़े से निकाल कर लाया था) जो सीता जी द्वारा हनुमान को दिया था। श्री राम के हाथ में थमा दिया। श्री राम ने ध्यान पूर्वक देखा कंगन सही है। श्री राम ने हनुमान को सीने से लगा कर कहा हे प्रिय आत्मा हनुमान! आपने मुझ पर महान् उपकार किया है। यह कंगन वास्तव में सीता का ही है। यदि आप कंगन नहीं लाते तो मुझे विश्वास नहीं होता। जब श्री राम ने कंगन को वास्तविक बताया तो हनुमान की खुशी का ठिकाना नहीं रहा तथा मेरा (ऋषि मुनिन्द्र का) चेहरा तथा उनसे हुई वार्ता आँखों के सामने चलचित्र की तरह घूमने लगी। हनुमान को लगा कि ऋषि परम सिद्धी युक्त है।

अरे बनचर क्या खबरां कपि ल्याये। कहो सीता की बात बिथा सब, क्या क्या भोजन पाये।।टेक।। कैसी प्रीति करी तुम सेती, बिंजन कहा जिमाये। कहौ हनुमंत संत जन मेरे, भूखे रहें क धाये।।1।। कैसा बदन बिनोद सती का, बूझत हूँ मन लाये। क्या पौंनीक पटंबर पहरे, हार डोरि गल छ्याये।।2।। क्या सिंगार उचार करत है, रावण सिज्या जाये। सुरमां सिलकि सिज्या पैठी, ना तुम्हों बदन छिपाये।।3।। बोलै पौंनी होय स हौंनी, सुनि हो रघुपति राये। सीता सती अती अति आतुर, आंसुपात चलि जाये।।4।। ढूंढत फिरा लंक चहूँ औरा, नौलख बाग छिपाये। जाय बिरछ पर छुबकी लाई, मुंदरा भेंट चढ़ाये।।5।। तहां प्रणाम करी सीता सौं, माता दर्शन पाये। झरे परे का हुकम किया था, नौलख बाग अघाये।।6।। नाजुक बदन नाम तुम्हारे में, जैसी माता जाये। रावण सेती प्रीति न जाकी, चंद बदन मुख छिपाये।।7।। पनंग समेटि पदम आसन से, पौंना गगन चढ़ाये। त्रिकुटी संजम ध्यान तास का, सूरज कमल उगाये।।8।। हार डोरि नहीं पाट पटंबर, सीता मन मुरझाये। अगर मालवै मूरति सूरति, गरीबदास पद गाये।।9।।9।।

श्री राम के मन में विचार उठा, कि यदि सीता ने रावण को समर्पण कर दिया होगा तो मैं सीता के लिए युद्ध नहीं करूंगा, किसलिए दुनियाँ के लाल मरवाऊँ। अपनी शंका के समाधान के लिए श्री राम ने अपने भक्त हनुमान से घुमा फिरा कर बातें पूछी ताकि सीता के विषय में यथार्थ् जानकारी प्राप्त कर सके। श्री राम ने हनुमान से पूछा हे मेरे प्यारे सन्त ! आप सीता के विषय में बताऐं वह कैसी है? वह रावण के महल में रहती होगी ? हनुमान ने कहा नहीं भगवान माता सीता तो रावण के नौलखा बाग में रहती है। श्री राम ने पूछा आपने भोजन कहां खाया, सीता आपको रावण के महल में खिला कर लाई होगी? हनुमान ने कहा नहीं भगवन् रावण के महल तक सीता माता की पहुँच कहाँ, मैंने माता से कहा माता भूख लगी है। तब सीता माता ने कहा भाई हनुमान! इस बाग का कोई फल तोड़ कर नहीं खाना, कोई नीचे गिरा हो केवल वहीं खाना। यदि फल तोड़कर खा लिया और रावण के नौकरों को पता चल

गया तो मुझे बहुत यातना देगें। मैं भी जमीन पर पड़े फलों को ही खाती हूँ। मुझे भी फल वक्ष से तोड़कर खाने का आदेश नहीं। श्री राम ने पूछा हनुमान! सीता ने सिंगार कर रखा होगा सुन्दर कीमती साड़ी पहन रखी होगी? रावण की सेज पर सोती होगी?

हनुमान ने कहा हे भगवन्! माता-सीता ने फटे-पुराने कपड़े पहन रखे थे। जमीन पर बिछौना बिछा कर सोती है। हे भगवन्! मैं वक्ष पर छुप कर बैठा था। रावण अपने सैनिकों समेत आया तथा सीता से अपनी पत्नी बनने के लिए विवश करने तथा भिन्न-2 प्रकार के वचन कहे। भय दिखाया अति त्रासदी माता ने कहा रावण! मेरी जान जा सकती है इस तन को श्री राम अतिरिक्त कोई अन्य पुरूष छू नहीं सकता। तू जितना चाहे कष्ट मुझे दे। रावण झख मार कर चला गया। तब मैंने तोड़-2 कर फल खाए। रावण का बाग उखाड़ कर समुद्र में फैंक दिया। रावण की लंका में आग लगा दी। जो नौकर-माता जी को परेशान करते थे उनकी खूब खबर ली। सीता जी का चाँद जैसा चेहरा मुरझाए फूल की तरह हो चुका है। वह तो आप की याद में खोई रहती है। आप की चर्चा के अतिरिक्त उसे कोई बात अच्छी नहीं लगती। मेरे से आप के विषय में पूछा ''श्रीराम कैसे हैं?'' मेरे वियोग में बहुत दुःखी होगें। हनुमान आप श्री राम के खाने पीने का ध्यान रखना। वे बहुत अच्छे हैं। मेरे वियोग में रो-2 कर अति दुःखी रहते होंगे। उन्हें मेरी राम-2 कहना तथा मेरी प्रार्थना करना की मुझे अति शीघ्र रावण की कैद से छुड़ा लें। मैं उनके बिना अति परेशान हूँ। हनुमान के श्री मुख से उपरोक्त वचन सुनकर श्री रामचन्द्र जी को विश्वास हो गया कि सीता का रावण से कोई सम्बन्ध नहीं है। वह अति व्याकुल है। तब रावण से युद्ध करने की तैयारी की तथा युद्ध जीत कर विभिषण को लंका का राज्य प्रदान किया। सीता की अग्नि परीक्षा लेकर श्री राम अपनी पत्नी सीता के साथ पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या आऐ साथ भाई लक्ष्मण भी था। श्री राम को अयोध्या का राज्य भरत ने सौंप दिया।

एक दिन सीता ने हनुमान को एक सच्चे मोतियों की बहुमुल्य माला दी। हनुमान जी ने उस माला के मणके फोड़-2 कर जमीन पर फैंक दिए। सीता को अच्छा नहीं लगा तथा क्रोधवश हनुमान के प्रति कटुवचन कहे। अरे हनुमान! तूने इतनी कीमती माला का विनाश कर दिया। तू रहा बन्दर का बन्दर! यह राजमहल वनचरों के लिए नहीं है। आज आप ने माला का नाश किया है। कल अन्य बहुमूल्य वस्तुओं को नाश कर डालेगा। तुम तो बन में ही रहने योग्य हो। हनुमान ने कहा हे माता! जिस वस्तु में राम नहीं वह वस्तु मेरे काम नहीं। मैंने मोती को फोड़ कर देखा, उनमें राम नहीं लिखा था। इसलिए मेरे लिए मिट्टी है और सुनों देवी आज आपने एक भक्त की आत्मा दुखाई है आप को इन महलों

का अभिमान हो गया है। आप भी इन महलों में नहीं रह सकोगी। आप का भी सर्व जीवन जंगल में संतों के पास ही व्यतीत होगा। हनुमान जी ने सीता जी की इस बात से नाराज होकर अयोध्या त्याग दी तथा एकान्त वास किया। सीता जी भी अधिक समय अयोध्या नगरी में नहीं रह सकी। एक धोबी के व्यंग्य के कारण श्री राम ने सीता जी का त्याग कर दिया। सीता जी ने वन में ऋषि वाल्मिकी जी के आश्रम में शेष जीवन व्यतीत किया।

उस समय हनुमान जी अति विचलित थे। उसे संसार में कोई भी अपना दिखाई नहीं दे रहा था। धर्मदास! तब मैं (कबीर परमेश्वर) हनुमान जी के पास गया। मैंने राम-2 शब्द उच्चारण किया। हनुमान ने मेरी ओर देखा तथा उत्तर में जय राम जी कहा, हनुमान ने कहा, आओ ऋषि जी! आपका चेहरा पहले कभी मैंने देखा है। ध्यान नहीं आ रहा कहाँ देखा है? मैंने(कबीर परमेश्वर ने) कहा कि मैं बताता हूँ, आपने मुझे कहाँ देखा था? हनुमान ने मुझे बैठने को कहा। मैंने उसके निकट बैठ कर वह कंगन वाली बात याद दिलाई तथा कहा मैं वही ऋषि हूँ। उस समय हनुमान आप के पास तत्वज्ञान सुनने का वक्त नहीं था। अब आपके पास पर्याप्त समय है। इसलिए मैं आपको पूर्ण परमात्मा के बारे में ज्ञान सुनाने के लिए आया हूँ। यदि आपकी रूचि हो तो चर्चा की जाए। हनुमान ने कहा ऋषिवर! मैं आपका ज्ञान रूचि से सुनूंगा आप मुझे तत्वज्ञान सुनाओ।

मैंने हनुमान जी को सृष्टि रचना सुनाई (कृपया पाठक पढ़े सृष्टि रचना इसी पुस्तक के पृष्ठ 250 से 269 पर) हनुमान जी ने कहा ऋषि जी! आप के द्वारा सुनाया गया ज्ञान पहले कभी नहीं सुना इसलिए मन मानने को तैयार नहीं है। हनुमान के ऐसा कहते ही मैं अन्तर्धान हो गया। हनुमान मुझे हर दिशा में खोजने लगा। जब ऊपर आकाश की ओर देखा तो मैंने उसे दिव्य दृष्टि प्रदान की जिसके द्वारा हनुमान ने मुझे सतलोक के सिंहासन पर बैठे देखा। मेरे शरीर व सतलोक के तेज(प्रकाश) को देखकर हनुमान बहुत प्रभावित हुआ। कुछ समय पश्चात् मैं फिर उससे पचास गज की दूरी पर एक वृक्ष के नीचे विराजमान हुआ। मुझे देखकर महावीर हनुमान मेरे पास आया तथा प्रार्थना कि हे ऋषि मुनिन्द्र! कृपया मुझे आप के सतलोक के दर्शन कराईए। तब मैंने हनुमान को धर्मदास आप की तरह सतलोक की सैर कराई। तब पहलवान को तत्वज्ञान हुआ तथा मेरे चरण लिए, उपदेश के लिए प्रार्थना की कहा हे ऋषिवर! आप पूर्ण परमात्मा हो आपने स्वयं को छुपाया हुआ है। कृपया मुझे उपदेश दीजिए तथा वह विधि बताईए जिससे सत्यलोक की प्राप्ति हो सके। हे धर्मदास! तब मैंने हनुमान को नामदान दिया तथा अपना शिष्य बनाया। अंजनी पुत्र ने नाशवान राम की भक्ति त्यागकर अविनाशी राम अर्थात् मुझ पूर्णब्रह्म की भक्ति की जिससे हनुमान का कल्याण हुआ।

''पूर्ण परमात्मा कबीर जी का द्वापर युग में प्रकट होना''

प्रश्नः- हे परमेश्वर! अपने दास धर्मदास पर कृपा करके द्वापर युग में प्रकट होने की कथा सुनाऐं जिस से तत्वज्ञान प्राप्त हो?

उत्तरः- कबीर परमेश्वर (कबिर्देव) ने कहा हे धर्मदास! द्वापर युग में भी मैं रामनगर नामक नगरी में एक सरोवर में कमल के फूल पर शिशु रूप में प्रकट हुआ। एक निःसन्तान वाल्मिकी (कालू तथा गोदावरी) दम्पति अपने घर ले गया। एक ऋषि से मेरा नामकरण कराया। उसने भगवान विष्णु की कृपा से प्राप्त होने के आधार से मेरा नाम करूणामय रखा। मैंने 25 दिन तक कोई आहार नहीं किया मेरी पालक माता अति दुःखी हुई। पिता जी भी कई साधु सन्तों के पास गए मेरे ऊपर झाड़-फूंक भी कराई। वे विष्णु के पुजारी थे। उनको अति दुःखी देखकर मैंने विष्णु को प्रेरणा दी। विष्णु भगवान एक ऋषि रूप में वहाँ आए तथा पिता कालू से कुशल मंगल पूछा। पिता कालू तथा माता गोदावरी (कलयुग में समन तथा नेकी रूप में दिल्ली में जन्में) ने अपना दुःख ऋषि जी को बताया कि हमें वृद्ध अवस्था में एक पुत्र रत्न भगवान विष्णु की कृपा से सरोवर में कमल के फूल पर प्राप्त हुआ है। यह बच्चा 25 दिन से भूखा है कुछ भी नहीं खाया है। अब इसका अन्त निकट है। परमात्मा विष्णु ने हमें अपार खुशी प्रदान की है। अब उसे छीन रहे हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हे विष्णु भगवान यह खिलौना दे कर मत छीनों। हम अपराधियों से ऐसा क्या अपराध हो गया? इस बच्चे में हमारा इतना मोह हो गया है कि यदि इसकी मृत्यु हो गई तो हम दोनों उसी सरोवर में डूब कर मरेंगे जहाँ पर यह बालक रत्न हमें मिला था।

हे धर्मदास! ऋषि रूप में उपस्थित विष्णु भगवान ने मेरी ओर देखा। मैं पालने में झूल रहा था। मेरे अति स्वस्थ शरीर को देखकर विष्णु भगवान आश्चर्य चकित हुए तथा बोले हे कालु भक्त! यह बच्चा तो पूर्ण रूप से स्वस्थ है। आप कह रहे हो यह कुछ भी आहार नहीं करता। यह बालक तो ऐसा स्वस्थ है जैसे एक सेर दूध प्रतिदिन पीता हो। यह नहीं मरने वाला। इतना कह कर विष्णु मेरे पास आया। मैंने विष्णु से बात की तथा कहा हे विष्णु भगवान! आप मेरे माता पिता से कहो एक कुँवारी गाय लाऐं उस गाय को आप आशीर्वाद देना व कंवारी गाय दूध देने लगेगी उस गाय का दूध मैं पीऊंगा। मेरे द्वारा अपना परिचय जान कर विष्णु भगवान समझ गए यह कोई सिद्ध आत्मा है जिसने मुझे पहचान लिया है। मुझे ऋषि के साथ बातें करते हुए मेरे पालक माता-पिता हैरान रह गए। अन्दर ही अन्दर खुशी की लहर दौड़ गई। ऋषि ने कहा कालु एक कंवारी गाय लाओ। वह दूध देगी उस दूध को यह होनहार बच्चा पीएगा। कालु पिता तुरन्त एक गाय ले आया। भगवान विष्णु ने मेरी प्रार्थना पर उस कंवारी गाय की कमर

पर हाथ रख दिया। उसी समय उस गाय की बछिया के थनों से दूध की धार बहने लगी तथा वह तीन सेर का पात्र भरने के पश्चात् रूक गई। वह दूध मैंने पीया।

मेरी तथा विष्णु जी की वार्ता की भाषा को कालू व गोदावरी समझ नही सके। वे मुझ पच्चीस दिन के बालक को बोलते देखकर उस ऋषि रूप विष्णु का ही चमत्कार मान रहे थे तथा कंवारी गाय द्वारा दूध देना भी उस ऋषि की कृपा जानकर दोनों ऋषि के चरणों में लिपट गए। मेरी पालक माता ने मुझे पालने से उठाया तथा उस ऋषि रूप में विराजमान विष्णु के चरणों में डाला। मैं जमीन पर नहीं गिरा। माता के हाथों से निकल कर जमीन से चार फुट ऊपर हवा में पालने की तरह स्थित हो गया। जब गोदावरी ने मुझे ऋषि के चरणों की ओर किया भगवान विष्णु तीन कदम पीछे हट गए तथा बोले माई! यह बालक परम शक्ति युक्त है, बड़ा होकर जनता का उपकार करेगा। इतना कह कर ऋषि रूप धारी विष्णु अपने लोक को चल दिए। मैं पुनः पालने में विराजमान हो गया।

उस वाल्मिकी दम्पति (कालु तथा गोदावरी) ने मेरा हवा में स्थित होना भी ऋषि का ही करिश्मा जाना इस कारण से मुझे कोई अवतारी पुरूष नहीं समझ सके मैं भी यही चाहता था, कि ये मुझे एक साधारण बालक ही समझें जिससे इनकी वृद्ध अवस्था का समय मेरे लालन पालन में बीत जाए। मैं शिशु काल में ही तत्वज्ञान की वाणी उच्चारण करने लगा। उस नगरी में अकाल गिर गया। मेरे माता पिता मुझे लेकर बनारस (काशी) आए तथा वहाँ रहने लगे।

काशी नगर में एक सुदर्शन नाम का वाल्मिकि जाति का पुण्यात्मा मेरी वाणी सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। मैंने सुदर्शन भक्त को सृष्टि रचना सुनाई। सुदर्शन मेरी हम उमर था। उस समय मेरी लीलामय आयु 12 वर्ष थी। जब काशी के विद्वानों से ज्ञान चर्चा होती थी, सुदर्शन भी मेरे साथ जाता था। एक दिन सुदर्शन ने कहा हे करूणामय! आप जो ज्ञान सुनाते हो इसका समर्थन कोई भी ऋषि नहीं करता। आप के ज्ञान पर कैसे विश्वास हो? हे करूणामय! आप ऐसी कृपा करो जिससे मेरा भ्रम दूर हो जाए। हे धर्मदास मैंने उस प्यासी आत्मा सुदर्शन को सत्यलोक के दर्शन कराए आप की तरह उसको भी तीन दिन तक ऊपर के सर्व लोकों में ले गया। सुदर्शन का पंच भौतिक शरीर अचेत हो गया। सुदर्शन भी अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था। अपने इकलौते पुत्र को मृत तुल्य देखकर उसके माता-पिता विलाप करने लगे तथा हमारे घर आकर मेरे मात-पिता से झगड़ा करने लगे। कहा कि तुम्हारे करूण ने हमारे बच्चे को जादू-जन्त्र कर दिया। वह सेवड़ा है। हमारा पुत्र मर गया तो हम आप के विरूद्ध राजा को शिकायत करेगें। मेरे माता-पिता ने मेरे से उन्ही के सामने पूछा हे करूण! सच्च बता तूने क्या कर दिया उस सुदर्शन को। मैंने कहा वह सतलोक देखना चाहता था। इसलिए उसे सतलोक दर्शन के लिए भेजा है। शीघ्र ही लौट

आएगा। कई वैद्य बुलाएं कई झाड़-फूँक करने वाले बुलाए कोई लाभ नहीं हुआ। तीसरे दिन सुदर्शन के मात-पिता रोते हुए मेरे पास आए बोले बेटा करूण! हमारे पुत्र को ठीक कर दे हम तेरे आगे हाथ जोड़ते हैं। मैंने कहा माई तुम्हारा पुत्र नहीं मरेगा।

मेरे (परमेश्वर कबीर साहेब) को अपने साथ अपने घर ले गए। मेरे मात-पिता भी साथ गए आस-पास के व्यक्ति भी वहाँ उपस्थित थे। मैंने सुदर्शन के शीश को पकड़ कर हिलाया तथा कहा हे सुदर्शन! वापिस आ जा तेरे माता-पिता बहुत व्याकुल हैं। इतना कहते ही सुदर्शन ने आँखें खोली चारों ओर देखा अपने सिर की ओर मुझे नहीं देख सका। उठ-बैठ कर बोला परमेश्वर करूणामय कहाँ हैं। रोने लगा-कहाँ गए परमेश्वर करूणामय। उपस्थित व्यक्तियों ने पूछा, क्या करूण को ढूढ़ं रहा है? देख यह बैठा तेरे पीछे। मुझे देखते ही चरणों में शीश रख कर विलाप करने लगा तथा रोता हुआ बोला हे काशी के रहने वालों। यह पूर्ण परमात्मा है। यह सर्व सृष्टि रचनहार अपने शहर में विराजमान है। आप इसे नहीं पहचान सके। यह मेरे साथ ऊपर के लोक में गया। ऊपर के लोक में यह पूर्ण परमात्मा के रूप में एक सफेद गुम्बद में विराजमान है। यही दोनों रूपों में लीला कर रहा है। सर्व व्यक्ति कहने लगे इस कालु के पुत्र ने भीखु के पुत्र पर जादू जन्त्र किया है। जिस कारण से इसका दिमाग चल गया है। इस करूण को ही परमात्मा कह रहा है। भला हो भगवान का भीखू का बेटा जीवित हो गया नहीं तो बेचारों का कोई और बूढ़ापे का सहारा भी नहीं था। यह कह कर सर्व अपने-2 घर चले गए।

भीखू तथा उसकी पत्नी सुखी (सुखवन्ती) अपने पुत्र को जीवित देखकर अति प्रसन्न हुए भगवान विष्णु का प्रसाद बनाया पूरे मौहल्ले (कालोनी) में प्रसाद बांटा। सुदर्शन ने मुझसे उपदेश लिया। अपने माता-पिता भीखू तथा सुखी को भी मेरे से उपदेश लेने को कहा। दोनों ने बहुत विरोध किया तथा कहा यह कालू का पुत्र पूर्ण परमात्मा नहीं है बेटा! इसने तेरे ऊपर जादू-जन्त्र करके मूर्ख बनाया हुआ है। भगवान विष्णु से बड़ा कोई नहीं है। सुदर्शन ने मुझ से कहा हे प्रभु! कृप्या मुझे अपनी शरण में रखना। मेरे माता-पिता का कोई दोष नहीं है सर्व मानव समाज इसी ज्ञान पर अटका है। जिस पर आपकी कृपा होगी केवल वही आप को जान व मान सकता है। इस काल-ब्रह्म ने तो पूरे विश्व (ब्रह्मा-विष्णु-शिव सहित) को भ्रमित किया हुआ है। हे धर्मदास! सुदर्शन भक्त ने काल के जाल को समझ कर सच्चे मन से मेरी भक्ति की तथा मेरा साक्षी बना कि पूर्ण परमात्मा कोई अन्य है जो ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव से भिन्न तथा अधिक शक्तिशाली है। हे धर्मदास! पाण्डवों की अश्वमेघ यज्ञ को जिस सुदर्शन द्वारा सम्पूर्ण की गई आप सुनते हो यह वही सुदर्शन बाल्मीकि मेरा शिष्य था। द्वापर

युग में मैं 404 वर्ष तक करूणामय शरीर में लीला करता रहा तथा सशरीर सतलोक चला गया।

प्रश्नः- धर्मदास ने प्रश्न किया हे प्रभु आपकी कृपा द्वापर युग में और किस पुण्यात्मा पर हुई?

उत्तरः- कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा द्वापर युग में एक चन्द्रविजय नामक राजा की रानी इन्द्रमति को पार किया तथा राजा चन्द्रविजय पर भी कृपा की। परमेश्वर कबीर जी द्वारा बताई ''रानी इन्द्रमति को पार करने वाली कथा'' लेखक (संत रामपाल दास जी महाराज) के शब्दों में :-

"द्वापर युग में इन्द्रमति को शरण में लेना"

द्वापरयुग में चन्द्रविजय नाम का एक राजा था। उसकी पत्नी इन्द्रमति बहुत ही धार्मिक प्रवृति की औरत थी। संत-महात्माओं का बहुत आदर किया करती थी। उसने एक गुरुदेव भी बना रखा था। उनके गुरुदेव ने बताया था कि बेटी साधु-संतों की सेवा करनी चाहिए। संतों को भोजन खिलाने से बहुत लाभ होता है। एकादशी का व्रत, मन्त्र के जाप आदि साधनायें जो गुरुदेव ने बताई थी। उस भगवत् भक्ति में रानी बहुत दृढ़ता से लगी हुई थी। गुरुदेव ने बताया था कि संतों को भोजन खिलाया करेगी तो तू आगे भी रानी बन जाएगी और तुझे स्वर्ग प्राप्ति होगी। रानी ने सोचा कि प्रतिदिन एक संत को भोजन अवश्य खिलाया करूँगी। उसने यह प्रतिज्ञा मन में ठान ली कि मैं खाना बाद में खाया करूँगी, पहले संत को खिलाया करूँगी। इससे मुझे याद बनी रहेगी, कहीं मुझे भूल न पड़ जाये। रानी प्रतिदिन पहले एक संत को भोजन खिलाती फिर स्वयं खाती। वर्षों तक ये क्रम चलता रहा।

एक समय हरिद्वार में कुम्भ के मेले का संयोग हुआ। जितने भी त्रिगुण माया के उपासक संत थे सभी गंगा में स्नान के लिए (परभी लेने के लिए) प्रस्थान कर गये। इस कारण से कई दिन रानी को भोजन कराने के लिए कोई संत नहीं मिला। रानी इन्द्रमति ने स्वयं भी भोजन नहीं किया। चौथे दिन अपनी बांदी से कहा कि बांदी देख ले कोई संत मिल जाए तो, नहीं तो आज तेरी मालकिन जीवित नहीं रहेगी। चाहे मेरे प्राण निकल जाएँ परन्तु मैं खाना नहीं खाऊँगी। वह दीन दयाल कबीर परमेश्वर अपने पूर्व वाले भक्त को शरण में लेने के लिए न जाने क्या कारण बना देता है ? बांदी ने ऊपर अटारी पर चढ़कर देखा कि सामने से सफेद कपड़े पहने एक संत आ रहा था। द्वापर युग में परमेश्वर कबीर करूणामय नाम से आये थे। बांदी नीचे आई और रानी से कहा कि एक व्यक्ति है जो साधु जैसा नजर आता है। रानी ने कहा कि जल्दी से बुला ला। बांदी महल से बाहर गई तथा प्रार्थना की कि साहेब आपको हमारी रानी ने

याद किया है। करूणामय साहेब ने कहा कि रानी ने मुझे क्यों याद किया है, मेरा और रानी का क्या सम्बन्ध? नौकरानी ने सारी बात बताई।

करूणामय (कबीर) साहेब ने कहा कि रानी को आवश्यकता पड़े तो यहाँ आ जाए, मैं यहाँ खड़ा हूँ। तू बांदी और वह रानी। मैं वहाँ जाऊँ और यदि वह कह दे कि तुझे किसने बुलाया था या उसका राजा ही कुछ कह दे बेटी संतों का अनादर बहुत पापदायक होता है। बांदी फिर वापिस आई और रानी से सब वार्ता कह सुनाई। तब रानी ने कहा कि बांदी मेरा हाथ पकड़ और चल। जाते ही रानी ने दण्डवत् प्रणाम करके प्रार्थना की कि हे परवरदिगार! चाहती तो ये हूँ कि आपको कंधे पर बैठा लूं। करूणामय साहेब ने कहा बेटी! मैं यही देखना चाहता था कि तेरे में कोई श्रद्धा भी है या वैसे ही भूखी मर रही है। रानी ने अपने हाथों खाना बनाया। करूणामय रूप में आए कविर्देव ने कहा कि मैं खाना नहीं खाता। मेरा शरीर खाना खाने का नहीं है। तो रानी ने कहा कि मैं भी खाना नहीं खाऊँगी। करूणामय साहेब जी ने कहा कि ठीक है बेटी लाओ खाना खाते हैं, क्योंकि समर्थ उसी को कहते हैं जो, जो चाहे, सो करे। करूणामय साहेब ने खाना खा लिया, फिर रानी से पूछा कि जो यह तू साधना कर रही है यह तेरे को किसने बताई है? रानी ने कहा कि मेरे गुरुदेव ने आदेश दिया है? कबीर साहेब ने पूछा क्या आदेश दिया है तेरे गुरुदेव ने? इन्द्रमती ने कहा कि विष्णु-महेश की पूजा, एकादशी का व्रत, तीर्थ भ्रमण, देवी पूजा, श्राद्ध निकालना, मन्दिर में जाना, संतों की सेवा करना। करूणामय (कबीर) साहेब ने कहा कि जो साधना तेरे गुरुदेव ने दी है तेरे को जन्म और मत्यु तथा स्वर्ग-नरक व चौरासी लाख योनियों के कष्ट से मुक्ति प्रदान नहीं करा सकती। रानी ने कहा कि महाराज जी जितने भी संत हैं, अपनी-अपनी प्रभुता आप ही बनाने आते हैं। मेरे गुरुदेव के बारे में कुछ नहीं कहोगे। मैं चाहे मुक्त होऊँ या न होऊँ।

करूणामय (कबीर) साहेब ने सोचा कि इस भोले जीव को कैसे समझाऐं? इन्होंने जो पूंछ पकड़ ली उसको छोड़ नहीं सकते, मर सकते हैं। करूणामय साहेब ने कहा कि बेटी वैसे तो तेरी इच्छा है, मैं निंदा नहीं कर रहा। क्या मैंने आपके गुरुदेव को गाली दी है या कोई बुरा कहा है? मैं तो भक्तिमार्ग बता रहा हूँ कि यह भक्ति शास्त्र विरूद्ध है। तुझे पार नहीं होने देगी और न ही तेरा कोई आने वाला कर्म दण्ड कटेगा और सुन ले आज से तीसरे दिन तेरी मत्यु हो जाएगी। न तेरा गुरु बचा सकेगा और न तेरी यह नकली साधना बचा सकेगी। (जब मरने की बारी आती है फिर जीव को डर लगता है। वैसे तो नहीं मानता) रानी ने सोचा कि संत झूठ नहीं बोलते। कहीं ऐसा न हो कि मैं तीसरे दिन ही मर जाऊँ। इस डर से करूणामय साहेब से पूछा कि साहेब क्या मेरी जान बच सकती है? कबीर साहेब (करूणामय) ने कहा कि बच सकती है। अगर तू मेरे से उपदेश

लेगी, मेरी शिष्या बनेगी, पिछली पूजाएँ त्यागेगी, तब तेरी जान बचेगी। इन्द्रमति ने कहा मैंने सुना है कि गुरुदेव नहीं बदलना चाहिए, पाप लगता है।

कबीर साहेब (करूणामय) ने कहा कि नहीं पुत्री यह भी तेरा भ्रम है। एक वैद्य (डाक्टर) से औषधी न लगे तो क्या दूसरे से नहीं लेते? एक पाँचवीं कक्षा का अध्यापक होता है। फिर एक उच्च कक्षा का अध्यापक होता है। बेटी अगली कक्षा में जाना होगा। क्या सारी उम्र पाँचवीं कक्षा में ही लगी रहेगी ? इसको छोड़ना पड़ेगा। तू अब आगे की पढ़ाई पढ़, मैं पढ़ाने आया हूँ। वैसे तो नहीं मानती परन्तु मत्यु दिखने लगी कि संत कह रहा है तो कहीं बात न बिगड़ जाए। ऐसा विचार करके इन्द्रमति ने कहा कि जैसे आप कहोगे मैं वैसे ही करूँगी। करूणामय (कबीर) साहेब ने उपदेश दिया। कहा कि तीसरे दिन मेरे रूप में काल आयेगा, तू उससे बोलना मत। जो मैंने नाम दिया है दो मिनट तक इसका जाप करना। दो मिनट के बाद उसको देखना है। उसके बाद सत्कार करना है। वैसे तो गुरुदेव आए तो अति शीघ्र चरणों में गिर जाना चाहिए। ये मेरा केवल इस बार आदेश है। रानी ने कहा ठीक है जी।

रानी को तो चिंता बनी हुई थी। श्रद्धा से जाप कर रही थी। (कबीर साहेब) करूणामय साहेब का रूप बना कर गुरुदेव रूप में काल आया, आवाज लगाई इन्द्रमति, इन्द्रमति। उसको तो पहले ही डर था, स्मरण करती रही। काल की तरफ नहीं देखा। दो मिनट के बाद जब देखा तो काल का स्वरूप बदल गया। काल का ज्यों का त्यों चेहरा दिखाई देने लगा। करूणामय साहेब का स्वरूप नहीं रहा। जब काल ने देखा कि तेरा तो स्वरूप बदल गया। वह जान गया कि इसके पास कोई शक्ति युक्त मंत्र है। यह कहकर चला गया कि तुझे फिर देखूँगा। अब तो बच गई। रानी बहुत खुश हुई, फूली नहीं समाई। कभी अपनी बांदियों को कहने लगी कि मेरी मत्यु होनी थी, मेरे गुरुदेव ने मुझे बचा दिया। राजा के पास गई तथा कहा कि आज मेरी मत्यु होनी थी, मेरे गुरुदेव ने रक्षा कर दी। मुझे लेने के लिए काल आया था। राजा ने कहा कि तू ऐसे ही ड्रामें करती रहती है, काल आता तो क्या तुझे छोड़ जाता? ये संत वैसे बहका देते हैं। अब इस बात को वह कैसे माने? खुशी-खुशी में रानी लेट गई। कुछ देर के बाद सर्प बनकर काल फिर आया और रानी को डस लिया। ज्यों ही सर्प ने डसा रानी को पता चल गया। रानी जोर से चिल्लाई। मुझे साँप ने डंस लिया। नौकर भागे। देखते ही देखते एक मोरी (पानी निकलने का छोटा छिद्र) में से वह सर्प घर से बाहर निकल गया। अपने गुरुदेव को पुकार कर रानी बेहोश हो गई।

करूणामय (कबीर) साहेब वहाँ प्रकट हो गए। लोगों को दिखाने के लिए मंत्र बोला और (वे तो बिना मंत्र भी जीवित कर सकते हैं, किसी जंत्र-मंत्र की आवश्यकता नहीं) इन्द्रमती को जीवित कर दिया। रानी ने बड़ा शुक्र मनाया कि

हे बंदी छोड़! यदि आज आपकी शरण में नहीं होती तो मेरी मत्यु हो जाती। साहेब ने कहा कि इन्द्रमति इस काल को मैं तेरे घर में घुसने भी नहीं देता और यह तेरे ऊपर यह हमला भी नहीं करता। परन्तु तुझे विश्वास नहीं होता। तू यह सोचती कि मेरे ऊपर कोई आपत्ति नहीं आनी थी। गुरुजी ने मुझे बहका कर नाम दे दिया। इसलिए तेरे को थोड़ा-सा झटका दिखाया है, नहीं तो बेटी तेरे को विश्वास नहीं होता।

धर्मदास यहाँ घना अंधेरा, बिन परचय (शक्ति प्रदर्शन) जीव जम का चेरा।।

कबीर साहेब (करूणामय) ने कहा कि अब जब मैं चाहूँगा, तब तेरी मत्यु होगी। गरीबदास जी कहते हैं कि :-

गरीब, काल डरै करतार से, जय जय जय जगदीश।
जौरा जौरी झाड़ती, पग रज डारे शीश।।

यह काल, कबीर परमेश्वर से डरता है और यह मौत कबीर साहेब के जूते झाड़ती है अर्थात् नौकर तुल्य है। फिर उस धूल को अपने सिर पर लगाती है कि आप जिसको मारने का आदेश दोगे उसके पास जाऊँगी, नहीं मैं नहीं जाऊँगी।

गरीब, काल जो पीसै पीसना, जौरा है पनिहार।
ये दो असल मजूर हैं, मेरे साहेब के दरबार।।

यह काल जो यहाँ का 21 ब्रह्मण्ड का भगवान (ब्रह्म) है जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश का पिता है। ये तो मेरे कबीर साहेब का आटा पीसता है अर्थात पक्का नौकर है और जौरा (मौत) मेरे कबीर साहेब का पानी भरती है अर्थात् एक विशेष नौकरानी है। यह दो असल मजूर मेरे साहेब के दरबार में हैं।

कुछ दिनों के बाद करूणामय (कबीर जी) साहेब फिर आए। रानी इन्द्रमति को सतनाम प्रदान किया। फिर कुछ समय के उपरान्त करूणामय साहेब ने रानी इन्द्रमति की अति श्रद्धा देखकर सारनाम दिया। परम पद की उपलब्धि करवाई। परमेश्वर करूणामय रूप से रानी के घर दर्शन देने जाते रहते थे तो इन्द्रमति प्रार्थना किया करती थी कि मेरे पति राजा को समझाओ मालिक, यह भी मान जाये। आपके चरणों में आ जाये तो मेरा जीवन सफल हो जाये। चन्द्रविजय से कबीर साहेब ने प्रार्थना की कि चन्द्रविजय आप भी नाम लो, यह दो दिन का राज और ठाठ है। फिर चौरासी लाख योनियों में प्राणी चला जाएगा। चन्द्रविजय ने कहा कि भगवन मैं तो नाम लूं नहीं और आपकी शिष्या को मना करूँ नहीं, चाहे सारे खजाने को ही दान करो, चाहे किसी प्रकार का सत्संग करवाओ, मैं मना नहीं करूँगा। कबीर साहेब (करूणामय) ने पूछा आप नाम क्यों नहीं लोगे? चन्द्रविजय राजा ने कहा कि मैंने तो बड़े-बड़े राजाओं की पार्टियों में जाना पड़ता है। करूणामय (कबीर साहेब) ने कहा कि पार्टियों में जाने में नाम क्या बाधा करेगा? सभा में जाओ, वहाँ काजू खाओ, दूध पी लो,

शरबत (जूस) पी लो, शराब मत प्रयोग करो। शराब पीना महापाप है। परन्तु राजा नहीं माना।

रानी की प्रार्थना पर करूणामय (कबीर) साहेब ने राजा को फिर समझाया कि नाम के बिना ये जीवन ऐसे ही व्यर्थ हो जायेगा। आप नाम ले लो। राजा ने फिर कहा कि गुरू जी मुझे नाम के लिए मत कहना। आपकी शिष्या को मैं मना नहीं करूँगा। चाहे कितना दान करे, कितना सत्संग करवाए। साहेब ने कहा कि बेटी इस दो दिन के झूठे सुख को देखकर इसकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है। तू प्रभु के चरणों में लगी रह। अपना आत्म कल्याण करवा। मत्यु के उपरान्त कोई किसी का पति नहीं, कोई किसी की पत्नी नहीं। दो दिन का सम्बन्ध है। अपना कर्म बना बेटी। जब इन्द्रमति 80 वर्ष की वद्धा हुई (कहाँ 40 साल की उम्र में मर जाना था)। जब शरीर भी हिलने लगा, तब करूणामय साहेब बोले अब बोल इन्द्रमति क्या चाहती है? चलना चाहती है सतलोक? इन्द्रमति ने कहा कि प्रभु तैयार हूँ, बिल्कुल तैयार हूँ दाता! करूणामय साहेब ने कहा कि तेरी पोते या पोती या किसी अन्य सदस्य में कोई ममता तो नहीं है? रानी ने कहा बिल्कुल नहीं साहेब। आपने ज्ञान ही ऐसा निर्मल दे दिया। इस गंदे लोक की क्या इच्छा करूँ? कबीर साहेब (करूणामय) जी ने कहा कि चल बेटी। रानी प्राण त्याग गई।

परमेश्वर कबीर जी (करूणामय) रानी इन्द्रमती की आत्मा को ऊपर ले गए। इसी ब्रह्मण्ड में एक मानसरोवर है। उस मान सरोवर में इस आत्मा को स्नान कराना होता है। इन्द्रमति को वहाँ पर कुछ समय तक रखा। करूणामय रूप में कबीर परमेश्वर जी ने रानी से पूछा की तेरी कुछ इच्छा तो नहीं यदि इच्छा रही तो दुबारा जन्म लेना पड़ेगा। यदि मन में सन्तान व सम्पत्ति या पति, पत्नी आदि की इच्छा थोड़ी सी भी रह गई तो आत्मा सतलोक नहीं जा सकती। इन्द्रमति ने कहा साहेब आप तो अंतर्यामी हो, कोई इच्छा नहीं है। आपके चरणों की इच्छा है। लेकिन एक मन में शंका बनी हुई है कि मेरा जो पति था, उसने मुझे किसी भी धार्मिक कर्म के लिए कभी मना नहीं किया। नहीं तो आजकल के पति अपनी पत्नियों को बाधा कर देते हैं। यदि वह मुझे मना कर देता तो मैं आपके चरणों में नहीं लग पाती। मेरा कल्याण नहीं होता। उसका इस शुभ कर्म में सहयोग का कुछ लाभ मिलता हो तो कभी उस पर भी दया करना दाता। करूणामय जी ने देखा कि यह नादान इसके पीछे फिर अटक गई। साहेब बोले ठीक है बेटी, अभी तू दो चार वर्ष यहाँ रह।

अब दो वर्ष के बाद राजा भी मरने लगा। क्योंकि नाम ले नहीं रखा था। यम के दूत आए। राजा चौक में चक्कर खाकर गिर गया। यम के दूतों ने उसकी गर्दन को दबाया। राजा की टट्टी और पेशाब निकल गया। करूणायम (कबीर) परमेश्वर ने रानी को कहा कि देख तेरे राजा की क्या हालत हो रही है? वहाँ से

कबीर परमेश्वर दिखा रहे हैं। तब रानी ने कहा कि देख लो दाता यदि उसका भक्ति में सहयोग का कोई फल बनता हो तो दया कर लो। रानी को फिर भी थोड़ी-सी ममता बनी थी। परमेश्वर कबीर (करूणामय) ने सोचा की यह फिर काल जाल में फंसेगी। यह सोचकर मानसरोवर से वहाँ गए जहाँ राजा चन्द्रविजय अपने महल में अचेत पड़ा था। यमदूत उसके प्राण निकाल रहे थे। कबीर परमेश्वर जी के आते ही यमदूत ऐसे आकाश में उड़ गए जैसे मुर्दे से गिद्ध उड़ जाते हैं। चन्द्रविजय होश में आ गया। सामने करूणामय रूप में परमेश्वर कबीर जी खड़े थे। केवल चन्द्रविजय को दिखाई दे रहे थे, किसी अन्य को दिखाई नहीं दे रहे थे। चन्द्रविजय चरणों में गिर कर याचना करने लगा मुझे क्षमा कर दो दाता, मेरी जान बचाओ। क्योंकि उसने देखा कि तेरी जान जाने वाली है। (जब इस जीव की आँख खुलती है कि अब तो बात बिगड़ गई) राजा चन्द्र विजय गिड़गिड़ाता हुआ बोला मुझे क्षमा कर दो दाता, मेरी जान बचा लो मालिक। कबीर परमेश्वर ने कहा राजा आज भी वही बात है, उस दिन भी वही बात थी, नाम लेना होगा। राजा ने कहा मैं नाम ले लूँगा जी, अभी ले लूँगा नाम। कबीर परमेश्वर ने नाम उपदेश दिया तथा कहा कि अब मैं तुझे दो वर्ष की आयु दूँगा, यदि इसमें एक स्वांस भी खाली चला गया तो फिर कर्मदण्ड रह जाएगा।

कबीर, जीवन तो थोड़ा भला, जै सत सुमरण हो।
लाख वर्ष का जीवना, लेखे धरे ना को।।

शुभ कर्म में सहयोग दिया हुआ पिछला कर्म और साथ में श्रद्धा से दो वर्ष के स्मरण से तथा तीनों नाम प्रदान करके कबीर साहेब चन्द्रविजय को भी पार कर ले गये। बोलो सतगुरु देव की जय ''जय बन्दी छोड़।''

प्रश्नः- धर्मदास जी ने कहा हे कबीर परमेश्वर! हमारे को तो ब्राह्मणों (विद्वानों) ने यही बताया था कि पाण्डवों की अश्वमेघ यज्ञ को श्री कृष्ण भक्त सुदर्शन सुपच ने सफल की थी तथा भगवान कृष्ण जी ने गीता में कहा है कि अर्जुन! युद्ध कर तुझे कोई पाप नहीं लगेगा। ये सर्व योद्धा मेरे द्वारा पहले से मार दिए गए हैं। तू निमित्त मात्र बन जा। यदि तू युद्ध में मारा गया तो स्वर्ग जाएगा, यदि युद्ध में जीत गया तो पृथ्वी के राज्य का सुख भोगेगा।

उत्तरः- कबीर परमेश्वर ने कहा धर्मदास! श्री मद्भगवत् गीता का ज्ञान श्री कृष्ण जी ने नहीं कहा। श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके काल ब्रह्म ने कहा था।

सुदर्शन सुपच श्री कृष्ण भक्त नहीं था वह पूर्ण ब्रह्म का उपासक था। सुन पाण्डवों के यज्ञ के सम्पूर्ण होने की कथा। कृप्या निम्न पढ़ें पाठक जन परमेश्वर कबीर जी द्वारा बताया पाण्डव यज्ञ का प्रकरण जो धर्मदास जी ने स्वसम वेद के पद्य भाग में लिखा है (लेखक के शब्दों में निम्न :-)

।। पाण्डवों की यज्ञ में सुपच सुदर्शन द्वारा शंख बजाना।।

जैसा कि सर्व विदित है कि महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने युद्ध करने से मना कर दिया था तथा शस्त्र त्याग कर युद्ध के मैदान में दोनों सेनाओं के बीच में खड़े रथ के पिछले हिस्से में आंखों से आँसू बहाता हुआ बैठ गया था। तब भगवान कष्ण के अन्दर प्रवेश काल शक्ति (ब्रह्म) अर्जुन को युद्ध करने की राय देने लगा था। तब अर्जुन ने कहा था कि भगवान यह घोर पाप मैं नहीं करूंगा। इससे अच्छा तो भिक्षा का अन्न भी खा कर गुजारा कर लेंगे। तब भगवान काल श्री कष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके बोला था कि अर्जुन युद्ध कर। तुझे कोई पाप नहीं लगेगा। देखें गीता जी के अध्याय 11 के श्लोक 33, अध्याय 2 के श्लोक 37, 38 में।

महाभारत में लेख (प्रकरण) आता है कि कष्ण जी के कहने से अर्जुन ने युद्ध करना स्वीकार कर लिया। घमासान युद्ध हुआ। करोड़ों व्यक्ति व सर्व कौरव युद्ध में मारे गए और पाण्डव विजयी हुए। तब पाण्डव प्रमुख युधिष्ठिर को राज्य सिंहासन पर बैठाने के लिए स्वयं भगवान कष्ण ने कहा तो युधिष्ठिर ने यह कहते हुए गद्दी पर बैठने से मना कर दिया कि मैं ऐसे पाप युक्त राज्य को नहीं करूंगा। जिसमें करोड़ों व्यक्ति मारे गए थे। उनकी पत्नियाँ विधवा हो गई, करोड़ों बच्चे अनाथ हो गए, अभी तक उनके आँसू भी नहीं सूखे हैं। किसी प्रकार भी बात बनती न देख कर श्री कष्ण जी ने कहा कि आप भीष्म जी से राय लो। क्योंकि जब व्यक्ति स्वयं फैसला लेने में असफल रहे तब किसी स्वजन से विचार कर लेना चाहिए। युधिष्ठिर ने यह बात स्वीकार कर ली। तब श्री कष्ण जी युधिष्ठिर को साथ ले कर वहाँ पहुँचे जहाँ पर श्री भीष्म शर (तीरों की) सैय्या (चारपाई) पर अंतिम स्वांस गिन रहे थे, वहाँ जा कर श्री कष्ण जी ने भीष्म से कहा कि युधिष्ठिर राज्य गद्दी पर बैठने से मना कर रहे हैं। कपा आप इन्हें राजनीति की शिक्षा दें।

भीष्म जी ने बहुत समझाया परंतु युधिष्ठिर अपने उद्देश्य ये विचलित नहीं हुआ। यही कहता रहा कि इस पाप से युक्त रूधिर से सने राज्य को भोग कर मैं नरक प्राप्ति नहीं चाहूँगा। श्री कष्ण जी ने कहा कि आप एक धर्म यज्ञ करो। जिससे आपको युद्ध में हुई हत्याओं का पाप नहीं लगेगा। इस बात पर युधिष्ठिर सहमत हो गया और एक धर्म यज्ञ की। फिर राज गद्दी पर बैठ गया। हस्तिनापुर का राजा बन गया।

(प्रमाण सुखसागर के पहले स्कन्ध के आठवें तथा
नौवें अध्याय से सहाभार पष्ठ नं. 48 से 53)

कुछ वर्षो पर्यन्त युधिष्ठिर को भयानक स्वपन आने शुरु हो गए। जैसे बहुत

सी औरतें रोती-बिलखती हुई अपनी चूड़ियाँ फोड़ रहीं हैं तथा उनके मासूम बच्चे अपनी मां के पास खड़े कुछ बैठे पिता-पिता कह कर रो रहे हैं मानों कह रहे हो हे राजन्! हमें भी मरवा दे, भेज दे हमारे पिता के पास। कई बार बिना शीश के धड़ दिखाई देते है। किसी की गर्दन कहीं पड़ी है, धड़ कहीं पड़ा है, हा-हा कार मची हुई है। युधिष्ठिर की नींद उचट जाती, घबरा कर बिस्तर पर बैठ कर हाँफने लग जाता। सारी-2 रात बैठ कर या महल में घूम कर व्यतीत करता है। एक दिन द्रौपदी ने बड़े पति की यह दशा देखी परेशानी का कारण पूछा तो युधिष्ठिर कुछ नहीं- कुछ नहीं कह कर टाल गए। जब द्रौपदी ने कई रात्रियों में युधिष्ठिर की यह दुर्दशा देखी तो एक दिन चारों (अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव) को बताया कि आपका बड़ा भाई बहुत परेशान है। कारण पूछो। तब चारों भाईयों ने बड़े भईया से प्रार्थना करके पूछा कि क्या परेशानी का कारण बताओ। ज्यादा आग्रह करने पर अपनी सर्व कहानी सुनाई। पाँचों भाई इस परेशानी का कारण जानने के लिए भगवान श्रीकृष्णजी के पास गए तथा बताया कि बड़े भईया युधिष्ठिर जी को भयानक स्वपन आ रहे हैं। जिनके कारण उनकी रात्रि की नींद व दिन का चैन व भूख समाप्त हो गई। क्या कारण व समाधान बताएँ। सारी बात सुनकर श्री कृष्ण जी बोले युद्ध में किए हुए पाप परेशान कर रहे हैं। इन पापों का निवारण यज्ञ से होता है।

गीता जी के अध्याय 3 के श्लोक 13 का हिन्दी अनुवाद : यज्ञ में प्रतिष्ठित ईष्ट (पूर्ण परमात्मा) को भोग लगाने के बाद बने प्रसाद को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से मुक्त हो जाते हैं जो पापी लोग अपना शरीर पोषण करने के लिये ही अन्न पकाते हैं वे तो पाप को ही खाते हैं अर्थात् यज्ञ करके सर्व पापों से मुक्त हो जाते हैं। और कोई चारा न देख कर पाण्डवों ने श्री कृष्ण जी की सलाह स्वीकार कर ली। यज्ञ की तैयारी की गई। सर्व पृथ्वी के मानव, ऋषि, सिद्ध, साधु व स्वर्ग लोक के देव भी आमन्त्रित करने को, श्री कृष्ण जी ने कहा कि जितने अधिक व्यक्ति भोजन पाएंगें उतना ही अधिक पुण्य होगा। परंतु संतों व भक्तों से विशेष लाभ होता है उनमें भी कोई परम शक्ति युक्त संत होगा वह पूर्ण लाभ दे सकता है तथा यज्ञ पूर्ण होने का साक्षी एक पांच मुख वाला (पंचजन्य) शंख एक सुसज्जित ऊँचे आसन पर रख दिया जाएगा तथा जब इस यज्ञ में कोई परम शक्ति युक्त संत भोजन खाएगा तो यह शंख स्वयं आवाज करेगा। इतनी गूँज होगी की पूरी पृथ्वी पर तथा स्वर्ग लोक तक आवाज सुनाई देगी।

यज्ञ की तैयारी हुई। निश्चित दिन को सर्व आदरणीय आमन्त्रित भक्तगण, अठासी हजार ऋषि, तेतीस करोड़ देवता, नौ नाथ, चौरासी सिद्ध, ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि पहुँच गए। यज्ञ कार्य शुरु हुआ। बाद में सब ने यज्ञ का बचा प्रसाद (भण्डारा) सर्व उपस्थित महानुभावों व भक्तों तथा जनसाधारण को बरताया

(खिलाया)। स्वयं भगवान कृष्ण जी ने भी भोजन खा लिया। परंतु शंख नहीं बजा। शंख नहीं बजा तो यज्ञ सम्पूर्ण नहीं हुई। उस समय युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण जी से पूछा - हे मधुसुदन! शंख नहीं बजा। सर्व महापुरुषों व आगन्तुकों ने भोजन पा लिया। कारण क्या है? श्री कृष्ण जी ने कहा कि इनमें कोई पूर्ण सन्त (सतनाम व सारनाम उपासक) नहीं है। तब युधिष्ठिर को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने महा मण्डलेश्वर जिसमें वशिष्ठ मुनि, मार्कण्डे, लोमष ऋषि, नौ नाथ (गोरखनाथ जैसे), चौरासी सिद्ध आदि-2 व स्वयं भगवान श्री कृष्ण जी ने भी भोजन खा लिया। परंतु शंख नहीं बजा। इस पर कृष्ण जी ने कहा ये सर्व मान बड़ाई के भूखे हैं। परमात्मा चाहने वाला कोई नहीं तथा अपनी मनमुखी साधना करके सिद्धि दिखा कर दुनियाँ को आकर्षित करते हैं। भोले लोग इनकी वाह-2 करते हैं तथा इनके इर्द-गिर्द मण्डराते हैं। ये स्वयं भी पशु जूनी में जाएंगे तथा अपने अनुयाईयों को नरक ले जाएंगे।

गरीब, साहिब के दरबार में, गाहक कोटि अनन्त।
चार चीज चाहै हैं, रिद्धि सिद्धि मान महंत।।
गरीब, ब्रह्म रन्द्र के घाट को, खोलत है कोई एक।
द्वारे से फिर जाते हैं, ऐसे बहुत अनेक।।
गरीब, बीजक की बातां कहैं, बीजक नाहीं हाथ।
पृथ्वी डोबन उतरे, कह–कह मीठी बात।।
गरीब, बीजक की बातां कहैं, बीजक नाहीं पास।
ओरों को प्रमोदही, अपन चले निरास।।

।।प्रमाण के लिए गीता जी के कुछ श्लोक।।

अध्याय 9 का श्लोक 20

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा-
यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोक-
मश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्। २०।

त्रैविद्याः, माम्, सोमपाः, पूतपापाः, पूतपापाः, यज्ञैः, इष्टवा, स्वर्गतिम्, प्रार्थयन्ते, ते, पुण्यम्, आसाद्य, सुरेन्द्रलोकम्, अश्नन्ति, दिव्यान्, दिवि, देवभोगान्।।20।।

अनुवाद : (त्रैविद्याः) तीनों वेदों में विधान (सोमपाः) सोमरस को पीने वाले (पूतपापाः) पाप रहित पुरुष (माम्) मुझको (यज्ञैः) यज्ञों के द्वारा (इष्टवा) पूज्य देव के रूप में पूज कर (स्वर्गतिम्) स्वर्ग की प्राप्ति (प्रार्थयन्ते) चाहते हैं (ते) वे पुरुष (पुण्यम्) अपने पुण्यों के फलरूप (सुरेन्द्रलोकम्) स्वर्गलोक को (आसाद्य) प्राप्त होकर (दिवि) स्वर्ग में (दिव्यान्) दिव्य (देवभोगान्) देवताओं के भोगों को (अश्नन्ति) भोगते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : तीनों वेदोंमें विधान सोमरसको पीनेवाले पापरहित पुरुष मुझको यज्ञोंके द्वारा पूज्य देव के रूप में पूज कर स्वर्गकी प्राप्ति चाहते हैं वे पुरुष अपने पुण्योंके फलरूप स्वर्गलोकको प्राप्त होकर स्वर्गमें दिव्य देवताओंके भोगोंको भोगते हैं।

अध्याय 9 का श्लोक 21

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं-
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना-
गतागतं कामकामा लभन्ते। २१।

ते, तम्, भुक्त्वा, स्वर्गलोकम्, विशालम्, क्षीणे, पुण्ये, मर्त्यलोकम्, विशन्ति,
एवम्, त्रयीधर्मम्, अनुप्रपन्नाः, गतागतम्, कामकामाः, लभन्ते।।21।।

अनुवाद : (ते) वे (तम्) उस (विशालम्) विशाल (स्वर्गलोकम्) स्वर्गलोक को (भुक्त्वा) भोगकर (पुण्ये) पुण्य (क्षीणे) क्षीण होने पर (मर्त्यलोकम्) मत्युलोक को (विशन्ति) प्राप्त होते हैं। (एवम्) इस प्रकार (त्रयीधर्मम्) तीनों वेदों में कहे हुए पूजा कर्मों का (अनुप्रपन्नाः) आश्रय लेने वाले और (कामकामाः) भोगों की कामनावस (गतागतम्) बार–बार आवागमन को (लभन्ते) प्राप्त होते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : वे उस विशाल स्वर्गलोक को भोगकर पुण्य क्षीण होनेपर मत्युलोक को प्राप्त होते हैं। इस प्रकार तीनों वेदोंमें कहे हुए पूजा कर्मों का आश्रय लेने वाले और भोगों की कामनावस बार-बार आवागमन को प्राप्त होते हैं।

अध्याय 16 का श्लोक 17

आत्मसम्भाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्। १७।

आत्सम्भाविताः, स्तब्धाः, धनमानमदान्विताः,
यजन्ते, नामयज्ञैः, ते, दम्भेन, अविधिपूर्वकम्।।17।।

अनुवाद : (ते) वे (आत्मसम्भाविताः) अपने आपको ही श्रेष्ठ मानने वाले (स्तब्धाः) घमण्डी पुरुष (धनमानमदान्विताः) धन और मान के मद से युक्त होकर (नामयज्ञैः) केवल नाममात्र के यज्ञों द्वारा (दम्भेन) पाखण्ड से (अविधिपूर्वकम्) शास्त्रविधि रहित पूजन करते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : वे अपने आपको ही श्रेष्ठ मानने वाले घमण्डी पुरुष धन और मान के मद से युक्त होकर केवल नाम मात्र के यज्ञों द्वारा पाखण्ड से शास्त्रविधि रहित पूजन करते हैं।

अध्याय 16 का श्लोक 18

अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः। १८।

अहंकारम्, बलम्, दर्पम्, कामम्, क्रोधम्, च, संश्रिताः,
माम्, आत्मपरदेहेषु, प्रद्विषन्तः, अभ्यसूयकाः।।18।।

अनुवाद : (अहंकारम्) अहंकार (बलम्) बल (दर्पम्) घमण्ड (कामम्) कामना और (क्रोधम्) क्रोधादि के (संश्रिताः) परायण (च) और (अभ्यसूयकाः) दूसरों की निन्दा करने वाले पुरुष (आत्मपरदेहेषु) प्रत्येक शरीर में परमात्मा आत्मा सहित तथा (माम्) मुझसे (प्रद्विषन्तः) द्वेष करने वाले होते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : अहंकार बल घमण्ड कामना और क्रोधादि के परायण और दूसरों की निन्दा करने वाले पुरुष प्रत्येक शरीर में परमात्मा आत्मा सहित तथा मुझसे द्वेष करनेवाले होते हैं।

अध्याय 16 का श्लोक 19

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्त्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु। १९।

तान् अहम्, द्विषतः, क्रूरान्, संसारेषु, नराधमान्,
क्षिपामि, अजस्त्रम्, अशुभान्, आसुरीषु, एव, योनिषु।।19।।

अनुवाद : (तान्) उन (द्विषतः) द्वेष करने वाले (अशुभान्) पापाचारी और (क्रूरान्) क्रूरकर्मी (नराधमान्) नराधमों को (अहम्) मैं (संसारेषु) संसार में (अजस्त्रम्) बार–बार (आसुरीषु) आसुरी (योनिषु) योनियों में (एव) ही (क्षिपामि) डालता हूँ।

केवल हिन्दी अनुवाद : उन द्वेष करने वाले पापाचारी और क्रूरकर्मी नराधमों को मैं संसार में बार-बार आसुरी योनियों में ही डालता हूँ।

अध्याय 16 का श्लोक 20

आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम्। २०।

आसुरीम्, योनिम्, आपन्नाः, मूढाः, जन्मनि, जन्मनि,
माम् अप्राप्य, एव, कौन्तेय, ततः, यान्ति, अधमाम्, गतिम्।।20।।

अनुवाद : (कौन्तेय) हे अर्जुन! (मूढाः) वे मूर्ख (माम्) मुझको (अप्राप्य) न प्राप्त होकर (एव) ही (जन्मनि) जन्म (जन्मनि) जन्म में (आसुरीम्) आसुरी (योनिम्) योनिको (आपन्नाः) प्राप्त होते हैं फिर (ततः) उससे भी (अधमाम्) अति नीच (गतिम्) गतिको (यान्ति) प्राप्त होते हैं अर्थात् घोर नरकों में पड़ते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : हे अर्जुन! वे मूर्ख मुझको न प्राप्त होकर ही जन्म जन्ममें आसुरी योनि को प्राप्त होते हैं। फिर उससे भी अति नीच गति को प्राप्त होते हैं अर्थात् घोर नरकों में पड़ते हैं।

अध्याय 16 का श्लोक 23

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्। २३।

यः, शास्त्रविधिम्, उत्सज्य, वर्तते, कामकारतः,
न, सः, सिद्धिम्, अवाप्रोति, न, सुखम्, न, पराम्, गतिम्।।23।।

अनुवाद : (यः) जो पुरुष (शास्त्रविधिम्) शास्त्रविधि को (उत्सज्य) त्यागकर (कामकारतः) अपनी इच्छा से मनमाना (वर्तते) आचरण करता है (सः) वह (न) न (सिद्धिम्) सिद्धि को (अवाप्नोति) प्राप्त होता है (न)न (पराम्)परम (गतिम्)गति को और(न) न (सुखम्) सुख को ही।

केवल हिन्दी अनुवाद : जो पुरुष शास्त्रविधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है। वह न सिद्धि को प्राप्त होता है, न परम गति को और न सुख को ही।

''शेष कथा''

श्री कष्ण भगवान ने अपनी शक्ति से युधिष्ठिर को उन सर्व महा मण्डलेश्वरों के आगे होने वाले जन्म दिखाए जिसमें किसी ने कैंचवे का, किसी ने भेड़-बकरी, भैंस व शेर आदि के रूप धारण किए थे।

यह सब देख कर युधिष्ठिर ने कहा - हे भगवन! फिर तो पथ्वी संत रहित हो गई है।। भगवान कष्ण जी ने कहा जब पथ्वी संत रहित हो जाएगी तो यहाँ आग लग जाएगी। सर्व जीव-जन्तु आपस में लड़ मरेंगे। यह तो पूरे संत की शक्ति से सन्तुलन बना रहता है। समय-समय पर मैं (भगवान विष्णु) पथ्वी पर आ कर राक्षस वत्ति के लोगों को समाप्त करता हूँ जिससे संत सुखी हो जाते है। जिस प्रकार जमींदार अपनी फसल से हानि पहुँचने वाले अन्य पौधों को जो झाड़-खरपतवार आदि को काट-काट कर बाहर डाल देता है तब वह फसल स्वतन्त्रता पूर्वक फलती-फूलती है। यानी ये संत उस फसल में सिचांई का सुख प्रदान करते हैं। पूर्ण संत सबको समान सुख देते हैं। जिस प्रकार वर्षा व सिंचाई का जल दोनों प्रकार के पौधों (फसल व खरपतवार) का पोषण करते हैं। उनमें सर्व जीव के प्रति दया भाव होता है। अब मैं आपको पूर्ण संत के दर्शन करवाता हूँ। एक महात्मा काशी में रहते हैं। उसको बुलवाना है। तब युधिष्ठिर ने कहा कि उस ओर संतों को आमन्त्रित करने का कार्य भीमसेन को सौंपा था। पूछते हैं कि वह उन महात्मा तक पहुँचा या नहीं। भीमसेन को बुलाकर पूछा तो उसने बताया कि मैं उस से मिला था। उनका नाम स्वपच सुदर्शन है। बाल्मिकी जाति में गहस्थी संत हैं। एक झौंपड़ी में रहता है। उन्होंने यज्ञ में आने से मना कर दिया। इस पर श्री कष्ण जी ने कहा कि संत मना नहीं किया करते। सर्व वार्ता जो उनके साथ हुई है वह बताओ।

तब भीम सेन ने आगे बताया कि मैंने उनको आमन्त्रित करते हुए कहा कि हे संत परवर ! हमारी यज्ञ में आने का कष्ट करना। उनको पूरा पता बताया। उसी समय वे (सुदर्शन संत जी) कहने लगे भीम सैन आप के पाप के अन्न को

खाने से संतों को दोष लगेगा। करोड़ों सैनिकों की हत्या करके आपने तो घोर पाप कर रखा है। आज आप राज्य का आनन्द ले रहे हो। युद्ध में वीरगति को प्राप्त सैनिकों की विधवा पत्नी व अनाथ बच्चे रह-रह कर अपने पति व पिता को याद करके फूट-फूट कर घंटों रोते हैं। बच्चे अपनी माँ से लिपट कर पूछ रहे हैं - माँ, पापा छुट्टी नहीं आए? कब आएंगे? हमारे लिए नए वस्त्र लाएंगे। दूसरी लड़की कहती है कि मेरे लिए नई साड़ी लाएंगे। बड़ी होने पर जब मेरी शादी होगी तब मैं उसे बाँधकर ससुराल जाऊँगी। वह लड़का (जो दस वर्ष की आयु का है) कहता है कि मैं अब की बार पापा (पिता जी) से कहूँगा कि आप नौकरी पर मत जाना। मेरी माँ तथा भाई-बहन आपके बिना बहुत दुःख पाते हैं। माँ तो सारा दिन-रात आपकी याद करके जब देखो एकांत स्थान पर रो रही होती है। या तो हम सबको अपने पास बुला लो या आप हमारे पास रहो। छोड़ दो नौकरी को। मैं जवान हो गया हूँ। आपकी जगह मैं फौज में जा कर देश सेवा करूंगा। आप अपने परिवार में रहो। आने दो पिता जी को, बिल्कुल नहीं जाने दूँगा। (उन बच्चों को दुःखी होने से बचाने के लिए उनकी माँ ने उन्हें यह नहीं बताया कि आपके पिता जी युद्ध में मर चुके हैं क्योंकि उस समय वे बच्चे अपने मामा के घर गए हुए थे। केवल छोटा बच्चा जो डेढ़ वर्ष की आयु का था वही घर पर था। अन्य बच्चों को जान बूझ कर नहीं बुलाया था।)

इस प्रकार उन मासूम बच्चों की आपसी वार्ता से दुःखी होकर उनकी माता का हृदय पति की याद के दुःख से भर आया। उसे हल्का करने के लिए (रोने के लिए) दूसरे कमरे में जा कर फूट-फूट कर रोने लगी। तब सारे बच्चे माँ के ऊपर गिरकर रोने लगे। सम्बन्धियों ने आकर शांत करवाया। कहा कि बच्चों को स्पष्ट बताओ कि आपके पिता जी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गए। जब बच्चों को पता चला कि हमारे पापा (पिता जी) अब कभी नहीं आएंगे तब उस स्वार्थी राजा को कोसने लगे जिसने अपने भाई बटवारे के लिए दुनियाँ के लालों का खून पी लिया। यह कोई देश रक्षा की लड़ाई भी नहीं थी जिसमें हम संतोष कर लेते कि देश के हित में प्राण त्याग दिए हैं। इस खूनी राजा ने अपने ऐशो-आराम के लिए खून की नदी बहा दी। अब उस पर मौज कर रहा है। आगे संत सुदर्शन (स्वपच) बता रहे हैं कि भीम ऐसे-2 करोड़ों प्राणी युद्ध की पीड़ा से पीड़ित हैं। उनकी हाय आपको चैन नहीं लेने देगी चाहे करोड़ यज्ञ करो। ऐसे दुष्ट अन्न को कौन खाए ? यदि मुझे बुलाना चाहते हो तो मुझे पहले किए हुए सौ (100) यज्ञों का फल देने का संकल्प करो अर्थात् एक सौ यज्ञों का फल मुझे दो तब मैं आपके भोजन पाऊँ।

सुदर्शन जी के मुख से इस बात को सुन कर भीम ने बताया कि मैं बोला आप तो कमाल के व्यक्ति हो, सौ यज्ञों का फल मांग रहे हो। यह हमारी दूसरी

यज्ञ है। आपको सौ का फल कैसे दें? इससे अच्छा तो आप मत आना। आपके बिना कौन सी यज्ञ सम्पूर्ण नहीं होगी। जब स्वयं भगवान कष्ण जी हमारे साथ हैं। तो तेरे न आने से क्या यज्ञ पूर्ण नहीं होगा। सर्व वार्ता सुन कर श्री कष्ण जी ने कहा भीम संतों के साथ ऐसा आपत्तिजनक व्यवहार नहीं करना चाहिए। सात समुद्रों का अंत पाया जा सकता है परंतु सतगुरु (कबीर साहेब) के संत का पार नहीं पा सकते। उस महात्मा सुदर्शन वाल्मिकि के एक बाल के समान तीन लोक भी नहीं हैं। मेरे साथ चलो, उस परमपिता परमात्मा के प्यारे हंस को लाने के लिए। तब पाँचों पाण्डव व श्री कष्ण भगवान स्वपच सुदर्शन की झोंपड़ी की ओर रथ में बैठकर चले। एक योजन अर्थात् 12 किलोमीटर पहले रथ से उतर कर नंगे पैरों चले तथा रथ को खाली रथवान पीछे-2 चला।

उस समय स्वयं कबीर साहेब सुदर्शन स्वपच का रूप बना कर झोपड़ी में बैठ गए व सुदर्शन को अपनी गुप्त प्रेरणा से मन में संकल्प उठा कर कहीं दूर के संत या भक्त से मिलने भेज दिया जिसमें आने व जाने में कई रोज लगने थे। तब सुदर्शन के रूप में सतगुरु की चमक व शक्ति देख कर सर्व पाण्डव बहुत प्रभावित हुए। स्वयं श्रीकष्णजी ने लम्बी दण्डवत् प्रणाम की। तब देखा देखी सर्व पाण्डवों ने भी ऐसा ही किया। कष्ण जी की तरफ नजर करके सुपच सुदर्शन ने आदर पूर्वक कहा कि - हे त्रिभुवननाथ! आज इस दीन के द्वार पर कैसे? मेरा अहोभाग्य है कि आज दीनानाथ विश्वम्भरनाथ मुझ तुच्छ को दर्शन देने स्वयं चल कर आए हैं। सबको आदर पूर्वक बैठना दिया तथा आने का कारण पूछा। उस समय श्री कष्ण जी ने कहा कि हे जानी-जान! आप सर्व गति (स्थिति) से परिचित हैं। पाण्डवों ने यज्ञ की है। वह आपके बिना सम्पूर्ण नहीं हो रही है। कपा इन्हें कतार्थ करें। उसी समय वहां उपस्थित भीम की ओर संकेत करते हुए सुदर्शन रूप धारी परमेश्वर जी ने कहा कि यह वीर मेरे पास आया था तथा अपनी मजबूरी से इसे अवगत करवाया था। उस समय श्री कष्ण जी ने कहा कि - हे पूर्णब्रह्म! आपने स्वयं अपनी वाणी में कहा है कि -

"संत मिलन को चालिए, तज माया अभिमान।
जो–जो पग आगे धरै, सो–सो यज्ञ समान।।"

आज पांचों पाण्डव राजा हैं तथा मैं स्वयं द्वारिकाधीश आपके दरबार में राजा होते हुए भी नंगे पैरों उपस्थित हूँ। अभिमान का नामों निशान भी नहीं है तथा स्वयं भीम ने भी खड़ा हो कर उस दिन कहे हुए अपशब्दों की चरणों में पड़ कर क्षमा याचना की। श्री कष्ण जी ने कहा हे नाथ! आज यहाँ आपके दर्शनार्थ आए आपके छः सेवकों के कदमों के यज्ञ समान फल को स्वीकार करते हुए सौ आप रखो तथा शेष हम भिक्षुकों को दान दीजिए ताकि हमारा भी कल्याण हो। इतना आधीन भाव सर्व उपस्थित जनों में देख कर जगतगुरु साहेब करूणामय

सुदर्शन रूप में अति प्रसन्न हुए।

कबीर, साधू भूखा भाव का, धन का भूखा नाहिं।
जो कोई धन का भूखा, वो तो साधू नाहिं।।

उठ कर उनके साथ चल पड़े। जब सुदर्शन जी यज्ञशाला में पहुँचे तो चारों ओर एक से एक ऊँचे सुसज्जित आसनों पर विराजमान महा मण्डलेश्वर सुदर्शन जी के रूप व वेश (दोहरी धोती घुटनों से थोड़ी नीचे तक, छोटी-2 दाड़ी, सिर के बिखरे केश न बड़े न छोटे, टूटी-फूटी जूती। मैले से कपड़े, तेजोमय शरीर) को देखकर अपने मन में सोच रहे हैं कि ऐसे अपवित्र व्यक्ति से शंख सात जन्म भी नहीं बज सकता है। यह तो हमारे सामने ऐसे है जैसे सूर्य के सामने दीपक। श्रीकष्ण जी ने स्वयं उस महात्मा का आसन अपने हाथों लगाया (बिछाया) क्योंकि श्री कष्ण जी श्रेष्ठ आत्मा हैं, (परमात्मा है) उन्होंने सुदामा व भिलनी को भी हृदय से चाहा। यहाँ तो स्वयं परमेश्वर पूर्णब्रह्म सतपुरुष, अकाल मूर्ति आए हैं। फिर द्रौपदी से कहा कि हे बहन! सुदर्शन महात्मा जी आए हैं, भोजन तैयार करो। बहुत पहुँचे हुए संत हैं। द्रौपदी देख रही है कि संत लक्षण तो एक भी नहीं दिखाई देते हैं। यह तो एक द्ररिद्र गहस्थी व्यक्ति है। न तो वस्त्र भगवां, न गले में माला, न तिलक, न सिर पर बड़ी जटा, न मुण्ड ही मुण्डवा रखा और न ही कोई चिमटा, झोली, करमण्डल लिए हुए था। श्री कष्ण जी के कहते ही स्वादिष्ट भोजन कई प्रकार का बनाकर एक सुन्दर थाल (चांदी का) में परोस कर सुदर्शन जी के सामने रख कर द्रोपदी ने मन में विचार किया कि आज तो यह भक्त भोजन को खाएगा तो ऊँगली चाटता रह जाएगा। जिन्दगी में ऐसा भोजन कभी नहीं खाया होगा।

सुदर्शन जी ने नाना प्रकार के भोजन को थाली में इक्ट्ठा किया तथा खिचड़ी सी बनाई। उस समय द्रौपदी ने देखा कि इसने तो सारा भोजन (खीर, खांड, हलुवा, सब्जी, दही, दही-बड़े आदि) घोल कर एक कर लिया। तब मन में दुर्भावना पूर्वक विचार किया कि इस मूर्ख हब्शी ने तो खाना खाने का भी ज्ञान नहीं। यह काहे का संत? कैसा शंख बजाएगा। (क्योंकि खाना बनाने वाली स्त्री की यह भावना होती है कि मैं ऐसा स्वादिष्ट भोजन बनाऊँ कि खाने वाला मेरे भोजन की प्रशंसा कई जगह करे)। प्रत्येक बहन की यही आशा होती है।

{वह बेचारी एक घंटे तक धुएँ से आँखें खराब करे और मेरे जैसा कह दे कि नमक तो है ही नहीं, तब उसका मन बहुत दुःखी होता है। इसलिए संत जैसा मिल जाए उसे खा कर सराहना ही करते हैं। यदि कोई न खा सके तो नमक कह कर 'संत' नहीं मांगता। संतों ने नमक का नाम राम–रस रखा हुआ है। कोई ज्यादा नमक खाने का अभ्यस्त हो तो कहेगा कि भईया– रामरस लाना। घर वालों को पता ही न चले कि क्या मांग रहा है? क्योंकि सतसंग में सेवा में अन्य सेवक ही होते हैं। न

ही भोजन बनाने वालों को दुःख हो। एक समय एक नया भक्त किसी सतसंग में पहली बार गया। उसमें किसी ने कहा कि भक्त जी रामरस लाना। दूसरे ने भी कहा कि रामरस लाना तथा थोड़ा रामरस अपनी हथेली पर रखवा लिया। उस नए भक्त ने खाना खा लिया था। परंतु पंक्ति में बैठा अन्य भक्तों के भोजन पाने का इंतजार कर रहा था कि इकट्ठे ही उठेंगे। यह भी एक औपचारिकता सतसंग में होती है। उसने सोचा रामरस कोई खास मीठा खाद्य पदार्थ होगा। यह सोच कर कहा मुझे भी रामरस देना। तब सेवक ने थोड़ा सा रामरस (नमक) उसके हाथ पर रख दिया। तब वह नया भक्त बोला – ये के कान कै लाना है, चौखा सा (ज्यादा) रखदे। तब उस सेवक ने दो तीन चमच्च रख दिया। उस नए भक्त ने उस बारीक नमक को कोई खास मीठा खाद्य प्रसाद समझ कर फांका मारा। तब चुपचाप उठा तथा बाहर जा कर कुल्ला किया। फिर किसी भक्त से पूछा रामरस किसे कहते हैं? तब उस भक्त ने बताया कि नमक को रामरस कहते हैं। तब वह नया भक्त कहने लगा कि मैं भी सोच रहा था कि कहें तो रामरस परंतु है बहुत खारा। फिर विचार आया कि हो सकता है नए भक्तों पर परमात्मा प्रसन्न नहीं हुए हों। इसलिए खारा लगता हो। मैं एक बार फिर कोशिश करता, अच्छा हुआ जो मैंने आपसे स्पष्ट कर लिया। फिर उसे बताया गया कि नमक को रामरस किस लिए कहते हैं ?}

स्वपच सुदर्शन जी ने थाली वाले मिले हुए उस सारे भोजन को पाँच ग्रास बना कर खा लिया। पाँच बार शंख ने आवाज की। उसके पश्चात् शंख ने आवाज नहीं की।

व्यंजन छतीसों परोसिया जहाँ द्रौपदी रानी।
बिन आदर सतकार के, कही शंख न बानी।।
पंच गिरासी बालमीक, पंचै बर बोले।
आगे शंख पंचायन, कपाट न खोले।।
बोले कृष्ण महाबली, त्रिभुवन के साजा।
बाल्मिक प्रसाद से, कण कण क्यों न बाजा।।
द्रोपदी सेती कृष्ण देव, जब ऐसे भाखा।
बाल्मिक के चरणों की, तेरे न अभिलाषा।।
प्रेम पंचायन भूख है, अन्न जग का खाजा।
ऊँच नीच द्रोपदी कहा, शंख कण कण यूँ नहीं बाजा।।
बाल्मिक के चरणों की, लई द्रोपदी धारा।
शंख पंचायन बाजीया, कण–कण झनकारा।।

युधिष्ठर जी श्री कृष्ण जी के पास आए तथा कहा हे भगवन्! आप की कृपा से शंख ने आवाज की है हमारा कार्य पूर्ण हुआ। श्री कृष्ण जी ने सोचा कि इन महात्मा सुदर्शन के भोजन खा लेने से भी शंख अखण्ड क्यों नहीं बजा? फिर

अपनी दिव्य दृष्टि से देखा ? तो पाया की द्रोपदी के मन में दोष है जिस कारण से शंख ने अखण्ड आवाज नहीं की केवल पांच बार आवाज करके मौन हो गया है। श्री कृष्ण जी ने कहा युधिष्ठर यह शंख बहुत देर तक बजना चाहिए तब यज्ञ पूर्ण होगी। युधिष्ठर ने कहा भगवन्! अब कौन संत शेष है जिसे लाना होगा। श्री कृष्ण जी ने कहा युधिष्ठर इस सुदर्शन संत से बढ़कर कोई भी सत्यभक्ति युक्त संत नहीं है। इसके एक बाल समान तीनों लोक भी नहीं हैं। अपने घर में ही दोष है उसे शुद्ध करते हैं। श्री कृष्ण जी ने द्रौपदी से कहा - द्रौपदी, भोजन सब प्राणी अपने-2 घर पर रूखा-सूखा खा कर ही सोते हैं। आपने बढ़िया भोजन बना कर अपने मन में अभिमान पैदा कर लिया। बिना आदर सत्कार के किया हुआ धार्मिक अनुष्ठान (यज्ञ, हवन, पाठ) सफल नहीं होता। आपने इस साधारण से व्यक्ति को क्या समझ रखा है? यह पूर्णब्रह्म हैं। इसके एक बाल के समान तीनों लोक भी नहीं हैं। आपने अपने मन में इस महापुरुष के बारे में गलत विचार किए हैं उनसे आपका अन्तःकरण मैला (मलीन) हो गया है। इनके भोजन ग्रहण कर लेने से तो यह शंख की स्वर्ग तक आवाज जाती तथा सारा ब्रह्मण्ड गूंज उठता। यह केवल पांच बार बोला है। इसलिए कि आपका भ्रम दूर हो जाए क्योंकि और किसी ऋषि के भोजन पाने से तो यह टस से मस भी नहीं हुआ। आप अपना मन साफ करके इन्हें पूर्ण परमात्मा समझकर इनके चरणों को धो कर पीओ, ताकी तेरे हृदय का मैल (पाप) साफ हो जाए।

उसी समय द्रौपदी ने अपनी गलती को स्वीकार करते हुए संत से क्षमा याचना की और सुपच सुदर्शन के चरण अपने हाथों धो कर चरणामृत बनाया। रज भरे (धूलि युक्त) जल को पीने लगी। जब आधा पी लिया तब भगवान कृष्ण जी ने कहा द्रौपदी कुछ अमृत मुझे भी दे दो ताकि मेरा भी कल्याण हो। यह कह कर कृष्ण जी ने द्रौपदी से आधा बचा हुआ चरणामृत पीया। उसी समय वही पंचायन शंख इतने जोरदार आवाज से बजा कि स्वर्ग तक ध्वनि सुनि। तब पाण्डवों की वह यज्ञ सफल हुई।

प्रमाण के लिए अमृत वाणी (पारख का अंग) :-

गरीब, सुपच शंक सब करत हैं, नीच जाति बिश चूक।
पौहमी बिगसी स्वर्ग सब, खिले जो पर्वत रूंख।।
गरीब, करि द्रौपदी दिलमंजना, सुपच चरण पी धोय।
बाजे शंख सर्व कला, रहे अवाजं गोय।।
गरीब, द्रौपदी चरणामृत लिये, सुपच शंक नहीं कीन।
बाज्या शंख अखंड धुनि, गण गंधर्व ल्यौलीन।।
गरीब, फिर पंडौं की यज्ञ में, संख पचायन टेर।
द्वादश कोटि पंडित जहां, पड़ी सभन की मेर।।

गरीब, करी कृष्ण भगवान कूं, चरणामृत स्यौं प्रीत।
शंख पंचायन जब बज्या, लिया द्रोपदी सीत।।
गरीब, द्वादश कोटि पंडित जहां, और ब्रह्मा विष्णु महेश।
चरण लिये जगदीश कूं, जिस कूं रटता शेष।।
गरीब, बालमीक के बाल समि, नाहीं तीनौं लोक।
सुर नर मुनि जन कृष्ण सुधि, पंडौं पाई पोष।।
गरीब, बाल्मीक बैंकुठ परि, स्वर्ग लगाई लात।
संख पचायन घुरत हैं, गण गंर्धव ऋषि मात।।
गरीब, स्वर्ग लोक के देवता, किन्हैं न पूर्या नाद।
सुपच सिंहासन बैठतैं, बाज्या अगम अगाध।।
गरीब, पंडित द्वादश कोटि थे, सहिदे से सुर बीन।
संहस अठासी देव में, कोई न पद में लीन।
गरीब, बाज्या संख स्वर्ग सुन्या, चौदह भवन उचार।
तेतीसौं तत्त न लह्या, किन्हैं न पाया पार।।

।। अचला का अंग।।

गरीब, सुपच रूप धरि आईया, सतगुरु पुरुष कबीर।
तीन लोक की मेदनी, सुर नर मुनि जन भीर।।100।।
गरीब, सुपच रूप धरि आईया, सब देवन का देव।
कृष्णचन्द्र पग धोईया, करी तास की सेव।।101।।
गरीब, सहंस अठासी ऋषि जहां, देवा तेतीस कोटि।
शंख न बाज्या तास ते, रहे चरण में लोटि।।102।।
गरीब, पंडित द्वादश कोटि हैं, और चौरासी सिद्ध।
शंख न बाज्या तास ते, पिये मान का मध।।103।।
गरीब, सुपच रूप को देख कर, द्रौपदी मानी शंक।
जानि गये जगदीश गुरु, बाजत नाहीं शंख।।104।।
गरीब, छप्पन भोग संयोग करि, कीनें पांच गिरास।
द्रौपदी के दिल दुई हैं, नाहीं दृढ़ विश्वास।।105।।
गरीब, पांचौं पंडौं यज्ञ करी, कल्पवृक्ष की छांहि।
द्रौपदी के दिल बंक हैं, कण कण बाज्या नांहि।।106।।
गरीब, सुर नर मुनि जन यज्ञ में, त्रिलोकी के भूप।
सुपच यज्ञ में आईया, नित बेचत है सूप।।107।।
गरीब, छप्पन भोग न भोगिया, कीन्हें पंच गिरास।
खड़ी द्रौपदी उनमुनी, हरदम घालत श्वास।।108।।
गरीब, बोले कृष्ण महाबली, क्यूं बाज्या नहीं शंख।

जानराय जगदीश गुरु, काढ़त है मन बंक।।109।।
गरीब, द्रौपदी दिल कूँ साफ कर, चरण कमल ल्यौ लाय।
बालमीक के बाल सम, त्रिलोकी नहीं पाय।।110।।
गरीब, चरण कमल कूँ धोय करि, ले द्रौपदी प्रसाद।
अंतर सीना साफ होय, जरै सकल अपराध।।111।।
गरीब, बाज्या शंख सुभान गति, कण कण भई अवाज।
स्वर्ग लोक बानी सुनी, त्रिलोकी में गाज।।112।।
गरीब, शरण कबीर जो गहे, टूटै जम की बंध।
बंदी छोड़ अनादि है, सतगुरु कृपा सिन्धु।।113।।
गरीब, पंडौं यज्ञ अश्वमेद्य में, आये नजर निहाल।
जम राजा की बंधि में, खलहल पर्या कमाल।।114।।

''अन्य वाणी सतग्रन्थ से''

तेतीस कोटि यज्ञ में आए सहंस अठासी सारे,
द्वादश कोटि वेद के वक्ता, सुपच का शंख बज्या रे।।

''अर्जुन सहित पाण्डवों को युद्ध में की गई हिंसा के पाप लगे''

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि पाण्डवों को युद्ध की हत्याओं का पाप लगा। आगे सुन और सुनाता हूँ :-

दुर्वासा ऋषि के शाप वश यादव कुल आपस में लड़कर प्रभास क्षेत्र में यमुना नदी के किनारे नष्ट हो गया। श्री कष्ण जी भगवान को एक शिकारी ने पैर में विषाक्त तीर मार कर घायल कर दिया था। उस समय श्री कष्ण जी ने उस शिकारी को बताया कि आप त्रेता युग में सुग्रीव के बड़े भाई बाली थे तथा मैं रामचन्द्र था। आप को मैंने धोखा करके वक्ष की ओट लेकर मारा था। आज आपने वह बदला (प्रतिशोध) चुकाया है। पाँचों पाण्डवों को पता चला कि यादव आपस में लड़ मरे हैं वे द्वारिका पहुँचे। वहाँ गए जहाँ पर श्री कष्ण जी तीर से घायल तड़फ रहे थे। पाँचों पाण्डवों के धार्मिक गुरू श्री कष्ण जी थे। श्री कष्ण जी ने पाण्डवों से कहा! आप मेरे अतिप्रिय हो। मेरा अन्त समय आ चुका है। मैं कुछ ही समय का मेहमान हूँ। मैं आपको अन्तिम उपदेश देना चाहता हूँ कप्या ध्यान पूर्वक सुनों। यह कह कर श्री कष्ण जी ने कहा (1) आप द्वारिका की स्त्रियों को इन्द्रप्रस्थ ले जाना। यहाँ कोई नर यादव शेष नहीं बचा है (2) आप अति शीघ्र राज्य त्याग कर हिमालय चले जाओ वहाँ अपने शरीर के नष्ट होने तक तपस्या करते रहो। इस प्रकार हिमालय की बर्फ में गल कर नष्ट हो जाओ। युधिष्ठिर ने पूछा हे भगवन्! हे गुरूदेव श्री कष्ण! क्या हम हिमालय में गल कर मरने का

कारण जान सकते हैं? यदि आप उचित समझें तो बताने की कपा करें। श्री कष्ण ने कहा युधिष्ठिर! आप ने युद्ध में जो प्राणियों की हिंसा करके पाप किया है। उस पाप का प्रायश्चित् करने के लिए ऐसा करना अनिवार्य है। इस प्रकार तपस्या करके प्राण त्यागने से आप के महाभारत युद्ध में किए पाप नष्ट हो जाएँगे।

कबीर जी बोले हे धर्मदास! श्री कष्ण जी के श्री मुख से उपरोक्त वचन सुन कर अर्जुन आश्चर्य में पड़ गया। सोचने लगा श्री कष्ण जी आज फिर कह रहे हैं कि युद्ध में किए पाप नष्ट इस विधि से होगें। अर्जुन अपने आपको नहीं रोक सका। उसने श्री कष्ण जी से कहा हे भगवन्! क्या मैं आप से अपनी शंका का समाधान करा सकता हूँ। वैसे तो गुरूदेव! यह मेरी गुस्ताखी है, क्षमा करना क्योंकि आप ऐसी स्थिति में हैं कि आप से ऐसी-वैसी बातें करना उचित नहीं जान पड़ता। यदि प्रभु! मेरी शंका का समाधान नहीं हुआ तो यह शंका रूपी कांटा आयु पर्यन्त खटकता रहेगा। मैं चैन से जी नहीं सकूंगा। श्री कुष्ण ने कहा हे अर्जून! तू जो पूछना चाहता है निःसंकोच होकर पूछ। मैं अन्तिम स्वांस गिन रहा हूँ जो कहूंगा सत्य कहूंगा। अर्जुन बोला हे श्री कष्ण! आपने श्री मद्भगवत् गीता का ज्ञान देते समय कहा था कि अर्जुन! तू युद्ध कर तुझे युद्ध में मारे जाने वालों का पाप नहीं लगेगा तू केवल निमित्त मात्र बन जा ये सर्व योद्धा मेरे द्वारा पहले ही मारे जा चुके हैं (प्रमाण गीता अध्याय 11 श्लोक 32-33) आपने यह भी कहा कि अर्जुन युद्ध में मारा गया तो स्वर्ग को चला जाएगा, यदि युद्ध जीत गया तो पथ्वी के राज्य का सुख भोगेगा। तेरे दोनों हाथों में लड्डू हैं। (प्रमाण श्री मदभगवत् गीता अध्याय 2 श्लोक 37) तू युद्ध के लिए खड़ा हो जो जय-पराजय की चिन्ता छोड़कर युद्ध कर इस प्रकार तू पाप को प्राप्त नहीं होगा। (गीता अध्याय 2 श्लोक 38)

जिस समय बड़े भईया को बुरे-2 स्वपन आने लगे हम आप के पास कष्ट निवारण के लिए विधि जानने गए तो आपने बताया कि जो युद्ध में बन्धुघात अर्थात् अपने नातियों (राजाओं, सैनिकों, चाचा, भतीजा आदि) की हत्या का पाप दुःखी कर रहा है। मैं (अर्जुन) उस समय भी आश्चर्य में पड़ गया था कि भगवन् गीता ज्ञान में कह रहे थे कि तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा युद्ध करो। आज कह रहे है कि युद्ध में की गई हिंसा का पाप दुःखी कर रहा है। आपने पाप नाश होने का समाधान बताया ''अश्वमेघ यज्ञ'' करना जिसमें करोड़ों रूपये का खर्च हुआ। उस समय मैं अपने मन को मार कर यह सोच कर चुप रहा कि यदि मैं आप (श्री कष्ण जी) से वाद-विवाद करूंगा कि आप तो कह रहे थे तुम्हें युद्ध में होने वाली हत्याओं का कोई पाप नहीं लगेगा। आज कह रहे हो तुम्हें महाभारत युद्ध में की हत्याओं का पाप दुःख दे रहा है। कहाँ गया आप का वह गीता वाला ज्ञान। किसलिए हमारे साथ धोखा किया, गुरू होकर विश्वासघात किया। तो बड़े

भईया (युधिष्ठिर जी) यह न सोच लें कि मेरी चिकित्सा में धन लगना है। इस कारण अर्जुन वाद-विवाद कर रहा है। यह (अर्जुन) मेरे कष्ट निवारण में होने वाले खर्च के कारण विवाद कर रहा है यह नहीं चाहता कि मैं (युधिष्ठिर) कष्ट मुक्त हो जाऊं। अर्जुन को भाई के जीवन से धन अधिक प्रिय है। उपरोक्त विचारों को ध्यान में रखकर मैंने सोचा था कि यदि युधिष्ठिर भईया को थोड़ा-सा भी यह आभास हो गया कि अर्जुन! इस दृष्टिकोण से विवाद कर रहा है तो भईया! अपना समाधान नहीं कराएगा। आजीवन कष्ट को गले लगाए रहेगा। हे कृष्ण! आप के कहे अनुसार हमने यज्ञ किया। आज फिर आप कह रहे हो कि तुम्हें युद्ध की हत्याओं का पाप लगा है उसे नष्ट करने के लिए शीघ्र राज्य त्याग कर हिमालय में तपस्या करके गल मरो। आपने हमारे साथ यह विश्वास घात किसलिए किया? यदि आप जैसे सम्बन्धी व गुरू हों तो शत्रुओं की आवश्यकता ही नहीं। हे कृष्ण हमारे हाथ में तो एक भी लड्डू नहीं रहा न तो युद्ध में मर कर स्वर्ग गए न पृथ्वी के राज्य का सुख भोग सके। क्योंकि आप कह रहे हो कि राज्य त्याग कर हिमालय में गल मरो।

आंसू टपकाते हुए अर्जुन के मुख से उपरोक्त वचन सुनकर युधिष्ठिर बोला, अर्जुन! जिस परिस्थिति में भगवान है। इस समय ये शब्द बोलना शोभा नहीं देता। श्री कृष्ण जी बोले हे अर्जुन! सुन मैं आप को सत्य-2 बताता हूँ। गीता के ज्ञान में मैंने क्या कहा था मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं। यह जो कुछ भी हुआ है यह होना था इसे टालना मेरे वश नहीं था। कोई अन्य शक्ति है जो आप और हम को कठपुतली की तरह नचा रही है। वह तेरे वश न मेरे वश। परन्तु जो मैं आपको हिमालय में तपस्या करके शरीर अन्त करने की राय दे रहा हूँ। यह आप को लाभदायक है। आप मेरे इस वचन का पालन अवश्य करना। यह कह कर श्री कृष्ण जी शरीर त्याग गए। जहाँ पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया। उस स्थान पर यादगार रूप में श्री कृष्ण जी के नाम पर द्वारिका में द्वारिकाधीश मन्दिर बना है।

धर्मदास जी को परमेश्वर कबीर जी ने बताया। हे धर्मदास! सर्व (छप्पन करोड) यादव का जो आपस में लड़कर मर गए थे, अन्तिम संस्कार करके अर्जुन को द्वारिका में छोड़ कर चारों भाई इन्द्रप्रस्थ चले गए। अकेला अर्जुन द्वारिका की स्त्रियों तथा श्री कृष्ण जी की गोपियों को लेकर आ रहे थे। रास्ते में जंगली लोगों ने अर्जुन को पकड़ कर पीटा। अर्जुन के पास अपना गांडीव धनुष भी था जिस से महाभारत का युद्ध जीता था। परन्तु उस समय अर्जुन से वही धनुष नहीं चला। अपने आप को शक्तिहीन जानकर अर्जुन कायरों की तरह सब देखता रहा। वे जंगली व्यक्ति स्त्रियों के गहने लूट ले गए तथा कुछ स्त्रियों को भी अपने साथ ले गए। शेष स्त्रियों को साथ लेकर अर्जुन ने इन्द्रप्रस्थ को प्रस्थान

किया तथा मन में विचार किया कि श्री कृष्ण जी महाधोखेबाज (विश्वासघाती) था। जिस समय मेरे से युद्ध कराना था तो शक्ति प्रदान कर दी। उसी धनुष से मैंने लाखों व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया। आज मेरा बल छीन लिया, मैं कायरों की तरह पिटता रहा मेरे से वही धनुष नहीं चला। कबीर परमेश्वर जी ने बताया धर्मदास! श्री कृष्ण जी छलिया नहीं था। वह सर्व कपट काल ब्रह्म ने किया है जो ब्रह्मा-विष्णु व शिव का पिता है। जिसके समक्ष श्री विष्णु (कृष्ण) तथा श्री शिव आदि की कुछ पेश नहीं चलती।

उपरोक्त कथा सुनकर धर्मदास जी ने प्रश्न किया :- धर्मदास ने कहा हे परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी! आप ने तो मेरी आँखे खोल दी हे प्रभु! हिमालय में तपस्या कर युधिष्ठिर का तो केवल एक पैर का पंजा ही बर्फ से नष्ट हुआ तथा अन्य के शरीर गल गए थे। सुना है वे सर्व पाप मुक्त होकर स्वर्ग चले गए?

उत्तरः- परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे धर्मदास! हिमालय में जो तप पाण्डवों ने किया वह शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) होने के कारण व्यर्थ प्रयत्न था। (प्रमाण-गीता अध्याय 16 श्लोक 23 तथा गीता अध्याय 17 श्लोक 5-6 में कहा है कि जो मनुष्य शास्त्रविधि से रहित केवल कल्पित घोर तप को तपते हैं वे शरीरस्थ परमात्मा को कृश करने वाले हैं उन अज्ञानियों को नष्ट हुए जान।) क्योंकि जैसी तपस्या पाण्डवों ने की वह गीता जी व वेदों में वर्णित नहीं है अपितु ऐसे शरीर को पीड़ा देकर साधना करना व्यर्थ बताया है। यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 में कहा है ओम् (ॐ) नाम का जाप कार्य करते-2 कर, विशेष कसक के साथ कर मनुष्य जन्म का मुख्य कर्त्तव्य जान के कर। यही प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 7 व 13 में कहा है कि मेरा तो केवल ॐ नाम है इस का जाप अन्तिम सांस तक करने से लाभ होता है इसलिए अर्जुन! तू युद्ध भी कर तथा स्मरण (भक्ति जाप) भी कर अतः हे धर्मदास! जैसी तपस्या पाण्डवों ने की वह व्यर्थ सिद्ध हुई।

गीता अध्याय 3 श्लोक 6 से 8 में कहा है कि जो मूढ़ बुद्धि मनुष्य समस्त कर्म इन्द्रियों को रोककर अर्थात् हठ योग द्वारा एक स्थान पर बैठ कर या खड़ा होकर साधना करता है। वह मन से इन्द्रियों का चिन्तन करता रहता है। जैसे सर्दी लगी तो शरीर की चिन्ता, सर्दी का चिन्तन, भूख लगी तो भूख का चिन्तन आदि होता रहता है। वह हठ से तप करने वाला मिथ्याचारी अर्थात् दम्भी कहा जाता है। कार्य न करने अर्थात् एक स्थान पर बैठ या खड़ा होकर साधना करने की अपेक्षा कर्म करना तथा भक्ति भी करना श्रेष्ठ है। यदि कर्म नहीं करेगा तो तेरा शरीर निर्वाह भी नहीं सिद्ध होगा।

विशेष विचार :- श्री मद्भगवत गीता में ज्ञान दो प्रकार का है। एक तो वेदों वाला तथा दूसरा काल ब्रह्म द्वारा सुनाया लोक वेद वाला। यह ज्ञान (गीता

अध्याय 3 श्लोक 6 से 8 वाला ज्ञान) वेदों वाला ज्ञान ब्रह्म काल ने बताया है। श्री कृष्ण जी द्वारा भी काल ब्रह्म ने पाण्डवों को लोक वेद सुनाया जिस से तप हो जाता है। तप से फिर कभी राजा बन जाता है कुछ सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। मोक्ष नहीं होता तथा न पाप ही नष्ट होते हैं।

हे धर्मदास! पाँचों पाण्डवों ने विचार करके अभिमन्यु पुत्र परिक्षित को राज तिलक कर दिया। द्रोपदी, कुन्ती (अर्जुन, भीम व युधिष्ठिर की माता) तथा पाँचों पाण्डव श्री कृष्ण जी के आदेशानुसार हिमालय पर्वत पर जाकर तप करने लगे कुछ ही दिनों में आहार अभाव से उनके शरीर समाप्त हो गए। केवल युधिष्ठिर का शरीर शेष रहा। उसके पैर का एक पंजा बर्फ में गल पाया था। युधिष्ठिर ने देखा कि उस के परिजन मर चुके है। उनके शरीर की आत्माऐं निकल चुकी हैं सूक्ष्म शरीर युक्त आकाश को जाने लगी। तब युधिष्ठिर ने भी अपना शरीर त्याग दिया तथा सूक्ष्म शरीर युक्त युधिष्ठिर कर्मों के संस्कार वश अपने पिता धर्मराज के लोक में गया। धर्मराज ने अपने पुत्र को बहुत प्यार किया तथा उसको रहने का मकान बताया। कुछ समय पश्चात् काल ब्रह्म ने युधिष्ठिर में प्रेरणा की। उसे अपने भाईयों व पत्नी द्रोपदी तथा माता कुन्ती की याद सताने लगी। युधिष्ठिर ने अपने पिता धर्मराज से कहा हे धर्मराज! मुझे मेरे परिजनों से मिलाईए मुझे उनकी बहुत याद सता रही है। धर्मराज ने कहा युधिष्ठिर! वह तेरा परिवार नहीं था। तेरा परिवार तो यह है। तू मेरा पुत्र है। अर्जुन-स्वर्ग के राजा इन्द्र का पुत्र है, भीम-पवन देव का पुत्र है, नकुल-नासत्य का पुत्र है तथा सहदेव-दस्र का पुत्र है। {नासत्य तथा दस्र ये दोनों अश्वनी कुमार हैं जो अश्व रूप धारी सूर्य तथा अश्वी (घोड़ी) रूप धारी सूर्य की पत्नी संज्ञा के सम्भोग से उत्पन्न हुए थे। सूर्य को घोड़े रूप में न पहचान कर सूर्य पत्नी जो घोड़ी रूप धार कर जंगल में तप कर रही थी अपने धर्म की रक्षा के लिए घोड़ा रूपधारी सूर्य को पृष्ठ भाग (पीछे) की ओर नहीं जाने दिया वह उस घोड़े से अभिमुख रही। कामवासना वश घोड़ा रूपधारी सूर्य घोड़ी रूपधारी अपनी पत्नी (विश्वकर्मा की पुत्री) के मुख की ओर चढ़कर सम्भोग करने के कारण वीर्य का कुछ अंश घोड़ी रूपधारी सूर्य की पत्नी के पेट में मुख द्वारा प्रवेश कर गया जिससे दो लड़कों (नासत्य तथा दस्र) का जन्म घोड़ी रूपी सूर्य पत्नी के मुख से हुआ जिस कारण ये दोनों बच्चे अश्विनी कुमार कहलाए। यह पुराण कथा है।}

धर्मराज ने अपने पुत्र युधिष्ठिर को बताया कि आप सबका वहाँ पृथ्वी लोक में इतना ही संयोग था। वह समाप्त हो चुका है। वे सर्व युद्ध में किए पाप कर्मों तथा अन्य जीवन में किए पाप कर्मों का फल भोगने के लिए नरक में डाल रखे हैं। आप के पुण्य अधिक है इसलिए आप नरक में नहीं डाल रखे हैं। अतः आप उन से नहीं मिल सकते काल ब्रह्म कि प्रबल प्रेरणा वश होकर युधिष्ठिर ने उन

सर्व (भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रोपदी तथा कुन्ती) को मिलने का हठ किया। धर्मराज ने एक यमदूत से कहा आप युधिष्ठिर को इसके परिवार से मिला कर शीघ्र लौटा लाना। यमदूत युधिष्ठिर को लेकर नरक में प्रवेश हुआ। वहाँ पर आत्माऐं हा-हाकार मचा रहे थे, कह रहे थे, हे युधिष्ठिर हमें नरक से निकलवा दो। मैं अर्जुन हूँ ,कोई कह रहा था, मैं भीम हूँ, मैं नकुल, मैं सहदेव हूँ, मैं कुन्ती, मैं द्रोपदी हूँ। इतने में यमदूत ने कहा हे युधिष्ठिर अब आप लौट चलिए। युधिष्ठिर ने कहा मैं भी अपने परिवार जनों के साथ यहीं नरक में ही रहूँगा। तब धर्मराज ने आवाज लगाई युधिष्ठिर यहाँ आओ मैं तेरे को एक युक्ति बताता हूँ। यह आवाज सुन कर युधिष्ठिर अपने पिता धर्मराज के पास लौट आया।

धर्मराज ने युधिष्ठिर को समझाया कि बेटा आपने एक झूठ बोला था कि अश्वथामा मर गया फिर दबी आवाज में कहा था पता नहीं मनुष्य था वा हाथी। जबकि आप को पता था कि हाथी मरा है। उस झूठ बोलने के पाप का कर्मदण्ड देने के लिए आप को कुछ समय इसी बहाने नरक में रखना पड़ा नहीं तो वह युक्ति मैं पहले ही आप को बता देता। युधिष्ठिर ने कहा कृप्या आप वह विधि बताईए जिस से मेरे परिजन नरक से निकल सकें। धर्मराज ने कहा उनको एक शर्त पर नरक से निकाला जा सकता है कि आप अपने कुछ पुण्य उनको संकल्प कर दो। युधिष्ठिर ने कहा मुझे स्वीकार है। यह कह कर युधिष्ठिर अपने आधे पुण्य उन छः के निमित्त संकल्प कर दिए। वे छःओं नरक से बाहर आकर धर्मराज के पास जहाँ युधिष्ठिर खड़ा था उपस्थित हो गए। उसी समय इन्द्र देव आया अपने पुत्र अर्जुन को साथ लेकर चला गया, पवन देवता आया अपने पुत्र भीम को साथ लेकर चला गया। इसी प्रकार अश्विनी कुमार (नासत्य, दस्र) आए नकुल व सहदेव को लेकर चले गए। कुन्ती स्वर्ग में चली गई तथा देखते-2 द्रोपदी ने दुर्गा रूप धारण किया तथा आकाश को उड़ चली कुछ ही समय में सर्व की आँखों से ओझल हो गई। वहाँ अकेला युधिष्ठिर अपने पिता धर्मराज के पास रह गया। परमेश्वर कबीर जी ने अपने शिष्य धर्मदास जी को उपरोक्त कथा सुनाई तत्पश्चात् इस सर्व काल के जाल को समझाया।

कबीर परमेश्वर जी ने बताया हे धर्मदास! काल ब्रह्म की प्रेरणा से इक्कीस ब्रह्मण्डों के प्राणी कर्म करते हैं। जैसा आपने सुना युधिष्ठिर पुत्र धर्मराज, अर्जुन पुत्र इन्द्र, भीम पुत्र पवन देव, नकुल पुत्र नासत्य तथा सहदेव पुत्र दस्र थे। द्रोपदी शापवश दुर्गा ही अवतार थी जो अपना कर्म भोगने आई थी तथा कुन्ती भी दुर्गा लोक की पुण्यात्मा थी। ये सर्व काल प्रेरणा से पृथ्वी पर एक फिल्म (चलचित्र) बनाने गए थे। जैसे एक करोड़पति का पुत्र किसी फिल्म में रिक्शा चालक का अभिनय करता है। फिल्म निर्माण के पश्चात् अपनी 20 लाख की कार गाड़ी में बैठ कर आनन्द करता है। भोले-भाले सिनेमा दर्शक उसे रिक्शा

चालक मान कर उस पर दया करते हैं। उसके बनावटी अभिनय को देखने के लिए अपना बहुमूल्य समय तथा धन नष्ट करते हैं। ठीक इसी प्रकार उपरोक्त पात्रों (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रोपदी तथा कुन्ती) द्वारा बनाई फिल्म महाभारत के इतिहास को पढ़-2 कर पथ्वी लोक के प्राणी अपना समय व्यर्थ करते हैं। तत्वज्ञान को न सुनकर मानव शरीर को व्यर्थ कर जाते हैं। काल ब्रह्म यही चाहता है कि मेरे अन्तर्गत जितने भी जीव हैं। वे तत्वज्ञान से अपरिचित रहे तथा मेरी प्रेरणा से मेरे द्वारा भेजे गुरूओं द्वारा शास्त्रविधि विरूद्ध साधना प्राप्त करके जन्म-मत्यु के चक्र में पड़े रहे। काल ब्रह्म की प्रेरणा से तत्वज्ञान हीन सन्तजन व ऋषिजन कुछ वेद ज्ञान अधिक लोक वेद के आधार से ही सत्संग वचन श्रद्धालुओं को सुनाते हैं। जिस कारण से साधक पूर्ण मोक्ष प्राप्त न करके काल के जाल में ही रह जाते हैं। हे धर्मदास! मैं पूर्ण परमात्मा की आज्ञा लेकर तत्वज्ञान बताने काल लोक में कलयुग में आया हूँ।

''क्या पाण्डव सदा स्वर्ग में ही रहेंगे?''

धर्मदास जी ने बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी के चरण पकड़ कर कहा हे परमेश्वर! आप स्वयं सत्यपुरूष हो धर्मदास जी ने अति विनम्र होकर आधीन भाव से प्रश्न किया।

प्रश्नः- हे बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी! क्या पाण्डव अब सदा स्वर्ग में ही रहेगें?

उत्तरः- नहीं धर्मदास! जो पुण्य युधिष्ठिर ने उनको प्रदान किए हैं। उन पुण्यों का तथा स्वयं किए यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठानों का पुण्य जब स्वर्ग में समाप्त हो जाएगा तब सर्व पुनः नरक में डाले जाऐंगे। युद्ध में किए पाप कर्म तथा उस जीवन में किए पाप कर्म तथा संचित पाप कर्मों के फल को भोगने के लिए नरक में अवश्य गिरना होगा। युधिष्ठिर भी अपने आधे पुण्य दान करके पुण्यहीन हो गया है। वह भी शेष पुण्यों को स्वर्ग में समाप्त करके संचित पाप कर्मों के आधार से अवश्य नरक में डाला जाएगा भले ही पाप कर्म कम होने के कारण नरक समय थोड़ा ही भोगना पड़े परन्तु नरक में अवश्य जाना पड़ेगा। जैसे युधिष्ठिर ने अश्वथामा मरने की झूठ बोली थी उसका भी पाप कर्मदण्ड भोगने के लिए नरक में कुछ समय के लिए उसी समय ही जाना पड़ा।

इसी प्रकार पूर्व जन्मों के संचित पाप कर्मों का दण्ड नरक में भोगना पड़ेगा। पश्चात् पथ्वी पर सर्व को अन्य प्राणियों की योनियों में भी जाना होगा। यह काल ब्रह्म का अटल विद्यान है। परन्तु हे धर्मदास! जो साधक पूर्ण परमात्मा की भक्ति पूर्ण गुरू से उपदेश प्राप्त करके आजीवन मर्यादा में रह कर करता है उसके सर्व पाप कर्म ऐसे नष्ट हो जाते है जैसे सुखे घास के बहुत बड़े ढेर को अग्नि की छोटी सी चिंगारी जला कर भस्म कर देती है। उसकी राख को हवा

उड़ा कर इधर-उधर कर देती है ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा की भक्ति का सत्यनाम मन्त्र रूपी अग्नि घास के ढेर रूपी पाप कर्मों को भस्म कर देता है।

कबीर, जब ही सत्यनाम हृदय धरा, भयो पाप का नाश।
मानो चिंगारी अग्नि की, पड़ी पुराने घास।।

''क्या द्रोपदी भी नरक जाएगी तथा अन्य प्राणियों के शरीर धारण करेगी?''

प्रश्न :- हे सद्गुरू! क्या द्रोपदी भी पुनः नरक व अन्य योनियों में जाएगी (धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्रश्न किया)?

उत्तर :- हाँ धर्मदास! द्रोपदी, दुर्गा का अंश है। अंश का अर्थ है की दुर्गा के शब्द से शरीर धारण करने वाली आत्मा, द्रोपदी, दुर्गा से अन्य आत्मा है परन्तु जो कष्ट द्रोपदी को होता है उसका प्रभाव दुर्गा को भी होता है। जैसे किसी की बेटी दुःखी होती है तो माता अत्यधिक दुःखी होती है। इस प्रकार द्रोपदी अब दुर्गा लोक में विशेष स्थान पर है। पुण्य समाप्त होने पर फिर नरक तथा अन्य प्राणियों के शरीर अवश्य धारण करेगी। यही दशा कुन्ती वाली आत्मा की होगी।

''श्री कष्ण जी ने ताम्रध्वज को जीवित किया परन्तु अभिमन्यु को क्यों नहीं कर सके?''

प्रश्न :- धर्मदास जी ने प्रश्न किया, हे परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी! श्री कष्ण जी ने राजा मोरध्वज के पुत्र ताम्रध्वज को आरे से बीचों-बीच चिरवाया। मुत्यु हो गई। तुरन्त ही जीवित कर दिया तथा आरे का निशान (चिन्ह) भी नहीं था। यह भगवान भी परमशक्ति युक्त सिद्ध हुए। इस विषय में मेरी शंका का समाधान किजिए।

उत्तर :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा हे धर्मदास! राजा मोरध्वज के पुत्र ताम्रध्वज को तो भगवान श्री कष्ण जी ने जीवित कर दिया। परन्तु अपने सगे भान्जे सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु को जीवित नहीं कर सके। श्री कष्ण जी की आँखों में आँसू थे, सुभद्रा रो रही थी पाण्डवों का वंश नष्ट हो रहा था।

कारण :- कबीर परमेश्वर जी ने बताया हे धर्मदास ताम्रध्वज के स्वांस (आयु) शेष थे इसलिए श्री कष्ण जी ने ताम्रध्वज को जीवित कर दिया। अभिमन्यु को इसलिए जीवित नहीं कर सके कि अभिमन्यु के स्वांस शेष नहीं थे। उसकी आयु शेष नहीं थी। ये भगवान कर्म लेख को परिवर्तित नहीं कर सकते। शरीर को काट के जोड़ देना तो इन भगवानों (ब्रह्मा,विष्णु तथा शिव) के बाएं हाथ का काम है। यह लीला जो एक जादूगर कर देता है। किसी व्यक्ति को बीच से काटा दिखा देता है। उसे फिर से जीवित कर देता है। परन्तु पूर्ण परमात्मा आयु भी बढ़ा देता है।

''क्या श्री विष्णु अर्थात् श्री कष्ण जी कर्मदण्ड को क्षमा कर सकते हैं?''

प्रश्नः- क्या श्री विष्णु उर्फ श्री कष्ण जी तीन ताप को समाप्त कर सकते हैं। यदि नहीं कर सकते हैं तो कोई उदाहरण बताइए हे कबीर परमेश्वर! जिससे मेरी शंका समाप्त हो सके।

उत्तरः- हे धर्मदास! श्री विष्णु उर्फ श्री कष्ण जी तीन ताप को समाप्त नहीं कर सकते।

उदाहरण-1 :- जिस समय श्री विष्णु जी ने नारद ऋषि को बन्दर का मुख लगाया तो नारद जी ने शाप दिया था कि हे विष्णु तू भी एक जीवन में मेरे की तरह पथ्वी पर स्त्री वियोग में भटकेगा। नारद जी के शापवश श्री विष्णु का जन्म श्री रामचन्द्र रूप मे अयोध्या के राजा दशरथ के घर हुआ। फिर बनवास हुआ, सीता का अपहरण हुआ। श्री राम अपनी पत्नी के वियोग में व्याकुल हुए। फिर रावण को मारकर अयोध्या आए। वहाँ से फिर सीता जी को एक धोबी के व्यंग्य के कारण घर से निकाल दिया। अन्त तक राम और सीता का मिलन दोबारा नहीं हो सका। अन्त समय में सीता पथ्वी में समाई तथा उसी के वियोग में श्री रामचन्द्र ने सरयू नदी में जल समाधी ली अर्थात् जल में शरीर त्यागा।

उदाहरण-2 :- एक समय दुर्वासा ऋषि द्वारिका के पास जंगल में कुछ समय के लिए ठहरे। द्वारिका वासी भगवान कष्ण के अतिरिक्त किसी भी ऋषि या सन्त को महत्व नहीं देते थे। सर्व को हेय समझते थे। एक दिन कुछ द्वारिका वासियों ने शरारत सूझी विचार किया कि दुर्वासा ऋषि की परीक्षा लेते हैं। कहते है यह त्रिकालदर्शी है। यह विचार करके श्री कष्ण जी के पुत्र प्रद्यूमन के पेट पर लोहे की छोटी कड़ाही बांध कर उसके ऊपर रूई लगा कर कपड़ा बांध दिया तथा स्त्री के कपड़े पहना कर गर्भवती स्त्री का स्वांग बनाया। एक व्यक्ति उसका पति बनाया तथा दस-बीस व्यक्तियों के साथ दुर्वासा ऋषि के पास गए। ऋषि जी को प्रणाम करके बोले हे ऋषि जी! ये दोनों पति-पत्नी हैं। इनके विवाह को कई वर्ष हो गए थे। अब प्रभु ने इनकी आशा पूर्ण की है। ये उतावले हो रहे हैं जानना चाहते हैं कि इस गर्भ से लड़का होगा या लड़की? आप की महिमा सुनकर हम यहाँ आए हैं। दुर्वासा ऋषि उनके उद्देश्य को समझ गए तथा ध्यान द्वारा देखा तो सर्व रहस्य जान लिया तथा कहा इस गर्भ से यादव कुल का नाश होगा। यह कहते समय ऋषि दुर्वासा के नेत्र लाल हो गए चेहरा गम्भीर हो गया।

सर्व व्यक्ति जो उनके साथ गए थे भयभीत होकर द्वारिका लौट आए। द्वारिका वासी बड़े-बुढ़ों को पता चला कि बच्चों ने दुर्वासा ऋषि से उपहास किया है। जिस कारण से ऋषि ने यादव कुल नष्ट होने का श्राप दे दिया है। ऋषि का वचन टल नहीं सकता। कुछेक बुद्धिमान व्यक्ति बोले अपने राजा श्री कष्ण जी

भगवान जो अपने साथ हैं। उनके सामने ऋषि दुर्वासा जैसे क्या वस्तु हैं? चलो श्री कृष्ण भगवान को सर्व कथा सुनाते हैं तथा ऋषि के श्राप से बचाने की प्रार्थना करते हैं। द्वारिका के गणमान्य व्यक्ति भगवान कृष्ण के पास गए तथा सर्व वृतान्त सुनाया। द्वारिका वासियों को अति व्याकुल जान कर श्री कृष्ण जी ने कहा आप चिन्ता क्यों कर रहे हो। सर्व व्यक्तियों ने कहा ऋषि ने शाप दिया है कि इस गर्भ से यादव कुल का नाश होगा। श्री कृष्ण जी बोले इसका समाधान है कि जो लोहे की कड़ाही व कपड़ों व रूई का गर्भ स्वांग किया था उन कपड़ों व रूई को जला कर भस्म कर दिया जाए तथा लोहे की कड़ाही को घिसा कर चूर्ण बना कर प्रभास क्षेत्र में यमुना नदी के जल में बहा दिया जाए। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी। जब गर्भ का सामान ही नहीं रहेगा तो यादव कुल का नाश कैसे होगा? सर्व उपस्थित प्रजा जनों ने भगवान कृष्ण द्वारा बताई विधि का स्वागत किया तथा राहत की सांस ली। अपने धार्मिक गुरू श्री कृष्ण जी द्वारा बताई विधि के अनुसार गर्भ स्वांग में प्रयोग रूई तथा वस्त्र अग्नि में जला दिए लोहे की कड़ाही को घिसने का कार्य प्रभास क्षेत्र में यमुना दरिया के किनारे प्रारम्भ किया। कुछ व्यक्तियों को कार्य सौंपा गया।

एक व्यक्ति को लोहे की कड़ाही के कड़ों (बराबर में ऊपर के हिस्से में लगे गोलाकार छल्ले) को घिसने का कार्य सौंपा। उसने एक कड़ा पूरा घिस दिया दूसरा कुछ ही घिसा था तब तक अन्य व्यक्तियों ने पूरी कड़ाही को घिस कर अपना कार्य समाप्त कर दिया। कड़े घिसने वाले व्यक्ति के मन में आया कि मैं पीछे रह गया हूँ ये लोग मेरा उपहास करेगें इसलिए उसने दूसरा कड़ा जो चारों ओर से थोड़ा-2 घिसा था जल में फैंक दिया। घिसने के कारण कड़ा चमकीला बन गया था। एक बड़ी मछली ने उसे खाद्य वस्तु जान कर खा लिया। एक बालिया नामक शिकारी ने उस मछली को पकड लिया तथा काटने पर उसमें से एक चमकीली धातु का कड़ा मिला। उस कड़े को लेकर लुहार कारीगर के पास ले गया। अपने धनुष के लिए उस कड़े के लोहे का विषाक्त तीर बनावाया। जो कड़ाही के घिसने से लोह चूर्ण बना था उसे यमुना में डाला गया था। उस लोह चूर्ण का धारदार तीखे पत्तों वाला पठेरे जैसा घास उग गया। उस सरकण्डे जैसे घास के पते इतने नुकीले थे यदि उस से ऊंगली छू जाए तो कट के भिन्न हो जाए। अपने आप को श्राप मुक्त जान कर द्वारिका वासी आनन्द से निश्चिंत होकर रहने लगे।

कुछ वर्षों उपरान्त द्वारिका के व्यक्ति छोटी से छोटी बात पर लड़ मरने लगे। शत्रुता बढ़ने लगी। परस्पर ईर्ष्या रखने लगे। प्रतिदिन दो-चार हत्याऐं आपसी झगड़े के कारण होने लगी। द्वारिका पुरी में पूर्ण रूप में अशान्ति का वातावरण हो गया। कोई भी बड़ें-बूढ़ों की बातों को महत्व नहीं देता था। अपनी

धुन में प्रतिशोध लेने की ताक में रहने लगे। कुछ बड़े-बुजुर्ग मिलकर अपने गुरू श्री कष्ण प्रभु के पास गए तथा बताया कि हे प्रभु! पता नहीं नगरी का कौन सा पाप उदय हो गया है। आपसी झगड़े होने लगे हैं। कोई भी न्याय की बात सुनने को तैयार नहीं है। एक दूसरे पर घात लगाए घूम रहे हैं। सम्पूर्ण नगरी में उपद्रव होने लगे हैं। कप्या कारण तथा शान्ति का समाधान बताईए।

श्री कष्ण प्रभु ने कुछ देर विचार करके ध्यान द्वारा देखा तो पता चला कि ऋषि दुर्वासा द्वारा दिया गया श्राप फली भूत हो रहा है। श्री कष्ण जी ने उन उपस्थित द्वारिका वासियों को बताया हे द्वारिका वासियों ! आप सर्व यादवों पर ऋषि दुर्वासा द्वारा दिया श्राप (श्राप भी तीनों तापों में से एक होता है) अपना प्रभाव दिखा रहा है। इससे बचने का उपाय एक ही है सर्व द्वारिका वासी नर प्रभास क्षेत्र में जाकर यमुना नदी में स्नान करो। आप सर्व दुर्वासा ऋषि के श्राप से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाओगे। उन व्यक्तियों ने भगवान श्री कष्ण का धन्यवाद किया तथा प्रणाम करके लौट आए। श्री कष्ण जी द्वारा बताया उपाय सर्व द्वारिका वासियों को बताया श्री कष्ण प्रभु का आदेश सुनते ही सर्व नर यादव अपने नवजात शिशुओं को भी साथ लेकर प्रभास क्षेत्र की ओर चल पड़े। कहीं उन बच्चों (लड़कों) पर श्राप न रह जाए इस उद्देश्य से अपने उसी दिन के उत्पन्न लड़कों को भी स्नान कराने के लिए श्राप मुक्त कराने के लिए संग ले गए। यमुना में स्नान करके बाहर आकर आपस में युद्ध करने लगे। प्रथम श्राप मुक्त होने के उद्देश्य से यमुना नीर में स्नान करते थे। बाहर आते ही वहीं पर एक दुसरे को युद्ध करता देखकर अपने परिजनों के पक्ष में झगड़ा करने लगे। गर्भ स्वांग में प्रयुक्त लोहे की कड़ाही के चूर्ण से उत्पन्न सरकण्डों (जो तेज धार युक्त पतों वाले थे) को उखाड़ कर एक-दूसरे को मारने लगे। श्राप प्रभाव से सरकण्डों ने तेग का कार्य किया। घास के पत्तों से एक दूसरे की गर्दन काट डाली। श्री विष्णु पुराण पांचवा अंश अध्याय 37 पष्ठ 413 पर लिखा है कि कड़ाहे के लोह चूर्ण से उत्पन्न सरकण्डों को श्री कष्ण जी ने उखाड़ा वे मूसल बन गए। श्री कष्ण जी ने भी उन मूसलों से यादवों को मारा। इस प्रकार छप्पन करोड़ यादव विनाश को प्राप्त हुए।

श्री कष्ण भगवान प्रभास क्षेत्र में जाकर एक वक्ष के नीचे दोपहर के समय विश्राम कर रहे थे। लेटे हुए श्री कष्ण जी ने अपने एक पैर को दूसरे पैर के घुटने पर रखा हुआ था। जिस कारण से दाँऐ पैर का तलवा स्पष्ट दिखाई दे रहा था। दाँऐ पैर के तलवे में पदम था। जो बहुत चमकीला था। उस से रोशनी निकलती थी। (पद्यम, आंख के आकार का चमकीला चिन्ह तलवे की चमड़ी के अन्दर, मुस की तरह जन्मजात लगा हुआ था) जिस वक्ष के नीचे भगवान कष्ण लेटे हुए थे, उस वक्ष की टहनियाँ तीन ओर से जमीन को छू रही थी। बालिया नामक

शिकारी अपने उद्देश्य से शिकार की खोज में सुबह से धूम रहा था। उस दिन उसे कोई शिकार हाथ नहीं लगा। बालिया शिकारी ने उस दिन वह तीर ले रखा था। जो गर्भ स्वांग में प्रयुक्त लोहे की कड़ाही के उस कड़े से बनवाया था। जो मछली से प्राप्त किया था। वह तीर विषयुक्त बनवा रखा था। शिकार की खोज में बालिया शिकारी दैव योग से उस वक्ष के निकट आकर ध्यान पूर्वक शिकार को खोजने लगा। उसे श्री कष्ण जी के तलवे में लगे पद्यम की चमक दिखाई दी। शिकारी ने सोचा कि यह मग की आँख चमक रही है। सारा दिन से शिकार न मिलने के कारण हुए परेशान शिकारी ने उसे हिरण की आँख जान कर उसी पद्यम को निशाना बना कर वह विषाक्त तीर मारा। तीर श्री कष्ण जी के पैर के तलवे में लगा। पीड़ा से श्री कष्ण जी के मुख से निकला हे भगवान् ! मर गया। मनुष्य की चीख भरी आवाज सुनकर शिकारी समझ गया कि मेरा विषैला तीर किसी व्यक्ति को लगा है। दूसरी ओर जा कर देखा तो द्वारिका के राजा श्री कष्ण पैर को पकड़ कर दर्द से व्याकुल थे। शिकारी ने कहा हे राजन्! मुझे क्षमा कर दीजिए। मैंने आपके इस पैर के तलवे की चमक को मग की आँख जाना। प्रभु मैंने जानबूझ कर आप की हत्या नहीं की है। मुझ से धोखा हुआ है, प्रभु मुझ अपराधी को क्षमा कर दो दीनानाथ। अपने कुकत्य से दुःखी शिकारी को अति व्याकुल देखकर श्री कष्ण जी बोले हे बालिया ! आप से कोई अपराध नहीं हुआ है। यह तो तेरा और मेरा पूर्व जन्म का लेने-देन था, आज समाप्त हो गया। त्रेता युग में तू सुग्रीव का भाई बाली था मैं रामचन्द्र रूप में राजा दशरथ के घर जन्मा था। उस समय मैंने तुझे एक वक्ष की ओट लेकर धोखा करके मारा था। वही प्रतिशोध आज तूने मेरे से लिया है। आप जाईए!

उस शिकारी ने द्वारिका में जाकर श्री कष्ण जी के घायल होने की सूचना दी। पाँण्डव आए तथा श्री कष्ण जी के आदेशानुसार सर्व यादवों के मतक शरीरों का अन्तिम संस्कार किया। द्वारिका की स्त्रियों को अपने साथ ले जाने तथा राज्य त्यागकर हिमालय में तपस्या करके प्राण त्यागने का आदेश श्री कष्ण जी ने पाण्डवों को दिया था। श्री कष्ण जी का भी अंतिम संस्कार पाण्डवों ने किया। जहाँ श्री कष्ण जी का शरीर जमीन में समाधिस्थ किया वहाँ पर श्री कष्ण जी का मन्दिर बना है। जिसे द्वारिकाधीश मन्दिर कहा जाता है।

निष्कर्ष :-उपरोक्त उल्लेख से निष्कर्ष निकला (1) श्री विष्णु अर्थात् अवतार गण श्री रामचन्द्र तथा श्री कष्णचन्द्र तीन ताप (श्राप आदि) को समाप्त नहीं कर सकते। श्री कष्ण जी के समक्ष दुर्वासा ऋषि के श्राप से पूरा यादव कुल (श्री कष्ण जी के पुत्र, पौत्र आदि सर्व) आपस में लड़ कर मर गये। श्री कष्ण जी कोई बचाव नही कर सके। (2) किए कर्म का भोग विष्णु भगवान को भोगना पड़ता है पाप कर्म दण्ड को नाश नहीं कर सकते। क्योंकि ये भगवान पूर्ण

परमात्मा नहीं हैं। सर्व शक्तिमान नहीं हैं। इन भगवानों (श्री विष्णु, श्री शिव, श्री ब्रह्मा) की उपासना करने वालों को भी पाप कर्म का दण्ड भोगना ही पड़ता है। पाप कर्म दण्ड नाश नहीं होता। केवल पूर्ण परमात्मा की भक्ति से ही साधक का पाप क्षमा होता है। प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 8 मन्त्र 13 में है (3) पाप नाश या श्राप नाश करने की विधि स्वयं श्री कष्ण जी ने बताई जो व्यर्थ सिद्ध हुई। जो सन्त व ऋषि व गुरूजन श्री विष्णु व श्री शिव के साधक हैं उन द्वारा बताई गई कष्ट निवारक विधि कैसे लाभदायक हो सकती है? जैसे श्री कष्ण जी ने यादवों को कहा कि तुम यमुना नदी के जल में स्नान करो जिससे दुर्वासा ऋषि के श्राप से मुक्त हो जाओगे। श्री कष्ण जी द्वारा बताई विधि से श्राप नाश तो नहीं हुआ परन्तु यादवों का नाश अवश्य हो गया। विचार करें जो भ्रमित करने वाले गुरूजन गंगा, यमुना या किसी तीर्थ के जल में स्नान करने से पाप नाश होने तथा मोक्ष प्राप्त होने की बात कहते हैं वह कहाँ तक उचित है। अर्थात् व्यर्थ है। बहकावा मात्र है। शास्त्रविधि रहित साधना करा कर अनुयाईयों का जीवन व्यर्थ करना है तथा स्वयं महापाप के भागी होकर घोर नरक में गिरने की तैयारी मात्र है। (4) श्री विष्णु को नारद ऋषि ने श्राप दिया वह श्राप श्री विष्णु जी ने श्री रामचन्द्र रूप में राजा दशरथ के घर अयोध्या में जन्म लेकर भोगना पड़ा। नारद के शाप अर्थात् तीन ताप को श्री विष्णु नाश नहीं कर सके।

''क्या श्री कष्ण जी तत्वज्ञान से परिचित थे?''

प्रश्नः-धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ से विनय पूर्वक प्रश्न किया हे दीनदयाल! हे बन्दी छोड़ आप के द्वारा दिया उपरोक्त तत्वज्ञान अद्वितीय है। मेरे ज्ञान चक्षु खुल गए हैं। जो प्रभु स्वयं को तथा अपने कुल को कर्मदण्ड से आनेवाली आपत्ति से नहीं बचा सकते तो हम साधकों द्वारा की गई इन भगवानों (श्री विष्णु, श्री शिव तथा श्री ब्रह्मा जी) की उपासना व्यर्थ थी। हे परमेश्वर! श्री कष्ण जी ने भी किस कारण से शास्त्रविधि विरूद्ध साधना करने की प्रेरणा अपने अनुयाईयों को की। क्या इन्हें सत्य साधना का ज्ञान ही नहीं है? या किसी अन्य कारण से नहीं बताई?

उत्तरः-हे धर्मदास! जो काल ब्रह्म अर्थात् ज्योतिनिरंजन है वह इक्कीस ब्रह्मण्डों का प्रभु है वह एक हजार कलाओं तथा एक हजार भुजाओं युक्त है। श्री विष्णु, श्री शिव व श्री ब्रह्मा जी सोलह-सोलह कलाओं युक्त हैं तथा केवल चार-2 भुजा युक्त हैं। काल ब्रह्म नहीं चाहता कि मेरे इक्कीस ब्रह्मण्डों का कोई भी जीव तत्वज्ञान से परिचित होकर मेरे समान शक्तिशाली हो जाए तथा मेरे जाल से निकल जाए। इसी कारण से यह वेद ज्ञान की अपेक्षा स्वयं आकाशवाणी करके ऋषियों द्वारा स्वयं बनाए लोकवेद अर्थात् कहे सुने भक्ति ज्ञान के आधार से ही

श्रद्धालुओं को भक्ति मार्ग प्रदान कराता है। अपनी गुप्त प्रेरणा या आकाश वाणी से ऋषियों को हठयोग करने के लिए प्रेरित करता है। वर्षों हठ योग से तप साधना करने से ऋषि जन सिद्धियाँ प्राप्त करके परमाणु बम तुल्य बन जाते हैं।

जिस कारण से थोड़ी सी कहा सुनी होते ही एक दूसरे को श्राप देकर कष्ट भोगते रहते हैं। यर्थाथ् उद्देश्य पूर्ण मोक्ष को भूल कर एक दूसरे से बढ़-चढ़ कर सिद्धियाँ प्राप्त करने की स्पर्धा में मानव जीवन नष्ट कर जाते हैं। जिस के पास अधिक सिद्धियाँ होती हैं वह अन्य ऋषियों को मात दे देता है। जिस कारण भोली जनता में प्रसंशा का पात्र बन कर पूज्य बन जाता है। भोले श्रद्धालु उसे परम शक्तियुक्त ऋषि, महर्षि मान कर उस के आदेशनुसार भक्ति क्रियाऐं करते रहते हैं तथा अपने गुरूदेव के करिश्मों का गुण-गान करते रहते हैं। जिस कठिन तप अर्थात् हठयोग से साधना गुरूजी ने की थी वैसी साधना अनुयाई नहीं कर सकते क्योंकि अनुयाई गहस्थी होते हैं अपना मेहनत-मजदूरी करके परिवार पालते हैं। जबकि ऋषि या तो कुंवारे ही साधना करते हैं। यदि गहस्थी होते हैं तो उनके बच्चों का निर्वाह अनुयाई के द्वारा दी गई दक्षिणा से चलता है। जिस कारण से ऋषि एक स्थान पर हठयोग कई वर्षों तक करके सिद्धियाँ प्राप्त कर लेता है ऐसा अनुयाईयों के लिए सम्भव नहीं हैं। यदि ऋषि गुरूजी वाली साधना से मोक्ष प्राप्ति मानी जाए जो अनुयाई उस मोक्ष से वंचित ही रह जाऐंगे। परन्तु दोनों (गुरू व अनुयाईयों) की भक्ति विधि शास्त्रों के विरूद्ध होने से व्यर्थ है।

इसी प्रकार श्री कष्ण जी के अध्यात्मिक गुरूदेव श्री दुर्वासा ऋषि थे (अक्षर ज्ञान अर्थात् शिक्षा के गुरू श्री संदीपनी ऋषि थे) दुर्वासा जी ने हठ योग करके हजारों वर्ष साधना की जिससे सिद्धियाँ प्राप्त करके प्रसंशा का पात्र बन गया। श्री कष्ण जी गहस्थी थे उनको दुर्वासा ने अन्य साधना करने को कहा। श्री कष्ण जी ने फिर अपने शिष्यों (पाण्डवों तथा यादवों) को वही शास्त्र विधि विरूद्ध भक्ति विधि बताई जो बुरे समय पर बचाव नहीं कर सकी। जो आप ने पूर्वोक्त उल्लेख में पढ़ी व सुनी।

यही दशा श्री रामचन्द्र जी की जानों। उनके गुरूदेव श्री वशिष्ठ मुनि थे। श्री वशिष्ठ ऋषि जी ने भी शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) किया। वशिष्ठ मुनि ने हजारों वर्ष तपस्या (हठयोग) की तत्पश्चात् सिद्धि युक्त होकर अनुयाई बनाए। श्री रामचन्द्र जी गहस्थी व राजा थे। वे तपस्या अर्थात् वशिष्ठ ऋषि जी वाली हठयोग साधना नहीं कर सकते थे। इसलिए श्री रामचन्द्र जी भक्ति भी जो श्री वशिष्ठ जी द्वारा बताई गई थी करते थे परन्तु कर्म लेख भोगने ही पड़े। श्री रामचन्द्र जी का पूरा जीवन कष्टमय दुःखों से परिपूर्ण रहा। जिस व्यक्ति की पत्नी व बच्चे अन्यत्र कही पर रह रहे हों। वह व्यक्ति चाहे पथ्वी पति हो उसे स्वपन में भी सुख नहीं हो सकता। भगवान श्री राम का सर्व जीवन ऋषि

नारद के श्राप से नरकमय रहा। थोड़े कहे को अधिक समझ धर्मदास।

हे धर्मदास! काल ब्रह्मका भयंकर जाल है। आपने देवी पुराण तीसरे स्कंद अध्याय 6-7 में पढ़ा कि जिस समय ब्रह्मा कमल के फूल पर चेत हुआ था वह युवा था। तब काल ब्रह्म ने आकाशवाणी की थी ब्रह्मा तप करो, तप करो। ब्रह्मा ने एक हजार वर्ष तक तप किया फिर आकाशवाणी हुई संष्टि करो। हे धर्मदास! ब्रह्मा को वेद बहुत बाद में प्राप्त हुए। शास्त्रविधि रहित साधना करने को प्रेरित काल ब्रह्म ने बहुत पूर्व ही कर दिया। इस प्रकार वेदों के ज्ञान को पढ़ कर भी तपस्या (हठयोग) करना उचित जाना। क्योंकि ब्रह्मा ने माना कि तप करना भी प्रभु का आदेश है। इसलिए इस शास्त्रविरूद्ध हानिकारक साधना को ब्रह्मा ने स्वयं भी किया तथा विष्णु और शिव व अपने वंशजों को भी इसी को करने की राय दी तथा कहा यह प्रभु की आकाशवाणी है जो उन्हीं का आदेश है जो मुझे स्पष्ट सुना है।

हे धर्मदास! तपस्या से सिद्धियों युक्त करके काल ब्रह्म अपना कार्यसिद्ध करता है। ऋषियों व ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी सिद्धी युक्त करके अन्य प्राणियों को सुख व दुःख दिलाता है तथा सर्व प्राणियों को यथार्थ भक्ति मार्ग से कोसों दूर रखता है। तप से कुछ समय राज्य मिलता है। पाप कर्म से दुःखमय योनियों में शरीर तथा नरक प्राप्ति होती, तप से कुछ समय स्वर्ग का सुख मिलता है, पश्चात् वह साधक चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों की योनियों में महाकष्ट भोगता है। इस प्रकार काल ब्रह्म ने सर्व जीवात्माओं को दो तरफा ज्ञान से भ्रमित कर रखा है। जैसे गीता अध्याय 3 श्लोक 1-2 में अर्जुन ने पूछा हे जनार्दन! आप कभी कहते हो कर्म श्रेष्ठ है अर्थात् कर्मयोग श्रेष्ठ है, कभी कहते हो कर्मयोग की अपेक्षा ज्ञानयोग श्रेष्ठ है, यदि ज्ञान योग श्रेष्ठ है तो मुझे युद्ध करने वाले भयंकर कर्म में क्यों लगाना चाहते हो। आप के मिले जुले से वचन मुझे भ्रमित कर रहे हैं। जो एक बात निश्चित् करके कहिए जिससे मैं कल्याण को प्राप्त होऊँ।

गीता ज्ञान दाता ने अध्याय 3 श्लोक 4 से 8 में कहा है कि कर्म सन्यास अर्थात हठयोग करके एक स्थान पर बैठ कर साधना करने वाले दम्भी हैं। वे शरीर से तो साधना करते दिखाई देते हैं परन्तु उनका मन चंचल रहता है (जैसे सर्दी लगी तो सर्दी का चिन्तन, गर्मी लगी तो गर्मी का चिन्तन, भूख का चिन्तन मन से करते रहते है) यह साधना व्यर्थ है। एक स्थान पर बैठ कर साधना करेगा अर्थात् कर्मसन्यास करके भक्ति करेगा तो तेरा निर्वाह कैसे होगा।

यही प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 7 में कहा है कि युद्ध भी कर मेरा स्मरण भी कर मुझे प्राप्त होगा। हे धर्मदास! उपरोक्त विचार वेद ज्ञान के है जो श्रेष्ठ है। फिर गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 6 श्लोक 10 से 15 में अपने शास्त्रविरुद्ध विचार (लोक वेद) बताए हैं। जिससे स्पष्ट है कि यदि गीता अध्याय 3 श्लोक 4

से 8 वाला ठीक है। तो यह अध्याय 6 श्लोक 10 से 15 वाला उसके विपरीत होने के कारण व्यर्थ हुआ। अधिकतर श्रद्धालु हठयोग को रूचि से करते हैं क्योंकि मन रूपी काल उसी साधना से खुश रहता है जो जीव को हानि करे।

काल जाल का अन्य प्रमाण :- श्री विष्णु पुराण के तृतीय अंश के अध्याय 17 श्लोक 1 से 44 तथा अध्याय 18 श्लोक 1 से 36 में पृष्ठ 125 से 221 पर लिखा है की देवता तथा दैत्य दोनों ही वैदिक धर्म अनुसार साधना करते थे। एक समय दोनों का सौ दिव्य वर्ष तक युद्ध हुआ। देवता पराजित हो गए। देवताओं ने क्षीर समुद्र के उत्तरीय तट पर जाकर तपस्या की और भगवान विष्णु की आराधना के लिए इस स्तव का गान किया, देवगण बोले- हम लोग लोक नाथ भगवन् विष्णु की आराधना के लिए जिस वाणी का उच्चारण करते हैं उस से वे आद्य-पुरूष श्री विष्णु भगवान प्रसन्न हों। (17/मन्त्र 11) उस ब्रह्मस्वरूप को जो निराकार है। उस ब्रह्मस्वरूप को नमस्कार है। हे पुरूषोतम्! आप का जो क्रूरता ओर माया से युक्त घोर तमोमय रूप हैं उस राक्षस स्वरूप को नमस्कार है (20) जो कल्पान्त में समस्त भूतों अर्थात प्राणियों का भक्षण कर जाता है आपके उस काल स्वरूप को नमस्कार है (25) जो प्रलय काल में देवता आदि समस्त प्राणियों का भक्षण करके नृत्य करता है आपके उस रूद्रस्वरूप को नमस्कार है (17/मन्त्र 26) विष्णु पुराण तृतीय अंश अध्याय 17 के श्लोक 11 से 34 तक स्त्रोत के समाप्त हो जाने पर देवताओं ने श्री हरि को हाथ में शंख चक्र, गदा लिए गरूड़ पर आरूढ़ समुख विराजमान देखा (35) देवताओं की प्रार्थना सुनकर भगवान विष्णु ने अपने शरीर से (वचन शक्ति से) एक मायामोह को उत्पन्न किया तथा कहा कि वह माया मोह दैत्यों को वेद मार्ग की साधना से हटा कर मनमुखी साधना पर आरूढ़ कर देगा। जिस कारण से दैत्य भक्तिहीन हो जाऐंगें तब, तुम देवता उन्हें मार डालना। ऐसा ही हुआ माया मोह ने सर्व दैत्यों (राक्षसों) को वैदिक मार्ग से विचलित करके मनमुखी साधना पर आरूढ़ कर दिया। कुछ पश्चात् देवता तपस्या करके (बैट्री चार्ज करके) दैत्यों के साथ युद्ध करने के लिए उपस्थित हुए। दैत्यों ने तपस्या करनी त्याग दी थी जिससे उनमें सिद्धि शक्ति नहीं रही। (उनकी बैट्री चार्ज नहीं हुई) इस कारण से देवताओं ने दैत्यों को मार डाला।

उपरोक्त विष्णु पुराण के उल्लेख का निष्कर्ष :-

काल ब्रह्म ने सर्व प्राणियों (देवताओं, ऋषियों, ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव तथा अन्य प्राणियों) को भ्रमित किया हुआ है। यह स्वयं ही अपने तीनों पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) का रूप धारण कर लेता है। उपरोक्त स्तोत्र में देवताओं ने श्री विष्णु की स्तुति करनी चाही है, कर रहे हैं काल ब्रह्म की। वह काल ब्रह्म ही विष्णु रूप धारण करके गरूड़ पर बैठ कर आश्वासन दे गया। अपने वचन से एक व्यक्ति उत्पन्न कर के माया मोह नाम रख कर राक्षसों के पास भेज दिया। जो

दैत्यगण तपस्या अर्थात् हठयोग करते थे उससे सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती थी। माया मोह ने वह साधना भी छुड़वा दी जिस से असुर गण सिद्धियों से रहित हो गए। देवता गण भी पहले दैत्यों से युद्ध करने के कारण सिद्धियाँ समाप्त कर चुके थे तथा हार कर जान बचाकर चले गए थें फिर तपस्या की तथा सिद्धियाँ प्राप्त करके असुरों से युद्ध किया तथा विजय पाई। जब देवता गण राक्षसों से हारे थे उस समय दैत्य भी वही साधना (तपस्या अर्थात् हठ योग) करते थे जो देवता करते थे। इससे सिद्ध हुआ कि भक्ति करने से भी देवता, दैत्यों से रद्दी (पिछड़े हुए) थे। क्योंकि राक्षस वही साधना करके देवताओं पर विजय पाए थे जो देवतागण करते थे।

वास्तव में शास्त्रविधि अनुसार साधना न देवता करते थे न दैत्य। केवल काल द्वारा बताई गई तपस्या (जो ब्रह्मा को जन्म के समय आकाश वाणी द्वारा काल ब्रह्म द्वारा कमल के फूल पर बताई थी उस तपस्या) अर्थात् हठ योग को दोनों करते थे। दोनों ही सिद्धियाँ प्राप्त करते थे। जैसे शराब को देवता पीऐ चाहे दैत्य दोनों को ही सरूर होगा। सिद्धियाँ प्राप्त होने पर प्राणी को अभिमान का नशा हो जाता है। फिर आपस में एक दूसरे पर सिद्धियों का प्रयोग करके स्वयं के जीवन को नष्ट कर जाते हैं। यह सर्व काल ब्रह्म द्वारा फैलाया भयंकर जाल है जिसे तत्वज्ञान से ही समझा जा सकता है तथा इस जाल से निकला जा सकता है।

वर्तमान में कुछ पंथ हैं जो न तो देशी घी की ज्योति लगाने देते हैं न गीता, वेद या स्वसम वेद वाणी का पाठ करने को बताते हैं न वास्तविक नाम जाप को देते हैं। कहते है सन्त कुछ नाम जाप करने को दे दे वही मोक्षदायक है। अढ़ाई घण्टे सुबह तथा कम से कम अढ़ाई घण्टे शाम को हठयोग करने को कहते हैं यह मोक्ष मार्ग नहीं है। ये सन्त काल ब्रह्म द्वारा माया मोह की तरह भेजे गए है। जिन्होंने वह साधना भी छुड़ा दी जिससे स्वर्ग तक जाने की भक्ति तो बनती थी। जैसे प्रतिदिन गीता, वेद या स्वसम वेद (कबीर वाणी या कबीर जी से परिचित सन्तों की वाणी) वाणी के पाठ से ज्ञान यज्ञ का फल मिलता है, तथा देशी घी की ज्योति से हवन यज्ञ का फल मिलता है। दण्डवत् प्रणाम से प्रणाम यज्ञ का फल मिलता है। वे नकली पंथ सुना-सुनाया सतलोक-2 तो कहते है परन्तु सतलोक में सतपुरूष निराकार बताते है। वहां प्रकाश ही प्रकाश है आनन्द ही आनन्द है। आत्मा भी उस प्रकाश में ऐसे समा जाती है जैसे समुन्द्र में बून्द समा जाती है। ऐसा व्यर्थ ज्ञान अनुयाईयों को बता कर कहते हैं चलो सतलोक में वहाँ आनन्द ही आनन्द है। विचार करें किसी लड़की को कोई मूर्ख कहे तेरी सगाई अमूक गाँव में कर दी है। वहाँ तेरा पति निराकार है। तेरे पति के घर में प्रकाश ही प्रकाश है, पति साकार नहीं है, वहाँ विवाह कराके जा, लड़की वहां आनन्द ही आनन्द है। उस मूर्ख से पूछे पति साकार नहीं है तो उस कन्या का क्या उत्साह

होगा विवाह करने व बिना पति वाले घर जाने का? कोई उमंग नहीं हो सकती।

ठीक इसी प्रकार जो गुरू जन सतपुरूष अर्थात् परमात्मा को निराकार कहते हैं तथा कहते है कि केवल प्रभु का प्रकाश ही देखा जा सकता है। वे भ्रमित कर रहे हैं उनको कोई ज्ञान नहीं है उनको परमात्मा प्राप्ति भी नहीं हुई है। उनसे कोई पूछे तुम कहते हो कि सतपुरूष (अविनाशी परमेश्वर) का केवल प्रकाश देखा जा सकता है क्योंकि सतपुरूष (सच्चा परमेश्वर) तो निराकार है। जैसे कोई अन्धा कहे कि सूर्य तो निराकार है उसका केवल प्रकाश ही देखा जा सकता है । सूर्य बिना प्रकाश किसका देखा? जब सूर्य निराकार है तो प्रकाश काहेका? इसी प्रकार जो ज्ञान नेत्रहीन सन्त, ऋषि, महर्षि परमात्मा को निराकार कहते हैं तथा परमात्मा को सूर्य तुल्य प्रकाशमान कहते हैं तथा परमात्मा का प्रकाश देखा कहते है। वे सनीपात के ज्वर के रोगी की तरह बरड़ा रहे हैं उन्हें यही नहीं पता वे क्या बोल रहे हैं। वे सर्व काल ब्रह्म के द्वारा भेजे गए मोहमाया जैसे भ्रमित करने वाले दूत है। जिन्होंने भोली आत्माओं को उल्टा पाठ पढ़ा कर दिशाभ्रष्ट कर दिया है।

➽ प्रश्न :- धर्मदास जी ने प्रश्न किया हे बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वरजी! ऋषि वशिष्ठ जी के विषय में सुना है वे बड़े सहनशील व ज्ञानी महापुरूष थे। सुना है कि विश्वामित्र ने उनके सौ पुत्रों को मार डाला था। फिर भी उन्होंने श्राप नहीं दिया?

उत्तरः-कबीर परमेश्वर ने कहा हे धर्मदास! वशिष्ठ ऋषि ने ऋषि विश्वामित्र को श्राप इसलिए नहीं दिया यदि वशिष्ठ जी श्राप देते तो विश्वामित्र जी भी श्राप देते। दोनों ही सिद्धी प्राप्त (विषैले सर्प तुल्य) थे। विश्वामित्र राजा भी थे इस कारण से वशिष्ट जी ने झगड़ा करने के लिए भी अपने को असमर्थ समझा। इस कारण संयम व आधीनी से काम लिया।

➽ श्री विष्णु पुराण चतुर्थ अंश के अध्याय 5 श्लोक 1 से 10 पष्ठ 252 पर लिखा है कि राजा इक्ष्वाकु के निमि नामक पुत्र ने एक हजार वर्ष तक चलने वाला यज्ञ करने के विचार से सर्व सामान तैयार कर लिया। ऋषि वशिष्ठ कुल गुरू से यज्ञ में ऋत्वक् होने की प्रार्थना की। ऋषि वशिष्ठ ने कहा मैं पहले पांच सौ वर्षों तक चलने वाला यज्ञ इन्द्र का करूगां पश्चात् आपका यज्ञ करूंगा। यह कह कर वशिष्ठ ऋषि इन्द्र का यज्ञ करने चले गए। राजा निमि ने गौतम ऋषि को होता वरण करके यज्ञ प्रारम्भ किया। वशिष्ठ जी इन्द्र का यज्ञ करके राजा निमि के घर लौटा तो गौतम ऋषि को होता का कार्य करते देख अपना अपमान जान कर ऋषि वशिष्ठ ने राजा निमि को श्राप दे दिया कि तेरी देह नष्ट हो जाए अर्थात् मत्यु को प्राप्त हो। उस समय राजा निमि सोए हुए थे। राजा सोकर उठा तो पता चला कि ऋषि वशिष्ठ ने मत्यु का श्राप दिया है। मुझ से कारण जाने बिना ही शाप दिया है मैं भी इस दुष्ट गुरू को शाप देता हूँ ऋषि वशिष्ठ की देह

नष्ट हो जाए। इस प्रकार गुरू और शिष्य दोनों एक दूसरे को शाप देकर नष्ट हो गए।

हे धर्मदास! तत्वज्ञान हीन व्यक्ति चाहे ऋषि है चाहे राजा या देवता बना है। वह स्वार्थवश कुछ भी उपद्रव कर सकता है। जो व्यक्ति काल ब्रह्म प्रेरणा से शास्त्रविधि विरूद्ध तपस्या आदि करते हैं वे सिद्धियाँ (चमत्कारी शक्तियाँ) प्राप्त कर लेते हैं। सिद्धि प्राप्त प्राणी विषैले सर्प तुल्य होता है। थोड़े से ही कारण से शाप रूपी डंक मार देता है। राजा निमि पूर्व जन्म की भक्ति तपस्या से सिद्धि लिए था। ऋषि वशिष्ठ पूर्व जन्म तथा इस जन्म की भक्ति तपस्या से सिद्धि प्राप्त था। ऋषि वशिष्ट की आत्मा मित्रा वरूण के शरीर में वीर्य में प्रवेश कर गई। एक दिन एक उर्वशी को देखने से उसका (मित्रावरूण) का वीर्य स्खलित हो गया। उससे वशिष्ठ ऋषि को पुनः शरीर प्राप्त हुआ।

नोटः- देवी पुराण में मित्रा-वरूण दो ऋषि लिखे हैं। एक उर्वशी को देखकर दोनों का वीर्य स्खलित हो गया दोनों ने बारी-2 उठ कर एक घड़े में वीर्य त्याग किया। वहाँ दो लड़के उत्पन्न हुए एक अगस्त ऋषि हुए तथा दूसरे वशिष्ठ हुए दोबारा मानव शरीर प्राप्त हुआ।

इसलिए हे धर्मदास ! पूर्ण सन्त का मिलना अति दुर्लभ है।

गरीब, गोरख से ज्ञानी घने, सुखदेव जति जिहान। सीता सी बहु भार्या, सन्त दूर अस्थान।
कोट्यों मध्य कोई नहीं रै झूमकरा, अरबों मैं कोई गरक सुनों राई झूमकरा।

भावार्थ :- गोरख नाथ जैसे ज्ञानी बहुत मिल जाऐंगे, (कबीर परमेश्वर जी की शरण में आने के पश्चात् श्री गोरखनाथ जी को कुछ ज्ञान प्राप्त हो गया था) सुखदेव ऋषि जैसे जति (यति पुरूष) भी बहुत संख्या में मिल जाऐंगे, सीता जैसी सुशील पत्नी भी बहुत संख्या में मिल जाऐंगी परन्तु पूर्ण सन्त का मिलना अति दुर्लभ है।

पूर्ण सन्त करोड़ों सन्तों में नहीं मिलेगा। अन्य को भोली जनता सन्त कहती है परन्तु उन नकली अरबों सन्तों में कोई पूर्ण सन्त मिलेगा। धर्मदास ने कहा हे बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर! आपने तो मेरे अज्ञान रूप मोतिया बिन्द को समाप्त कर दिया। आपका दास महा अज्ञानी था आपने मुझ दास की आँखे खोल दी। हे प्रभु सर्व संसार को अज्ञान रूपी मोतिया बिन्द हुआ है। आप के अतिरिक्त ऐसा निर्णायक ज्ञान किसी ने नहीं बताया। परमेश्वर कबीर जी बोले हे धर्मदास! किसी को पता ही नहीं, बताएगा कौन? अपनी महिमा बताने मैं आप ही आता हूँ।

शब्दः- मेरे साधो भाई मोहे सब जग भूला पाया (टेक)
इसी भूल में ब्रह्मा भूला जिसने बेद सरसाया।
बेद पढ़ कर पंड़ित भूला, मरम भेद ना पाया।(1)
इसी भूल में विष्णु भूला, जिसने वैष्णव धर्म चलाया।

तीर्थ व्रत का बाँध महातम, बहुविध जीव फंसाया। (2)
इसी भूल में शंकर भूले जिसने भिक्षुक पंथ बनाया।
सिर पर जटा हाथ में खप्पर घर–2 अलख जगाया। (3)
इसी भूल में भूले मुहम्मद जिसने न्यारा धर्म चलाया।
परत्रिया संग फिरा भटकता लिंग और मूछ कटाया। (4)
इसी भूल में भूले मच्छन्द्र, जिसने सिंगल द्वीप बसाया।
विषय वासना केवश होकर अपना योग नशाया। (5)
कह कबीर सुनो धर्मदासा इस भूल का भेद हाथ ना आया।
जिसको मिल गया भेद भूल का वह गर्भवास ना आया। (6)

उपरोक्त शब्द का भावार्थ :- परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने अपने प्यारे भक्त धर्मदास को बताया हे धर्मदास! जिस समय मैं इस काल ब्रह्म के लोक में आया तो सर्व संसार तत्वज्ञान से अपरिचित मिला। तत्वज्ञान के अभाव से विष्णु ने अपने आप को सर्वोच्च परमात्मा मान कर अपने मत अनुसार साधना का प्रचार करा दिया। जैसे सुखदेव ऋषि ने स्वर्ग से आकर दिल्ली में एक चरण दास नामक सन्त को ज्ञान दिया जिसने वैष्णव पंथ का प्रचार किया। चरण दास परम्परा में एक गुमानी दास सन्त हुए हैं। उस गुमानी दास वैष्णव सन्त का शिष्य नितानन्द (नन्दलाल तहसीलदार) हुए है जिनका गाँव माजरा, बिगोवा, बास की सीमा पर जटैला जोहड़ नामक आश्रम प्रसिद्ध है। इसी प्रकार ब्रह्मा जी ने वेदों को पढ़ाया परन्तु तत्व ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ केवल मनमुखी साधना करते-कराते रहे। इसी प्रकार शिव ने अपने संदेश वाहक संसार में भेज कर गिरी, पुरी, नाथ आदि भिक्षा मांग कर खाने वाले पंथ प्रारम्भ कर दिए।

हजरत मुहम्मद ने भी काल ब्रह्म प्रेरणा से भिन्न धर्म की स्थापना कर दी। गोरखनाथ के गुरू मछन्दर नाथ ने अपना शरीर त्याग कर एक मत राजा के शरीर में प्रवेश किया। उसकी पत्नी से संभोग किया। उससे सिंगल द्वीप में मछन्दर के जीव द्वारा राजा के शरीर से उत्पन्न बच्चों की परम्परा चली। परन्तु उपरोक्त तत्वज्ञान किसी को नहीं है। सर्व काल ब्रह्म की प्रेरणा से ही भक्ति क्रियाऐं कर रहे हैं। जिस व्यक्ति को सम्पूर्ण तत्वज्ञान हो गया जो पूर्ण परमात्मा से परिचित हो गया वह तो केवल जन्म-मरण से छूटने का ही प्रयत्न करता है। वह इस संसार की किसी वस्तु की इच्छा नहीं करता। यही प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में है।

''परमेश्वर का तीन युगों में थोड़े जीव पार करने का वचन देना''

प्रश्न :-परमात्मा का काल लोक में आना तथा काल ब्रह्म द्वारा वचन बद्ध करके तीन युगों (सत्ययुग, त्रेतायुग तथा द्वापर युग) में थोड़े ही जीव काल जाल

से निकालने तथा कलयुग में जितने चाहे जीव मुक्त कराने का वर प्राप्त किया। क्या परमेश्वर को पता नहीं था कि काल ब्रह्म क्या मांगने जा रहा है। यदि परमेश्वर को ज्ञान नहीं था तो सर्वज्ञ नहीं हुए। यदि ज्ञान था तो वर किस लिए दिए?

उत्तर :- (लेखक द्वारा) सतयुग में महापुण्यात्माओं का जन्म होता है। पृथ्वी पूर्ण रूप से प्रदूषण मुक्त होती है। फलदार वृक्षों की भरमार होती है। अत्यधिक वन होने के कारण ऑक्सीजन की अधिकता वाली वायु चलती है। मानव शरीर अति स्वस्थ रहता है। मानव की आयु, लाखों वर्ष की सत्ययुग के प्रारम्भ में होती है। आपसी भाई चारा, प्रेम, दूसरे के दुःख को अपना दुःख मानना। उस समय के मानव का स्वभाव होता है। चोर, डाकू, परस्त्रीगमन करने वाले नाम मात्र ही सत्ययुग के अन्त में होते हैं। स्त्री से पहले पति की मृत्यु सत्ययुग में नहीं होती। पिता से पहले पुत्र की मृत्यु नहीं होती। सर्व मानव समाज परमात्मा से डरने वाला, पाप-पुण्य पर गहन विचार करके कार्य करने वाला होता है तथा अधिक समय परमात्मा के भजन-स्मरण व वेदों के अध्ययन में ही व्यतीत करता है। पूर्वजन्म में किए भक्ति अभ्यास से प्रत्येक व्यक्ति (स्त्री व पुरूष) समाधिस्थ होता है। कई वर्षों तक बिना खाए-पीए ही समाधि द्वारा ऊपर के लोकों के दृश्य यहाँ बैठे देखते रहते हैं। नाम का जाप न करके अधिक समय समाधि में व्यतीत करते हैं। जिस कारण से उनको तपस्या का फल प्राप्त होता है। तप से राज्य प्राप्त होता है। राज्य भोग कर फिर नरक को वह व्यक्ति प्राप्त होता है। यह काल ब्रह्म के जाल का सुनियोजित चक्र है। जो व्यक्ति पृथ्वी पर बैठा स्वर्ग लोक के नृत्य देख लेता है जो धर्मराज के दरबार से भी अन्य सूचना प्राप्त कर लेता है तो वह व्यक्ति अपनी साधना को सर्वोत्तम मान बैठता है। ऐसी स्थिति सत्ययुग के प्रारम्भ में प्रत्येक मानव की होती है। उनमें सिद्धियाँ भी अन्य युगों के प्राणियों से अधिक होती हैं। इस कारण से तत्वज्ञान को ग्रहण नहीं करते।

त्रेता युग में उत्पन्न प्राणी सत्ययुग के प्राणियों से कम पुण्य वान होते हैं। त्रेता युग में भी सर्व मानव समाज परमात्मा से डरने वाला भक्ति करने वाला होता है। भक्ति शक्ति व सिद्धियाँ भी बहुत व्यक्तियों में होती हैं। त्रेतायुग के प्रारम्भ में मानव की आयु दस हजार वर्ष होती है। परमात्मा की भक्ति करने में पूर्ण विश्वास करते हैं। इस युग में भी प्राणी अधिक दुःखी नहीं होते परन्तु त्रेतायुग में मानवता में कुछ गिरावट आ जाती है अपनी साधना पर अतिदृढ़ रहते हैं। जो साधना करते हैं उसी से मानते हैं हमें लाभ हो रहा है। वास्तव में वह लाभ पूर्व जन्म के पुण्यों के संयोग से होता है वे मान लेते हैं कि जो साधना हम कर रहे हैं यह सुख इसी का प्रतिफल है।

उदाहरण :-संत रामपाल दास जी महाराज ने बताया कि पहले मैं सर्व साधना शास्त्रविधि के विपरीत किया करता था। परन्तु जो लाभ होता तो मानता

था कि इसी भक्ति के प्रतिफल से हो रहा है। जैसे परीक्षा में उत्तीर्ण होना, लड़का उत्पन्न होना, नौकरी मिलना आदि को अपनी भक्ति साधना के प्रतिफल ही मानता था। अब तत्व ज्ञान की प्राप्ति होने के पश्चात् पता चला कि जो भक्ति करता था। उससे कोई लाभ होने वाला नहीं था। इस कारण से त्रेता युग के प्राणी भी तत्वज्ञान ग्रहण नहीं करते हैं। फिर भी कुल संख्या तत्वज्ञान ग्रहण करने वालों की बहुत कम होती है। द्वापर युग में मानव त्रेता से भी कम पुण्यों युक्त होते हैं। विकारी भी अधिक हो जाते हैं। परमात्मा की भक्ति करने में विश्वास तो रखते हैं परन्तु विलास के भी सर्व साधनों का प्रयोग करते है। जैसे बहुपत्नी, जुआ खेलना, मदिरा पीना आदि विकार कुछ व्यक्ति प्रारम्भ कर देते हैं।

उपरोक्त युगों की तरह इस द्वापर युग में भी साधक अपनी साधना जो शास्त्रविरूद्ध होती है को लाभदायक मानकर करते रहते हैं परन्तु वास्तव में वह पाप विनाशक, कष्ट निवारक नहीं होती। जैसे आप ने पूर्वोक्त उल्लेख में पढा कि श्री कृष्ण जी ने पाण्डवों को जो कष्ट निवारक (पाप कर्म नाशक) भक्ति विधि बताई थी वह कोई काम नहीं आई। द्वापर युग में भी व्यक्ति तत्वज्ञान को बहुत ही कम ग्रहण करते हैं। परन्तु उपरोक्त दोनों युगों से अधिक मात्रा में तत्वज्ञान ग्रहण करते हैं। फिर भी बीच में विचलित हो जाते हैं क्योंकि शास्त्रविरूध साधना करने वाले अधिक मात्रा में होते हैं। इस कारण से सत्य साधना करने वाले अपना विश्वास खो बैठते हैं। सत्य साधना कुछ वर्ष करके त्याग देते हैं। दो-चार प्राणी ही पूर्ण आयु विश्वास के साथ लगे रहते हैं तथा मोक्ष प्राप्त करते हैं। द्वापर युग के प्रारम्भ में मानव की आयु एक हजार वर्ष होती है। कलयुग में भी सर्व परमात्मा को मानने वाले होते हैं। काल ब्रह्म अपने भक्ति ज्ञान दूत भेज कर कई प्रकार के धर्मों का उत्थान करा देता है।

सर्व धर्मों के श्रद्धालु अपने-2 धर्म के धार्मिक कार्यों को उत्तम मानकर दूसरों के धार्मिक कार्यों में दोष निकालते रहते है। आपसी झगड़े भी धर्म के कारण करके समाज में अशान्ति फैलाते रहते हैं। कलयुग में जिन प्राणियों का जन्म होता है वे सतयुग, त्रेता, द्वापर युग में अपनी पुण्य कमाई को समाप्त करके पुण्यहीन हो जाते हैं। आपत्तियाँ पग-पग पर आती रहती है। शरीर भी किसी न किसी रोग से युक्त होता है। सर्व मानव समाज किसी न किसी रोग की चपेट में अवश्य रहता है। जो साधना कलयुग के साधक कर रहे होते हैं उससे उन्हें कोई लाभ नहीं होता। उनके पूर्व जन्म के पुण्य शेष नहीं होते तथा जो साधना वे कलयुग के श्रद्धालु करते हैं। वह शास्त्र विधि विरूद्ध होती है। जिस कारण उनका कोई कष्ट निवारण नहीं होता। न वांच्छित कार्य ही सिद्ध होता है। कुछ समय उपरान्त साधक का परमात्मा से विश्वास उठ जाता है। वह विकार करने लग जाता है। चोरी, डाके या ठगी का सहारा लेकर धनी बनना चाहता है। अवैध

विधि से धन इक्टठा करता है तो पाप का भागी हो जाता है। अवैध विधि से जोड़ा धन स्थाई नहीं होता। भाग्य से अधिक प्राणी रख नहीं सकता। वह धन या तो रोग की चिकित्सा में खर्च होगा या चोरी हो जाएगा या कोई मित्र लेकर वापिस नहीं देगा शत्रुता को जन्म देगा या कन्या के विवाह में अधिक खर्च करके प्रतिष्ठा बनाएगा। कई बार देखा है विवाह के कुछ समय पश्चात् लड़की की मत्यु हो जाती है वह धन किसी काम नहीं आता।

इस प्रकार वह अवैध विधि से जोड़ा धन तो रहा नहीं जो उस धन को प्राप्त करने में अपराध हुए वे शेष रह जाते हैं। उनको भोगने के लिए कुत्ते-गधे की योनी प्राप्त होती है। कुत्तों को देखा है खाज लगी होती है। सिर में चोट लगने से घाव में कीड़े चल रहे होते हैं। पिछले पैरों को अधरंग हो जाता है। अगले पैरों के सहारे वह अपराधी चलता है पिछले पैर घिसट रहे होते हैं।

कलयुग में पूर्ण परमात्मा अन्य युगों की भाँति तत्वदर्शी सन्त की भूमिका करने आता है। वह शास्त्रविधि अनुसार सत्य साधना का ज्ञान देता है। जो श्रद्धालु अपनी परंपरागत साधना से लाभ प्राप्त नहीं कर पाता है। जब वह पूर्ण परमात्मा की भक्ति तत्वदर्शी सन्त के बताए अनुसार करता है तो तुरन्त लाभ होता है। वह श्रद्धालु तुरन्त पूर्ण परमात्मा के तत्वज्ञान को ग्रहण कर लेता है। इस कारण से कलयुग में परमेश्वर के मार्ग को अधिक प्राणी ग्रहण करते हैं तथा पूर्ण मोक्ष प्राप्त करते है। इसलिए कबीर परमेश्वर ने काल ब्रह्म को वर दिया था कालब्रह्म ने प्रार्थना की थी कि तीनों युगों, सत्ययुग, त्रेता युग, द्वापर युग में थोड़े जीव पूर्ण प्रभु की शरण में जाऐं कलयुग में जितने चाहे उतने प्राणी आपकी (पूर्ण परमात्मा की) शरण में जाऐं मुझे कोई विरोध नहीं। काल ब्रह्म ने सोचा था कि कलयुग तक सर्व मानव को शास्त्रविधि त्याग कर मनमाने आचरण (पूजा) पर अति आरूढ़ कर दूंगा। देवी-देवों की पूजा व मन्दिर, मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारों तथा मूर्ति पूजा व तीर्थ स्नान पित्तर व भूत पूजा आदि पर ही आधारित कर दूँगा।

जिस समय कलयुग में पूर्ण परमात्मा का भेजा हुआ तत्वदर्शी सन्त आएगा वह शास्त्रविधि अनुसार साधना करने को कहेगा। पूर्व वाली पूजा को बन्द करने को कहेगा तो भ्रमित भक्त समाज उस तत्वदर्शी सन्त के साथ झगड़ा करेगा। इस कारण से कलयुग में किसी भी प्राणी को पूर्ण परमात्मा के तत्वज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाएगी। वह तत्वदर्शी सन्त झखमार कर रह जाएगा। परन्तु पूर्ण परमात्मा को ज्ञान था कि कलयुग में प्राणी महादुःखी हो जाऐंगे। जो साधना वे कर रहे होगें वह शास्त्रविधि के विरूद्ध होने के कारण लाभदायक नहीं होगी। मेरे द्वारा या मेरे अंश (वंश) तत्वदर्शी सन्त द्वारा बताई जाने वाली साधना से वे दुःखी प्राणी महासुख प्राप्त करेंगे। उनके सुखों को देखकर अन्य व्यक्ति भी खिंचे चले आऐंगे। यह तत्वज्ञान विशेषकर उस समय कलयुग में प्रकट किया जाएगा

जिस समय सर्व मानव (स्त्री-पुरूष) शिक्षित होगा। जिन शास्त्रों को आधार बताकर उस समय के काल ब्रह्म के प्रचारक उन्हीं शास्त्रों में लिखे उल्लेख के विपरित दन्तकथा (लोकवेद) सुना रहे होंगे तो तत्वज्ञान को जानने वाले शिक्षित व्यक्ति उन ग्रन्थों (पुराणों, वेदों व गीता आदि ग्रन्थों) को स्वयं पढ़कर निर्णय लेगें। जो तत्वदर्शी सन्त द्वारा बताया ज्ञान सर्व सद्ग्रन्थों से मेल करेगा तथा उन काल ब्रह्म के प्रचारकों का लोक वेद सद्ग्रन्थों के विपरित पाएगा तो सर्व बुद्धिमान व्यक्ति तत्परता के साथ शास्त्र विधि विरूद्ध साधना को त्याग कर हमारी शरण में आऐंगे तथा शास्त्र विधि अनुसार भक्ति ग्रहण करके मोक्ष को प्राप्त होंगे। इस प्रकार पूरे विश्व में तत्वज्ञान (कबीर परमेश्वर का ज्ञान) ही कलयुग में रहेगा अन्य लोकवेद अर्थात् अज्ञान नष्ट हो जाएगा।

कबीर, और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान।
जैसे गोला तोब का, करता चले मैदान।।

वह समय वर्तमान में (सन् 2014 में) चल रहा है तत्व ज्ञान का सूर्य उदय होने वाला है। सूर्य उदय होने से कुछ ही समय पूर्व जो प्रकाश होता है। तत्वज्ञान प्रचार रूपी प्रकाश हो चुका है। शीघ्र ही यह तत्वज्ञान रूपी सूरज का प्रकाश विश्व में फैलेगा। सर्व मानव समाज सुखी होगा। आपसी प्रेम बढ़ेगा। धन जोड़ने की हाय तौबा नहीं रहेगी। सर्व मानव समाज विकार रहित होगा। पूर्ण परमात्मा की आजीवन भक्ति करने वाले पूर्ण मोक्ष प्राप्त करके सत्यलोक में चले जाऐंगे। धर्मदास जी को परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ ने बताया हे धर्मदास ! वैसे तो मैं पथ्वी पर अनेकों बार प्रकट होता हूँ। परन्तु एक मानव सदश जीवन पथ्वी पर निवास करके प्रत्येक युग में तत्व ज्ञान (स्वसम वेद) को प्रकट करता हूँ। वर्तमान में (सन् 1398 से सन् 1518 तक) में तत्व ज्ञान को लिपिबद्ध कराने तथा समर्थ की समर्थता का प्रमाण देने के लिए निवास कलयुग में कर रहा हूँ। यह तत्वज्ञान उस समय तक छुपा कर रखना है जिस समय बिचली पीढ़ी प्रारम्भ होगी (बीसवीं सदी के मध्य सन् 1950 से तथा संवत् अनुसार इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ से होगी) उस समय मेरा ज्ञान प्रचारक हमारा अंश (वंश) उत्पन्न होगा। उसका जन्म बीसवीं सदी के मध्यम में (सितम्बर सन् 1951में) होगा उसमें और मुझ में कोई भिन्नता नहीं होगी। मैं सर्वदा उस अपने दास के साथ रहूँगा। वह मेरा ही स्वरूप होगा। जो बारहवें पंथ अर्थात् गरीबदास पंथ का अनुयाई होगा। वह तेरहवां अंश (वंश) होगा। जो सर्व पंथों को समाप्त करके एक परमेश्वर (मेरा) पंथ चलाएगा। बारहवें पंथ के प्रवर्तक सन्त गरीबदास द्वारा मेरी महिमा की वाणी प्रकट होगी परन्तु निर्णायक ज्ञान नहीं होगा। वे बारह पंथों के अनुयाई मेरा ही गुणगान करेगें परन्तु तत्वज्ञान के अभाव से असंख्य जन्म में भी स्थाई स्थान अर्थात् सत्यलोक में वास नहीं कर सकेगें वे काल प्रेरित होगें।

धर्मदास तोहे लाख दुहाई, सार ज्ञान कहीं बाहर न जाई।
सार ज्ञान तब तक छिपाई, जब तक द्वादश पंथ न मिट जाई।।
{**कबीर सागर, कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) पष्ठ 1870**}

उपरोक्त चौपाईयों का भावार्थ है कि कबीर परमेश्वर जी अपने प्रिय भक्त धर्मदास जी को विशेष निर्देश दे रहे हैं कि हे धर्मदास। तुझे लाख सौगंध है कि आप इस तत्व ज्ञान को तेरे और मेरे अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं समझाना। इसे लिपिबद्ध कर ले। आप के वंश में तथा अन्य बारह पंथ काल ब्रह्म इसी ज्ञान के आधार से चलाएगा। परन्तु मेरी कपा से कोई भी इस तत्वज्ञान को यथार्थ रूप से न समझ पाऐंगे। वे अपनी-2 समझ से इसका विपरीत अर्थ लगा कर एक दुसरे से वाद-विवाद करते रहेगें अपना-2 मत चलाकर भ्रमित रहेगें। यदि आप किसी को यह तत्वज्ञान बताओगे वह तुरन्त समझ जाएगा तथा यह तत्व भेद को समय से पूर्व काल ब्रह्म के दूतों के हाथ लग जाएगा। जिस समय बिचली पीढ़ी प्रारम्भ होगी तब ज्ञान भी भिन्न न होने के कारण काल ब्रह्म का दाव लग जाएगा। कोई जीव हमारी शरण न आ पावेगा। इसलिए यह तत्वज्ञान तब तक गुप्त रखना है। मेरा तत्वज्ञान अन्य लोक वेद अर्थात् अज्ञान को ऐसे नष्ट कर देगा जैसे तोप यन्त्र का गोला जहाँ भी गिरता है। वहाँ की सर्व भवनों व किलों को ढहाकर मैदान कर देता है।

वर्तमान समय (सन् 2014) तक काल के सर्व पंथ चल चुके हैं। वे पंथ प्रवर्तक क्या ज्ञान बताते हैं? वह उनके द्वारा लिखी पुस्तकों में विद्यमान है। बुद्धिमान वा शिक्षित व्यक्ति तुरन्त तत्वज्ञान की तुला में तोल कर देख लेगा तथा उस काल ब्रह्म के हानिकारक पंथ को त्याग कर परमेश्वर की शरण में अविलम्ब आएगा तथा अपने सम्पर्क के सर्व श्रद्धालुओं का भी काल ब्रह्म के जाल से मुक्त कराने हेतु परमेश्वर का यथार्थ भक्ति मार्ग प्राप्त कराएगा। इस प्रकार मानव सत्यभक्ति करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त करेगा तथा अपने पूर्व वाले स्थान सत्यलोक में अमर जीवन प्राप्त करेगा।

भक्त धर्मदास जी को परमेश्वर कबीर जी ने बान्धवगढ़ भेज दिया तथा कहा मैं आप के पास आऊंगा कुछ दिन वहाँ रहकर ज्ञान प्रचार करूंगा कुछ दिन पश्चात् बान्धवगढ़ में प्रकट हुए।

''धर्मदास के पुत्र नारायण दास का कालदूत का रूप दिखाना''

धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी को अपने घर पर आया देख अति श्रद्धा से सत्कार किया। अपने पुत्र नारायण दास से कबीर देव से नाम दिक्षा लेने की प्रार्थना की। नारायण दास ने धर्मदास जी से कहा हे पिता जी! आप कैसी बातें कर रहे हो? श्री कष्ण जी से ऊपर कोई परमात्मा नहीं है। आप को

इस साधु ने भ्रमित कर रखा है। कोई सतपुरूष अन्य परमात्मा नहीं, श्री विष्णुलोक को ही सेत (श्वेत) लोक कहते हैं। श्री विष्णु ही अविनाशी परमात्मा हैं। इनके कोई माता-पिता नहीं है। धर्मदास जी ने देखा मेरा पुत्र काल के मुख में जाएगा पुत्र मोह वश बार-2 अपने पुत्र नारायण दास को समझाने की कोशिश की। परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ से भी प्रार्थना की है प्रभु! कृप्या आप ही कुछ समझाओ यह तो बहुत ही हठ कर रहा है। परमात्मा कबीर जी के समझाने से भी नारायण दास नहीं माना तो धर्मदास ने अति प्यार से नारायण दास को मनाना चाहा परन्तु नारायण दास टस से मस नहीं हुआ तथा कहा कि यह सन्त मुझे अच्छा नहीं लगता। इसने मेरे पिता को यथार्थ ज्ञान से विचलित करके मनमुखी कथाओं पर आरूढ़ कर दिया है। धर्मदास जी को अति परेशान देख कर परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को अपने पास बुलाया तथा कहा हे धर्मदास! नारायण दास की ओर ध्यानपूर्वक देख। ऐसा कहकर कबीर प्रभु ने अपना दायाँ हाथ आशीर्वाद देने की स्थिति में नारायण दास की ओर किया। उसी समय नारायण दास का चेहरा भयंकर दिखाई दिया। फिर वैसा ही हो गया जो नारायण दास का था। धर्मदास ने परमेश्वर से विनयपूर्वक पूछा हे परमेश्वर मेरे पुत्र का यह ऐसा भयंकर स्वरूप कैसे दिखाई दिया। परमेश्वर कबीर जी ने बताया हे धर्मदास! आप मेरे अंश हो काल ब्रह्म ने अपना दूत आप के घर पहले ही पुत्र रूप में भेज रखा है। आप को पुत्र मोह में फंसा कर अपने जाल में ही रखना चाहता है। धर्मदास जी अपने पुत्र को काल दूत देखकर अति व्याकुल हो गए। नारायण दास से कहा ठीक है बेटा जैसे तेरी इच्छा, करले काम ! धर्मदास जी को अपना वंश नष्ट होने की चिन्ता सताने लगी। धर्मदास जी को चिन्तित देखकर कबीर परमेश्वर ने पूछा धर्मदास! किस कारण से चिन्तित हो? धर्मदास जी ने बताया हे परमेश्वर ! मेरा तो वंश काल का कुल होगा। मेरा वंश नष्ट हो जाएगा। कबीर परमेश्वर ने कहा धर्मदास। आप चिन्ता मत करो। तेरा वंश ब्यालीस पीढ़ी तक चलेगा जो मेरा गुणगान करेगा। तब धर्मदास ने पूछा हे बन्दी छोड़! मेरा तो इकलौता पुत्र है नारायण दास। यह काल का दूत है। मेरी ब्यालीस पीढ़ी कैसे होंगी, तब कबीर परमेश्वर जी ने कहा आपको एक पुत्र मेरी कृपा से प्राप्त होगा जिससे तेरा ब्यालीस पीढ़ी तक वंश रहेगा। धर्मदास जी ने विनम्र होकर पूछा हे दीनदयाल! आप के दास की आयु 85 वर्ष हो चुकी है। नारायण दास के पश्चात् कोई सन्तान नहीं हुई। आपकी शिष्या आमनी देवी का मासिक धर्म भी वर्षों से बन्द है। इस स्थिति में बच्चा उत्पन्न होना अति असम्भव है।

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी के भ्रम को निवारण करने के लिए अपनी शक्ति से एक नवजात शिशु आंगन में लेटा हुआ दिखाया तथा कहा कि यह लड़का दसवें महिने तेरी पत्नी के गर्भ से उत्पन्न होगा। इसका नाम चूरामणी

(चूड़ामणी) रखना। वह बच्चा अन्तर्धान हो गया। आमिनी देवी को गर्भ रहा तथा दसवें महीने वि.सं. 1538 (सन् 1481) में एक सुन्दर लड़का उत्पन्न हुआ। जिसका नाम चूड़ामणी रखा। नारायण दास अपने छोटे भाई चूड़ामणी से द्वेष रखने लगा। चूड़ामणी बान्धव गढ़ छोड़ कर कुदरमाल गाँव में रहने लगा। कुछ समय पश्चात् बांधवगढ़ पूरा नगर नष्ट हो गया। नारायण दास ने बांधवगढ़ में श्री कष्ण मन्दिर बनवा रखा था। नारायण दास का सर्व कुल व पंथ नष्ट हो गया। चूड़ामणी जी से धर्मदास का वंश चला जो ब्यालीस पीढ़ी तक चलेगा।

विशेष विचार :- उसी वंश की शाखा दामाखेड़ा (छत्तीसगढ़) में है। जो झूठा दावा करते हैं कि कबीर परमेश्वर जी ने कहा था कि केवल धर्मदास जी के वंश द्वारा उपदेश प्राप्त करके कलयुग में मोक्ष प्राप्त कर सकेंगे। जब तक धर्मदास का वंश चलेगा। तब तक मैं (कबीर जी) पथ्वी पर पग (पैर) नहीं रखूंगा। यह दामाखेड़ा वाले महन्तों की मिथ्या भ्रमित करने वाली कहानी है। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी के अन्तर की चिन्ता को जाना था कि धर्मदास कुल नष्ट होने की आशंका के कारण अति चिन्तित हो गया है। इसलिए परमेश्वर बन्दी छोड़ जी ने धर्मदास जी का ब्यालीस (42) पीढ़ी तक वंश चलने का आशीर्वाद दिया था। नाम दान के लिए तो परमेश्वर कबीर जी ने कहा था :-

कबीर, धर्मदास तोहे लाख दोहाई, सार शब्द कभी बाहर न जाई।।
सार शब्द बाहर जो पड़ही। बिचली पीढ़ी हंस न तरही।

फिर कहा है कि :-

धर्मदास तोहे लाख दुहाई। सार ज्ञान कभी बाहर ना जाई।
सार ज्ञान बाहर जो परही। बिचली पीढी हंस नहीं तिरही।
तेतीस अरब ज्ञान हम भाषा, सार ज्ञान गुप्त ही राखा।
मूल (सार) ज्ञान तब तक छुपाई। जब तक द्वादश पंथ न मिट जाई।

(प्रमाणः- कबीर सागर अध्याय कबीर चरित्र बोध पष्ठ 1870 तथा अध्याय कबीर बानी पष्ठ 136-137 पर तथा अध्याय जीव धर्म बोध में बोध सागर पष्ठ 1937 पर)

कबीर सागर कबीर बाणी पष्ठ 134 पर=बारहवें वंश प्रगट हो उजियारा, तेरहवें वंश मिटे सकल अंधियारा।

उपरोक्त वाणी से स्पष्ट होता है कि बीसवीं सदी के मध्य सन् 1950 से प्रारम्भ होने वाली बिचली (मध्यवाली) पीढ़ी से पहले यह सार नाम तथा सारज्ञान (तत्वज्ञान) भी गुप्त रखना है। धर्मदास! तेरे अतिरिक्त इस सारशब्द का जिस से पूर्ण मोक्ष सम्भव है बाहर अर्थात् अन्य को पता नहीं चलना चाहिए। इस सारशब्द तथा सारज्ञान को तब तक छुपा कर रखना है जब तक बारह (द्वादश) पंथ समाप्त न हो जाऐं। जब धर्मदास जी ने सारशब्द अपने वंशजों को

भी नहीं बताया तो उनके द्वारा दिए उपदेश से मोक्ष प्राप्त होने का प्रश्न ही नहीं उठता। वे केवल जनता को भ्रमित करके काल जाल में फांस रहे हैं। कबीर सागर में चूड़ामणी जी साहब के पंथ (दामा खेड़ा में चल रहा है) महिमा तो कबीर परमेश्वर की कहते हैं नाम मन्त्र गलत देते हैं। जिसका प्रमाण है उनके द्वारा दिए जाने वाले पाँच नाम (आदि नाम, अजर नाम, अमीनाम, पाताले सप्त सिंधु नाम, आकाशे अदली निज नाम----------) है।

(वैसे तो सर्व कथित कबीर पंथी एक पूरी कविता नाम दिक्षा में देते हैं जिसमें पांचनामों का वर्णन है जो इस प्रकार है :- सत सुकृत की रहनी रहो अजर अमर गहो सत्य नाम कहे कबीर मूल दिक्षा सत्य शब्द प्रमाण। आदि नाम, अजर नाम, अमीनाम, पाताले सप्त सिंधु नाम यही नाम हंस का काम खुले कपाट पाँजी चढ मूल के घाट भर्म भूत का बांधों गोला। कहे कबीर यही प्रमाण पांच नाम ले हंसा सत्यलोक समान)

जिस से स्पष्ट है कि धर्मदास जी के वंशज गलत नाम दान करते है। कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास के पुत्र चूड़ामणी को केवल पांच नाम का उपदेश देने का आदेश दिया (वे पाँच नाम उन नाम मन्त्रों से भिन्न तथा वास्तविक हैं जो दामाखेड़ा वाले महन्त देते हैं वे वास्तविक नाम संत रामपाल दास जी महाराज देते हैं) **जिन से तेरे वंशजों में भक्ति भाव बना रहेगा तथा मेरी महिमा सन् 1951 अर्थात् बिचली पिढ़ी (मध्यवाली पीढ़ी जो शब्द वंश होगा) के प्रारम्भ तक संसार में बनी रहेगी। संवत् 1774 में अर्थात् संत गरीब दास गाँव छुड़ानी जि. झज्जर हरियाणा के उत्पन्न होने पर उनके द्वारा मेरी महिमा की वाणी प्रकट की जाएगी। उस वाणी से श्रद्धालुओं को विशेष लगन मुझ (कबीर जी) में होगी। सन्त गरीबदास जी वाला पंथ काल का बारहवां पंथ होगा। बारहवें पंथ तक सर्व बारह पंथों के अनुयाई मेरी महिमा की वाणी के आधार पर अपने अनुयाईयों को प्रवचन किया करेगें परन्तु वे मेरी वाणी को यथार्थ रूप से नहीं समझ सकेंगे क्योंकि उन्हें सार ज्ञान (तत्वज्ञान) नहीं होगा। बारहवें पंथ अर्थात् गरीब दास जी वाले पंथ में आगे चल कर हम ही चल कर आऐंगे अर्थात् कोई मेरा परम सन्त उत्पन्न होगा जो सन्त गरीब दास जी वाले पंथ का अनुयाई होगा तथा मेरी वाणी को यथार्थ रूप में समझेगा। फिर सर्व पंथों को ज्ञान आधार से समाप्त करके केवल एक पंथ ही चलाऐंगे। पूरे विश्व में एक तत्वज्ञान ही चलेगा। कबीर परमेश्वर जी ने कहा था धर्मदास उस समय पृथ्वी पर केवल मेरा ही ज्ञान रह जाएगा अन्य लोक वेद समाप्त हो जाएगा।**

यदि दामाखेड़ा (मध्यप्रदेश) वाले महन्तों की यह बात सत्य नहीं है कि कबीर साहेब जी ने धर्मदास जी से कहा था कि जब तक तेरा वंश पृथ्वी पर रहेगा मैं पृथ्वी पर पग (पैर) नहीं रखूंगा। परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी सन् 1518 में

मगहर स्थान से सशरीर सतलोक जाने के पश्चात् (1) सन्त दादू साहेब जी को पृथ्वी पर आकर मिले थे सतलोक दर्शन करा कर नाम उपदेश दिया, (2) सन्त घीसा सन्त जी को मिले, (3) सन्त गरीब दास जी को सन् 1727 में मिले तथा उपदेश दिया उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि दामाखेड़ा (मध्यप्रदेश) वाले महन्तों का वह दावा मिथ्या है जिसमें कहा है कि कबीर जी ने कहा था कि जब तक धर्मदास जी का पंथ चलेगा वे (कबीर परमेश्वर जी) पृथ्वी पर प्रकट नहीं होंगे न किसी को नाम दान करेंगे केवल धर्मदास के वंश से ही नाम दान लेना होगा वही मोक्ष मन्त्र देगा। यह सर्वथा गलत और मनघड़ंत कहानी दामाखेड़ा वाले महन्तों ने काल प्रेरणा से श्रद्धालुओं को भ्रमित करने तथा काल जाल में फांसने के उद्देश्य से बनाई है। परमेश्वर कबीर जी ने तो कहा है कि :-

द्वादश पंथ काल फरमाना, भूले जीव न जायें ठिकाना

(प्रमाणः- कबीर सागर अध्याय कबीर वाणी पृष्ठ 136) उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि उन बारह पंथों में काल का उपदेश अर्थात् नाम दान चलेगा, उन बारह पंथों के जीव वास्तविक भक्ति विधि से अपरिचित होंगे जिस कारण से वे अपने ठिकाने अर्थात् सत्यलोक में नहीं जा सकेंगे।

विशेष विवरणः- पुस्तक ''कबीर सागर'' अध्याय=कबीर चरित्र बोध पृष्ठ स. 1862 से 1865 तक लिखा है कि कलयुग में कबीर साहेब ने चार गुरू नियत किए हैं (1) धर्मदास जी जिसके बियालीस वंश हैं, उत्तर में गुरूवाई सौंपी है। (2) दूसरे चतुर्भज जी दक्षिण में गुरूवाई करेंगे। (3) तीसरे बंके जी पूर्व में गुरूवाई करेंगे। (4) चौथे सहती जी पश्चिम में गुरूवाई करेंगे।

विमर्श :- जिस समय कबीर सागर लिखा गया संवत् 1542 से 1562 (सन् 1485 से 1505 तक) में, उस समय तक केवल एक धर्मदास जी ही प्रकट हुए थे। जब शेष तीन गुरू भी प्रकट हो जाऐंगे अर्थात् अपने-2 अनुयाईयों को नाम दान देकर भक्ति पर लगाऐंगे तब पूरी पृथ्वी पर केवल कबीर साहेब जी का ही ज्ञान चलेगा। यही प्रमाण कबीर सागर अध्याय ''अनुराग सागर'' में पृष्ठ सं. 104-105 पर है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि धर्मदास जी के पश्चात् पृथ्वी पर नाम दान देने के लिए तीन अन्य सन्त भी नाम दान देंगे उनके कार्य क्षेत्र भी भिन्न-2 विभाजित किए गए थे। इस से स्पष्ट हुआ कि धर्मदास जी के अतिरिक्त अन्य तीन सन्तों को भी कबीर जी ने कलयुग में नाम दान करने का आदेश दिया था जिनके द्वारा भी जीव उद्धार होगा। उपरोक्त विवरण से भी दामाखेड़ा वाले महन्तों द्वारा बनाई मनघड़ंत कथा गलत सिद्ध हुई कि कलयुग में केवल धर्मदास जी के वंशजों द्वारा ही जीव उद्धार सम्भव है, अन्य कोई अधिकारी परमेश्वर कबीर जी ने कलयुग में नहीं बनाया है।

प्रश्नः- धर्मदास जी ने अपने पुत्र चूड़ामणी जी को वास्तविक पाँच नाम

दान किए थे तथा आगे चूड़ामणी जी ने वे ही पाँच नाम दान किस लिए नहीं दिए?

उत्तरः- चूड़ामणी जी के वंशजों अर्थात् दामाखेड़ा वालों द्वारा लिखी पुस्तक ''सुमरण शरण् गह बयालिस वंश'' लेखकः- महंत हरिसिंह राठौर के पष्ठ 52 पर लिखा है।

वाणी :- सुन धर्मनि जो वंश नशाई, जिनकी कथा कहुँ समझाई (93) काल चपेटा देवे आई, मम सिर नहीं दोष कछु भाई (94) सप्त, एकादश, त्रयोदश अंशा, अरू सत्रह ये चारों वंशा(95) इनको काल छलेगा भाई, मिथ्या वचन हमरा न जाई (96) सब अपनी बुद्धि कहें भाई, अंश वंश सब गए नशाई (101)

भावार्थ :- उपरोक्त वाणी में कबीर परमेश्वर जी ने स्पष्ट किया है की धर्मदास तेरे सातवें वंश को काल छलेगा। उस सातवें वंश के पश्चात् ये पाँच वास्तविक नाम दान करना भी बन्द कर दिए जाऐंगे। शेष ग्यारहवें तेरहवें तथा सत्रहवें वंश के पश्चात् पूर्ण रूप से ज्ञान नष्ट हो जाएगा सर्व अपनी-2 बुद्धि के अनुसार प्रवचन किया करेंगे। इस प्रकार आप के वंशजों से भक्ति तो नष्ट हो जाएगी परन्तु तेरा वंश पूरा ब्यालीस पीढ़ी तक चलेगा। कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पष्ठ 140 (264) पर भी स्पष्ट है कि परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि ''धर्मदास तेरी गद्दी परंपरा में छठी गद्दी (पीढ़ी) वाले को नकली कबीर पंथी ''टकसारी'' पंथ वाला भ्रमित करेगा। जिस कारण से छठी पीढ़ी वाला यथार्थ नाम भक्ति जो मैं बताऊंगा, उसे त्याग कर उस टकसारी पंथ वाली भक्ति विधि प्रारम्भ करेगा। चौका आरती भी तथा मंत्र नाम भी टकसारी वाले कराया करेगा।''

"चौदहवीं महंत गद्दी का परिचय" पुस्तक "धनी धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय" पष्ठ 49 पर तेरहवें महंत दयानाम के बाद कबीर पंथ में उथल–पुथल मची। काल का चक्र चलने लगा। क्योंकि इस परम्परा में कोई पुत्र नहीं था। तब तक व्यवस्था बनाए रखने के लिए महंत काशीदास जी को चादर दिया गया। कुछ समय पश्चात् काशी दास ने स्वयं को कबीर पंथ का आचार्य घोषित कर दिया तथा खरसीया शहर में अलग गद्दी की स्थापना कर दी। यह देख तीनों माताऐं रोने लगी कि काल का चक्र चलने लगा। बाद में कबीर पंथ के हित में ढाई वर्ष के बालक चतुर्भुज साहेब को बड़ी माता साहिब ने गद्दी सौंप दी जो "गन्धमुनि नाम साहेब" के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

विचार करें : एक ढाई वर्ष का बालक क्या नाम व ज्ञान देगा ?

माता जी ने गद्दी पर बैठा दिया। बेटा महंत बन गया। जिसे भक्ति का क-ख का भी ज्ञान नहीं। इस प्रकार भोले श्रद्धालुओं को दंत कथाओं (लोकवेद) के आधार से स्वार्थी सन्त व महंत भ्रमित करके स्वार्थ सिद्ध कर

रहे हैं।

महंत काशी दास जी ने खरसिया शहर में नकली कबीर पंथी गद्दी प्रारम्भ कर दी। उसी खरसिया से एक उदीतनाम साहेब ने मनमुखी गद्दी लहर तारा तालाब पर काशी (बनारस) में चालु कर रखी है। कबीर चौरा काशी में एक गंगाशरण शास्त्री जी भी महंत पद पर विराजमान है। परंतु भक्ति का क-ख भी ज्ञान नहीं है।

उपरोक्त विवरण से प्रभु प्रेमी पाठक स्वयं निर्णय करें कि दामा खेड़ा वाले महंतों के पास वास्तविक भक्ति है या नहीं?

श्री चुड़ामणी जी के कुदरमाल चले जाने के पश्चात् बांधवगढ़ पूरा नष्ट हो गया। आज भी प्रमाण है।

बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को बताया हे धर्मदास! वर्तमान में मैं तत्व ज्ञान को लिपिबद्ध कराने आया हूँ। यह ज्ञान पद्य भाग में लोकोक्तियों, दोहों में वाणी रूप में प्रकट करूंगा। जब बिचली (मध्यावाली) पीढ़ी प्रारम्भ होगी उस समय बारहवें पंथ (सन्त गरीबदास) का अनुयाई बन कर जो मेरा तेरहवाँ वंश (अंश) तत्वज्ञान प्रचार करेगा। वह इस पद्य भाग का गद्य भाग में यथार्थ अनुवाद करेगा। उस तत्वदर्शी सन्त को मुझे समझना (मम सन्त मुझे ही जान, मेरा ही स्वरूपम्) तब तक मेरे इस तत्व ज्ञान को अपनी -2 बुद्धि से यथार्थ न समझ कर उल्टा अर्थ लगाकर अनुयाईयों को भ्रमित करते रहेंगे। उस समय उन सर्व पंथों के अज्ञान का पर्दाफाश उस तेरहवें वंश (मेरे सन्त) द्वारा किया जाएगा। उस समय सर्व मानव शिक्षित होगा। अन्य सन्तों द्वारा लिखी भ्रमित ज्ञान युक्त पुस्तकों को पढ़कर तत्वज्ञान से तुलना करेंगे। दोनों की भिन्नता को जान कर तुरन्त मेरे तत्वदर्शी सन्त की शरण ग्रहण करेंगे। इस प्रकार सर्व सद्ग्रन्थों का यथार्थ अनुवाद भी मेरा वह तेरहवां वंश (सन्त) करेगा। अन्य सन्तों व ऋषियों द्वारा किया अनुवाद भी उस समय सर्व के समक्ष होगा जो वर्षों पूर्व किया गया होगा।

जिसे सत्य अनुवाद मानकर बहुत बड़ा जनसमूह उस सन्तों व ऋषियों से जुड़ चुका होगा अर्थात् उनके मिथ्या ज्ञान को तत्वज्ञान मानकर उन ऋषियों व सन्तों के ढेर सारे अनुयाई बन चुके होंगे। वे बुद्धिमान शिक्षित अनुयाई मेरे अंश सन्त द्वारा किए गए सद्रग्रन्थों के अनुवाद से अपने-2 गुरूओं द्वारा किए गए अनुवाद का मेल करेंगे तो तुरन्त भिन्नता समझ जाऐंगे तथा उन अज्ञानी ऋषियों व सन्तों को त्याग कर ऐसे मेरे सन्त की शरण ग्रहण करेंगे जैसे कोई हड़बड़ाकर जागा हो। इस प्रकार धीरे-2 पूरी पथ्वी पर मेरा ही ज्ञान प्रकाश हो जाएगा। अज्ञान पूर्ण रूप से नष्ट हो जाएगा।

❑❑❑